Nagari-pracharini Granthmala Series No. 4.

THE PRITHVIRAJ RASO

OF

CHAND BARDAI,

Vol II

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, Radha Krishna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.

CANTOS XII to XXVII.

महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

दूसरा भाग

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी ए

ने

सम्पादित किया।

पर्व्व १२ से २७ तक।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS AND MEDICAL HALL PRESS AND PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA
BENARES

1906

मूल्य ४)] [Price

से लड़ने के लि
रना।
का ५०० सेना
नान से चौहान
समाचार का
ना का लाना (
ा से कहना

(१३) सलष युद्ध समय ।

(पृष्ठ ५१९ से ५४२ तक)

(१४) इंच्छिनी समय।

(पृष्ठ ५४३ से ५६१ तक)

(१९) मुगलयुद्ध प्रस्ताव।

(२०) पुंडीर दाहिमी विवाह प्रस्ताव।

(२१) भूमिसुपन प्रस्ताव।

(१८) दिल्लीदान प्रस्ताव।

(पृष्ठ ५८९ से ६०१ तक)

(१९) माधोभाट कथा।

(पृष्ठ ६०३ से ६३० तक)

(२०) पद्मावती समय ।

(पृष्ठ ६३१ से ६४१ तक)

(२१) पृथा व्याह वर्णन ।

(पृष्ठ ६४३ से ६७० तक)

(२१) होली कथा प्रस्ताव

(पृष्ठ ६७१ से ६७३ तक)

३ ढुंढा ने काशी में जाकर सौ वर्ष तप किया, यह सुन ढुंढिका भी भाई के पास गई, ढंढा भस्म हो गया तौ भी ढुंढिका बैठी रही, उसे सौ वर्ष योंही सेवा करते बीता । ६७१
४ तब गिरिजा ने प्रसन्न होकर ढुंढिका से कहा कि मैं प्रसन्न हूं वर मांग । ६७२
५ ढुंढिका ने कहा कि यह वर दो कि बाल वृद्ध सब को मैं भक्षण कर सकूं । „
६ गिरिजा ने शिव जी से कहा कि ऐसा उपाय कीजिए कि ढुंढिका की बात रहै और वह नर भक्षण न कर सकै । „
७ शिव जी ने आज्ञा दी कि फागुन में तीन दिन जो लोग गाली बकैं, गदहे पर चढ़ैं. तरह तरह के स्वांग बनावैं उनको छोड़ और जिसको पावै वह भक्षण करै । „
८ ढुंढिका ने जब आकर देखा तो सभों को गाली बकते, पागल से बने, गाते बजाते आग जलाते, धूल राख उड़ाते पाया । ६७३
६ इस प्रकार से लोगों ने इस आपत्ति को टाला, चैत का महीना आया घर घर आनन्द हो गया । „
१० जाड़ा बीतने और बसंत के आगमन पर लोग होलिका की पूजा करते और ढुंढिका की स्तुति करते हैं । „

(२३) दीपमालिका कथा ।

(पृष्ठ ६७५ से ६७९ तक)

१ पृथ्वीराज ने फिर चन्द से पूछा कि कार्तिक में दीपमालिका पर्व होता है उसका वृत्तान्त कहो । ६७५
२ सत्ययुग में सत्यव्रत राजा का बेटा सोमेश्वर बड़ा प्रतापी था, सुर नर उसकी सेवा करते थे, वह प्रजा पालन में दक्ष था, सब लोग उससे प्रसन्न थे । „
३ उस नगरी में समुद्र तट पर बहुत अच्छे बाग लगे थे वहां एक वैदिक ब्राह्मण रहता था उसकी स्त्री छल रहित थी । ६७५
४ स्त्री ने पति से कहा कि धन हीन दशा में जीना और दुःख भोगने से मरना अच्छा है, सो इसका कुछ उपाय करो । „
५ सत्यश्रम ब्राह्मण ने ज्ञानध्यान की ओर चित्त दिया । ६७६
६ सत्यश्रम ने सौ वर्ष तक विष्णु का ध्यान किया, विष्णु ने ब्रह्मा को बताया, ब्रह्मा ने रुद्र को कहा, रुद्र ने कहा कि माया को प्रसन्न करो हमारा सब काम वही करती है । „
७ तीन वर्ष तीन महीना तीन घड़ी में वह प्रसन्न हुई और उसने चौदह रत्न दिए । „
८ सत्यश्रम ने विचार किया कि राजा की सेवा करनी चाहिए, ऋद्धि सिद्धि से क्या होता है । „
६ ब्राह्मण की बुद्धि में प्रकाश हुआ कि कार्तिक की अमावस सोमवार को लक्ष्मी उसके पास आती है । ६७७
१० ब्राह्मण को चार वर्ष राजा की सेवा करते बीता तब राजा ने कहा कि वर मांग । „
११ ब्राह्मण ने दीपदान वर मांगा अर्थात् कार्तिक की अमावस को उसके अति-रिक्त संसार में दीपक न जलै । „
१२ राजा ने कहा कि तुमने क्या मांगा ब्राह्मणों की पिछली बुद्धि होती है, अन्न धन गांव मांगना था, अस्तु अब घर जाओ । „
१३ ब्राह्मण ने घर आकर एक मन तेल सवा सेर रुई मंगाई । „

१४ कार्तिक आया, ब्राह्मण ने उत्साह के साथ राजा से कहा कि जो मांगा था सो दीजिए। ६७८
१५ राजा ने आज्ञा प्रचार कर दी कि उस दिन कोई दीपक न बाले। "
१६ लक्ष्मी समुद्र से निकली तो उसने सारे नगर में अँधेरा पाया केवल ब्राह्मण के घर दीपक देख कर वहीं आई और विचार किया कि यहीं सदा रहना चाहिए। ६७८
१७ लक्ष्मी ने प्रसन्न होकर उसका दारिद्र काट कर वर दिया कि सात जन्म मैं तेरे घर बसूंगी। "
१८ तब दरिद्र भागा ब्राह्मण ने उसे पकड़ा कि मैं तुझे न जाने दूंगा। "
१९ दरिद्र ने वाक्य दिया कि मुझे जाने दो मैं कभी इस नगर में न आऊंगा। ६७६
२० उसी घड़ी से उसके यहां आनन्द हो गया हाथी घोड़े झूमने लगे। उसी दिन से यह दीपमालिका चली। "
२१ चारो दिशा में दीपमालिका का मान्य है। यह कथा कविचन्द ने कह सुनाई। ६७६

(२४) धन कथा।

(पृष्ठ ६८० से ७५८ तक)

१ खट्टू बन में शिकार खेलने और नागौर में शाह गोरी के कैद करने की सूचना। ६८१
२ पृथ्वीराज का कैमास की वीरता, बुद्धि-मत्ता आदि की प्रशंसा करके प्रश्न करना। "
३ पृथ्वीराज का प्रश्न करना कि तालाब के ऊपर एक विचित्र पुतली है जिसके सिर पर एक वाक्य खुदा है, इस के अर्थ करने में सब भटकते हैं सो तुम इसका अर्थ करो। "
४ पुतली के सिर का लेख; "सिर केटन से धन मिलै सिर रहने से धन जाय"। ६८२
५ पृथ्वीराज का मंत्री के कर्तव्यों का वर्णन करके कैमास से परामर्श करना। "
६ पृथ्वीराज का कहना कि सुना है कि वीर वाहन कोई राजा था वह बड़ा प्रजा पीड़क था और धन बटोरता था सब प्रजा ने उसे शाप दिया कि तू निर्दिय मरैगा और राक्षस होगा सो यह उसी का धन है। ६८३
७ कैमास का कहना कि इस काम में अकेले हाथ न डालिए चित्तौर के सबल समर सिंह को बुलवा लीजिए क्योंकि जयचंद, शहाबुद्दीन, भीमदेव आदि शत्रु चारों ओर हैं। "
८ पृथ्वीराज का कैमास की इस सलाह को मानकर उसको सिरो पाव देना और उसकी बड़ाई करना। "
९ पृथ्वीराज का चन्द पुंडीर को बुलाकर चिट्ठी दे समर सिंह के पास भेजना। ६८४
१० रावल की भेंट को घोड़े हाथी आदि भेजना। "
११ चन्द पुंडीर का रावल के पास पहुंच कर पत्र देना और गड़े धन के निकालने में सहायता के लिये रावल से कहना, क्योंकि पृथ्वीराज के शत्रु चारों ओर हैं। "
१२ रावल समरसिंह के योगाभ्यास और जल कमल की तरह राज्य करने की प्रशंसा। "
१३ पत्र पढ़ कर समरसिंह ने हँस कर चंद पुंडीर से कहा कि संसार की यही गति है कि मांस के एक लोथड़े को एक गिद्ध लाता है और दूसरा खाता है, कोई कमाता है कोई भोगता है यह दैवगति है। ६८५
१४ चन्द पुंडीर ने कहा कि आपने ठीक कहा पर पृथ्वीराज आपका बड़ा भरोसा

११४ खत्री का पांच सौ सवार लेकर दिल्ली की ओर चलना। ७२२

११५ खत्री शकुनों का विचार करता, बारह कोस नित्य चलता हुआ दिल्ली की ओर बढ़ा। „

११६ खत्री लोरक का दिल्ली के पास पहुंचना। „

११७ लोरक खत्री का दिल्ली के फाटक पर एक बाग में ठहरना और वहीं भोजन करना। ७२३

११८ दो घड़ी दिन रहे दिल्ली में प्रवेश किया। „

११९ नगर में घुसते हुए फूल की डाली लिए हुऐ मालिन मिली। यह शुभ शकुन हुआ। „

१२० खत्री का पृथ्वीराज की सभा में पहुंचना। „

१२१ ड्योढ़ी पर से समाचार भिजवाया कि तातारखां का भेजा वकील आया है। राजा ने तुरंत साम्हने लाने की आज्ञा दी, लोरक ने दर्बार में आकर सलाम किया। „

१२२ सभा में बैठे सामन्तों का वर्णन, राजा की आज्ञा से लोरक का सलाम करके बैठना। ७२४

१२३ लोरक ने तीन सलाम करके तातारखां की अर्ज़ी राजा को दी। „

१२४ मन्त्रुशाह प्रधान को पत्र दिया कि पढ़ो। „

१२५ तातारखां की अर्ज़ी में शहाबुद्दीन के छोड़े जाने की प्रार्थना। „

१२६ राजा ने अर्ज़ी सुन कर हँस दिया और खत्री को बिदा किया। „

१२७ दूसरे दिन लोरक फिर दर्बार में आया। ७२५

१२८ लोरक का पृथ्वीराज की बड़ाई करके शाह को छोड़ने की प्रार्थना करना। पृथ्वीराज का पूछना कि गोरी नाम क्यों पड़ा? „

१२९ लोरक का इतिहास कहना कि असुरों के राज्य पर शाह जलालुद्दीन बैठा, वह बड़ा कामी था। पांच सौ दस उसके हरम थीं पर संतान न हुआ, तब शाह निजाम की टहल करने लगा। ७२५

१३० शेख निज़ामुद्दीन ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया कि तुम्हें ऐसा प्रतापी बेटा होगा कि चारों ओर असुरों का राज्य फैलावेगा और हिन्दुओं को जीत दिल्ली पर तपैगा। ७२६

१३१ शाह घर आया। चित्त में चिन्ता हुई कि जो यह लड़का ऐसा प्रतापी होगा तो मुझे मार कर राज्य लेगा। इतने ही में एक बेगम को गर्भ रहने का समाचार मिला। शाह ने सिर ठोंका और उस बेगम को निकाल दिया। पांच वर्ष बीते शाह मर गया, वजीर लोग सोच में पड़े किसे गद्दी पर बिठावें। एक शेख़ ने गोर में रहने वाले एक सुन्दर बालक को दिखलाया। „

१३२ उस बालक का प्रताप सूर्य के समान चमकता दिखाई दिया। ७२७

१३३ ज्योतिषी को बुलाकर जन्म पत्र बनवायां उसने कहा कि यह जलालुद्दीन से भी बढ़ कर प्रतापी होगा। इसकी जाति गोरी है। यह हिन्दुस्तान पर राज्य करेगा। „

१३४ लोरक ने शाह की पूर्व कथा कह सुनाई। „

१३५ पृथ्वीराज का कहना कि शाह के पास एक महा बलवान शृङ्गारहार नाम का हाथी है उसको शाह बहुत चाहता है। उसको और ३० हजार उत्तम घोड़े दो तो शाह छूटै। „

१३६ खत्री ने कहा कि जो आप मांगेंगे वही दूंगा पर शाह छूटना चाहिए। ७२८

१३७ पत्र लिख कर दूत को दिया कि जो इक़ार हुआ है वह भेजो। „

१३८ पत्र पाते तातार खां ने हाथी घोड़े भेज

प्रगट होगा, उससे लोग डर कर मारेंगे। ७३५

१६८ पृथ्वीराज शिकार खेलते खट्टू वन में चले वहां एक पत्थर का शिला लेख कमास को दिखलाई दिया। "

१६६ उस शिला लेख को देख कर सब प्रसन्न हुए और आशा बँधी। ७३६

१७० कैमास उस बीजक को पढ़ने लगा। "

१७१ उसे पढ़ कर उसी के प्रमाण से नाप कर खोदवाना आरम्भ किया। "

१७२ दुष्ट ग्रह और अरिष्ट दूर करने के लिये रावल समरसिंह पूजा करने लगे। "

१७३ चन्द यह पहिले ही कह चुका था कि व्यास जग जोति कह गए हैं किए पृथ्वीराज सब अरिष्टों को दूर कर के नागौर वन के धन को पावेंगे। ७३७

१७४ राजा ने रावल से कहा कि अरिष्ट दूर करने के लिये पूजा करनी चाहिए, रावल ने उत्तर दिया मैं पहिले ही से पूजा कर रहा हूं। "

१७५ चन्द को बुलाया, उस ने कहा कि आप लक्ष्मी निकालिए, जो ध्रुव हो चुका है उसे मिटाने वाला कौन है। "

१७६ रात को सब सामन्तों को रख कर रखवाली करो। "

१७७ कुछ सर्दार साथ रहे कुछ सोए। सबेरे वह स्थान खोदा गया वहां एक पुरुष की मूर्ति निकली उस पर कुछ अचर खुदे थे, उन को कैमास ने पढ़ा। "

१७८ उस पर लिखा था कि हे सूर सामंत सब सुनो जो मुझे देख कर तुम न हँसो तो पाषाण को देखो ?। ७३८

१७६ सब लोग कैमास की बड़ाई करने लगे। "

१८० शुभ मुहूर्त आतेही कमान की मूठ में ताली थी वह देखी (?)। "

१८१ उसे शस्त्र से तोड़ते ही एक बड़ा भारी सर्प दिखलाई पड़ा जिसे देख सब भागे। ७३८

१८२ विक्रम संवत ग्यारह सौ अड़तीस को सोमेश्वर के बेटे पृथ्वीराज ने असंख्य धन पाया। "

१८३ चन्द ने मन्त्र से कील कर सर्प को पकड़ लिया तब धन देखने लगे। "

१८४ चन्द की बात मान कर धन निकालने के लिये स्वयं राजा वहां आए। ७३६

१८५ राजा ने आज्ञा दी कि इस शिला का सिर काट कर धन निकालो। "

१८६ शिला काट कर भूमि खोदने की आज्ञा दी कि इतने में पृथ्वी कांपने लगी। "

१८७ शस्त्र की नोक से तीस अंगुल मोटा, बारह अंगुल ऊंचा खोदा तब खजाने का मुँह खुल गया। "

१८८ बारह हाथ खोदने पर एक भयानक देव निकला। ७४०

१८६ उस राचस ने निकल कर तरह तरह की माया करके लड़ना आरम्भ किया। "

१६० जब बहुत उपद्रव मचाया तब चन्द ने देवी की स्तुति की कि मा अब सहाय हो कि लक्ष्मी निकले। ७४१

१६१ देवी की स्तुति। "

१६२ देवी ने प्रसन्न होकर दानव को मारने का बरदान दिया। "

१६३ बर पाकर पृथ्वीराज ने राचस को ललकारा और घोर युद्ध हुआ। दानव मारागया। ७४२

१६४ चन्द ने स्तुति कर के इस राचस और धन की पूर्व कथा पूछी। "

१६५ देवी ने कहा जी लगा कर तू उसकी पूर्व कथा सुन। "

१६६ सतयुग में मंत्र, त्रेता में सत्य, द्वापर में पूजा और कलियुग में वीरता प्रधान है। "

१९७ रघुबंश में आनन्द नामक एक राजा हुआ है उस की कथा कहती हूं। ७४२
१९८ वह राजा बड़ा अन्यायी था धर्म विरुद्ध काम करता था। ७४३
१९९ यज्ञ विध्वंस करता था ऐसे बुरे कामों को देख ऋषियों ने शाप दिया कि जा तू राक्षस हो जा। „
२०० उसका शरीर भस्म हो गया और वह दैत्य होकर यहां रहने लगा। „
२०१ इसको बहुत काल बीता, इसके पीछे रामचन्द्र हुए, काल पुराना हो गया पर यह लक्ष्मी पुरानी न हुई। ७४४
२०२ तब पृथ्वीराज और चन्द ने प्रार्थना की कि अब धन निकालने में दैत्य दुःख न दे। „
२०३ इष्ट मंत्र का साधन करते यज्ञ करते हुए खोद कर लक्ष्मी निकालना आरंम्भ किया। „
२०४ देव ने चन्द से कहा कि मेरे पिता रघुबंशी धर्माधिराज थे मैं उन का बेटा आनन्द चन्द बड़ा अन्यायी हुआ मैं ने अन्याय से संसार को जीता इस लिये शाप से मैं दैत्य हुआ और मेरा नाम वीर पड़ा। „
२०५ बीर ने कहा कि इस लक्ष्मी को मैं ने ही यहां रक्खा था। दैव गति से इसी को लेकर मेरी यह गति हुई। ७४५
२०६ वीर का अपने पिता रघुबंश राज की प्रशंसा करना। „
२०७ चारों युगों के धर्म का वर्णन। „
२०८ बीर का अपने बल का वर्णन करके अपने साम्हने धन निकालने को कहना। ७४६
२०९ चन्द ने कहा कि हे बीर तुम सब समर्थ हो तुम्हारे कहने से अब राजा धन निकालेंगे। „
२१० चन्द की सुन्दर बानी सुन कर बीर ने प्रसन्न हो कर धन निकालने की आज्ञा दी। ७४६
२११ वीर की बात सुन कर चन्द ने राजा से कहा कि होम आदि शुभ कर्म कराओ और आनन्द से धन निकालो। „
२१२ चन्द का बीर से पूछना कि हमारे राजा तुम्हारी प्रसन्नता के लिये जो कहो वही करें। „
२१३ वीर का कहना कि मेरी प्रसन्नता के लिये पण्डित से जप कराओ और महिष का बलि देकर धन निकालो। ७४७
२१४ दानव यह कह कर स्वर्ग गया। चन्द का राजा से कहना कि शांह को तो तुम बांध चुके अब रावल के साथ धन निकालो। „
२१५ राजा ने रावल को बुला कर ज्योतिषी पण्डित को बुलाया पण्डित ने होम की सामग्री मँगा कर वेदी आदि बनवा कर शुभ अनुष्ठान का प्रारम्भ किया। „
२१६ छः प्रधानों को पास रख कर राजा ने पत्थर खोद कर हटवाया। ७४८
२१७ वह स्थान खोदने पर एक बड़ा भारी पत्थर का अद्भुत घर निकला, उस में एक सोने के हीराजटित हिंडोले पर सोने की पुतली सोने की वीणा बजाती और नाचती हुई निकली उस का नाच देख कर आश्चर्य्य होने लगा। „
२१८ पुतली को देख कर गुरु राम का आश्चर्य्य करना। ७४९
२१९ चन्द का यह कहना कि यह मायारुपी है। „
२२० रावल का फिर चन्द से पूछना कि यह पुतली किस का अवतार है ?। „
२२१ चन्द ने कहा कि ठहरिए तब कहूंगा और उसने वीर को स्मरण कर के पुतली का भेद पूछा। „

२२२ देव का उत्तर देना कि यह ऋद्धि रानी है। ७४६
२२३ यह ऋद्धि साचात लक्ष्मी का रूप है इसे तुम बेखटके भोग सकते हो। यह देव बानी सुन कर चन्द प्रसन्न हुआ और रावल का संशय मिटा। ७५०
२२४ इस हिंडोले को पूजन में रखना यह कह कर देव अन्तर्ध्यान हो गया। राजा फिर धन निकालने लगे। ,,
२२५ कुबेर के से भण्डार सा धन निकलना, सब को आश्चर्य्य होना और तब सुरंग को देखना। ,,
२२६ पुतली का बिना कुछ बोले चन्द और रावल की ओर तीक्ष्ण कटाक्ष से देखना। ,,
२२७ चन्द और रावल का मूर्छित हो कर गिरना। कुछ देर में सँभल कर उठना। ७५१
२२८ उठने पर राजगुरु का पृथ्वीराज से पूछना कि असंख्य धन निकला अब क्या आज्ञा है। ,,
२२९. धन के कलश आदि का वर्णन। रावल और पृथ्वीराज का एक सिंहासन पर बैठना। ,,
२३० एक दिन संध्या के समय देवी के मठ के पास पृथ्वीराज और रावल आए। ७५२
२३१ पृथ्वीराज और रावल के शोभा और गुण का वर्णन। ,,
२३२ वेद मंत्र से दोनों राजाओं के लिये पूजा की और दस महिष बलि चढ़ाया। चतुः षष्टि देवि ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया। ,,
२३३ राजा ने सिंहासन हाथ में लेकर देवी की स्तुति की देवी ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया। ७५३
२३४ देवी पृथ्वीराज को आशीर्वाद देकर अन्तर्ध्यान हो गई। ,,
२३५ पृथ्वीराज ने सिंहासन और लक्ष्मी मँगा कर रावल के साम्हने रक्खी। रावल ने कहा कि यह लक्ष्मी तुम्हारे पास आई है तुम्हारी है। पाटन के यादव राजा की कुँवरि ससिवृता की सगाई का विचार। ७५३
२३६ रावल समरसिंह का धन लेने से इंन्कार करना और कहना कि यह धन तुम्हें प्राप्त हुआ है सो तुम्हीं लो। ,,
२३७ पृथ्वीराज ने जब देखा कि धन लेने की बात से रावल को क्रोध आ गया तब उन्होंने अनुचरों को धन लेने को कहा। ७५४
२३८ पृथ्वीराज से रावल का घर जाने के लिये सीख मांगना पृथ्वीराज का कहना कि दस दिन और ठहरिए शिकार खेलिए। रावल का आग्रह करना। ,,
२३९ प्रेमाश्रु भर कर रावल ने बिदा मांगी, पृथ्वीराज उठ कर गले से गले मिले। ,,
२४० पृथ्वीराज ने जाने की सीख देकर कहा कि हम पर सदा इसी तरह स्नेह बनाए रहिएगा। ,,
२४१ रावल ने कहा कि हम तुम एक प्राण दो देह हैं हम को तुम से बढ़ कर कोई प्रिय नहीं है। ७५५
२४२ रावल समरसिंह गद्गद हो बिदा हुए, और अपने देश की ओर चले। ,,
२४३ रावल को बिदा कर राजा ने चन्द और कैमास को बुलाया और रावल के यहां हाथी घोड़े आदि भेट भेजा। ,,
२४४ रावल ने चन्द को मोती की माला देकर बिदा किया और आप चित्तौर को कूच किया। ,,
२४५ कैमास और चन्द का राजा के पास आना और राजा का दिल्ली चलना। ,,
२४६ कैमास ने सब धन हाथियों पर लदवाया राजा षट्टू बन में शिकार खेलता चला। ७५६
२४७ पृथ्वीराज ने बहुत से धन को बराबर

९० शाप के पीछे शिवजी कैलाश गए अप्सरा मृत्युलोक में गिरी, वही जादव राज की कन्या शशिव्रता है और तुम्हें उसने पति वरन किया है। ७८३
९१ हंस कहता है कि इस अप्सरा का अवतार तुम्हारे ही लिये हुआ है। „
९२ हंस कहता है कि राजा जादव ने शशिव्रता को कान्यकुब्जेश्वर को ब्याहना विचारा है पर शशिव्रता ने तुम्हें मन अर्पण कर शिव की आराधना की। शिव की आज्ञा से मैं हंस रूप धर कर तुम्हारे पास आया हूं। शीघ्र चलो। राजा का प्रस्तुत होना। दस सहस्र सेना सजना। „
९३ राजा का कहना कि जादव राज के गुणों का वर्णन करो। ७८४
९४ हंस का राजा भानु जादव के गुण प्रताप का वर्णन करना। „
९५ उनके बेटे और बेटी के रूप गुण का वर्णन। „
९६ एक आनन्दचन्द खत्री था उसकी बहन चन्द्रिका कोट में ब्याही थी, वह विधवा हो गई और भाई उसको अपने यहां ले आया। ७८५
९७ वह गान आदि विद्या में बड़ी प्रवीण थी। „
९८ उसके पास शशिव्रता विद्या पढ़ती थी। „
९९ उसी के मुख से आप की प्रशंसा सुन कर वह आप पर मोहित हो गई है। „
१०० यों ही दो वर्ष बीत गए। बाल्यावस्था बीतने पर काम की चटपटी लगी। ७८६
१०१ तभी से नित्य शिव की पूजा करके वह तुम्हें मिलने की प्रार्थना करती रही। „
१०२ शिवपार्वती का प्रसन्न होकर सपने में वरदेना। „
१०३ प्रसन्न होकर शिवपार्वती ने मुझे तुम्हारे पास भजा है कि जयचन्द ब्याहने आवेगा सो तुम रुक्मिणी हरण की भांति इसे हरण करो। ७८७
१०४ राजा ने फिर पूछा कि उसके पिता ने क्यों ब्याह रचा और क्यों प्रोहित भेजा। „
१०५ हंस का कहना कि राजा ने बहुत ढूंढ़ा पर देव की इच्छा उसे जयचन्द ही जँचा। वहां श्रीफल ले पुरोहित भेजा। „
१०६ प्रोहित ने जैचन्द को जाकर श्रीफल और वस्त्राभूषण आदि अर्पण किया। „
१०७ टीका देकर प्रोहित ने कहा कि साढ़े को दिन थोड़ा है सो शीघ्र चलिए। ७८८
१०८ प्रसन्न होकर जयचन्द का चलने की तय्यारी और उत्सव करने की आज्ञा देना। „
१०९ हंस कहता है कि वह पचास सहस्र सेना और सात सहस्र हाथी लेकर आता है अब तुम भी चलो। पृथ्वीराज ने दस सहस्र सेना ले चलना विचारा। „
११० पृथ्वीराज का शशिव्रता से मिलने के लिये संकेत स्थान पूछना। ७८९
१११ ब्राह्मण का संकेत स्थान बतलाना। „
११२ राजा का कहना कि मैं अवश्य आऊंगा। „
११३ हंस का कहना कि माघ सुदी १३ को आप वहां अवश्य पहुंचिए। „
११४ इतनी वार्ता करके हंस का उड़ जाना। „
११५ दस हजार सेना सहित पृथ्वीराज का तैयारी करना। ७९०
११६ राजा का सब सामंतों को हाथी घोड़े इत्यादि वाहन देना। „
११७ माघ वदी पञ्चमी शुक्रवार को पृथ्वीराज की यात्रा करना। ७९१
११८ चन्द का सेना की शोभा वर्णन करना। „
११९ चलने के समय राजा को भय दिखाने

——:o:——

(२३) देवगिरि समय ।

(८६१ से ८८१ तक)

(२७) रेवा:तट समय ।

(पृष्ठ ८८३ से ९१२ तक)

हाथ में लेकर शपथ करके प्रस्थान किया। ८८७

१६ तत्तार खां का कहना कि चन्दपुंडीर को मारकर एक दिन में दिल्ली लेलूंगा। ,,

१७ चन्दपुण्डीर ने पृथ्वीराज को समाचार लिखा। पृथ्वीराज का छः कोस लौट कर कूच का मुकाम करना। ,,

१८ पृथ्वीराज का पंचाग्र तक सीधे शाहाबुद्दीन की सेना के रुख पर जाना और उधर से शाहाबुद्दीन की सेना का आना। ,,

१९ उसी समय कन्नौज के दूतों का यह समाचार जयचन्द से कहना। ,,

२० पृथ्वीराज का रेवातट आना सुन कर सुलतान का सेना सज कर चलना। ८८८

२१ पृथ्वीराज का कहना कि बहुत बड़े शत्रुरूपी मृगों का समूह शिकार करने को मिला। ,,

२२ राज्यमंत्रियों ने यह सम्मति दी कि अपने आप झगड़ा मोल लेना उचित नहीं किसी नीति द्वारा काम लेना ठीक है। ,,

२३ यह बात सुनकर सामंतों का मुसका कर कहना कि भारथ का बचन है कि रण में मरने से ही वीर का कल्याण है। ,,

२४ पज्जूनराय का कहना कि मैंने सब शत्रुओं को पराजित किया और शहाबुद्दीन को भी पकड़ा। अब भी उससे नहीं डरता। ८८६

२५ कैतराव का कहना कि शहाबुद्दीन की सेना से मिलान होना लाहौर के पास अनुमान किया जाता है अतएव अपनी सब तय्यारी कर लेना उचित है आगे जो आप की इच्छा हो। ,,

२६ रघुवंशराम का कहना कि हम सामंत लोग मंत्र क्या जानें केवल मरना जानते हैं, पहिले शाह को पकड़ा था अब भी पकड़ेंगे। ८६०

२७ कविचन्द का कहना कि हे गुज्जर गँवारी बातें न कहो इन्हीं बातों से राज्य का नाश होता है। हम सब के मरने पर राजा क्या करेगा। ,,

२८ पृथ्वीराज का कहना कि जो बात आगे आई है उसके लिये युद्ध का सामान करो। ,,

२९ पृथ्वीराज के घोड़ों की शोभा वर्णन। ८९१

३० आधी रात को दूत पृथ्वीराज के पास पहुंचा और समाचार दिया कि अट्ठारह हजार हाथी और अट्ठारह लाख सेना के साथ सुलतान लाहौर से चौदह कोस पर आ पहुंचा। ,,

३१ पृथ्वीराज ने दूत से पत्र लेकर पढ़ा—हिन्दुओं के दल में शोर मचगया। ८९२

३२ दूत का दरबार में आकर पृथ्वीराज से कहना कि मुसल्मान सेना चिनाब के पार आगई। चन्दपुण्डीर ने उसका रास्ता बाँध कर मुझे इधर भेजा है। ,,

३३ सुलतान का अपने सामंतों के साथ युद्ध के लिये प्रस्तुत होना। ,,

३४ शाहज़ादे का सर्दारों के साथ सेना हरावल रचना और सेना के मुख्य सर्दारों के नाम स्थान और उनका पराक्रम वर्णन। ८९३

३५ शहाबुद्दीन का इस पार ३० दूतों को रखकर चिनाब पार करना। ,,

३६ यह सुनकर पृथ्वीराज का क्रोध करना और दूत का कहना पुंडीर उसे रोके हुए हैं। ,,

३७ जहां पर सुलतान चिनाब उतरने वाला था वहीं पुण्डीर ने रास्ता रोका। घोर

युद्ध हुआ। चन्दपुण्डीर घायल होकर गिरा सुलतान चिनाब पार होने लगा ८९४
३८ सुलतान का चिनाब उतरना और चन्द पुण्डीर का गिरना देखकर दूतने बढ़ कर पृथ्वीराज को समाचार दिया। „
३९ पृथ्वीराज ने क्रोध के साथ प्रतिज्ञा की कि तब मैं सोमेश्वर का बेटा जो फिर सुलतान को कैद करूं। पृथ्वीराज ने चन्द्रव्यूह की रचना करके चढ़ाई की। ८९५
४० पञ्चमी मङ्गलवार को पृथ्वीराज ने चढ़ाई की। (कवि ने उस दिन के ग्रह स्थिति योग आदि का वर्णन किया है।) ८९५
४१ जिस प्रकार चक्रवाक, साधु, रोगी, निर्धन, विरह वियोगी लोग रात्रि के अवसान और सूर्योदय की इच्छा करते हैं उसी प्रकार पृथ्वीराज भी सूर्योदय को चाहता था। „
४२ पृथ्वीराज की सेना तथा चढ़ाई का वर्णन। ८९६
४३ दोनों ओर की सेनाओं के चमकते हुए अस्त्र शस्त्र और निशानों का वर्णन। ८९७
४४ जब दोनों सेनाएं साम्हने हुईं तब मेवारपति रावल समर सिंह ने आगे बढ़ कर युद्ध आरम्भ किया। „
४५ रावल, जैतपँवार चामँडराय, और हुसैन खां का क्रमानुसार हरावल में आक्रमण करना। पीछे सेना का पीछे से बढ़ना। „
४६ हिन्दू सेना की चन्द्र व्यूह रचना। ८९८
४७ दो पहर के समय चंदपुंडीर का तिरछा रुख देकर शत्रु सेना को दबाना। „
४८ पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन का सम्मुख घोर युद्ध होना। योगिनी भैरव आदि का आनन्द से नाचना। „
४९ सुलतान का घबराना। तातार खां का धैर्य दिलाना। ८९९
५० उक्त युद्ध की बसन्त ऋतु से उपमा वर्णन। „
५१ सोलंकी माधव राय से खिलजी खां से तलवार का युद्ध होने लगा। माधव राय की तलवार टूट गई तब वह कटार से लड़ने लगा। शत्रुओं ने अधर्म युद्ध से उसे मार गिराया। ९०१
५२ वीरगति से मरने पर मोक्ष पद पाने की प्रशंसा। „
५३ जैसिंह की वीरता और उस की वीर मृत्यु की प्रशंसा। „
५४ धीरपुंडीर के भाई की वीरता और उस के कमंध का खड़ा होना। ९०३ „
५५ पज्जूनराय के भाई पल्हानराय का खुरसान खां के हाथ से मारा जाना। „
५६ जैसिंह के भाई का मारा जाना। ९०३
५७ गोइन्दराय का तत्तार खां के हाथी और फीलवान को मार गिराना। „
५८ नरसिंहराय के सिर में घाव लगने से उस के गिर जाने पर चामुंड राय का उस की रक्षा करना। „
५९ रात होगई दूसरे दिन सबेरे फिर पृथ्वीराज ने शत्रुओं को आ घेरा। ९०४
६० जैतराय के भाई लक्ष्मणराय के मरते समय अप्सराओं का उस के पाने की इच्छा करना परन्तु उस का सूर्य्य लोक भेद कर मोक्ष पाना। „
६१ महादेव का लक्ष्मण का सिर अपनी माला के लिये लेना। „
६२ एक प्रहर दिन चढ़े जंघारा योगी ने त्रिशूल लेकर घोर युद्ध मचाया। ९०५
६३ शस्त्र सज कर सुलतान का युद्ध में टूटना। लंगरीराय का घोर युद्ध मचाना। लंगरीराय की वीरता की प्रशंसा। „
६४ लोहाने के वीरता का वर्णन। चौसठ

खांओं का मारा जाना। ९०६

९५ चौसठ खान मारे गए और तेरह हिन्दू सर्दार मारे गए। हिन्दू सर्दारों के नाम तथा उनका किस से युद्ध हुआ इसका वर्णन। ”

९६ दूसरे दिन तातार खां का शहाबुद्दीन को विकट व्यूह के मध्य में रख कर युद्ध करना और सामंतों का क्रोध कर के शाह की तरफ चढ़ना। ९०७

९७ खुरसान खां का सुलतान के वचन पर तैश में आकर घोर युद्ध मचाना। ९०८

९८ रघुवंसी के घोर युद्ध का वर्णन। ९०९

९९ लड़ाई के पीछे स्वर्ग में रम्भा ने मेनका से पूछा तूं उदास क्यों है? उसने उत्तर दिया कि आज किसी को वरन करने का अवसर नहीं मिला। ९१०

१०० रंम्भा ने कहा, कि इन वीरों ने या तो विष्णु लोक पाया या ये सूर्य में जा समाए। ”

१ हुसैन खां घोड़े से गिर पड़ा, उजबक खां खेत रहा, मारूफ़ खां, तत्तार खां सब पस्त हो गए, तब दूसरे दिन सबेरे सुलतान स्वयं तलवार लेकर लड़ने लगा। ”

१२ सुलतान ने एक बान से रघुवंश गुसाई को मारा, दूसरे से भीमभट्टी को, तीसरा बान हाथ का हाथही में रहा कि पृथ्वीराज ने उसे कमान डाल कर पकड़ लिया। ९११

१३ सुलतान को पकड़ कर और हुसैन खां तत्तार खां आदि को विजय करके पृथ्वीराज दिल्ली गए, चारों ओर जै जै कार हो गया। ”

१४ एक समय प्रसन्न होकर पृथ्वीराज ने सुलतान को छोड़ दिया। ”

१५ एक महीना तीन दिन कैद रख कर नौ हजार घोड़े और बहुत से माणिक्य मोति आदि लेकर सुलतान को गजनी भेज दिया। ९१२

---

(२८) अनंगपाल समय।

(पृष्ठ ९१३ से ९४३)

अनंगपाल दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को देकर तप करने चला गया था परंतु उसने पृथ्वीराज से फिर विग्रह क्यों किया इस कथा का वर्णन। ९१३

२ अनंगपाल के बद्रिकाश्रम जाने पर पृथ्वीराज का दिल्ली का निर्द्वंद शासन करना। ”

३ यह समाचार देश देशान्तर में फैल गया कि पृथ्वीराज दिल्ली में निर्द्वंद राज्य करता हुआ स्वजनों को मान देता है और उपकार को न मान कर अनंगपाल की प्रजा को बड़ा दुःख देता है। ”

४ अग्नि, पाहुना, विप्र तस्कर आदि परदुःख नहीं जानते पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करता है और अनंगपाल पराए की भांति तप करता है। ९१४

५ सोमेश्वर अजमेर में राज करता है और पृथ्वीराज को दिल्ली मिली यह सुनकर मालवापति महिपाल को बड़ा बुरा लगा। ”

६ मालवापति ने चारों ओर राजाओं को पत्र लिखकर बुलाया। गक्खर, गुग्गड, मदौड़ और सोरपुर के राजा आए। सलाह हुई कि पहिले सोमेश्वर को जीत कर तब दिल्ली पर चढ़ाई की जाय। ”

७ मालवापति का अजमेर पर चढ़ाई करने के लिये सेना सहित चंबल नदी पार होना। ९१५

८ शत्रुश्रा के श्राने का समाचार सुन कर सोमेश्वर अपने सामन्तों को इकट्ठा कर के बोला कि पथ्वीराज को तो अनंगपाल ने बुला लिया इधर सत्रु चढे हैं; ऐसा न हो की कायरता का धब्बा लगे और नाम हँसा जाय। ६१५
९ सामंतों ने सलाह दी कि शत्रु प्रबल हैं इससे इनको रात के समय छल कर के जीतना चाहिए। ,,
१० सोमेश्वर ने कहा कि तुमने नीति ठीक कही पर रात को छापा मारना अधर्म है इसमें बड़ी निन्दा होगी। ६१६
११ सामंतों ने कहा कि सेतु बाँधने में श्री-राम ने, सुग्रीव ने बालि को मारने में, नृसिंह ने हिरण्यकश्यप को मारने में और श्रीकृष्ण ने कंस को मारने में छल किया, इसमें कोई दूषण नहीं है। ,,
१२ सोमेश्वर के सामंतों का युद्ध के लिये तय्यारी करना। ६१७
१३ पट्टन के यादव राजा ने श्राकर डेरा डाला। अजमेर जीतने का उत्साह जी में भरा था। ६१८
१४ चारों ओर खलबली मच गई। रुद्र गण तथा नारद आनन्द से नाचने लगे। ,,
१५ योद्धाओं की तय्यारी तथा उनके उ-त्साह का वर्णन। ,,
१६ सोमेश्वर ने पिछली रात धावा कर दिया शत्रु के पैर उखड़ गए। ६१६
१७ संसार में एक मात्र कविकथित यश के अतिरिक्त और कुछ अमर नहीं है। ६२०
१८ यादव राज ऐसा घायल होकर गिरा कि मुँह से बोल न सकता था। ,,
१६ सोमेश्वर उसे घर उठा लाया बड़ा यत्न किया। एक महीना २० दिन में अच्छे होकर राजा ने आरोग्य स्नान किया। सोमेश्वर ने बहुत दान दिया। ६
२० पृथ्वीराज ने यह समाचार सुना। उसने प्रतिज्ञा की कि जब घात पाऊंगा शत्रुओं को मजा चखाऊंगा।
२१ इधर दिल्ली की प्रजा ने बद्रिकाश्रम में अनंगपाल के पास जाकर पुकारा कि हे महाराज चौहान के अन्याय से हम लोगों को बचाइए।
२२ अनंगपाल ने क्रुद्ध होकर अपने मंत्री को बुलाकर समाचार कहा। मंत्री ने कहा कि पृथ्वी के विषय में बाप बेटे का विश्वास न करना चाहिए। ६
२३ राज्य प्राप्त करने के लिये गत एति-हासिक घटनाओं का वर्णन।
२४ तूंअर वंश ने सर्वदा भूल की, पहिले किल्ली को उखाड़ा फिर आपने पृथ्वी-राज को राज्य दिया।
२५ राजा, हाथी, घोड़ा, स्वर्ण इत्यादि सब दे दे परन्तु राज्य की सर्पमणि के समान रक्षा करे। ,,
२६ अनङ्गपाल के आग्रह करने पर मंत्री लाचार होकर दिल्ली की ओर चला। ६२
२७ पृथ्वीराज से मिल कर मंत्री ने कहा कि अनङ्गपाल आप पर अप्रसन्न हैं उन्होंने आज्ञा दी है कि हमारा राज्य हमें लौटा दो या हम से आकर मिलो। ,,
२८ इस पर पृथ्वीराज का क्रोधित होना। ,,
२९ बसीठ का कहना कि जिस का राज्य लिया आप उसी पर क्रोध करते हैं। ,,
३० पृथ्वीराज का कहना कि पाई हुई पृथ्वी कायर छोड़ते हैं। ,,
३१ मंत्री का यह सुन कर उदास मन हो चला आना। ६२

३२ मंत्री ने अनंगपाल से आकर कहा कि मैं ने तो पहिलेही कहा था, यह दैत्यवंशी चौहान राज्य कभी न लौटावेगा। पृथ्वी तो आप दे चुके अब बात न खोइए। ९२३

३३ अनंगपाल ने एक भी न माना और वह सेना सज कर दिल्ली पर चढ़ आया। पृथ्वीराज नाना की मर्याद को सोचने लगा और उसने कमास को बुला कर पूछा कि मेरी सांप छछूंदर की गति हुई है अब क्या करना चाहिए। ,,

३४ जो लड़ाई करता हूं तो अपनी मा के पिता (नाना) से लड़ता हूं, और जो छोड़ देता हूं तो अपनी हीनता प्रगट होती है, सो अब क्या न्याय है इस पर तुम अपना मत दो। ६२४

३५ कैमास ने कहा कि न्याय तो यह है कि कलह न कीजिए इन्होंने पृथ्वी दी है इनको आप न दीजिए, जो न मानें यहीं आकर भिड़ें तो फिर लड़ना चाहिए। ,,

३६ अनंगपाल ने धूम धाम से युद्ध आरम्भ किया। कई दिन तक लड़ाई हुई अन्त में अनंगपाल की हार हुई। ,,

३७ हार कर फिर अनंगपाल का बद्रिकाश्रम लौट जाना। ६२५

३८ आधी सेना को वहीं और आधी को अंजमेर के पास छोड़ कर अनंगपाल लौट गया। ,,

३९ मंत्री सुमन्त की सलाह से अनंगपाल ने माधो भाट को सुलतान शहाबुद्दीन गोरी के पास सहायता को लिये भेजा। ,,

४० माधो भाट जाकर सुलतान से मिला, वह तुरन्त पृथ्वीराज को जीतने की इच्छा से चढ़ आया। ६२५

४१ नीतीराव खत्री ने अनंगपाल के गोरी के पास दूत भेजने का समाचार पृथ्वीराज को दिया। ६२६

४२ पृथ्वीराज ने अनंगपाल से दूत भेज कर कहलाया कि आपको पृथ्वी देने ही के समय सोच लेना था अब जो हमने हाथ फैला कर ले ली तो फिर क्यों ऐसा करते हैं? ,,

४३ जैसे बादल से बूंद गिर कर हवा से पेड़ के पत्ते गिर कर, आकाश से तारे टूट कर फिर उलटे नहीं जा सकते, वैसेही हमें पृथ्वी देकर इस जन्म में आप उलटी नहीं पा सकते, आप सुख से बद्रिकाश्रम में जाकर तपस्या कीजिए। ,,

४४ आप सुलतान गोरी के भरमाने में न आइए उसे तो हमने कई बार बांध बांध कर छोड़ दिया है। ९२७

४५ हरिद्वार में आकर दूत अनंगपाल से मिला। संदेसा सुनते ही अनंगपाल क्रोध से उछल उठा। ,,

४६ अनंगपाल ने क्रुद्ध होकर पत्र लिख कर दूत को गजनी की ओर भेजा। पत्र में लिखा कि आप पत्र पाते ही आइए, हम और आप मिल कर दिल्ली को विजय कर ,,

४७ दूत ने आकर अनंगपाल के राज्यदान करने फिर उसे लौटाना चाहने तथा पृथ्वीराज के अस्वीकार करने अनंगपाल के हरिद्वार आने का समाचार सुलतान को सुनाया सुलतान सुनते ही चढ़ चला। ६२८

४८ सुलतान शहाबुद्दीन की सेना की चढ़ाई तथा सर्दारों का वर्णन। ,,

४६ सिन्धु पार उतरकर वीस हजार सेना साथ देकर सुलतान ने तत्तार खां को अनंगपाल के लाने के लिये हरिद्वार भेजा तातार खां के आने का समाचार सुनकर अनंगपाल बड़े हर्ष से उससे मिला । ६२६

५० अनंगपाल ने बहुत से घोड़े मोल लिए और सेना भरती करके लड़ाई की तैयारी की । „

५१ तीन सौ बीर जो अनंगपाल के साथ वैरागी हो गए थे वे भी तलवार बांध कर लड़ने को तय्यार हुए । „

५२ तत्तार खां ने रात भर रह कर सबेरे उठते ही अनंगपाल के साथ कूच किया। अनंगपाल को दो योजन पर रोक कर उसने आगे बढ़ कर शाह को समाचार दिया, सुलतान आकर अनंगपाल से मिला, दोनों एक साथ बड़े प्रेम के साथ सलाह करने लगे । ६३०

५३ अनंगपाल ने सब वृत्तांत सुनाया दोनों की सलाह हुई कि जो पृथ्वीराज आप हाजिर हो जावे तो उसे जीवदान करना चाहिए। सुलतान ने दूत के हाथ पृथ्वीराज के पास पत्र भेजा कि तुम बड़ा अनुचित करते हो जो राजा को राज नहीं सौंप देते और जो पृथ्वी न लौटाओ तो आकर युद्ध करो। पृथ्वीराज ने कहा ऐसी कोटि चढ़ाई क्यों न करें अनंगपाल अब राज्य उलटा नहीं पा सकता। ६३०

५४ पृथ्वीराज ने डंके पर चोट लगा कर सब सर्दारों के साथ कूच किया और दो योजन पर डेरा डाला। ६३२

५५ दूत ने आकर पृथ्वीराज के चढ़ने का समाचार सलतान से कहा । जो सब सरदार विरक्त होगए थे वे भी स्वामिकार्य्य के लिये लड़ने को प्रस्तुत हुए। ६३२

५६ सुलतान ने दूत से समाचार सुनकर चढ़ाई का हुक्म दिया। „

५७ पृथ्वीराज के चरों ने सुलतान के कूच का समाचार पृथ्वीराज को दिया जिसे सुनते ही वह भी लड़ाई के लिये चल पड़ा। „

५८ धूमधाम के साथ पृथ्वीराज सेना के साथ चला जब दोनों सेनाएँ एक दूसरे से दो कोस पर रह गई तब पृथ्वीराज ने डंके पर चोट दी। „

५९ पृथ्वीराज के पहुंचने का समाचार सुनते ही सुलतान ने अपने सरदारों को भी बढ़ने का हुक्म दिया। ६३३

६० आगे तत्तार खां को रक्खा मारूफ खां को बांई ओर खुरासान खां को दहिनी ओर और अनंगपाल को बीच में करके पीछे आप हो लिया। „

६१ पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना की व्यूह रचना की आगे कैमास को और पीछे चामंडराय को कर दिया। ६३४

६२ अपनी सेना को बीच में रक्खा और आज्ञा दी कि अनंगपाल को कोई मारे नहीं जीते ही पकड़ना चाहिए। „

६३ दोनों दलों का साम्हना हुआ कैमास ने युद्ध आरम्भ किया। „

६४ दोनों दलों का साम्हना होते ही घमासान युद्ध होने लगा। „

६५ कैमास ने शस्त्र सम्हाल कर युद्ध आरम्भ किया। युद्ध का वर्णन। „

६६ शहाबुद्दीन को चामुंडराय ने पकड़ लिया पृथ्वीराज की जै हुई सात हजार मुसलमान और पांच सौ हिन्दू मारे गए। ६३७

६७ पृथ्वीराज का सुलतान को कैद में भेजकर अनंगपाल को सादर दरबार में बुलाकर उनके पैर पड़ना। ६३७
६८ हाहिम राव को हुक्म देकर सुलतान को दरबार में बुलवाना, उसके आने पर पृथ्वीराज का अनंगपाल से कहना कि आप तो बुद्धिमान है आप इस शाह के बहकाने में क्यों आगए। „
६९ सरदार गहलौत ने कहा इस में महाराज अनंगपाल का कुछ दोष नहीं यह सब प्रपंच दीवान का रचा हुआ है। ६३८
७० चामुंडराय का कहना कि कुसंग का यही फल होता है। „
७१ सामंतों ने जितनी बातें कहीं सब अनंगपाल नीचा सिर किए सुनता रहा कुछ न बोला। „
७२ पृथ्वीराज का शाह को एक घोड़ा और सिरोपाव (खिलत) देकर छोड़ देना। „
७३ शहाबुद्दीन का घोड़े हाथी और दो लाख मुद्रा दंड देना और पृथ्वीराज का उसे सामंतों में बांट देना। ६३९
७४ म्लेच्छ को जीत कर पृथ्वीराज दिल्ली आया। „
७५ राजा से राव पज्जून, गोइन्द राव आदि सामन्त आकर मिले। „
७६ अनंगपाल का मंत्री से पूछना कि अब मुझे क्या करना उचित है। „
७७ मंत्री ने कहा कि महाराज आप अब बूढ़े हुए मृत्यु समय निकट है और पृथ्वीराज को आप दिल्ली दे चुके हैं अब इसका मोह छोड़ कर धर्म्म कर्म्म कीजिए। ६४०
७८ मंत्री का कहना कि संसार के सब पदार्थ नाशमान हैं इसकी चिंता न कीजिए। „
७९ रानी का सलाह देना कि पंजाब का आधा राज पृथ्वीराज से ले लो अथवा जो व्यास जी कहें सो करो। „
८० व्यास जी का कहना कि पृथ्वीराज को दिल्ली का राज्य करने दीजिए आप गुरु का ध्यान करके तप कीजिए। ६४१
८१ राज्य, धन, सम्मान मांगने से नहीं मिलते और न बल से स्नेह होता है। „
८२ मेरा मत मानो कि बद्रीनाथ जी की शरण में जाकर और कंद मूल खा कर तप करो। „
८३ पृथ्वीराज ने अनंगपाल की बड़ी सेवा की जब तेरह महीने बीत गए तब अनंगपाल ने पृथ्वीराज से कहा कि अब मुझे बद्रीनाथ पहुंचा दो वहां बैठ कर तप और भगवान का भजन करूं पृथ्वीराज ने कहा कि आप यहीं बैठ कर भजन कर सकते हैं। ६४२
८४ पृथ्वीराज ने बहुत समझाया पर अनंगपाल ने एक न माना उसे बद्रीनाथ जाने की लौ लगी रही। तब पृथ्वीराज ने बड़े आदर के साथ दस लाख रुपया सात नौकर और दस ब्राह्मण साथ देकर उन्हें बद्रीनाथ पहुंचा दिया अनंगपाल वहां जाकर तप करने लगा। „
८५ पृथ्वीराज की सहानुभूति दयालुता और वीरता की प्रशंसा। ६४३

पृथ्वीराजरासो।

भाग दूसरा।

अथ भोलाराय समय लिख्यते।

(बारहवां समय)

भोलाराय भीमदेव का बल कथन और राजा सलष के संभरि-राज (सोमेश्वर) की सहायता का वर्णन।

कवित्त ॥ छत्तीसा[1] सुक्रवार। चैत पुष सित दुति पारिय ॥
भोराराय भिमंग। सोर ग्रिवपुर प्रज्जारिय ॥
कारज सांइ सलष्य। राज संभर्हि संभारिय ॥
चाहुआन सामंत। मंत कैमास हकारिय ॥
घरजान पवारह पट्टना। बों पज्जूनह दुराइ दिष ॥
कैबार कथ्य नथ्यह तनी। श्री राज क्रिसान पष ॥ छं० ॥ १ ॥

शुकी का शुक से इँच्छनी के विवाह की सविस्तर कथा पूछना।

दूहा ॥ जंपि सुकी सुक पेम करि। आदि अंत जो वत्त ॥
इंच्छिनि पिथ्यह व्याह बिधि। सुष्ष सुनंने गत्त ॥ छं० ॥ २ ॥

इधर चैाहन तपता था उधर आबू का राजा सलष पंवार बड़ा प्रतापी था उसका वर्णन।

कवित्त ॥ तपै तेज चहुआन। भान ढिल्ली इच्छा वर ॥
बीर रूप उप्पज्यौ। पच्च रष्षै जुगिगनि भर ॥
आबू वै अनभंग। जंग षंगै पल हारन ॥
जोग भोग पग मग्ग। बीर[2] षिची अवधारन ॥

---

(१) मो-चैावालीसा।
(२) को-बीर।

कित्ती अनंत सलषेज भुअ । भुअ प्रमान पन रष्षई ॥
षव बरन सरन भुजदंड अर । दल दुज्जन भिर भष्षई ॥ छं० ॥ ३ ॥

सलष के एक बेटा जैत नाम का और मंदोदरी और इंछिनी नाम की दो बेटियां थीं।

दूहा ॥ जैत पुत्र सलषेज लघु । इंच्छिनि नाम कुमारि ॥
बर मंदोदरी सुंदरि । विनय[1] रूप उनिहार ॥ छं० ॥ ४ ॥

बड़ी मंदोदरी का विवाह भीमदेव के साथ होना।

गाथा ॥ सो अप्पी बर अहं । रुद्रं बर माल थानयं मेवं ॥
विद्वं सिद्व सुपुत्वं । नामं जास भीमयं रायं[2] ॥ छं० ॥ ५ ॥

भोला भीमदेव के बल पराक्रम का वर्णन।

कवित्त ॥ अनहलपुर आषंन । राज मे[illegible]ा भीमंदे ॥
देसी गुज्जर षंड । डंड दरि[illegible] बंदे ॥
सेन सबल चतुरंग । बीर बी[illegible] स तुंगं ॥
अति उतंग अनभंग । विषन[illegible] बल जंगं ॥
कलि[3]काल किति मित्ती इ[illegible] ..पलटि प्रीति[4] कल जुग करन ॥
सोरा नरिंद भीमंग बल । उभै दीन तक्के सरन ॥ छं० ॥ ६ ॥

गाथा ॥ तक्के चालुक रायं । चैलोकं चरनयं सरनं ॥
भुरषंडं जं बलयं । सा बलयं भीमयं राजं ॥ छं० ॥ ७ ॥

भीमदेव के मंत्री अमरसिंह सेवरा का वर्णन।

कवित्त ॥ भीमराज राजिंद । राइ राइन उद्धारन ॥
अति अचंभ बलरूप । दुग्गपति सेव सधारन ॥
बावन बट[5] बटवान । तुंग तेरह हिंसारं ॥
सिद्ध बटी बटवान । थान थट्टा घर धारं[6] ॥

(१) मो–विनय। (२) मो–सो भीम नर रायं।
(३) को इ ए–किल।
(४) मो–रीति।
(५) मो–वट।
(६) मो–प्रति में "थान थट्टा घर धारं" के स्थान पर "तुंग तेरह हिंसारं" है।

आरब्ध गरव दरव दिल दल । चालुक्कां चित्तां चढ्यौ ॥
मंची सुराय[१] जूना जवर । अमरसिंघ-सेवर-पढ्यौ ॥ छं० ॥ ८ ॥

मंत्र बल से अमर सिंह का अमावस को चन्द्रमा उगाना, ब्राह्मणों का सिर मुंडा देना, दक्षिण और पश्चिम दिशा को जीतना ।

कवित्त ॥ जिन अमरसीष सेवरा । चंद मावसि उगाइय ॥
जिन अमर सीष सेवरा । बिप्र सब सीस मुडाइय ॥
कषर कूर पाषंड । चंड चारन मिळिबत्तं ॥
दुज दोर्पजर षेम । देषि उत्तर घन चित्तं ॥
नर नाग देव छंद्दां चलै । आकर्षे आर्वत कर ॥
चिदरभ देस दष्षिन दिसा । सब जित्ती पच्छिम सुधर ॥ छं० ॥ ९ ॥

इंच्छिनी के रूप की बड़ाई सुन भीम का उसपर आसक्त होना ।

कवित्त ॥ जहोंरा पारक्क । सबै होढा पज्जाई ॥
बारी बंभन बास । ठाम ठट्ठा छड्डाई ॥
मांची माल्हन हंस । पालि आबू धर लग्गा ॥
आगेंची सलषान । दई मंदोदरि सुग्गा ॥
आचंभ रूप इंच्छिनि सुनी । जन जन बत्त बषानियां ॥
भोरा अभंग लग्यौ रहषि । काम करक्कै प्रानियां ॥ छं० ॥ १० ॥

आबू की ओर से आनेवालों के मुंह से इंच्छिनी की बड़ाई सुन सुन जैन धर्मी भीमदेव भीतर ही भीतर कामातुर हो व्याकुल हुआ ।

कवित्त ॥ द्रव्य दार उदार । मरन कज्जे मुष नब्बै ॥
कैवत्ता आबूअ । दिसान जितिचि मुष लब्बै ॥
जेषा तुंग तुरंग । चंग जेवाईन चढ्डी ॥
पांवारी कथ ऊंठ । तेसु पचिचानी चढ्डी ॥

(१) ए-सुराइ ।

श्रोतांन राग लग्गे लिवै[1]। पहनवै पहैसरां॥
जै जैन प्रंम उग्गाइयां। तेन कूर लग्गौ करां॥ छं०॥ ११॥

देखने सुनने और स्वप्न में मिलने से कामान्ध होकर भीमदेव रात दिन इंच्छिनी के ध्यान में पागल सा हो गया।

दूहा॥ मादक उनमादक नयन। सोषन द्रप्पन बान॥
इक सुपनंतर राग सुनि। इक दिष्टान विनान॥ छं०॥ १२॥

कवित्त॥ मादक उनमादक्को। समीप[2] सोषन अरु द्रप्पन॥
बिय असोक अरबिंद। चंद चंदन उर जप्पन॥
विमल नाल उचान। सुबनि नामे इंच्छिनि सज॥
पहनवै पहयौ। लाज भग्गी[3] बर अग्गज॥
सपनानुराग बढ्ढ्यौ न्रपति। अरु श्रोतानन राग भय॥
पंमार सोचि टारै सलष। अनष एन आबू सुलय॥ छं०॥ १३॥

गाथा॥ दिष्टानं श्रोतानं। सुपनानं राग्यं छंनी॥
भीनं राग प्रमानं। चालुक्क रोग लभियं तीनं॥ छं०॥ १४॥ रू०॥ १४॥

गाथा॥ रोगंता मनमंथं। विद्धवं चंपि अंग अंगाइं॥
सुनि एंच्छिनीय नामं। क्रुट्टं सुचेव लघ्य अप्पाइं॥ छं०॥ १५॥
लष्यं लष्य लषिज्जै। इंच्छिनियं नामाइं क्रुट्ट सचाइं॥
चाउ दिसा बिभूति। चतुरंगं गंज्जियं भीमं॥ छं०॥ १६॥

भीमदेव का राजा सलष के पास अपने प्रधान को पत्र देकर भेजना कि इंच्छिनी का विवाह मेरे साथ करदो और जो पूर्व वाग्दान के अनुसार चौहान को दोगे तो तुम्हारा भला न होगा॥

कवित्त॥ तिन प्रधान पट्टाइय। लिष्षि आबू दिसि रायं॥
तुम बड्डे घर बड्डे। बानि बड्डी चित चायं॥

(१) मो-लवै।
(२) मो-सुद्धि।
(३) मो-भग्गी।

सेंध सगप्पन सध्धौ। भूरि चालुक्क परिद्धारौं ॥
पञ्जाई दो वार। बाल बंधइ हकारीं ॥
नग हेम मुत्ति मानिक्क घन। कहि न जाइ कथ्या लिपीं ॥
इंच्छिनि सुचित्त चहुआन बर। तौ आबू गिरि सर[1] भयौं ॥छं०॥१७॥

सलष के बेटे जैतसी की वीरता का वर्णन, भीमदेव के दूत का आबू पहुंच कर राजा सलष से मिलना।

छंद पद्धरी ॥ सज्जी सुभीम चतुरंग लच्छ। पट्टाय सलष पावार पच्छ ॥
तस पुत्र नाम जैतसी वीर। जित्तियां सिंघ वही सधीर ॥ छं० १८ ॥
रावन सुमेघनद्दच[2] समान। भंजई इन्द्र आरूढ थान ॥
दून भिरवि बढ्ढि वषयेल ब्रम्ह। रवि आस रंग पंमार अब्ब ॥ छं० ॥१९॥
तिन बंधु भीम भ्रम्मीरसेन। मेवाति भंजि ढिल्ली बसेन ॥
दैवत्त वांध द्रिग कमलरुप। अनपुच्छ लोइ जानियै भूप ॥ छं० ॥२०॥
द्रिग धरनि चरनि सलषेस वीर। भंजइ जाइ धवलद सधीर ॥
बंभन सुवास पट्टन प्रजारि। तां समंद भीम भंडन सुरारि[3] ॥ छं० ॥ २१ ॥
तिही दूत आय परनाम कीन। परमार चध्य कागद सुदीन[4] ॥ छं० ॥ २२ ॥

पंवार सलष की प्रशंसा।

अरिल्ल ॥ पांवारी परिगिह प्रनिक्कीनी। वल कीनें वज्जी रस भीनी ॥
जिन भ्रम घरा भारथ धर लीनी। तीनीं पन कित्ती रसभीनी ॥ छं० ॥ २३ ॥
गाथा ॥ कित्ती किंत्ति गनिज्जै। जानिज्जा सलषयं देवं ॥
सैसव वै पौगंडं। किसोरं ब्रद्दयौ जमयं[5] ॥ छं० ॥ २४ ॥
गाथा ॥ पची पव गनिज्जै। मानिज्जै[6] कित्तियौ गुनयं ॥
सीयं टून प्रमानं। साहसं तेव सलषयौ राजं ॥ छं० ॥ २५ ॥

पंवार सलष पर चालुक्य भीमदेव का जंपना और पत्र

(१) को० ब ह्न सायर।
(२) को० ह्न ए–नद्दह।
(३) मो–मडन हरारि।
(४) मो० में यह पद नहीं है।
(५) मो–सजयं।
(६) को० ह्न ए–मंडिज्जै।

में लिखना कि मन्दोदरी दिया है अब इंच्छिनी को भी देओ नहीं तो आबू की गद्दी से हाथ धोओगे ।

कवित्त ॥ पतिपचार भोरा सु । बीर जंप्यौ चालुक्कं ॥
रंक अजुह पमार । भीर जानी भरतक्कं ॥
अति उतंग भारथ सु । चंग पथ पार्थं न मानिय ॥
बेनतेय सुत इंद्र । करन कित्ती जिन ठानिय ॥
सच्छन उतंग इंच्छिनि सुनिय । तिन चालुक्क न वीसरिय ॥
मंदोद मंद मंदोदरिय । सै कग्गर फिर दूसरिय ॥ छं॥ २६ ॥
दूहा ॥ कै इंच्छिनि परनाय सुदि । रष्षि सगप्पन संधि ॥
जौ चित्तै चहुआन कों । गढ़ तें नष्षौं बंधि ॥ छं० ॥ २७ ॥

भीमदेव के प्रधान को पांच दिन तक आदर के साथ राजा सलष का रखना, छठें दिन दरबार में आ उसका पत्र और भेट उपस्थि करना ।

कविश ॥ तिन प्रधान आवंत । अरघ सांई सलष्ष दिय ॥
दिवस पंच भोजंन । दुजन आदर अदब्ब किय ॥
षट्ट अग्ग संभ्भइसु । पान कग्गर कर अप्यौ ॥
रस रसांन गुज्जरह । नरिंद रायं गन थप्यौ ॥
आरब्ब तेज ताजी तिसत्त । जर जरीन आभरन बर ॥
देषंत भेष लग्यौ पनै ॥ दुज्ज सुदीन रिझ्झय सुनर ॥
छं० ॥ २८ ॥

सलष की वीरता की प्रशंसा और उसपर चालुक्य भीमदेव के कमर कसने का वर्णन ॥

दूहा ॥ अब्बू वै चै गै समर । समर सप्पन तेज ॥
समर उभै समरंग करि । समर सुपुज्जै हेज ॥ छं० ॥ २९ ॥
कुंडलिया ॥ षेमकरन षंगार भर । बर उद्धरन नरिंद ॥
भीमजैत परनायपति । बर पचार बर चंद ॥
बर पचार बर चंद । नरन रूपह नाराइन ॥

अब्बू वै द्रुग भान। अब्बु वंध्यौ जिहि पायन ॥
ता उप्पर चालुक्क। वीर वंधी निम सीमह ॥
नर न करन करतार। कन्ह कुंभह वर भीमह ॥ छं० ॥ ३० ॥

राजा सलष और उसके पुत्र जैतसी की गुणग्राहकता और उदारता का वर्णन ॥

कवित्त ॥ जै अब्बू वै भार। लाज अब्बू गज रघ्यौ ॥
मान प्रमान समद्दान। अंग कवितनं कवि [1] सघ्यौ ॥
डोलौं संमन होर। घाइ वज्जै रस भीरं ॥
सलष सुनन पामार। समद लज्जा मुष नीरं ॥
मिलि मंत तंत इक्क सु करन। करक्क कसस सगुनं सुवर [2] ॥
संवरन मंत मंतह रवन। भान दान दिष्षे सुवर ॥ छं० ॥ ३१ ॥

चालुक्य को मंदोदरी देकर नाता किया, परंतु भीमदेव ने इंछिनी के रूप पर मोहित हो अपने प्रधान को भेजा ॥

चौपाई ॥ मंदोदरी दीनं पामारं। वर चालुक्क सरप्पन भारं ॥
सुनि इंच्छिनी तनरति अवतारं। पठय दिये परधान विचारं ॥ ३२ ॥

सलष ने विचार किया उसे वह प्राण देकर भी न पलटेगा ॥

चौपाई ॥ अब्बू वै ढूजो न विचारै। गढ़ अब्बू किरि उंच करारै ॥
जो इंच्छिनि इच्छन वर अप्पै [3]। गंधि करि प्रान मान गढ रप्पै [4] ॥
छं० ॥ ३३ ॥

भीमदेव का पत्र पढ़ कर जैतसी का क्रुद्ध होना ॥

छंदचोटक ॥ नर रिमझय देषि रसाल रसं। जिवदेव नरिंद किये बसयं ॥
जर पहम रक्षत अंबरं। रज कंमि फिरंगन संमरयं ॥ छं० ॥ ३४ ॥
चमक्क वन क्रुव बघक्क दुनं। न फिरै गिन चप्पन सीस धिनं ॥
अति उंच उतंग तुरंग तुरं। धरि चंपि गिलंद उवंद्द पुरं ॥ छं० ॥ ३५ ॥

---

(१) मो-तत्त। (२) मो-सुचर।
(३) को० क० ए-रप्पै। (४) ए-गप्पै।

निमिषं जुग जोजनयं बिसष। चित चंचल नारि चक्रं सुरषं ॥
घनसार बिहरात आभरनं। अजु आजु निसा दिन सादरनं ॥ छं० ॥ ३६ ॥
उर मंदोदरि सुंदरीयं। नित पच्छति इंच्छिनि सुंभरयं ॥
इति दच्छिय कग्गर बंचिनियं। तहां जैतकुमार उद्यौ सुनियं ॥ छं० ॥ ३७ ॥

जैतसिंह का तलवार संभाल कर कहना कि भीमदेव का मन पाषंड से आकर्षण आदि का मंत्र वश में करके बहुत बढ़ गया है पर उत्तर के क्षत्रियों से कभी काम नहीं पड़ा है ॥

कबित्त ॥ तेग झारि पंमारं। जैत जंग हथ्थ बत्त किय ॥
मंगै चैल सुगल्ह। तात अविवेक क्षिति दिय ॥
भोरा भीम नरिंद। बंध पाषंड प्रगट्टे ॥
आकर्षन मोहन मंच। जंच जुग जुग जे घट्टे ॥
धन द्रव्य देस बलि बल करन। जानै ना उत्तर अस्यौ ॥
धाराधि नाथ धारी धरनि॥ बहल बेल नायह धस्यौ[१] ॥ छं० ॥ ३८ ॥

गाथा ॥ न थंनी घन घत्ती। वग्ग तमस उज्जलौ परयं ॥
सोयं जैत कुमारं। भारथ ग्रेव नथ्थयो धरयं ॥ छं० ॥ ३९ ॥

जैतसी का कहना कि पाषंड से अपना बल बढ़ाकर भीमदेव अपने को अमर समझता है यह उसकी भूल है ॥

कबित्त ॥ तेगझार पामार। जैत जंग हथ्थ उचारिय ॥
अरे भीम पाषंड। सच डंड्ह हनि जारिय ॥
चैपुर धग्ग सुभूमि। दान विद्या अधिकारिय ॥
रूपदान रसग्यान। तत्त नर्ह मत्त बिचारिय ॥
भोरे सुमत्ति भुंचै अमर। त्रुद्धि समर रुधन सकल ॥
परधान बंध कीजै मतौ। रुथ जुत्तह षट्ठम कल ॥ छं० ॥ ४० ॥

भीमदेव के प्रधान का भोमदेव के बल की बड़ाई करके कहना कि वह पुंगलत गढ़, आबू, मंडोवर और अजमेर सब जीत लेगा ॥

(१) मो–इलोर।

कवित्त ॥ बंधि पारि परधान । थान थानह द्रव संचिय ॥
　　ता पच्छै हैगै भंडार । अप्पन घर पंत्तिय ॥
　　ता पच्छै सामंत । नाथ मिलि एक सुवत्तिय ॥
　　भोरा राइ दिसान । सैंध समपन की कथ्थिय ॥
　　आरब्ध तेज गढ़ उड्डरन । पेमकरन सिंगार सिर ॥
　　सुरदेस सलष सुत जैतसी । नव सुकोटि नागौर नर ॥ छं० ॥ ४१ ॥
दूहा ॥ घाट किराडू पारकर । लोद्रा चौ जालौर ॥
　　पुंगल गढ़ आबू सहित । मंडोवर अजमेर ॥ छं० ॥ ४२ ॥[1]
छंदचोटक ॥ नवकोटि महस्सल बीरवरं । दस अट्ठ सुसवुंद राज घरं ॥
　　　　सर नागत रष्षिय कोन वरं । धन धन्नि नरिंद सुलोह नरं॥ छं० ॥ ४३ ॥

राजा सलष का उत्तर देना कि गोवर्धनधर श्रीकृष्ण हमारी सहायता करेंगे ॥

साटक ॥ जा रष्या चय गर्व प्रोक्तिन रिषं, दावा नलं जालयं ॥
　　सोयं मातुल नंद बंधि सलिता[2], कावेरि नै प्रीतयं[3] ॥
　　जिं रष्यौ वर पानि प्रव्वत मघा, गोवर्द्धनं धारनं ॥
　　सोयं सा हरि रिष्यिंभुवति वरं, जो हठ्ठ गोक्लेश्वरं ॥ छं० ॥ ४४ ॥
छंदचोटक ॥ सिय मंति सुमंतिय तत्त गुरं । हरि रष्षिय बालक विप्पनरं ॥
　　जन लोकसु आंनिय बंध तपं । किलकाल सुगोकुल कालथपं ॥ छं० ॥४५॥
　　भयभोयमयं दिवनायवरं । हरि रष्षिय कूट सुअट्टधरं ॥
　　धर धार वरष्षिय मेघघनं । अर्क सुक्कि तुवंत्तन बुंदजनं ॥छं० ॥ ४६ ॥
　　कर कोमल पंकज पाइ हरी । करनो छल धाइय देव करी ॥
　　न्वप राज सुद्रोपद पुत्तवरं । किय कोटि दुकूल कला निकरं ॥ छं० ॥४७॥
　　रवि पंडव मंडव लष्षि ग्रहं । कुलधानिय पत्ति सुनत्त वहं ॥ छं० ॥ ४८ ॥
दूहा ॥ जिन रष्षी हरि भक्तिवर । देवष्य सम तेग ॥
　　दुहुन भंति मंडन मरन । सुर नर रष्षौ वेग ॥ छं० ॥ ४९ ॥

(१) यह दोहा मो० प्रति में नहीं है ।
(२) मो०—सरिता ।
(३) को०-कृ-ए-प्रालयं ।

कवित्त ॥ षेमकरन पंगार[1] । सद्दन गोइंद चिलोचन ॥
पंच स्रत पंचौ सुबंध । स्वामि संकट रन मोचन ॥
लै संक्या[2] सिर पांन[3] । सनों पंडिवति पंच सम ॥
गोइंद सलष नरिंद । जीति रष्षन भारत्थम ॥
उत्तरिय गढ्ढ आबूधनी । रचिय विनग आबू न्नपति ॥
कह्यौ सुभ्भत न्नप नीठ कै । स्वामि अंम रष्षन सुभति ॥ छं० ॥ ५० ॥

ऐसेही वाक्य जैतसी के भी कहने पर प्रधान का यह कह कर-
जाना कि सावधान रहना तुम्हे पर हम राजा को लेकर आवेंगे ।

दूहा ॥ हम कहि जैत सुतान सम ॥ गढ वपु रष्षौ सच्छ ॥
हम तुम जाइ सुराज पै । लैआवैं बर पच्छ ॥ छं० ॥ ५१ ॥[4]

राजा सलष का अपने यहां तयारी करना और इंछिनी को विवाहने के लिये पृथ्वीराज को पत्र लिखना ॥

कवित्त ॥ गय सलषानी राव । बीर आगर गढ रष्षै ॥
बर आबू की लाज । षेम कंनह स्थिर भष्षै ॥
बंधो राव धरंनि । बीर पामर सुर लष्षी ॥
प्रजा पुलंत नरेस । ग्राम चहूं दिसि रष्षी ॥
वर मुक्कि बीर धारह धनीयं । पथ्थराज परवान लिषि ॥
सोमेस पुत्त प्रथिराज कों , दै इंछिनि सगपन सुबिधि ॥ छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ बर उद्धरन नरिंद । षेम कंनह गढ साहिय ॥
जोग मग्ग लष्षियन । धग्ग मग्गह सुति पाइय ॥
बहुत सिद्ध साधन सुमंडि । जोग आरंभ बिचारिय ॥
मुक्कि त्रिगुन गुन गहै । हिंसा सहै कामनारिय ॥
हम परत भूमि पंचह सुधर । पच्छिलै सोधर चंपिहै ॥
गोइंद परै बड गुज्जरैं । आबूं आनि सुजंपिहै ॥ छं० ॥ ५३ ॥

---

(१) कृ० को० ए०—उद्धरन ।
(२) मो०—संुष्यो ।
(३) मो—भार ।
(४) मो० प्रति में यह दोहा नहीं है ।

भीम देव का सलष पर चढाई करने के लिये अपने सामंतों से सलाह और उन्हें उत्तेजित करना ॥

कवित्त ॥ आसोंजै रानिंग राव । परवत्त वेदानै ॥
सो वन गिरि संथान[1] । राव सामंत सिवानैं ॥
चारु चक्कि चालुक्क । राइ भोरा भुवपत्तिय ॥
कट्ठि अपी पंमार । षंडि कंडौ छन पत्तिय ॥
आरह उधाइ मंडली । गुज्जर राइ गरब्बियौ ॥
प्रथिराज राज राजंग गुर । तष्यि तरक्कस तष्यियौ ॥ छं० ॥ ५४ ॥

चालुक्य और चौहान से जो विवाह का झगड़ा पड़ा है उसका वर्णन चन्द करता है ॥

दूहा ॥ चालुक्का चहुआन सौं । बंधे तोरन माल ॥
ते कविचंद प्रकासिया । जे हुंदे दल चाल ॥ छं० ॥ ५५ ॥

जैतसिं का भीमदेव के संदेसे पर महा क्रोध प्रकाश करके पिता से कहना कि यह कभी न होना चाहिए ।

दूहा ॥ सलष कुंवर जैतह अनुज । मंगै भोरा राइ ॥
आवू तर उप्पर करौ । कै इंच्छिनि परनाइ ॥ छं० ॥ ५६ ॥

कवित्त ॥ नव जरिय जैत पामार । सलष नंदन इह कथ्थियं ॥
भोरा भंगुर राइ । राइ प्रज्जुन[2] मुष सथ्थिय ॥
रा भोजन भुंभ्र पत्ति । कुंनह कुंडल कतिमंडिय ॥
संस्त्र बस्त्र करि नस्त्र । तिनों दंतन तिन षंडियं ॥
गुज्जरिय ग्रब्ब गों उप्परिय । गेचरि गवं नचन कचै ॥
चालुक्क भष्य वध्यंतनो । किम अगट्ठ इंच्छनि लचै ॥ छं० ॥ ५७ ॥

दूहा ॥ जिन दोनौं जीयन मरन । दई चथ्थ चम तेक[3] ॥
और न चिंतन चिंतियै । सो रन रष्षैं एक[4] ॥ छं० ॥ ५८ ॥

---

(१) पृ० को० ए०—संधार ।
(२) को—प्रान ।
(३) मो—तेग ।
(४) मो—एग ।

कवित्त ॥ तब भीमवत्त सचपान । जैत बंधौ उच्चारिय ॥
भूमि तात अप्पनी । रुधिर छूटै गज सारिय ॥
आदि अवनि व्योहार । धनी धर धार न षंडै ।
धन लुट्टन गोत्रात । परत पुक्कारन छड्डं ॥
देषिये हीन घर घर फिरै । गहत्रतन वदश्रत्तनै ॥
निद्रा पियास क्षुध सोच[1] तजि । दुष्प सुष्प दुक्ख न गनै ॥ छं० ॥ ५८ ॥

दूहा ॥ वहश्र घर घर बुल्लियै । कुजस कहै सब कोइ[2] ॥
बहु उचार मुष उच्चरै । जुद्ध बिनाइ सधोइ ॥ छं० ॥ ६० ॥

सबकी सलाह का यही होना कि चौहान के पास पत्र भेजा जाय ॥

दूहा ॥ सकल परिग्गह एक किय । षट दिस पूजा सद्धि ॥
कागर दै चहुआन कीं । पठइय दूत समद्धि ॥ छं० ॥ ६१ ॥

दूत का दिल्ली में जाना और पृथ्वीराज को लड़ाई के लिये प्रचारना ॥

छंद हनूफाल ॥ परदि पुत्ति भेदि दोदि ढिल्लि दिस्सि संभरं ॥
सलष्य राज काम राज सुद्ध बत्त बिस्तरं ॥ छं० ॥ ६२ ॥
सरंन काज चालुकं सबालुकं समत्तियं ॥
रषे जु षेमसी करीं राज पत्ति षिचियं[3] ॥ छं० ॥ ६३ ॥
चढंत यं गिरा गिरंच [illegible] सुदक्षियं ॥
सतं सुषं जुसत्तसूर [illegible] वल्लियं[4] ॥ छं० ॥ ६४ ॥
सुनंत मंच मंचियं ससीम पुच सज्जियं ॥
सुसेन सोभ सोभिकं सुवित्त छच छज्जियं[5] ॥ छं० ॥ ६५ ॥

सलष का पत्र पढ़कर पृथ्वीराज का प्रसन्न होना ॥

दूहा ॥ सुनि कग्गर न्टपराज प्रथु । भो आनंद सुभाइ ॥
मानौं बच्छी सूक ते । बीरा रस जल पाइ ॥ छं० ॥ ६६ ॥

(१) मो०—सुध सोह ।
(२) मो—सोइ ।
(३) को—क्र-ए—पविर्य ।
(४) मो०—सतं सुषं जुसत्त पच सूर पच वल्लियं ।
(५) क्र-को-ए—सज्जियं ।

मंत्री को पृथ्वीराज ने पांच हाथी, सौ घोड़े, पांच सौ रुपया आदि दिया और आप सलष की राजधानी की ओर गया, यह सुनकर भीमदेव कुढ़गया ॥

कवित्त ॥ पंच हस्ति सत बाजि । द्रव्य दीनो सत पंचं ॥
धरमत्ती सेवान । दियो सिंगार सुपंचं ॥
तेग एक पुरसानि । इक्क माला गुन दानं ॥
आदर संजुत बोल । मुक्कि मंत्री अगिवानं ॥
संभोग राज सोमेस सुत्र । सलष राज कीनौ गवन ॥
सुनि बात राव भोरंग चिय । मनौ घाव दीनौ लवन ॥ छं० ॥ ६७ ॥

दूहा ॥ करि सुधार भीमंग सो । चल्यो जैत कुंचार ॥
पेमकरन षंगार कौं । दै सिर उप्पर भार ॥ छं० ॥ ६८ ॥

इंछिनी का पृथ्वीराज से व्याहा जाना सुनकर भीमदेव का सरदारों से सलाह करना ॥

दूहा ॥ गढ सारौ सुनि भीम ने । कन्यावर प्रथिराज ॥
बोलि मंचि सज्जन कह्यौ । दुहूं बाजएं बाज ॥ छं० ॥ ६९ ॥

भीमदेव का सलष पर क्रोध प्रकाश करना और दिल्ली दूत भेजना की उसे चहुआन शरण न रक्खे ॥

छंद पद्धरी ॥ सं बात सुनिय सलेषज बीर । परि तत्त तेल जनु बूंद नीर ॥
प्रजरंत रोस चालुक्क भान । धर धरिग धरा थल संक मान ॥ छं० ॥ ७० ॥
बंधु समेत पाताल मेत । जमराज पून को करे चेत ॥
कंकिनी पास पीठी सिकाइ । को तिरै समुद बिन वच्य पाइ ॥ छं० ॥ ७१ ॥
को बच्य सिंघ पुच्छी जगाइ । को सेष नाग मनि सीस बाइ ॥
को काल ग्रेव गहै षंषि वच्य । धालै सु कौन तन अग्गि वच्य ॥ छं० ॥ ७२ ॥
रष्षै सु कौन चालुक्क पूंन । संमझौ कौन चैलोक सून ॥
मैं सुन्यौ झंन जुग्गिनि पुरेस । परमार रष्षि अप मध्यदेस ॥ छं० ॥ ७३ ॥
ज्यों पियौ कष्य दावानलेस । त्यौं पिंड गह्नु चालुक्क देस ॥

गढ चढै मान मन धरिग भार। सम करौं जारि संपारसार[1] ॥ छं० ॥ ७४ ॥
मुक्कले दूत ढिल्लीय थान। रष्षै न सरन ज्यौं चाहुआन ॥ छं० ॥ ७५ ॥

भीमदेव का चारो ओर मित्र राजाओं की सेना बुलाना और चढ़ाई की तयारी करना।

कवित्त ॥ जपि भोरा भीमंग। अंग कंप्पै रस बीरह ॥
त्रिषम झार उद्धार। बारि बोरैं अरि नीरह ॥
दिसि[2] दिसान कग्गर। प्रमान पट्टे पट्टनवै ॥
बारिधि बंदर सिंधु। बाज सोरठ ठट्ठनवै ॥
कच्छे न जथ्थ जद्दव जद्दर। सेन इक्क भए आनि भर ॥
चालुक्क राइ चाळंत दल। अम्मर घुम्मर घुमर वर ॥ छं० ॥ ७६ ॥

आबू पर चढ़ाई की तयारी।

कवित्त ॥ वर गिरनार नरेस। कियो साहस चालुक्की ॥
सोचागै कट्टीर। सेन बंधे भुअलुक्की ॥
आबू उप्पर कूच। बीर भीमंदे दिज्जै ॥
बर निसान सुर गज्ज। गज्जि[3] जैजै अरि पिज्जै ॥
सद्दनाद्द न फेरिय बीर बजि। सिंधुअ राग सु आदरी ॥
पंमार भीम पूजी सद्दर। धजी कूच गुन गहरी ॥ छं० ॥ ७७ ॥

भीमदेव की सेना के कूच की धूम का वर्णन।

छंद भुजंगप्रयात ॥ धरा धूरि पूरं। स्थिरं सेत नेतं। षहं षंड षंडं। उड़ी रैंन रेतं ॥
मदं गधं भैारं। लगे भैार भारं ॥ मनौं कज्जलं कूट। कालषंठ थारं ॥ छं० ॥ ७८ ॥
ढलं ढाल ढालैं। चलै श्रंन श्रंनं। मनौं कोलि पंचं। रगंचा सुश्रंनं ॥
चलें चैांर चावद्दिस वात पत्तं। मनौं भैारयं भैार वासंत मत्तं ॥ छं० ॥ ७९ ॥
नवं नद्द नीसान वज्ज अघातं। गजै गैंन कै सिंघ कै गिगिरातं ॥
नवं नद्द नफ्फेरि भेरी सभालं। तरक्कंत तेगं मनौ बिज्जु नालं ॥ छं० ॥ ८० ॥

(१) मो—झार
(२) को० कृ० ए०—दस।
(३) को० कृ० ए—गज्जि।

करक्के नरं पाल पग्गं पनक्कैं । मनौं काल हथ्थं सुविज्जू झलक्कैं ॥
जलं वेथलं वेथलें तथ्थ नीरं । मनौं नंषियं बान रघुनाथ वीरं ॥ छं० ॥ ८१ ॥
जलं वेत षुट्टी वनं वेत तुट्टी । थलं वेत कुट्टी फनं. वेत उट्टी ॥
धरं रेन उड्डी सुलग्गै अभानं । दलं वेन बढ्ढी पयानं पयानं ॥ छं ॥ ८२ ॥
करी आनि सेना सुआबू गिरद्दं । मनौं पारसं चंद आभा सरद्दं ॥
कवी वीय ओपंम चित्तं विचारी । उरं हूव माला सिवं ज्यौं अधारी ॥ छं० ॥८३॥
चिहूं कोर डेरा कहूं पीत सेतं । मनौं ग्रीषमं अंत उट्ठि मेघ मेतं ॥ छं ॥ ८४ ॥
गाथा ॥ आभा सरदं प्रमानं । सेनं सज चालुक्कं वीरं ॥
छिति छत्रीयं छत्तं । जनु बद्दलं कुटि संकरं मेघं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
छंद भुजंगी ॥ निसानं निसानं निसानंत बज्जै । दिसानं दिसानं दिसानंत गज्जै ।
तमंते तमंते तमं तेज भारे । झमंते झमंते झमंकार झारे ॥ छं० ॥ ८६ ॥
पुजै नाहि बानं कमानं प्रसारे । इसे राइ चालुक्क सेना समारे ॥ छं ॥ ८७ ॥
गाथा ॥ मत्ता मेघ दिसानं । रिस्सानं चालुक्कं राइं ॥
नैनं तेजति तुट्टं । ज्यौं तत्ताइं अग्गियं वुट्टं ॥ छंद० ॥ ८८ ॥

आबू की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ वलि भीमंग नरिंद । गढ्ढ मघ्यौ गि र पासं ॥
नारि गौर सावान । वीर धावै रस धासं ॥
विय ऊंचौ षट कोस । पंच सुर मध्य लंबाइय ॥
बागवान जलथान । जानि कैलास वनाइय ॥
गिरि गंग सचित तिथ्थह अचां । देवथान उद्यान तह ॥
रिषि संत जती जंगम जुगी । रचहिं ध्यान आरंभ मह ॥ छं० ॥ ८९ ॥

भीमदेव का वैदिक धर्म छोड़ कर जैन धर्म मानना ।

दूहा ॥ ठानिज्जै मानिज्ज मत । थानिज्जै गुरु ग्यान ॥
बेद धर्म जिन भंजए । जैन ध्रंम परिमान ॥ छं ॥ ९० ॥

अमर सिंह सेवरा की सिद्धि का वर्णन ॥

कवित्त ॥ अमर सीच सेवरा । मंच भेदं उप्पाइय ॥
जैन ध्रंम साचिग्ग । मंच कर कग्गर थाइय ॥

मोर खोर पप्पीह । जीह दद्दुर सुर बाइय ॥
चय्य दुष्य सुक्कैन । भेद चल्ली निसि आइय ॥
नाइक्क एक दष्षिन तनौ । दष्षिन दर कूँची दइय ॥
चौसट्ठि देवि परसाद करि । मंच भेद अमरै ठइय ॥ छं० ॥ ८१ ॥

भीमदेव का रात के समय कूच करना ।

दूहा ॥ चल्यौ भीम भोरा सुभर । अंधारी निसि अद्ध ॥
रौरि परी गढ उप्परै । भेद सबै वर बद्ध ॥ छं० ॥ ८२ ॥

छंद भुजंगी ॥ उसद्देति सद्दे कुसद्दं गभीरं । चयं चंद बोधं अबोधं सरीरं ॥
चकी चक्क बाजी गजे मेघ नद्दं । जगे लोइ लोयं कुसद्दे कुसद्दं ॥ छं० ॥ ८३ ॥
गनी गत्ति छत्ती छिनीता छिनानी । कमट्टं विमट्टं निठं नाचि रानी ॥
छती छच मंचे विलंतेति भारे । सुनी कंन चालुक्क सेवक्क सारे ॥ छं० ॥ ८४ ॥

कुंडलिया ॥ जिनी ओंडां हंमीर चौ [illegible]न सलषानौ भार ॥
दियो कोट चालुक्क कौं [illegible] दीहा संसार ॥
सौ दीहा संसार । भीम [illegible]गौ गढ चल्लौ ॥
कह्यै बंधु बीरंम । राज [illegible] गढ चल्लौ ॥
चल्यौ भीम कुमार । सुहि[illegible] गावित्तां कोडां ॥
चल्यौ सुद्ध पंमार । गयौ [illegible]मीरखी उंडां ॥ छं० ॥ ८५ ॥

गाथा ॥ बलमे बलमो बातं । नच क[illegible]े बीयं मेदयौ ॥
मेदै अच्छरि कुलयं । पावारं प्रीति बालायं ॥ छं० ॥ ८६ ॥

कवित्त ॥ बार दीह लगि नवमि । बहुरि रिन रत्तह लग्गा ॥
पामारां चालुक्क । खेत लुथ्थिन भोमग्गा ॥
दनु सुदेव चै देवकरंन । प[illegible] चलि गिरि कंनं ॥
कोटि तिथ्थि धारीह । धर[illegible]धारह पति तंनं ॥
इम भिरत पंच दस बासरह । सूर उद्ध उद्दरन धर ॥
कर चलिग राव गुज्जर दर्सा । मार मार उचरंत सिर ॥ छं ॥ ८७ ॥

कवित्त ॥ मार मार उच्चार । धार धवा दर भीम दल ॥
येम करन धंमार । देषि भर भीर तक बल ॥

सिर उड्डुत उतकंठ। हंस रस कीय कटारै ॥
अति निसंक अरभंग। कमध कीनौ पंमारै ॥
दुह पंकधार धारह धनिय।-जुरन जुत्ति जुगहर गनी ॥
ता पच्छ कुगति लभय सुवर। चिंति चिंति मुनि सिर धुनी ॥ छं० ॥ ९८ ॥

कवित्त ॥ चासनि अस्तुति अस्त। वस्त किंची छिल रष्षी ॥
कहे तो रष्षों हेत। कोइ आगम दुह भष्षी ॥
ईस अचल दिषि अचल। अचल डुंचै न पाइ तिन ॥
धू धू धू मंडलह। सार वज्यौ धारन छिन ॥
वेधध्य दरट्टी द्रव्य ज्यों। अचल सचल सिर दिष्षइय ॥
संसार षेम षेमह करन। जित्ति कित्ति अभिलष्षइय ॥ छं ॥ ९९ ॥

दूहा ॥ अचल कहै गिरि सिर धस्यौ। तहिन तें पन पानि ॥
रुधिर सुधिर सस्त्रह पस्यौ। धन्नि धन्नि सलषानि ॥ छं ॥ १०० ॥

कवित्त ॥ रष्षि रष्षि सलषानि। जूह सलषानि पवारं ॥
वर भीमंग नरिंद। सीस दीनौ भर भारं ॥
उड्डै राव उद्धरन। कोट नव कोटी साजं ॥
पुंजा पुंज पवार। लाज विम्मुनिय साजं ॥
[illegible]नसी टंक माह्न मरद। गज्जिधार सिर वष्पिग वन ॥
[illegible] सह पर सह गिरि। सुत ईक्यौ मंतह पवन ॥ छं ॥ १०१ ॥

दूहा ॥ मत्त मत्त आतंग वर। छह पत्ता मुष मंडि ॥
ते षंडे सौ षंड ए। जम किंकर किल छंडि ॥ छं ॥ १०२ ॥

गाथा ॥ छुट्टे मुत्तिय पुचपं। तुटा रुधिराइ धार धारयं ॥
जानिज्जै पचमग्गं। जग मग्गं षेच यो पचयं ॥ छं ॥ १०३ ॥

सलष और भीम की सेना से घोर युद्ध।

छंद भुजंगी ॥ मिले सेन पंमार चालुक्क एतं। कुहू रैन जुट्टैं मनौं प्रेत षेतं ॥
भरं सीस तुट्टैं विकुट्टैं विचारं। करैं गस्स ऊभैं पिसाचं विचारं ॥छं०॥१०४॥
तरक्कंत घावं परैं पाइ कच्छी। मनौं नीर मुक्कैं तरप्फंत मच्छी ॥
कियौ कुंचरं जालि बालानि तत्थैं। चल्यौ राज भोरा सिरैं अब्बु मत्थैं ॥
छं० ॥ १०५ ॥

चषं चचरंची सुरंची अनक्कै। बज्यौं जानि घरिआर संभ्या ठनक्कै॥
रुधिं धार धारं अई भूमि रत्ती। रमैं जानि वासंत निस्संक छत्ती॥
छं०॥ १०६॥

सलष का मारा जाना, उसकी वीरता की बड़ाई॥

कवित्त॥ षेमकरन पंमार। उड्ड उड्डरन गह्यौ गिरि॥
वल बरसिंघ ततार। सार लग्गै प्रहार सिर॥
मंस अंत तुट्टई। वीर बंटई जुराज्यौ॥
जरासिंघ जोरयौ। जोर द्विष्यि ज्यौ पाज्यौ॥
दिषि मंत मत्त मत्ती उमा। जै जै जै जंपत सुभर॥
पंमार पंच पंचै मिले। रह्यौ एक श्रीसाफ धर॥ छं॥ १०७॥

कवित्त॥ षेमकरन पंमार। जुरत जों चर संपज्जिय॥
लिय गिर गुज्जर राइ। कंध निन पंस उडज्जिय॥
सिर तुट्टे धर भिरिग। ढरत कर लई कटारिय॥
कर कत्ती सुकमंध। कंध बिन करिय पवारिय॥
बरन बिन्न बित्त कवित्त यौ। लष्षि पमार सुलष्षन॥
सक्क सों काल कमधज्ज किय। सुकवि चंद कित्ती भषन॥ छं॰॥ १०८॥

कुंडलिया॥ अब्बूअपति पामार पच। लिय गिर गुज्जर राइ॥
ता पछ बित्त कवित्त यौ। कह्यौ चंद बरदाइ॥
कह्यौ चंद बरदाइ। कज्जभर बित्त कवित्तौं॥
पट्टन वैचै गै पलान। भुरधर संपत्तौ॥
सलष अलष करि कित्ति। सुयसु संसारह जानिय॥
करन नंद करिहार। गह्व जंपत बष्षानिय॥ छं॰॥ १०९॥

भीमदेव का आबूगढ पर अधिकार करना।

कवित्त॥ परे स्रुक्खि रन वीर। मरन ज्यौं जानि जन्म वर॥
पुच मिच सज्जन सुहच्छि। टरे नन काल काल कर॥
धरी लच्छि धर अखो। धारि उद्धार पमारं॥
षह परिगह क्रह पुत्त। तुट्टि धारा धर धारं॥

धुऋ धाइ भीम[1] छीनौ सुगढ । सुक्का पच्छ पुंनिम सुदिन ॥
जंय दंद[2] वत्त चालुक्क सुनि । नभ लग्यौ सलषान नन ॥ छं० ॥ ११० ॥

एक महीना पांच दिन आबू में रहकर भीमदेव का अपने राज्य को लौटना ।

दूहा ॥ एक मास दिन पंच रहि । गढ़ मुक्यौ तिन वार ॥
पट्टन वै पट्टन गयौ । अब्बू वै सिर भार ॥ छं० ॥ १११ ॥

अपने राज्य में आकर भीमदेव ने शहाबुद्दीन को पत्र लिखा कि आप सारूंड आइए हम आप मिलकर पृथ्वीराज को जीतें, पत्र देकर मकवान को भेजना ।

छंद भुजंगी ॥ थपी थान थानं सुअब्बू प्रमानं । गयौ राज पट्टं सु पट्टं निधानं ॥
दियं कग्गदं साहि सुरतान गोरी । करौं भेद[3] बत्तं बधौं पिथ्थ जोरी ॥
छं० ॥ ११२ ॥
धप्यौ साहि गोरी सुसारूंड आवै । हमं सब्ब सेनं पसौ कित्ति धावै ॥
दजं गढ्ढअब्बू रजंबू निधानं । हनौ साहि चौहान करि षग्ग पानं ॥ छं०॥११३॥
तहां मुक्कल्यौ वीर मकवान राजं । लिषे कग्गदं चालुकं राजकाजं ॥ छं ॥११४॥

मकवान से भीमदेव का कहना कि केवल इंछिनी के ही कारण से मैंने सलष को सकुटुंब स्वर्ग लोक को भेजा है ।

दूहा ॥ पूर्न परिग्गह बंधु सह । मैं मुक्कलि स्वग[4] लोग ॥
एकै इंच्छिनि कारनह । मति सलषानि अजोग ॥ छं० ॥११५ ॥

और मेरे मन का दुखः तब दूर होगा कि जब चौहान पर चढाई करूं, सुलतान मुझसे मिलजाय, और दिल्ली का राज्य अपने हाथ से नष्ट करूं ।

(१) को. क्ष. ए-गड्ढ ।
(२) को-जयचन्द ।
(३) मो-तेह ।
(४) को-स्वग ।

गाथा ॥ मम मनरंजन भंजौ। सजौं सेनाइ संभरी देसं ॥
जो मिलई सुरतानं। भंजौं राज दिल्लियं पानं ॥ छं० ॥ ११६ ॥

भीमदेव के कागद के समाचारों का सारांश।

कुंडलिया ॥ कग्गर गुरिय सहाबदिय। भरि लिपि भोरा राइ ॥
तुम धरि संभरि उत गही। हम नागौर निहाइ ॥
हम नागौर निहाइ। बंधि संभर गिरि अव्वू ॥
जो मिलंत मोहि आइ। देउं धन चांवर दव्वू ॥
पहु पारक पंटनेर। सीस भव्वर धरी चग्गर ॥
गुज्जरवै गह अत्त। लिपे गोरी दिस कग्गर ॥ छं० ॥ ११७ ॥

घोड़े, चमर, पश्मीना आदि भेट दे कर शहाबुद्दीन के यहां भीमदेव का दूत भेजना।

कवित्त ॥ वचन बटी सो तुरग। चमर पसमी चैारंगा ॥
पंच घाट पंचास। अस्सि तंबोली पंगा ॥
उभय मत्त गजराज। सेत बलभद्र समानं ॥
लिपि कग्गर चालुक्क। बोलि सारंग मकवानं ॥
सालोभ अंगनन भूठ मन। चित उदार सची कचन ॥
दून दूत सुलष्पिन होहि न्टप। तब सुराज चष्षह गवन ॥ छं० ॥११८॥

पत्र पढ़कर सुलतान ने कमान खींचकर कहा कि या ते मैं म्लेच्छों को मारूंगा या खुरसान ही में रहूंगा।

दूहा ॥ सुनि कग्गर गोरी गरुअ। कर षंची कम्मान ॥
कै भंजौं मेछान दल। कै रंजौं षुरसान ॥ छं० ॥ ११९ ॥

कवित्त ॥ षां ततार षुरसान। षान न्याजीषां रुस्तम ॥
षां पिरोज पाषार। बली निसुरत्ति जुद्ध जम ॥
तुंगीषा निरहुंति। अग्गवानीं दल पानी ॥
है उजबक उज्जाक। रेच रष्षन मै दानी ॥
चालुक्क लिषे कग्गद जुवै। बषतवान दस्सन दुनम ॥
हंमीर मिले हंमीर बर। बर भीमानी भीम रम ॥ छं० ॥ १२० ॥

सुलतान ने कहा कि दान, खड्ग, विद्या और सम्पति ये साझे में नहीं होते ।

दूहा ॥ कही वत्त सुरतान नै । जो सारँग वर वीर ॥
दान खग्ग विद्या विभो । एनह वंदै सीर ॥ छं० ॥ १२१ ॥

अरिल्ल ॥ दानह षग्ग विभोदी बंदै । लच्छि वीर पावंड उमंडै ॥
को अप्पै लच्छी परिमानं । मोहि आज परका चहुआनं ॥
छं० ॥ १२२ ॥

गाथा ॥ भूमी द्रवै सुलच्छी । वंका बीरां दूवं कियं भूमी ॥
नह वंकी धर कव्वं । वंक बीरांइं वंकियं होई ॥ छं० ॥ १२३ ॥

पृथ्वी वीरभोग्या है भीमदेव मुझसे क्या शेखी मारता है मैं उसे भी मारूंगा ॥

कवित्त ॥ बीर भोग वसुमती । वीर बंका अनुसरई ॥
बीर दान भोगवै । वीर षग्गह गुर करई ॥
अन्न पान रस द्रवै । लगै कादर नह अच्छी ॥
वै धुर षग्गह धार । बीर भोगह वर अच्छी ॥
जंपै न बीर सारंगतं । भोरा नाम अभंग भर ॥
भुग्गवै कैान को भुग्गिहै । करैां परका षग्गवर ॥ छं० ॥ १२४ ॥

स्लोक ॥ न कस्यापि कुले जाता न कस्य नरनारियम् ॥
चयशुर खड्ग धाराच । वीरभोगी वसुंधरा ॥ छं० ॥ १२५ ॥

यह सुनकर सारंगदेव मकवाना का क्रोध करके भीमदेव की बड़ाई करना ।

दूहा ॥ सुनिय मत्त सारंगवर । केहा देहा नेह ॥
दई दुहथ्यैं पिंजरै । हिंदू मेछन केह ॥ छं० ॥ १२६ ॥

छंद भुजंगी ॥ न हिंदू न मेछं बरै काहि कोयं । बरै ताहि तायं रसं बीर भोयं ॥
कहै वत्त भोरं सुभोराति नामं । भज्यौ इक्क अब्बू लग्यो सीस तामं ॥ छं० ॥ १२७ ॥

(१) मो-रे

शहाबुद्दीन का फिर कहना कि पहिले चौहान को मारूंगा पीछे भीमदेव चालुक को।

कवित्त॥ पुनि गज्जन वैसाहि। कहै मोरा भीमंदे॥
धर पावंड निहान। बीर विद्यादिय वंदे॥
दीहा दोती संक्ष। मोहि चहुआन चरक्का॥
ता पच्छै गरुवान। गरु करिहै धर धक्का॥
पावंड डंड रच्चै नहीं। जिम्मीजर कंकर धरा॥
संभरिय काल कंटक घनीं। तापाछैं गुज्जर धरा॥ छं०॥ १२८॥

मकवाना सुलतान की बात सुन बोला कि चालुक का दल जब चलता है तो काल कांपता है।

कवित्त॥ सुने सह सुलतान। बोल बासीठ सुसद्दे॥
रस रसाल केरी करकि। कर चोपि लुबद्दे॥
भीमां सैं आरध्य। चाव लग्गे सुरतानं॥
मुसलमान दीवान। बंक बोल्यौ मकवानं॥
चालुक्क राव चालंत। काल कलच कंडन करै॥
मेवार मजैपुर गज्जनै। तीन राइ तिज्जर डरै॥ छं०॥ १२९॥

चालुक्य के आगे जालंधर, बंग, तिलंगी, कोंकन, कच्छ, परोट, मरहट्ठे आदि कोई नहीं ठहर सकते।

कवित्त॥ नहिं जालंधर बार। बंग चंगी न तिलंगी॥
कुंकन कच्छ परोट। थट्ट सिंधू सरभंगी॥
गवरि गवर गुज्जरी। सबर मरहठ चह पंडं॥
मुरि मरहठ नंदवारं। राइ मालव गुन छंडं॥
चामिली बार डर सिंधवर। सकंचि न मंडन पग्ग रुकि॥
चालुक्क राइ चालंत दल। काल कल्ह मंडै न झुकि॥ छं०॥ १३०॥

जिस भीमदेव ने बघेलों को जीता, आबू को तोड़ा और जादवों को हराया उसको जीतना सहज नहीं उसे ब्रह्मा ने अपने हाथ से बनाया है।

कवित्त ॥ जिन झूना जंगाल । बाढ बाढेल उझ्ट्टी ॥
जिन आसावलि अंग । देव घाघेल पलट्टी ॥
जिन अरि भोरा भीम । पालि चंपी आसेरी ॥
जिन जोग वेग जड्ढों । निकारि अब्बू अनसेरी ॥
मकवान वोलि अगवान सौं । मकरि तास सम जुद्ध रचि ॥
ए धरनि भीम भंजन घरग । अप्प कियौ करतार रचि ॥ छं० ॥ १३१ ॥

सुनकर सुलतान की आंखे क्रोध से लाल हो गईं और वह उसको मारने पर उद्यत हुआ।

कवित्त ॥ कलह न कंडै काल । देख पुव्वेस पुलंगी ॥
अग्गिवान दुति प्रभा । बाइ कूनारस संगी ॥
मुसलमान दीवान । साह अग्गे इह बुझ्झौ ॥
हरै चंपि चहुआन । काल पग्गर सं लुझ्झौ ॥
सुनि श्रवन मग्ग रत्ते नयन । वयन साचि तत्ते तमसि ॥
जानै कि अग्गि सिंचिय सु घृत । ताम तेज चक्यो विघसि ॥
छं० ॥ १३२ ॥

कवित्त ॥ मदपानी किं करै । किं जंपै मतिहीना ॥
किं घायस ना भवै । किं न कवि करै सुहीना ॥
अवष बाल किं कहै । वलह सौं किं नह होई[१] ॥
चासवंन किं करै । पुघावंतह किं जोई ॥
किं करै काम अंती कठिन । किं न करै लोभी नवन ॥
किं करै न तसकर चप्पवर । अवुध दुष्ट संत्तह सुमन ॥ छं० ॥ १३३ ॥

वज़ीर ने समझाया कि दूत नहीं मारा जाता, इसमें बड़ा अधर्म होगा ॥

कवित्त ॥ रमन रोस सुरतान । वसम चाजुर फुरमानं ॥
वर वजीर वरजंत । श्रेवं लग्गै सुविहानं ॥
अवध वसीठह अंड । नीति हिंदू तुरकानं ॥

(१) को. कृ. ए.—खलह सिवटह किं न होई।

स्वामि सकल बोलंत। बघ्घ अरु सप्पा षानं ॥
जस्सान आन साघावदी । चल चलाल किज्जै गमन ॥
अनचल आचिल भैरवा। पल्लक षान षग्गह चसन ॥ छं० ॥ १७४ ॥

छंद मोतीदाम ॥ षयं षग षत्तिय मत्त प्रमान। भयौ रस वीर चलाचल जान ॥
तमी तम लग्गि नभी नभ भान। उयौ जनु बद्दल फुट्टि प्रमान॥ छं०॥ १२५ ॥

शहाबुद्दीन के महा क्रोध हुआ, एक सामंत ने वज़ीर से कहा कि तुम ठीक कहते हो पर यह कैसी गंवारें सी बात करता है।

रिसं रिस रत्त त ीतम नैन। उरं घन वीर सिरं लगि मैंन ॥
हुकंम हजूर वजीर सुपान । दलं दल ग्रब्ब भई रस षान ॥ छं ॥ १३६ ॥
वजीरन मझ्झि कियो बल साहि। लगी जनु विज्जल श्री घन चाहि ॥
करी कलना रस केलि सुभत्त। मगी वर साहि कमान अचित्त ॥ छं॥ १३७ ॥
बुल्यौ वर गामिय गुज्ज गवार। कहै सुरतानप सेन उवार ॥
टगहग चाहि रहे सब लोइ। दिष्यो वर तेज अदभुत सोइ ॥ छं० ॥ १३९ ॥

यह सुन मकवाना के क्रोध आगया, उसने सामंत के एक हाथ मारा कि सिर जुदा हो गया ॥

छंद भुजंगी ॥ बढी बीर बह्री सुजभी अभत्ती। पर्यौ सीस अग्गै मनौ साहि सत्ती॥
उठी छिच्छ उंची रुधिं छीन छीनं। मनौं वीर मत्ते सिशा जाल पीनं ॥ छं०॥१४ ॥
घरी एक रवि मंडलं छिद्रकारी। तुटे कंध कामंध भो जुद्ध भारी ॥ छं० ॥१४१॥

इस पर ऐसा हाहाकार मचगया।

छंद गीतमालती ॥ ढलकंत ढालैं, चंद्र सालैं, बंध चालैं, प्रब्बतं ॥
रस रसनि रागं, बहुत बागं, बीरजागं, उब्वेतं ॥
उर्नीं न पावै, देष गावै, सार, भावै बीरयं ॥
मकवान थानं, भेदि भानं, करि प्रमानं, धीरयं ॥ छं० ॥ १४२ ॥
बहु मंत कंतिय, भंति भंतिय, दंत दंतिय, उभ्भरं ॥
नग नग निमानं, बुद्धि दानं, निव पारानं नीसरं ॥ छं ॥ १४३ ॥

मकवान का अपने चित्त में सुलतान के संदेसा न मानने पर विचार ।

दूहा ॥ कही चित्त मकवान नैं । नह मंनी सुरतान ॥
अप्पन अप्पन सथ्थ सों । बल मंडे चहुआन ॥ छं० ॥ १४४ ॥

कवित्त ॥ करि सिहानी ध्यान । बंग जे सुन चित हिंदू ॥
ते हिंदू मुष निंद । निगम निंदै गुन जिंदू ॥
इक बार सुनि बंग । सहस पातक रजपूतन ॥
नरकह सेोधि नरक्कह । कवन कट्ठै ब्वक पुत्तन ॥
रजपूत मुक्ति [१] षग विंत्तथरि । विधि विनान यौं ब्वम्मयौ ॥
कलि आदि मिटै मधि मंडलचि । पै न मिटै तन अम्मयौ ॥ छं० ॥ १४५ ॥

इधर चालुक्क राय का अपनी सेना सजना ॥

गाथा ॥ सज्जी सेन असुरायं । उप्पंमं चंद देषियं वरयं ॥
जानिज्जै परमानं । कै चल्लियं वद्दलं साहिं ॥ छं० ॥ १४६ ॥

कवित्त ॥ बद्दल दल बल उभरि ॥ सेन घुंमर घट घुम्मरि ॥
सयन बयन जकि नयन । सयन मत्ते जनु घुंमरि ॥
अरि अरिष्ट सम दिष्ट । पिष्ट धारन घर धुम्मर ॥
अग्गि झाल बिन धूम । दुसे दप्पिय गज झुम्मर ॥
चालुक्क राइ सज्जो सयन । चय हिंसार न उच्चरै ॥
सिहान बंस सिहान गति । सिह इष्ट गुन बिस्तरै ॥ छं० ॥ १४७ ॥

उधर शहाबुद्दीन ने तो अपने सामंत के मरने पर क्रोध कर मकवान को एक तीर मारा और मकवान ने हैलम कुजाब के सिर में एक तेग ऐसी मारी कि दोनों गिर गए ।

कवित्त ॥ सुनि साहाब वजीर । बोलि बल की अप्पानां ॥
कक्कस कर तें वर । कमान तानी लगि कानां ॥
कल कुट्टी छातीह । चलत सारंग सुषानां ॥
मार मार उचार । तेग कढ्ढी मकवानां ॥

(१) को॰ उ॰ क्ष-मुत्ति ।

चैजमे हुआव स्थिर उच्छटी । बीजलि कै चंवर अरी ॥
झंर्नान भंजि घुघ्घरि पंक्ता । मधी ऋग्गि उछटी परी ॥ छं० ॥ १४८ ॥

कवित्त ॥ चैजम धुकि धर पर्यौ । पर्यौ मास्ती मकवानां ॥
रंस रसावं छुट्टीय[1] । स्रेव सग्गिय सुरंताना ॥
गयौ साहि श्रौसाफ़ । स्राष भग्गिय दुनियाना ॥
बुरे बुरौ सब कोइ । कथत संजम सुनियाना ॥
करतार चथ्थ केतौ कला । किथे सुलष्षै च्षपना ॥
पापंग देव मंडी मिक्षै । दीदे देषि सु सुष्पना ॥ छं० ॥ १४९ ॥

भीमदेव ने अपने दूत का मारा जाना सुन बड़ा क्रोध किया और गज़नी पर चढ़ाई के लिये वह सेना सजने लगा।

कवित्त ॥ सुन्यौ भीमर बध्यो । बसीठं षेत्तै पञ्जौनां ॥
करि सिक्षानिय थान । मेट मेछानन दीनां ॥
बंग सद्द कंनान । जीव अंना जन बट्टौ ॥
असी सहस्स सेना । सजन गोरी जर कट्टौ ॥
ढक्कांन मलंदी चाल जनु । असम समुद्देना तिरिय ॥
मय मोच छंडि रत्ते विषम । दद्द दिवान गुन दुस्तरिय ॥ छं० ॥ १५० ॥

छंद फारक ॥ रत्तानी बानी यबानी । नीलानी सोहैं सावानी ॥
सुरवानी बानी बोलंदे । सिंहानी संकर तौलंदे ॥
खोरट्टी बद्द निपद्दायं । कुरम जब्बूरद्द बद्दायं ॥
ऋग्गिबान कमान सस्तायं । सर सस्त्र कमा मय यंचायं ॥
छं० ॥ १५१[2] ॥

दूहा ॥ ढक्कांनं चक्की चलं । चौरा मंच बदंत ॥
भेरानं भुञ उप्परै । मै कुहा मै मंत ॥ छं० ॥ १५२ ॥

दूहा ॥ घेरानं छत्रं छतं । मेरानं संध्यान ॥
सारची पष्षर जरी । हैमानी गत्तान ॥ छं० ॥ १५३ ॥

(१) मो-छुट्टीय
(२) यह छन्द मो० और क० प्रतियों में नहीं है।

सेना सजने पर आग लगने से अपशकुन होना ।

कवित्त ॥ नीसा नीनी जुग्ग । धाम लग्गी चालुक्कां ॥
घक्कारी श्राकंन । सथ्थ सत्तरि वै श्रुक्कां ॥
गोम गज्ज उक्करीय । धाम धर कंपि धलक्किय ॥
नाग भाग सत दीह । नीय तन कंप सलक्किय ॥
प्रज्जाल माल हिंचाल चलि । कलि कलाप कलि छुट्टिय ॥
पट्टु राइ पिट्ठ क्तितंग छिति । नित नियंग सुर उच्छटिय ॥ छं० ॥ १५४ ॥

दूहा ॥ वोली [1] वंधनि चाय धन । पंमारे चहुआन ।
धीरं दाइ बसीठियां । दै हिंदू सुरतान ॥ छं० ॥ १५५ ॥

दूहा ॥ जित्ती धर चहुआन की । जित्ती [2] नाइ तुपार ॥
परठी पट्टनवै परत । मग्गां दान सवार ॥ छं० ॥ १५६ ॥

भीमदेव का प्रतिज्ञा करना कि जो ख़ुरासान के राज्य पर शहाबुद्दीन रहै तो मेरा नाम नहीं ।

छंद भुजंगी ॥ करी राज भोरा प्रतंग्या प्रमानं । कहे बोल अप्पे सु उंचेह मानं ॥
रहै साहि गोरी पुरासान थानं । नहीं नाम चालुक्क भीमं परानं ॥ छं०॥१५७॥
धक्कौ नाम रजपूत सू वंभ लहौं । हतो दोष दंदं दहै जो न कहौं ॥
धरै ध्यान छत्री छुत्रै चित्त मंझै । परे व्रक्क आव्रत वुझ्झै न सुझ्झै ॥ छं०॥१५८॥
जिते बाल उपचैन झूठे उचारैं । धरै नाम छत्री न सस्त्रं पचारैं ॥
इमं [3] बीर बीरं कहो भीमराजं । गजे गुंग नीसान ईसान गाजं ॥ छं० ॥ १५९ ॥

उधर शहाबुद्दीन ने अपनी सेना सजी ।

कवित्त ॥ गज्जनेस गोरीय । सेन हय गय अपसज्जिय ॥
षां ततार षुरसान । मीर माची पष रज्जिय ॥
हय गय नर असुरान । सुनी चावद्दिस वत्तं ॥
पट्टनवै पट्टन । बीर गोरी जुध मत्तं ॥
मैमंत राज प्रथिराज पर । अब्बू वै ऊपर करै ॥

(१) कृ० को–वोलां ।
(२) मो–जितीक ।
(३) मो–इमें ।

सुरतान सेज सज्जे सुने । धर गिरजन रज उच्छरै ॥ छं० ॥ १९० ॥

सुलतान और चालुक के अपनी अपनी सेना सजाने पर चहुआन का भी ढिल्ली और नागौरादि में अपनी सेना सजाना ।

दूहा ॥ ढिल्ली वै सेना सजय । रंजन रन रावत्त ॥
मधुर सद्दध्वनि पानधर । दिय कग्गद गुन मत्त ॥ छं० ॥ १९१ ॥

छंद चनूपाल ॥ रावत्त रत्त दिसान । सजि चालि[१] सेन सुरतान ॥
सावंत गोरिय आइ । बहु सेन अलेष[२] सुजाइ ॥ छं० ॥ १९२ ॥
प्रव्वाह सेन समुद्द । मिटि गई छित्ति सरद्द ॥
नागौर ढिल्लिय राज । चज्जार कट्ठ बिराज ॥ छं० ॥ १९३ ॥
सुभ च्यारि सहस प्रमान । पट उभै सेना मान ॥
चालुक्क भोरा भीम । को काल चंपै सीम ॥
बर करै तमकत रीस । तिहि जगैं जग्गि गिरीस ॥
सोझत्ति चालुक राइ । मनु बीर कव्वि प्रभाइ ॥ छं० ॥ १९४ ॥

कैमास का मति उपजाना कि ऐसे में अपने दोनों शत्रुओं से लड़ने का अच्छा अवसर है ।

कवित्त ॥ चाहुआन सामंत । मंत कैमास उपाइय ॥
बंदि लग्ग हुंकार । बंध बंधान उचाइय
दस गुनां दल देषि । साजि साधन सु सुगंधव ॥
दुहु सुष्पांचीं लग्गि । बीच चंप्यौ सुखदंगव[३] ॥
गोरीय एक गुज्जर धनी । सुष बिचित्र धनि संभरी ॥
चज्जार हून द्वादस भरव । दो मिलग्गि दुहु दिसि धुरी ॥ छं० ॥ १९५ ॥

कवित्त ॥ सारुंडे साहाब । दीन सुरतान बिलग्गा ॥

(१) छ० मो० को-चलिय ।
(२) छ को०-लष्ष । मो-ससष
(३) ए-सदंगी ।

सोलंकी भर भीम। राव लष्यह असदग्गा॥
नागौरें सामंत। ईस चहुआन पिथाई॥
चस पति गुज्जर पती। जानि सदंग बजाई॥
दो बीच हजारी अट्ठ चव। येहा संत परट्ठयौ॥
चामंड राइ कैमास सम। षीची षग्ग बरट्ठयौ॥ छं०॥ १६६॥

कैमास की उपजाई मति के निश्चय के लिये नागौर में मता मंडना अर्थात् सब सामंतों की सभा होना उसमें कैमासादि का अपना अपना विचार प्रकाश करना।

कवित्त॥ मतौ मंडि नागौर। राइ कैमास बिचारं॥
दल सम्मह सुरतान। मिल्यौ नाहर परिहारं॥
सोलंकी चालुक्क। राइ भोरा बढि लग्गा॥
तुक्क अवाज सजि जूह। जियन कज्जै नह भग्गा॥
चामंड जैत उच्चारयौ। बाघारो[1] लंबी सुभुअ॥
सुरतान सेन[2] कितक[3] कहै। हम ठेलैं षुरसान धुअ॥ छं०॥ १६७॥

उसमें चामंड राव और जैत राव की प्रतिज्ञा।

कवित्त॥ कहौ[4] तौ बंधौ साहि। धाय चालुक्क बिडारौं॥
हम स्वामि[5] काज सामंत। मरन तन तिनुक बिचारौं॥
अप्प अंग सुज्जीव[6]। पुच बंधव षिजि भानं॥
चक्कवत्तिं तिन मान। बीत रागी करि जानं॥
अंतरौ एक कैमास सुनि। मरन तुच्छ मारन बहुल॥
उन असमो नन आस हम। निरगुन ए वे सहित मल॥ छं०॥ १६८॥

---

(१) कृ० को०—बाघारो।
(२) कृ० को०—"सेन" नहीं है।
(३) कृ० को०—"कितक" की जगह "कितंतक" है
(४) मो—कहै।
(५) कृ० को—सामि।
(६) मो—"अप्प अप्प मे सुजीव"।

बग्गरी अर्थात् देव राव बग्गरी का कथन ।

कवित ॥ पहिलै भंजौं भीम । कहिग बग्गरी बिसाले ॥
मदनसीह[1] परिहार । देह दुज्जर मुंछाले ॥
राज दुअं जह जहह । जीभ जहो जा मानिय ॥
ओ[2] छाही सारंग । देव पट्टे पर बानिय ॥
चालुक्क चंपि धूनी धरा । सो सुरतानह संभरी ॥
बेद्‌लह घाइ वधाइयां । बोल उचा उंचां भरी[3] ॥ छं० ॥ १६९ ॥

राव बड़ गुज्जर का कथन ।

कवित्त ॥ रा प्रथिराज प्रसंग । राव बोले बड़ गुज्जर ॥
निल तोखी तरवारि । साह उप्पर दल दुज्जर[4] ॥
कैमासै गढ़ सौंपि । कह्यौ कोटां रा रष्षन ॥
तुं मंची सस्त्रधार । भार भारी भर[5] भष्षन ॥
आलोच[6] अवारी संभरिय । मति विहत्त ते बत्त हुअ[7] ॥
आरीर हजारी पंच सें । चाहुआन चल घन[8] तुअ ॥ छं ॥ १७० ॥

लोहाना का आगे होना और सेना ले जहां चाहुवान सेना फेरता था वहां जा मिलना ।

कवित्त ॥ लोहानौ भयौ अग्ग । तीन सै पंच हलक्किय ॥
पंच हजारह सेन । एक दस अट्ठह भेरिय ॥
उच्छंगी संनाह । टारि ते सुभट सनेरिय ॥
मिले जाय जहां अग्ग * । फौज चहुआन सुफेरिय ॥
उत्तंग ढाल बैरष बनिय । पज्जूनह सो टारियह ॥
असु पत्ति सेन नष षग्ग कहि । सावन सार सुनत्त यह ॥ छं ॥ १७१ ॥

---

(१) क्रु को०—मदनसिंह । (२) मो–छाहा ।
(३.) मो–' उचा उंचां भरी ' की जगह ' बाल उवाए डंभरी ।
(४) को० क्रु–उज्जर । (५) क्रु० को–हर ।
(६) मो०—आलोप ।
(७) मो०—" मति विहत्त ते बत्त हुअ " की जगह–" मत्त बहत्तति बत्त हुअ ।"
(८) मो.–बत्त ।

सामंतों का मत हो जाने पर चाहुवान ने अपनी सेना के दो भाग किए, एक चामुंड राव जैतसी के साथ सुलतान पर चढ़ा एक और दूसरा चालुक्क भीम देव पर।

कवित्त ॥ मतो मंडि सामंत। सेन बंटे चहुआनं ॥
जैतसि राव चमुंड। मुक्कि कैमासथ्थानं ॥
अड्डे ए संबोधि। चंपि चालुक सुष लग्गा ॥
जित्ते मिल्ले संभरी। जोग सद्दे अप भग्गा ॥
बंटई फौज प्रथिराज भर। अर्क बार राका घरी ॥
वर लाज लई धर संभरी। संभरि वच कंधह धरी ॥ छं० ॥ १७२ ॥

दुओरी चढाइयों की सेना की शोभा का वर्णन ॥

छंद भुजंगी ॥ बैंटी फौज दूनों चढ़ै चाहुआनं। भरं स्वामि दूनों भरे चित्त बानं ॥
तिनं की उपंमा कवी चंद पढ्ढै। मनौ कर्क अरु मक्र निसिदीह बढ्ढै ॥
छं० ॥ १७३ ॥

दुई ढ्क्क मन्नै उमन्नै मसाई। करी संभरी सत्य दूनो दुघाई ॥
सितं सुष्ष उंचं दिपै चाहुआनं। मनौ डंमरी बाल उग्गो बिभानं ॥
छं० ॥ १७४ ॥

फिरै उंच तेजं तुरं गंति ताजी। जिनै[1] देषतै नैन गत्यैं[2] न लाजी ॥
षचै बाग उट्ठे चुटक्कै परेवं। मनौं मंडियं मौज केकी परेवं ॥ छं० ॥ १७५ ॥
पहू पाइ मंडं तनं चित्त इंषी[3]। मनौं पातुरं चातुरं तं बिसंषी ॥
कवी चंद ओपंम दंती करत्ती। मनौं कज्जलं कूट धावै धरत्ती ॥ छं०॥१७६॥
षिनं[4] उप्परं ढाल नेजे सुरंगं। तिनं ओपमां चंद चिंती सुचंगं ॥
जरे पाटनारी बिचैं हेम गुंथे। मनौ षज्जुरी केलि जुग मेर मंथे ॥ छं० ॥१७७॥
ठनक्कंत घंटा चलैं अंग मोरैं। मनौं कूलटा कैल चित चालि चोरैं ॥

---

(१) मो.—तिनै।
(२) ह० को० मो–गति औंन ॥
(३) मो.—षषी।
(४) ह. विनं। को. मो.—तिनं।

झंमैं दंत दंती सुनेनं[1] बिराजै। मनौं विज्ज छत्ता नभं मध्य छाजै[2] ॥ छं०॥ १७८॥
मुषं सूर सूरं सुमुच्छी विराजै। तिनं चंद बीजं गतं[3] देषि लाजै ॥
पटे वीय पासं उपंमा सुढव्वी। मनौं राह बीयं रनं [4]चंपि रव्वी ॥छं०॥ १७९॥
सजे आवधं सूर छत्तीस उव्वे। मनौं राह रूपं ससी कोटी दव्वे[5] ॥
करी सेन गोनं भिछानं दवानं। बढी वेय बाजू सरित्ता किजानं ॥छं०॥ १८०॥
गह्यौ मुष्ष गोरी प्रथीराज राजं। मनौ राह अरु भांन मिलि जुद्ध साजं ॥
मुषं रोकि सुर्तान को चाहुआनं। उनै रोकि कैमास भोरा मुचानं ॥
छं० ॥ १८१ ॥

दूहा ॥ षीची षग्ग परट्टि बर। वर भीमँग चालुक्क ॥
तिहुं दिस तिहुं बर घाइया। ज्यौं पच्छिमीं आरक्क ॥ छं० ॥ १८२ ॥

कुंडलिया ॥ मुच्छ उच्छटिय बंक भरि। हसि कपोल भय लोल ॥
जौं जंबुक वर घत्ति द्वै। तौ सिंघानै तोल ॥
तौ सिंघानै तोल। लोल लंबी चलि बाहं ॥
मनौं बीर सौ अंग। उठे सिर गंग प्रवाहं ॥
नम उतंग आरत्त। मत्त आरत्त सुदिट्टी ॥
मानौ चालुक राय। ढेव दूसासन उट्ठी ॥ छं० ॥ १८३ ॥

इधर सुरतान का मुख अर्थात् मुहाना रोक और उधर भीम से लड़ने के लिये चौहान का नागौर जाना ॥

दूहा ॥ रोकि मुष्ष सुरतान को। चहुवान दै बान ॥
बर बसीठ भोरा सुभट। चलि नागोर निथान ॥छं० ॥ १८४ ॥

छं० विअष्षरी ॥ नागौरें चहुआन पिथाई। चंद विअष्षर छंदह गाई ॥
सोझती चालुक मुष लग्गा। नागौरें गोरी दल षग्गा ॥ छं० ॥ १८५ ॥
असपति गजपति नरपति बीरं। धाए तिहुं दिसि सज्ज सरीरं ॥
ज्यौं कुरषेत किस मति कीनी। भारथ बेन सेन मति भीनी ॥ छं० ॥ १८६ ॥

---

(१) को. ह. मो.–सनेनं। (२) मो.–साजे।
(३) मो.–गती। (४) मो.–रसं।
(५) मो–हव्वे।

सामदान करि भेद सुदंडं। बंधे बर चहुआन विपंडं ॥
जिन चहुआन परद्धर कीनी। बहुत दोष देवत्तन भीनी ॥ छं० ॥ १८७ ॥
सुबर बीर कीनो बर अंसं। किस्न सुगोकुल मथुरा कंसं ॥
गोरी वै मंद पान उमत्ता। तिन बसीठ हंते विन मत्ता ॥ छं० ॥ १८८ ॥
विभ्भ चालुक्क निसान बजाए। दल सन्नद्ध सजि दुभ्भर धाए ॥
दुहुं बंध्यौ नर बैर प्रमानं। उत गौरी सन्हौ चहुआनं ॥ छं० ॥ १८९ ॥
चालुक मतौ विचार न कीनौ। अमर सीह बोल्यौ मति भीनौ ॥
भैहं भट्ट सुबंभन लीला। करौ मंच बर मंच अकीला ॥ छं० ॥ १९० ॥
शुद्ध मंत बंधौ सुरतानं। अरु गोरीसाहौ[1] चहुआनं ॥
छल बल करि कैमासह बंधौ। सुचि सुमंच सुचि क्रंम[2] विहधौ ॥ छं० ॥ १९१॥

कवित्त ॥ मिलि भर भीमंगराव। चाव पत्तौ पति गुज्जंर ॥
विषम बैर उद्धार। सार बीरत्त सुदुज्जर[3] ॥
चाहुआन सुरतान। काम कंदल क्रत लग्गं ॥
देवंग बद्दल सीम। मार जरजीज सुजग्गं ॥
कलमन्निय उअर[4] परताप तन। क्षुध पियास निद्रा गमिय ॥
अनुराग तरुनि षल पेष जिय। दुअ दुराह चालुक दमिय ॥ छं० ॥ १९२ ॥

कवित्त ॥ सोभत्ती चै गै उभार। दल अरि संपत्तौ ॥
सुभर सार भीमंग। गज्जि गज्जंन अनिरत्तौ[5] ॥
आयस रच्चहि विचार। मुष्य मंची आभासिय ॥
तिंचि निसाद परधान। अंध लच्छी उप्पासिय[6] ॥
पामार राम रन उद्धरन। गुर गुरीठ पैरंग गुर ॥
रानिंग भाल षग भालि नर[7]। बीर देव बघेल धुर ॥ छं०॥ १९३ ॥

(१) को० ह० मो०—सम्हौ।
(२) मो०—"सुचि सुमंत्र सुचि क्रंम विहधौ"— की जगह "सुचि सुक्रंम सुचि मंत्र विहद्दौ।"
(३) मो०—उज्जर।
(४) मो०—चरि।
(५) मो०—असि असौ।
(६) मो०—उसासिय।
(७) ह०को० मो०—बल।

कवित्त ॥ सोढा सारँग देव। गंथ डाभी सु गुज्जगुर ॥
सद चाविग्ग[1] सुदेव। धरि बाघेल धंमधुर[2] ॥
अमर सीह सेवरा। बीर विद्या मल जासं ॥
इमिय अट्ठ सिधि काज। चिंत चिंतिय चित सारं ॥
उच्चरै गवव भीमंग तब। करौ मंच उच्चार चित ॥
पंमार सरन चहुआन गय। लहौ ईर समपन्न चित ॥ छं० ॥ १९४ ॥

सब सामंतों का गुर्जर नरेश से कहना ॥

छंद पद्धरी ॥ सम कही सवन गुज्जर नरेस। चिंतौ सुसब्ब कारन सुरेस ॥
पम्मार सरन चहुआन रष्य। औगुन अनेक अष्षेव लष्य[3] ॥ छं० ॥ १९५ ॥
साखाव हीन सारंग सद्धि। उभ्भरे बेर बोल्यौ विहद्द ॥
चिंतेव चित्त सज्जौ समंन। मो कज्ज लज्ज मनकंध संत ॥ छं० ॥ १९६ ॥
उच्चरिग नाम सारंग देव। पुच्छो सुराव पुरंभ भेव ॥
सनमध समप्पन चाहुआन। उच्चरिग मंत चिंतौ उरान ॥ छं० ॥ १९७ ॥
जै जंपि तांम पैरंभ राव। बूझै न मंत कौ अंम ठाव ॥
अपराध कौन पम्मार कीन। ताहन्थ मदोदरि तुमधि दीन ॥ छं० ॥ १९८ ॥
अब रचौ बुद्धि सो राज सार। सब होइ सोइ लग्गौ उच्चार ॥
उच्चरिग स्याम रांनिंग नाम। गत सोच[4] न कीजै पत्त कामं ॥ छं० ॥ १९९ ॥
पतिसाह बैर बंध्यौ बिराह। संग्राज छुह मनु सिर गजाह ॥
बघ्घेल सुजंपै बीर देव। अनसून भेव कारज्ज एव ॥ छं० ॥ २०० ॥
सनमंध कुंवर कपरा सुकाज। ता सोच समप्पन संधि[5] लाज ॥
तुम करहु संधि सम चाहुआन। मिलि जुरै जुद्ध सुरतान टान ॥ छं० ॥ २०१ ॥
धन संजि चित्त गुज्जर नरेस। चिनि काज कित्ति बहु असेस ॥
सेवरा ताम तमि अमरसीह। तुम कही बत्त सांची[6] सलीह ॥ छं० ॥ २०[illegible]

(१) मो०--बारचिक।
(२) मो०--धर्म्मधुर।
(३) मो०--लष।
(४) मो०--चीत।
(५) मो०--बंधि।
(६) मो०--संची।

छलि [1] वचन षेद भीमंग राव । चहुआन थान उखर्यौ दाव ॥
वंधिये वंध उत्तंग स्राव । उध [2] गज्ज गाह प्रथिराज राव ॥ छं० ॥ २०३ ॥
प्रथिराज काज कैमास अथ्थ [3] । सामंत सूर सब नास सथ्थ [4] ॥
करि अथ्थ माहि विद्या अभून । अति दुष्ट अग्यकारी सनूत ॥ छं० ॥ २०४ ॥
वसि करौ जाइ दाहिंम सोइ । चहुआन काज सूझै न जोइ ॥
वसि करौं सव्व सामंत सूर । बल द्रव्य दुष्ट [5] अध्धीस पूर ॥ छं० ॥ २०५ ॥
उव्वरौं आंनि नागोर देस । भीमंग बढ्ढि कित्ती असेस ॥
प्रथिराज आइ लग्गौ [6] सुपाइ । सामंत सूर भर सथ्थ आइ ॥ छं० ॥ २०६ ॥
वसि करौं सव्व दल सबौं सार । भंजों सुजाइ साहाब भार ॥
हनि षेत जित्त गज्जन नरिंद । जस वढै पहुमि उद्धार इंद ॥ छं० ॥ २०७ ॥
भनि सुनी भीम सब अमरसीह । भल भलो पढ्ढि सब भषी जीह ॥
नागौर अमर सज्यो पयांन । निरमत्त सथ्थ सज्जै सथान ॥ छं० ॥ २०८ ॥
भैरव सुभट्ट वंभन सुजीह । चारंन चंद्र नंदन छबीह [7] ॥
लिय द्रव्य सव्व सथ्थां सुभार । नागौर चल्ले मनि मंच मार ॥ छं० ॥ २०९ ॥

फिर निशान का बजना और अमरसीह का दाहिम को बांधने का पाषंड करना।

दूहा ॥ इह कहि गहिं बज्जन विलसि । बज्जि निसान निघाय ।
करि पाषंड सुअमर बर । बंधन दाहिमराय ॥ छं० ॥ २१० ॥

पाटरिया रान का कहना कि कैमास को छल करके बांधूंगा।

अरिल्ल ॥ छल करि बर बंधौ कैमासं । सजौ सेन सुरतानह पासं ॥
बोलि [8] रान पाटरिया बीरं । आवा अनी साधि सो धीरं ॥ छं० ॥ २११ ॥

---

(१) मो०—छलि ।
(२) मो०—" उधगज्जगाह " की जगह " उधंग संग " ।
(३) मो० क०—अथि ।
(४) मो०—सथि ।
(५) क० को०—द्रुष्ट ।
(६) मो०—लग्गै ।
(७) को० क०—सुबीह ।
(८) मो०— बोलीय ।

अमरसिंह सेवरा के मन्त्रबल से कैमास को वश में करने का निश्चय करना।

कवित्त ॥ पर पट्टन वैरांन। तेन [1] आज्ञा अधिकारिय ॥
मतो मंडि चालुक्क[2]। अमर सेवर सुधि भारिय ॥
भैरें भट्ट प्रमान। बुद्धि काग्रप अधिकारिय ॥
सो मत्तें सो मत्त। बुद्धि सेनह विचारिय ॥
दल मलहि सेंन चहुआन कैा। अरु भंजै सुरतान दल ॥
मंची सराज कैमास वर। साम दाम [3] कीजै सुकल ॥ छं० ॥ २१२ ॥

चालुक्यराज की सेना की चढ़ाई और अमरसिंह का मन्त्र आरम्भ करना।

गाथा ॥ चढियं चालुक सेनं। चहुआनं साधनं भीरं ॥
दिसि कैमास प्रमानं। अमरसिंह मुक्कियं मंचं ॥ छं० ॥ २१३ ॥

अमरसिंह के मन्त्रबल की प्रशंसा।

कवित्त ॥ जिन अमरसि सेवरा। आनि देवंग परब्बत ॥
जिन अमरसि सेवरा। द्रव्य आन्यौ अनिअब्बत ॥
जिन अमरसि सेवरा। चंद मावसि उग्गाइय ॥
जिन अमरसि सेवरा। पद्मनि मान रिझाइय ॥
षट उभय कोस उद्योत हुअ। विप्रसीस मुंडिय सकल ॥
चित मंत भ्रंम आभ्रंम वर। सुवर मंच किज्जै सकल ॥ छं० ॥ २१४ ॥

छंद मोदक ॥ इति मोदक छंदह बंध गती। जंरि सत्त सुभं।तिय बंधमती ॥
दिसि अट्ठ दुरी दुरितान कथा। चित मुक्कलि च्यार वसीठ बथा ॥
छं० ॥ २१५ ॥
जिन मंच वसीठन चित्त करं। नव निक्कर नेह अव्रत्तधरं ॥
षिति मीरनि वीरय मंच मुषं। तिन रावन राज निव्रत्त हषं ॥
छं० ॥ २१६ ॥

---

(१) मो०--तेग।
(२) मो०-- "मतो मंडि चालुक्क" की जगह "सो मने चालुक" है।
(३) छं० कें० मो०--दांन।

छंद विअष्षरी ॥ भैरों भट्ट सुबंभन लीला । चारन चंद्रानन्द कवीला ॥
मचानम अमरसीह गुणग्याता[1] । साम दाम[2] भेदं सुविधाता ॥ छं० ॥ २१७ ॥
जिन अमरसी[3] अमरि रिझाइय । चालुक्क खेन सुमंच बढाइय ॥
मावस चंद जेन परगास्यौ । जेन[4] जैन भ्रंमच अभ्यास्यौ ॥ छं० ॥ २१८ ॥
सिंगी हेम भरे नग पासं । लच्छि प्रसंनिय दारिद नासं ॥
भोरा राय भुअंग वजीरं । भौ प्रसंन सुरसुरी सुनीरं ॥ छं० ॥ २१९ ॥
वाद जीति[5] सिर विप्र मुंडाइय । कुंभ थप्पि जिन साष भराइय ॥
बोल्यौ कुंभ कलक्कल वानी । नीर मध्य दुरगा सुखमानी ॥ छं० ॥ २२० ॥
इष्ट गंठि तपां दिष्ट पसारिय । वेद उथापिक रैभ विचारिय ॥
रथ षटधान हेमसिर कंचं । चढि नागौर अमरसी संचं ॥ छं० ॥ २२१ ॥
वर चैारासी सष्यसु आसं । छत्तन राजमद्धि मंच कैमासं ॥
है दुज धरत नीख पट मंजर । रतन हेम नग मुत्ति सुपंजर ॥ छं० ॥ २२२ ॥
घट में कचै सुकीर प्रगासै । सुनत सुवीर भ्रंम भर नासै ॥
जै भर घर चालुक्क प्रजाए । अमर मचानम बुद्धि रिझाए ॥ छं० ॥ २२३ ॥
इन विधि नर नागौर सँपत्ते । हीच निसा गुन करे सुरत्ते ॥
छल छंदै बंदे कर भूपन । लच्छि केर करनी कर रूपन ॥ छं० ॥ २२४ ॥

कैमास के यहां सन्धि का पत्र लेकर वहां का भाट भेजा गया उसने चालुक्य की बड़ाई करके पत्र दिया।

दूत कैमास भई सुअवाजं । भोरा राइ वसीठन साजं ॥
चेटक चंचल नंचल कानं । आर भटी देषे सब्बानं ॥ छं० ॥ २२५ ॥
भेटि भट्ट कैमास कलापं । आदर अधिक कियो सुअलापं ॥
मुत्तिय माला कंठ सुभानी । भोला राव दई सहनानी ॥ छं० ॥ २२६ ॥
पचियं[6] पच पढै परवानं । बीर मंच पूजा सह दानं ॥ छं० ॥ २२७ ॥

(१) ह० को०—अमर सिंहं महाग्याता।
(२) ह० को० मो०—दांन।
(३) ह० को० मो०—अमरसिंह।
(४) ह० को०—जिने।
(५) ह० को०—जीति।
(६) मो०—पची।

छंद नाराच ॥ कलप्प केलि मेलि मंद चंद चारु पद्दनं ।
तमेग दुग्ग सुग्ग सुभ्भ उभ्भ बन्ध कद्दनं ॥
नरिंद नील सील संच बंचयं भुअप्पती ।
चरित्त चारु चालुकं नरिंद को नरप्पती ॥ छं० ॥ २२८ ॥
गाथा ॥ न को न को नरप्पती । पत्ती चालुक्क राइयो सीसा[1] ॥
किं चहुवान सुमंती । कैमासं जानयं वीरं ॥ छं० ॥ २२९ ॥

चालुक्य राज का पत्र ।

साटक ॥ स्वस्ति श्री जय भूप भूपति भयं, भीमं भयं वर्त्तते ॥
पाथा पाच खवंत[2] देव षिनयो, मंचान् मद्दी नष्यते ॥
हेमं कोटिव षग्ग षग्ग बलयं, देवा चरित्तं भयं ॥
द्रारिद्रं यद द्वैव आनन रयो, द्रिष्टा स या पावयं ॥ छं० ॥ २३० ॥
साटक ॥ जं तं वारिधि बंधनेव चलयं भीमं भयानं बलं ॥
कल्यं केलि मरोरि भारव दिसा, बध्यं पुरं बन्दरं ॥
दीवं देवय देव दब्बस पुरं, दस्सी छुजावं पुरं ॥
सोयं भीम वलिष्ट मध्य वलयं, जेनं कथं दुस्तरं ॥ छं० ॥ २३१ ॥
गाथा ॥ दूंदो वारिधि बंधो । वारिधि मद्धे[3] सुदूंद्रनं द्रिष्टा ॥
वारिधि अंचन दूंदो । सा भीमं रूपयं भूपं ॥ छं० ॥ २३२ ॥
गाथा ॥ भूपति भीम नरिंदं । भूभारं काज अवतारं ॥
तुं कैमास न जानं । तो नं तो छंडि चहुवानं ॥ छं० ॥ २३३ ॥
छंद पारक ॥ हंमानी[4] बानी पुब्बानी । नीलानी सोइं सब्बानी ॥
मुरबानी बानी बोलंदे । सिंधानी सकलं तोलंदे ॥
सोरट्टी थट्टी निचटेयं । चर बंजघु रावर वहेयं ॥ छं० ॥ २३४ ॥
छंद चोटक ॥ आगे वांनक वांनक सत्तकयं । सम सत्तक संचक संच नयं ॥ छं० ॥ २३५ ॥

(१) मो० कृ० को०--सरसा ।
(२) मो "पावल" की जगह "एतल" ।
(३) मो० च । (४) मो०--बानी ।

अपनी बड़ाई लिखकर एक स्त्री का चित्र लिखा कि यह स्त्री लो और कई ग्राम और धन देंगे तुम आनन्द करो।

चित्र देखकर कैमास का मोहित हो जाना।

अरिल्ल ॥ लिष्यौ चिच पुत्तल परिमानं। ज्यौं कैमास भयौ बसि प्रानं ॥
माधव सें पंषा कर डुल्लै। त्यौं कैमास मंचबल भुल्लै ॥ छं० ॥ २३६ ॥

कवित्त ॥ गुज्जर वैधर देषि। देइ घोरदरा ग्रामं ॥
मति संपूर कैमास। देइ बहु द्रव्य सुनामं ॥
मध्य पद्दरजं मध्य। द्रव्य आवै वंदर वर ॥
सो अप्पौ चालुक्क। करै कैमास इन्द्र घर ॥
को सुनै कहै को जंपि को। को उत्तर तिन देइ फिरि ॥
कैमास मंच किन्नौ बसै। लिष्यौ चिच पुत्तलि लहरि ॥ छं० ॥ २३७ ॥

अरिल्ल ॥ साषि भरै घट सोइ प्रगासै। सुर नर नागनि[1] कौतिग आसै ॥
सब सत सद्दर संदर सब लिल्यौं। नट गति एम[2] अचम गति षिल्यौ ॥
छं० ॥ २३८ ॥

दूत ने लाले नामक एक खत्री की रूपवती लड़की के द्वारा वश करने का मंत्र आरम्भ किया ॥

दूहा ॥ यह सदक विधि दुज्ज दुश्र। जैन भ्रंम अभिलाष ॥
अबन मभिक्क कैमास कहि। अमर मघानम भाष ॥ छं० ॥ २३९ ॥

अरिल्ल ॥ षिची एक सुनैर[3] सुमत्ती। कलच एक सुरवर की गत्ती।
चढ चित केलि रसं रस मंडिय। मनि आभरन नारि सब[4] छंडिय ॥
छं० ॥ २४० ॥

छंद बिचष्परी॥ षिची एक नाम जिन लाले। ताके मुगध प्रौढ चिय बाले ॥
मध्या मान बाल सिरन्दाई। प्रौढा कै बारै निसि आई ॥ छं० ॥ २४१॥
मध्यम प्रौढ मुगध गति लीनी। प्यारो जाम रमी रस भीनी ॥
मान बालबेलच रस[5] जान्यौ। भूषन बिन श्रृंगार सुधान्यौ ॥ छं० ॥२४२॥

---

(१) ह० को०—नागति। (२) ह० को०—एम। (३) मो०—सुमेर।
(४) को० ह०—सिर। (५) मो० "बिलद रस" की जगह "बलभरद"।

षिची सोए जुनैर हिंसारं । तिन चिय एक कयौ श्रृंगारं ॥
तिन हित मांन कोल तिथि मंडी । मीनह मनु अचवन सिर कंडी॥छं॥०२४३॥
षिची एक मुगध सूमत्ती । तहां मंच आरंभन जत्ती ॥
हरि हरि तहां कयौ उचा । पढ़े छंद गुन मंच बिचारं ॥छं०॥२४४॥

मंच स्लोक ॥ ॐ नमो गिरे[1] गर्जस्य । जल्यं जल्पेषु जालपम् ॥
तत्वयं मंचं विध्वंसं । सारं धारं निवर्त्तयेत् ॥ छं० ॥ २४५ ॥

दूहा ॥ असूच नयन लच्छी अलष । नर कुमंच बर ग्रब्ब ॥
आकरषे तिन चारनह । सैरों भट गंध्रब्ब ॥ छं० ॥ २४६ ॥

दूत समय जान उस स्त्री को साम्हने लाया ।

दूहा ॥ अमरसिंह पासे प्रसन । मानि मंच जल जथ्य ॥
तब तहनि आनी चिहुनि । सुनै सुमंगल कथ्य ॥ छं० ॥ २४७ ॥

उस स्त्री के रूप का वर्णन ।

कबित्त ॥ कुटिल केस बय स्याम । गौर गुन बाम काम रति ॥
चोर धनी उन्नित ननंब । जानि रवि बिंब बीय गति ॥
चष चंचल उद्दिय नरीह[2] । करी मनौं ब्रह्म अप्प कर ॥
ता समां न कोइ आन । नांहि असमान थान घर ॥
कवि चंद कहै का ब्रंन करि । पदम गंध सुषचंद सरि ॥
जुब्बन तुरंग सुमनह करन । मानौं मार अवंगि धरि ॥ छं० ॥ २४८ ॥

कबित्त । चंद बदन चष कमल । भौंह जनु भ्रमर गंधरत ॥
कीर नास बिंबोष्ठ । दसन दामिनी दमक्कत ॥
भुज म्रनाल कुच कोक । सिंघ लंकी गति बारन ॥
कनक कंति दुति देह । जंघ कदली दल आरुन ॥
अल संग नयन मयनं मुदित । उदित अनंगह अंग तिहि ॥
आनी सुमंच आरंभ बर । देषत भुल्लत देव जिहि ॥ छं० ॥ २४९ ॥

दूहा ॥ कोटि ईस कीए सुब्रत । विमति मत्ति परमान ॥
तहां मंच पत्ते सुबर । गहै लाल खित पान ॥ छं० ॥ २५० ॥

---

(१) मो० छ० को०–गिरा । (२) को० छ०–"उद्दिय नरीह" की जगह "उद्दित नरीह" ।

छंद त्रिभंगी ॥ संचारी देसं, कुंजर भेसं, करि पोडेसं, शृंगारं ॥
आकर्षत मंषं, एक सवस्तं, दर्पन हस्तं, कतारं ॥
कबरी करतारं, कज्जर सारं, हार सुधारं, निस्सकारं ॥
मुष मंडन नीसं, कर नष नीसं, नेवर[1] नीसं, सुद्धारं ॥ छं० ॥ २५१ ॥
वै संधि समानं, उप्पय जानं, कब्वि बषानं, रितुराजं ॥
रितुराज चढंतं, फागुन अंतं, बल्लि आमंतं, इन साजं ॥
हरि हरि झारं, मुष उहारं, बिहु बिम्मारं, थनथोरं ॥
घन घंट किसोरं, मुष तंमोरं, प्रोढन भोरं, इन जोरं ॥ छं० ॥ २५२ ॥
जावक रंग पायं जेहरि झायं ओपम आयं मिल्लि चंदं ।
कंचन घर[2] घुघ्घर बजि रस दुब्भर रति समउभर भैजानं ॥
पीरे घन भैारं, लगि मन मोरं, अमी सभोरं मन मालं ।
अल्लि अल्लि वेकारं हल्ल चित तारं ससि सम रारं पहु रारं ॥छं०॥२५३॥
चल्लि चंचल नेनं, संभरि वेनं, कवि छवि देनं पचिचारं ।
कर नागन ओरं, देवन जोरं, रचि पचि[3] ओरं, तन थोरं ॥
कटि किंकन रोरं, गंभ्रब ढोरं, ढपै सरोरं, सिर सोरं ।
चिहु चक्कित नैंनं, तट्ठिय[4] ऐनं, मधु रस बैनं रस सेनं ॥ छं० ॥२५४॥
ढल कंतिय बैंनी भिंभरनैनी, जुग फल देनी रस मैंनं ।
बसनर तन मंडिय भूषन थंडिय गुन बहु मंडिय दुषकंडी ॥
तारक बिन सस्सिय आभा लस्सिय भाइ प्रसंघिय भव षंडी ।
आवरदा लज्जिय संमर रज्जिय, नन नं नज्जिय, थन थोरं ॥छं०॥२५५॥
चल चंचल नैंनं, मधुरित बैंनं, भंभरि मैनं, बनि रोरं ॥
प्रज्जंक सुगंधं नव नव नंधं रुचि नावंधं घरि छोरं ।
आचिज्ज सरस्सय किंकन कस्सय देह हस्सय दुजदोरं ॥ छं०॥२५६॥
गाथा ॥ पारवती जिन मंत्री । कामनषं रषियं बरयं ॥
इन दिष्टि सुधामय बाले । अनंग नांम अंग सो मिलयं ॥ छं० ॥ २५७ ॥
छंद नाराच ॥ अनंग अंग अंग मांन अंग अंग नित्तयं ॥

(१) मो०—मीलं । (२) मो०—घन । (३) मो०—करं । (४) मो०—तुट्ठिय ।

क्कि बाल काम साल कांम काम काम पत्तयं ॥
मनों क्कि सेंन सागरं सुबुद्धि नाक सोद्यं ॥
मनों क्कि चाय भाश्कौ विचित्त चित्त सोधयं ॥ छं० ॥ २५८ ॥

कवित्त ॥ अंग चरित्त क्कि चित्त । [1] चित्तं मनमथ विक्कारिय [2] ॥
मानों सेनं तरंग[3] । [4] अनँग आनंग प्रचारिय ॥
किधौं जोग मन भजन । रजनि सायक सुषसागर ॥
मानों मयन रवंन । सेत सज्जी रति नागर ॥
सरिता सुहप[5] छोडून लहरि । रचै मीन मन सेंार [6]परि ॥
घन चाइ भाइ गुन ग्राह सम । कवि का ब्रंनन करै[7] करि ॥ छं० ॥ २५९ ॥

आश्चर्य है कि कैमास ऐसा मंत्री बालचरित्र के वश पड़ जाता है ॥

गाथा ॥ आचिज्ज बालचरियं । किंहे जंम्म जम्म विन चरियं ॥
कै विधि पुब्बह लिषियं । जो मन माहन सुष सुषांइ [8] ॥ छं० ॥ २६० ॥

वचनिका ॥ प्रथम संदा दुज्जन राइ कैमास मंची दुष्टां तो ॥
उन मंनो कांमां तो ॥
अमर मचा तम देवि प्रसादां तो । कैमास दुष्टां तो ॥ छं० ॥ २६१ ॥
दूसरे हंस राव वोल्यौ ॥ दुर्लभ राइ कुमारां नों ॥ पाचांतो पानिग्रहनांतो ॥
पर्यंकांतो कामांतो । रति सांतो घट दोर्श्वांतो ॥ छं० ॥ २६२ ॥

छंद त्रिभंगी ॥ घनं नंक्कि घटंतो भजि भजि मंतो । इय कत्ति तंतो [9] गुनवंतो ॥
सकति गुन सुंदरि अंमरि संचरि भिस्रन मंजरि रतिवंतौ ॥[10]
लवली पुपफं जरि करक्किय पंजरि मिलि मीनं जरि[11] जुगजंतो ॥
त्रिक्कित्त सिर मंडिय हो प्रभु मंडिय प्रभु मन मंडियं सुभ संतौ ॥ छं० ॥ २६३ ॥

दूहा ॥ दूरत [12] बाज्रे बाल गुन । रचो चिंच परिमांन ॥
कै आई अदि लोकतें । कै अमरेष बषांन ॥ छं० ॥ २६४ ॥
सुरपुर नरपुर नागपुर । इच आचिज्ज सुकीन ॥
धनि मंची सेवर अमर । दाचिम [13] सुबल सुकीन ॥ छं० ॥ २६५ ॥

---

(१) क्व० मो०—चित्त । (२) मो०—चाधिकारिय । (३) मो०—तुरंग । (४) मो० घ्नंग । (५) मो०—संपूर ।
(६) मो०— तीर । (७) मो०—कहे । (८) मो०—दुषाइं । (९) मो०—जयवंतो ।
(१०) मो०—यह तुक नहीं है । (११) मो०—'मिलि मीनं जरि' की जगह 'मिलि मिलि मंजरि' पाठ है ।
(१२) मो०—दूरति । (१३) मो०—दाहिमा ।

अमर सिंह के मंत्र के बस में कैमास ऐसा प्रबल स्वामि भक्त मंत्री फँस गया।

कवित्त ॥ जिन मंची कैमास। द्रव्य उद्धरि धर लीनो ॥
जिन मंची कैमास। प्रजै जद्दव कुल पीनो ॥
जिन मंची कैमास। लियौ पद्दू निधि धारी ॥
जिन मंची कैमास। जंग संभरि उद्धारी ॥
मंची अनास कैमास सों। मति उचार अमरा कियौ ॥
गंधर्व घाट दुर्गा विसार। मंच विसेषन जे भयौ ॥ छं० ॥ २६६ ॥
जा दिष्षंत-संचियसु। पंचदस वयन प्रपत्ती ॥
तहां बध्यो मेवात। राज मंगल गुन रत्ती ॥
होत बरस नव दून। जाद्द थट्टा रन भंज्यौ।
उभै बीस इक मास। अद्ध अद्धें गुन सज्यौ ॥
भंजयो बीर-बंभनति बस। अब अमंच मंची [1] कियौ ॥
कैमास भयौ बल बसि विवल। मंच सत्त सचह गयौ ॥ छं० ॥ २६७ ॥

दूहा ॥ यों [2] बसि भयौ कैमास बर। ज्यौं रोगी भेषेज ॥
ज्यों नट बसि कपि नंचई। ज्यों त्रिय बसि पति सेज ॥ छं० ॥ २६८ ॥

कैमास ऐसा मंत्रमुग्ध हुआ कि पृथ्वीराज को भूलकर चालुक्यराज के वशावर्ती हो गया ॥

अरिल्ल ॥ यौं बसि कियौ दाहिमौ प्रमानिय। कोह मोह छोह मद टानिय ॥
इक[3] आंन फिरी [4] चालुक्क मांन की। मेटी आंनि प्रथीपति जानिकी ॥
छं० ॥ २६९ ॥

दूहा ॥ कियौ बसि कैमास तहां। अमर मषातम उट्ठि ॥
सकल सघर भीमंग बर। प्रथुक आंनि संपुट्ठि ॥ छं० ॥ २८० ॥

कैमास के वश होने से नागौर में भीमरायचालुक्य की आन फिर गई ॥

कवित्त ॥ मंची भौ कैमास। काम न्रममयो नेह जिहि।
सांमि भ्रंम मुक्कयौ। नीत मुंकी अनीत ग्रहि ॥

---

(१) मो०–मुंकी। (२) मो०– बति।
(३) मो० 'इक' नहीं है। (४) क्र–"आल"–इतना और अधिक है।

मादक उनमादुक समथ्यि। सोषन द्रुह बानिय ॥
बंध भ्रंम छंडयौ। चंध काथा उनमानिय ॥
लज्जा सुमंत मन संकि रह्यौ। रवि पति पंक धसुभयौ ।
चालुक्क आनि नागौर फिरि ॥ मरन अंध नन सुझयौ ॥ छं० ॥२७१॥

चन्द बरदाई को स्वप्न में इस समाचार की सूचना हो गई ॥

आनि फिरी भोमंग। नैर नागौर दरं घर ॥
बसि कीनौ दाहिम। धरनि भौ कंप धर द्दर ॥
सुपन बीर बरदाइ। भरकि उठ्यौ जु चरित तहं ॥
जहं मंची भर सुभर। करिग बसि बसन देव जहं ॥
धूमंग धूप डंबर परिय। किल किलंत डमरू करह ॥
दनु देव नाग सब बसि करन ॥ कितक बंध बुद्धी नरह ॥ छं० ॥ २७२ ॥

यह जानकर चन्द ने देवो का आह्वान और उसकी स्तुति की।

दूहा ॥ इह चरित दिषि मांत तहां। कटक संपती अप्प[1] ॥
चंद जप्यौं जप जुगति सम। निसि सुपनंतर जप्प[2] ॥ छं० ॥ २७३ ॥

छंद भुजंगी ॥ चढी सिंह देवी प्रकृति पुरुष्यं। महा तेज जागुल्य चंदं मुष्यं ॥
दिखे बाक बानीं समानी न जंपी। कुकंपे कपूरं नचे मेर लंपी ॥
सुभं स्वेत श्यामं रगं रत्त पीतं। मनो दिष्यियं धनुष नभ अभीतं ॥
वजै डक्क डौंरू चिसूलंत हथ्थं। स्वयं बाक बानी बिराजंत तथ्थं ॥
मिल्यौ अमर राहं सु कैमास भानं। भयौ अंधकारं दरूं सा बयानं ॥
बधे जेन घट्टं मध्यं अंधकारं। गई मत्ति चंदं भयौ सोन तारं।
कयो दिष्यियं रूप सा दिव्य अग्गै। पताल[3] नयं सिष्य ता अभ्र लग्गै ॥
जयं जै जयं जै [4]जपै चारुधानं। तबै चंद कब्बी परतीन मांनं ॥
उमा कै बिसासी परतीत पावै। जहां अब्बिसासी तहां देषि नावै ॥
उठ्यौ चंद श्चासी पुरं प्रात राई। दई निरत नांदी चहूवांन जाई ॥
किधौं केवलं मरन सरनं बिचारौं। किधौं जैन भ्रमं जुगं पाइ टारौं ॥छं०॥२७४॥

चन्द स्वयं कैमास के पास नागौर की ओर चला।

दूहा ॥ सुकबिचंद चल्यौ सुनिज। पुर नागौर निधांन ॥
जहां कैमास पलटि तन। करन केलि चहुांन ॥ २७५ ॥

(१) मो०—थाय। (२) मो०—पाय। (३) पाठांतर-बलानं। (४) मो०—जंपियं।

नागौर पहुंच कर चन्द ने सब बात प्रत्यक्ष देखा और घर घर यह चरचा सुनी।

छंद मोतीदाम ॥ जहां तहां गल्ह सुनी परवांन। सुमित्तिय दांमय छंद बषांन ॥
जहां महां गल्ह सुनी परधांन। सुमि[1]त्तिय दांमय छंद बषांन ॥
बजी ग्रह ग्रेह घरं घर बात। मनों चिन उड्डिय वाय अघात ॥
कियौ बसि दाहिम मंत्रिय राज। बजी सुर सब्ब अकित्तिय बाज ॥
उडो घर नैरनि नैरनि नत्त। गई अजमेर सुनी श्रुतवत्त ॥
धरद्धर कंपिय अंम परांन। भयौ बसि दाहिम देव सुजांन ॥
सुनी चहुआंन कही कविचंद। भयौ न्रप बत अगाह दमंद ॥
स पठ्य वत्त जित्यौ कयमास। करै जिन पग्गह पिचिय आस ॥
भयौ सपनंत चल्यौ कविचंद। मनों मकरंद उड्यौ रस भिंद ॥
संपत्त सुनथ्थ महा कवि धीर। जहां कयमास पल्हहि सरीर ॥छं०॥२७६॥

यह देखकर चन्द ने बड़े क्रोध से भैरा तथा देवी का अनुष्ठान आरम्भ किया।

दूहा ॥ दिष्षि नयन झल चलि भयौ। चल चल चल्यौ अंग ॥
क्रोध लग्गि किलि कुप्पयौ। दिष्षित डिंभ नरंग ॥ छं० ॥ २७७ ॥

छं० भुजंग प्र० ॥ कहै चंद घंडो अहो भद्र भैरूं। तुअं लुहि विप्रं तनी लक्कि जोरों ॥
अहो चारनं नंदनं दीन सानं। घटं मध्य काली कलं कल किलानं ॥
मयं घट्ट घट्टं बमंडंन जोरं। पुच्छै देव बोल्लै डुल्लै डोह सोरं ॥
वियो घट्ट थप्पे दयं थरथरानं[2]। जयं जैन भग्गी भसं भरभरानं ॥
कहै कोनं आरंभ ज़ीत्यो सुजैनं। बजी चक्क चंदं लग्यौ सीसगैंनं ॥
थरं थप्पि थानं वियं घट्ट मंडे। बजै सख्ख दूनों जिनैं सद्द संडे ॥
द्रुगे धाम धामं पियं पद्द पांनी। ढिली जैन भ्रंसं सबं राजधानी ॥
फिरे पक्खिमंषं महा मंच जंषी। चरे षंड षंडं सबं सख्ख क्षषी ॥
मिले राज मभ्भं [3]मरज्जाद छुट्टी। उभा सत्त सामंत की सक्ति षुट्टी ॥
निरालंब लंबी वियं बीरधाई। चिषा रत्तपुक्की नची रत्त राई ॥

(१) मो०—सुमुत्तिय। (२) मो०—थुरहरानं। (३) मो०—मध्य।

विथा जथ्थ लग्गी तथा तो प्रसादं । कथा काल जैनं भयो एकबादं ॥
जहां बेद बांनी सती सत्त पाटं । तहां जैन जंपै सु पाषंड वाटं ॥
हुहुंकार हंक्या घटं घाट उठ्यौ । छलं छेद भेदं [1] दुत्रं धूम बुठ्यौ ॥
धरं धार भारा धरा कंप ठांनी । मिटी बूंद माया सु आकास [2]बांनी ॥
दुजं दोइ उड्डै कुटे सुग्गं मग्गं । घटं घाट फुट्या श्रमं धाम भग्गं ॥
हतं छच मोहं महं म्लछ तुट्यौ । परा पेष तें जैन अंमं सु लुट्यो ॥
महा मंच मंची दिठी माउ मांनी । कवी चंद मंचं सिधी सो समांनी ॥
छं० ॥ २७८ ॥

संग्राम काले संग्राम ईश्वराय संग्राम भूपाय स्मरनं क्षत्वा मंचं ॥
संग्रामे प्रविसे तु जयां संग्रामे विजयां भूपाल दारे स्मरणं क्षत्वा ॥ *

चन्द का देवी की स्तुति करना

साटक ॥ चामंडा वर षग्ग मंडित करा हुंकार सद्दा धरं ॥
प्रभासं सचसंघ सत्य तपसं रुंडाल माला धरं ॥
लग्ना [3] हस्त मुषी प्रचंड नयना-पायातु दुर्ग्गेश्वरी ॥
काली काल्य कराल काल वदनां अंगे कालिंगे[4] जया ॥ छं० ॥ २७९ ॥
माया तूं हंकार माल कलदा जीतं जगद् ब्रह्मनी ॥
माया तूं माहेश्वरी जह क्षहं अग्गोचरं गोचरं ॥
सिष्यं रिष्य [5] सुपट्ट नंचत वसा हिंगोल हुं हुं कारं ॥
हांहुंका हुंकार हक्क सुनयं जातं दलं दुज्जनं ॥ छं० ॥ २८० ॥
षग्गं जा मिति भ्राम भ्राम भ्रमियं तस्यास्य मंचे मुषं ॥
सा मंचे उच्चार धार धरियं[6] अभ्भं अभंगा अरी ॥
जग्यानं जय जोग जोग पतयं पाषंड षंडायनं ॥
काली लंक लषंति कंति त्रिपुरा तस्यासि ध्यानं धरं[7] ॥

(१) मो॰ 'छलं छेद भेदं दुत्रं धूम बुठ्यौ' की जगह छलं छेद हूयं धरं धूम उठ्यौ' है ।
(२) मो॰—आसमान ।
* यह मंत्र एशियाटिक सोसाइटी की प्रति में नहीं है ।
(३) मो॰—लग्नी हस्तमुषी प्रचंड नैनी पायातु दुर्गेश्वरी ।
(४) मो॰—कालिंगे जया की जगह कालिंगेश्वरी है ॥
(५) मो॰—रष्य ।
(६) मो—भंगा ।
(७) मो—धनं ।

चन्द का देवी से वर मांगना कि जैन की माया को जीतें।

ध्याई तूं उमया अपंड ललया दाता दुरी नाशिनी ॥
संतुष्टा सुर नाग किंनर गना दैत्यानि संचा सनी ॥ *
रक्षा चारु चवंति चारु कमलं संतुष्टयं साधुनं ॥
जैनं[1] बर्द्धस बद्धयाइ चरनं जै जै सुजिह्वासनं ॥ छं० ॥ २८२ ॥

दूहा ॥ सुबिधि बिद्धि खेवर सुबर। बार बिद्धि परमांन ॥
जंच मंत्र जाप्प सौं। लगी रोम असमांन ॥ छं० ॥ २८३ ॥

छंद भुजंगी ॥ उठे चंद चंद्दं[2] बरदाय बीरं। भयौ तेज आकून संनी अधीरं ॥
वुल्यौ बीर बांनीय ज्यों गेन पांनी। मनो उग्गियं बीर सिव दिष्ट जांनी ॥
महा मंडियं बीरं अंकुस सिरानं[3]। नजा तेज तत्तं उठी बीर बानं[4] ॥
छं० ॥ २८४ ॥

कवित्त ॥ जिन संची मंगाय[5]। द्रव्य उद्धरि धर लीनी ॥
जिन संची रिनथंभ। ठेल्हि जद्दव कुल दीनी[6] ॥
जिन संची ढुंढार। ढार कूरंभक सारी ॥
जिन संची जंगली। जंग संभरि उद्धारी ॥
संची अभासि[7] कयमास सौं। मंति उचार अमरा कियौ ॥
बम्भरी भट्ट दुग्गार द्रुम। घट बिघाट उभ्भा वियौ ॥ छं० ॥ २८५ ॥
उच्चौ चन्द बरदाइ। बिरद दुग्गा सम्भलि सुर ॥
सुमन सस्त्र तजि मित्र। पत्र बिज्ञिय जुमित्र वर ॥
काल कलंन[8] कल्यांन। कलह घटन ओघट्ट वर ॥
भट[9] निघाय[10] रागी सुभट। भट साहस अम्मं[11] धुर ॥
दिष्यो सु चाहु संची धरा। मनि अचार[12] कर लिप्पयौ ॥
गन्धर्व[13] गांन चारन असर। वर पावस्स सुबिप्पयौ ॥ छं० ॥ २८६ ॥

---

* ये दो चरण रायल एशियाटिक सुसाइटी की प्रति में नहीं हैं।
(१) मो 'जैनं बर्द्धस धार चंदि चरनं'। (२) मो०--चंद्दी। (३) मो०--सिरानी।
(४) मो०--बानी। (५) मो०--कैमार। (६) मो०--पीनी।
(७) मो०--अनासि। (८) मो०--कल्यांत। (९) मो०--नट।
(१०) मो०--धिंम। (११) मो०--ध्रि। (१२) मो०--उच्चार।
(१३) मो०--इंलि हंकारह छंडियो मनो असर गुरु सिप्पयो।

समाचार पाकर चन्द का मंत्र व्यर्थ करने के लिये अमरसिंह का मंत्र प्रयोग करना और घट स्थापन करना।

सम[1] हो चन्द कबिन्द बाद। अंकुस सिर मण्डिय ॥
मंच देव उच्चार। हंकि हंकारव कं।डय ॥
अमरसिंघ बर भट्ट। बीर बम्मन बिचारिय।
मंडि बीर पाषण्ड। मंच जंचह उच्चारिय ॥
मंड्यौ कुम्भ सलिलह सुमन। धूप दीप अच्छित धरिय ॥
सेवर सुगन्ध आडम्बरह। हथ्थ जोरि बीनति करिय ॥ छं० ॥ २८७ ॥

छन्द भुजङ्गी ॥ महावीर बीरं चितं जाप लीनौ। जिनैं कुच्छितं लुच्चितं पंथ कीनं। ॥
जिनैं जग्य ध्रंमं चरं नेति [2]भंजै। सुध्रंमं उथापे अध्रंमं सुरंजे ॥
बधं जीव टाल्यौ सुलोभं निवार्‌यौ। सतं सील आचार अंगं अधार्‌यौ॥
रचे पंच भूतं प्रथी अप्प तेजं। ग्रहै नाहि धातं अघातं सुनेजं ॥
दमं दान ध्रंमं दयाजुह मंड्यौ। सुअं अमर उप्पासनं तासचंड्यौ ॥
छं० २८८ ॥

एक घड़ी तक चन्द का भ्रम में पड़ जाना। फिर संभलकर अपना अनुष्ठान करना देवता आदि का आश्चर्य के साथ दोनो का बल देखना।

कबित्त ॥ बोल्यौ घट्ट सुघट्ट। बीर हुंकार हुंकारिय ॥
ता पछै मंची न मंच। आरंभ सुथप्पिय ॥
इक्क मुट्ठि दुअ मुट्ठि। चंद संमुह पढि नंषिय ॥
घरी एक भ्रम भस्यौ। जगि द्रुग्गा जस लग्गिय ॥
बुल्लयौ बीर कविचंद मुष। इह हसंत हेमावलिय[3] ॥
सु प्रसंन मान भट्टह भट्टय। बस[4] पाषंड भ्रमाव तिय ॥ छं० ॥ २८९ ॥

---

(१) मो०—छंद २८७ के आदि के दो तुक का पाठ इस प्रकार है—"जनमय आचक्रजकल। मंत्र आरम्भ सुमण्डिय ॥ पवमावह परतषि। हक्कि हुंकारव छण्डिय।
(२) छ० को०—नन्ति+मो०—'ध्रंमं चरं नन्ति' की जगह 'धम्मं धरं नीति'—है।
(३) मो—हेमावलीय। (४) मो—सब पापण्ड भ्रमावतीय।

कह्यौ वीर कविचंद । प्रगट आचिज्ज दिषायौ ॥
कुंभ मध्य पाषंड । बांन विद्या इन मायौ ॥
दनुज देव मानुष्य । सकल आचिज्ज सु जान्यौ ॥
दै मनुष्य गति छेद । उपल जिम मिदै न पान्यौ ॥
लोचनै रिस्स जल जिमि प्रबल । भट्ट सरस रस वुल्लयौ ॥
गंध्रव वीर चारन अमर । धंमर उच्छित ढुल्लयौ ॥ छं० ॥ २९० ॥

राजा बलुव पहुनी । चंद कहौं उप्पर आइय[1] ॥
सबें साथ चालुक्क । अमर भए तुंग सघाइय[2] ॥
रह्यौ भांन रथ षंचि । देव लगि तुंग तमासे ॥
कुटिल दिष्ट कुटईन[3] । आज मत लभ्भ[4] कैमासें ॥
उचस्यौ चंद उरदक्कयौ[5] । आरंभ्यौ वर मंच कै ॥
आचिज्ज लोग दिष्षत[6] भयौ । अह प्रारंभ न तंतकौ ॥ छं० ॥ २९१ ॥

चन्द ने अमरसिंह की माया काटने के लिये योगिनियों के जगाने का मन्त्र आरम्भ किया ॥

छंद भुजङ्गी ॥ कियौ मंच आरम्भ प्रारम्भ कव्वी । जगी चौसठी देषि तो तेज छव्वी ॥
चितै चन्द कव्वी तथां रूप तैसौ । मनो अर्क राकान किचं मिलै सो ॥
मुषं चन्द कव्वी पढै दिव्य वानी । रिझें मान कव्वी तिनं में समांनी ॥
रिझें थावरं ताहि जंगम कैसें । सुनैं पंप बांनी मुनी मौंन जैसे[7] ॥
सुनें कांन नारी सुधा बाल भग्गी । मनों तर्क उत्तर्क संदेस जग्गी ॥
सुनें सुष्पवानी प्रमांनी न जाई । मनों इन्द्र आगें छचा छूह गाई ॥
बुधै कंठग्राथं लिषे चित्तरेषं । लगे मंच मांनो सजीवं सुभेषं ॥
रहे सीत मन्दं सुगन्धं सुवातं । मुषं कैं सुधारैं सुरंनं अघातं ॥
रथं षंचि अर्कं अरुनं सुनावै । रह्यौ मोह माया क्रमं नं न धावै ॥
चल्यौ भाव रीझें गति कंकी लीनी । रसम्भी भयानं अद्भूत चिन्ही ॥

(१) मो-राज बघु पहुनी । चन्द उपर कहौं आयो । (२) मो-सहायो ।
(३) ए-कुट्टेन । (४) मो-मतिलधि । (५) मो-हक्कमो । (६) मो-दिषित ।
(७) मो-मनौ पंष बानी मुनी मान जैसें ।

नगं छूंदरी चित पिते सुखबी । चख्यौ खाव रीझै कथी मोंचि मंबी ॥
धरी एक चन्दं ठठक्यो सु सब्बी । मनों गब्भिकयं मंझ पाषान पुब्बी ॥
संगी छूदरी ओचि है अब्ब उठ्ठी । करौं दौरि तुम्भी करामात मुठ्ठी ॥
छं० ॥ २९२ ॥

अमरसिंह का बहुत पाषण्ड फैलाना ॥

दूहा ॥ अमरसिंघ सेवर सुबर । किय अनूप पाषण्ड ॥
सिर पष्षै धर नंचहीं । धर पष्षै नचि[1] मुण्ड ॥ छं० ॥ २९३ ॥

चन्द का पाषण्ड भंजन में सफल होना ॥

कवित्त ॥ कहै चन्द सुनि राज । देय आसीस दुक्क पय ॥
तब सुक्किंन किन नंक । बोलि बानी सुरङ्ग चय ॥
जै जै जै उच्चार । कह्यौ कवि तिम तिम नंच्या ॥
सब देवत बोलयौ । अद्भुत रचना कर रंच्यौ ॥
पाषण्ड रराड[2] सेवर अमिय । घट भंजन उप्पाय किय ॥
मांनुह्न न जांनिय देव गति[3] । सम भग्गौ[4] सुव चन्द जिय ॥
छं० ॥ २९४ ॥

दूहा ॥ मिनह्नु न तिन देषिय नयण । सयन सकल विध वीर ॥
ते कयमास नरिन्द गति । कढ्ढन मतह्नि सुधीर ॥ छं० ॥ २९५ ॥

कवित्त ॥ सत्त सुमत्तियं तत्त । वाद लग्यौ पिह्नु पासं ॥
घय घय हुंकार वन । कुम्भ मुक्यौ बल भासं ॥
नव निर्तन नव घात । नवति बल मंच उचारहि ॥
एक एक सम्भवहि । एक एकन पढि डारहि ॥
लागंत चन्द बरदाइ तन । समत सम्यौ चक्किय उमा ॥
नन जग्य[5] न निद्रा मषिल बर । सुमति मन्त चिन्तिय उमा ॥
छं० ॥ २९६ ॥

छन्द पद्धरी ॥ गवरी सवध्य गवरी व ईस । जग्गायौ चंद मंथ मवसीस[6] ॥

---

(१) मो०--हकि । (२) मो०--मंड । (३) मो०--मानुह्न जानियतु देवगति ।
(४) मो०--'सम भग्गौ' की जगह--' समभगौ' । (५) मो०--जाया । (६) मो०--मंजन बरीस ।

अविवेक गाहुडिय सात पास । लभ्भै न छिप्प आरि सप्प तास[1] ॥
छं० ॥ २९७ ॥

दूहा ॥ आप सुष संभोय उर । रमिय काय[2] धृत धारि ॥
जै जै जै उच्चार वर । पार न लभ्भै पार ॥ छं० ॥ २९८ ॥

चालुक्य राज का मन्त्र नष्ट होना ॥

छंद भुजंगी ॥ मिटे मंच मंचं[3] सुचालुक्क राजं । भए विभ्रिमी सब्ब मंत्री अकाजं ॥
सबै मंच मंत्री कथी चंद जंप्यौ । तबां पहली राव आसन कंप्यौ ॥
कढो तेग वेगं निनारी निनारी । मनों बीज कोटी कलासी पसारी ॥
दईचंद अंब्बी सुन्यौ चंद बंसी । नईठांमअप्पं मरंनं सु अंसी ॥ छं० ॥ २९९ ॥

गाथा ॥ इक्कं ठाम मरिज्जै । नां किज्जै एकयौ ठामं ॥
क्षिती मत्ति सुदेवं । दिप्यानं इक्कयौ सेवं ॥ छं० ॥ ३०० ॥

चन्द का अमरसिंह को वाद मे जीतना ॥

दूहा ॥ घरी एक किय वाद वर । को जित्ते कविचंद ॥
अमरसिंह सेवर सुबर । भयौ कित्ति गुनमंद ॥ छं ॥ ३०१ ॥
वर पाषंड न पुज्जयौ । किए अमर घन मंत ॥
को जित्ते कविचंद सों । दुर्गासप्तक मंत ॥ छं० ॥ ३०२ ॥

अरिल्ल ॥ जे पाषंड बहुत अभ्यासे । चंद मीन विष ज्यों ग्रहि ग्रासे ॥
छिनक एक विद्या गुन संधी । वर पाषंड मंडि कवि बंधी ॥ छं० ॥ ३०३ ॥

दूहा ॥ बद्दा जैन सुजैन लगि । जीता चंद चरित्त ॥
भामीं भट्ट सुमंत[4] किय । मरन जियन करि चित्त ॥ छं० ॥ ३०४ ॥
छुट्टि भये पाषंड सब । छुटि मंत्री कैमास ॥
वर वरंत आयास लगि । चंदन कंडे पास ॥ छं० ॥ ३०५ ॥

चन्द की सेना का युद्ध करके शत्रुओं को भगाकर कैमास के पास जाना ।

छंदभुजंगी ॥ मर्हदेव देवान चालुक्क चंपे । तबां तू सघायं भयं राग जंपे[5] ॥

(१) मो०—तास । (२) मो०—काम । (३) मो०—मची ।
(४) मो०—सुमित ।
(५) मो०—कंपे ।

निसा एक रत्ती ऋसो जंग थाये। । पषं श्रोन षोषीन भूची अघायो ॥
पषं[1] चार ष्हंक्यौ मयं मात साथे। सदा देव दुग्गे अनाथं न नाथे ॥
सवा लष्य सेना गजं बाजपूरं। अगं बान कंमान साजि गैन दूरं ॥
क्षमी स्कंम नेजे छिता[2] छ्च पष्षं। मषा अब्ब अब्बं लषी मंष जंषं।
धरा धार षंडे सुमंडे विसष्षे। परी[3] धार पाइक्क काइक्क लष्षे ॥
विधा सामि सेना सुपंचं हजारं। तिनं संझ सामंत पचीस भारं ॥
मुषं मंत्रि कैमास दिय कासमीरं। बियौ बग्गरी राव स्वामित्त धीरं ॥
तियौ जाम जद्दो लघु बंध जाजा। धरै लाज गुज्जर धरा राम राजा ॥
षटौ षग्ग तोनं जयं जैत छ्षं। गुरू राव गोयंद सत छ्च रषं ॥
सयं सिंघ साना हनौ अष्ट काली। जिनें दुग्ग देवं समं तेज काली ॥
हुसं गौर गाजीव साजीवं सामं। सुनी संभरी राव स्वामित्त नामं ॥
प्रथा राव षाडा षयं चंड देवं। जिनै दाहसी धवल एकादि सेवं ॥
ननं तुंग षंगा अभंगा बिचारं। जिनै मारिया राय जंगी पछारं ॥
बली राइ बंको बिहद्दान बंके। जिने ढाहि ढुंढेरिया राइ हंके ॥
बरं जोर कूरंभ राअंग सूरं। जिसी पथ्थ पत्ताष मझ्झे संजूरं ॥
नियं राइ नीचर[4] मनौ रथ सथ्थी। जिसो राव संतन तनो भीष रथ्थी ॥
मघा मल्ल लज्ज्यौ बियौ मल्ल भीमं। बरं तास चंपेन को जोर सीमं ॥
मद्दं मंदनं देषनो पास सेवं। सुती मंष मुष्षं मयं जंपि एवं ॥
हु हुंकार चक्की सती सा बिचारं। चढे मत्त अग्गे सुपंचं हजारं ॥
मघा सेन सत्तारि तनो लष्षसाई। सुन्यौ राइ कित्ती दियौ रति बांई ॥
छं० ॥ ३०६ ॥

कवित्त ॥ बर बंधे षसीठ। ढीठ पावंड निवारे।
धोरहरा आमांन। सेन संनाह संभारे ॥
तोरी रति षीजांम। जांम बोल्यौ अद्दोनी ॥
षोजा जारन आइ। गस्त चैाकी भीमोनी ॥

(१) मो०—षहंकार। (२) मो०—छिता। (३) मो०—परी।
(४) मो० को०—नाहर।

उछाल्ह पल्ह सेपंच दुनि। सेनी झझि दुरा[1] नरन ॥
सेवांच नेज भज्जह भिरिय। वंसी जान विषांन वन[2] ॥ छं० ३०७ ॥

कैमास का लज्जित होना।

चौपाई ॥ वंसी जान षषांन प्रमानं। रह्यौ लज्जि कैमास निधानं ॥
चौसट्ठी मनों भाव सुढारी। उठै सीस संमुह क्यौं भारी ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

कवित्त ॥ उठ्ठावै नह सीस। लज्ज दाहिम चहुवानं ॥
उठै सीस नह ईस। लज्ज कुल पन कुल पानं ॥
उठै सीस नह ईस। करै भारथ बहु काजं ॥
उठै सीस नह ईस। देव गति देवनि साजं ॥
उठै न सीस संमुह सरस। लज्ज विरद्दां भार सिर ॥
कैमास काज लग्गी गवनु। विसर वीर दिष्षो विधर ॥ छं० ॥ ३०९ ॥

चन्द का कैमास को आश्वासन देना।

दूहा ॥ वर वरदाइ नरिंद कवि। दै आसिष छिति राज ॥
तूं लज्जिन कैमास वर। मंत विरोधन काज ॥ छं० ॥ ३१० ॥

कैमास को लेकर पृथ्वीराज के सामंतों का चालुक्य राज पर चढ़ने को प्रस्तुत होना।

कवित्त ॥ चंद सुचंडि प्रताप। मिच कैमास कुडाइय ॥
भेटि आनि चालुक्क। आंन चहुआंन चलाइय ॥
साज राज कैमास। सीस ढंकै न उघारै ॥
सबला सों संग्राम। करन रति चाह विचारै ॥
उज्जली रैंन उज्जल दिसा। जस उज्जल कों धाईयां ॥
दाहिम राइ दाहर तनै। सिलह सुरंग बनाईयां ॥ छं० ॥ ३११ ॥
सथ्य राव चांमंड। सथ्य सज्जिय परिहारं ॥
मधन सिंह बल्हार। नांम रांनी षग झारं ॥
रामों घा चंदेल। राव भट्टी मद नंगी ॥
भर भट्टी बहु सथ्य। सार लग्गी तन ढंगी ॥

---

(१) मो०—दुरान दल,।
(२) मो०—बल।

जाजुल्य तेज नरसिंघ नर । चाहुआन कूरंभ गुर ॥
सामंत सस्त[1] सत्तउ सुमति । सुबर बीर भारथ भर ॥ छं० ॥ ३१२ ॥
परम पवित्र पमार । जांन उद्यांन पँवाइन ॥
सारंग सिसु चालुक्क । राज रघुबंस सुभाइन ॥
रत्ति षाइ मन चित्ति । सेन सज्यौ विन राजं ॥
गहन तेज तम हरन । मेघ मंते अनु गाजं ॥
कछ छंत कोति मंडिय विषम । गरुअ अब गहिलोत गुर ॥
अंगिरय लोह अग्गौरसी । स्वामि अंस जिन भार धुर ॥ छं० ॥ ३१३ ॥
कायथ वरन अन ताइ । कंन्ह विन वीरब्रसिंगं ॥
रानिडर रट्ठौर । साख[2] क्रिसन रन रंगं ॥
बा बारो बरसिंघ । देव रावन अजमेरं ॥
दहियां जंगल राव । जंग मग्गह धर मेरं ॥
ठंठरी ठांक चाटा चपल । अकल मति जिन उद्धरिय ॥
ठिल्लै सुवन्न चख्खंग नन । चख चंडै वज्जन बलिय ॥ छं० ॥ ३१४ ॥
बर जद्दव जै सिंघ । राव जंघारौ सुभ्भर ।
क्रिस्हन कमक्क नरिंद । इन्द्र दल दिष्षय दुभ्भर ॥
बली बांह हरसिंघ । देव रष्षै चहुआंनिय ॥
सुबर वैर बाबरु । बलिय संभरि धर जांनिय ॥
अजमेर मुक्कि चहुआंन कौ । ए कुहै भारथ भिरन ॥
दिन एक वीर बल बंध बल । उभय सभ्भि सडू जिरन ॥ छं० ॥ ३१५ ॥

चालुक्य राज का सेना प्रस्तुत करना ।

छंद भुजंगप्रयात ॥ फिरी गस्त चौकी सु चालुक्क राई । सथै सठ हज्जार मकवांन धाई ॥
रनं पाटरी रांन ता नांम सीहं । बलं वैर वैरीन को चंपि लीहं ॥
जिनै देषिया जुद्ध जाडे च सव्वं । जिने कक्क पंचासची[3] सोपि अव्वं ॥
घटं वीय संन्नाह सज्जे सुअंगं । हकै हक्क अंगं[4] अरी कोटि संगं ॥
तिनंकी उपंमा कवीचंद गाई । सुने कंठ रावंत गोरष्ष पाई ॥

(१) मो०—सूर । (२) मो०—सार । (३) मो०—बी । (४) मो०—रंग ।

तिनं हाथ कै हाथ सज्जे उपाई । तिनंकी मयूषं रुष्यां[1] होड लाई ॥
सुयं कंठ सोभा नरं टोप सोमा । ससी अष्टमी अद्धये भांन सोभा ॥
जरे जंजरायं भरं राग भिछै । मनों नौ अर्ष तारिका होड षिछै ॥
हयं पष्षरे पष्षरं जंजरायं । कपी सीस द्रोनं मनो लंक छायं ॥
फिरै गज्ज राजं मदं तेज गाजी । तिनं देषतें बद्दलं कांति लाजी ॥
बली बीर कैमास सामुष्ष अग्गैं । मनो राम कामं कपी कूट लग्गैं ॥
सुनी कंन्ह मोरा सु चालुक्क बीरं । कुलायौ कचै कोय कैमास भीरं ॥
इकं नाम चंदं बरंदाइ बांनी । जिनैं भंजिया च्यारि मो मंभ पानी ॥
दिसा च्यारि रष्यौ निरष्यौ प्रमानं । जहां सज्जियं सूर चहुआंन थांनं ॥
रजं मोद, बंकी करक्की कमांनं । धुनै तूल धूनी मनों कट्ठ[2] थानं ॥
हुकंमं नरिंदं सुचालुक्क दीनै । रचौ आज चौकी सुझाला नवीनै ॥
चिहू कोद चथ्थीन की बीरटं फेरै । निसा, आज रष्यौ सुमंचीत मेरो ॥
चढी चौक्क चौकी सुझाला निमांनी । उठी क्रूर दिष्टी स्वयं सेन जांनी ॥
रच्यौ[3] यों महासेन भीमंग राजं । मिले मल्ल मल्लं अषमं सुसाजं ॥छं०३१६

चालुक्य की सेना का वर्णन ।

दूहा ॥ सज्जि सेन चालुक्क भर । रहे लोह करि कोट ॥
पयदल गज बल हय षपल । भए आंनि सब जोट ॥ छं ॥ ३१७ ॥

छंद भुजंगी ॥ महा सेन सेनं गभीरं गरज्जं । मनों मेघ माला सुझाला षरज्जं ॥
झलं झंम झंमंति झाला नियानी । चढी चक्क चक्की चवट्टी सुवांनी ॥
सयं सहस ते तेज कैमास, अग्गै । सयं तीन सथ्थं जथं जाजु लग्गै ॥
सयं पंच जहों सु जामानि तछै । सयं अट्ठ अट्ठे रमं राम पछै ॥
दुहूं बांह सेना बरं बीर बाची । मनों कुं[4]डली छाकि सामुद्र याची ॥
अर्ह मेव सामंत स्वामित्त लग्गै । सु मानो कि सेना दनू देव षग्गै ॥
भए जन जनं दिठं दिट्ठ चौकी । मनों अंकुरी दिष्ट दौ नारि सौकी ॥
भरे ढिग्ग षग्गे भिरे झल्ल झल्ले । घरी एक भग्गे नहीं होय हल्ले ॥

(१) मो०—रवि ।   (२) मो०—कंठ ।
(३) मो०—रच्यौ ।   (४) मो०—मंडली ।

भगे सीह रायं भई कूप सद्दं । सुनी राय भोरा भने कव्वि चंदं ॥
छं० ॥ ३१८ ॥

कवित्त ॥ कलह अग्ग सामंत । कांम कैमास कुसल्लिय ॥
गज्ज अज्ज अहजाज । अनुज फिरि पच्छौ दुसल्लिय ॥
झल्लानी[1] झरफुट्टि । फुट्टि संका सामंता ॥
ज्यों लज्जी परनारि । धींग मिलयौ धावंता ॥
असमान चल्लि भूमिय धरिय । धाय धमंक धलंक धर ॥
बंदियथि बाह बाहू दुहत्थ । प्रथीराज राजंग बर ॥ छं ॥ ३१९ ॥

चलुक्यराज का धोखा करना ।

दूहा ॥ भर गिरि चौकी चंपि चलि । मिलि ठिलि जहां दवराइ ॥
सबर सुद्ध दरबार भौ । चढि चालुक्क रिसाइ ॥ छं॥ ३२० ॥

युद्ध का वर्णन ।

छं० भुजंगप्रयात ॥ धमं धाम धामंत धामं निसानं । निसा व्याम बज्जी सुभेरी भयानं ॥
चिगं तंछि तेजी चयं छिन छिनानं । कुटे अंकु चक्की मदं जासु रानं ॥
चयं[2] घाय घायं दलं छिंदयानं । महावीर जग्गे सुदुग्गेष मानं ॥
गिरें रन रावत्त तुट्टे वितानं । परी चक्क चक्कं सुसामंत पानं ॥
कथा उच्च भारी सुभारच्थ पुरानं । सुनैं अंम बक्के सुममैं गियानं ॥छं॰ ३२१॥

कवित्त ॥ मिले मल्ल आखंग । जंग भोरा भुअंग जगि ॥
कै कुवाह कंतार[3] । धारा ढुंढूर पूर लगि ॥
कै दुवाह कुट्यो कि । सिंघ मैगल मैं मत्ता ॥
कै[4] अप्पां अप सेन । राव[5] रावत्त * विरत्ता ॥

(१) मो॰ ह॰ को॰—झालानी ।
(२) मो॰—भयं ।
(३) मो॰—कुंतार ।
(४) मो॰—"कै अपसेना अप्प । अप्प रावत्त विरत्ता" ।
(५) ह॰—मभक ।
* राव॰ ए॰ की प्रति में नहीं है ।

पाहुन[1] सेन उत्तर दिसा। ईमाने लग्गिय उपरि ॥
धाइ'न धाम सामंत दो। सूर समर लग्गे समरि ॥ छं० ॥ २२२ ॥
चंडिय देवि पसाइ। वक्ति तेरै मै मत्ते ॥
पच्छौ राव भीमंग। चैार मैारव सिवहंते।
कै अप्पानी रारि[2]। काइ धाम कि डंडूरिय ॥
कै छुट्टा संग्राम। सिंघ संकर निज्जूरिय ॥
कै धीर धांम धुज्जिय धरा। कै कलान[3] कलपंत छुत्र ॥
जा जंपि जंपि जंपन कहै। जपै राज भीमंग भुत्र ॥ छं० ॥ २२३ ॥
नां अप्पानी रारि। नाहि धाइ सुडंडूरिय ॥
नां छुट्टा संग्राम। सिंघ संकर निज्जूरिय ॥
दै चक्कां धर कंप। चंप उत्तर थी लग्गिय।
चैाकी गत्त गुराइ। कोट कोटन छन भग्गिय ॥
सा दुग्ग देव सत्तरि पती। पति पहार ठेल्यौ करिय ॥
पाइंन छंन छंनेव घट। निसि निसान सद्दह भरिय ॥ छं० ॥ २२४ ॥

सप्तमी को घोर युद्ध का आरम्भ होना।

दूहा ॥ सद्दां सद्द उसद्द भय। मज्जा वज्जिय लग्ग ॥
झूना जंजर चैर[4] वत्त। भई सुरासुर जग्ग ॥ छं० ॥ २२५ ॥
संभरि सों लग्गे समर। अंमर कौतिग एव ॥
घरी सत्त सत्तमि दिवस। उग्यौ उदग्गन देव ॥ छं० ॥ २२६ ॥
छंद भुजंगप्रयात् ॥ घरी सत्त सत्तं उग्यौ चंद मानं। बरं बीर चालुक्क षग्गं षगानं ॥
बजी जूप कूहं कर्क्ष कोकनद्दं। मनों गज्जियं मेघ नद्दं प्रसद्दं ॥
कुलं बीर जग्गे मुषं नीर भारी। परे लोह आरत्त सा व्रत सारी ॥
बहै षग्ग धारं गजं सीस भारी। मनों धूम मज्झक्के उठे अग्गि झारी ॥
नमी तेज भग्गे जगे तेज षग्गं। बजै जंग नीसांन ईसांन मग्गं ॥
करै अप्प अप्पं न्रपं वे दुहाई। नचे रंग भैरूं ततथ्येन थाई ॥

(१) मो.—पाहुनसेन। (२) मो.—कै अपनी पार।
(३) मो. ह. को.– कुलाल। (४) मो.—चैर।

बढे बांन श्रावन सावर्त्त तेजं । तहां चंद कव्वी उपंमा कहेजं ॥
लगें अंग अरि गंजि सुग्रीव भारी । फिरंतं ज जंगंम दीसै उतारी ॥
परैं संध बंधं असंधं बिनारे । महोरंत चौरं मनों ज्वार बारे ॥
फिरैं [1] मद्धि ढालं रिनं संक्ष रीती । तिनं सुक्कियं कुंत धारी निव्रती ॥
छं० ॥ ३२७ ॥

युद्ध की तयारी का वर्णन, सरदारों का सेना समेत प्रस्तुत होना ।

कवित्त ॥ है [2] पग गै पग रथ अरथ । बढि बढी नर लग्गा ॥
कै घायां घन नंत । भयें संभरि [3] भर भग्गा ॥
चालुक्का चंप्यो सयंन । सें दल सामंता ॥
गौरीरद कैमास । सूप भेरा धावंता ॥
रथ सथ विलद सज्जान कढ्ढौ । गहकि गज्जि भेरा सुभर ॥
को करै काछ सों चाल कन । मदन रंभ मानों अमर ॥ छं० ॥ ३२८ ॥
पक्कार्यो रा भीम । मत्त सें गज गज्जानां ॥
सहस पंच साहन ससंद । ढाले ढक्कानां ॥
जंप संघ गोधा गहक्क । छोनी सब संकिय ॥
साहन साहन घर विरद्द । आवत उत्तंकिय [4] ॥
लक्खरिय लोह अप्पां अपन । भार उभार लग्यौ गगन ॥
घल चल्ले सेन सामंत [5] दल । मनों अंत [6] जम जुध्ध पन ॥ छं० ॥३२९॥
ना छुट्टा रासिंघ । सीस डंडूरत उट्ठौ ॥
ना रंकार्यो आप । सेन भारथ्थ न जुट्ठौ ॥
सी संतारी धाह । धाक उत्तर दिसि लग्गी ॥
अप्पांनी सेना सुनत [7] । भारथ भिर भग्गी ॥

---

(१) मो०—हत्थि ।
(२) मो०—हैयथ गैयथ ।
(३) मो०—सूंभर ।
(४) मो०—उतंगिय ।
(५) मो०—सामंद ।
(६) मो०—यंत ।
(७) मो०—सुमंत ।

सुलतान राय सज्जो सुकसि । विधि विधान उज्जिय पासर ॥
चालुक्क राइ दिन धुंमरी । सार धार सज्जी समर ॥ छं० ॥ २१० ॥
सजल रंभ आरंभ । जग्गि[1] भेरा सनाए सजि ॥
नग नवि दुक्ख तक्कयौ । राज कंठीर काम्ब रजि ॥
भर अभंग चालुक्क । तेस आनास प्रमानं ॥
ताना पंच नंखयौ । नसस्ति नासख गस भानं ॥
देनेत जगि प्रलैकाल जनु । बंधि बंधि गज्जे उभय ॥
पंमांन जग्य जे उप्पने । करैं दोष निवीर मय ॥ छं० ॥ २११ ॥

युद्ध आरम्भ होना ।

पग उभारि दल रारि । नारि दाकुन दुज्जन धै ॥
फौजन बंधय नंपि । धंपि[2] सत चालुक्कन रवै ॥
काढि कबंध धर लुहि । लुथ्थि पर लुथ्थि पलुट्टिय ॥
श्रोग धार पल पट्टिय । मोच माया भ्रम छुट्टिय ॥
तुट्टि भंस दंत पाइक्क ढुरहि । बघर दप धावै श्रमुग ॥
पग पगति सिंभ[3] पग पग सुगति । भुगति सक्ख किशो सुजग ॥छं॥२१२॥

दूहा ॥ कित्ती[4] सजन लग्यौ नृपति । सुर विध्वंसन काध ॥
वीस सहस्स पारस परिय । मनों बीर बर साथ ॥ छं० ॥ २१३ ॥

छंद मोतीदाम ॥ समग्ग अमग्ग विमग्ग विहाक । रहे जुरि चालुक्क देवन साक ॥
जुरे बर बीर दसौं दिसि पंति । मनों[5] घन भद्दव वत्तन भंति ॥
दोऊ दिसि धाव बढे करि साज । मनों चव चंद सुखंगन बाज ॥
परे बहु दंतिय[6] भंतिय काल । बरै वर ढूंढि पियांनन[7] बाल ॥
मनों मुगधा मन मांन प्रमांन । रची इम अच्छरि रंकि विमांन ॥
सुदेव जयं जय नंषि पुहप्प । करै दोउ चंद सुकीरति जप्प ॥
इकै श्रद्द[8] कीरति अम्रत एक । कछूक कवित सुधारैं विवेक ॥

---

(१) मो०—सभि । (२) मो०—नंषि । (३) मो०—शंभु ।
(४) मो०—किसि सजन लग्यो नृपति । (५) मो०—मनो घट भद्दव सद्द निरति ।
(६) मो०—पंतिय । (७) मो०—नियांनन । (८) मो०—श्रसि ।

सुर च्छिनंत नचि बीर बत्तांन। बढे वर षांन कमां मय¹ थांन॥
अमंतिय गिद्धिय छुद्धिय² आंन। रची³ दूल अच्छरि अच्छ विमांन॥ छं०॥३३४॥

वाजिद खाँ का लड़ना और बीरता से मारा जाना।

दूहा॥ मद्धि षांन वाजींद भिरि। पंच सहस तिन सथ्थ॥
भर चालुक्क सेवक वली। जे घल्ले जम हथ्थ॥ छं०॥ ३३५॥

कवित्त॥ जुद्ध जूह⁴ सिरदार। ढाचि दीने वलवांनें॥
नल कूवर मनि ग्रीव। जमल भग्गा नरकांनें॥
पुब्ब श्राप नारद सब्रूप। छिति दरसन हरि पाइय॥
उत्तमंग उत्तरै। पूर सौ सूर बधाइय॥
उप्पारि षांन बाजींद लिय। सग्ग मग्ग वेधिच्छ सें॥
चालुक्क भीम परपंच परि। चंपि चूरि षग्गह विसें॥ छं०॥ ३३६॥

अष्टमी के युद्ध का वर्णन।

दूहा॥ भर पर भर वज्जे सुभर। चय गै दल भर तुट्टि॥
चंद सीस चाढ्यौ चव्यौ। बर अष्टमी अउट्टि॥ छं०॥ ३३७॥
सौ वंधन वंधन व्रषम। पंच पंच सौ तत्त॥
दल छिक्कत छिपै सुगति। अध्य सून अपतत्त॥ छं०॥ ३३८॥
सिसिर श्राइ कायर ननह। ग्रीषम सूर प्रमांन॥
वे तट्टे ए तत्त गुन। विधि विधांन दै थांन॥ छं०॥ ३३९॥
बालप्पन जुब्बंनपन। लद्दै वड्डप्पन कित्ति॥
बनि चाला चल चित्ति नचां। भई कन्ह जिमि कित्ति॥ छं०॥ ३४०॥

छंद नाराच॥ परट्ठि सेन सज्ज बीर बज्जए निसानयं।
नराच छंद चंद जंपि पिंगलं प्रमानयं॥
गजं गजे चषं मले चले चले गिरद्दरं।
कसंमसे उकस्स सेस कच्छपं उचक्करं॥
उपारि भूमि दट्ठ तब्ब कंध आनि मुक्कयं।

(१) मो०—नय। (२) मो०—पाछै न आंन।
(३) मो०—दम। (४) मो०—जूर।

झुराव छय शुद्व भीम सीस नाग धुज्जयं ॥
सुझंत सध्य[1]विथ्थुरं अनेक भांति दारई ।
मनों कि दंड चक्करीय बालकं उछारई[2] ॥
अनंकि पग्ग सों निसा चद्द चमक्कई ।
मनों कि चंद चंद सो धरा न भुम्मि सुझई ॥
अनेक भंति सा दुरं बजंत बान सावरं ।
मनों कि जीव जंत पांनि उच्छयं उझारं ॥
वजंत राग पंच पट् मोह बंधि आनयं ॥
अथंत सेन संधि भूप चंद जंपि पानयं ॥
दुरंत चैारं गज्ज सीस रुस्त मग्ग उत्तरें ॥
मनों कि कूट सीसतें सुगंग भुम्मि वित्तरें ॥ छं० ॥ ३४१ ॥

चावंडराय के युद्ध का वर्णन ।

अरिल्ल ॥ जस धवली जद्दी कैमासं । चावंड राइ बंधव अस्यासं ॥
सस्त्र मग्ग तन[3] तिल तिल पंच्यौ । बन्यौ जुद्ध भारथ फिर मंच्यौ ॥ छं० ॥ ३४२ ॥

कवित्त ॥ धनिव सूर सामंत । लोन ह्वै मित्ते अरिन भट ॥
इक मागिय छुद्द पार[4] । भाग चैासट्ठि पार घट ॥
ते दुसेन सुप धरनि । लज्ज सों निट्ठ उतारे ॥
मार मार विस्तार । सार संध्यो गहि डारे ॥
उर धस्यौ सिंधु[5] सिंधुर सुभट । उदर मध्य फुट्यौ अन्नित ॥
चामंड राइ दाहर तनौ । सोंन नेह बंध्यौ अमित ॥ छं० ॥ ३४३ ॥
एक बीस इकईस । एक इकतीस सहस वर ॥
इक सहस इक डेढ । इक्क धर उभंय सस्त्र झर ॥
एक एक इक लष्प । विलष बल पुज्जहि देवं ॥
ते जगिय बीर बीराधि । बीर बीरा रस सेवं ॥
मारु मर्हव नाहर बलिय । चलिय कित्ति दष्षिन बयह ॥
निडुर नरिंद पज्जून बल । चाइ चाइ करे दिसि दसह ॥ छं० ॥ ३४४ ॥

(१) ए०—मत्त ।　　　(२) मो०—उछारई ।
(३) मो०—तिन ।　　　(४) मो०—अपार ।　　　(५) मो०—आप ।

दूहा ॥ हय हय गय नह सूर बर। दिष्षि भयानक देव ॥
जंबूरा हंमीर सों। भर भारथ वित्तेव ॥ छं० ॥ ३४५ ॥

यह युद्ध संवत् ११४७ में हुआ।

* ग्यारह सें चालीस चव। बंधव पुच अछुहि ॥
सुफिरि राज सेना न्रपति। भौ भारथ संजुहि ॥ छं० ॥ ३४६ ॥

कवित्त ॥ हय गय नर आहुटें। लुथि आहुहि लुथ्थि पर ॥
इक हथ हुअ विहथ्थ। उह चढ़ि पित्त सहि धर ॥
बलि बामन रामह सुबीर[१]। पंच पंडौ बल भारी ॥
जरासिंध नर केस। नरनि नर सिंघ उचारी ॥
इन समह समर इन देव मय। कत द्वापर कलियुग्ग मझि ॥
इन करिय सोह करिहै न को। करो सुकोइ न बत्त बुझि ॥ छं० ॥ ३४७ ॥
तरनि तेज तप हरन। भरन पोषन दोषन षल ॥
उद्दर भत्ति जं करिय। उद्दर कढ्ढै सुमध्य मल ॥
बल भही जं करिय। करिय कर दंत मत्त गहि ॥
घरी एक इक पाइ। षग्ग टिक पग षेत रहि ॥
जंबूर लग्ग भग्गान तउ। बर बुल्ल तामस बयन ॥
चालुक्क आंन जंपै सुषह। रत्त सुष्य अग्गी नयन ॥ छं० ॥ ३४८ ॥

दूहा ॥ नयन बयन तन अग्गि जगि। कित्ति अग्गि जग जग्गि ॥
बर विताल जंगम विहंसि। दयसीस नर षग्गि ॥ छं ॥ ३४९ ॥
रन षग्गा भग्गान को। पत्ता चालुक राइ ॥
हंमीरां हंमीर बर। भो बर बीर बिभाइ ॥ छं० ॥ ३५० ॥

उन सरदारों का नाम कथन जो लड़ते थे।

कवित्त ॥ सुभन[२] सूर सामंत। संत लग्गे विरुझानं ॥
रा चामंड जैतसी। रांम बड गुज्जर दानं ॥

३४६—* यह दोहा एशियाटिक सोसाइटी की प्रति में नहीं है।
(१) मो॰—राव हमीर। (२) मो॰—सुग्रीव।

उद्दिग बीच पम्मार । कन्ह कूरंभ पज्जूनं ॥
षीचीराव प्रसंग । चंद पुंडीर सु दूनं ॥
अछनंग खेर साष्ह सरद । देवराज बग्गरि सत्तप ॥
देवराज कुंअर अल्हन अनुज । दून बीरा रस लषि अत्तप ॥ छं० ॥ २५१ ॥
निडुर वर नर सिंघ । बीर षींचा षर रूपं[1] ॥
बीर सिंह वर सिंघ । गहलु गोइंद अनूपं ॥
रा बड़ गुज्जर राम । वज्जिय वंभन रस वीरं ॥
दाहिम्मौ नर सिंघ । गहलु सारंग रन धीरं ॥
चानुक्क बीर रन सिंघ दे । दै दुवाह दुज्जन दहन ॥
लुह तांन गहन जोपन चढ़ै[2] । चालुक्कां लग्गे महन ॥ छं० ॥ २५२ ॥
उद्दिय घट्ट निघट्ट । धांन दिप्पे इन भंतिय ॥
ज्यों प्रात उडग्गन चंद । दीह दीपक ज्यों कंतिय ॥
नमसि नमसि सामंत । जाइ वर बीर सुबंध्यौ ॥
उभय पुत्त इक बंधु । भीम भारथ बल बंध्यौ ॥
ओहनय हथ्थ लग्गी ननह । उपम चंद सारह करिय ॥
घूमली रत्ति सें वंक षग । मनों चंद द्वै बिस्तरिय ॥ छं० ॥ २५३ ॥
नर नाहर ज्यों लड्डौ । अयुन नाहर घर पंडिय ॥
नाहर राइ नरिंद । षेत साथा तन मंडियं ॥
ढंढौ रिझ्झै ढान । दाख चालुक्कह कढ्ढै ॥
आंन राज प्रथिराज । लाज सांईं सिर चढ्ढै ॥
हसि कढ्ढिह वाग कढ्ढिय बली । मिलि मच्चौरि सन्हौ लर्यौ ॥
जांने कि अग्गि लग्गी बनह । वंस दाव दव प्रज्जर्यौ ॥ छं० ॥ २५४ ॥
बड़ गुज्जर राजैन । कच देषै पट्टनवै ॥
बैं नीसांनी मार । घाट गिर वर घट्टनवै ॥
अधरा षंडन षग्ग । भग्ग कूरे सुपमारह ॥
मनों सराबी जंग । पांन कुहें गंमारह[3] ॥
रा राम देव देवत्त तुअ । जाजै जौरि जुद्दथ्थ किय ॥

(१) मो०--भूपं । (२) मो०--कहै । (३) मो०--सुगमारह ।

नर नाग देव देवी विहसि। पंजुनि पंजु प्रचास किय ॥ छं० ॥ ३५५ ॥
जिन थक्का जरि देव। सेव थक्की अनंगी ॥
धर थक्की धर भार। भारथ थक्की शिव संगी ॥
कर थक्का करि वार। धांन थक्का कम्मांनी ॥
मुष थक्का मुष मार। ठांन थक्का तुरक्कांनी ॥
थक्कान जैत जज्जर बलां। कलिन राम गुज्जर भरी ॥
चालुक्क राव गुज्जर पती। धाय धाय धुंमर परी ॥ छं० ॥ ३५६ ॥
दूहा ॥ परिय रार हिंदवांन षों। सोभत्ती रत्ति वाह ॥
दिष्ष जग्गा वरदाइ वल[1]। जौ छंदे पथ वाह ॥ छं० ॥ ३५७ ॥

युद्ध का वर्णन।

कवित्त ॥ हय हय हय उच्चार। देव देवासुर भज्जिय ॥
हय हय हय उचार। घाइ घाइं घट वज्जिय ॥
चह चह चह चाहंत। वहुल षग षग्गं गहन ॥
ठुक्क ठुक्क उत्तरिय। बाजि नर भर भर पट्टन ॥
हर हार वास हर हद भुज्जिय। धुम्म मंडल रहह उच्चै ॥
मंगल धनेष[2] आरथ्य किय। जिन सु ब्रह्म साधन बुले ॥ छं० ॥ ३५८ ॥
दोहा ॥ सर्व ध्यांन वंधन सु ब्रह्म। पंच पंचहे तत्त ॥
पंच पंच पंचह मिले। अप्प भूत अह वत्त ॥ छं० ॥ ३५९ ॥
छंद अमरावल ॥ नव जंपि नव रस वीर नचै। अमरावलि छंद सुकित्ति रचै ॥
रस भै हव तीय नवं नव थांन। दिष्यौ मुष रूप सु चालुक पांन ॥
भयौ मुष वीर सु भूप नरिंद। भयौ रस कारुन कट्टत कंध ॥
भयौ अदभुत भयांनक ब्रत्त। भयौ रसहास उमा कतपत्त ॥
भयौ रस रुद्र अदभ्भुत जुद्ध। भयौ तिन मध्य सिंगार विरुद्ध ॥
भयौ रस संत भई तिन मुत्ति। दिषै जनु पल्लव लाखित गत्ति ॥
टगं टग चाह रहे पल चार। उठे तहां हंकि सुबीर हंकार॥ छं० ॥ ३६० ॥

(१) मो०--वल। (२) मो०--धुनेव।

दूहा ॥ दल दल काल साँई विरुल । मरन महूरत संधि ॥
चाहुआंन चालुक्क कै । लगे बीर गुन बंधि ॥ छं० ॥ ३६१ ॥

छंद रसावला ॥ सूर साँई रनं । बीर चक्के वनं ॥ मोह मत्ते जनं । सार पीवं पनं ॥
वार वीरा दूनं । काल जुट्टे जनं ॥ पग्ग षग्गं पनं । ज्वाल लभ्भं मनं ॥
अस्त्र तुट्टे तनं । रत्त जामें पिनं ॥ लोह वज्जे पनं । डिंभ डिंभी रनं ॥
तार तारं पिनं । काल कैसे ननं ॥ रत्त अग्गं निनं । लोह न्हाए मनं ॥
तीय छुट्टे दूनं । मांत पित्तं रनं ॥ स्वामि जित्ते तनं । पिंड सारे घनं ॥
देव कालं कालं । ग्यान छुट्टे छलं ॥ जोग पावै ननं । मुत्ति मग्गं गनं ॥
॥ छं० ॥ ३६२ ॥

छंद भुजंगी ॥ छुटं रैर रैरंग सोरंग[1] सोरं । प्रजालंत बीरं निसानंत भोरं ॥
सुपं भंच कैमास नै भं[2] जिभीरं । कवी चंद चंडी वरं जास पीरं[3] ॥ छं० ॥ ३६३ ॥

आर्या ॥ पारसं अर्द्धं चंद्रं । तारका तार वंधं ॥ बीरका बीर संधं । सूर छुटै कबंधं ॥
काल लग्गा[4] प्रमानं । देव जग्या दिवानं ॥ गुज्जरं राय रायं । चन्द चक्यौ चिभायं ॥
छं० ॥ ३६४ ॥

स्वयं भोराराय के युद्ध का वर्णन ।

कवित्त ॥ चाह चाह विहस्साह । नैंन तामस भय लसै ॥
दिष्षि रिष्षि अवरिष्षि । भिष्षि आभिष्ष स लस्सै ॥
अद्दन गहत्र ज्यौ भांन । राहु लग्यौ गुर केतं ॥
यों लगि गहत्र भीमंग । वथ्थ पल पंचं जेतं ॥
सैं चल्यौ चंपि दिष्षे सकल । बलति रंग कठु सदिष ॥
सिद्धांन धंनि सिद्धां सुपतं । बिपन मत्त भारथ्थमिव ॥ छं० ॥ ३६५ ॥

छन्द वेलीमुरिल्ल ॥ प्रमाद उमाद सु आवध संचर । बीर बिरं भरि भूधर[5] नंचर ॥
पंज सों पंज सनेव मिलं थर । सोंधिय रारि सुधारि सुधं भिर ॥
ठिल्लिय फौज मिले बल[6] दुंदरि । दिष्ट अलग्गि भयौ ससि सुंदरि ॥
अप्पय अप्प मिले भर भींमर[7] । पार अपार सरद्धर[8] धुंधर ॥ छं० ॥ ३६६ ॥

---

(१) ह०—में नहीं है ।　(२) मो०—दिविकास ।　(३) मो०—जा सरीरं ।
(४) क० मो०—कलहलगा ।　(५) मो०—भूधर ।　(६) मो०—दल ।
(७) मो०—घुम्भर ।　(८) मो०—सारधर ।

पानि निषेध क्ली स्फरयो स्फर । जानति नां जनकी पिय बंक्षर ॥
तें हय बाह स्वयं पर तुट्टिय । गोच्छित मुक्कित परे पय रंभिय ॥
छुट्टिय छंकि भयौ प्रभु भंजिय । खप्प सुवाय जिहीं दल जीभिय[1] ॥
उत्तर उत्त तुरंगनि छंडिय । जद्दव षग्ग वियं करि मंडिय ॥

छं० ॥ ३६७ ॥

लुथ्थि उलथ्थि पलथ्थि तनंपिय । हुंकत देव सिरं परि पंपिय ॥
लुंडन मुंड परे दरवारिय । जांनि कि कूर सुकट्ठ कवारिय ॥
सें हथ हथ्थिय सों भुज पारिय । जानि चतूर[2] कि व्रूर सुरारिय ॥
सें गुर बंध सु जांम सु चप्पय । सें दल रांमति गुज्जर नप्पय[3] ॥

छं० ॥ ३६८ ॥

तीन सु तुंग किए तन[4] कुंजर । मीडत जांनि मिली भुज पिंजर ॥
तीन निमेष जग्यौ जदु मुच्छिय । जयं[5] जय जोर पढे उर लच्छिय ॥

भोला राय को लिए हुए हाथी का गिरना और मरना ।

चंपिय पांनि दियं दल कुप्पिय । राय समेत पस्यौ धर धुक्किय ॥
मांन गयौ गज गुज्जर वारिय । स्वामि गुरज्जन चंद प्रचारिय ॥

छं० ॥ ३६९ ॥

पृथ्वी पर गिरने से भीमराय का महाक्रोध करके कैमास पर टूटना

भुमि परे भयौ भीम भयांनक । भीम कि भीम[6] गजाधर जानक ॥
षग्ग तुटें कर कढ्ढि कटारिय । सो कयमास ग्रह्यौ कर भारिय ॥
राउ पनौ गिरयौ निज चालुक । दंत[7] कै कंठ लग्यौ मनों कालक ॥
कष्ष धस्यौ कयमास उचाहूथ[8] । पटन राइ जै सिंघ दुचाइय ॥

छं० ॥ ३७० ॥

कंन्ह परी गुर गुंज्जर रामहि[9] । जैत पवार सुमोहित रांनहि ॥
तेन लगे चल चालत तांनहि । सिंघ परै बक में गजवांनहि ॥

(१) मो०—दलंदल । (२) को०—जा बिचतूर । (३) मो०—नंषय ।
(४) को० कृ० ए०—कोर । (५) मो० कृ—जय । (६) मो०—भीम ।
(७) मो०—दंतिय । (८) को० कृ० ए०—उधारिय । (९) मो०—कान्हहि ।

हक्कि हमीर हन्यौ सुष नक्किय। तुम सामंत किनां सुष पक्किय॥
वाहि गज भीम सामक्कि पिछोस्यौ। अंव पस्यौ नर जांनि झंझोस्यौ॥

छं०॥ २७१॥

फिरि करि वाहि नरिंद कटारिय। सें सुष नल्ह[1] हमीर निवारिय॥
गौ भजि भूप जहां रज पत्तिय। हक्कि झरें जल ज्यों गिर गत्तिय॥
अप्प गज्यौ भर भीम सहाभुज। उभय सुपग्ग सुवंक दुअंनुज[2]॥
आय मिले भर भीम समथ्थह। जंपिय जीह हरी हर तथ्थह॥

छं०॥ २७२॥

डंभिय वीर महा वर वीरह। सोढा सारंग देव सधीरह[3]॥
चोरा चाचिग देव सधीवह[4]। वीर वढेल सु जुद्ध अदेवह॥
सथ्थह सत्त सहस सु सथ्थिय। जुद्ध मच्यौ सम सूर समथ्थिय॥
भीर भई भर सामंत सूरह। वीर जग्यौ सम वीर करूरह॥

छं०॥ २७३॥

कैमास पर भीड़ देख कर चामंडराय का सहायता पर पहुंचना।

कवित्त॥ तामस मय चामंड। आप तथ्थह संपत्तौ॥
चरन वंदि मथुरेस। सुने कारन क्रत तत्तो[5]॥
सुभट पंच सैं रुथ्थ्य। सिलह वंधी सवधीरं॥
परसि निथ्थ कटि पाप। अप्प आवरेसु धीरं॥
देषियै भीर कैमास सिर। सेंषि रारि उस्सले अरुन॥
हहकारि हक्क चामंड गजिं[6]। सव्व[7] लोह कढ्ढ लरन॥

छं०॥ २७४॥

घोर युद्ध का वर्णन।

छंद भुजंगी॥ कढे लोह सोहं जपे आंन ईसं। ससं ज्वाल पावक्क सें धूंम दीसं॥
वजे लोह रथ्थं[8] रजे रारि संधी। पिले षेत वीरं दुअं पंति वंधी॥

---

(१) मो०—मेल्हि। (२) मो०—उनिय पग्ग सुवंक विय दुज।
(३) को० कृ० ए० में यह तुक नहीं है। (४) मो०—चोरा चाचीय देव सुवेषह।
(५) कृ० को० ए० सुनिय कायरन क्रत तत्तो। (६) मो०—गत्ति।
(७) मो०—सवहि। (८) मो०—रत्तं।

धबकांत संगी दबकांत बीरं । भभकांत श्रोनं श्रमेनंति धीरं ॥
पबं[1] षंड तुट्टं कटिं चक्कुजामं । बधे बीर बीरत्त श्रंगं उधामं[2] ॥
छं० ॥ ३७५ ॥

असी झाक बाजंत पावक्क उट्ठं । जरै टट्टरं षग्ग उभ्भार सुट्ठं ॥
हरै श्रंत श्रंती पयं रुक्कि[3] तुट्टै । कटिं[4] पाइ पानिं धरं सीस लुट्टै ॥
असी अग्गि उड्डैं लगें टोप हभ्भैं । उठै श्रोन छिक्कं तिनं ताप रभ्भैं ॥
परैं हाथ चामंड बाजी बिभंगं । नरं हथ्थ संनाह षंडं अलग्गं ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

रिनं राइ चामंड षेलं कहरं । मनो भग्गलं नट्ट मंड्यौ बिहरं ॥
चल्यौ गज्ज[5] पामार सिंघं समथ्थं । तिनं गज्जयं चंपि चामंड तथ्थं ॥
चप्यौ अश्व चामंड गो भूमि मग्गं । उठ्यौ अस्सि मग्गं[6] हयो सं समग्गं ॥
फट्यौ सीस कंधं समं झाक नाइं । गचै[7] दंत दंती धमक्यौ धराइं ॥
छं० ॥ ३७७ ॥

फटे कुंभ प्राहार श्रोनं अजेजं । महामद्द फुट्या मनों रंगरेजं ॥
चली कुंभ दाडंभ भेजी उपट्ट । मनो भंजियं कन्द सोदद्धि मट्ट ॥
पछ्यौ सिंघ भूमं करै हक्क उठ्यौ । हयौ असि विभाग दोनी अपुठ्यौ ॥
चक्कारि सारंग सोढा समथ्थं । समं आइ चामंड सों सेल हथ्थं ॥
छं० ॥ ३७८ ॥

हयौ असि दाडिम्म सा सीस मंधे । जरासंध फट्या जरा जानि संधे ॥
हयं सह जंपेव बट्टेव बीरं । समं अश्व चामंड चंप्यो सुधीरं ॥
हयौ सेल दाडिम सीसं सुदेसं । फटै टट्टरं पुट्ठि उट्ठे परेसं ॥
अहे[8] बांह चामंड चंप्यौ सुजरं । विना अस्त्र नष्यो कलेवं सभूरं ॥
छं० ॥ ३७९ ॥

---

(१) मो०—पलं पक्खु तट्टैं कटैं । (२) मो०—बंधे बीर बीरं सुअंगं उधामं ।
(३) मो० रुक्कि । (४) मो० कटे ।
(५) मो०—सलष । (६) मो०—उठे षसि हभ्भं । (७) मो०—गज्जे ।
(८) मो०—गहे ।

चढ़ौ अस्व बढेल चामंड वीरं । जयं सद्द जंपे सुरं सीस धीरं ॥
चढ्यौ अस्व चामंड चंपे अरेसं । विवं पंड षंडं परंतं परेसं ॥
परे संड मुंडं सु सामंत हथ्थं । मनों कोपि कोरों दर्ख पारि पथ्थं ॥
परीहार सिंहं लग्यौ लोह रस्सं । मनो सूक षंपं सुरं मुष चस्सं ॥
छं० ॥ ३८० ॥

नृभौ धार ईसं गयक्क यहंके । हनो सद्द जंपे लषे भीमधंके ॥
तबे सां पुला आय वोरंभ देवं । नृपं अप्प अड़ौ उद्दसे उरेवं ॥
दुअं उंच गातं दुअं उच्च हथ्थं । दुअं सामि अंमं सुधारंत मथ्थं[1] ॥
दुअं सेन अस्वं स्थिरं गेन सारं । दुअं धाइ आभासि सेलं उभारं ॥
छं० ॥ ३८१ ॥

दुअं वाहि सेलं तनं सक्क भग्गे । ... ... ॥
विना बाज दूनं कढे पग्ग ढानं । जुटे अंगदं भीम दुर्जोधजानं ॥
उभै षग्ग भग्गे कढे जंम दढ्ढं । जुटे हथ्थ वथ्थं समथ्थं सनढ्ढं ॥
भवक्कं हुअक्कं जमं दढ्ढ पानं । लषे सीसयं फूल नष्पे सुरानं ॥
छं० ॥ ३८२ ॥

करे तर्पनं रत्तपिंडं पलोरं । करे केस कुस्सं नृभै तिथ सारं ॥
हरं[2] रथ्थ रोहे चढे स्वग मग्गं । धनं धंनि बांनी सवै सेन लग्गं ॥

भोलाराय की सेना का भागना ।

गहक्केव कम्यौ सु कैमास जामं । भद्दराइ सेनं भगी भीम तामं ॥
छं० ॥ ३८३ ॥

दूहा ॥ दस सहस्स दुअ भुज परत । रहि दरबार सुभाइ ॥
हसम सहित चँवर सुमति । कतिहुन बांन सिराइ ॥ छं० ॥ ३८४ ॥
दरसि राज पहन सुपति ॥ गति फर पारस लग्ग ॥
मनों इन्द्र इन्दी वरन । मुष मुष कंकन लग्ग ॥ छं० ॥ ३८५ ॥
लुथ्थि रची दरबार गुथि । घरिय पंच अस रीस ॥
तिन महि षक कैमास सथ । रहिग अठारह बीस ॥ छं० ॥ ३८६ ॥

(१) मो०--सथ्थं ।　　(२) मो०--हरं ।

अप्यांहो अप्पां जुरिग । भग्गा घर वर धाइ ॥
सुआ न को म्रत जा करइ । कढ्ढी कढ्ढन पाइ ॥ छं० ॥ ३८७ ॥

कबित्त ॥ आयौ कढ्ढी स्वामि काज । साहस सामंतां ॥
बारह सें बानेत । सुभ्भत ढुढन धावंता ॥
द्वैवै लग्गै हथ्थ । तथ्थ भेरें राकज्जें ॥
जो चित्त कवित्तयौ । देव दरबार सु गज्जै ॥
संग्राम लग्गि संकट सु पहु । पहु प्रहास पिंगिग पहर ॥
तुट्टिय सु सस्त्र छिचिय सिरन । गहत गनत कढ्ढौ गहर ॥
छं० ॥ ३८८ ॥

छंद रसावला ॥ छिंदु छिंदू ररी । लोह उड्डं[१] झरी ॥ मुक्क उक्कीवरी । मुक्क सुक्कैसरी
राग रंगै तरी । भीर भागैं परी ॥ झल्ल मल्लै ढरी । ढल्ल काल्लै टरी ॥
छं० ॥ ३८९ ॥

कढ्ढि कूटं करी । ईस ईसं अरी ॥ भीम लग्गी घरी । राइ तुंगं परी ॥
गोम छेमं लरी । आइ छा उग्गरी[२] ॥ कंज कूरंभरी । दाहिमानी भरी ॥
छं० ॥ ३९० ॥

जड्ड छुड्डे करी । थिर वज्जीथरी ॥ सून सेनं टरी । लुथि पा पथरी ॥
कोंन जंम्ने भ्भरी । केथकेनी बरी ॥ जैत उप्पा भरी ॥ ... ... ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

कबित्त । काकढ्ढी भुझयौ । रढ्ढौ रानिंग देव उर ॥
जेन रुहू धरि छत्र । मंच व्रिबढ्ढौ मंडि सिर ॥
गरुअ राव पैरंभ । रढ्ढौ ग्यारह से संभर ॥
पारिहार पावार । नेह निव्वढ्ढौ सुनिव्वर ॥
जानै न चंद आतन अनत । सहस तीन तेरह परिग ॥
गुज्जरिय ग्रेह संदेह मिटि । सहस मत्त दह निव्वरिय ॥ छं० ॥ ३९१ ॥
चहुआनां रे सेन । समुद विच बडवा गोरं ॥
कगि सु षग्ग षग्गयौ । सुतमरन धन धन कोरं ॥
स्वांम छोह दख्यौ । रोस नथ्थयौ सु गढ्ढौ ॥

(१) मो०—झम्मं । (१) मो०—आइ जकांघुरी ।

इति औपम कवि चंद । चंद पारस विच ठठ्ठौ ॥
भुक्कई लोह कहरैं सुनन । तुटि गुरज्ज अरि इंडि लिय ॥
कठ्ठौ समर चालुक्क रन । अप्प पंच मिलि अप्प जिय ॥ छं० ॥ ३८३ ।

पृथ्वीराज का राज्यस्थापन होना ।

जित्यौ रति रति बाह । सिंघ लीनौ गज घेरिय ॥
वंचि दाहिम कैमास । दियौ चालुक मुष फेरिय ॥
बरनि संग वे थांन । राइ भोरा हय मंडिय ॥
दिषि दिवांन कग्गद प्रमांन । आव आवन लगि छंडिय ॥
ढुंढौ षेत सामंत भर । आपन पर उत्तारवौ ॥
तिंन राति रारि चहुआंन दल । मंत सुमंत विचारवौ ॥ छं० ॥ ३८४

छं० भुजंगप्रयात॥ पत्यो अब्बि हाडा हयं हड्डभग्गी । लर्यौ लोह भीमं सिरं छत्र लग्गी ॥
पर्यौ पंथ मारा[1] उपरिहार पाली । जिनै ब्रह्मचारी चितं किति चाली ॥
पर्यौ माझ मोहल्ल मंडीन वल्ली । जिनै देह रत्ती करी सव्व ढिल्ली ॥
त्रिभै जैत बंधं पर्यौ धार नाथं । महो राव भागै नहीं जासु हाथं ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

सहदेव सोनिग्ग चैाहथ्थ हथ्थैं । रची रंभ ढिल्ली गुनं गैन गथ्थैं ॥
असारी असंभी जयं जोग ध्यानं । कवीचंद कित्ती करैं का वषानं ॥

आबू का राज्य जैतसी को सौंपना ।

रतिं बाह जित्यौ जयं जैत सूरं । वदे ग्रेह सामंत नत्ते सपूरं ॥
गजं बाज लुट्टे र कुट्टे पवारं । दियौ राज अब्बू सदुग्गं अधारं ॥
छं० ॥ ३८६ ॥

परे स्वामि कामं जु सामंत सथ्थी । प्रकारे[2] सु चंदं दिया सुद्ध पथ्थी ॥
जयं पथ्थराजै सु सोमेसपुत्तं । भयौ संभरी राव सो छत्र छित्तं ॥
छं० ॥ ३८७ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोलाराय सों जुद्ध सामंत विजै नाम द्वादस प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १२ ॥

(१) मो॰ पवारं परिहार ।　　　　(२) मो॰ प्रकारो ।

अथ सलष जुद्ध समयो लिष्यते ॥

(तेरहवां समय ।)

सिंहावलोकन ।

दूहा ॥ गह उगाह निगाह करन । मिरन भूप चहुआंन ॥
सिंघालोकन कथ्य कथि । सो कवि चंद वर्षान ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ घन व्रिघन दोह धपहि । धपहि रन वीरह काइर ॥
कुट्टें वल वे पांन । वीर चक्के वल साइर ॥
प्रथम जुद्ध नह आदि । जुद्ध हिंदवान हिंदु वर ॥
चाहुआंन सुर तांन । करी कलहंत केलि भर ॥
आदेष खेव चहुआंन किति । चालुक्कां लग्गे मिरन ॥
सम सुगति बंध बंधै बलिय । सुबर बीर लग्गे तिरन ॥ छं० ॥ २ ॥

गाथा ॥ ठिल्लिय ढाहन सख्खं । बज्जिय भ्राजाज राज राजेन्द्रं ॥
आसं पुर अजमेरं । जग्गे सब वीर विकदं ॥ छं० ॥ ३ ॥

दूहा ॥ सयन सिंह लग्गा सुअरि । सुनि करि वर प्रथिराज ॥
सा दंडे संग्रौ चब्यौ । तहं गोरी प्रति वाज ॥ छं० ॥ ४ ॥

गाथा ॥ भारद्दाज सु पंथीं । उभयं सुष उद्दरं एकं ॥
त्यों इह कथ्य प्रमानं । जांनिज्जो कोविदं लोयं ॥ छं० ॥ ५ ॥

उधर भोला भीमदेव के सरदारों की लड़ाई ठनी इधर शहाबुद्दीन की खबर लाने दूत गया, उसका लौटना और पृथ्वीराज से विनय करना ।

दूहा ॥ उत भोरा भीमंग सों । सूरन संग्यौ सार ॥
इत प्रथिरांज नरिंद कोै[1] । दूत संपत्ते वार ॥ छं० ॥ ६ ॥

(१) क्ष० को० मो०-कै ।

अंग असम जंगम जुगति[1]। जटा जूट सिर मंडि ॥
कसित्त गोट धिग चर्म पट। बड आडंबर इंडि ॥ छं० ॥ ७ ॥
नयन जोति वत्तन विदुष। असन दंभ कहुं थांन ॥
षबरि होय बुझे निकट। दुवा दीन[2] चहुआंन ॥ छं० ॥ ८ ॥

साटक ॥ श्री चहुआंन नरिंद[3] इंद्र अवनी भुपाल भूपालयं ॥
जंबू द्वीप मद्दीप दीप निबलं कित्तीनि विस्तारयं ॥
षग्गं चाप मैवास चास चसनं गर्भा न गर्भे गलं ॥
तोयं जैति जिहांन भान तपनं मौनं द्रष्टा जे वलं ॥ छं० ॥ ९ ॥

वार्ता ॥ अचहु श्री चहुआंन गाजी। षलक तो षग राजी ॥
मैवास मार वाजी। पर्व तो करन साजी ॥
मैभीत भूषं चषेवं। फल पच कंदं अषेवं ॥
आवास निवास नैरं। जहां तहां तजमि घूर घैरं ॥
अजमेर पीर सहाई। दुसमंन पैमाल करो देव चाई ॥
पीर पैगंवर दुवाह गीर सारे। अन मीन महचित्त दंन षारे ॥
ढिल्ली तषन थिर राज तेतें। गंग जल जमन रवि चंद जेतें ॥ छं०॥ १० ॥

दूत का आकर पृथ्वीराज को ख़बर देना कि तीन लाख सेना के साथ शहाबुद्दीन आता है।

दूहा ॥ सुनि दुवाह जंगम चरन। आडंबर तन तिच्छ ॥
रिंभिय गल्हां गुर सुतन। कहो षबरि की मिच्छ ॥ छं० ॥ ११ ॥
कहै दूत दिल्लेस सुनि। चरचि बत्त चहुआंन ॥
हम आए तब उन कियौ। ब.दिर नगर मिलांन ॥ छं० ॥ १२ ॥
कहै विवर सु'ई सुनौ। गज्जनेस सह भेव ॥
तीन लष्य साहन सबल। अकल अनंम अतेव ॥ छं० ॥ १३ ॥
बंके मुष बंके चषन। बंकी करन कमांन ॥
बंक दीह सम कारि गनौ। बंके षग्ग अमांन ॥ छं० ॥ १४ ॥

(१) को०—सुगति। (२) मो०—दिय दुवाह। (३) मो०—नरिंद।

दूत का बेवरे के साथ शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन करना ।

छंद पद्धरी ॥ कर जोरि अरज तिन करी राइ । गनि कहै सेन जे जुरे आइ ॥
दस सहस सेन षग्गर अगंज । अति उंच गात सादूल पंज ॥ छं० ॥ १५ ॥
बत्तीस सहस कबिली कहर । जम जोर जोध निज्जरि गहर ॥
कसमीर कहर सत्तरि हजार । कमनैत काल मुट्ठी समार ॥ छं० ॥ १६ ॥
हबसीह संग चैपन हजार । कर धरें कहर कत्ती बजार ॥
पैंतीस सहस रूमी रहस्सि । तिन गहै लोह मह मह बहस्सि ॥ छं० ॥ १७ ॥
सैंतीस सहस सज्जे फिरंग । तिन खंब भूख टोपी सिरंग ॥
सत्तह हजार सज्जे पठांन । अनभंग जंग अनभूख षांन ॥ छं० ॥ १८ ॥
दस सहस सेन सज्जे सजह । बाराह वैर बल घट अघह ॥
पन्नह सहस पस वांन साह । अंगन अगंज को सकै गाहि ॥ छं० ॥ १९ ॥
पचीस सहस सागिरद पेस । कामीक कमल पेषे असेस ॥
सुलतांन षबरि हूह सेन पाइ । इगसी सहाब बरनी सुनाइ ॥ छं० ॥ २० ॥
तिन मद्धि इक्क लष अकल जीव । जांनै न भज्जि[1] बज्जी करीव ॥
तिन मद्धि मीर के चमर धार । तिन माया न मोह पिष्षिय लगार ॥ छं० ॥ २१ ॥
तिन मद्धि मिले कोतबल साज । सम रंग जंग जनु परत गाज ॥
पच्चास सहस तिन मद्धि असंक । तिन चित्त अभै भै भीत बंक ॥ छं० ॥ २२ ॥
तिन मद्धि तीस बहरी बलाइ । हुकमी हसंम जनु सोर लाइ ॥
तिन मद्धि सहस दस समर धार । अरि मार सार जै करै सार ॥ छं० ॥ २३ ॥
तिन मद्धि पंच से. सह हूर । रन रंग नैंन लषिये कहर ॥
पंच बीस पंच दिन करैं निवाज । हक अहक वक्त जिन नहीं काज ॥ छं० ॥ २४ ॥
नय काल पाक अलांन अंग । छल छेद भेद जिन नहीं रंग ॥
संमरन संग जिन नही हूव । अल्लाह लाह व्यापार भूव ॥
की रीय करी जिन देष एक । षैराति परच पज्जी न टेक ॥ छं० ॥ २५ ॥
दूहा ॥ कहै दूत प्रथिराज सम । मिळ सेना बरजोर ॥
सहर निकसि बाहर भए । बंब बज्जि घन घोर ॥ छं० ॥ २६ ॥

---

(१) इ-भज्जि ।

शहाबुद्दीन की चढ़ाई का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का क्रोध करना ।

कवित्त ॥ सुनत सुवन सोमेस । भेस भैभीत भयौ तन ॥
रोस रंग प्रज्जलिग । संगि संचाह ग्रमर जन ॥
चयन छुक्कम करि देन । मंत गज चंदु न पुछ्छिय ॥
नाखि गोल जुत जंच । चलम चातुर चष बुछ्छिय ॥
लोहांन बोलि आदर अनंत । विवरि वत्त दूतन कही ॥
विफरि वीर उक्कन सुनत । जनु कि पुंछ सिंघिय अही ॥ छं० ॥ २७ ॥

लोहाना का क्रोध करके शाहगोरी के नाश करने की प्रतिज्ञा करना ।

पुच्छ चंपि जनु चिल्ह । सिंघ सोवत जग्गाइय ॥
चक्कावौ कि वराह । दंग जनु अग्गि लगाइय ॥
बरड छता कै छेरि । ग्राय व्यानी बग्गांनिय ॥
कै जग्गाए बीर । भीर भारथ मग्गानिय ॥
विरचयौ लोह लोहांन सुनि । जच कच मेछन करौं ॥
सोमेस थांन सुरतांन भर । तर ऊपर गज्जन करौं ॥ छं० ॥ २८ ॥

आबूपति सलष आदि का अपनी सेना तयार करना ।

सुनि अवाज सुविहांन । सलष अब्बू पति रष्यन ॥
सहस सत्त सजि सेन । गिलन गोरी भर भष्यन ॥
गजन पंति ढुलि ढाल । तत्त तोषार पष्षरिय ॥
जंच गोर गचरांन । मिलन मेछांन मष्षरिय ॥
अनभूत भूत संनाह सजि । बजि निसांन घन घुम्मरिय ॥
द्रुम जैत सुवन दुवननि दहन । लरन लोह मन धुंमरिय ॥ छं० ॥ २९ ॥
पुंनि गुज्जर बलि बंड । लोह अन डंडनि डंडन ॥
रचसि राम रन जंग । नयन अन नष्यन खंडन ॥
अट्ठ सहस असवार । सार पाहार प्रब्रत्तिय ॥
दांन ध्यांन असनांन । लोक संसार निवर्त्तिय ॥

अनचिंत्य आइ धारोंढ सच। जनु अकाल पावस मँडे ॥
आवाज साद अवननि सुनत। सकल सुष्य विभ्रम छँडे ॥ छं० ॥ ३०

पुरोहित गुरु राम का आशीर्वाद देना।

फुनि आई गुर राम। नाम भुज डंड समर जिहि ॥
जांनु भारथं द्रोन। श्रोन बरषंत सस्त्र जिहि ॥
अस्त्र अयुत तिहि नीन। ग्यांन विग्यांन विनाँनिय ॥
मंच जंच आराध। सध्य जिन बीर विग्यँनिय ॥
आसीस आनि चहुआन दै। कहा विरम साजिन चढौ ॥
चंपै न सीम साहाब सक। धक धकि धर करिबौ मढौ ॥ छं० ॥ ३१ ॥

दूहा ॥ दिपि डरांन डुंबर सघन। गहकि गज्जि नीसान ॥
घर धुंमर अंमर[1] मिलिय। मुदित रोस रीसांन ॥ छं० ॥ ३२ ॥

थोड़ी सी सेना के साथ शहाबुद्दीन से लड़ने के लिये पृथ्वीराज का निकलना।

कवित्त ॥ सहस पंच दस सेन। अलप चहुवांन संघातिय ॥
बाल पेंस प्रत्यंग। सस्त्र सचंग निघातिय ॥
चमर तबल टंकार। चंक छंकार हकारिय ॥
लोह लक धर धक्क। कंक अनसंक बकारिय ॥
सहस तीस सह सेन मिलि। गिलन मेछ गज्जे गहर ॥
तिन संग बीर बेताल चढि। पढत मंत बङ्घे कहर ॥ छं० ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन से लड़ने के लिये साढंडे पर चढ़ाई करना।

कवित्त ॥ सजि धायौ चहुआंन। साह साढंड सु संभरि ॥
उन जित्यौ चालुक्क। रत्ति रति बाघ सुभंमरि ॥
धनि सुभाग प्रथिराज। बीर धीरा विद्धाओ ॥
अरि अनंत कलहंत। सेन सामंतन आयौ ॥

(१) मो०—अम्बर।

लग्गौ षग्ग उड़ि चष्य में। चिया नयन मत्ता मयन ॥
गाहंन गहन दुज्जन दहन। सुवर सूर सज्जिय सयन ॥ छं० ॥ ३४ ॥

लोहाना आजान बाहु का पांच सौ सेना के साथ आगे बढ़ना।

लोहांनौ अगिवांन। सेन सै पंच चलक्किय ॥
पंच सहस सों सोम। पुत्त करि तोन षलक्किय ॥
गौ डंडा नीसांन। एक दस अट्ठ सुमेरिय ॥
ओर्लंगी सन्नाह। फौज चहुआंन सुफेरिय ॥
उत्तंग ढाकको बैरषों। कोइके अट्ठारहां ॥
निसि जाम तीनि बित्ते पतिय। पंगुराय सुढारहां ॥ छं० ॥ ३५ ॥

तातार खां का सुलतान से चौहान की सेना पहुंचने का समाचार कहना।

अरिल्ल ॥ तौ प्रसंन कीनौ चहुवांन। बल जल धर धंमर परिमांन ॥
आयौ अनी बंधि सुरतांन। कही षांन तत्तार प्रमांन ॥ छं० ॥ ३६ ॥

सुलतान का अपनी सेना को तयार करना।

दूहा ॥ दल सज्जिग सुरतांन नें। है गै गगन गभीर ॥
जनु भद्दों भर उंनमत। वाद भांन चंपि सीर ॥ छं० ॥ ३७ ॥

सुलतान का उमरावों से कहना कि अब की अवश्य जीतना चाहिए।

बोलि उंमरा मीर सब। यों जंप्यौ सुरतांन ॥
अब कै पग गढ़्ढे गहौ। भंजो षेत परांन ॥ छं० ॥ ३८ ॥

खुरासान खां तातार खां आदि सरदारों का बादशाह की बात सुन आक्रोश में आना।

कवित्त ॥ षां षुरसांन ततार। षांन रुस्तंम अधिकारी ॥
बली षांन पीरोज। नांम रोजून रज धारी ॥
षां रुमी हबसी हुजाब। षांन षांनां रुस्तंम षां ॥
जमन जुद्ध वर सुद्ध। सुद्ध अनुवद्ध सुस्त षां ॥

सुरतांन चमाज हथ्थ धरि। गहक्कि गज्जि पग हथ्थ लिय ॥
रप्प सुबीय हम साह सुनि। जौ बंधै चहुआंन जिय ॥ छं० ॥ ३९ ॥

सब सरदारों का सजकर धावा करना।

होत्ति मांन सुरतांन। बाह लंबी पस्सारिय ॥
है चीना पुरसांन। मरन सांई अधिकारिय ॥
सरन जाइ पुरसांन। बंधि या रूप मइंगल ॥
घेत्ति पांन सजि प्रांन। सेंन सज्यौ दिसि जंगल ॥
वढि सुबर भिस्त अरु वयन जिय। आनंद्यौ गोरी गरुव ॥
धार सुभ्रम बद्दर मनों। सस्त्र धार धावै धरुव ॥ छं० ॥ ४० ॥

सेना की चढ़ाई का आरम्भ होना।

छंद मोतीदाम ॥ सज्जौ वर गोरी साह सयंन। सुमोनिय दांम वरंन वयंन ॥
छिति छच छिनी पति बज्जहि लोह। उगे जनु अंकुर बीज सुदोय ॥छं०॥४१॥
वजे रन तूर वरद्दय[1] कन्न। जग्यौ जनु वीर दुती सिर पंन ॥
वजे रन रंग रजो दन मोद। फले वस मध्य कला छन क्रोध ॥छं०॥४२॥
छलं छन बद्दल सद्दल वांनि। उपहिय सत्तय सिंध प्रमांन ॥
वजी रन रंग सुरंगय भेरि। धरी चय नारि छनीसउ फेरि ॥ छं० ॥ ४३॥
वजी सहनाइन फेरि उपंग। वजे दस पंच स सिंधुअ रंग ॥
वजे रव रंग निसांन दिसांन। वजे घन चंवक ढोल निसान ॥छं०॥४४॥
वजे घरियारि रनं किय घंट। वजे घनि घुघ्घर पप्पर अंट ॥
वजे तंबल सुर तंग तहूर। वजे रन वीरनि झालरि ह्र्र[2] ॥ छं० ॥ ४५ ॥
वजी छिर चोट दमांमन रीस। नचै जनु गंगय अग्गय ईस ॥
फिरें गज राजत गज्जन पंति। कारी मनों कज्जल पव्वय कांति ॥छं०॥४६॥
बनी गजराजन वैरष पंति। मनों वनराइ वसंत चलंत ॥
चले बनि पंतिय दंतिय जोर। ढुरै छच रंग मक्च दिलोर ॥ छं० ॥ ४७ ॥
चढे गज अंडन बंधिय पांनि। चढें गज राज चले गिर जांनि ॥
करं कर पाइ हतौ कर चोइ। पुलै नच वांन कमांनच कोइ ॥छं० ॥ ४८ ॥

---

(१) क्र० को०--रवद्दय। (२) क्र० को०--क्रूर।

सउज्जल दंत न उप्पम बांनि । मनों बग पंति पनी[1] घट जांनी ॥
बहै नन अंकुस कूह चिकार । सचै नन चव्वय बज्ज प्रचार ॥ छं० ॥ ४९ ॥
जरैं नग दंत न हेमह सुत्ति । मनो घन संझह विज्ज पवंत ॥
छयं घन पट्ट सु छिंक्रय तांम । झरैं झरनां जनु पव्वय स्यांम ॥ छं०॥५०॥
मचै तहां कद्दव कीच झकोर । करै तहं दद्दुर दुघ्घर सोर ॥
धरैं धर पाइ पचै हुर जोट । चलावत मेर कहां कहौ कोट ॥ छं०॥ ५१ ॥
बियं बिय बीरंग जं गज लेषि । लरैं मह सायर ढिग्ग समेषि ॥
दनी बर नारिय रेसम रंग । चढें गिर इंद बधू मनों चंग ॥
तिनं उपमा बरनी नन जाइ । प्रलै घन संकर छुट्टिय पाय ॥ छं०॥ ५२ ॥

दूहा ॥ पाइ दाइ धर वर धरै । सद मद रोसन जंग ॥
दुज्जन दिषाऔ देषियै । जनु बिस भरे भुजंग ॥ छं० ॥ ५३ ॥

चौहान की सेना का पूर्व और पच्छिम दोनों ओर से चढकर मिलना ।

निसि पद्धरी नरिंद तौ । सज्जि सेन चहुआंन ॥
मिले पुव्व पच्छिमहुतें । चाहुआंन सुरतांन ॥ छं० ॥ ५४ ॥
हय गय दल बहल सुअन । नर भर मिलि चतुरंग ॥
चाहुआंन है वैजु सों । बढिय रारि रन जंग ॥ छं० ॥ ५५ ॥

खुरासानियों का चौहानों पर टूट पड़ना ।

घरी एक पल बिपल हुअ । लोह षेलि षुरसांन ॥
उररि परे दोउ दलन बल । चाहुआंन तुरकांन ॥ छं० ॥ ५६ ॥
लै संभरि पति सगुन वर । पुट्ठि पवन प्रथिराज ॥
जुग्गिनि चक्क अचक्क बर । सो सन्ही अरि काज ॥ छं० ॥ ५७ ॥
लै जुग्गिनि प्रथिराज बल । संमुष दै पति साच ॥
च्यारि घरी घरियार ज्यों । पच्चर सी सम राच ॥ छं० ॥ ५८ ॥

(१)–क०–घनीं । को– धनी ।

शाह की सेना का युद्ध वर्णन ।

छंद रसावला ॥ साह गोरी भरं । सेन संभं फिरं । * * * * * * * * ॥
लोह कढ्ढे करं । बीज झंपं झरं । असि वंकी करं । चंद बीयं बरं ॥
नैंन रत्ते करं । कंध कढ्ढे करं[1] । वं वजे घुघ्घरं । मुष्पजा कंदरं ॥५९॥
बीर बड गुज्जरं । सेन बही परं । असि मारं झरं । उत्तकंठं परं ॥
रंभ ढुंढै बरं । लुथ्यि आलुथ्थरं । सेन भग्गं परं । लेहु ले उच्चरं ॥६०॥
पंथ ते उत्तरं । भार नंपै सरं । जोग दिष्पै नरं । सिद्ध तारी धुरं ॥
वजीयं यों करं । मुत्ति बंधं परं । सूर नांही डरं । स्यार पच्छे परं ॥ छं० ॥६१॥

दूहा ॥ उनंगे सुरतांन दल । सांह्डे चतुरंग ॥
दीह दुघट्टी रन मिले । सोभर नीं किं जंग ॥ छं० ॥ ६२ ॥

दोनों सेनाओं का मुठभेड़ होना, सलष राज का भी आकर मिलना ।

छंद भुजंगप्रयात ॥ जुगं जंग लग्गे ह्लक्के गुमानं । ढलक्के सुने जा चढयौ सूविहानं ॥
नियं नद्द नीसांन वज्जे विहानं । परी श्रेल आलंम छुश्र जान थानं ॥
चढी चक्क चक्की छुत्रं सोर झोरं । मनों मेघ घोरं कियं सोर मोरं ॥
कहैं षान जादै अवे सू विहानं । चढयौ साहि सद्दैं अरे चाहुआंनं ॥ ६३ ॥
भरक्के भराहं उनें हंस नद्दं । भए बंध हीनं घने मेक अद्दं ॥
असैारा अक्कैहं भगे बंध फौजं । मिल्यौ आय फौजं सलष्यंति सैाजं ॥
उतंगं सु गातं भरं बथ्थ घातं । सनेही सुभट्टं मनों सिंघ बातं ॥
अलग्गं सुलग्गं उक्कारंत मेक्कं । उड़ी पंति गत्तं बंधे रेस रेसं ॥
कला सूर एकं असू रंस चैाकी । सचै कैान मारं विसूरं सु सैाकी ॥
छं० ॥ ६४ ॥

सलष की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ ढंढो रज्जहि ढाल । मुरें गैारी दल षविहर ।
षविहर दल विहरंत । परे सिल्ला रति असि झर ॥
असि झर भर भिगई । मलिक दावानल लग्यौ ॥

(१) को०—परं ।

दावानल प्रज्जल्यौ । पिठ्ठ सु समान विलग्यौ ॥
सूरिमा चाक संभरि सघिक । चिगुन सह लय रुक सहुच ॥
रुक प्रलय वैत के चंग में । पक्खर खष्प सलष्प तुच ॥
छं० ॥ ६५ ॥

चिगुन चाव पामार । भिरिग चौकीय चकाचिम ॥
चक्का व्यूह अचिर्वन । मनों जै द्रक्ख सु दाचिम ॥
धरि धारह धारार । धार धारह आवहिय ॥
आहुद्दिय मनों सिंघ । सिंघ ए काम उपद्दिय ॥
जज्जरिय गात आधात उठि । प्रभु अबु अठहह अठिल ॥
घरि एक सार संभरि सुभर । रन विधात नंचिय नठिल ॥
छं० ॥ ६६ ॥

आजानबाहु लोहाना का मारकर भागना ।

लोहांनैा आजांन बाह । वाहन बचि लग्गौ ॥
चिगुन चाव चिलोय । मार भारी भर भग्गौ ॥
तव जग्यौ सुरतांन । षांन षग्गह पंधारिय ॥
बाह बाह आलंम । अभग आलम कंचि सारिय ॥
विस्तरिय बचसि चिंदू सुरक । किरकि कंक भंजन करिय ॥
संभरिय धरिय संमर तनिय । कब्बि सुष्म अस्तुति धरिय ॥
छं० ॥ ६७ ॥

दूहा ॥ जहां जहां रन अंकुरिय । तह तह चंपिय राज ॥
मिच्छ सेन एकत करिय । मनों कुलिंगन बाज ॥ छं० ॥ ६८ ॥

सलष राज की वीरता का वर्णन ।

कवित्त ॥ ढंढा रिज्झ ढाल । ढाल ढंढोरि ढंढोरे ॥
मुरें ढालढी चाल । चाल अरि माल विछोरे ॥
अरि विछोरि अरि माल । सलष उभ्भो पय पंग ग्रसि ॥
चक्ति नाग गिरि नाग । तेग कढ्ढे बढ्ढे लसि ॥
दन देव दख्ख गंध्रव्व गन । अजुन जुद्ध दिष्षे अदय ॥
चहुआंन सेन सुरतांन सों । सुजनु चंत लग्गे संदय ॥ छं० ॥ ६९ ॥

बड़ गुज्जर और तातारखां का युद्ध वर्णन ।

बड गुज्जर रा रांम । उत्त तत्तार मंडि रन ॥
सार धार उम्भरिय । श्रोन झंझरिय गगन तन ॥
लोह चट्ठ उट्ठंत । हंस छुट्टंत श्रीर सर ॥
फिरत रूंड बिन मुंड । दंत बिन सुंड सार झर ॥
अद्भुत भयावह समर मचिय । रचिय रत्त कालो कहर ॥
टूक तरत गिरत घुमंत घटत । भटकि नट्ट मंडिय बहर ॥
छं० ॥ ७० ॥

छंद चन्द्रायन ॥ कवि चन्दं काव्य छंद । मिलि साहि गोरिय दंद ॥
तत्तार षांन मसंद । बड गुज्जर राम नरिंद ॥ छं० ॥ ७१ ॥
नट बरद मंडिय ग्यान । पर हत्ति चाल बिहाल ॥
झारि रार रत्तह भीर । उठि अंग अगनित बीर ॥ छं० ॥ ७२ ॥
कढि लोह कोह दुदीन । बजि तार झार सुभीन ॥
कर कंठ कंठिय जांन । करै देव दुंदुभि गांन ॥ छं० ॥ ७३ ॥
नचि चक्क चक्कि गरिट्ठ । धरि भवन इष्ट सु दुष्ट ॥
बनि सार धार करक्कि । परि सीस भूमि तरक्कि ॥ छं०॥७४ ॥
उडि छिंछ इच्छ प्रकार । रुधि बहै अंगन पार ॥
इन भेव राजन बीर । मधु माध इक्क सरीर ॥ छं० ॥ ७५ ॥
सुनि श्रवन समझन बेन । आवत्त घाय प्रचेन ॥
परि अंग अंग निनार । बजि दिव्य देवन तार ॥ छं० ॥ ७६ ॥
असि बजत सार सरीर । जनु झिलत सूरत नीर ॥
अँग अँग घाइ घनक्कि[१] । जलजात बोलत थक्कि ॥ छं० ॥ ७७ ॥
सुरतांन आंन कहंत । सुनि सेन सथ्थ गहंत ॥
टरि परिय मध्य मध्यांन । चहुआंन देषिय भांन ॥ छं० ॥ ७८ ॥

दोनो सेनाओं का एक घड़ी तक एकमेक हो जाना और घोर युद्ध होना, आकाश न सूझना ।

(१) को०—घनक्कि ।

कवित्त ॥ भांन दिष्षि धुंमरौ । रेंन उड्डौ घर धूंमर ॥
चकित देव गंध्रव । ईस चकित गुन चंमर ॥
टोप नेत चक चेत । अग्गि उडिवी अस्सि टोपं ॥
मुकर मध्य जनु ईस । नेत देषत चष कोपं ॥
घरी एक एकमिक्क धुन्न । मचन रंभ मच्चौ सुविय ॥
इक परत गिरत तुट्टत सुतन । इम क्रिचिय छिति पर सुभिय ॥छं०७९॥

कैमास का साथ छोड़ कन्ह चौहान का भी साड़ंडे में आ जाना ।

दूहा ॥ कन्ह छंडि कैमास फुनि । सुधि साढ़ंडां रारि ॥
तनक भनक सी सुनत ची । जांनि कै घप्पी षारि ॥ छं० ॥ ८० ॥

कन्ह का बड़ी वीरता से धावा करना ।

कवित्त ॥ षारि षाप षपि कन्ह । ओनि अनचिंत परी रन ॥
वसीठ सम संघरन । जांनि दव दंग सुक्कवन ॥
कै आषाढ उडूर । तोरि तरु ब्रछ उछारिय ॥
कै व्यानी बाघनि सुपत्त । उकति आषेट उछारिय ॥
कठो कि रिच्छ राषिस दलन । समर सेन धक्कच धरिय ॥
नंषंत जांनि सरवर सुभर । कढि सरोज मत्तौ करिय ॥ छं० ॥ ८१ ॥

दोनो ओर के सरदारों का महा क्रोध कर करके युद्ध करना ।

छंद भुजंगी ॥ पच्छौ धाइ सुरतांन सुविहांन गोरी । चंपे धाइ चहुआंन गौ पंच छोरी ॥
षिमझौ वंक सूरं सलष्षं पवारं । व्रपं सार टट्टी किसारं किवारं ॥ ८२ ॥
षिमझौ कन्ह कंकं झंडा मद्धि गाढौ । मनों राष्षसी सेन में कप्पि ठाढौ ॥
गचै दंत दंतीय भुज्जं उषारै । [१]धरा कढ्ढि मूसा मनो मार डारै ॥ ८३ ॥
दुवं वीर चक्क महावीर सद्दं । भये रंग रत्तं मनौं मझ चद्दं ॥
लगै सद्ध घन संघ पृथ्थीन टारै । [२]मनों कोपियं भीम पाषार फारै ॥ ८४ ॥

---

(१) को०--इस तुककी जगह यह तुक है"--मनो क्रो पियं भीम पाछार फारै ।
(२) को०--इस तुक की जगह यह तुक है "धरा कढ्ढि मूसा मनो मार डारै ।

तुटै टोप टूकं सुभङ्गंत दीसैं । मनों चंद तारा नपै हथ्थ रीसैं ॥
लगी नाग मुष्षी गजं सीस भारी । मनों द्वार रुंधे पिरक्की उघारी ॥८५॥
झुल्ले सेल सालें वरं वीर दीसं । मनों सिंह तारी लगी सीस ईसं ॥
परं तेन दीसं वरं वीर कोई । लगें धार धारा रजी रज्ज छोई ॥८६॥
पर्यो राउ रघुबंस वरसिंघ जोरं । जिनें मुत्ति लभी वरं वीर भोरं ॥
बजें धार धारं गजं सीस तेगं । नचें जांनि बीजं घनं मध्य वेगं ॥८७॥
लगै कुट्टुक वांनं गजं जोर सीसं । उठे छिंछ इच्छं गिरं जक दीसं ॥
भरं सुंड रक्तं सहं अंग छोरं । अवें वद्दली मेघ गेरुन धारं ॥८८॥
घुमें मुक्कि सीसं भटं लोह छक्के । उभै जांनि भूतं मद्दा मंच छक्के ॥
फिरें रुंड विन मुंड रस रोस राचे । मनों भग्गरं नट्ट विद्या कि नाचे॥८९॥
परै अस्व हुंतं सिरं जोर सूरं । तुटें षुप्परी चड्डु ह्वै भूर भूरं ॥
लगै गुर्ज सीसं भजी भंति कुड्डुं । मनों संषनं दद्धि मंथांन उड्डुं ॥९०॥
झुझै कीन कीनं करी मार कक्कै । झरं रक्त छोरी मद्दा मस्र छक्कै ॥
भिरै सस्त्र विन वथ्थ भर भीर भीमं । परैं लोथि जूथं विनं जीव छीमं॥९१॥
खरंतं जदीसे परं तेन कोई । लगे पग्ग षग्गं अमे मल्ल छोई ॥
तुटें दंत दंती कि रद्दा निनारें । मनों कज्जलं कूट तें चंद झारें ॥९२॥
दोऊ कन्न हस्ती चुवै रुद्धि भारी । मनों कूट तें उत्तरै भूमि रारी ॥
वहै वांन कंमान मिटि थांन थांनं । तहां पंति पंषीय पावै न जानं ॥९३॥
उते षांन गोरी इते सिंघ राई । मनों वीय सिंघं पलं काज धाई ॥
चँपे गिद्धि मंसं उडै रुध्धि कुट्टै । मनों रक्त धारा नभं मेघ वुट्टै ॥९४॥
मुर्यो साहि गोरी मंद्दावीर धीरं । तसव्वी तिनष्षी लिए षिझ्झि तीरं ॥
धरी ध्यार ज्यौं चश्वरं षग्ग संध्यौ । पकै साहि गोरी सु चौहांन रुध्यौ ॥छं०॥९५॥

कवित्त ॥ करिय पार सो भंत । रुधिर जल रजि[1] सज्जिय सर ॥
केस रज्जि सेवाल । मकर कर जंघ मीन नर ॥
षुप्परि काच्छ सुअच्छ । वसैं तहां गिद्ध सिखवर ॥
रंभ अंभ तहां भरै । फुल्लि पोइन सु मुष्ष नर ॥

(१) को– रज्जि सजिय ।

जल देहिं ताहि तारिन कुटै । मात पित्तु गुरु मंनि धुञ्च ॥
नन करिय कोइ करिहै न को । करें जु ए सामंत भुञ्च ॥ छं० ॥ ९६ ॥

दूहा ॥ पुनित गुनित गुर मंत्र गुर । धुर वद्दल दल गाजि ॥
सूर अमर संचरि समर । दिषन राम गज साजि ॥ छं० ॥ ९७ ॥

आकाश में देवांगनाओं का वीरों को वरन करना ।

कवित्त ॥ गजं आगि जनु जग्गि । पवन बसि मंत्र बीर बर ॥
घर अंमर धमधमिय । कमिय सह सेन हयनि हर ॥
तीर तुबक्क तरवारि । कुंति किरवांन कटारिय ॥
दुरित[1] ढाल गज माल । जांनु जल जोर अटारिय ॥
हुअ धुंध धरनि सुभिक्क न नयन । श्रवन वयंन न संभरहि ॥
अक्कह अकास अनंद मय । वैठि विमान सुबर वरहि ॥ छं० ॥ ९८ ॥

गुरु राम का एक मंत्र लिखकर म्लेच्छों की सेना पर डालना ।

दूहा ॥ राम मंत्र इक जंच लिषि । कग्गद सर मुष रष्षि ॥
षंचि कठिन कंमांन कर । म्लिच्छ सेन पर नष्षि ॥ छं० ॥ ९९ ॥
छँद विभूत पढि हथ्थ धरि । संमुह समर उडाइ ॥
अचल चित्त जिन जिन तनह । धीरज तिनहि छिडाइ ॥ छं० ॥१००॥

मंत्र के बल से शाह की सेना का माया में मोहित हो जाना, इधर से क़ाज़ी ख़ां का मंत्र बल करना और युद्ध होना ।

छंद भुजंगी॥ करी मंत्र विद्या गुरं रांम गांनं । ठगे हेन मिक्कं चरे हेम जांनं ॥
महा मोह मोहै रहै ठान ठांनं। मनों चित्र असवार भ्यंतो विनानं॥छं०॥१०१॥
हने भूत से भीत षीजे षईसं । बंधे सब्द सूरं विना रोस दीसं ॥
रहे साहि गोरीय तत्तार षानं। तियौ मान काजी महा मंत्र वानं ॥छं०॥१०२॥
कहै साहि गोरी सुनौ मांन काजी। लियं बोलि हज्जूर तहं मीर हाजी॥
करी जोर विद्या सुजंनार दारं। करो क्योंन जपेव भी क्या विचारं॥छं०॥१०३॥

(१) क्र-दुरति । को० दुरहि ।

तवं काजियं दस्त दुश्र सुष्प फेरी । जपै जाप पीरं दुबो सेन घेरी ॥
तबै मेछ सेनं सइं मोह भग्गो । सबैं हिंदु सेनं फ़ती बद्द लग्गो॥छं०॥१०४॥
गुरं गरुड आह्वान राम उचार्‍यौ । तवं बंधनं नाग तिन षंडि डार्‍यौ॥
भए सेन हुस्यिार दोऊ करारे। षिष्षे रोस असमांन पिष्षे डरारे॥छं०॥१०५॥
षिरे षग्ग षुरसांन षां जेरछूनी । बढी बाग गुरजं जम धार दूनी ॥
तजी मंच विद्या सजै सार सारै। बजी षग्ग अग्गीय ओडंन डारै॥छं०॥१०६॥
सरं जाल वै काल उड्यौ अनुद्धं । बहै बाह जम दाढ कुद्धं धनुद्धं ।
उडै जंघ गोरी नरं नारि धारी। धकें मंत मंते गिरे ज्युं अटारी॥छं०॥१०७॥
उड्यौ सोर असमांन कुहरांम ऐसो । षिष्षै जानि गंगेव बल बंध जैसो ॥
फिरें रुंड भक रुंड विन सुंड दंती । परें पीलवानं चढे पंषि पंती ॥
छं० ॥ १०८ ॥

दूहा ॥ सुनि सद्दाव साहाबदीं । चै छंडिव गजि[1] तक्कि ॥
मिले सामि कार भर सुभर । दल चहुवांन सु रुक्कि ॥ छं० ॥१०९ ॥

मारुफ़ ख़ां का शाह से कहना कि अब बड़ी भीड़ पड़ी जिन क़ाज़ी खां पर खुरासान का दार मदार था उन्हों ने तसबीह छोड़ दी, हिम्मत हार दी।

कहै मीर मारुफ षां । परी भीर सुरतान ॥
तिन तसवी नंषी करह । जिन कंठन षुरसांन ॥ छं० ॥ ११० ॥

खुरासान ख़ां आदि सरदारों का फिर एकत्र होना और लड़ने को तयार होना।

कवित्त ॥ षां षुरसांन ततार । षांन हुसेन विमाद्दी ॥
षान षान रुस्तम । षांन निज बंध समाद्दी ॥
षां जलाल षां लाल । षांन षिलची षां गष्षर ॥
कोली षां कुंजरी । साहि अग्गी बल दष्षर ॥

(१) क्र॰ को॰—गज ।

जिन भुजनि साहि साहिब तुंग । जिन ढिल्लां चल्यौ सुभर ॥
तिन धीर बीर संमुह धरिय । बिब्भि नंषी तरवारि कर ॥
छं० ॥ १११ ॥

छंद भुजंगी ॥ मिली मंडली फौज गोरी नरिंदं । मिले दीन दोउ कहै चंद दंदं ॥
गहै दंत दंती तजै मोष तुच्छं । दोऊ दीन धावै सुधारै सुमुच्छं ॥छं०॥११२॥
करै संभरी दीन साहिब्ब राई । उनंके उनाइं दुदीनं दुहाई ॥
सु पैठंत पीठं गलं बथ्थ घल्ले । धकै धीग धक्के चलाए न चल्ले ॥छं०॥११३॥
कढी बंध अस्सी गजं सीस लस्सी । मनों बीज चंदं किने रस्स रस्सी ॥
तुटी भूमि भारी धुरं तार पायं । बजै षग्ग अंगं झनंके झनायं ॥छं०॥११४॥
तजे बीर अश्वं उपंमान ऐसी । मनो चच्चरी बाल चढ़ूढ तैसी ॥
करै घाट औघाट निघट्ट घट्टं । तिनंकी उपंमा कही चंद भट्टं ॥छं०॥११५॥
भरं भूमि भारी पुनारीति बज्ज । गहै षग्ग झोर धनकेति तज्ज ॥
बरं बीर घावंत ओपंम ऐसी । मनों मल्ल धावै चढू तक्कि तैसी ॥छं०॥११६॥
तरंफंत सीसं धरंगं निनारे । मनों मीन तुच्छं जलं में उछारे ॥
नियं बद्द अस्तूति जंपी न जाई । मनों भंगुरं नट्ट विद्या बनाई ॥
छं० ॥ ११७ ॥

कवित्त ॥ तीन घान अद्धमद्द । तीर वियं सहस लोकि तब ॥
अंगुर अठ्ठ भलक । बाह बंधे नंषे कब ॥
मेघ धार बरषंत । टोप उप्पर चहुआंनी ॥
मनों जैत थंभ परि तत्त । बीर पावस बुठ्ठानी ॥
भरी एक मुठ्ठी नंषियत बर । षिषि किरषांन बिचारि नर ॥
पष्षर प्रमान पट्टन सबर । धर तुब्यौ लग्यौ सुधर ॥ छं० ॥ ११८ ॥
पष्षर लष्ष सलष्ष । भयौ धुरसांन धांन ढ्व ॥
एक एक भुज अमित । सेन रुकाए अकल बल ॥
धार धार बज्ज प्रहार । गुरज बज्जै तन रज्जै ॥
मनों घट घरि पार । प्रघर पूरन प्रति बज्जै ॥
यों बज्जि सार आतुर इलिय । ज्यों डंडूरिय बूंद धर ॥
पंम्मार सार धारह धनिय । ईस अनंदिय माल गर ॥ छं० ॥ ११९ ॥

दूहा ॥ गरज धरन गज मान धर। टपकत बुंदन रत्त ॥
सेष भय,नक भंति निचि। कंपति दिषिगिर जत्त ॥ छं० ॥ १२० ॥
कोइक कमन्ध कहि कहि हसन। कोइक हंकत हंक ॥
मार मार कोई कहत। मुदित मान शिव अंक ॥ छं० ॥ १२१ ॥

कवित्त ॥ पुराहांन तत्तार। षांन रुस्तम अधिकारिय ॥
एक स्यामि रन अग्ग। द्वै द्वै दुहुं वांच विघारिय ॥
पुट्ठि पवन बल्लोच। साहि रष्यें सुरतानं ॥
मावचि राह नरिंद। आइ चव्या मुष भानं ॥
मध्यांन टरिय निसि मुदित भय। कमल विमल ककिय बिकुरि ॥
सारस सुरंग को तरनि तर। उडि पंषी अंषी निजरि ॥ छं० ॥ १२२ ॥

छंद घोटक ॥ चकचकि विचकचि थांन वरं। उडि पंष सकोतर चित्त धरं ॥
सपयोनिधि मद्धि पतंत रषी। समनों दिसर्चो दिस दून छवी ॥
सत पच मुद्देक मुदै उघरैं। निसि विप्प सुग्यांनह तेज हरैं ॥
मनमध्य चढे भुवनीन जनं। सुविषै विरही जन कंप तनं ॥
नन दिष्यिय पंथ निहारि मगं। उमटी वर दिष्ट निहारि मगं ॥
उतरी जनु चंगय डोरि डरी। विरही जन दिष्ट सुधान फिरी ॥ छं० ॥१२३॥

साटक ॥ मोदं मोद हसंत कंमुद कला चक्कीय चक्की चितं।
चंदै चंद वढंन तत्त कलयो भानं कला छीनयो ॥
मत्तं मन्मथ जांन बांनति षरं अंगुष्ट तेउच्छुदं ॥
सासत पचय तन कादर मुषं धीरा रसं सूरयं ॥ छं० ॥ १२४ ॥

अपनी सेना के बीच में पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

छंद घोटक ॥ इनि घोटक छंद उदंत कलं। रस बीर जगावत वीरबलं ॥
घन नंकि त्रिघोष निसांन वजं। भर बक्किय बंवरि कच सजं ॥
बढि गोरिय साहि सयंन मुषं। नन सुभ्भय सूर दिसांन चषं ॥
नव त्रिति निरेचिय वीर रसं। जिन कौ जस ब्रह्मय देष कासं ॥ छं० ॥ १२५ ॥
धनि हथ्थ सराहिय दीन दुहं। कवि जोह प्रमांनय सार वहं ॥
प्रथिराज विराजत सेन मभ्भं। सुमनों बडवानल दद्ध दभ्भं ॥

दोय दीन दुबाहय दंद[1] पढै । चढि धार प्रचार पयोनि गढै ॥
कटि कंध कमंध गिरै दुसरै । उछरै मंनु प्रब्बत बीर हरै ॥छं०॥१२६॥
नव हंसन एक न मुक्कि चलै । नव लुहि नई मुकतें न छुबै ॥
लगि सस्त्र भए जर अंग छुसे । तन बाहन जंगम जांनि जिसे ॥
निकरें नव हंस उमंग मगै । तिन पंजर फेरिन आइ लगै ॥छं०॥१२७॥

कबित्त ॥ चलत मेर नन चलहि । चलन सब सथ्थ हथ्थ चलि ॥
चलन भांन नन चलहि । चित्त नन चलै मोह छुलि ॥
अश्व चलन नन चलहि । चलन रह्यौ असु असुमय ॥
सो ओपम कवि चंद । कहिय आनंद हथ्थ सय ॥
निंधनिय नारि अकुलास चिय । अगयानी जी मुहई ॥
इम अश्व थांब तत्तार को । सार धार बर तुहई ॥ छं० ॥ १२८ ॥

अरिल्ल ॥ नागारै मंची सत मिल्ल्यौ । भोरा राइ भुअंगम किल्ल्यौ ॥
साहंडे संमुह सुरतांनह । चच्चर षग्ग कियौ चोहानह ॥ छं० ॥ १२९ ॥

पृथ्वीराज का विजय पाना, शहाबुद्दीन का बांधा जाना ॥

छंद मुकुंदडांमर ॥ चहुआंन उदंडिय चंडिय चंपिय साह सुरुहिय बंध धरै ॥
हाकंत हनंत सुलोम हनं दन बंदन बंदित दूरि करै ॥
भुअ कंपित जंपित संपित गोरिय लुध्यि अलुध्यि पलुध्यि परे ॥
पल एक सुलीन कियौ तिल मत्तह भारि भयानक भूमि टरे ॥
सामंत सितुंग तुरंग तुरावध आवध आवध अग्गि झरे ॥छं० ॥१३०॥
धरकंत सुमीर गंभीर गहं अह अब्ब गुंडावन बीर वरे ॥
नर बीर द्विवाद्वि देवस पुब्बह अब्ब गुजाइय तुंग ढ़रे ॥
जय पत्त जपत्त भसंनिय जुग्गिनि ओन सुषप्पर चंपि करे ॥छं०॥१३१॥
तुरयं तुर तांन प्रमांन कमांनय सुक्खिअय भांन जुआंन अरे ॥
जुग जीति पयं सुधि आंथन बंथन सथ्थन बंधिय बंधि परे ॥
जित्यौ चहुआंन गह्यौ सुरतांन हयौ तुरकांन किसांन जरे ॥
छं० ॥ १३२ ॥

(१) को-चंद ।

इस युद्ध में सलष राज की वीरता का वर्णन ॥

कवित्त ॥ चय चध्यिय कननंकि । बज्जि स्ननन स्ननन कहि ॥
दंति दंत आहुरहि । षंड षंडेन ठनंकहि ॥
घट घट लग्गिय संग । फौर पत्तिय पतिनानं ॥
मनु पंचे बलराम । चथ्य चथिनापुर जानं ॥
पंचै कि द्रोन हनवंत कपि । कै कान्ह पंचि गोबरधनह ॥
कर करी दंत सलषह धरन । यौं सुभ्भै चष्यी रनह ॥ छं० ॥ १३३ ॥
षिभ्भिश्च राज प्रथिराज । गचिय करिवान चंपि कर ॥
रोस मुक्कि वरीय । दंतवाही सुकुंभ थर ॥
धार मुत्ति आहुरिय । पंति लग्गे सुभि बीरं ॥
मनह रोस गहि पग्ग । टरै धाराधर नीरं ॥
कै दुतिय चंद बद्दल बिचह । पंति लग्गि उड्डगन रचिय ॥
धर भुक्कन मंत सुदिष्यियहि । मनहुं इन्द्र बज्जह बचिय ॥ छं० ॥ १३४ ॥

दूहा ॥ जिन लग्गे तिन भ्रंन किय । धर धर धुक्किय धार ॥
पष्यर एक पर चष्यरें । सिर बिर बुट्यौ सार ॥ छं० ॥ १३५ ॥
सस्त्र श्रस्त्र सिर सिर परहि । डरहि न जन कुमदंग ॥
भीर स्वामि संकट सघन । परत कि दीप पतंग ॥ छं० ॥ १३६ ॥

गाथा ॥ पतन पतंग रूपं । प्रपं धरा जांनि विषमायं ॥
चरन स्वांमि भय चितं । चित विमन जन्म मरनाई ॥ छं० ॥ १३७ ॥

दूहा ॥ ठांम ठांम सिंधू बजहि । बजहि सार मुष मार ॥
तन तरवर जहं तहं ढरहि । जे भूम्भार मुंक्कार॥ छं० ॥ १३८ ॥

सलषराज का घोर युद्ध करना, उनकी वीरता की बड़ाई ।

स्वामि संकष लषिवत चरन । भंजि भीर चहुआंन ॥
षंकाळौ ना आइ मिळ । तो सम को पहुआंन ॥ छं० ॥ १३९ ॥

कवित्त ॥ तूं अब्बू पति धनी । राज रष्षन दिल्ली धर ॥
तूं चालुक्क चंपनौ । भार भंजन गुज्जर धर ॥
अडर अकल आजांन । पान भंजन मेछानं ॥

षग्गसुप घायौ साचि । साचि सची दृक्खाइन ॥
प्रथिराज प्रबोधिय धार धर । इंकि साथं उप्पर परिय ॥
जाने कि अग्गि उर्यान वन । वंस थूर दव प्रज्जरिय ॥ छं० ॥ १४० ॥

पृथ्वीराज का सलष की सहायता करना ॥

फुनि प्रथिराज नरिंद । करिय ऊपर जैतच रन ॥
भरनि भार भंभरिय । इंकि हुंकरिय सिंघ जनु ॥
मद गज ढहनि कि सरनि । तरनि लुप्पन जनु जलधर ॥
षषक कढ़िय करि वार । काल कुप्पिय जीवनि पर ॥
सोमेस सुअन विरचंत रन । चढ पट घट भद्दच लुटिहि ॥
इय अयुत वत्त पिष्यत नरह । भुजति भार अनेक फुटहि ॥ छं० ॥ १४१ ॥

पथीराज की वीरता की प्रशंसा ।

भरनि भीर चल अचल । रेन चल मलति पवन करि ॥
लोथ लोथ पर परति । अर्क नहिं सकत गवन करि ॥
स्रोन छिंछ उछरंत । सुभट सुभ्भति जनु किंसुव ॥
गजन ढाल कंढुरति । मार संघर तक मध भुव ॥
विरचंत विफुरि सोमेससुअ । सचस करन वर कर वढिय ॥
वन इंद पियन वढवा नलकि । क्रम जानि संमुद कढिय ॥ छं० १४२ ॥

दूहा ॥ चाचा चल इच गिध्य जई । काला चल भंकाल ॥
उतरन कुप्यौ सलप लष । काका चल कंकाल ॥ छं० ॥ १४३ ॥

सलष राज के युद्ध की घोरता का वर्णन ।

छंद मोतीदाम ॥ कुप्यौ रन राचस लष्यिय लष्य । हुये रन रोष अरेष विपष्य ॥
करक्कर वज्जिय वारन मार । भरभ्भर ढंकन चक्क करार ॥
तरत्तर तेग तरफ्फर श्रृंग । जित्तत्तिन वेत घनं घट भंग ॥
चढे मुष मेछ ससंद मसंद । जित्तत्तिन टूटत तेक असंध ॥ छं०॥१४४॥
फरष्षर पष्षर सध्यर तोम । मनों जनमेजय चिल्लिय होम ॥
गिरंत उठंत कमंध विहाल । चई कन मुंघ भसुंड विहाल ॥
हसो रन रंग सलष्य सरूप । मनो सुचकुंद कि जग्गि विरूप ॥ छं०॥१४५॥

म्लेच्छों की सेना का मुंह मोड़ना, सुलतान का हाथी छोड़ घोड़े पर चढ़कर भागना।

दूहा ॥ मेछ सेन बषु भरि परिय। केविद रिगाय डग्ग ॥
फिरौ मुष्य सुरतांन कौ। रुष्यि छंडि चय संगि ॥ छं० ॥ १४६ ॥

म्लेच्छ सेना और सुलतान की भगोड़ का वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ कुसादे कुसादे कहै षांन जादे। रिंग्यौ साह आलंम सव सेन बादे ॥
सवै सेन दिष्यौ इसौ साह सुष्यं। मनों प्रात चंदं सुकंती अलष्यं ॥
बरें पारि वेढ़ समुद्दं न रुक्के। जवै साह गोरी घुरासांन चुक्के ॥
फिरयौ एक लष्यं सलष्यं पवारं। मनो रोहियं रोह वाराह दारं ॥छं० ॥१४७॥
भग्यौ साहि गोरी विलं देषि मथ्यं। तवै हथ्यियं आनि पंम्मार सथ्यं ॥
रषत्तं षषत्तं चयं चथ्य सथ्यौ। भग्यौ साहि गोरी विवांनै न कथ्यौ ॥
इकं दीह चौहांन फल है प्रमानं। कुव्यौ रवि कैमास सुरतांन भानं ॥
छं० ॥ १४८ ॥

इस युद्ध में सलषराज के यश पाने का वर्णन, सुलतान का बांधा जाना।

कवित्त ॥ चामर छत्त रषत्त। तषत लुट्टे सघ कोई ॥
जस लद्धौ पामार। सेन सागर मथि जोई ॥
रतन कित्ति संग्रही। रक्ख आवू तन घोई ॥
चय गय दल बल मथिन। कित्ति फल लभ्भिय सोई ॥
बंध्यौ सुचंपि घुरसांन पति। रतिवाहै चालुक जितिय ॥
जै जया देव जंपन जसह। तव सुचंद कित्ती सजिय ॥ छं० ॥ १४९ ॥
दूहा ॥ जीति लियौ जय पत्ति रन। बर चतुरंगी मोरि ॥
पष्षर लष्ष सलष्ष हुअ। गौरी ढाल ढंढोरि ॥ छं० ॥ १५० ॥

सुलतान को जीतकर सलषराज का लूट मचाना॥

कवित्त ॥ जीत लियौ जैपत्त। चाह चतुरंग सु मोरी ॥
इक रूप पषर प्रमांन। ढाल गोरी ढंढोरी ॥

षांन सुरति परि षेत। षेत गोरी उप्पारी ॥
रिन ढुक्यौ चहुआंन। साह छोरी करि डारी ॥
बज्जे सुबीर बज्जन न्रपति। बहु लुट्टे सुरतान गै ॥
नीसांन षांन षुरसांन पति। चामर छत्त रषत्त मै ॥ छं० ॥ १५१ ॥

सुलतान की सेना का भागना, चौहान का पीछा करना, पृथ्वीराज की दोहाई फिरना ॥

दूहा ॥ मै भग्गा सुरतांन दल। लै लग्गा चहुआंन ॥
ताप तेज तुंगी नहनि। प्रथीराज फिरि आंन ॥ छं० ॥ १५२ ॥

पृथ्वीराज के जीत की जय जय कार मचना ॥

कवित्त ॥ कहि जित्त्यौ चहुआन। गहच्च गोरी दल भज्यौ ॥
कहि जित्यौ चहुआंन। हंस सीसह धर रंज्यौ ॥
कहि जित्यौ चहुआंन। चंद नागौर सुनंगे ॥
कहि जित्यौ चहुआंन। सत्त सामंत अभंगे ॥
जित्यौ सु सोम नंदन कहिय। सचिय सह सुर लोक हुय ॥
पामार पष्य सलष्य नह। धरनि काज धर पंक धुअ ॥ छं० ॥ १५३ ॥

पृथ्वीराज के सरदारों की वीरता की प्रशंसा ॥

छच धार सुविचांन। छच धारी लोचांनौ ॥
पच धार जो गिनिय। कुक्क लग्गिय चासानौ ॥
मंच धार पामार। सलष भंज्यौ मेक्कानौ ॥
जनु गुवाल गो डंड। सेन हंकिय सुरतानौ ॥
जित्यौ जुवांन चहुआंन रिन। मुरिग वैर वलिबंड वर ॥
धर गवरि नाच नंचिय रचसि। गह्यौ जाचि भंजे सुपल ॥ छं० ॥ १५४ ॥

पृथ्वीराज का जीतना, तेरह ख़ां सरदारों का पकड़ा जाना, सारुंडे का टूटना ॥

चरिल्ल ॥ जित्त्यौ वे जिता चौहानं। भग्गा सेन सन्या सुरतांनं ॥
तेरह षांन परे परमांनं। सारुंडै तोष्यौ तुरकानं ॥ छं० ॥ १५५ ॥

इधर शहाबुद्दीन को दंड देने, उधर कैमास का चालुक्यों को जीतने का वर्णन ॥

कवित्त ॥ साह डंड डंडयौ । मेछ मंद्यौ नागोरिय ॥
भट्टिय रा भटनेर । राव सिंघातन तोरिय ॥
जा रानी जग हथ्थ । मंडि मंडोवर पासह ॥
जै जै जै प्रथिराज । देव सद्देति अकासह ॥
आरज्ज लज्ज सुरतांन कहि । फिरि मिलांन दीनौ पुरं ॥
जो सथ कथ कैमास किय । चालुक्कां सोभ्भनि घरं ॥ छं० ॥ १५६ ॥

शाह के बांधने, भीमदेव के जीतने और इंछिनी के ब्याहने की प्रशंसा ॥

एक दीह इक घरिय । राज लद्धू वेलद्धा ॥
रत्तिवाह संजित्त । साह गोरी गहि बद्धा ॥
बर भीमंग नरिंद । षोदि कढ्ढौ कैमासं ॥
बर बज्जे नीसांन । राज जित्यौ रन भासं ॥
बर बंधि साहि गोरी गह्यौ । वर इछनि पानी ग्रहन ॥
नव दीह नवंमिय नेह नव । सुवर चंद बत्तां कहन ॥ छं० ॥१५७॥

सं० ११३६ के माघ सुदी में सुलतान को बांधना, माघ ब० ३ को इंच्छनी का पाणि ग्रहण करना, दंड लेकर सुलतान को छोड़ना और फिर खट्टूबन में शिकार को जाना ॥

ससिर सु मग्गह अंत । तीउ षट बीर समंभर ॥
ग्यारह सें परवीन । साहि बंध्यौ गोरिय बर ॥
माह प्रथम बर तीज । बीज रवि सप्तम थानं ॥
बर पांनिग्रह मंडि । सुबर इंछिनि चहुआनं ॥
मुक्कयौ साहि घन डंड लै । बर बाजें नीसांन घन ॥
आषेट फेरि मंडिय न्रपति । बन षट्टू कवि चंद भन ॥ छं० ॥ १५८ ॥

शुकी से शुक ने जो कथा चालुक्यों के जीतने की कही उसे सारूंडे में कविचन्द ने वर्णन किया ॥

दूहा ॥ सुकी सरस सुक उच्चरिय। प्रेम सहित आनंद ॥
चालुक्कां सोभाति सध्यौ। सारूंडैं में चंद ॥ छं० ॥ १५९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके सलष जुद्ध पाति साह ग्रहन नाम त्रयोदश प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १३ ॥

अथ इंछिनि व्याह कथा लिष्यते ॥

(चौदहवां समय)

शुकी के प्रश्न पर शुक का चालुक्य के जीतने, शहाबुद्दीन के बांधने और इच्छिनी के व्याह का वर्णन करने लगा ।

दूहा ॥ कहै सुकी सुक संभलौ । नींद न आवै मोहि ॥
रय निरर्शनिय चंद करि । कथ इक पूछैं तोहि ॥ छं० ॥ १ ॥
सुकी सरिस सुक उच्चयौ । धर्यौ नारि सिर चत्त[1] ॥
सयन संजोगिय संभरै । मन मैं मंडय चित्त ॥ छं० ॥ २ ॥
धन लद्धौ चालुक संध्यौ । वंध्यौ षेत पुरसांन ॥
इंछनि व्याहं इच्छ करि । कहौं सुनहि दै कांन ॥ छं० ॥ ३ ॥

शाह को दंड देकर छोड़ने पर राजा सलष ने पृथ्वीराज के यहां लग्न भेजा ।

मुक्कि साह पथिराइ करि । दंड दियौ सलषांनि ॥
लगन पठाइय विप्र करि । बर व्याहन पिथ्यांन ॥ छं० ॥ ४ ॥
पठयो प्रोहित भांन कर । कनक पच लिखि लग्न ॥
श्रीफल वहुल रत्तन जरि । पिथ्थि होन जिहि मग्न[2] ॥ छं० ॥ ५ ॥
कवित्त ॥ अबू वै अब्बू समथ्थि । सीम वंधी इच गुज्जिय ॥
पावारी इंछनिय । व्याह सोधन वर मज्जिय ॥
लच्छि ग्रेह कूवेर । अंत ग्रीषम दिन धारो ॥
परनि राज प्रथिराज । हथ्थ श्रीफल अधिकारो ॥
नर नाग देव गंधर्व गुन । गांन जांन[3] मोहैं सकल ॥
अकै उनंग लच्छन सहज । थांन नंधि वंधी विकल ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) को-सूंचित ।
(२) को-लग्न ।
(३) को-गान गान ।

पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इंछिनी का रूप नाम आदि पूछना।

दूहा ॥ प्रथु पुछ्छत बंभननि सुनि। कहौ बाल किन बेस ॥
कितक रुप गुन अग्गरी। सुनत मोहि अंदेस ॥ छं० ॥ ७ ॥

इंछिनी की सुन्दरता का वर्णन।

साटक ॥ बाले तन्नय मुग्ध मध्यन इमं लपनाय वै संधयं ॥
मुग्धे मध्यम स्यांम बांमनि इमं मध्यान्ह छाया पमं ॥
बालप्पन तन मध्य जोवन इमं सरसी अवग्गी जलं ॥
अंगं प्रद्धि सुनीर जे मल रसी सुभ्भै सुसैसव इमं ॥ छं० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ अति सुरंग वय स्यांम। संधि वय संधि जुरिय वर ॥
ज्यों दंपति चय सेव। पंथ जोगिंद मिलत गुर ॥
नयन मयन आरुहिन। धरहौ आरुहन थांन दिन ॥
कंकु कज्जल अंकुरिय। करिन आवें पें लज्ज मन ॥
ज्यों करकादि निसा मकरादि दिन। करक आदि सै सब सुगुर ॥
मकरादि बाल जोवन उदिन। काम धुरा लीनी सुधुर ॥ छं० ॥ ९ ॥

दूहा ॥ स्यांम सु बांम अनंग भय। घटी न घटि किसोर ॥
बालप्पन बैबेस तन। मनों अरै घन चोर ॥ छं० ॥ १० ॥

कवित्त ॥ षट चच्छी बहु देस। रतन गुर पाट पटंबर ॥
पीत रत्त गुन सेत। स्यांम नग सुन गति अंमर ॥
सो मंगी चालुक। सोइ[1] दीनी प्रथिराजं ॥
मनु इंद्र बधू सचीव। कांम बंधी चढि पाजं ॥
बर बरनि राज संभर धनी। सुफल बंधि फल संग्रहिय ॥
इंछनि अवाज आवाज क्रम। अदिन भंजि के दिन सजिय ॥ छं० ॥११॥

साटक ॥ नां पतनी नल राज राजन बधू दमयंति नो इंद्रयं ॥
नां सचीव सुनाथ नायक धरं लच्छीन धरया धरं ॥
नां रत्ती मनमथ्थ रत्ति कलया मंदोदरी रावनं ॥
सोयं सा प्रथिराज इंछिनि बरं समयौ न लभ्भै कवींद्रैः ॥ छं० ॥ १२ ॥

(१) इ०-खाद।

पृथ्वीराज का व्याहने के लिये यात्रा करना।

दूहा ॥ नि।च सुंदरि व्याहन न्रपति । रिति ग्रीषम दिन संधि ॥
चल्यौ सूर संभरि धनिय । सुष संचन पल बंधि ॥ छं॰ ॥ १३ ॥
धर अंबर तर जलध बल । कहुं न सूर तप सीत ।
अगम पंथ नर घरनि सुष । विलसत दंपति मीत ॥ छं॰ ॥ १४ ॥

साटक ॥ पंथं दुस्तर वाय मुकुलितसरं[१] ज्वाला दूला दुस्सहा ॥
कीलायां घन क्रयन यांइ सुथनं नर्जीव शब्दं धरा ॥
आवर्त्तं वर नत्त मित्त करनी भ्रमाय विदिसा दिसा ॥
सरनं मरनय पंथ ग्रीषम पथं सुष्यं ग्रहं प्राणिनां ॥ छं॰ ॥ १५ ॥

दूहा ॥ प्रानी पंथ न सुष्य जल । मरन सुनिश्चय मांन ॥
दीह उदय दिसि सुदय भय । सुरति स्वयंवर ठांनि ॥ छं॰ ॥ १६ ॥

पृथ्वीराज के साथ सामंतों का वर्णन।

कवित्त ॥ सथ्थ कन्ह चहुआंन । सथ्थि निड्डुर रघि राजं ॥
सथ्थ सोम सामंत । अल्ह पल्हन प्रनि साजं ॥
बलिय गरूअ गहिलौत । बलिय भींहा वर सिंघ नर ॥
दाहिमौ कैमास सथ्थ । सूरौ चावंड गुर ॥
मति भद्र मंति साधन सकल । चौहांनौ स्वांमित्त धुर ॥
चतुरंग सूर वय रूप गुन । लिए राज राजान गुर ॥ छं॰ ॥ १७ ॥

पृथ्वीराज की बारात की शोभा वर्णन।

छंदपद्धरी ॥ चढि चल्यौ राज प्रथिराज राज । रति भवन गवन मनमथ्थ साज ॥
सिर पहुप पटलं बहुसा बवास । अवर्त्तंव रचिय अलि सुर सुरास ॥
सुष सोभ जलज कंद्रप किसोर । दीजै सु चाज लप कोंन जोर ॥
चिंति काम बीर रजि अंग चौर । संकल्यौ जान मनमथ्थ जोर ॥
जिम जिमनि लाज अह चढन दीह । लज्जा सुजांनि संकलिय सीह ॥

(१) हं॰ को॰—सरं।

जिम जिम सुनंत न्रप श्रवन बत्त। तिम तिम हुअंत रस काम रत्त॥
मधु मधुर बेन मधुरी कुंआरि। रति रचिय जांनि सेसवं सवारि॥
॥ छं० ॥ १८ ॥

स्लोक॥ साय दीपसमो दिष्टे। जैति जैति विजै जितं॥
देवासुर मनुष्यानां। काले केक न गच्छति॥ छं० ॥ १९ ॥

कवित्त॥ कौन काल बसि पत्थौ। काल ग्रह कौन न बंध्यौ॥
कोन काल जित्तयौ। काल किहि घाइ न संध्यौ॥
मठ विहार वापीन। विरष सुर थावर जंगम॥
सुवर राज रार्जिद। कौन दिष्यौ न अभंगम॥
ज्यों बंधयौ साधि गोरी सुबर। मरन तिनं कलि नंतरौ॥
इंछनिय इच्छ इच्छा सुफल। सुबर बीर बीरह जयौ॥ छं० ॥ २० ॥

साटक॥ बीरं जा वर बीर भीमति वरं कामं तनं उब्भया॥
पंथे बानति वान मानति वरं कुरंनंद केवं कुहू॥
धाता मानय बीर वामन वलिं पुरीरवा अर्थयं॥
तू पत्नी प्रथिराज कालति रई कालं जसं वर्नते॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज को आते हुए सुनकर सलषराज का धूमधाम से अगवानी करना॥

कवित्त॥ सुनि आवत चहुआंन। करिय अग्गौन सलष वर॥
चय गय लष्षि सुअष्षि। आदि उम्मषिय राज दर॥
पट अंबर सजराव। जैव नंगन जगमग्गिय॥
फुल्लिय मानहु संझि। चित्त चकचौंधिय लग्गिय॥
चहुआंन रत्त तोरन समय। लगन गोधूरक संधयौ॥
जांनै कि अर्क राका दिवस। इक्क थांन उगि बंधयौ॥ छं० ॥ २२ ॥

दोनो राजाओं की सेना के मिलने की शोभा का वर्णन।

जिम सावन भाद्रव सिंधु। घुमरि घन घटा मिलत हुअ॥
जनु समुद्र अरु गंग। उमडि मिलि दुहुंन सोभ हुअ॥
जनु सुर अरु सुक्र। सिंगि रिषि गननि गगन मिलि॥
जनुं दधि मथि सुर असुर। करन मधुपांन षिभिर ठिलि॥

तिम संमरेस भ्रब्बूधनी। श्रनी वनी रस विरस भरि॥
नग जोति जरकस दीप दुति। नहीं श्रवन बाजंव करि॥ छं०॥ २३॥

सलषराज की प्रशंसा।

पंच चक्ति मद वहि गिरंद। गरुग्र गरजंत मेघ जनु॥
तुरी वीस श्रैराक। तेज तन श्रगिन पवन मनु॥
जर कंमर जंनेव। चष्य संकर नग मंडिन॥
रुत्त सुषम पर काल। हेम तं तन तन छंडिन॥
धारोठि विवह वक्लच समझि। सच चक्रत पिष्पन रचिय॥
विवहार विवुध जेतिग गिनत। सलष किति जानन कविय॥ छं०॥२४॥

तोरन आदि बांधकर, कलस धरकर, मोती के अक्षत छिड़क कर मंगलाचार होना।

दूहा॥ तोरन कर वर वंद तव। मुत्तिय श्रच्छित डारि॥
मनौं चंद चिय मेघ घरि। श्रच्छित श्रच्छ उछार॥ छं०॥ २५॥

साटक॥ वंदे विंद कलस्स तोरन बरं तुंगे रसं मन्मथं।
सुष्षं साजति सक्र चक्रति कला निग्राह नु ग्राहनी॥
जां निव्वै चैलोक उम्भति पुरे बंदे कवी उष्पमे।
दुश्च पासं दुश्च नारि दिष्पन वरं मनो नैर वर दिष्पयं॥ छं०॥ १६॥

नगर में स्त्रियों का बारात की शोभा देखना।

कवित्त॥ नृपति काज श्रति दिर्घाघ। श्रति दिष्पत नर नारिय॥
जनु मिलतराज प्रथिराज। नयर त्रिय बांध पसारिय॥
जनु बन्दी गुर देव। संत्ति लाषा चाषा हुश्र॥
जै जै जै उच्चार। राज रवनी रंजत हुश्र॥
पंमार सलष बंदन बलिय। दिष्षि कला मनमथ्य पिय॥
दिष्षै सुचिया दुरि दुरि नयन। मनहु तरंग कि काम तिय॥छं०॥२७॥

छंद पद्धरी चित काम बीर रक्षियं जोर। संकुच्यौ जांनि मनमथ्थ जोर॥
दुरि दिषैं बाल श्रीनेति वस्त्र। उपमांन चंद जंपंत तत्र॥
जाने कि जार परि मध्य मीन। पुच्छै कि दीप भोदल प्रवीन॥
इक करन पलटि इक करन संत। घुंघट बदल खज्जा सुमंत॥छं० २८॥

घुंमरिय रैंन जनु वद्दल ओट। उभ्भकंत चंद जनु भांनि कोट॥
कर उंच बाल भ्रच्छित उछारि। जनु कमल वाइ वसि श्रोस भार॥
गावंत गान बहु विधि सवारि। कलयंठ कंठ जनु रति धमारि॥
मुरुकंत चाल दिषियै विसाल। विकसंत कमल जनु चंद नाल॥
तनु श्रेंठि सेंठि भेंचै कि बाल। न्हरक्कौ मेन जग बधी ब्याल॥२९॥छं०॥

सुहासिनी स्त्रियों का कलश लेकर द्वार पर आरती उतारना।

दूहा॥ कलस बंदि सुभगा सिरह। मद्धुरं मंडि सय मेलि॥
बहुरि सुहाग सुवासिनी। वई कांम रस बेलि॥ छं०॥ ३०॥
कनक थार आरति उदित। सुभग सुवासिनि लाइ॥
जनु कि जोति तम घर परह। नव ग्रह करत वधाइ॥ छं०॥ ३१॥
मद्धुर पंच सें थार धरि। दुति दूलह जिय जांनि॥
कांम कसाए लोइननि। चन्यौ मदन सर तांनि॥ छं०॥ ३२॥

सलष की रानी का दूलह की शोभा देख प्रसन्न होना।

सषिन ओट सलषह घरह। दूलह दुति हग देषि॥
कोटि काम छवि पिष्षि पिय। जनम सफल करि लेषि॥ छं०॥ ३३॥

स्त्रियों का महल में जाना और बारात का जनवांसे में आना।

मच्चल झुंड महलनि बहुरि। जनवासह जुरि जांनि॥
सोभि साम सामंत सह। जनु विंटन ससि भांनि॥ छं०॥ ३४॥

जनवांसे की तयारी का वर्णन।

छंद पद्धरी॥ बहुरी बरात जनवास थांन। छवि सोभ सुवन भुवभंति भांन॥
संग सुभट थाट सामंत सूर। बलवंत भंत दिषियै करूर॥
अंग अंग अंग उल्हास आस। जनु लच्छि लाह सोभा प्रकास॥
सत घन अवास साला सुरंग। सुभथांन जैत आवू दुरंग॥ छं०॥ ३५॥
जालीन गोष सोभा न पार। रवि सोम क्रांति कनन प्रसार॥
पंच रंग ब्रंन चित्तन सुवेस। बहु गरथ रूप मंडित सुदेस॥
रेसंम गिलम दुल्लीच मंडि। तिन जोति हीति दुति चित्त षंडि॥छं०॥३६॥

द्वादसह सेज विछाय संचि । तिन ढिग्ग ग्रूढ गादीय संचि ॥
प्रति सेज सेज फूलन अमार । तिन सोभ गंध रग रंग पार ॥
इक लाष पांन बीरा बनाइ घनसार मद्धि बीरन लगाइ ॥
कुंम कुसन कुंभ जहं तहं कुटंत । बातीन अगर धूपन लुटंत ॥
कर्द्दमन जथ्थ मचि कीच भूमि । नाना सुरंग रचि गंध भूमि ॥
मस्साल द्वीप प्रज्जरि फुलेल । केतकी करन बेली गुलेल ॥
जड़त कपूर पवनं पयांनि । तिन सरस गंधि सक्कि न बर्षान ॥
सुरंत कांति सोभा बिसाल । सोभंत जुरे तहं अब भुआल ॥ छं० ॥ ३८ ॥
प्रथिराज कुंअर कुअरन नरिंद । धरि भूप रूप अवतार इंद ॥
मनु कांम रूप रति रमन चित्त । अस्थिनि कुमार ससि सोभ मित्त ॥
नग कनक मंडि बासन विचित्त । ससि सूर सोम सुभ सज्जि छत्र ॥
वर विप्र अप्प गज गाह वारि। जनु सोम उभय आरति उतारि॥छं०॥३९॥
आसंन अस्स प्रथिराज आइ । तहां पंच सबद बाजे बजाइ ॥
संग एक कुंअर जल पान धार । ग्रौढी न रुक्कि सामंत भार ॥
गुर राम चंद कवि ढिग्ग आई । परधान कन्ह काइथ अनाई ॥
पुनि कंम्ह काक गोइंद राइ । परिपुन्न क्रोध के लगन आइ ॥ छं० ॥ ४० ॥
पुंडीर धीर पावस्स संग । दाहिंम दूव जम जोर जंग ॥
जैतसी सलष लष्षनह सिंघ । छिति छत्र भ्रंम जे द्रुष्टि रंघ ॥
बलिभद्र सिंघ कूरंभ राइ । अनि नांम सूर कित्तक गिनाइ ॥
प्रथिराज इंद दिक्पाल सूर । अँग अंग वद्दि सब जोति नूर ॥ छं० ॥ ४१ ॥
दूहा ॥ गवष जाल मद्दलनि मद्दल । फिरे चाह मन सर्व ॥
सोभ सोभ चंतन लच्छी । दिष्षत भग्गत[१] गर्व ॥ छं० ॥ ४२ ॥
मद्दलनि सालनि मद्दलमंडि । द्वासी सालनि गांन ॥
मंडप मंडित बेद धुनि । सुभटन सोभ समांन ॥ छं० ॥ ४३ ॥
जहां तहां आनँद उमग । अनँग उछाह अनंत ॥
बंस छत्तीस छत्तीन कुल । भाट बिरद भनंत ॥ छं० ॥ ४४ ॥

(१) को० कृ०—भग्गे ।

छंद मोतीदाम ॥ गहने नग जोतिन चीरन लाल। पटंमर पूर अरप्पिय आल ॥
मनि मांनिक मोतिन चीरनि चार। भगीरथ भंत हिमग्गिरि धार ॥
रितं रित भूषन भांति अनेक। धरे धन पंनिय आनि धनेक ॥
रंग रंग वारनि वारनि वार। धरे नवला नव भूषन भार ॥
तिते सब संचि सवारिस ओप। अलंमल भ्राजन ढाखन नोप ॥
सकुंकम कूपन वंदिन पोति। सुहाग सुमंगल अष्ट न होत ॥ छं०॥४५॥

दूहा ॥ अष्ट मंगलिक अष्ट सिध। नवनिध रत्न अपार ॥
पाटंवर चंमर वसन। दिवस न सुभ्भचि तार ॥ छं० ॥ ४६ ॥

जनवासे में भोजन का नेवता देकर सलषराज का लैाटना ॥

फिरिय चार करि फिरिय सब। भोजन कारन बोहि ॥
भाव भगति आदर अमित। देव पूजि सम तोहि ॥ छं० ॥ ४७ ॥

इच्छिनी का शृंगार आरंभ होना, शृंगार वर्णन ॥

जनवासें पधराइ वर। धरी सिंगार अरंभ ॥
जुरि जुब्बन सुर सुंदरी। जे रस जांनत डिंभ ॥ छं० ॥ ४८ ॥

छंद चोटक ॥ बिन बक्कर अंग सुरंग रसी। सुहची जनुलाष मर्दन कसी।
लव लोल इ लोइ उवट्टनकों। कि बच्यो मनु कांम सुपट्टन कों ॥
द्रिग फुल्लिय कांम विरांमन कें। उघरे मकरंद उदै दिन कें ॥
बिन कंचुकि अंग सुरंग घरी। सुकली जनु चंपक हेम भरी ॥ छं०॥ ४९॥
सुभई छट चंचल नीर भरी। तिनकी उपमा कवि दिव्य धरी ॥
तिन सों लगि कें जल बूंद ढरै। सुकटै मनु तारक राह करै ॥
जु कछू उपमा उपजो दुसरी। मनों माटय ज्यांम सुमुत्ति धरी॥
अति चंचल ह्वै बिकुटै सुधतें। मनों राह ससी सिसुता बधतें ॥ छं०॥ ५०॥
सुमनें सति स्नान अतुच्छ इयं। तिनकी उपमा बरनी न हियं ॥
कबहूं गहि छुक्त सिधंड वरें। मनों नंवल केसन सिंद सरें ॥
जु सितं सित नीर लिलाट धसें। सुमनें भिदि सोमहि गंग लसैं ॥
जल में भिजि भूंह कला दुसरी। सु लरै मनु बाल अलीन धरी ॥
बुधि चित्त उपंम किनीक कहो। जिन दाट अभै व्रत बेद लहो ॥ छं० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ मयनि मत्त अस्नान करि । सुभ दंपति दिन सोधि ॥
चाहुआंन इंछिनि वरन । मयन रीति अवरोधि ॥ छं० ॥ ५२ ॥
करि मंजन अंगोछि तन । धूप वासि बहु अंग ॥
मनो देह जनु नेह फुनि । हेम मोज जनु गंग ॥ छं० ॥ ५३ ॥
नम्र चंपक कुंदन मनों । के केसर रंग जुत्ति ॥
पीय वास छवि कीन त्रिय । और कीन सव जुत्ति ॥ छं० ॥ ५४ ॥
अंग अंग आनंद उमगि । उफनत नैनन मांझ ॥
सखी सोभ सब बनि भई । मनों कि फूली सांझ ॥ छं० ॥ ५५ ॥
निरखन नागिनि बनि भई । किंनर जथ्य कितेक ॥
सब सोभा ससि सांमि कौं । सांची इंछिनि एक ॥ छं० ॥ ५६ ॥
प्रात माघ अस्नान किय । गज गंजे घन घाइ ॥
विस्वनाथ सेए सदा । प्रथीराज तो पाइ ॥ छं० ॥ ५७ ॥

कवित्त ॥ कमल भाल जनु बाल । मकर कर मंडि इंछनिय ॥
निरषि नैंन प्रतिबिंब । करषि निवछार निछिनिय ॥
प्रमुदित अगनि अनंग । कोक कूकन उच्चारत ॥
एक रमन रस रंग । बात बातन सुचारत ॥
गंध अर बस्त्र गवने करनि । चास भास मंडीर रिय ।
तिन मध्य पधारी पिष्षिये । जनु विधिना अप्पन घरिय ॥ छं० ॥ ५८ ॥
स्रवननि लगत कटाच्छ । जनु पवन दीपक चंदोलित ॥
मुसकनि विकसत फूल । मधुर वरसति मुष बोलति ॥
इठलनि अलसति लसति । सुरति सागर उहारति ॥
रति रंभा गिरजादि । पिष्षि तां तन मन वारति ॥
तिह अंग अंग छवि उक्ति बहु । छंद बंध चंदह कहिय ॥
जीरंन जुग्ग मधि अजर हुच । कछू एक कीरति रहिय ॥ छं० ॥ ५९ ॥
कमल विमल लज्जा सुगंध । बाल विस भाल लाल उर ॥
भूषन सोभ सुभंत । मनों सिंगार सुचिर धर ॥
अलप जलप रति मंद । चंद बालनि कुल तालनि ॥

से। ढुंक्किनि पासार। राज छडिय अति सारनि ॥
सत च्यारि वरष बरनि सुंदरिय। सुर विसाल गावत गरज ॥
चहुंआंन सुअन सोमेस कचि। विधि सगपन सांई अरज ॥ छं॰ ॥ ६० ॥

छंद मोतीदाम ॥ सजे षट दून अभूषन बाल। मनैां रति माल विसालनि लाल ॥
घस्यैा तन वस्त्र सुकोर कुआर। मंडी जनु सिंभ मनंमथ रारि॥ छं॰ ॥ ६१॥

छंद कंठाभूषन॥ इक गावची रस सरस रस भरि विमल सुंदर राजही ॥
मनैां ग्रंद उडगन राति राका सोम पंति विराजही ॥
इक ल्हित रंगन कांम अंगन अजस लज्जा कि सुंदरी ॥
मनैां दीप दीपक माल बालय राज राजन उचरी ॥ छं॰ ॥ ६२ ॥

सुभ सरल बांनिय मधुर ठांनिय चित्त भंजय जोगयं ॥
द्रिग निरषि निरषि कटाच्छ लग्गहि मुक्त रंभन भोगयं ॥
अलि रूप नयनं मनहु बयनं चलिहि निष्य कटाख्ययं ॥
कुट्टंन निकरहि वार पारह करत तक्कि ननच्छयं ॥ छं॰ ॥ ६३ ॥

ब्राह्मण लोग विवाह की विधि करने लगे।

कवित्त ॥ विधि विवाह दुज करिय। करिय तन अंग वाम जन ॥
निरषि नयन मुष कंति। भयैा रोमंच सब्ब तन ॥
फुल्लिग नयन मुष वयन। भयैा आरुढ कांम मन ॥
चित्त बसीकरन समह। भयैा आनंद सब्ब तन ॥
अभिलाष मिलन चित ल्हिलन मन। काकविंद कवितह करै।
प्रथमह समागम मिलन कैां। बहुत अडंबर विस्तरै ॥ छं॰ ॥ ६४ ॥

दूहा ॥ सोंधा सुगँध घन डंमरी। सुमन सुदिष्ट पसार ॥
धूप अडंमर धुंधरिय। अल मल जल समढार ॥ छं॰ ६५ ॥

पृथ्वीराज के रहने के जो बाग़ सजा गया था उसकी शोभा का वर्णन।

छंद पद्धरी॥ बरबग्ग मग्ग चिहुं दिसा दिष्षि। जहां तहांति सुमन अति बैठि पिष्षि॥
कच मग्ग भूमि चिहुकोद गसि। नारिंग सुमन दारिम विगसि ॥

प्रतिबिंब तास दिषिय सरूप । उपमं एम जंपै अनूप ॥
नव बधू अंग नवजल प्रवेस । मुसकांत दंत दिष्षिय सुदेस ॥ छं० ॥ ६६ ॥
प्रतिबिंब चंप देषे फुल्लीन । दीपक्क माल मनमथ्थ दीन ॥
उप्पंम और उर एक लग्गि । संजीव मूरि जनु जोति जग्गि ॥
चल चल्लै लता कछु मंद वाय । नव बधू केलि भयकांक पाय ॥
उपमां उर कवि कहीय तांम । कुव्वन तुरंग अगि जोगि कांम ॥ छं० ॥ ६७ ॥
पाटीन दिष्षि चकचौंधि होइ । सषिपरछ उट्ठि घन घटा दोइ ॥
सुभ माग सरल सूधी सुवानि । सषि भ्रम्म चली घन केकि जांनि ॥
फुल्ले सुगंध के बरनि फूल । देषंत बग्ग पावस्स भूल ॥
घन घर अनंद अग्गें निसब्ब । जनु रंक द्रुच्छ पासै सुदब्ब ॥ छं० ॥ ६८ ॥
नल नलिनी नीरू चष्ष बचनि उद्धि । घरधार गंग जनु उठिरबुद्धि ॥
विट विटनि बेलि झुलि बेल फूलि । जनु काम ग्रह बाग तर छच भूलि ॥
कद्दलीन पत्र हलि पवन जोर । जनु करत पषा न्रप पिथ्थ ओर ।
कलरव करंत दुजनेक थांन । संगीत कांम चट सार गांन ॥
निरषंन केक केकीन संग । पावस्स जानि गिर रमत रंग ॥ छं० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ नंदन वनं बैकुंठ जनु । इंद्र लोग सुर बाग ॥
　　ब्रंदावन भूलोग जनु । सोभा सुभग सुभाग ॥ छं० ॥ ७० ॥

गाथा ॥ लिषि थांनं रजि राजं । उत्तरियं बीर सा साजं ॥
　　सब संबल बिथानं । जांनं पुद्धायइं बीजयौ चंदं ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ को इंद्रो गुर राज । भांन सत्तम अधिकारी ॥
　　भांन नवम प्रथिराज । राव दुष्टम अधिकारी ॥
　　बर बज्जी नीसांन । बंदि लीनं नृप राजं ॥
　　प्रीय पिया चित बंधि । सोइ इंछिनि बर पाजं ॥
　　पियांच तान अरु बाल सह । उचरैं मुष इंछिनि सुनचि ॥
　　घनि घनि गवरि पूजा लच्छौ । सुघर सुघर सुंदरि समचि ॥ छं० ॥ ७२ ॥
　　ब्रह्म बेद सहइय । अग्गि होतय बर राजय ॥
　　स्वाहा अगनि बिवाह । रत्ति कामंच गुन गाजय ॥
　　दुचिति नाम दुहुरिष्षि । दुहुनि परइं दुहुं गोती ॥

राजं गुरु उच्चरै । लग्ग चहुआंन सकोतौ ॥
अनेक भाव दिष्षहि सुदिव । दिव दिवांन दुंदुभि वजइ ॥
प्रथिराज राज राजन सुवर । तिचित लषै रतिपति लजइ ॥ छं० ॥ ७३ ॥
कुंदन ओपति अंग । मंग जनु चंद किरनि थिर ॥
वैनी सुभग भुजंग । फूल मनि सीस मीस थिर ॥
पट्टिय घुंटित लैंन । तिमिर कज्जल छवि छीनिय ॥
भुअजुग गोस धनुष्ष । वदन राका रुचि भीनिय ॥
सुक नास नैंन फूले कमल । कंवु कंठ कोकिल कलक ॥
दुलह सुचित्त फंदन मनहु । फंद मंडि रष्पिय अलक ॥ छं० ॥ ७४ ॥

ब्राह्मणों का मंडप स्थापन करना ।

दूहा ॥ फुनि पंडित मंडप मंडियं । वेद पाठ आधार ॥
षट करमी सरमी प्रनिष । गुर संगह गुर भार ॥ छं० ॥ ७५ ॥

दूलह का मंडप में आना ।

तिन दूलह मंडप बुलिय । चम सत घमस निसांन ॥
जनु वद्दल अज्ञ किस पर । सुरपति बहुरि रिसांन ॥ छं० ॥ ७६ ॥
देषि लोभ प्रथिराज चिय । वारत राई नौंन ॥
चषे चास मुष चष उदित । जनु कमल विकस रवि भौंन ॥ छं० ॥ ७७ ॥
कवित्त ॥ देसन देस नरेस । भेस अमरेस अमर भति ॥
सील सत्त गुनवंत । दांन षग कहन कोंन मति ॥
जरकस पसम जराउ । गंध रस सरस अमीवर ॥
तेजवंत उद्दार । वडम विवाहर ग्रंथ भर ॥
मंडप्प जांन दुंघ दिषि मिलत । चास तर्क जात न गन्यौ ॥
दीपति नगनि निसि दीह भय । वर दाई दिव वर मन्यौ ॥ छं० ॥ ७८ ॥

स्त्रियों का दूलह की शोभा देख मग्न होना ।

दूहा ॥ लाल अटा जालिन गवष । रष्षत नव रनिवास ॥
छच छाह छवि छरत जित । भमर मत्त रस वास ॥ छं० ॥ ७९ ॥

नग मोती गहने अगन । गिरत न सुद्धि सम्हार ॥
कांम लहरि छवि छोन उठि । दुनि दरियाव वेपार ॥ छं० ॥ ८० ॥

स्त्रियों का मंगल गीत और गाली गाना ।

मंगल गावन झुंमकनि । कोकिल कंठी नारि ॥
सुघर पुरुष जोवन छके । सुनहि सुहाई गारि ॥ छं० ॥ ८१ ॥

दूलह दुलहिन का पट्टे पर बैठकर गंठ जोड़ा होकर गणेश पूजन करना ।

पटां वैठि पट गंठि गुह । पूजे प्रथम गनेस ।
दुव कुल वारि विचार कर । व्याही वांम नरेस ॥ छं० ॥ ८२ ॥

नवग्रह, कुलदेवता, अग्नि, ब्राह्मण, की पूजा कर शाखोच्चार होना ।

ग्रहन पूजि ग्रहदेव पुजि । पूजि अगनि दुज देव ॥
सापोचार उचार धुनि । प्रसन भए नृप वेव ॥ छं० ॥ ८३ ॥
चंद सूर तहां साषि दिय । वन्द वाहन वुध वाद ॥
प्रोहित गुर उपदेस करि । वांम अंग तव आइ ॥ छं० ॥ ८४ ॥

ब्राह्मणों का आशीर्वाद के मंत्र पढ़ना ।

पढि संकलप विकलप तजि । भजि भगवति भगवंत ॥
तम सु याइ परसाद करि । चिर जिऔ इंछिन कंत ॥ छं० ॥ ८५ ॥

सलषराज का कन्या दान देकर विनय करना ।

अव्वूपति पट गंठि चिय । विनय जोरि कर कीन ॥
इह कन्या नृप सोम सुत । दासपंन पन दीन ॥ छं० ॥ ८६ ॥

कान्ह चौहान का कहना कि जैसे शिव के साथ गौरी है वैसे ही यह होगी ।

कही कन्ह तब जैत सम । मंडन संभरि ग्रेह ॥
ज्यों गवरी सिव वच्छि प्रभु । त्यौं तन बाढौ नेह ॥ छं० ॥ ८७ ॥

लग्न साधकर तब राजा का ज्योनार करना ।

लगन साधि आराधि नृप । पुनि ज्यौनारि जिवाइ ॥
छ रस अंन अंतन लचैं । कों कवि कहै बनाइ ॥ छं० ॥ ८८ ॥

ज्योनार के पकवानों का वर्णन ।

अगनि पक घृत पक कर । दूध पक बेपार ॥
नेल पक लषियै नचीं । जहं तहं लूट अमार ॥ छं० ॥ ८९ ॥

छंद भुजंगी ॥ रचस्सं रचस्सं अनेकंन भंती । घनं जोति मिष्टांन पानं प्रभंती ॥
उडंदं पुडंदं गुडंदंति मासं । किते अंन प्रंनं किते षीर भासं ॥
किते स्वाद स्वादं प्रथी देव वंछै । तहां कोवलं ग्रंनि आवर्त्त गंछै ॥
मरे एक वारं षितं षंड मद्धी । दिषे स्वाद राजं चषै देव वंधी ॥छं०९०॥
घनं अंमरं डंमरं दिसि प्रमानं । उठै जप तीनी सुगंधं निधानं ॥
अँगं अंग अंगं सलुप्पन नारी । महा लालचै काम वसु भी निनारी ॥
चथं लेष राजं सुदंपत्ति बंधे । मनों मिस्स अग्गें गुरं चित्त संधे ॥
बधें अंचलं संचलं इन प्रकारं । मनों बंधियै मींन मनमथ्थ धारं ॥छं०॥९१॥
लियौ हथ्थ राजं चिया हथ्थ सोचै । मनों पैसि सत पच कंमोद सोचै ॥
जनं अंग अंबं बरं मालधारी । मनों काम अग्गं जु विद्या पसारो ॥
छिनं छित्त राजै नरं नाह नारी । मनों जीवनं काम लज्जी उघारी॥छं०॥९२॥
परं पुव्व कथ्थं कथी कव्वि चंदं । रची लजि मनों रत्ति फिरि दहन चंदं ॥
दियै तिलक दद्धि अक्षि अक्षत सारे । मनों उग्गि अंकूर सुष सेन भारे ॥
दियै कंकनं हथ्थ षट्टुआंन राजै । मनों रत्ति बंध्यौ दई काप काजै ॥
रचै एक ग्रेहं घरी अद्ध भारे । तहां वेद मंषं दुजं जा उचारे ॥ छं० ॥ ९३ ॥

कवित्त ॥ सुभत बीर तन तांम । बाल राजै दिसि बामं ॥
मनहु मुत्ति पचिचांन । रत्ति बंधी कर कांमं ॥
अति सोभा सोभई । चंद ओपम तहं वर वर ॥
मनों मकर मकरेस । आय चंपाई अप्प घर ॥
सज्जे सुरत्ति मनमथ्थ वर । कै इंद्रानी इंद्र परि ॥
संपति लच्छ लच्छिय सुवर । संपति तन सज्जोड वर ॥ छं० ॥ ९४ ॥

दूहा ॥ बर सोभे बर राजपति। लिय दच्छिन छत बांम ॥
मनों व्याह पूरन करै। सुम्रित बीरतम घांम ॥ छं० ॥ ८५ ॥

पृथ्वीराज के विवाह का वर्णन कविचन्द अपनी सामर्थ्य से बाहर बतलाता है।

परनि बीर प्रथिराज बर। बहुत कहै रस जोइ ॥
कवि धर बरनत नां बनै। बर भूषन तिन गोइ ॥ छं० ॥ ८६ ॥

नव दुलहिन की शोभा का वर्णन।

छंद पद्धरी ॥ लज्यांति मांन गुन ग्रब कटाछ। अल पचनि जलप सुलपच सुलाछ ॥
भोंर भर अभय भय सील नील। सरसात पिंम रस पिंम चील ॥
गुंजंत ग्रांम सोभित कुआंरि। निघि घरन घरनि मनमथ्थ रारि ॥
तन सान निलंबनि नहं प्रमान। बर घरैं बरनि पिय लटि प्रमान ॥
सित आसित सुहत कटाछ बाल। भ्रृंगार मध्य भूषन रसाल ॥
रस हास मध्य भ्रृंगार होइ। संकर सुभाग उप्पनै सोइ ॥ छं० ॥ ८७ ॥

साटक ॥ कामं जा गढीइ लज्ज गढने भय ग्रस्त भय कोटकं ॥
घू घट्ट पंद डोढि वानति बले जधी सुकागछ रसे ॥
जानि जात न जासि जोगिन बरं भंजे मनं विस्रमं ॥
नां दीसंत गता गतेस सैनं द्रग्गं चलं निस्चलं ॥ छं० ॥ ८८ ॥

छंदचोटक ॥ बरनं गुरु अच्छिर अंनि पयौ। इति तोटक छंदय नाग गयौ ॥
श्रिय नाग सुबद्दिय बाचनयं। पग पत्ति विपत्ति सुगाचनयं ॥
बरनं बरनं बरनीन कथं। सु चव्या जनु मेष प्रथंम रथं ॥
प्रग अंचल पंचल बाल ढंके। तिचि कांम बिरामन बांन थके ॥छं०९९॥
नव बास सुनूपुर सद्द गुरं। न्रप आगम जाइ बधाइ धरं ॥
गज ज्यौं मनमत्त जंजीर जरी। क्रम निठुन निठ्ठय पाइ भरी ॥
दस पंच सषी न्रप पास गई। ति मनों सुष श्रीफल हाथ दई ॥
करुना तिमुषी रस भौर सता। अम भौ अभिलाष ह ग्रब्ब जिता छं०॥१००॥
न्रप पुठ्ठ मुषं अवलोक करै। सु मनो धन रंक विलोकि गुरै ॥

नि कंही न बनै कविचंद कथा। सु लजै रसना अरु बीर जथा ॥
सुकलूक कहौं दिठि कांम क्रमं। सुमनो मनता बरनी न स्रमं॥ छं० १०१॥

प्रथम समागम का वर्णन।

दूहा ॥ औन सैंन रति सैंन सुय। प्रथम समागम षाल ॥
नेह देह दुअ एक हुअ। परे प्रेम रस जाल ॥ छं० ॥ १०२ ॥

गाथा ॥ दूत्तं सुष्ष गनिज्जै। लज्जीजै जोहयौ कव्वी ॥
ज्यों वारिज विपनं मझ्झं। सुझ्झै ना यहि गहआयं ॥ छं० ॥ १०३ ॥
झूलं वर मकरंदं। विजी पुर षाई सुंदरी वीयं ॥
मालचि दंपंति वासं। चाहुआनं धीरयौ पत्ती ॥ छं० ॥ १०४ ॥
जंभ्रम भ्रमैति चित्तं। आवै नठ्ठेय ग्यांनयं चितयं ॥
जंभ्रमि भ्रमि सह रूपं। अवलोकं इक्कनी करियं ॥ छं० ॥ १०५ ॥
इक्क जगी विस षाले। काम भयंक षयौ द्रिगयं ॥
जानिज्जै गम सैसं। नैंनायं जोग व सनायं ॥ छं० ॥ १०६ ॥
उभ्भर उरोजनि सद्दे। बुद्धी बालाय दिठ्ठयौ नैंनं ॥
कुच तुक्क अंकुर उट्टे। मनों प्रीतम विभाव दीयौ चढयं ॥ छं० ॥ १०७ ॥

चौपाई ॥ नैंननि प्रथम प्रमांनिय पुव्व। सेवालय रोमावलि रुव्व ॥
अग्गानय जोवननि कुंआर। अब जांन्यौ सैंसव चलि भार ॥ छं० ॥ १०८ ॥
इहिविधि मत्त गत्त भय रजनी। बाल लता वल्हम गहि सजनी ॥
यों डग मग सुंदरि विहझाई। ज्यों बेलिय अवलंब लहाई ॥ छं० ॥ ०८ ॥

दुलहिन को लेकर दूलह का जनवांसे में आना और हाथी घोड़े धन आदि लुटाना ॥

दूहा ॥ पांवारी प्रथिराज बर। पुनि जनवांसे जाइ ॥
एक सहस हय हथ्थि बर। दीने तुरत लुटाइ ॥ छं० ॥ ११० ॥
होत प्रात जग्गिय सकष। भंति अनेक निभोग ॥
जुक्कु देव देवंस मति। सो लभ्भै नहिं लोग ॥ छं० ॥ १११ ॥

छंद भुजंगी ॥ सुद्दंदं सुद्दंदं सुद्दंदंति राजं। सुनौ देषियै कोटि कोटिक साजं ॥
लषं लष्ष भाइं नटं नद्द रागं। मनो देषियै यंद अष्षग्रहेन भागं ॥

जिते तार झंका नचे निनारे। मनों देपिये भान ससि लष्य तारे॥
सुभंगं सुतानं म्रदंगं बजावै। ष्हा कूह सु गं सुगंधर्ब गावै॥११२॥
घनं पक्ष पानं समानंत नेहं। करै प्रथिराजं घप अप्प देहं॥
करै राज राजं सबै ब्याह काजं। मनों दिष्षिये राज सूजग्य साजं॥
परे अग्ग राजं छिती हथ्थ जोरी। मनों उन्नयौ मेघ आषाढ़ कोरी॥
फिरै दास भारी बुल्ले राग वैनं। मनो नभ्रसी मास कै बीज गैनं॥११३॥
बजै ग्राम नारी छतीसों सुरागं। मनो बोलयं मोर आषाढ़ गाजं॥
बजै घुघ्घ नारियं रंग भारी। मनों दादुरं जोति मनमथ्थ सारी॥
रंगे कासमीरं सबै बस्त्रधारी। किधों बद्दलं रंग कै ग्रहन गारी॥
किधों इंद्रबद्धू चढ़ी नीर धारा। किधों राज बासंत भूपाल बारा॥छं० ११४॥

दूहा॥ गति चित्रांम अथ प्रातवर। रूप मनुहार प्रमांन॥
बर दिष्षौ चहुआंन रूप। रत्ति काम उनमान॥ छं०॥ ११५॥

गाथा॥ रत्ति काम दुअ दाई। कै दुःषंकरी कत्तरी वाले॥
सो इंछनि पांवारी। लभ्भी नृप मुत्तिका रूपं॥ छं०॥ ११६॥

छंद चवुपाला॥ इति मुकति सकति सकोर। जिन लभि न पारस चोर॥
जिन कांम बांन झकोर। गुन मुद्दित मुदित सथोर॥
चित मित्त मित्तह जोर। मनों उदय निपचन चोर॥
सुष मुगति भुगति उपाय। का करिहि मुक्ति अपाह॥ छं०॥ ११७॥
सुष करन दिन प्रति जीह। दिन सुफल घरियनि ग्रीह॥
प्रति राज राजन जोर। पांवार सलषति ओर॥
मनुहार मंडिल थोर। न्रप चलन श्रेह सजोर॥
दै गैनि रथ बर बाजि। न्रप दए दांन बिराजि॥ छं०॥ ११८॥

दहेज में सलषराज का बहुत कुछ देकर भी संकुचित होना।

कवित्त॥ सहस एक रथ साजि। दासि बिय निपति इक्क मधि॥
इक्क इक्क करि सथ्थ। किरनि पंचौ प्रति प्रति बधि॥
सौ चायौ इह भांति। माल मुत्तिय उतंग बर॥
लछ्छि पटंबर अंग। दए राजिंद राज गुर॥

इतनौ देत सकुच्यौ न्टपति। है दिनता चरनन गहिय॥
प्रथीराज राजन सुबर। सलष फेरि चल्यौ समिय॥ छं०॥ ११९॥

पांच दिन तक सब जातियों को भोजन कराया गया।

दूहा॥ पंच दिवस च्यारौं बरन। भुंजत अंन अपार॥
छरस अंन छत्त रितिन सुष। अब्बू वे आचार॥ छं०॥ १२०॥
पलकि[1] चार अचार करि। समद करी सब सथ्थ॥
दे हथ्थी जर कस बसन। को कवि बरनै कथ्थ॥ छं०॥ १२१॥

बारात की विदाई का वर्णन।

छंद पद्धरि॥ पचिराइ राइ पावार सथ्थ। नष बुद्धि बरन वर विविध कथ्थ॥
इक करी सत्त चय सोम राइ। औराक जाति जे पवन पाइ॥
सिर पाव पंच जरकस पसंम। सूत रूपोत रेसम नरंम॥
सोइ विदा कीन दूलह बनाइ। जमदार सोंपि संभरि गनाइ॥ छं०॥१२२॥
कलधूत कलस दस गढ़ित हथ्थ। इक उंच कुंडि जल न्हांन सथ्थ॥
दस थार कनक प्रतिबिंब सूर। बाटका बीस बिम्र अभुत नूर॥
ता सक्क पंच दुव मनच थार। बाजौठ एक हिम जटित लाल॥
पालकनि हेम रेसम निवारि। अनि ठाम नंन्द को लहै सार॥ छं०॥१२३॥
कठ लोंनि बीस सोवन मटाइ। पल्लांन जच दावन चढ़ाइ॥
मन बीस पंच इच सोज अब्ब। जिन कोय करै छिचीस अब्ब॥
दुअ हथ्थि साजि भाभ्मे जिजीर। रूपेन साज सज्जे वजीर॥
चँडवाइ बीस मन साजु सुद्ध। उज्जल रज रजक्क जनु उफनि दूध॥छं०॥१२४॥
हस सहस हेम दासीन संग। तिन देषि रंग रँभ होत भंग॥
सामंत सत्त इक रस्स अग्ग। पचराइ तिनच न्टप नमिय पग्ग॥
इक तुरी जात औराक थांन। अग्गीय अंग पग पवन मांन॥
इक इक्क बटुअ मालाति इक्क। मुद्रकी इक्क इन पुहचि भिक्क॥ छं०॥१२५॥
सिर पाव उंच सरकस[2] अनूप। तिन दिष्षि होत हैरांन भूप॥

(१) क्ष० को०--पालिका।
(२) क्ष० को०--जरकस।

बंभन बनंक कायथ्थ संग। पसवांन लोग जे रषिक अंग॥
लघ दिष्ष और असवार पाल। करि सुमन सद्द अब्बू भुआल॥
पंच से लोम रनिवास नांम। रेसंम सूत गनि पंच ठांम॥ छं०॥ १२६॥
सब चर्ए रचित समदे नरेस। सजि चले सुभट सब अप्प देस॥
दूंढनिय सद्दि पिय बैठ ढाल। गज गाह घुरें दुहुं अंग भाल॥ छं०॥१२७॥

बारात का विदा होकर अजमेर की ओर चलना।

दूहा॥ चल्यौ ब्याहि संभरि धनी। संगन भए निहाल॥
पुच चावन घन संग भए। न्रपगुन चवें रसाल॥ छं०॥ १२८॥
पंच कोस परथिथ्थ कहु। बिदा मंगि अबु ईस॥
और देन तुम सोभ कह। बांम तुम्हें हम सीस॥ छं०॥ १२९॥
नवमि संझि बहुरे घरह। वे सज्जे अप देस॥
न्रपति ब्याह दुष रस रह्यौ। हिम गिरि जांनि महेस॥ छं०॥ १३०॥
आरिज आरिज सलष तें। दूंढनि इच्छा पूरि॥
भुअ मंडल मंडित दिनह। सिर दधि अच्छित भूर॥ छं०॥ १३१॥
चलन राज प्रथिराज बर। बरनि पत्त बर राज॥
महि अचोलक सुंदरी। डोला सद्धित साज॥ छं०॥ १३२॥
यों आयौ न्रप ग्रेह बर। सुनि अवाज चिय कांन॥
मानों बीर दुहाइयां। कांमहि मंगन बांन॥ छं०॥ १३३॥

बारात के अजमेर पहुंचने पर मंगलाचार होना।

कवित्त॥ सोमेसर संभरिय। राज आवत प्रथिराजह॥
है गै रंभ सुसाज। दूंद चहयौ लष साजह॥
कोटि कोटि मनु दूंद। इंद दिष्यौ दूंदासन॥
एक एक दंपतिय। बरह बंधे विधि साजन॥
दुज मानें बेद मंगल चिब्रह। मुत्ति अच्छित वंदहि सुबर॥
नृप मौर सुष्प सुत्तिय लगहि। सो ओपम कबिराज घर॥ छं०॥ १३४॥
अरिल्ल॥ लगत मुत्ति नृपति सुपति सुष बरं। मांनों भानं* उनग्रेह सुतारक जवरं॥
मिल्लि सो फिरि चलहि सलिगन भान कों। मानहु लषहै जांनि आनै आनकों॥
छं०॥ १३५॥

दूहा ॥ बंदि खिथौ बरनी सुवर। चिया हेत लजि गांन ॥
मांनों बैसंध सुंदरी। चलत समप्पत दांन ॥ छं० ॥ १३६ ॥

शुकी के पूछने पर शुक का इच्छिनी के नखशिख का वर्णन करना।

बहुरि सुकी सुक सों कहै। अंग अंग दुति देह ॥
इंछनि अंक बषांनि कैं। मोहि सुनावहु एह ॥ छं० ॥ १३७ ॥

छंद चन्द्रायन ॥ घन धवल गावहि बाल। मनमथ्य निध्य विसाल ॥
बहु फुल्लि केवर फूलि। बग बैठि पावस भूलि ॥
घन धवल है मनमथ्य। आनंद अंगनि सथ्य ॥
जनु रंक पायौ दब्ब। नल नलन नीर चवब्ब ॥ छं० ॥ १३८ ॥
घर धार गंग कि उट्ठि। फिर नभ्भ परसि अपुट्ठि ॥
बट बिटप बेलिय भुल्लि। ग्रिह बाग नव कच भुल्लि ॥
नृप परनि पुचि पवार। जनु भुवन सैसुव टारि ॥
इह रूप राजित देव। इन्द्र इन्द्रनी अचमेव ॥ छं० ॥ १३९ ॥
षोड़ष सलष राज कुंआरि। नृप लसी ब्रह्म सवांरि ॥
छवि लच्छि पूर सलज्ज। व्रत नाथ व्रत करि कज्ज ॥
कविराज ओप प्रकास। आवै न कोटि विचास ॥
सिष नष्य ब्रंन सुरत्त। किम करय मंद सुमत्त ॥ छं० ॥ १४० ॥
जगि रंग जोबन जोर। ससि विलसि बयक्रम थोर ॥
बर उदै गुन बर गौर। बै स्थांम राजत औैर ॥
बनि केस देस सुवेस। कवि कहत उप्पम तेस ॥
चढि मेर नागिन नंद। ग्रसि गहत संमुष चंद ॥ छं० ॥ १४१ ॥
उपम्म कवि कवि बाम। जुब्बन तरंग अगि कांम ॥
पाटीव चकचुंधि होइ। विधि परच उठि घट दोइ ॥
लिलाट आठ प्रकार। मनमथ्य अंगन थार ॥
तिन मद्धि मुत्ति तिलक्क। कवि कहत ओपम थक्क ॥ छं० ॥ १४२॥
चरि कठिन गंगय मांन। ससि भेद भ्रम चवि जांन ॥
कविराज ओपम दीय। दछि पुचि रचि मिलि पीय ॥

तिन मध्य द्रग मद व्यंद। कवि जंपि उप्पम छंद ॥
ससि उड़त महि कलंक। दृत अप्प अंकह अंक ॥ छं० ॥ १४३ ॥
लच्छिन्न हरि तन ताद। ससि थांन वैठौ राद ॥
अति द्रुत चपलह भौंह। कवि कहत उप्पम सौंह ॥
ससि धरत रूप सु ऐन। तिहि चलित चकित नैंन ॥
मन धरत उप्पम आंन। अभि संधि अलि सुत जांन ॥ छं० ॥ १४४॥
वर वाल नैंन झकोर। अह जियन वानह जोर ॥
जिम भए भौंरह चोंर। भै भरै धाम झकोर ॥
इक कही ओपम चाइ। पंजन कि उड्डि फल पाइ ॥
जनु वाग कुट्टिय ऐंन। तिम होत चक्कित नैंन ॥ छं० ॥ १४५ ॥
सित असित नैंन उचार। मनों राह तारक चार ॥
तिन मद्धि सोभै रत्त। त्रिघि धरिय मंगल गत्त ॥
रसवास नासिक नीय। तिल पुहप चंपक दीय ॥
मनों लज्जि मंजरि मध्य। कल प्रगटि दीपक सध्य ॥ छं० ॥ १४६ ॥
नव हल्लत मुत्तिय नास। तसु किंच ओपम भास ॥
रस ग्रहन अंम्रत चाइ। तप करै ऊरध पाइ ॥
सुप कीर सोभित जोस। जनु चुनत कनमत ओस ॥
जगिनीय पुर मन रज्जि। कवि कही उप्पम सज्जि ॥ छं० ॥ १४७॥
अध अधर रत्त सुरंग। ससि पीय रंग तरंग ॥
उत्तंग रंग सुभाल। जनु फुल्लि कमुद्दिनि ताल ॥
कै पक्क बिंब संभाल। सुक डसिय ग्रसिय न आल ॥
तिन मध्य दंतन कंत जनु बज्ज राजत पंत ॥ छं० ॥ १४८ ॥
फुनि कही ओपम साज। सुन स्वाति सीपय राज ॥
सति इक्क ओपन अक्छ। बत्तीस लच्छन लच्छ ॥
इक अलक सुम्मत मुष्य। कवि कहत ओपम सुष्य ॥
ससि मुक्कि मधुरय अंक। वर भजत विभय कलंक ॥ छं० ॥ १४९॥
जनु जनम धारा रेष। कै मित्त नगी चलि सेष ॥
कल ग्रीव रेष त्रिवल्लि। कवि राज ओपम भल्लि ॥

ससि मिलन पुब्बय वैर । गुरदेव सेव सुसैर ॥
गर पोति जोति विचारि । ससि चरन फंदय डारि ॥ छं० ॥ १५० ॥
ससि समर दंद प्रमांन । जिति राह बैठो थांन ॥
कै संप श्रीवर जांनि । कर ऋंगुलिं इक थांन ॥
कालंक दिठवन जौर । कवि इक्क उप्पम दौरि ॥
जनु कमल कोर प्रकार । सिसु संग बैठे वार ॥ छं० ॥ १५१ ॥
रस सरस कुच कवि चंद । उर उकिर आनँद कंद ॥
ससि वदन मदन सु जोर । चित रचै चाहि चकोर ॥
कलि काकि कंज अनूप । उर उदित रवनिय[1] रूप ॥
कथि कलभ कुंभ प्रमांन । छवि स्यांम रंग सुदांन ॥ छं० ॥ १५२ ॥
गुन गँठिय मुत्तिय माल । कुच परस कंत विसाल ॥
विय सिंभ सीस कि चंग । चढि चलिय गंग सुरंग ॥
नव रोम राजिय राजि । कवी कवी ओपम साजि ॥
मनों नाभि कूप प्रमांन । भरि भूरि[2] अमृत थांन ॥ छं० ॥ १५३ ॥
अंमृत्त आवहि जाहि । पप्पील रंगहि चाहि ॥
उर उदित सुभगय वाल । अनंग रस सधि वाल ॥
जनु खक्कि कीडें ताल । चिम फाव लगि रसाल ॥
सुभ निरषि चिवली नेह । कवि चंद ओपम एह ॥ छं० ॥ १५४ ॥
वयसिसु मिलनह बाल । षिढ़ि मंडि कांम विसाल ॥
रिपु उभै सुम्मिय आंनि । छवि लंघि लंक प्रमांन ॥
नित्तंब उत्तंग रज्जि । मनमथ्य चक्क विसज्जि ॥
पैरंग पिंडिय ढार । सित सीत उन्न तुसार ॥ छं० ॥ १५५ ॥
नव रंभ गति विपरीत । छवि षंभ देवल जीत ॥
गज सुंड सुथप सरूप । मनों कुंद कुंदन सूप ॥
किधों करभ कोर प्रकार । तिन मद्धि उत्तरत ढार ॥
मनों मीन चिचत देह । छवि करत पिंडुर एह ॥ छं० ॥ १५६ ॥

(१) को०—रवनिय ।
(२) को०—भूमि ।

घन घुंमि घुघ्घर घेम। कवि कहो ओपम एक ॥
मनो कमल सौरंभ काज। प्रति प्रीत भमर विराज ॥
कह कहौं अंग सुरंग। रति भूलि देखि अनंग ॥
लपि लछ्छि पूर रुदज्ज। चित इत्त मांनो रज्ज ॥ छं० ॥ १५७ ॥
सो सलष राज कुंआर। न्वप लषी ब्रह्म सवार ॥
इन लछ्छि लछ्छिय रूप। कुल वधू लछ्छिन भूप ॥
रति रूप रमनिय रज्जि। छबि सरल दुति तन सज्जि ॥
रसि रसित रंगह राज। तिह रमन हुअ प्रथिराज ॥ छं० ॥ १५८ ॥
कवित्त ॥ नयन सुलज्जल रेष। नप्पि निप्पन छवि कारिय ॥
श्रवनन सहज कटाछ। चित्त कर्पन नर नारिय ॥
भुज मृनाल व.र कमल। उरज अंबुज कलिय कल ॥
जंघ रंभ कटि सिंघ। गमन दुति हंस करी छल ॥
देव श्रह जप्पि नागिनि नरिय। गरव्वि गर्व दिप्पत नयन ॥
इंछिनी रुपि लज्जा सहज। कितक सक्ति कव्विय वयन ॥ छं० ॥ १५९ ॥
दर्पन दल नष जोति। सुरग मह्दी रुचि हरिय।
एडी ईंगुर रंग। उपमं ओपिये सु संचिय ॥
सो तिन सकल सुहाग। भाग जावक नल बंधिय ॥
विकसित अँग अँग अंग। चारु मुसकनि वै संधिय ॥
दिर्घत नैंन दंपति कजहि। वर्ष दोस वर्षत अकल ॥
रति कांम कांम गहि गह्लनिय। श्रौर उप्पम लुट्टिय सकल ॥ छं० ॥ १६० ॥
जेहरि नूपुर नद्द। सद्द घुघर कोतूहल ॥
विछिय निसद्द निसाल। सद्द झिंगुर कल कूहल ॥
अगुठनि जटित अनोट। वोट कुंदन नग मंडित ॥
निरषत द्रप्पन नैनं। बदन बीरी रद षंडित ॥
चाव ऋह भाव संभम विभ्रम। बड पुन्य करि प्रभु पिथ्थ लचि ॥
इंछनिय इछ अछ्छर अवनि। सुनिय सोभ ससि कव्वि कहि ॥छं०॥१६१॥
जरकस घुघर घमंड। जांनु रवि किन्न कदली ग्रह ॥
कसुँभ लरे नोसार। रंग छबि छंडि हंस चर ॥

पीत कंच की संधि। षंडि कस अंग उपट्टिय ॥
कंकस कार वर वरत। गंध हरदीय उपट्टिय ॥
आलोल नैन गति बचन बहु। सषिन सोभ मंडिय तनह ॥
फुल्लिय सांझ कवि चंद कहि। मनहु बीज थर की घनह ॥छं०॥ १६२ ॥

शोभा कहते कहते रात बीत गई।

दूहा ॥ सुनत कथा अछि वत्तरी। गइ रत्तरी विहाइ ॥
दुज्ज कही दुजि संभरिय। जिहि सुष श्रवन सुहाइ ॥ छं० ॥ १६३ ॥
आरिजु आरि जस लषहीं। से इंछिनि इक्का पूर ॥
भुव मंडल मंडिन दिनह। सिर दषि अछ्छिन जूर ॥ छं० ॥ १६४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके इंछिनि व्याह बर्णनं नाम चतुर्दश प्रस्ताव संपूरणम् ॥ १४ ॥

अथ मुगलजुद्ध प्रस्ताव लिष्यते ।

(पन्द्रहवां समय ।)

छिंछनी को ब्याह कर लाने पर मेवात के राजा मुदगल का पूर्व वैर निकालने का विचार ।

दूहा ॥ प्रथीराज राजन सुवर । परनि छच्छि उनमांन ॥
दिसि मुग्गल संभर धनी । वैर षटक्यौ प्रान ॥ छं० ॥ १ ॥
वैर षटक्यौ पुब्बवर । मति मंची मेवान ॥
धर उद्दिम संभर धनी । भरत वीर भय गात ॥ छं० ॥ २ ॥

मेवात राज का विचारना कि रास्ते में पृथ्वीराज को मारना चाहिए ।

कवित्त ॥ वैर षटक्यौ पुब्ब । कारिय सोमेस सुराजं ॥
सो आंने सोमेस । तात मुग्गल भजि काजं ॥
सारंग कैर सारंग । देषि कढ्यौ तिन वेरं ॥
सो संभरि प्रथिराज । मत्त बढ्यौ धर वैरं ॥
हम मत्त मत्त गुरजन कहै । सबै वेर लड्डी श्रवनं ॥
प्रथिराज राज काटन मतै । तिचित पंथ कीजै गवन ॥ छं० ॥ ३ ॥

यमुना की एक घाटी में मुगलराज का छिप रहना ।

चित्त मुग्गल चिंतयौ । राज प्रथिराज वैर बर ॥
मद्धि थांन मेवात । रह्यौ चंपे सुढिल्लि धर ॥
ढिल्ली वै बर धाम । सुषल अंगन मेवातं ॥
मत्त मत्त उप्पन्नौ । वीर वीरा रस गातं ॥
मुगल नरिंद मेवात पति । कूच राज चिंत्यौ सुबर ॥
बहव सुएक जमुना विकट । सुघट घाट औघट नयर[1] ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

(१) ए० को०—औघटन पर ।

पृथ्वीराज के डेरे में कैमास के छोड़ सब का सो जाना, कैमास का उल्लू की बोली सुनना ।

छंद माधुर्य ॥ जग जोति जिंगिनि निसि अभिंगिनि रत्त रत्तति अंबरं ॥
सामंत सूर सुथांन निद्रा अमित क्रोध सुउत्तरं ॥
अति चतुर चिंतय समुद मित्तय कित्त चिहु चक विस्तरी ॥
कैमास जग्य रु सकल निद्रा वीर सर सुअंमरी ॥ छं० ॥ ५ ॥
आहत्त रत्त हुइंग नील रु थान पुब्बय उत्तरौ ॥
संनाह स्वामि नरिंद नामय काछह कित्तिय विस्तरौ ॥
बोलि घूघूअ साद दीविय सद्दसनी[1] सुर उप्फस्था ॥
इह सुनि छ सूरं धरि करं वीर वीरह उच्चरौ ॥ छं० ॥ ६ ॥

कैमास का बाईं ओर देवी के देखना ।

कवित्त ॥ बर निड्डुर राठौर । राज सूतौ ढिग वीरं ॥
और सब्ब सामंत । पास कैमास अधीरं ॥
नद वेसउ वंकट सु । अमत आषेटक आइय ॥
क्रोध सजल उच्चरिय । सद सोदें तन चाइय ॥
मत्ते सुभ्रमर पत्ते सुग्रह । षग बंधे निद्रा ग्रहिय ॥
जग्गै न कोइ जाग्रत सुचित । बाम दिसा देवी लसिय ॥ छं० ॥ ७ ॥

देवी की बोली सुनकर कैमास का गुरुराम पुरोहित से सगुन पूछना, पुरोहित का कहना कि इसका सगुन चंद से पूछिए ।

बोलत देवी सुनिय । जगि निड्डुर नृप पासं ॥
राज गुरु जग्गाय । बोलि मंत्री कैमासं ॥
राज गुरं दुज राम । बलिय बंभन अधिकारिय ॥
सार सिंध रन द्रोन । तेन भारथ भर भारिय ॥
कवि चंद बोलि चाचिग मद्दर । सगुन संधि सद्धिय लगन ॥
आवै न मंच मंचीय घन । सुबर चिंत अध्यिय अगन ॥ छं० ॥ ८ ॥

(१) को०—सनी ।

साटक ॥ जे मत्ताने मत्त कारन वरं पुद्दं न्रपं प्रानयं।
जच्छा खस्स समस्त श्रस्त कुंभकं सुयसं समुद्रं वरं ॥
निर्घोषं यमथाय धारन धरे विद्याधरा उद्दरं।
सोयं सो प्रथिराज वैरन वरं सोमेस तिय श्रग्गियं ॥ छं० ॥ ९ ॥

चंद का पृथ्वीराज के वंश की पूर्व कथा वर्णन कर मेवातियों के साथ वैर का कारण कहना।

छंद पद्धरी ॥ न्रप वस भइग श्राना नरिंद। दस पुच भय गति न वैर कंद ॥
चहुश्रांन नाम चहुश्रांन वैर। बीसल कुलान उप्पने नैर ॥
श्राहुत्त वीर ढुंढा सुरप्पि। तिहि वंस भइग चहुश्रांन सप्पि ॥
जैसिंघ देव तिहि वंस वीर। घरि करिय श्रइर जज्जर सरीर ॥छं०॥१०॥
दौसौ जु वीर संभरि सुचंत। पट्टन प्रवास श्ररि चह्यौ कंत ॥
कंडाय सव्व मेवात भुम्म। श्राहुत्त कुह मंड्यौ रुम्म ॥
तिहि वंस भयौ सोमेस सार। जंभए वीर परवत विधार ॥
उत्तस्यौ जाइ जंगल सुदेस। गद्दिया नरिंद भंजी प्रवेस ॥ छं० ॥ ११ ॥
विष्यात मग्ग जिम छुन उचीर। साधयौ सुद्द किय सुद्दि चीर ॥
तिन पाट प्रथि प्रथिराज नप्पि। श्रावू नरिंद पावार थप्पि ॥
जस जानि भूमि श्रप भर सदंद। मुगगल मयंक तारका चंद ॥
ढंढोरि वैर घन करिय पंग। पारस परिय साहर श्रनंग ॥ छं० ॥ १२ ॥
तिहि वेर जग्गि मुग्गल नरिंद। जंपयौ वीर कविचंद छंद ॥
इह कहिय राज निद्रा ग्रसीय। चिंता न राज चिंता वसीय ॥
चहुश्रान वीर वर सोमनंद। तिन तेज ब्रह्म मानों रविंद।
निसि सेन सैन अवनी अनंग। फुनि कोल केलिनि सिप्प रंग ॥छं०॥१३॥
भो प्रात भांन खलभल्यौ श्रंग। फुल्लोति कमल उडि चले भ्रंग ॥
कुल कैल चोर मन भए पंग। झंभार सब्द गो करि उमंग ॥
द्रुम द्रुमनि रोर पंषिय करंत। करैं क्रम सुभ रव सुद्द संत ॥
चकीय चक्क करि मिलिय रंग।भगि रोर चोर पय तन श्रनंग॥छं०॥१४॥
ऊघरे पूज देवह कपाट। जग्गेति विप्र वर क्रंम घाट ॥

उच्चरंचि वेद वा नीति चंग । त्रंमह प्रवाह जनु जलह गंग ॥
बहु भंति क्रंम आचरत लोइ । वंदैति पुज्ज गुरु देव दोइ ॥
चांभंन पुहप अस्नांन दान । मंडे सुजन नर थांन थांन ॥ छं० ॥ १५ ॥

सवेरे उठकर पृथ्वीराज का अपने सामंतों के साथ शिकार को निकलना ।

तब जग्गि नंद सोमह कुमार । अनभंग चंग अरि कुल पथार ॥
कैमास बोलि सामंत सूर । चढि चल्यौ राज आखेट दूर ॥

मुगलराज का आकर रास्ता रोकना ।

इत्तनै होत बज्जी अवाज । मुग्गल सु आइ करि सकल साज ॥
दक्कोति पंथ गिरि कंठ ठैर । मग्गयौ आंनि तिन पुब्ब बैर ॥ छं० ॥ १६॥
संभरिय बैन सामंत नाथ । ज्यौं सुन्यौ बैर लगि सीस माथ॥ छं० ॥ १७॥

तुरंत पृथ्वीराज का शत्रुओं के बीच में घुसना, मानो बड़वानल समुद्र पीने के लिये धसा हो ।

कवित्त ॥ बढि अवाज गिरि गाज । राज भय चंग न आनिय ॥
ज्यों कमल पांनि नोगीनि । कुंभ चीकट जिम पानिय ॥
बृढ मत्त गूंगं सवाद । मांन कल तंत सूर भय ॥
यों सोमेस कुमार । दिपि पिच वट चंग तय ॥
करि सिलह चंग चै तेज करि । कढिय खग्ग कट्ठी कसिय ॥
जाने कि पियन सागर जलह । बडवानल मध्ये धसिय ॥ छं० ॥ १८ ॥

पृथ्वीराज की वीरता का वर्णन ।

भो बडवानल राज । समुद सोषन भैवानी ॥
भो बडवानल राज । जांनि रवि अंसुल घाती ॥
भो बडवानल राज । मोच चित रागत सौ सौ ॥
भो बडवानल राजु । ज्यों दोष अदोस स दो सौ ॥
प्रथिराजन जांनिय मान तप । मदन रंभ बंछै बलह ॥
ज्यौं बंछै अवधि सुंदरि पिया । त्यों कलचंत बंछै कलह ॥ छं० ॥ १९॥

दूहा ॥ कलह कूर यक्खिय निजरि । भयौ समुद अरि सेंन॥
　　वा वारौ मंगै न्रपति । हथ्थ जोरि मति दैन ॥ छं० ॥ २० ॥

कवित्त ॥ किनक षत्त मेवात । राज मेवात पत्त कह ॥
　　ना उप्पर चहुआंन । नेग बंधे सु राज इह ॥
　　मुक्कि षलिय कूरंभ । मुक्कि सारंग चालुक्कह ॥
　　ढुक्क ढुक्क सामंत । दाहि मारन न हथ्थ कहि ॥
　　नृप चोद्द जुद्द सुरतांन सों । कैपंग राग संभौ लरै ॥
　　गामी गवार मेवात पति । राज राज संम्हौ भिरै ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ नृप कुहन वर हुकम मुष । दिठ्ठाची घावंत ॥
　　वर सुग्गल सामंत रन । दल दारुन गाहंत ॥ छं० ॥ २२ ॥

युद्ध का वर्णन ।

छंद रसावला॥ बोल बुल्ले घनं । स्वामि सद्दे रनं । लग्गियं सग्गरं । घार भारं भरं ॥
　　रोस लग्गै जंदं । सिंघ मद्दे मदं । वीर बीरं वरं । ओघ नषे घरं ॥छं०॥२३॥
　　सार सज्जे दुसे । वज्ज वज्जे जिसे । सार अग्गैं भिरुवें । ढक्क ढंकं षिवें ॥
　　रंग रत्ते रनं । कंक प्रछै मनं । लाग वज्जो जुरं । मेघ गज्जै धुरं ॥ छं० ॥२४॥
　　टूक तुट्टै पगं । विज्जु वाले लगं । तीर छुट्टै दुसे । रत्ति तारा जिसे ॥
　　सार उड्डै रनं । भद्द ज्यौं जिंगनं । सार मत्ती भरं । काव्वि जीर्द्द सरं ॥ छं०॥२५॥
　　पिथ पंथं वरं । लोह लग्गे लरं । कन्ह एकं अपं । अग्गि पीए षपं ॥
　　काल जित्ते ननं । मेटि आवा गमं । काल जित्ते तिने । अभ्भ योंची मिने॥छं०॥२६॥
　　सूर सूरं धरं । ठांम रुद्धी नरं । भित्त दुत्ती रनं । रिंन छुट्टै तनं ॥
　　हथ्थ कित्ती कियं । बंध छुट्टै जियं । क्रंमनासा नदी । श्रंम कीने सदी ॥ छं० ॥२७॥
　　धार धारं धरं । वीर भज्जै भरं । कालकूटं कारं । जम्म जुद्दं बरं ॥
　　बीर मत्ते परं । ढक्क ढक्के धरं । लोह लग्गे नरं । तार बज्जे हरं ॥
　　कंक जित्ती जिनं । क्रंम भज्जे तिनं । लाज सिंधू गिरे । बीर बीरं तिरे ॥छं०२८॥
　　जोति सब्बी गनं । सिद्द पुज्जै बनं । मुष्प मुच्चे ननं । घार मुच्ची घनं ॥छं० ॥३०॥

कवित्त ॥ सोलंकी सारंग । जंग जंमिन मुष लग्गिय ॥
　　हय गय भर उचार । आनि सुग्गल मुष पग्गिय ॥

भर चनि जुहिय मुष्य । तेग लंबी उभारिय ॥
घम घरियारे घत्ति । खम लोहा करि भारिय ॥
सम रंग सार टिक्किक्य पषर । गहन रूक्क मचौ सयन ॥
सुग्गल नरिंद चहुआंन भर । अंग अंग सध्यौ नयन ॥ छं० ॥ ३१ ॥

दूहा ॥ कायर मुष वैसे भए । ज्यों चित पुत्तल पांन ॥
सूरन मुष औसे भए । ज्यों नव सुंदरि जांन ॥ छं० ॥ ३२ ॥
असित असित दोइ बीर है । ता पट कैंवर अंत ॥
ज्यों जानौ तन संग्रह्यौ । वर भारथ्थं कंत ॥ छं० ॥ ३३ ॥

मुगलराज को चारों ओर से घेर कर बांध लेना ।

छंद पद्धरी ॥ उतरिय घाट पल्लेट सुबीर । पत्तेति सूर सामंत तीर ॥
घेर्‍यौ सुराइ सुग्गलय राज । गिरवर कि सिंघ ग्रह्यौ अगाज ॥
जानैं कि विंट तारक मयंक । संकन निसंक गहि षग्ग वंक ॥
रुक्कंत सूर सामंत सत्त । बल घल्यौ राज मेवात पत्त ॥ छं० ॥ ३४ ॥
उप्परिन घथ्य घथियार छत्त । बिन नेह पियां मनुहार पत्त ॥
अंगन अनंग तन लें छिपाइ । रचै र्व्रन मनच तन ज्यौं लुपाइ ॥
बंध्यौ सुराज सुग्गल नरिंद । छंडाय सस्त्र भारथ्थ दंद ॥ छं० ॥ ३५ ॥

मुगल को कैद करके इंछिनी को साथ लिये पृथ्वीराज आनंद से घर आए ।

कवित्त ॥ बंधि राज सुग्गल नरिंद । जिनि अप्पथान संपत्तिय ॥
देस देस अनभेव । कित्ति मुष्य मुष्यन कथिय ॥
रिन चढ्ढौ अरि अंग । षग्ग कोइ षंतिय पावै ॥
जस बंध्यौ सिर मौर । आइ दल दुज्जन आवै ॥
आषेट करिव फरि गिग्रह्यौ । इंछिनि रत्तौ हंस सर ॥
कलि केलि रमै कामिनि कमल । मनों मनमत्तौ भिंग भर ॥ छं० ॥ ३६ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथीराज रासके मुगलकथा वर्णनं नाम पंचदशमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १५ ॥

अथ पुंडीर दाहिमी विवाह नांम प्रस्ताव लिष्यते।

(सोलहवां समय।)

राजा सलष की वेटी के व्याह के वर्ष दिन बड़े सुख के साथ बीते।

दूहा ॥ बरस व्याह बीते सकल। सुंदरि सलष कुंआरि ॥
विधि विधि भोग संजोग रजि। नवल मुगध सुपियार ॥ छं० ॥ १ ॥

गाथा ॥ रन जय पत नरिंदं। पुत्तय सुतं च निरमला कित्ती ॥
नव नव मुगध सुरत्तं। चैाजुत्तं रज्ज सुष्पाइ ॥ छं० ॥ २ ॥

चंद पुंडीर की कन्या का रूप गुण सुनकर पृथ्वीराज का उस पर प्रेम होना।

दूहा ॥ चंद पुँडीर नरेस घर। सुंदरि अति सुकुमार ॥
प्रेम प्रगट राजन भयैा। गुन पुच्छन विस्तार ॥ छं० ॥ ३ ॥

चंद पुंडीर की कन्या का रूप वर्णन।

छंद चनूफाल ॥ गुन बाल वेस कमांन। सैसव सुपंचन बांन ॥
कुटि नष्प क्रमन[1] आंन। सैसव्व वै संधि जांनि ॥
लज रत्त जाचि नरंत। सैसव सुतुच्छ बलमंत ॥
नव व्रिमल उप्पम नास। अरधंत तो मनि भास ॥ छं० ॥ ४ ॥
नव नास उंप्पम पुहि। मनु काम मंजरि फुहि ॥
सोरंग ओपम पाइ। भ्रम बांन बाल बनाइ ॥
घर जंघ ओपम अभ्भ। मनु बाल कदली अभ्भ ॥
सोइ वदलि कदली चंद। छवि करन रत्त सुदंद ॥ छं० ॥ ५ ॥
जलरूप विंट विराज। उर मदन सदन सुपाज ॥
सैसव सुवै कचि छंडि। जोबन्न गुन कनि मंडि ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) छ०—अंजन

पुंडीर का कन्या देना स्वीकार करना।

दूहा ॥ सुनि ओनान नरिंद् दुक्ल। कहिय बत्त पुंडीर।
रुप अनूपम राज वरि। दिय राजन चित चीर ॥ छं० ॥ ७ ॥

शुभ लग्न विचार कर चंद पुंडीर का कन्या विवाह देना।

लगन सुदिन चथलेव करि। चंद सत्त गजराज ॥
एक अग्ग सत्तरि सुचय। नग मोती बहु साज ॥ छं० ॥ ८ ॥
परनि राज पुंडीरनी। सुन चंदानि कुंआरि ॥
दइ विधिना करि व्रिमई। ब्रह्मा विरचि सँवारि ॥ छं० ॥ ९ ॥

पुंडीर दाहिमी की कन्या के साथ पृथ्वीराज के आनन्द विलास का वर्णन।

नव जोवन जोरी नवल। छंदानित्त नवल ॥
बात विनोद बसंतरै। सुनी दाहिमी गल्ल ॥ छं० ॥ १० ॥
कवित्त ॥ नवल पुहप फल नवल। नवल नारी नव जोवन ॥
द्रव्य देषि चोइ निजरि। कवन ऐसा सिध साधन ॥
चित्त चल्लै साधक्क। विषम जोवन वै मांची ॥
कामी कलह विच्छन्न। बहुत पचि हारो कांची ॥
पुंडीर कुंअरि सों रस रमन। दाहिम्मी चित्तह लगी ॥
सुभ लगन जोग दाहिंम्म बर। दीहिम्मी राजन मगी ॥ छं० ॥ ११ ॥

विवाह का वर्णन।

ढ्रुअन ढार उहार। भार फन पति भर भग्गे ॥
गढ बर्यान सुभ थांन। सोभ कैलासह लग्गे ॥
दोइ सहस दाहर दिवांन। पुच तीनह परिमानं ॥
दोइ पुची सुविसाल। रुप रति अंग सुजानं ॥
दाहिम सुराज कायम्म कलि। षल केवा सेवा करन ॥
प्रचंड वाह मधि उप्पियहि। लष्य एक लष्षन भिरन ॥ छं० ॥ १२ ॥
काल थान कैमास। घलक चामंड घग धल्लिय ॥
सूर नूर सम सथ्य। सक्क पूजा सुर सिल्लिय।

मेवाती मुग्गल सुतथ्थ। पुचि दूक्काह परनाइय॥
मिय पुत्री सिर ताज। सुनौ प्रथिराजह व्याहिय॥
दोजांन मान चहुआंन दल। प्रथम कलस संभर धनिय॥
उच्छाह बहुत मंगल करहि। गीत गांन अलि-सुर बनिय॥ छं०॥१३॥

विवाह का फेरा फिरना।

करि तोरंन प्रकार। सार भारह पल संकिय॥
चौवेदी चौसाल। पिठु पच्छिम दिसि पंकिय॥
कमला सन मुप कमल। वेद धुनि दुज किय सज्जिय॥
चैत सुकल पष तीज। लगन गोधूलक रज्जिय॥
लता सुजोग जमघंट तजि। लगन सुद्ध मम सुद्ध यनि॥
मंगलाचार फेरा सुफिरि। अचल राज अजमेर पति॥ छं० १४॥

दहेज में आठ सखी, तिरसठ दासी, बहुत से घोड़े हाथी देना।

सषी अठु सिर ताज। अंग शृंगारि सुरँग बर।
सठ्ठि तीन दासी सुचंग। बरष सत अठु सरभर॥
एक सत्त सुभ तुरँग। दोइ एषें औराकिय॥
दोहथ्थी दस ढाल। रचे कद्दरिनि मद छाकिय॥
सुष पाल रजत सोभा सुबलि। सत पुत्तलि सेवा करै॥
डाइ चोदिस दाहिम दुचन। भुज भुजंग कीरति करै॥ छं०॥ १५॥
सात गज्ज सु विसाल। सित्त साहन सुभ्र चंगल॥
जर जरकस सिर पाव। सद्दि मांला नग न्रिमल॥
सहस एक सो ग्रंत। हुन्न दीनी चौहानं॥
जिन मंग्यौ तिन दियौ। करी कीरति सुप्रमानं॥
उच्छाह कियौ दाहिंम प्रथ। गढ उप्पर थंभह कल्यौ॥
प्रति पुच्छि चंद दाहिंम बर। परचि वित्त जल घर भल्यौ छं०॥ १६॥
दूहा॥ अति आतुर राजन मिलन। दाहिंमी मुष दिठु॥
ज्यों बद्दल में कुमुदिनी। चंद चमक्यौ निठु॥ छं०॥ १७॥

पृथ्वीराज और पुंडीरनी की जोड़ी की शोभा का वर्णन।

कवित्त ॥ बर समुद्र चहुआंन। रतन सों रतन उपज्जै ॥
दाहिम्मी उर अक्ष। कित्ति आभूषन रज्जै ॥
इह सुबंध बंधनह। जुगति बंधन बर राजिय ॥
इह अमोल मोलंन। वहमोल अह फि रि साजिय ॥
इह परषयौ कविन कित्ती चषम। वह चषम परष्षन परषयौ ॥
इह सोभ राज राजंन मधि। वह घर कंचन थरकयौ ॥ छं० ॥ १८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पुंडीरनी दाहिमी विवाह वर्णनं नाम षष्ठदशमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १६ ॥

अथ भूमि सुपन प्रस्ताव लिष्यते ॥

(सत्रहवां समय ।)

पृथ्वीराज का कुँअरपन में शिकार खेलना ।

कवित्त ॥ कुंअरप्पन प्रथिराज । राज आषेटक चिल्लिय ॥
जोव्वने मभ्भ रवन । म्रत पच्छिम दिसि मिल्लिय ॥
भाज्जि बीर वाराह । चक्क वज्जी चावद्दिसि ॥
मुक्कि थान पंचांन । मिले सूर संम्रंभ घसि ॥
लोहांन बीर आजान भुश्र । लोहा षंगार धारया ॥
इच थांन चुक्कि अप्पथांन मुक्कि । पंचां नन रव क्कारया ॥ छं० ॥ १ ॥

हाथी घोड़े आदि का इतना कोलाहल होना कि शब्द सुनाई नहीं पड़ता ।

दूहा ॥ पंच सबद गुंजत सुगज । चै चींसंत सद स्वानं ॥
गिर गुंजत परसद्द बहु । सद्द न सुनिये कांन ॥ छं० ॥ २ ॥

सिंह का क्रोधित होना ।

कवित्त ॥ सद्दपति संभरिय । कलंन मंडे रव संभत्ति ॥
ज्यों चल बयन ग्रसंत । विप्र घोजै निगंम मिति ॥
गुन अवगुन कुल बधू । सती पति हमा मानि मन ॥
नाग अंग चंपयौ । किसार अग्गै फुक्यौ मन ॥
चिक्कयौ पम पंचाननह । बाय आस सुमंन फुल्लिय ॥
द्रिग बोल्लि द्रिष्ट लगया सकल । नेज अंग कायर चल्लिय ॥ छं० ॥ ३ ॥

दूहा ॥ कांनन सद्दन संभरत । कूह कलह आषेट ।
थह सूतो बर जग्गयौ । चित्तु दंपति घटि पेट ॥ छं० ॥ ४ ॥

कवित्त ॥ दिष्ट राज अंमेरिय । सरिस संभरिय संपत्ते ।

के हंके चक्काद । केक चावद्दिसि धत्ते ॥
के पाइक बर बान । खग्ग धारी उठि नट्ठे ॥
के असवार करार । हीन कादर ह्वै नट्ठे ॥
के गए मुक्कि पाइक्क मगय । षीर छंटि नक्कर परन ॥
दिष्षयौ संग संगावली । बियौ न कोइ धीरज घरन ॥ छं० ॥ ५ ॥

सिंह का महा क्रुद्ध होना ।

सुनिय सूर बर चक्क । धक्क धक्कौ चावद्दिसि ॥
नरन सद्द कानन प्रसद्द । सिंघ किन्नो सु क्रोध ग्रसि ॥
बीरा रसु विझुरिय । पुंछि सिर झारि झपट्टिय ॥
दीप नयन प्रज्जरिय । संग दिसि क्रमें लपट्टिय ॥
बल अतुल तोल तोलंत पय । बुद्धौ मन सद्दह गुहिर ॥
फटिय धरकि मानहु गगन । सिस सनेह संगन बहन ॥ छं० ॥ ६ ॥

दूहा ॥ आषेटक हरखे सकल । सिसु सिंघनी मिष सिंघ ॥
स्नान देषि मुहु रव करत । छोलंघे नरसिंघ ॥ छं० ॥ ७ ॥

सिंह पर तीर का निशाना चूकना, पृथ्वीराज का तलवार से सिंह को मारना ।

कवित्त ॥ सबै सेन उभसांन । मुक्कि लग्गौ बर तामस ॥
तब पंचानन उक्कि । धक्कि चहुआनां पामिस ॥
लै कमांन विय बांन । षंचि नंष्यौ विय चुक्कौ ॥
समर सिंघ सब सथ्थ । नथ्थ चावद्दिसि हंक्यौ ॥
उंमरिय उचकि विज्जुल उलकि । पग कढ्ढौ सोमेसजा ॥
चंप्यौ नरिंद अवसान तकि । षंडो झारिय हथ्थना ॥ छं० ॥ ८ ॥
चंपि स्वामि विझुरिय । लोह संमुरि नग मुक्कौ ॥
लोहा लंगर राइ । बीर अवसान न चुक्कौ ॥
स्वांमि सथ्थ परिवथ्थ । दंड धर बर उभ्भारे ॥
रुधिर अंग झंझरिय । सिंघ पारिय अभ्भारे ॥
बन राय बीर बन चित्त रुष । सूर स्वांमि भ्रंम सुरषि ॥

घर नंग बीर तल वज्जय । सवर जोर जम दढ्ढकासि ॥ छं० ॥ ९ ॥
दूहा ॥ लंगे लोह उचाह करि । अरु चावद्दिसि चाषि ॥
षथ्य आइ कर तोन द्रढ । वर कमान कर साधि ॥ छं० ॥ १० ॥
कवित्त ॥ द्रढ कमान मुठ्ठिय प्रमान । गह्यौ तकि तोन जोर कर ॥
वरकि बरकि बंगाल । चित्तत चंचल सु बोलि गुर ॥
गुंजि गरज भूभांन । जंग देवत्त रत्त जुम्म ॥
नचि निवेस तजि माल । सिंघ सम बीर इक्क हुम्म ॥
आषेट तजिय चल्लिय सुभर । विविध सिंघ दिष्षन दिसा ॥
सम बीर बीर एकत भए । तहां दिष्यौ सोमेस जा ॥ छं० ॥ ११ ॥
षेध लगि कुटि बीर । सुवर दिषि बीर अष्ट क्रम ॥
सोमेसर सुञ सूर । लयौ पर नैाजिम रविनम ॥
मुष्टि दिष्टि मरदां मरद । मिल्ले पँचानन सूरं ॥
पिता जान वेबंध । द्रव्य अधो अध पूरं ॥
चय भाग तक्किय सिंघष सुषय । मुला ब्छल संगी चव्यौ ॥
उप्पमा चंद सुनि सुपन ज्यौं । सुषर बीर देषी दव्यौ ॥ छं ॥ १२ ॥

पृथ्वीराज के शिकार की धूम धाम का वर्णन, पृथ्वीराज का एक पेड़ की छाया में अपने सरदारों के साथ बैठना ।

छंद पद्धरी ॥ आषेट रमन प्रथिराज रंग । गिरवर उतंग उद्यांन दंग ॥
उत्तंग तरुन छाया अकास । अंनेक पंषि क्रीडहिं हुलास ॥
सुब्भा सराष छुट्टे सुगंध । तहां भ्रमत भोर बहु बास अंध ॥
फल फूल भार नमि लगी साष । नासा सुगंध रस जिह्व चाष ॥ छं० ॥ १३ ॥
पन्नग प्रचंड फूंकर फिरंत । देषंत नरह ते करत अंत ॥
अंनेक जीव तहां करत केलि । बट बिटपि छांह अवलंबि बेलि ॥
इक घाट विकट जंगल दुआर । तहां बीर ब्रह्म पिथ्थल कुंआर ॥
षामंग अंग चामंड राय । चूकै न ढुंढि सो काल घाइ ॥ छं० ॥ १४ ॥
दाषिनि दिशा कन्हा सुजोध । सम ब्रह्म सस्त्र सम ताधि क्रोध ॥
लोहांन पिठ्ठ बैठो प्रचंड । जंनार जोर जम देन दंड ॥

ढिग कन्ह बैठि पुंडीर धीर। आजान बाह बज्जी सरीर ॥
चामंड अंग कैमास काल। जीवार जोध पसु घरनि घाल ॥
तिन अग्ग आइ पज्जून राइ। सब षेल निपुन पसुदाइ घाइ ॥ छं० ॥ १५ ॥
दुअ ओर और सामंत जूह। षेदानि जोर करि करी कूह ॥
कर जोरि सेन सात सहस सथ्य। उड्डंत पंषि गहि लेइ हथ्थ ॥
जुर बाज कुही तुर मती धारि। उड्डंत जीव ते लेहि पार ॥
सच लेहि स्वांन ने रोझ झुम्मि। पिष्षियै सुकारंक बिन मंस भुम्मि ॥ छं० ॥१६॥
सकल अनेक उट्ठे कराह। बट बंटि मंसनह तुहि थाह ॥
सा मरन सूर परि बथ्थ लेहि। ते बंटि बंटि सब सथ्थ देहिं ॥
षरगोस स्वांन नह लहत बांटि। फिरि चढ़े जीव ते ओठ चाटि ॥
मृगमाल पवन उठि चले भागि। तिन परसु तीर सरबसि आगि ॥ छं० ॥ १७॥
अनजीव जीव वष्षांन कोंन। सिकार लग्गि इन हाल होंन ॥
सब सथ्थ नथ्थ हुअ एक जुट्टि। गज्यौ सु सिंघ जनु गगन फुट्टि ॥
धपि चल्यौ बीर प्रथिराज धीर। लंगरिय लोह नह इक्क तीर ॥
दिष्यौ सुजाइ सिंघनिय बाल। अवतार धरिय जनु पुहमि काल ॥ छं० ॥ १८॥
गरु राइ गुंग गज्यौ गहर। उचाइ पुछ मनु पुहमि चूर।
हथवांन हथ्थ चाकंत च्याल। दहुरनि दौरि मनोद बटि व्याल ॥
आकास सीस हड्ढे प्रचंड। जम रूप जीव नाडंत तुंड ॥
हक्यौ सुराइ संजम कुंआर। कुद्यौ सु तेज जनु तीर तार ॥ छं० ॥ १९ ॥
भए लथ्थ बथ्थ नर जीव जोध। न्रप अग्ग केलि जनु मल्ल क्रोध ॥
गल बांह घल्लि दब्यौ सुसूर। फाट्यौ सु उद्दर जम दक्क पूर ॥
हथवाह एक केहरिय कीन। पय हथ्थि अंष्षि करि कंन हीन ॥
आये सु दौरि सब सथ्थ जांम। चंगा सधन्नि हम कहिय स्वांम॥ छं० ॥ २०॥

संजम राय के बेटे का वीरता दिखलाना।

दूहा ॥ संजम राइ कुमार बल। करि संजम न्रप भ्रंम ॥
इक्क मिक्क एकत भए। अप्प चम्म पसु चम्म ॥ छं० ॥ २१ ॥
गर्जनि कुंभ जिसि हथ्थ हनि। फारि चीर धर डार ॥

संजम राइ कुमार सो। बध्धन मारि पछारि ॥ छं० ॥ २२ ॥
रीछ रोझ धाराह चनि। दट्टन बट्टे कोरि ॥
तिते जीव उर मभ्झत। कढि जम दंट्टे फोरि ॥ छं० ॥ २३ ॥
गिरि परवत नद षोह सर। लंघत लगी न बार ॥
लंगा इक्कन लंघयौ। अनी धार धर धार ॥ छं० ॥ २४ ॥

पृथ्वीराज का प्रसन्न होना और उसकी पीठ ठोंकना।

कवित्त ॥ भौ प्रसन्न प्रथिराज। बोल बुल्ल्यौ सुलंगरिय ॥
इत्तौ देउं प्रचंड। पंच जो मंड़ि मोचि जिय ॥
अहा राज सु अह्व। पाट अहा तंवुलं ॥
अहा वेस सुदेस। करौं आदर संमूलं ॥
बोलंत बैन प्रथिराज सुनि। जीव लज्जि नीची नजरि ॥
लगाइ कंठ ठुक्कि पिट्ठ कर। भलौ भलौ सब सथ्थ करि ॥ छं० ॥ २५ ॥
दूहा ॥ जब दैवत्त दिखाइहै। तब सच्चा सुभ बैन ॥
मिग तिसा ज्यौं देखियै। प्यास न बुभ्भै नैन ॥ छं० ॥ २६ ॥
सुपनंतर की प्यास ज्यों। भजै मची किहि भंति ॥
जब दैवौं तब पूजिहै। जो मन मझ्भ घंति ॥ छं० ॥ २७ ॥

सब लोगों का आगे बढ़ना, एक शकुन मिलना।

इह कहि करि अग्गें चले। मिले सूर सब संग ॥
तब दिष्षौ इक सगुन बन। भए सबन मन पंग ॥ छं० ॥ २८ ॥

शकुन को देख कर सब को आश्चर्य होना।

बत्त कहत प्रथिराज नै। पिष्यौ सगुंन उतपत्ति ॥
सकल साथ अचरिज भयौ। देषन इहै चरित्त ॥ छं० ॥ २९ ॥

एक सर्प को नाचते हुए देखना।

कवित्त ॥ अहि सुरंग मनि दुत्ति। देषि मंडै तंडव गति ॥
बालमीक बिल अग्र। इक्क फनि कुटिल क्रोध मंति ॥
इक्क पंथ्थ बिच विघय। थांन उंचौ रवि संह्यौ ॥

बर संमख उर चंपि। तेज जाज्जुलि सुचिन्हो।
आचिज्ज देषि प्रथिराज तत्र। चक्काव्यौ पामर सद्दर॥
धावर सु कन्ह चहुआंन को। बोलि बीर चष्षिग मद्दर॥ छं०॥ ३०॥
मद्धर कद्धर करिवार। भार जिन जुद्ध कन्ह बर॥
नरनाहां बर ग.ढ। गाह गिर दीह दुस्सन धर॥
मति जोतिग सहदेव। सगुन आगम गम जांनै॥
प्रबल मैबासन मारि। उथपि थप्प थिर थांनै।
थिर द्वैत दमित आजांन भुअ। उर किंवार वर बज्ज जुअ॥
कुह न किमह जै क्रोध तजि। दुअ मष्षिष निवारै,भुजनि दुअ॥ छं०॥ ३१॥

पृथ्वीराज का इस सर्प की देवी के शकुन का फल पूछना।

छंदपद्धरी॥ आयौ सुमद्धर मद्धरन नरेस। जिहि सुनत चढि भगि जान देस॥
उन्निद्द अंग उत्तंग कंध। वर बाहु बज्ज आरि घर असंध॥
बेहथ कलाइय हथ्य जाहि। पग दौरि वियन बर रष्यौ गाहि॥
मष्षिषी सु उभय पय टांसि जाइ। कलहंत क्रोध दिष्षय बलाइ॥ छं०॥ ३२॥
रष्षन सु निजरि सब अग्ग पच्छ। चुक्कवै चोट हनि तुच्छ तच्छ॥
कल छेद भेद तस करन राव। पर भूमि अप्प हस धरै दाव॥
दुच सहस मद्धर जिन संग जोध। कमनैत काल अनमी अबोध॥
बहु ब्रषभ गाय मष्षिषीन तुंग। केवी कथक गडरन्न पुंग॥ छं०॥ ३३॥
घुंमत मथांन जिन घरन घोर। आगम असाढ जनु घटा सोर॥
बेपार दुग्ध जिन घरन षर्चे। अनभंग बुद्धि जिन समर चर्चे॥
विरदैत एक वांने न धार। चमरैन एक इक तवल तार॥
सिर बद्दै बिहर पग पच्छ देन। द्रिग समर देषि सिर लगत गैन॥ छं०॥ ३४॥
गुज्जर अहीर असि जाति दोइ। तिन बीच लोपि सक्कै न कोइ॥
चाचिग हजूर कुंम्मार आइ। करिथै हुकंम सिर ल्यौं चढाइ
बुझे सुबैन चहुआंन राउ। कहि सगुन सर्प देवी प्रभाउ॥ छं०॥ ३५॥

ब्राह्मणों का फल बतलाना कि बिना युद्ध पृथ्वी से आपको बहुत धन मिलेगा।

दूहा॥ मद्धर कद्धर गति बैन कहि। ज्यों बुझै दुजबैन॥
घरी एक सम्हौ रहै। तौ लभ्भै न्नप चैन॥ छं०॥ ३६॥

कुंडलिया ॥ मंने संभरि वार सुनि । इह अपुव्व गति इच्छ ॥
मझ्झ कदन घरि एक्क में । आवै भूमि इ लच्छि ॥
आवै भूमि इ लच्छि । पंषि माता इष सारी ॥
दल जित्ते षुरसांन । कित्ति जग ज्यों विसतारी ॥
इन सगुननि चहुआंन । तुच्छ दुष अतिहि अभन्नौ ॥
विन गुह्यइ इह लभ्र । द्रव्य निकसै आभन्नौ ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ कुटिल दिष्ट तिन चिन्ह करि । कही मच्चर इक बात ॥
सो ब्रह्मा नन जांनई । बात भविष्यत घात ॥ छं० ॥ ३८ ॥

पृथ्वीराज का देखना कि सर्प आधा बिल में है और आधा बाहर, उसके फन पर मणि के ऐसी देवी चारो ओर नाचती है और राजा पर प्रसन्नता दिखलाती है।

कवित्त ॥ संभलि पिथ्थ कुमार । व्योम दिष्यौ स्रप सारिय ॥
अद्धौ बंबी मध्य । अद्ध उँचौ अधिकारिय ॥
ता फनि ऊपर मनि प्रमांन । देवि चावद्दिसि नंचै ॥
दिष्यो इक्क मन मंडि । राज दिवि सगुनह संचै ॥
आवै न पच्छ नथ्थह निजरि । न्टपति हियं अत्यंत सुष ॥
जंपयौ मच्चर धावर धनू । सगुन बीर जांनै सरुष ॥ छं० ॥ ३९ ॥

देवी का इतने में उड़कर आम की डार पर बैठना और साग गिराना, पृथ्वीराज का बड़ा शकुन मानना।

दूहा ॥ इतें देवि उडि वैठि अँब । चंच गिराइय साग ॥
दौरि मच्चिर मव चथ्थ किय । लै नरिंद तुअ भाग ॥ छं० ॥ ४० ॥

सर्प सर्पिनी का मिलना और वहां से दूसरी जगह उड़जाना।

सर्प आंनि सर्पिनि मिलिय । भषु दीनों तिन षाइ ॥
निय आसन थल छंडि कै । अन स्थल उड़ि जाई ॥ छं० ॥ ४१ ॥
इह अचिज्ज पिष्षिय सकल । चाषिग पुछि फिरि वत्त ॥
तुम जांनो सब फल सगुन । मच्चर कच्चर मन तत्त ॥ छं० ॥ ४२ ॥

शुभ शकुन का फल वर्णन।

छंद पद्धरी ॥ तत बत्त सघर तिन कही बत्त। या सगुन लाभ बरन्यौ न जत्त ॥
दिन तुच्छ मद्धि घन लाभ होइ। ता पच्छ कंक दुख राह जोइ ॥ छं० ॥ ४३॥
तुम जैत होइ भग्गो प्रवांन। धन जुद्ध लाभ लभ्भै बखांन ॥
इह लग्न सहूरत इसो देव। चल भूमि अप्पि तो करै सेव ॥ छं० ॥ ४४॥
संसार किति चहु चक्क होइ। बंदै सुवाह बल दीन दोइ ॥
सागुन्य सगुन फल कहे जब्ब। प्रमुदित्त मन चहुआंन तब्ब ॥ छं० ॥ ४५॥
जिम मेह मोर आनंद होइ। राका रयनि आनंद तोइ ॥
रिति राइ पाइ तरु फलत फूल। जिम सिद्ध देव पिय चरत सूल ॥ छं० ॥ ४६॥
जिम मंत्र सक्ति साधक लहंत। रस धात रसाइन लहि चहंत ॥
जिम इष्ट लाभ आराध वंत। प्रमदा सुहित जिम आइ कंति ॥ छं० ॥ ४७॥
तिम भयौ सुष्य प्रथिराज अंग। बजि पंच सब्द बाजै सुरंग ॥ ४८ ॥

शिकार बंद कर के बन में पृथ्वीराज का डेरा डालना।

दूहा ॥ पंच सबद बाजित्र बजि। तजि सगया चहुआंन ॥
कानन मध्य सु उत्तरिय। किनौ कुअर मिलांन ॥ छं० ॥ ४९ ॥

डेरों की शोभा, बिछौने पलंग आदि की तयारी वर्णन, पृथ्वीराज का शिकार की बातें करना, सरदारों का सत्कार करना, सब का ठंढा होना, भोजन की तयारी।

छंद नाराच ॥ कह्यौ मिलांन राजयं। बरंनि कब्बि राजयं ॥
फिरंग सु फनक्कसी। अरद्दु जंज रक्कसी ॥ छं० ॥ ५० ॥
सुवंन वंस राजतं। उभे सुमक्ष मक्षतं ॥
फिरंन सूर लग्गतं। अजब्ब जेव जग्गतं ॥ छं० ॥ ५१ ॥
गिरिद्द डोरि रेसमं। सुपंच रंगयं भ्रमं।
तने तानस तंबुअं। करे सुपक्करं भुअं ॥ छं० ५२ ॥
विछाइ कैदुली चयं। धरे प्रजंक बीचयं ॥
सवारि सेज पथ्थरं। सुगंध फूल बिथ्थरं ॥ छं० ॥ ५३ ॥
गरम्म रूम तोसयं। ढके पलंग पोसयं ॥
कनंक मै सिंघासनं। अच्छादितं सुभासनं ॥ छं० ॥ ५४ ॥

घरे सुपिट्ठ तक्किए । अनस्स सेन ढक्किए ॥
अगें अषन्नि अंगनं । सिका करै क्रिरङ्गनं ॥ छं० ॥ ५५ ॥
कुंमकुमा गुलावयं । सुनेक छंटि आवयं ॥
तहां सु बैठि पिथ्थयं । करै अषेट कथ्थयं ॥ छं० ॥ ५६ ॥
अनेक भंति चंदयं । पढै बिरद्द छंदयं ॥
सामंत स्त्रब्ब नम्मियं । मिलांन अप्प क्रम्मियं ॥ छं० ॥ ५७ ॥
सें हथ्थ चाहुआनयं । दए कपूर पानयं ॥
षवास पास वानयं । हजूर उभ्भ आनयं ॥ छं० ॥ ५८ ॥
बिरष्य बद्द जंबुअं । षिरन्न जद्द अंबुअं ॥
गयंद बंधि अंदुअं । झरंत मद्द बिंदुअं ॥ छं० ॥ ५९ ॥
करंत केलि सारसी । मलप्प ते महारसी ॥
बिरद्द नेंक बोलते । पलक्क चष्ष षोलतें ॥ छं० ॥ ६० ॥
महावतं पुकारतें । हठं न छै अहारतें ॥
पियंत नीर यों गरें । गरज्ज नभ्भ ज्यों गरें ॥ छं० ॥ ६१ ॥
कपोल लोल हल्लते । चबेल सुंड झल्लते ॥
गिलोल चोट लग्गतें । बिरष्य ओट भग्गतें ॥ छं० ॥ ६२ ॥
दिपंत दंत उज्जलं । पहार पंति कज्जलं ॥
दुरद्द हद्द बेसके । दियें गनेस भेस के ॥ छं० ॥ ६३ ॥
सुपीलवान उभ्भयं । चरष्षि गड्डु षुभ्भयं ॥
करे तुरंग काहूजं । भरें अमंन बाहूजं ॥ छं० ॥ ६४ ॥
मिटै डरं पसीनयं । पलान दूरि कीनयं ॥
न्हवाइ नष्ष सिष्षयं । अक्खादि कंध रष्षयं ॥ छं० ॥ ६५ ॥
रतब्ब दै अहासयं । करे षपत्त घासयं ॥
ता पच्छ जाइ साहनी । अरांम पंड बाभनीं ॥ छं० ॥ ६६ ॥
कहूं करं भलारयं । भरी रषत्त भारयं ॥
अनूचरं उतारयं । संभारि ढार ढारयं ॥ छं० ॥ ६७ ॥
हुलास सेन उप्पजै । भोज्जंन भष्ष निप्पजैं ॥ छं० ॥ ६८ ॥

सब लोगों के साथ पृथ्वीराज का भोजन करना ।

दूहा ॥ करि मिलांन मध्यांन हुअ । न्त्रिपति भोज छह भंति ॥
एकत मिलि आहार हुअ । रही न मन कछु षंति ॥ छं० ॥ ६८ ॥

संध्या होने पर सब लोग घर लौटे ।

मादक में नउ दीप किय । बढ्ढि सुगंधन तार ॥
निसि आगम बहुरे ग्रहन । जित तित भूपन भार ॥ छं० ॥ ७० ॥

पृथ्वीराज का घर पहुंच कर भूमि देवी (पृथ्वी) को स्वप्न में देखना ।

चढि करि संभरि वार चलि । ग्रेह सपन्नौ जाइ ॥
अंधारी दारुन निसा । भू सुपनंतर आइ ॥ छं० ॥ ७१ ॥

भूमि देवी के रूप सौन्दर्य का वर्णन ।

कवित्त ॥ पीत वसन आछद्दिय । रत्त तिलकावलि मंडिय ॥
छूटिय चंचल चाल । अलक गुँथिय सिर छंडिय ॥
सीस फूल मनिबंध । पास नग सेत रत्त बिच ॥
मनों कनक साषा प्रचंड । गहै काली उप्पंम रच ॥
मनो सोम सहायक राह होइ । कोटि भांन सोभा गही ॥
अदभुत द्रब्य ससि अहि गह्यौ । साष सुरंग भनावही ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुम कौन हो और इस समय यहां क्यों आई हो ।

दूहा० ॥ सुरंग त्रिया सोभी नृपति । वचन सुपन कहि लाल ॥
का तूं सुंदरि किन बरन । क्यों जभी इहि काल ॥ छं० ॥ ७३ ॥

भूमि देवी का कहना कि मैं वीरभोग्या हूं, मेरे लिये सुर असुर सब शंकित रहते हैं पर जो सच्चा वीर मिले तो मैं बहुत रस स्रवती हूं ।

कवित्त ॥ बीर भोग वसुमती । बीर भोगी वर चाहैं ॥
चाहै भाइ कटाच्छ । बीर बीरां मन साहैं ॥

वीरां थी पद्धरी। विना वीरां वर वंकिय ॥
हूं दिव्य नारी एह। सुरां असुरांनह संकिय ॥
मिष्टांन पांन बहु भोग रस। रस सुगंध वीरन द्रवौं ॥
अनभंग वीर जोवित्त वरि। रस अनेक निहचै श्रवौं ॥ छं० ॥ ७४ ॥

गाथा ॥ पंक जनय नीवासं। सुपनंतर राज दिट्ठायं ॥
जानिज्जै रति अंगं। कामं उछाह दीपयं मालं ॥ छं० ॥ ७५ ॥

राजा का विचार में मग्न होना।

कवित्त ॥ मन लग्गौ विसमित विचार। राज चिंता उप्पंनिय ॥
भोमि वयन मन मभ्भ। सु कर वर गहि कर लिन्निय ॥
सुभ लच्छिन उत्तंग। अंग अंग गुन पिन्निय ॥
ता समांन छवि बांम। आंन करतार न किन्निय ॥
मानीक वंस दानव कुलह। भोमि चरन्न निवास करि ॥
जै जथा सवद सुरपुर भयौ। करै केलि कलि इंद्र सर ॥ छं० ॥ ७६ ॥

पथ्वीराज से भूमि का कहना कि पट्टू बन में अगनित धन है।

दूहा० ॥ कहै भूमि प्रथिराज सों। स्तुति दै करि मन सुद्धि ॥
बसै द्रव्य अगनित सगुन। पट्टू पुर वन मद्धि ॥ छं० ॥ ७७ ॥

अजयपाल चक्रवर्ती राजा द्वापर में था, उसने वहां असंख्य धन रक्खा है ॥

कवित्त ॥ अजैपाल चक्कवै। द्रुग्ग अजमेर द्वापरह ॥
तिहि बानिक पुर सिद्ध। लिखिय संजीन अपारह ॥
हेम कोटि दस छून। द्रुन देवर धर मंभ्भह ॥
धरी आइ दुक पत्थर। देव देवी तन सुभ्भह ॥
अर्चांन काल पूजादि वह। तई पत्तौ दुन राज वर ॥
अप्पी असीस भंगी लच्छिय। कांम कह्यौ दुजराज नर ॥ छं० ॥ ७८ ॥
इक्क सहस्र अपि द्रव्य। फेरि विप्रह अप्रमानं ॥
सुनी सर्व्वहि वर विप्र। दई सुमत्ता वर थांनं ॥
फिरि पत्तौ तहां राज। दिवी तब श्राप दुम्भर ॥

अप्प भयौ सुद्द राज। रच्चै धन रप्पि गड्डौ धर ॥
सो मति द्रव्य तिद्दि थांन रद्दि। तास सोद्द राजन करै ॥
षायौ न कोइ पैच्चै न को। यों अरत्त अर्जुन फिरै ॥ छं० ॥ ७९ ॥

दूहा ॥ को गड्डै षायौनि को। को विलसै करि भेव ॥
माया छाया मध्य दिन। ज्यों विषया वल्ल देव ॥ छं० ॥ ८० ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासके भूमिस्वपन नाम सप्तदशो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १७ ॥

अथ दिल्ली दान प्रस्ताव लिष्यते ॥

(अट्ठारहवां समय ।)

अनंगपाल के दूत का कैमास के हाथ में पत्र देना ।

दूहा ॥ दिय पत्री कैमास कर । अनँगपाल कवि दूत ॥
वर बंची सामंत सत । विंमत अप्पर भूत ॥ छं० ॥ १ ॥

पत्र में अनंगपाल का अपनी बेटी के बेटे पृथ्वीराज के लिखना कि मैं बूढ़ा हुआ, बद्रिकाश्रम जाता हूं, मेरा जो कुछ है सब तुम्हें समर्पण करता हूं ।

साटक ॥ स्वस्ति श्री अजमेर द्रोन दुरगे । राजाधिपो राजनं ॥
पुत्री पुत्र पवित्र पथ्थ अधनो । पित्री सवं तावनं ॥
मा.हद्दा दृद्ध विद्ध तप्प सरनं । बद्री निवंतं ननं ॥
आश्रमं पुर ग्रांम चथ गय समं । संकल्पितं त्वार्थयं ॥ छं० ॥ २ ॥

पत्र पढ़कर सब का विचार करना कि क्या करना चाहिए ।

दूहा ॥ बंचि पत्र कैमास कर । न्रप सामंत समंत ॥
आइ दूत दिल्ली पुरह । सुवर विचारहु मंत ॥ छं० ॥ ३ ॥

कोई कहता है कि दिल्ली चलना चाहिए, कोई कहता है पहिले पृथा कुंआरि का व्याह रावल समरसिंह के साथ करना चाहिए ।

चौपाई ॥ इक कहै दिल्लिय चल्लि राजं । मातुल बोलि तुमं प्रथिराजं ॥
इक कहै भगिनी परनाइय । समर सिंघ चित्रंग सुराइय ॥ छं० ॥ ४ ॥

कवित्त ॥ समर सिंघ रावर नरिंद । चित्र चित्रंग देव दुति ॥
मिन सगपन संमुचौ । राज जानंत राज गति ॥
कै दिल्ली दिसि चल्लिं । बाल संभर अधिकारिय ॥
सोमेसर पितु सतें । करिय जिन बोल सुभारिय ॥

आवै न संत चिय बंध हत । अनंगपाल संमुह चलिय ॥
ता पच्छ प्रथा आगम सु प्रथ । देवमत्त व्याहं घुलिय ॥ छं० ॥ ५ ॥

राजा सोमेश्वर सब सामंतो को एकत्र कर परामर्श करता है कि क्या कर्तव्य है, पुंडीर राय ने सलाह दी कि आता हुआ राज्य न छोड़ना चाहिए ।

सित सामंत ह नृप्प । बैठि सब सध्यय मंतर ॥
कैमासह चामंड । राय रामह बड गुज्जर ॥
चाहुत्ति राय हमीर । सलष पांमार जैत सम ॥
कह्यौ राज हम मात । तात अप्पी दिल्ली तम ॥
पुंडीर राइ इम उच्चरै । करौ सकल आदर सुधर ॥
उप्पाइ अनँत मचि लिज्जियै । आदि भ्रंम चंमर असुर ॥ छं० ॥ ६ ॥

चंद बरदाई का मत पूछना ।

चौपाई ॥ सब भट पूछि पूछि कवि चंदह । तुम बरदाइ लहौ बुधि कंदह ॥
किम अप्पे पितमात धरंनिय । सब बिरतंत कहौ मन करनिय॥ छं० ॥ ७ ॥

चंद ने ध्यान कर के देवी का आह्वान किया और देवी की आज्ञा से कहा ।

तब बरदाइ सुद्ध मन कीनौ । सुमरिय सकति ध्यांन मन लीनैन ॥
देवी आइ कह्यौ बर तंतं । सो अप्पै प्रथिराज सुमंतं ॥ छं० ॥ ८ ॥

व्यास ने जो भविष्यत बानी कही थी वह सुनाकर चंद का कहना कि आप का राज्य खूब तपैगा ।

कवित्त ॥ पुब्ब कथा बरनंत । कहो व्यासह ज्यों चंदह ॥
सची भविष्यित बात । सुनी सो चौह नरिंदह ॥
तोंअर बद्दी जाइ । पथ समप्पै चहुआंनं ॥
तपें तेज रवि जेम । कहैं सरसें परवानं ॥
इह मत्त सत्त मन्नौ मनह । अह पुब्बह मंडी सपुन ॥
सामंत चित्त धर भ्रंम रत । सों पुब्बह सचहु अपुन ॥ छं० ॥ ९ ॥

दूत से पृथ्वीराज का पूछना कि नाना (?) को वैराग्य क्यों हुआ ।

दूहा ॥ दूत हजूर बुलाइ करि । पुछ्त पिथ्थ कुंआर ॥
क्यों मातुल हुअ घर अरत । सो कहो सत्त विचार ॥ छं० ॥ १० ॥

दूत का अनंगपाल की प्रशंसा ।

गाथा ॥ दिल्ली अनंग नरिंदं । दंदं दहन दुष्टं दलनायं ॥
त्रिगुन तेज सुअंगं । पुहमी इंदं पहुमी सरनायं ॥ छं० ॥ ११ ॥

अनंगपाल का प्रताप कथन ।

दूहा ॥ बंक न्रपति इक अंक लौ । मिटत करभ्भर पांन ॥
इम इच्छै अवनी अटल । सत्रु न सुनियै कांन ॥ छं० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ गज गज्जत दरवार । घुरत दमंम वद्द धुअ ॥
वज्जत हथ पुर नार । गाल गुज्जत सु छंट मव ॥
तंत तान झंझार । भमर गुंजार वास रस ॥
मुकट बंध राजान । लीन सेवंत हुकंम बस ॥
यों अवनि इंद्र तूंअर तपै । कंपै रोर मैाजन मनह ॥
चव वरन सरन सुष्षह रसहि । दुष्पन[1] किहिं दिष्षिय तनह ॥ छं० ॥ १३ ॥

अनंगपाल के राज्य में दिल्ली की शोभा वर्णन ।

अनँगपाल तोंअर सुढाल । सोज वासंत दिल्लीय बर ॥
घर सुढार कालिंद पार । अठ्ठार ब्रंन थर ॥
वर विहार प्रक्कार । विपन वाटिका विराजिय ॥
ग्रिह उतांन वतांन । गोष जाली उप साजिय ॥
सब लोक असोक अनंद में । अप्प अप्प रह उद्दरिय ॥
जाजंन जाप अझ्झा परषि । होम धोम धू विध्थुरिय ॥ छं० ॥ १४ ॥

अनंगपाल का वृद्धावस्था में सपना देखना कि सब तोंअर लोग दक्षिण दिशा को जा रहे हैं ।

अति तोंअर परिवार । वृद्ध बहु रिद्ध अनूपं ॥
भ्रंम क्रंम बहु रीति । चलै सब लोक सु कूपं ॥

(१)–मो–दुखन ।

बीर सेन सुत बीर । पाल वष्षु काल धरंध्विय ॥
मन लग्गौ बैराग । करन क्रत ऊंच करच्चिय ॥
निसि मध्य सुपन पिष्यियै दुरय । सव तूंअर दच्छिन चल्लै ॥
आरत्त माल कंठह कुसुम । दूरि मग्ग बेनी मिलै ॥ छं० ॥ १५ ॥

स्वप्न से जागकर अनंगपाल का हरि स्मरण करना ।

अनँगपाल पहु सुपन । देषि अयन चल चित्तह ॥
हरि हरि हरि हरि चवै । दृष्ट फुनि भून विहत्तह ॥
निसा जांम इक सेष । अप्प सुपनौ फुनि पिष्पिय ॥
अप्प तहनि सम उट्ठि । मिध्य थानक तप दिष्षिय ॥
इह लष्यि चित्त चंमकि न्रपति । पांनी पाय अँदोलि अप ॥
नरसिंघ नाम जंपिय पृथुक । सुत पुन नहीं पवित्त वप ॥ छं० ॥ १६ ॥

दो घड़ी रात रहे स्वप्न देखा कि एक सिंह जमुनाजी के किनारे आया है, दूसरा उस पार से तैरकर आया, दोनों सिंह आमने सामने बैठ गए और प्रेमालाप करने लगे, इतने में नींद खुल गई, सबेरा हो गया ।

घटिय उभै निसि सेष । ताम सुपनौ फुनि पिष्षिं ॥
तट कालिंदी तीर । सिंघ क्रीडत दिव दिष्षि ॥
ताम समै इक सिंघ । पार उत्तरि जल आयौ ॥
उभै रुंघ सो मिल्या । नेह क्रीड़ा दरसायौ ॥
बैठो सुसिंघ वय मंडि करि । बैठि सनंमुष सिंघ दुअ ॥
जग्गायौ बीर सिंघह सुनन । नाम सुपिष्षौ प्रात हुअ ॥ छं० ॥ १७ ॥

अनंगपाल का व्यास जगजोति को बुला कर स्वप्न का प्रश्न करना ।

तव तूंअर चित चक्रत । उट्ठि एकंत मंत हुअ ॥
हरि जोतिह जग जोति । बोलि दैवग्य तथ्य दुअ ॥
दिय आसंन तमोर । बचन आभासि भाव दिय ॥
कहौ सुपन बिरतंत । आदि अंत कारंन तिय ।
संभलें सुपन मन दुज दुमन । देषि राज बुझ्यौ न हसि ॥

किन कहीं सब छंदी दुमय। सब विम्मान सुकाल बसि॥ छं॰॥ १८॥

व्यास ने ध्यान करके कहा कि दिल्ली में चौहान का राज्य होगा जैसे सिंह आया था, सो तुम भला चाहो तो अब तप करके स्वर्ग का रास्ता लो।

तब दैवग्य विचारि। एक एकन मुष लोकिय॥
सब गंठी विम्मान। एक कारन चित दो किय॥
कहै सुनौ सुत वीर। दिष्षि चहुआंन निवासं॥
ज्यों दिष्यौ तुम सिंघ। मिलै तुंअर सम तासं॥
तप सद्धि तुमह सद्दौ सुरग। जो इच्छौ उड्डन अपन॥
तुंअर विनास अग्गह अतुल। सब भविख्य कारन सुपन॥ छं॰॥ १९॥

इस भविष्यवानी को सोचकर विचार करना कि दिल्ली का राज्य अपने दौहित्र चौहान को देना चाहिए।

दूहा॥ सबै भविख्य विचार मन। पुचि पुच चहुआंन।
तिहि अप्पों दिल्लिय सुदन। पसरै कित्ति प्रमान॥ छं॰॥ २०॥

अनंगपाल का मन में यही निश्चय करलेना कि पृथ्वीराज को राज्य देकर बनबास करना चाहिए।

कवित्त॥ बालप्पन पन ज्वांन। गनंच विद्दप्पन आयौ।
एक समै एकंन। चित्त परब्रह्म लगायौ॥
पुच होइ संसार। भूमि रष्षै षल षंडै॥
बढै बंस बिसतार। कित्ति दसहूं दिसि मंडै॥
अब करों जोग जंगम जुगति। भुगति मुगति संगो धरिय॥
पुत्तीय पुत्त अप्पों पुहमि। इम चिंतन मन में धरिय॥ छं॰॥ २१॥

अनंगपाल का मंत्रियों को बुलाकर मत पूछना।

छं॰ पद्धरी॥ बोलेति मंत मंती प्रमांन। स्वामित्त भ्रंम जे चंग जांनि॥
रामच सुराज चिंतै सदाय। धुर भ्रंम रूप बांनी सदाइ॥ छं॰॥ २२॥
एकंत मचल राजन बयट्ठ। गुदराइ बोलि दरबांन तट्ठ॥

संसार विरत मन दिष्षि राज। चीकह कुंभ जल बूंद आज ॥ छं० ॥ २३ ॥
अग्यांन चित्त ज्यों दिठ्ठ ग्यांन। लोभीय चित्त ज्यों हरि न ध्यांन ॥
कुलटा सुनेंन नहिं लज्ज जेम। कपटीय मनह नहि प्रेम नेम ॥ छं० ॥ २४ ॥
बांनिक बनिज नहि प्रीति अंग। दिष्यौ सराज हून परि बिरंग ॥
बुल्ले सु बिनय करि बैंन एव। कछु दुचित अज्ज मन लगत देव ॥ छं० ॥ २५ ॥
प्रति वान कहिय अब हमहिं ईस। बिन पुच सचु संसार दीस ॥
न्टप वंस अंस जो पुच होइ। अवनीय अप्प रष्षेति सोइ ॥ छं० ॥ २६ ॥
पुची सपुच चहुआंन पिष्य। तिन देंउं राज मो सरन तिथ्य ॥
मंचीन मंत तब कहिय राज। चव जुगनि जुगति जे भूमि काज ॥ छं० ॥ २७ ॥
जिहि जियत जीय धर रमै ओर। तिहि नृप नहीं कहि लोक ठौर ॥
जनमंत पुब्ब जिन तप्प होय। करि कष्ट कष्ट तप भूमि जोइ ॥ छं० ॥ २८ ॥
धर पाइ राइ धर भ्रंम बढ्ढि। धर भ्रंम क्रम सुरलोक चढ्ढि ॥
जो गंग जुगति कल कठिन कांम। कछु षंगधार बिस्रांम ठांम ॥ छं० ॥ २९ ॥
हम सीष मांनि अनंगेस राइ। भूमिय सु तजै सुष कित्त जाइ ॥
मंचीन राज तब कहीय बत्त। मानों कि वैर गहि गुंग गत्त ॥ छं० ॥ ३० ॥

मंत्रियों का मत देना कि राज्य बड़ी कठिनता से होता है इसे न छोड़ना चाहिए।

अरिल्ल ॥ ते मंची जंपिय नृप बत्ते। किहि गुन राज भूमि अनुरत्ते ॥
गत्ति अगत्ति जिन धर पर अष्षी। तिहि धरपति धर कबंहु न रष्षी ॥ छं० ॥ ३१ ॥
कवित्त ॥ जो धरपति धर छंडि। भम्यौ नल राय हेत चिय ॥
जो धरपति धर छंडि। तौ राम रष्षी न सीयत्तिय ॥
जो धरपति छंडि। भमिय सुत पंड षंड बन ॥
धर कारन विक्रंम। कियौ कग्गामिष भष्षन ॥
धर मंडि न छंडि अनंग नृप। तिथ्थ भमब राजिंद नन ॥
धर काज राज धर षंडियै।। चिंत न दिष्षहि राज मन ॥ छं० ॥ ३२ ॥

मंत्रियों की बात न मानकर अनंगपाल का अजमेर पत्र भेजना।

अरिल्ल ॥ कहिय मंच नह मनिय राय। लिषि कागद अजमेर पठाय ॥

सुनि वत्ती नृप भर किअ कानं । राका चंद उदधि परमानं ॥ छं० ॥३३॥

कवि चंद का मत सुनकर पृथ्वीराज का दिल्ली जाना निश्चय करना ।

दूहा ॥ सुनिय राज कवि चंद कथ । उर आनंद अपार ॥
पित मातुल मिहन नृपति । कियो सुगवन विचार ॥ छं० ॥ ३४ ॥

कैमास का भी यही मत होना ।

थपिय मत्त कैमास सोइ । धरनि धरत्तिय तथ्थ ॥
चढ़ि चहुआन सुसंचरिग । पुर दिल्लीय संपत्त ॥ छं० ॥ ३५ ॥

कवित्त ॥ सुनषि राज तूअर नरेस । एक बर बुद्धि विचारिय ॥
एक बनिक पाचार । सु वय अंगच तिन तारिय ॥
नाहि बाल वय नन्द । सीस हृत दुल्लभ लीनौ ॥
क्रम काल मन हुल्यौ । चित्त मति संत उपन्नौ ॥
अनंगेस राज तोंअर प्रगट । उद सुमत्ति जिन लोह उर ॥
मम भूमि मुक्कि राज्यंद सुनि । प्रेम धुरा रष्षै न धर ॥ छं० ॥ ३६ ॥

दूत ने आकर समाचार दिया, पृथ्वीराज का धूम धाम से दिल्ली की ओर यात्रा करना ।

दूहा ॥ कही दूत सारी विवरि । आदि अन्त जो बत्त ॥
चढ़ि चहुआंन सु संचरिय । जुगिनि पुर लै बत्त ॥ छं० ॥ ३७ ॥

चैापाई ॥ लै सम सूर चल्यौ चहुआंनं । जगत सूर देव प्रति मांनं ॥
सगुन सकल संमुष बनि आए । गयौ राज दिल्ली समचाए ॥ छं० ॥ ३८ ॥
गयौ राज दिल्ली परिमानं । मिले सूर अनंगेस निधानं ॥
देषि भूमि दिषि थांन प्रामानं । राजा सुष सल्यौ चहुआंनं ॥ छं० ॥ ३९ ॥

अनंगपाल ने दौहित्र से मिलकर बड़ा उत्सव किया और अच्छा दिन दिखला कर दिल्ली का राज्य लिख दिया ।

दूहा ॥ मातुल पित मिंल्यो सु पहु । मिलि अति उच्छव कीन ॥
बासुर सुर रवि इंद बल । लिषि दिल्ली पुर दीन ॥ छं० ॥ ४० ॥

पृथ्वीराज के राज्याभिषेक का वर्णन।

छंद उधोर ॥ पयो चर पाइ पाइच अंत। दच जुग मत्त रत्त गुरंत ॥
भाषंत चंद छंद उधोर। प्रति पग कची पन्नग जोर ॥ छं० ॥ ४१ ॥
लिषि वर घटी मह्नरत मत्त। दुज घन वेद विद्यव सत्त ॥
आसन हेम पट्ट सुढार। मांनिक मुत्ति दुत्ति उजार ॥ छं० ॥ ४२ ॥
मंडित कलस विप्र विनोद। राजन अनिंघि मानि य[1]मोद ॥
धुनि वर विप्र मंडन वेउ। माननी सकल साजन नेउ ॥ छं० ॥ ४३ ॥
बज्जहि बहुल बज्जन भार। गांनहि मांन ग्रांम सुनार ॥
नचि चिय पाच भरच्छ सुभाव। गांनहि सिंघ विक्रम साव ॥ छं० ॥ ४४ ॥
सज्जित सघन सिंदुर दंति। छच सु पुहप सोभन पंति ॥
धवलें चढिय निरषति नारि। गौषन रंध्र सुराजकुँ आरि ॥ छं० ॥ ४५ ॥
दमकत दसन हंस विराज। मानहु तडित अभ्र अग्राज ॥
वसनह रसमि रज्जित कोर। सजि सित सघन बाद्दव जोर ॥ छं० ॥ ४६ ॥
राजत श्रवन रवनि नाटंक। राका मनहु सोभ मयंक ॥
सोभन लाल कुंडल कंति। मनु बधू इंद इंद मिलंत ॥ छं० ॥ ४७ ॥
चढि सु पट्टु सोहत दंति। मनों इंद्र ऐरापंति ॥
मांडत विप्र वेंद सुवेद। जग्यहि जपति भेदहि भेद ॥ छं० ॥ ४८ ॥
पट्टहि पुत्ति पुत्त अरोहि। विंजन न्टप्प चामर सोह ॥
मांडन मुकुट उत्त सुमंग। रचि बहु धान मौल सुरंग ॥ छं० ॥ ४९ ॥
दुति कलस कारिय तास। मारिच कोटि इंद उचास ॥
धुम्र सम मंडि छच अजेर। मनों चरि बाल बिंब सुमेर ॥ छं० ॥ ५० ॥
तिलकह जटित रंजित भाल। भाल चल कारहि दीप उजाल ॥
चरचहि मुत्ति कुंदन थाल। पूरति सुपहु पूजति बाल ॥ छं० ॥ ५१ ॥
चरचति सुकर अनंगपाल। सोहति कंठ मोतिन माल ॥
दुज वर चवै आसिष वेद। मांननि गांन तन सु अषेद ॥ छं० ॥ ५२ ॥

---

(१) मो०–मानत।
(२) मो०–भाल।

चय गय चय दिछिय देस । समप्पचि पुत्ती पुत नरेस ॥
षोडस दांन पूरन मांन । अप्पे बिप्र घेन सुथ्थांन ॥ छं० ॥ ५३ ॥
अप्प बिप्र गेव सुथ्थांन । अचन सुतप्प तप्पिय थांन ॥
बद्रिय नाथ धरिय सु ध्यांन । ....॥ छं० ॥ ५४ ॥
तजि ग्रह मोह माया जाल । सज्जिय जोग बंचिय काल ॥
रचिय वांन प्रस्थह रूप । क्रमि रह तप्प तप्पित भूप ॥ छं० ॥ ५५ ॥
चय गय तहनि द्रव्य सुदेस । तिन बर तजिय राज नरेस ॥
संवत ईस तीस रु अट्ठ । चल्लि तप हेम गधि कर कट्ठ ॥ छं० ॥ ५६ ॥

कवित्त ॥ एकादस संबतह । अट्ठ अग्ग हति तीस भनि ॥
प्रथि सुरति नवां हेम । सुद्ध मगसिर सुमास गनि ॥
सेत पष्प पंचमीय । सकल बासर गुर पूरन ॥
सुदि स्रगसिर सम हंद । जोग सहचि सिघ चूरन ॥
पहु अनंगपाल अप्पिय पहुमि । पुत्तिय पुत्त पवित्त मन ॥
छंद्यौ सुमोह सुष तन तहनि । पति बद्री सज्जे सरन ॥ छं० ॥ ५७ ॥

शुभ लग्न दिखा कर बड़ी तयारी और विधि के साथ अनंगपाल का पृथ्वीराज को पाट बैठाकर अपने हाथ से राज्य तिलक करना ।

छंद पद्धरी ॥ सुभ लगन दीन दिछिय नरिंद । सुम करहु राज जनु पहुमि इंद ॥
सुनि स्रवन सद्द आनंद अंग[१] । राका रयन जनु दधि तरंग ॥छं०॥५८॥
बुल्लाइ फेरि द्रुज बर प्रमांन । थपि लगन मगन अंमृत समांन ॥
जिन बचन व्यास मिटै न कोइ । स हजह करंत सुष सिद्ध होइ ॥छं०॥५९॥
मंडप्प मंडि सुतधार बांनि । रचि व्याह क्रम रुकमनि मानि ॥
उच्छव अनंत बाजंत बाज । जिन घुमर घोर रव गयन लाज ॥छं०॥६०॥
न्रत्यंत नृत्य पातर प्रवीन । तिन रप्प अंग मुनि मन अधीन ॥
सब नगर उड्डि गुड्डी अनंत । कैलास बिपन बांनिक बसंत ॥छं०॥६१॥
आरास सुभ्रन बनिकाय छोह । देषंत नैंन मुनि मगन मोह ॥
बहुरंग भ्रंन चित्रित अवास । साजा सुरंग गौषन उजास ॥ छं०॥६२॥

(१) मो-अंद ।

अंगन अनंग दिषि रहत भूलि। चिगुन निवास सुरवास फूलि ॥
जाजिंम पट्ट जरकस जराव। अवनीस दिष्षि जकि धरत पाव ॥ छं० ॥ ६३॥
कुहंत तार सहजह सुरंग। भ्रंगीन भ्रंग भय भ्रमत अंध ॥
नव ग्रही वास सुर वास साज। तहां बैठि आंनि अनगेस राज॥ छं० ॥ ६४ ॥
बुल्लाय सव्व अप भर समान। द्रिगपाल जोर तन तेज भांन ॥
लघु बेस तहन के हद्द वीर। कह्न वाच साच वज्जंग भीर ॥ छं० ॥ ६५ ॥
इंद्रान मोह जिन अंग भंग। संग्राम रंग जनु कप्पि पंग ॥
मच्छर हुलास जिन अंग सोह। चित जरत उट्ठि सिर समय कोह ॥ छं० ॥ ६६ ॥
नव रस विलास निय नारि रंग। अनिवरत रंग भीषम प्रसंग ॥
षग दान मान परिमान जोइ। कवि कहै ब्रंन जो आंनि होइ ॥ छं० ॥ ६७ ॥
कुल रीति नीति हिंदून राह। दारुन्न दुसह दुभ्भर दुवाह ॥
अस बैठि भूप सब सभा आंनि। सुर इंद्र कोटि तेतीस जांनि ॥ छं० ॥ ६८ ॥
तहां धरिय सिंघासन कनक कांति। जिन हीर लाल पीरोज पंति ॥
मानिक्क चूनि मनिमुत्ति भंति। चकचोंध दिट्ट बुधि भूलि जंति ॥ छं० ॥ ६९ ॥
नृमान लषित पुष्पह उपाइ। तहां बैठि भूप कुल सुद्ध आइ ॥
आसन्न अस्तु तहां धोरय आंन। सुरजंपि तथ्थ जै जया वांन ॥ छं० ॥ ७० ॥
प्रथिराज बोलि बैठाय पाठ। धुनि करत बेद तहां विप्र ठाठ ॥
बिय कंध पच्छ बिय चमर ढार। रजि रूप जांनि अश्विनि कुमार ॥ छं० ॥ ७१ ॥
धरि कनक दंड सिर छच सीस। सिर चंद कांति कैलास ईस ॥
गायंत गांन कामिनि उतुंग। कलयंठ कंठ सुर करत भंग ॥ छं० ॥ ७२ ॥
मुसकत हसंत अंडन अलोल। सहजन कटाच्छ कंडत सलोल ॥
रस भरिय एक आलसय भंग। मुनि देषि अंग मति होत पंग ॥ छं० ॥ ७३ ॥
इक अलसि फेरि अंठति अन्नोल। कुंडंत असित सित श्रवन कोर ॥
अंगन अवास सालानि चूरि। जालीन गौष भरि रहौ पूरि ॥ छं० ॥ ७४ ॥
बंदीन ठाठ बिरदह बुलंत। नव रस विलास रसना तुलंत ॥
सधि लग्न मुहूरत दुज प्रवीन। अनगेस राज तब तिलक कीन ॥ छं० ॥ ७५ ॥
बजि सबद पंच बाजे बजंत। तिन सोर घोर दरिया लजंत ॥
जित तित्त अत्ति उच्छव रजंत। बरषाह पाइ जनु जग गजंत॥ छं० ॥ ७६ ॥

दिल्ली के सब सर्दारों का आकर पृथ्वीराज को जुहार करना।

छं० भुजंगी ॥ तहां बैठयं राज दिल्ली प्रमानं। सिरं आतपत्तं सु दीनो निधानं ॥
बजै दुंदुभी भीत[१] आकास थानं। .... ॥ छं० ॥ ७७ ॥
मिले आइ सब लोइ ते सूर धीरं। जिनै आदरं राइ दीनौ सरीरं ॥
अनक्केति ताजी किनक्कै करीनं। महामत्त दीसै सुमत्ती सुभीनं॥ छं० ॥ ७८ ॥
दूहा ॥ करि जुहार भट सुभट थट[२]। प्रजा महाजन आइ ॥
सब काहू मन यों भयौ। ज्यों जलचर जल पाइ ॥ छं० ॥ ७९ ॥

बड़ी तयारी के साथ सजकर पृथ्वीराज की सवारी निकलना।

सन पथ्थी दस सित हुअस। मानक मुत्तिय लाल ॥
सथा लथ्थ सोव्रन महुर। गनै कौर को माल ॥ छं० ॥ ८० ॥
चढन जोग पथ्थी तवैं। मंगवायौ मदमंत ॥
जनु घन वद्दल पवन बसि। बग पंकति ता दंत ॥ छं० ॥ ८१ ॥
जो रावर जंजीर बसि। पवन न पावै जांन ॥
अग्ग मंडि डारै प्रबल। सायर अजा समांन॥ छं० ॥ ८२ ॥
छंद पद्धरी॥ आरूढ इंद्र सम गज गरूर। ज्वालानि जोति जनु किरन सूर ॥
जरकस्स जराव औछार मंडि। सुरराज विपन सोभात षंडि ॥ छं॥ ८३॥
रेसंम रास नारी बनाइ। घुघ्घर घमंक कंचन जराइ ॥
आरूढ राज आसन अनंद। सुर पुफ्फ विष्टि दुअ दीन वंदि॥ छं०॥ ८४॥
षंगरी राव पच्छैं अरोह। कर कनक दंड सिर छत्र सोह ॥
विय बांह चमर ढर गाह धारि। रवि चंद किरनि जनु सिर पसारि॥ छं०॥ ८५॥
तिन पच्छ पंति दंतीन साजि। सामंत सूर सब चढ़े गाजि ॥
तिन पच्छ तुरी तत्ते निवानि। बर पवन रूढ मन भए जानि ॥छं०॥ ८६॥
छत्तीस बज्ज बज्जे सु बाज। बिरदैत बिरदै चंद राज ॥
अवधारि मध्य बाजार बीच। केसरि कपूर तहँ अगर कीच ॥ छं०॥ ८७॥
जित तित गिरंत जारीन फूल। छबि छलै छैल नवजा अमूल ॥
मन मगन मुक्त अप्पित उछार। जलजान मनों बसि ओस भार ॥छं०॥८८॥

---

१) मो॰—घोष।
(२) कृ॰ को॰ ए॰—भर सुभट सब।

सब परज अरज प्रभु करत एह। इक भूमि ग्रेह थिर राज देह ॥
नर नारि निरषि मनु मुदित मोह। लगि चंद सूर चिरजीव होह ॥छं०॥८८॥
षट दरस दरसि आसिष्य देत। प्रथिराज बंदि सिर मोलि लेत ॥
फिरि राज आइ अंदर अवास। जहं रहत सुमध मध्या सुवास ॥छं०॥९०॥
सनमान कीन रनिवास राइ। जस मन्ति सत्त सत सिद्ध पाइ॥ छं०॥ ९१ ॥

पृथ्वीराज का रनिवास में आना, रानियों का मंगलाचार करना।

दूहा ॥अन्यं न्रपति गन सुंदरिन। मधि अंगन रनिवास ॥
दिष्यन छबि छक्की सकल। मिल त्यंजन[1] दिन तास ॥ छं० ॥ ९२ ॥
कनक किउ कुंदेरनह। भरन कि भरिता अंग ॥
जलज नैन सुष कर चरन। जनु धरि अंग अनंग ॥ छं० ॥ ९३ ॥
मधुर कंति सुष मधु मुदित। उदित अर्क आकार ॥
तोरि चंन तरुनिय कचन। धरनि सची तुम भार ॥ छं० ॥ ९४ ॥
गाथा ॥ बनिता बिनय सुकरियं। धरियं प्रेम केन अंगायं ॥
के छवि छकित छलीयं। भद्दयं ववसि पिष्षि पिष्यायं ॥ छं० ॥ ९५ ॥

दिल्ली चौहान को देकर अनंगपाल का तीर्थवास के लिये जाना।

दूहा ॥ जुग्गिनिपुर चहुआंन दिय। पुत्रीपुत्र नरेस ॥
अनँगपाल तोंअर तिनिय। किय तीरथ परवेस ॥ छं० ॥ ९६ ॥

यह सब समाचार सुनकर सोमेश्वर का प्रसन्न होना।

कवित्त ॥ सुनि सोमेसर सूर। चित्तै बढिय आनंद सुष ॥
अति अनंद त्रिंमत्तय। धनि मो पुत्त दीह रुष ॥
कर बांनै बंधियै। मिले सामंत सूर सब ॥
सरित समुद्द प्रमांन। मिलिय आवत्त बीर सब ॥
गोधूर लग्न चढ्ढन न्रपति। बाल चंद कल न्रपति हुअ ॥
मांननिय मांन जानै सकल। नृप परतीत समत्त धुअ ॥ छं० ॥ ९७ ॥

(१) छ-सुम सभ्यंजन।

छंद पद्धरी ॥ वंदहि विवेक अविवेक पाइ । विंफहि मुकुट सों मुकट वाइ[1] ॥
नग नगन जरहि किरनी जराइ । जाने कि अगनि अनवित्त वाइ ॥ छं० ॥ ९८ ॥

पृथ्वीराज का प्रताप वर्णन ।

छंद चोटक ॥ भयभीत सुनंत चढंत कला । जनिये गुरदेव सुमंग भला ॥
घरवज्जि निसांन दिसांन घुवं । नृपराज सुकाज ज्यों भ्रंम सुवं ॥ छं० ॥ ९९ ॥
प्रगटी जनु कांमय कोटि कला । करि उज्जल गज्ज सुमंत भला ॥
बिसरे द्रगपाल दसों दिसयं । प्रगटी जनु काम कला ससियं ॥ छं० ॥ १०० ॥
रन नंकिय पाइ कमख भुवं । क्रिमि मित्त क्रिपाधिप चित्त घुवं ॥
प्रगटे प्रथुपालक पंच कर्थं । तिनतें प्रथुराज प्रथून वर्थं ॥ छं० ॥ १०१ ॥
परधाननि भीम कुंआर तिनं । नृप सेवत जास सुपाइ गनं ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दूहा ॥ सत इत्तिय [illegible]राज नपि । ढिल्ली है घन साज ॥
जानिजो जंग[illegible] नृपति । मन उद्दहि गुन पाज ॥ छं० ॥ १०३ ॥

आशीर्वाद ।

सित छ अग्ग सामंत सजि । बजि विघोष सुनंद ॥
सोमेसर नंदन अटल । ढिल्ली सुबसि नरिंद ॥ छं० ॥ १०४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके अनंगपाल दिल्ली दान नाम अष्टदशमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १८ ॥

(१) मो-वाइ ।

अथ साधो भाट कथा लिष्यते ॥

(उन्नीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का दिल्ली आकर रहना ।

कवित्त ॥ किय निवास प्रथिराज । आइ चहुआंन वीर वर ॥
पुज्ज धाम जुगिनी समांन । वहि दीय थांन थिर ॥
दस दिसांन दस मचिप । किन्न[1] सहु नयर दीन वलि ॥
अवर देव पुज्जै सु सेव[2] । नैवेद धूप मिलि ॥
पुज्ज सु दीय दानानि अथ । अथ पंपि दीय चंडरस ॥
कंपै सुसीस नहां राषि भट । जस जु प्रगग्यौ दिसि विदिस ॥ छं० ॥ १ ॥

शहाबुद्दीन के कवि माधोभाट का गुण वर्णन ।

छंद भुजंगी ॥ कवी कव्विचंदं सुमाधौ नरिंदं । सुरंतान भट्टं मधू माद इंदं ॥
कवी एक भंडी भिडिंभी प्रमानं । किते नार झंकार विद्या सुजानं ॥छं०॥२॥
विधं मंच पची पढ़ै वेद वानी । तिनं भट्ट कोनं सु पूजै गियानी ॥
पढै तर्क वित्तर्क चौसट्ठि विद्या । तिनं रूप के भेद चौरास सद्या ॥छं०॥३॥
सतं मद्धि घटियं सुषोडस प्रमानं । इते छंद विच्छंद छंदे कलानं ॥
मषा रूप रंगंति गंगा प्रकारं । तिनं भाइकं भट्ट वोषंत सारं ॥ छं० ॥ ४ ॥

माधो भाट का दिल्ली आना और यहां की शोभा पर मोहना ।

छंद चोटक ॥ दिषि भट्ट सुथांनक दिल्लि धरं । जमना जल राजत पापहरं ॥
तिष्ठ ध्रंम सुतं न्रिप भित्त दई[3] । सोइ दिल्लिय राजस राज भई[4] ॥छं०॥५॥
इंद्द पथ्थ सु पूरब नाम धरं । इन काज सु पंडव जुद्ध जुरं ॥
चव पंथ पती पति पाप हरै । रवि की तनया तन तेज दुरै ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) मो-किल ।
(२) मो-पुज्जेति सेव ।
(३) मो-दिय्यतई ।
(४) मों-गई ।

सुतनी विधि देषत थान गयौ। अग लोक समान सु तेज तयौ॥ छं०॥ ७॥

दूहा॥ इहि विधि दिष्षियं सकल द्रिग। पुर ढिल्ली उनमांन॥
थांन बीर चहुआंन कौ। प्रति कैलास समांन॥ छं०॥ ८॥

पृथ्वीराज के इन्द्र के समान राज्य करने का वर्णन।

इंद रूप ढिल्लिय नृपति। इंद्रासन पुरि ढिल्ल॥
सचीवा इंछिनि सुव्रत। सुव्रत वृत्त गुन किल्ल॥ ९॥
सुरपति सम सामंतपति। अति अनूप मति सार॥
कनिष्ट ष्यांन हिंदवांन सब। इह गह अत्तें भार॥ छं०॥ १०॥
इह चरित्त दिष्षित नयन। गयौ भट्ट न्रप थांन॥
मय[1] मनुं सुमन सुरभ्भि कै। रच्यौ प्रथी पर थांन॥ छं०॥ ११॥

माधो भाट का पृथ्वीराज के दर्बार में भेद लेने को आना और अपने गुणों से लोगों को रिझाना।

कवित्त॥ दिषि भट्ट माधौ नरिंद। राजथांनी चहुआंनी॥
दूत भेद अनुसरै। दूत लग्यौ परिमानी॥
हिंदु भाष षट रस। मेछ पारसी उचारै॥
अर्था अष्षिर कोइ कच्चै। थांन नैहीं विधि मारै॥
भाषा कवित्त नाटिक सकल। गीत छंद गुन उच्चरै॥
जानंत तर्क वितर्क सब। राग विरागह अनुसरै॥ छं०॥ १२॥

गाथा॥ हिंदू हिंदू अवचने। रचने मेछायं मेछयौ बयनं॥
जं जं जेम समुझ्झै। तं तं समुझ्झायं माधवं भट्टं॥ छं०॥ १३॥

प्रमाइन कायस्थ का माधो भाट को सब भेद देना।

कवित्त॥ प्रमाइन कायथ सुरंग। मिल्यौ बर भट्ट प्रमानं॥
जु कछु भेद चहुआंन। दियौ निचचै सुरतानं॥
विषम सुषम विसाल। कहो निषम परिमानं॥
कग्गद मंत चलाइ। मंत मग्गी चहुआनं॥
दै लेइ दांन संभरि धनी। रोर सतम करआंन बर॥
मय मंत मंत चिंतान करि। दयौ दांन इत्तोति नर॥ छं०॥ १४॥

(१) मो-मइ।

पृथ्वीराज का माधो भाट को बहुत कुछ इनाम देना।

दूहा ॥ दस हथ्थी मै मत्त करि। भर मंडन सुष अग्ग ॥
अरि षंडन मंडन फवज। लेइ धीर बहु वग्ग ॥ छं० ॥ १५ ॥

कवित्त ॥ दस हथ्थी सत एक। एक कंजी कंमानं ॥
कंजी तीनति पंच। षांन सोहै परिमानं ॥
दियौ साह सुरतांन। भट्ट दीने परधानिय ॥
छह मोती वर माल। कनक इक तोल सुजानिय ॥
दिय प्रथिराज सुराज बलि। द्रव्य सुवर चतुरंग विधि ॥
माधव सुभट्ट रंजे न्रपति। चंद कही असतुति समधि ॥ छं० ॥ १६ ॥

दूहा ॥ हेमरु है गै अंबरह। सरसैं बुद्धि गंभीर ॥
सत्त सुमति आमित्त गति। माधौ भट्ट सुवीर ॥ छं० ॥ १७ ॥

बहुत कुछ दान देकर एक महीना तक माधो भाट को दिल्ली में रखना।

कवित्त ॥ दियौ दान वर भट्ट। मास रष्षै दिल्लीधर ॥
बहु भोजन प्रति स्वाद। इंद इंद्रास देव गुर ॥
मन लीनौ न्रप हथ्थ[1]। भट्ट न्रप[2] इंद प्रमान्यौ ॥
गए दरिद्द जनमंत। चिंत्य चिंता घट भान्यौ[3] ॥
अप्पै सु दांन सामंत सब। सुहत मत्त हत्तह सुधरि ॥
भै पूरं पूर पूरन कवी। जा पंग्या भग्गी सुउरि ॥ छं० ॥ १८ ॥

दूहा ॥ जान जान जे जान है। गए गयन किन कीन्ह ॥
इत्तय धन पूरन नहीं। मत्ति गरुअ तन चीन्ह ॥ छं० ॥ १९ ॥

बहुत सा दान (जितना कभी नहीं पाया था) लेकर माधो भाट का ग़ज़नी लौट आना।

अरिल्ल ॥ लै सुदांन गज्जन पुर आयौ। इतौ दांन जनमंत न पायौ ॥
महादांन विधा परकारं। दियौ राज[4] चौहांन विचारं ॥ छं० ॥ २० ॥

---

(१) मो–बरभट्ट। (२) मो–न्रप बर।
(३) मो–जान्यौ। (४) मो–दान।

साधो भाट का शहाबुद्दीन के दर्बार में पृथ्वीराज के दिल्ली पाने आदि का वर्णन करना।

छंद पद्धरी ॥ गह अत्त मत्त कविराज राज। स्रंगार हास्य अद्भुत विराज ॥
निधि जाइ कीन न्टप किति वैन। निम निम सुचाय सुरतान चैंन॥ छं०॥२१॥
संभरिय वत्त उच्चरि उरत्त। सुरतान बेन गोरी विरत्त ॥
मातुलह वंस चहुआंन राज। दै गयौ सकल दिल्लीस काज॥छं०॥२२॥
दै गै भँडार बिन किति भूमि। क्री बाज मार आहति कूमि ॥
दैवत्त करै इह मनुक्क लोइ। क्री बाज जनम आहत सोइ ॥छं०॥२३॥
अनगेस राज तजि तिथ्थ जाइ। सामंत सूर वर मिल्ले आइ ॥
अजहूंनि सेन इक मनी नथ्थ[1]। गोरी सहाव इह घात तथ्थ ॥ छं० ॥ २४ ॥
दूहा ॥ फुट्टिय वत्त प्रवास सब। वसि दिल्लिय चहुआंन ॥
बंदिन माधौ आय कहि। सम गोरी सुरतांन ॥ छं० ॥ २५ ॥
दै गै दिल्लिय देस सब। अरु जु अवर द्रब अप्प ॥
सो सब दै चहुआंन को[2]। अनँगपाल गय तप्प ॥ छं० ॥ २६ ॥

अनंगपाल के बनबास का वर्णन।

लै चल्यौ संग निज तरुनि। दै दिल्लिय अनगेस ॥
मन वच क्रम बद्री चल्यौ। साधन जोग जोगेस ॥ छं० ॥ २७ ॥

यह समाचार सुनकर शहाबुद्दीन को बड़ी डाह होना।

सुनत खटप्पट लग्गि मन। उर गोरी बर बीर ॥
पल पल छिन जुग जान जिय। बढिय विषम षल पीर ॥ छं० ॥२८॥

शहाबुद्दीन का क्रोध करके घोड़े पर चढ़कर लड़ने के लिये चलना, फौज़ की शोभा वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ चढ्यौ मंगि सुरतांन साहाब ताजी। जरं जीन अंमोल साकत्ति साजी ॥
बरं वासनं रत्तहेमं हमेलं। मनो मुत्तिमाला बनी लष्प जेलं[3] ॥छं०॥ २९॥

(१) मो–सथ्य।
(२) कृ–सो समप्पय प्रिथराज कूं।
(३) मो–सेलं।

जरं हेम छत्रं सुभं सोभ सीसं । उवं लाल थंभं सिरं सूर दीसं ॥
अगे खक्करी लाल दो सहस सोहं । जिनं आइ जक्की सहं कोइ कोहं ॥छं०॥३०॥
अगें साहि गोरी निसूरत्ति षानं । लग्यौ बंदि माधौ पढै ब्रिद्दषानं ॥
दिसा दाहिनी षांन ततार गोरी । दिसं षां षुरासांन रजि बांम जोरी ॥ छं० ॥ ३१ ॥
उभै पुट्ठि मम रेज सुलतांन षानं । सुतं साहि महम्मंद सोहित्त षानं ॥
मुषं अग्ग वेतं लसे रत्न साहं । सितं चौर वांने सितं गज्ज गाहं ॥ छं० ॥ ३२ ॥
कही वत्त गोरी तिनं सों सवांची । कहैं जेव जब्बाब पुच्छंत सांची ॥
अपं सेन सथ्थं सहं सूर सथ्थें । तिनं जांनि वांने कहै कोंन कथ्थें ॥छं०३३॥
चल्ले आइ सो सेषची मन्न थानं । चयं छंडि दरबार साहाब तानं ॥
दरं रष्षि दरबन अप मभ्भिझ आरं । सबै बोलि उमरानि सब अप्प भायं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ ओर रोकि अप मभ्भ गय । नमि पय सेष चिमंन ॥
अप्प प्रसंसिय विवह परि । बैठि पयंधरि पंन ॥ छं० ॥ ३५ ॥
सीष सु पुच्छिय सेस पहु । बोलि पंचदस षांन ॥
आसन छंडिय अप्प तिन । दिय आदर सनमांन ॥ छं० ॥ ३६ ॥

शहाबुद्दीन का तातारख़ां आदि सरदारों को इकट्ठा करके सलाह पूछना ।

छंद पद्धरी ॥ गोरी ततार गुरलज्ज भार । पुरसांन षांन मति सिंधुसार ॥
निसुरत्ति षांन जेषांन मीर । ममरेज षांन बल लाज मीर ॥ छं० ॥ ३७ ॥
आजांन षांन सेरन वितंड । मुलतांन षांन मुषवत्ति बंड ॥
मारुत्त मीर जमुनह सुमीर । साहाब षांन गहअन गंभीर ॥ छं० ॥ ३८ ॥
रुस्तंम षांन षल लंक जास । गज्जनी षांन रिन साहि आस ॥
गजनीय लज्ज गुर तेज गंज । महमुंद मीर अरि तेज भंजं ॥ छं० ॥ ३९ ॥
गोरीय बंन काली बलाइ । मृगराज जेम मृग अरि पलाइ ॥
साहब सलाम सब करी आइ । चीमंन सेष नमि परसि पाइ ॥छं०॥ ४०॥
बट्ठे सु सब कार कार समुट्ठि । बिन एक बैठि साहाब उट्ठि ॥
गयौ सेष बाग तह चंप नूप । बैठक तथ्थ चौरा अनूप ॥ छं० ॥ ४१ ॥

आसंन मंडि बैठे सु साहि । बैठक्क दई उमराव ताहि ॥
उचक्यौ बीर गोरी सु संच । पुच्छिय जु सब मंचह प्रपंच ॥ छं० ॥ ४२॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज के दिल्ली पाने का समाचार कहकर उसके जोर तोड़ने का मत पूछना ।

कवित्त ॥ कहिय साहि साहाब । षांन तत्तार सुनौ सब ॥
बसि दिल्लिय चहुआंन । कही माधौ जु चंड कब ॥
अनगपाल गय तप्प । देस है गै सु द्रव्य सह ॥
सो समप्पि चहुआंन । अप्प सज्यौ सुबंन रह ॥
अरि मत्त अग्ग बर जोर हुअ । अह लंभी चतुरंग श्रिया ॥
सधियै बैगरन वेत बल । जौ त्तौं जोर न बंधिया ॥ छं० ॥ ४३ ॥

तातारखां का सलाह देना कि दिल्ली पर चढ़ाई करना चाहिए

तब कहै षांन तत्तार । साह साहाब चित्त धरि ॥
अरि अनंत बर जोर । याहि सधियै सनद्ध करि ॥
तब दिष्यौ दल जोर । सूर सामंत स्मरथ्थं ॥
अन्त तेज मत अनंत । बेग रन बहै सुहथ्थं ॥
दल जोर जोर भंडार घन । करि सुचित्त भर एक मन ॥
भरहथ्थ जीवं दिल्लिय सहर । मम करि अरि सहन सघन ॥ छं० ॥ ४४ ॥

तातारखां की बात का सब लोगों का सकारना, रुस्तमखां का मंत्र देना कि जब तक सेना तयार हो तब तक एक दूत दिल्ली जाय सब समाचार हिंदुओं के ले आवै ।

छंद पद्धरी ॥ षुरसांन षांन कहि सुनि ततार । संची सु बत्त जंपौ सुढार ॥
दल मेलि बेग सडौ सुमंत । बंधीय बंधान अरि करिय अंत ॥ छं० ॥ ४५ ॥
जेचांन बीर जंपे तमंकि । तुम उरौ मीच छुट्टौ न अंक ॥
सज्जियै दोरि करि सच सथ्थ । नन होइ कांम दष्यौ सुहथ्थ ॥छं०॥४६॥
जंपी सु षांन निसु रत्ति तब्ब । विन बंध बत्त छिंभ ह गब्ब ॥
चषरन देषि चहुआंन तुम्ह । जंपौ सबत्त मंतह गुरंम ॥ छं०॥ ४ ॥ ॥

उच्चरिय षांन साहाब सक्क । वै दृढ्ढ भए भय बुढ्ढ जक्क ॥
भंपियै सुढ्ढ पावक्क पाइ । बंध्यौ विराम ना निजरि आइ ॥ छं० ॥ ४८ ॥
बल तुच्छ अरिय सह्यौ सु साहि । पल दुष्ट जोर बंध्यौ न जाइ ॥
मुलतांन षांन हसि कहिय बत्त । मम रेज षांन टावैा विगत्त ॥ छं० ॥ ४९ ॥
एंजाव गरुव कंह्यौ गुमांन । धन सद्द मंत वयनी प्रमांन ॥
कालिंग पुच्छै जिम जुध पुलाइ । गह अत्त साहि साहाब जाइ ॥ छं० ॥ ५० ॥
उक्कसें षांन सेरन वितंड । विक्कसे कहिय कर पग्ग मंड ॥
गारिय अवनि तुम गनैा गत्ति । भय भीत मृत्य दीसहि सुमत्ति ॥ छं० ॥ ५१ ॥
विनसंत काज क्यों पातिसाह । पूछै सुमंत अच्छै सुभाह ॥
जंपयौ वत्त काली वलाइ । मो विना सेन गोरी पलाइ ॥ छं० ॥ ५२ ॥
काल अचंत मन आइ मुझ्झ । मंडयौ जुढ्ढ मो विन अवुझ्झ ॥
तमस्से मीर तब फत्ते जंग । पुज्जेन सेन पंषी भुजंग ॥ छं० ॥ ५३ ॥
सम वरन साज सज्जै न संग । हरि तेज तेज दुष्यै अभंग ॥
अरि सार जैत जांनैा न भेव । उच्चरौ मंत गुन सुवर गेव ॥ छं० ॥ ५४ ॥
तब मीर जमन गज्जनी षांन । मषमुद्द मीर मारुफ षांन ॥
उठे सुच्चार तम तेग भारि । बुल्ले विहंसि मत्ते विचारि ॥ छं० ॥ ५५ ॥
थिर जुढ्ढ मंत रच्चौ सु सब्ब । वैठनह सूर नचि भ्रंम अब्ब ॥
कीयैा हुकंम साहाब जब्ब । अचि तेग हनै प्रथिराज तब्ब ॥ छं० ॥ ५६ ॥
रुस्तंम कही साहाब अज्ज । मुक्कैा दूत जुध करौ कज्ज ॥
लषि आवै चर सु हिंदू चरित्त । तब लगि सेन सज्जौ सुदृत्त ॥ छं० ॥ ५७ ॥
मंन्यौ सुमंत सब चित्त सार । मंड्यौ सुमंत वर चरन चार ॥
रुस्तंम वाच धरि चवत दीठ । बुलाइ सिंघ बर चर गरीठ ॥ छं० ॥ ५८ ॥

छंद भुजंगी ॥ स्वयं भेद प्रकार भेदं प्रमानं । सुनैा षांन तत्तार षांनं सुमानं ॥
स्वयं साहि साहाब साहाब सूरं । मनो भेद बंभान कुब्बा कहूरं ॥ छं० ॥ ५९ ॥
घानं तेज तेजं प्रकारं न्यारे । कही कब्बि चंदं उपम्मा उचारे ॥ छं० ॥ ६० ॥

दूहा ॥ कहत चंद बर भट्ट फुनि । सकल कथा परिमांन ॥
जु कछू भट माधौ कही । सम गोरी सुरतांन ॥ छं० ॥ ६१ ॥

छंद पद्धरी ॥ उचल्यौ चंद वरदाइ मंडि । सुरतांन षांन आरज्ज छंडि ॥
बर बीर धीर तत्तार षंडि । काली बलाइ खेरन बितंडि ॥ छं० ॥ ६२ ॥
चवसी हुजाब षुरसांन बंध । पीरोज षांन निज बंध सिंध ॥
पर दार पौरि दस दस प्रमांन । राजन अनेक भर सुभ्भि थांन ॥ छं०॥६३॥
तिन व्यंटि सभा दिष्षी नरिंद । मनों जामिनी तेज रवि सबर इंद ॥
बंदे न चंद तत्तार षांन । पीरोज बंध चवसी समांन ॥ छं० ॥ ६४ ॥
षुरसांन षांन जल्लाल बीर । खेरन वितंड माधौ सरीर ॥
हुस्सेन सूर भट्टी प्रकार । साहै सु साहि ज्यों चंद सार ॥ छं० ॥ ६५ ॥
बैरंम षांन जमनेस जोर । जमजोर बचै तिन बल सुंघोर ॥
पीरोज षांन माषी मरद्द । खोभंत तेज सषि बर सरद्द ॥ छं० ॥ ६६ ॥
उम्मेग षांन गाभह्र मीर । बेधंत सत्त धानक्क सु तीर ॥
तुम तेज षांन ममरेज मीर । षुरसांन लज्ज निज मुष्ष नीर ॥छं० ॥६७॥
फत्तूच मीर तुंमी तुरांन । पुब्बे न ताल तम तेग पांन ॥
नव नेच षांन मैदांन मीर । रुम्मी हचिल्ल तम तेग धीर ॥ छं० ॥ ६८ ॥
ढिल्ली बढाल ढाहन प्रकार । संभरे मुष्ष भए रत्त भार ॥
पारष्षि रष्प पावंग जांन । जानंहि सु स्वांमि भ्रम प्रमांन ॥ छं० ॥ ६९ ॥
फिरि पूछि जाइ इत सबनि कह । उचरै वत्त चहुआंन थह ॥
भय भीत रीत माधव सुभट्ट । दों देषि आइ इच तथ्य घट्ट ॥ छं० ॥ ७० ॥
खोमेस सूर तस पुत्तमांन । मारन हमीर जाने गियान ॥
दातार ओर पोहचे न दान । दै गयौ अनंग दिल्ली निधांन ॥ छं० ॥७१॥
बर राज अनँग तिथ्थह सु जाइ । चैगै सु लंष्षि दोचित्त पाइ ॥ छं०॥७२॥

माधव भाट की बात पर विश्वास न करके शाह का दूत भेजना ।

दूहा ॥ साह बदी सुरतांन तब । माधौ कह्यो न मांन ॥
भइ जाति जीहं सुनौ । दूत सु पठय प्रमांन ॥ छं० ॥ ७३ ॥

दूतों के लक्षण का वर्णन ।

कवित्त ॥ कं जांनी कंम्मांन । अंक रेखम प्रति भासै ॥
दस चैरंक तिय तोन । षाधि गोरी मुकि जासै ॥

दूत भेद अनुसरै । लपि हिंदवांन चरितं ॥
फो सत्तह सुरतांन । थांन मो कहि दस रत्तं ॥
दूत के दूत मंचह सुपन । सब सु चरित अंषिन लषै ॥
उच्चरै वत्त सांची सुद्रत । सुविधि विधि अमृत भषै ॥ छं० ॥ ७४ ॥

दूहा ॥ दून मुक्कलि उन सद्य वर । दिसि ढिल्ली परिमांन ॥
साधो भट्ट सु रथ्य कहि । दूत पठय सुरतांन ॥ छं० ॥ ७५ ॥
चाहुआंन सुरतांन वर । करन जुद्ध परिमांन ॥
मिलन पुब्ब पछिम दुनें । वीरा रस उत्तांन ॥ छं० ॥ ७६ ॥

कवित्त ॥ सें बुझ्झैं सुरतांन । अप्प गज्जन वलषांनं ॥
आपेटक हम करहिं । दूत मुक्के अगिवानं ॥
जु कछू भेद अनुसरै । तत्तग्यांनं परिजानिय ॥
सय मयंक भ्रम पंड । काल कलहं गुन ठानिय ॥
जं कहौ जाइ मद्धन्द्रंद पां । खेरन षांन वितंड वर ॥
चवसौ हुजाव मुक्कलि न्रपति । सुवर बीर मत्ते गहर ॥ छं० ॥ ७७ ॥
भेद दुग्ग भंजिये । भेद दुरजन धरि छिज्जै ॥
भेद भूमि अनुसार । भेद दिल्ली धरि सिज्जै ॥
भेद पप्प मत नथ्य । भेद विन कंक न चोई ।
भेद गुरुअ गुरु ग्यांन । भेद बिन तात न जोई ॥
अरत्त भेद वर रंजिये । गुन सज्जन सज्जन वरन ॥
सुरतांन दीन साहाव दी । भेद साधि कीजै गवन ॥ छं० ॥ ७८ ॥

गाथा ॥ पुरसांनं प्रति षांनं । पीथं नथ नथियं पानं ॥
एंगी नथ्य प्रमानं । वरचं कथ्य सरूयो वत्तयं ॥ छं० ॥ ७९ ॥
-श्री गजनी नरिंदं । बुल्यौ बीराइ बीर साधसं ॥
विन जंगम जग्गायं । तौ जिते निस्रयं पत्तयं ॥ ८० ॥

दूहा ॥ विन जग्गन जो जग्गिये । पग्ग साह विन चाय ॥
मेछ पिष्ष फिर सान गुर । विवरि गुरज्जन साथ ॥ छं० ॥ ८१ ॥
पातसाहि चिंची सुक्किलि । मति रष्यन परिमांन ॥
जौ भंजै चैाहान तूं । कहै दून खोइ ठांन ॥ छं० ॥ ८२ ॥

अरिल्ल ॥ माधौ बत्त सुसत्त प्रमानिय । तऊ दूत मुक्कलि गुन ठानिय ॥
नव नव नव घन मध्य प्रमानं । कह्यो मंत गोरी सुविहानं ॥ छं० ॥ ८३ ॥

दूत भेजकर अपनी सेना की तयारी करना ।

छंद पद्धरी ॥ करि मंत साह गोरी अचंभ । आरंभ चक्क भुज दंड थंभ ॥
जल थल तिथ्यलन करि प्रमान । उनमयो[1] मेछ जनु मध्य भांन ॥ छं० ॥ ८४ ॥
गगन मगन धुर षेह छाय । सुझ्झै न भांन मिटि पंथ वाय ॥
असझे सुकमल[2] संकुचि सकोर । रुट्ठी सु बदन अलि किसल घोर ॥छं०॥८५॥
चक्कवी चक्क चक चकी भूमि । रस नाल विनच नल कढ्ढि तूमि ॥
तिन बर्ननि[3] तुट्टि छर छरत नीर । प्रज्जरै पंथ सांद्दर गंभीर ॥ छं० ॥ ८६ ॥
तन[4] करै पवन गवनं प्रकार । उरझंत धजा गज चलत लार ॥
बाजत टमंक नवखं कठोर । नाचंत ईस जनु गंग सोर ॥ छं० ॥ ८७ ॥
सुझ्झै न नैन दिसि विदिसि थांन । मन क्रंम सुद्धि नठ्ठी प्रमांन ॥ छं० ॥ ८८ ॥
दूहा ॥ चाहुआंन चतुरंग दिसि । सजि सुमंत साधव्व ॥
जुक्कु मंत गुन उच्चरिय । बर कोविद माधव्व ॥ छं० ॥ ८९ ॥
मंति माधव कोविद सुबर । कही बत्त गुन जुत्त ॥
तऊ साहि गोरी नृपति । फेरि मुक्कले[5] दुत्त ॥ छं० ९० ॥
बोलि दूत चर्व[6] अग्ग लिय । दिय कग्गर धुमांन ॥
सुद्धि सिंध अरु सोब बर[7] । दिय दूनांम अब्बांन ॥ छं० ९१ ॥

शाह का फर्मान लेकर दूत का दिल्ली की ओर जाना ।

चल्यौ दूत दिल्ली दिसा । लिय साह फुरमांन[8] ॥
मेछ सुसोफिय तत्र सजि । चित्त अचिंतिय मांन ॥ छं० ॥ ९२ ॥

(१) को-उमस्यौ ।
(२) मो-ततकमल ।
(३) मो-बनह ।
(४) ह-नन ।
(५) मो-मुक्कलिय ।
(६) मो-बचन ।
(७) मो-सब ।
(८) मो. में यह तुक नहीं है ।

दूत का दिल्ली पहुंचकर अनंगपाल के बनवास और पृथ्वीराज के न्यायराज का समाचार विदित होना ।

गाथा ॥ दिल्ली दूत सपत्तं । फिरि फिरि देषंत न्याव न्रप नैरं ॥
थप धृंमांन सुग्रेहं[१] । दिन्नं धर पच पथ धृमानं ॥ छं० ॥ ८३ ॥
पषरि अथ धृमानं । दिन्नं न्रप आदि सूर सामंतं ॥
अनंगपाल तप सरनं । दिल्लीय दीन राज प्रथिराजं ॥ छं० ॥ ८४ ॥

भ्रमान कायस्थ का सब समाचार सामंतों के रहने आदि का दूत का बतलाना ।

कवित्त ॥ विवरि पषरि धृमांन । कही चहुआंन सेन बर ॥
पष्प[२] सत्त राजांन । सुवास कीन पिथ्थपुर ॥
पष्प पंच कैमास । राव चावंड पष्प चव ॥
बसि वित्ते दिन अट्ठ । पष्प लोषांन रसे सब ॥
चहुआंन कन्ह पष एक हुअ । वसिय वास दिन पंच हुअ[३] ॥
सामंत अवर आगम हुकै । सवन[४] वास चहुआंन रय ॥ छं० ॥ ८५ ॥

भ्रमान का सब समाचार लिखकर भेजना ।

दूहा ॥ लषि कारि इह बंधी विवरि । राज भृम्म चहुआंन ॥
दिय कग्गर तसु दूत कर । बर कागर भ्रम्मान ॥ छं० ॥ ८६ ॥

सब समाचार लेकर दूत का लौटना ।

पवरि सबै लीनी नृपति । चल्लिय दूत निज मग्ग ॥
आतुर पति गज्जन नमिय । सैाफी वे सच जग्ग ॥ छं० ॥ ८७ ॥
अरिल्ल ॥ दूत आइ दिल्ली परिमानिय । राजधान कुगिनि पहिचानिय ॥
निगम बोध दिष्यौ चहुआंनं । रहे षट दीह फिरे निज थानं ॥ छं० ८८ ॥

दूत ने छ महीने रहकर जो बातें देखी थीं सब शाह के जा सुनाईं ।

दूहा ॥ रहे दूत षट दीह बर । लषि चरित्त षट मास ॥
सु कह्यु चरित षट मास कै । कहै विवरि सुद[५]भास ॥ छं० ॥ ८९ ॥

(१) मो-गेहं । (२) मो-पख । (३) मो-भय । (४) मो-रवन । (५) मो-सुधि ।

क्रम ढिल्ली ढिल्ली बयर । ढिल्ली नृप चहुआंन ॥
गौ तीरथ बन रख्खिकैं । प्रगटि दिसांन दवनां ॥ छं० ॥ १०० ॥
प्रथीराज चहुआंन बर । तै ढिल्लीपति ब्रंद ॥
जानत सकल जिहनां बर । वजि निघोष सुदंद ॥ छं० ॥ १०१ ॥

शहाबुद्दीन का लड़ाई के लिये प्रस्तुत होना, उमरावें की तयारी का वर्णन ।

कवित्त ॥ साह वदों सुरतनां । आइ गज जुद्द निरष्षिय ॥
अगड मञ्झ चौगांन । बीस गजमत्त [1]सज्जिय ॥
सहस एक गज झुंड । मंडि मंडल अविघातिय ॥
तहां गोरी बर बीर । दंति चक्कै दिन भांतिय ॥
गज एक सेत निज रोपि बर । चढिय पिठ्ठ तत्तार षां ॥
सुरतांन षांन निसुरत्ति षां । चढि सुगज्ज बांई रुषां ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दिसि दष्षिन हाबाब । साहिजादा चढि दंतिय ॥
रुबर सब्ब उमराव । चढे गज बंधि सुपंतिय ॥
लाल झुंड सम सिंघ । हेम रज्जंत साहि सिर ॥
छैट्टल पैट्टल अवर । गनिक को गनै गहब्बर ॥
मद्दमंदचंद मदावत्त सौं । बोलि साह पुर मांन दिय ॥
गज भूत सिंघ गज मुष्य है । आंमि सुअगडह अङ्ग किय ॥ छं० ॥ १०३ ॥
दूहा ॥ इस कहत तिन चर चवन । दिय दुवाह सुरतान ॥
निरषि साह ऊची निजरि । बे बुल्ले षुरसान ॥ छं० ॥ १०४ ॥
बाहन बर बानै विविधि । असु चैनप आलोल ॥
ठाढा कोतूहल कवल । क्रत दांन नव[2] लोल ॥ छं० ॥ १०५ ॥
छंद उधौर ॥ मंडिन उतंग उत्तिम छंद । स्वरध सोभा सोमह नंद ॥
छच विसाल बर दुति सील । बाल विसाल उडगन ईस ॥ छं० ॥ १०६ ॥
आसन सिंघ मंझौ राज । सामंत सूर भर कारि साज ॥
राज चहुआन प्रथी नरेस । मंडिय इंद्र देव सुरेस ॥ छं० ॥ १०७ ॥

(१) को-कृ० ए-गमंत । (२) मो-करवानन ।

मासं वित्तिय संडी रेर। नद्द निसांन थांनह भेर ॥
दै गैगुंजि नाना भंति। छच विराज छचनि मंनि॥ छं० ॥ १०८ ॥
सिखिभर जहां तहां भरि भीर। सूर समथ्थ जुद्ध सधीर ॥
जित तित दिष्यि रंग सरंत। आगम जांनि फूलि वसंत ॥छं०॥१०९॥
वसन विराजि दसन कुआरि। लोल कलोल सुंदर नारि ॥
गावति एसनि अलि अलि रासि। हग दुति कमुद किरनि प्रकासि ॥छं०॥११०॥
जब लगि चढै वीर जराइ। तब लगि गहिन साहि बधाइ ॥
जब लगि चढत नर जर जांम। तब लगि करन मत्तन कांम ॥ छं० ॥ १११ ॥
सुनि उर लगि॰ ॰ंग उदार। परति न पिनक चैन दुवार ॥
रहु घर चवत चाहु विचार। सिर दत्त वार नंमि उदार ॥ छं० ॥ ११२॥

दूत का ब्योरेवार दिल्ली का समाचार कहना।

दूहा ॥ सुनत वत्त पुरसांन[1] वर। बोले दूत हजूर ॥
पुछै साहि सुचित्त करि। विवरि षवरि संजूर ॥ छं० ॥ ११३ ॥

वचनिका ॥ सुरतांन सु विहांन सुलतान साहाव दीन ॥
करि करतार कि जोर। जासु कित्त जै अरु दत्त की जोरि जोरि ॥
जनु दरियाव की हिलोर। मिलते सों मुष जोरै ॥
अन मिलत सों षल पंचि ॰ ॰ोरै[2]। सुरतांन सुचित्त दुमांन ॥
आंनि कही कायथ धमांन। दिल्ली की षवरि विवरि लिषि दीनी ॥
अनंगपाल तूंअर बन ब॰ लीनी ॥
देस है गै कोस पुची ॰ ॰ प्रिथीराज कौ दीनी ॥
षष्य सत हुए वास की॰। तरुनि पुच परिवार सुष चैन ॥
षष्य षष्य कैमास कों भए आएं। मास दून दिन अठ भए चावंड बसाएं ॥
तीन मास लोहांन बीतें। बीस रोज कंन्ह चहुआंन हूतें ॥
और सब सामंतकी बसती आंनी। कितेकों आंनने मांनी ॥
चौहांन वास की आग्या दीनी। सब सामंत सीस नांमि लीनी ॥
रोज बाईस तिस पर हमको राह लगे। पछि पतंग अग्गि सानंगे ॥

(१) मो०—सुरतांन। (२) मो०—पंचि कै तोरै।

जबलगि न वैरी जराइ। तब लगि साह मारि करि आइ॥ छं०॥ ११४॥

छंद पद्धरी ॥ उच्चरयौ दूत प्रति गज्जनेस । चहुआंन तेज दिष्यो असेस ॥
अनगेस राज तजि तिथ्य जाइ । सामंत सूर सब मिले आइ ॥ छं०॥ ११५॥
संकुरे सकल भुम्मिया भयांन । सेवंत आन दरबांन थांन ॥
इक भजन भोमि तजि गहन ग्रेह । निय नारि रंभ सक्के न नेह ॥ छं०॥ ११६॥
इक मिलत आंनि तजि एंड अंग । षल षग्ग षंडि षेसें जु जंग ॥
अजहूं सुसेन इक मती तथ्य । गोरी सहाय इह घत्त तथ्य ॥ छं०॥ ११७॥

संबत् ११३८ में पृथ्वीराज का दिल्ली पाना ॥

दूहा ॥ ग्यारह सें अडतीस भनि । भौ ढिल्ली प्रथिराज ॥
सुन्यौ साहि सुरतान वर । बज्जे बज्जि सु बाज ॥ छं०॥ ११८॥

अरिल्ल ॥ ग्यारह से अडतीसा मानं । सो ढिल्ली न्रपरा चहुआनं ॥
विक्रम बिन सक बंधी सूरं । तपे राज प्रथिराज करूरं ॥ छं०॥ ११९॥
कलिजुग अरु द्वापर की संधी । साको ध्रंम्म सुतह बल बंधी ॥
ता पच्छै विक्रम वर राजा । ता पच्छै दिल्ली न्रप साजा ॥ छं०॥ १२०॥
कहि चरित्त दिल्ली परिमानिय । सब गुन साह विवेकन जानिय ॥
सबैं चरित्त कहे प्रति भट्टं । सोइ दूत अष्यै[1] प्रति घट्टं ॥ छं०॥ १२१

दूत का पृथ्वीराज का चरित्र कहना, शाह का खुरासान ख़ां आदि से मत पूछना ।

छंद वैअष्षरी ॥ दूत आइ दिल्ली प्रतिथानं । हेम सु दै गै मुद्रित मानं ॥
तपै राज दिल्ली चहुआनं । नाकरघु नागेंद्र प्रमानं ॥ छं०॥ १२२॥
एक बराह थिरं बेराहं । सकल छत्य सुरराज समाहं ॥
को अग्या भंजै न[2] विराजं । अप्प लज्ज सम सामँत लाजं ॥ छं०॥ १२३
मुष कुहै जो बैन प्रमानं । तो घल्लै अगि जुल्लित नथानं ॥
सुनौ साहि गोरी सुरतानं । एक अंग एकं मन ठानं ॥ छं०॥ १२४॥
पुब्ब लोइ दालिद्री नासं । सबै सुक्र तब टंक विलासं ॥
दंड हथ्थ जोगिंद सुदिष्यौ । नहि मुदंड प्रज्जा सिर पिष्यौ ॥ छं०॥ १२५॥

---

(१) मो-अगें । (२) मो-नह रावं ।

दुज उचिष्ट नच उट्ट अक्षी । कौन लंक कोइ कौन न भक्षी ॥
कठिन कझूच दिया प्रकारं । कोइ न कठिन दुष्यन अधिकारं ॥ छं० ॥ १२६ ॥
कहौ हेम सोनार सुवीरं । कोइ न कसौ दरिद्र सरीरं ॥
मैं निरमै संसार सुजानं । सुनि सुनि राज हत्त सुरतानं ॥ छं० ॥ १२७ ॥
मोहन ऋहन सुहृत गुन जांनौ । कहै दून विधि विधि परिमांनौ ॥
सोहै मस्त पदत्त अभिलाषं । मोज प्रवाह सुमंत वैसाषं ॥ छं० ॥ १२८ ॥
योँ आवै वट्ठै कवि मत्तं । इतौ राज अप्पै प्रति दित्तं ॥
सेन सुमंत सुमंतह सारी । सो सुप मंद मंद अभिसारो ॥ छं० ॥ १२९ ॥
योँ जंपिय चहुआंन सुमंतं । त्योँ अभिलाष गई मति तंतं ॥
बोल्लि षांन तत्तार प्रकारं । कहौ मंत सो किज्ज सारं ॥ छं० ॥ १३० ॥
अनंगपाल गौ तिथ्य सुनिज्जै । चाहुआंन दिल्ली प्रति रज्जै ॥ छं० ॥ १३१ ॥

तातार ख़ां का दिल्ली पर चढ़ाई करने की सलाह देना ।

दूहा ॥ कहै षांन तत्तार वर । अद्दन चरित्त सुनंत ॥
जे चरित्त दिल्लिय न्टपति । कहि गोरी गुनमंत ॥ छं० ॥ १३२ ॥

कवित्त ॥ कहै षांन तत्तार । सुनहि गोरी सुरतानं ॥
मोहि मत्त जो किजियै । सजियै सेन परमानं ॥
कहौ वत्त माधौ सुभट्ट । सोइ लिषि कागद कग्गर ॥
सोइ दून कहि बत्त । सुतं बोलैं न भट्ट वर ॥
धरमांन नाम काइथ सुघर । तेनु चरित लिष्ये सबै ॥
चप्पै सुहथ्थ वंदीन ते । सुहन वीर वीरह तवै ॥ छं० ॥ १३३ ॥

तातारख़ां का मत मान कर सुलतान का सेना सजने के लिये आज्ञा देना ।

दूहा ॥ मानि मंत तत्तार वर । मति गोरी सुरतान ॥
लिषि धरमानह कग्गरह । सुविधि विद्धि परिमान ॥ छं० ॥ १३४ ॥

गाथा ॥ माधवं कोविदं भट्टं । गीतं काव्यं रसं गुनं ॥
नट्टं चित्तं मत्ता विद्या । पिंगलं भरहं तथं ॥ छं० ॥ १३५ ॥

छंद मोतीदाम ॥ निरंजन भट्ट सुमाधव वीर । कही तिन बत्त सुसत्ति सधीर ॥
दुहै कहि मत्त सुमत्त प्रमांन । सजी चतुरंगिनि सेन निशांन ॥ छं० ॥ १३६ ॥

कवित्त ॥ सेन साजि चतुरंग । लिषे कग्गर परिमानं ॥
थांन थांन प्रति जांन । साचि कढ्ढे फुरमानं ॥
आइ सेन सजि थट्ट । सक्क सबै उमरावं ॥
चढिचै कंधै झपटि । जांनि उलट्यौ दरियावं ॥
विधि रूप दैव गोरी न्रपति । गरुअ मत्ति भंजन सयन ॥
ततार षांन षुरसांन षां । करे मत्त सबे बयन ॥ छं॰ ॥ १३७ ॥

गाथा ॥ सुनि श्रवनं चर बत्तं । बज्जात्तं घाव नीसानं ॥
निज चै वर आरोहं । चढियं सजि गज्जनी साहं ॥ छं॰ ॥ १३८ ॥
कचि ततार गचि बग्गं । बसो छरोज अजर चो ग्रेहं ॥
रोज पंच मिलि सयनं । करि सुबसि सिंघ चहुआंनं ॥ छं॰ ॥ १३९ ॥
कचिव साचि वर बत्तं । सुनि तत्तार सह तुम सार्थ[१] ॥
अरि आघात समथ्थं । सद्धि सुसिद्धि निद्द कज्जायं ॥ छं॰ ॥ १४० ॥

शाह की सेना का धूम धाम से कूच करना ।

छंद पद्धरी ॥ चढि तमकि चल्यौ गोरी सहाव । उलट्यौ जांनि सायरन आव ॥
पुठि प्रवाह मिलि चलिग सेन । विधि विधि प्रवाह सर भरि जलेन॥छं॰ ॥ १४१॥
द्वादसह कोस किचौं मुकांम । डेरा सुदीन नारौल गांम ॥
मिलि पुठ्ठि आइ सब सेन भार । दै लष्य मीर गरुअत्त गार ॥ छं॰ ॥ १४२ ॥
बाजिच बीर बज्जन विसाल । नारद नंचि तिन भ्रकुटि ताल ॥
चित्ती चिराम उग्गयौ सूर । दल चल्यौ सत्त जनु सिंधु पूर ॥ छं॰॥१४३॥
संक्रमन सेन छूटौ छुसास । चलि विषम सुषम डेराह भास ॥
धुर धूरि पूरि धुंधरिय भांन । गध्धर सुबत्त सुनियै न कांन॥ छं॰॥ १४४ ॥
दर कूच कूच उत्तरिय सिंध । दल विषम दत्त उर साचि विद्ध ॥
किचौं मुकांम आचार आर । डेरा सुदीन दल उंच ठार ॥ छं॰ ॥ १४५ ॥
झंडे अनंत गडि विविध रंग । फुलल्यौ बसंत बनराइ चंग ॥
चर चले धरनि दिल्ली सुथांन । दल कचै चरित षुरसान षांन॥ छं॰ ॥ १४६ ॥

दूहा ॥ कचै चरित सुरतांन सैां । जे देषे तिन दूत ॥
घुरि निसांन भद्दव भरिय । द्रम दिष्षिय अदभुत ॥ छं॰ ॥ १४७ ॥

(१) सो-सारं ।

छंद भुजंगी ॥ घुरै नद्द नीसांन उभ्भंत सूरं। बरं बीर बाजिब बज्जे करूरं ॥
घनं पष्दरे बाज दंती सदन्नं। दसं रुज्जि सम्माद्दयं अव्वदन्नं ॥छं०॥१४८॥
रचियं फौज भरं हों छट्ठ साहं। तहां चीर मोरं गुरं गज्ज गाहं ॥
तहां बिहियं दंति उमत्त मत्तं। तहां छत्र रंगं चियंगे ढरंतं ॥छं०॥१४९॥
तहां बीर माची उमाची सुरानी। तहां ढाल बहु रंग अंगी दुरानी ॥
दिसा बांम तत्तार गोरी सु अन्नी। दिसा दाहिनी षांन पुरसांन रन्नी ॥छं०॥१५०
मुषं अग्ग बेतंड सेरंन षांनं। रतं बैरषं रत्त गज गाह ठानं ॥
तिनै रत्त उच्छारि कारत्त ढारं। रजं रत्त भंडं तरं नाल छाखं ॥छं०॥१५१॥
अनी साहि पुट्ठें बिचें साहि साजं। अगें अग्ग बाजी हथं नारि साजं ॥
अगें बांन गीरं सजे जुद्ध सारं। ....मुषै मारमारं ॥छं०॥१५२॥
सुरं दीन दीनं कलिं कूक फुट्टी। भरं आइ कालं भरी जुद्ध घट्टी ॥
उडी डंबरं अंबरं रेनु पूरं। बरं बाज आघात बज्जे करूरं ॥ छं० ॥१५३॥

शाह की दो लाख सेना का सिंधु के पार उतरना।

दूहा ॥ गज्जनेस सब सेन जुरि। आयौ सिंधु उलंघि ॥
कूच कूच आतुर परिग। दोइ लष्ष दल संघि ॥ छं० ॥ १५४ ॥

पृथ्वीराज का यह समाचार सुनकर अपने सरदारों से परामर्श करना

कवित्त ॥ सुनिय बत्त पृथिराज। बोलि कैमास मंत्र बर ॥
कंन्ह काइ[1] चहुआंन। बिरद्दि बज्जैति[2] नाह नर ॥
रा पज्जून पवित्त। सलष पमार जैत सम ॥
जांम देव जद्दों जुवान। पर संग राव प्रम ॥
पुंडीर सेन चंदह सुमति। लोहांनौ आजांन भुअ ॥
मिलि सकल मंत पूछिय प्रथुक। सनमानिय सोमेस सुअ ॥ छं० ॥ १५५ ॥

कैमास का मत देना कि हम लोग आगे से बढ़कर रोकैं।

कहिय मंत कयमास। सुनौ सामंत सब्ब भर ॥
गज्जनेस आयौ सु सज्जि। सब सेन अप्प पर ॥
कूच कूच उभ्भार। सुन्यौ उत्तार सिंधु नद ॥
सिंध मंत सुभ रच्यौ। फौज चंपी न होइ चद ॥

(१) मो-कइ। (२) मो-बज्जेति।

आयौ सुराव चावंड तब । कहा विरम रच्यौ सयन ॥
इह मंत सिम्भय सज्जे सबहि । चढि रन चंपहु दुष्ट पन ॥ छं० ॥ १५६ ॥

इस मत को सब का मानना ।

दूहा ॥ मांनि मंत सामंत सब । चरचि राज प्रथिराज ॥
बत्त परठ्ठिय ग्रेह गय । अप्प अप्प जुध साज ॥ छं० ॥ १५७ ॥

पृथ्वीराज का सबेरे उठ कर कूच करना ।

अरुनोदै बैरां विहसि । बज्जि निसांन निघाइ ॥
चल्यौ राज चहुआंन तब । चिंति अप्प जुध चाइ ॥ छं० ॥ १५८ ॥

कवित्त ॥ तपन सुरंग सुरंग । सुरन प्रमांन चथ्य छिपि ॥
सांम दांन अरु भेद । दंड निरनै बिसेष थिपि ॥
इहत काल इह घरिय । साहि सब्जे चतुरंगिय ॥
सुनि अवाज सुरतांन । हिंदू करिहै रन जंगिय ॥
प्रति कूच कूचनि करि प्रसनि । चाहुआंन न करै बिषम ॥
मो मत्ति मांनि माधव सुकथ । सुबर बीर बज्जे सुषम ॥ छं० ॥ १५९ ॥
चढ़ै राज प्रथिराज । करन मुक्कौ प्रति साजिय ॥
बाह गंठि बंधईय । सुबर मानंक सु ताजिय ॥
मंच बंधि कैमास । कन्ह चहुआंन सु निडुर ॥
अहुत बत्त सज्जए । सूर सामंत तत्त गुर ॥
विधि रूप भूप जानन सकल । तत्त मंत बत्तह सुबर ॥
संग्राम सूर साधै सकल । बग छिल्ल बज्जी सुभर ॥ छं० ॥ १६० ॥

दूहा ॥ चल्यौ राज प्रथिराज बर । सजि सुभट्ट अप्पांन ॥
बिकसे अंबुज बीर बर । कादर कंपत प्रान ॥ छं० ॥ १६१ ॥

कवित्त ॥ चल्यौ राज प्रथिराज । मंगि गज रूप सुताजिय ॥
षिचिय जाति सुभांति । हेम नग सार्कात साजिय ॥
बंधि सत्त सै तोन । बांन तीषे सुभाल जल ॥
बोलि कन्ह चहुआंन । मंच कैमास बुद्धि बल ॥
बोले सु सब्ब सामंत भर । अरु जु सूर सथ्थें सयन ॥
आए सुराज अग्गा सुसजि । चले सुद्ध सिर सजि गयन ॥ छं० ॥ १६२ ॥

पृथ्वीराज की सेना का वर्णन ।

छंद चोटक ॥ चढि राज चल्यौ सब सेन सजं । उड़ि षेह रजं रुकि अंब रजं ॥
सुर चंवक रोर तबल्ल वयं । सहनाइय सिंधु वसंत हियं ॥ छं० ॥ १६३ ॥
विकसे अरविंद सुवीर उरं । किन नंकिय कातर नारि नरं ॥
दल संग सु ग्रिद्ध पर्यान सजं । हरषै नचि जुग्गिनि जुद्ध रजं ॥ छं० १६४॥
दह सत्त सहं सदलं मिलियं । नव कोस सुनम्म मिलान दियं ॥
अनि कूचह कूच दलं परियं । जल पंथह जाइ सु उत्तरियं ॥छं०॥१६५॥

युद्धारंभ होना ।

दूहा ॥ कूच कूच गोरी सयन । जकि आयौ जल पंथ ॥
सुदि बैसाष म्रग भ्रगु दसै । सज्ज्यौ जुद्ध समंथ ॥ छं० ॥ १६६ ॥
दिष्षि रेन डंबर उदर । चढिय चाइ चहुआंन ॥
सुर आनंद अनंद किय । काइर कंपि पुलांन ॥ छं० ॥ १६७ ॥

युद्ध वर्णन ।

छंद मुकुंद डामर ॥ ढलक्कनिय ढाल निसांन नद्दि सिय चंचल सूर चढे कसियं ॥
चक टोप सरूप रँगा दह दष्षल जोप सनाह विधिं जरियं ॥
रस मंस उकांसत मुंक्क निरक्किय दांन सगानत न्हान कियं ॥
नचि नारद तुंमर अंबर आनंद ईस सु सिंगिय नद्द दियं ॥ छं० ॥१६८॥
चढि अच्छरि ईसय सीस निरष्षन बीर सु जुद्द विनोद नचं ॥
सुर रच्चिय रथ्थ अयास सुत्रासिय गोद चवट्ठिय भाँनि सचं ॥
नृप रच्चिय फौज सुपंच प्रपंचिय गज्जिय गैंन सिरं धरियं ॥
भरमंनिय अप्प सु जैत प्रकासिय बंदि विरद्द प्रती परियं ॥ छं० ॥ १६९ ॥
बर सांइय सुभ्भर जीव कलष्पिय मंनि अनंत सु सीस भुअं ॥
पल षारि पलह्वर श्रोन सकत्तिय डिंभु अगिद्दिय चित्त धुअं ॥
सुष नैंन सुरत्तिय श्रोन सुरत्तह मुंछह भोंह उभं धुकजं ॥
न्रप दिष्षिय सुभ्भर सूर अनंदिय के कसि बीरति फौज सजं ॥छं०॥१७०॥
कवित्त ॥ इल रचिग सेन सामंत । जुद्ध माह रा भष्षन ॥
मोर व्यूह आकार । अप्प दुर्जन दल दग्गन ॥

पक्ष पंथ निडुर नरिंद । सथ्थ कैमास रांम भर ॥
दुतिय पंथ अन ताइ । बलिय बलिभद्र सार भर ॥
पिंड पाइ नष राज हुअ । रचइ पुंछ पज्जून भर ॥
पुंडीर चंच कीनों नृपति । मदन रंभ मच्यौ सुथर ॥ छं० ॥ १७१ ॥
दष्षिन दिसि कैमास । बांम दिसि कन्हति सज्जिय ॥
च्यार सहस सेना सजंत । नील फर चर ढल रज्जिय ॥
सकट व्यूह सजि सुभर । कग्ग चामंड अग्ग करि ॥
मंच राज ढंढरिय । ठंठ माह्न मइंन धरि ॥
चंदैल माल भौंहा सुभर । उभय पक्ष सुज्जे उभय ॥
प्रथिराज अनी दष्षिन दिसा । विषम बीर सज्ज्यौ सुरय ॥ छं० ॥ १७२ ॥
अवर अनी सामंत । घरे नव वीय महाभर ॥
सोलंकी रन बीर । सुनन विंझह सुराज बर ॥
षीची राव प्रसंग । चीर पम्मार सहथ्थं ॥
सुवर बीर अवसांन । करन प्राक्रंम अकथ्थं ॥
पंम्मार दोइ सिंघह सुअन । सुअ प्रसंग सागर बरन ॥
बद्घेल भींम लष्षन सुअन । रांम वांम हय हम्मकरन ॥ छं० ॥ १७३ ॥
बांई दिसि चहुआंन । कंन्ह सज्ज्यौ दल बद्दल ॥
सहस तीस सजि सेन । मध्य सामंत अठुबल ॥
हर सिंघह बर सिंघ । हम्मक हंमीर गंभीरह ॥
मंडली कमल नाल । भांन भट्टी बर नीरह ॥
उदिग पगार बिरदैत बर । सोलंकी सारंग उर ॥
सिर कन्ह कच सज्यो नृपति । भार सयंनह जुद्ध भर ॥ छं० ॥ १७४ ॥
मुष अग्गैं पम्मार । सलष सम जैत सु सज्जिय ॥
लोहांनौ आजान । तिन मद्धि बिरज्जिय ॥
सहस पंच सेना समथ्य । पंम्मार सिंघ सम ॥
मध्य सूर सामंतौ । भीम चालुक्क पर जम ॥
ठंठरी टांक चाटा चपल । धवल जसह लौहांन सुअ ॥
लौहांब बंध केसरि समथ । अग्र भाग सब सूर हुअ ॥ छं० ॥ १७५ ॥

नच्च भाग प्रथिराज । सहस सेना सु च्यारि सजि ॥
चंद्र सेन पुंडीर । राइ पर सिंघ सिंघ गजि ॥
विक्ष राज लष्यन बघेल । राइ रामह कनकू सम ॥
कूरंभह पज्जून । भीम चहुत्र्यान भीम क्रम ॥
भावरह दास संघे समथ । चाहुआंन नृप कन्ह सुञ ॥
गोइंद राव भुज हथ्थ नृप । जुह पथ्थ जै वज्र भुअ ॥ छं० ॥ १७६ ॥
जांम देव जहों जुबांन । नृप पुट्ठि सु रक्खिय ॥
स्याम चमर पष्परह । स्यांम गज ढाल सु सज्जिय ॥
लंगी लंगर राव । अल्ह परिहार सूर वर ॥
अचल चटल चहुत्र्यांन । सिंघ बारड अभंग भर ॥
जंघाल राइ भीमह सुवर । सागर गुर रिन भूरि बल ॥
सामंत सकल सज्जे समय । कन्ह राज प्रथिराज दल ॥ छं० ॥ १७७ ॥
उत गोरी सुरतांन । सज्यौं सेन अध चंद्रं ॥
चर्द्धचंद्र तत्तार । षांन षुरसान सु इंदं ॥
अर्द्धचंद्र वर सार । षान पीरोज स इंदं ॥
मधि कलंक जल्लाल । बीर रस बीर समंदं ॥
उज्जल निसंक दोउ कोर वर । तेज ताप सुरतांन डर ॥
चहुआंन राव लग्गन फिरौ । पूरन पुनिमासी सगुर ॥ छं० ॥ १७८ ॥
छंद भुजंगी ॥ इसी लीन जो गिंद जो गिंद भासे । उडी गिद्ध पच्छे मनों मीन भासे ॥
कहै नद नंदी सुनारद्द बीरं । मनों जोग जोगाधि की अंत नीरं ॥छं०॥१७९॥
कारक्कंत बानं धरक्कंति बैनं । गए लज्ज पांषी फटे पक्क पैनं ॥
मयं मत्त दंतीन की पंति सोभै । तिनं देषते इंद के चित्त लोभै ॥छं०॥१८०॥
झटक्कंत दंती सुपंती प्रकारं । बलाकंति पंती बगं मेघ सारं ॥
करं डंमरं रेन हकि भूर नभ्भं । कलापंत पंतीन की सत्त सभ्भं ॥छं०॥१८१॥
दूहा ॥ द्विविध रैन डंमर डहर । चल्यौ चाय चहुआंन ॥
सूर अनंद अनंद किय । कायर कंपि परान ॥ छं० ॥ १८२ ॥
सज्यौ सेन जंगल सु पहु । जिम बद्दल आकास ॥
ढलकि ढाल ढिल्ली मिली । विषम बीर रस रास ॥ छं० ॥ १८३ ॥

घोर युद्ध होना, सुलतान की सेना का भागना ॥

छंद भुजंगी ॥ ढलक्की मिली ढाल ढालं दुसेनं। चढे देव देषे रचै रथ्थ गेनं ॥
चकै चक्क बक्की गजै तारं नारं। महा जुद्ध लग्गौ उठ्ठौ धोम धारं ॥ छं० ॥ १८४ ॥
छुटै बांन हथ्थाइ[1]अप्पार भारं। जगी दामिनी इंद्र भादों सुढारं ॥
मिल्ली कन्ह अन्नी षुरासान अन्नी। महा षेत मत्तौ गजं गाह रन्नी ॥ छं० ॥ १८५ ॥
छुटै बांन कम्मान रुक्यौ सुगेनं। उवं जुद्ध दिट्ठं न प्राचार नेनं ॥
उभै जुद्ध मंड्यौ महा भार भारं। भरं टून भग्गे धरं धार धारं ॥ छं० ॥ १८६ ॥
गिरें उत्तमंगं धरं सूर नंचै। भरं षीस कंमाळियं माल संचै ॥
करै जोगिनी जोग उच्चार बीरं। पियें श्रोन धारं अपारं सुधीरं ॥ छं० ॥ १८७ ॥
मिले षेत षुरसांन पां कन्ह धायौ। उरं फारि सींगी अपुट्ठं गिरायौ ॥
पर्यौ भूंमि षुरसांन षांनं सुघाए। अनी भग्गि गय और सुरतांन ठाए ॥ छं० ॥ १८८ ॥
परे सहस दो षांन कढि षेत साजं। बजी जैत देषी प्रथीराज राजं ॥
भगी फौज सुलतांन देषी बिहालं। कुप्यौ साहि षुरसांन किय नेंन लालं ॥ छं० ॥ १८९ ॥

फ़ौज को भागते देखकर सुलतान का क्रोध करना।

दूहा ॥ भगी फौज सुरतांन दिषि। कोप्यौ साहि सहाव ॥
बहुरि मिलन जनु मेघ घुरि। सावन बद्दल आव ॥ छं० ॥ १९० ॥

सेना को ललकार शाह का फिर ज़ोर बांधना।

कवित्त ॥ चक्कि सूर सुरतान। साहि बंध्यौ बल भारी ॥
अग्गैं चैारंग। राज रष्षन अधिकारी ॥

(१) मो०--भारि।
(२) मो०--हथाय।

तुमैं साहि सुरतान । साहि जीवन सुरतानं ॥
सुवर वीर हिंदवान । कान्ह चंपै हिंदवानं ॥
दीजै न दान दुर्जन घरह । दइ दुवाह जभौ न्रपति ॥
मुरि भग्यौ साहि सुरतांन कौं । सान्त रहै जीवत सुपति ॥ छं० ॥ १९१ ॥

तातारखां का मारा जाना, सुलतान का हिम्मत हारना, पृथ्वीराज की विजय ।

तब कह्यौ पांन तत्तार । साह मंनी परिमानं ॥
रुप्यौ साहि नरिंद । साहि पुरसांन सवानं ॥
घरी एक आवद्ध । वीर वीरह रस सथ्या ॥
देत परे तत्तार । साह गोरी गई सत्या ॥
सुक मेन साह चहुआंन छुत्र । चैयप्परि दौरे असुर ॥
चामंड राइ दाहर तनय । जै सवद्द उचरंत उर ॥ छं० ॥ १९२ ॥

दूहा ॥ दंतिपत्ति चल्लिय विहर । जलद कि पब्बय पाइ ॥
बाइ सहाई कै अनल । कै ग्रीपम लगि लाइ ॥ छं० ॥ १९३ ॥

छंद माधुर्य ॥ दव दवरि दवरित सैंन डंमरित गज्ज गज्जरित सद्दयं ।
त्रिरहंत भद्दव जलद चद्दव कीच मच्चिन भद्दयं ॥ छं० ॥ १९४ ॥
गिरि पंषि उल्लसि उडय दस दिसि वाय वेग करि करें ।
देषंत मन गति होत पंगुर दांन वरषन गिरि झरें ॥ छं० ॥ १९५ ॥
गज पंति दंतिन कांति उज्जल बग्ग पंति कि राजए ।
रवि किरन बद्दल मध्य मानहु अन्य सोभ सु राजए ॥ छं० ॥ १९६ ॥
बर कारन अनतह षग्ग पुल्लत उडन किरच सुषंडि कै ।
इल चंद मांनहु कोपि उडगन अद्ध रयनीय कंडि कै ॥ छं० ॥ १९७ ॥
चल मल्लिय चै दल दलित पैदल सैल सिषरह फाहियं ।
गोपीय कन्हं जनु अगन्हं सार मार उच्चाहियं ॥ छं० ॥ १९८ ॥

दूहा ॥ गज्जन समवर रोस रस । बज्जिग मार अपार ॥
षोलि षग्ग सैंभरि बलिय । जनुपाइक पुंतार ॥ छं ॥ १९९ ॥

छंद रसावला ॥ करी मत्त भारो बचै सार धारी । दुहथ्थं करारी । तुटै दंत जारी ॥
छं० ॥ २०० ॥

रदं क्रिच भ्रारे। मांने मच्छ धारी॥ लगें बांन भारी। गिरं टिड्डि चारी॥
छं०॥ २०१॥
लगें संग भारी। मनों अज्ज तारी॥ उठें छंद धारी। मनों धूम भ्रारी॥
छं०॥ २०२॥
लगें कोक टारी। धनुं चंद्र धारी॥ लगी दंति अंती। स्त्रिनाली सुहंती। छं०॥२०३॥
भरंके उक्वारें। बकें मार मारें॥ ढहे गज्ज जारी। गिरं अंग सारी॥छं०॥२०४॥
दूहा॥ गज्जन गज गज्जै सुभट। रहे रोकि रन रंग॥
छिति छज्जै छिची दुसे। जिसे भीम अनभंग॥ छं०॥ २०५॥
छंद पद्धरी॥ अति उद्द जुद्द अनबद्द सूर। बलवंत मंत दीसे करूर॥
झलमलहि संग फुटि परहि तुच्छ। उप्पमा चंद जंपै सुअच्छ॥छं०॥२०६॥
दल स्यांम हृदय सोभै प्रमांन। मानों कि पंचमो भाग भांन॥
बर संग फुट्टि सिप्पर प्रमांन। छर स्यांम राह सुभ्भै समांन॥छं०॥२०७॥
मानों कि राह ग्रहि ससिय आइ। छुट्टी कि किरन बहल नचाइ॥
किरवांन बंक बढ्ढी बिसाल। ससि बनिय डोरि करि चक्र चाल॥छं०॥२०८॥
सिप्पर सुस्यांम हेमह सुहंत। मांनो कि चक्र हरि धरिय संत॥
लै संगि अंग है हनि उठाइ। उप्पमा चंद जंपै सुभाइ॥ छं०॥ २०९॥
मांनो कि हथ्थ हथिनापुरेस। षंचै सु बलिय बलिभद्र भेस॥
प्रथिराज करिय करि संग सुद्द। लांगल भेस दीसंत उद्द॥ छं०॥२१०॥
मांनों कि रांम कांमह प्रमान। षंचैति द्रोन हनमंत जांन॥
ढहि पल्लो गज्ज वर षेत भूमि। मांनो सुभ्र सुरनिय अंत झूमि॥छं०॥२११॥
दूहा॥ चक्र रूप दोइ दीन दल। बल अभून बलवंत॥
जांनि जुगंतह जम लरैं। कारन प्रथीपुर अंत॥ छं०॥ २१२॥
छंद विअष्परी॥ पूरंन ससि सुरतांन नरिंदं। भारथ राह भिरैं भर दंदं॥
षींदू सेन चढे रिन षेतं। जित्तन दल षुरसांन सुहेतं॥ छं०॥ २१३॥
डोंरु हथ्थ उवै कर डावै। सींधू राग श्रवै सुर गावै॥
नंचै बर बेताल चिघाइ। नारद नद्द करै किलकाई॥ छं०॥ २१४॥
सुर रत्तं सुर बीर प्रमानं। उडै उछंग अरिन निद्दानं॥
दाष्षिम्मौ दाधिर अधिकारी। गहन साह गोरी षग रारी॥ छं०॥ २१५॥

जंपे मेछ कुसाद कुसादे। पारसीय मीरं रसवादे ॥
षां ततार पुरसांन पषानं। गहिं सूर संमुह रन वानं ॥ छं० ॥ २१६ ॥
पंच बांन वह ते अघकोसं। सह्यो नाह नरिंद सरोसं ॥
रह्यो दिष्षि साहि सव षानं। गहिय नेग अनमित्त जुवानं ॥"छं० ॥ २१७॥

दूहा ॥ मिले खेत रन रंग रस। षां ततार कैमास ॥
विषम रुद्र रत्तौ विहसि। मनों नेग रस रास ॥ छं० ॥ २१८ ॥

छंद मोतीदाम ॥ मनों रस रासय नेगय तार। करकर बज्जिय रीठ करार ॥
चलंतह बांन सुभांन क्रवान। निरष्षत अच्छरि व्योम विमांन ॥छं०॥२१९॥
छुटै गज बाज अनंदिय जात। मनों लगि गोम उदोत उदात ॥
भिरैं भय धोम सु धूंधय भार। लषै न को सूरति एक दुरार ॥छं०॥२२०॥
फिरैं घर वज्जिय भार करार। ठिलें नठिलाइ न मन्निय हार ॥
नटं भति जोगिनि नंचिय बीर। मिटी सिर मालह संकर पीर ॥ छं०॥२२१
मिले कयमास ततार सुअंग। हन्यो कयमासह जांनुय संग ॥
फुटी जुग जंग तुरंग समेत। पस्यौ हय मुच्छ ततार सुषेत ॥ छं० ॥ २२२ ॥
विना सिर नंचिय सट्ठि कमंध। चले असि टेकि सु तुट्टिय रंध्र ॥
विछै विक संध कमंध सुवीर। सहस्सह पंच परे रन मीर ॥छं० ॥ २२३ ॥
भगी रन फौज सु चंडह साहि। जिते रन हिंदुअ ठठ्ठ सुठाहि ॥ छं०॥२२४॥

पृथ्वीराज का सुलतान की सेना का पीछा करना।

दूहा ॥ भगी अनी तत्तार लषि। दल परमारह चंप ॥
धप्यौ राज प्रथिराज तब। लेहु लेहु मुष जंप ॥ छं ॥ २२५ ॥

छंद पद्धरी ॥ धप्यौ सुराज प्रथिराज हक्कि। उर रोहि सेन उप्परें धक्कि ॥
मिलि फौज कट्ठकिय एक ठांम। आघात रीठ मत्ती उरांम ॥छं०॥२२६॥
किलकार चक्क बज्जी करार। आवद्ध तुट्ट सुष धार धार ॥
चंप्यौ पटाटि चामुंड राव। दल दल्ल हूक मते हलाव ॥ छं० ॥ २२७॥
बीभच्छ मंत विय भर अहर। आवद्ध जांम मच्यौ कहर ॥
लगें सुसंग असि असी घाइ। पहा सुपहु बज्जे निघाइ ॥ छं० ॥ २२८॥
जम दढ्ढ दढ्ढ जुहें विरांम। कुलिका सुधाव जुहे सुजांम ॥

पाटू सुढींक परहार पार। मिले लथ्थ बथ्थ झुंझे झुझार ॥ छं० ॥ २२९ ॥
झार केस केस एकह अलुझझ। छुरिका सआंनि बाहें सुलझ्झ ॥
तुहंत अंत चंपंत पाइ। तुहंत सीस जनु विषम वाइ ॥ छं० ॥ १३० ॥
किन नतं परत दंती सभार। है परें विहँड षंडै सधार ॥
है गै परंत धर पूरि पारि। घन श्रोन अंब पूल्यौ सवारि ॥छं०॥२३१॥
लग्गे ससंग नेजा सुढाल। सोहंत पाल तरवर सुहाल ॥
कच्छपह सीस गजराज नूप। धर परे हय गय मगर रूप ॥ छं०॥ २३२॥
तुहे सुबांह मनु मीन पांन। सोहंत मीन वर विविध जांन ॥
सोहंत सीस अंबुजह सूर। से वाल चिकुर रज्जे बिहूर ॥ छं०॥२३३॥
विगसंत नैंन सुरंगी न दिट्ठ। अंबुज निसांनि मधुकर बयट्ठ ॥
षप्पर सुभरै कालिका, वारि। विन हंस सूर उड्डै उझारि ॥ छं०॥ १३४॥
पहाटि पर्यौ चामंड षाइ। विहरंत विषम बज्यौ सुघाइ ॥
दिष्यौ सुघाइ साहाब दिठ्ठ। आवद्ध मंत मत्ती सुरिठ्ठ ॥ छं० ॥ २३५॥
मिल्ल्यौ सुघाइ चामंड राइ। हय हये उंन उन्नं उनाइ ॥
हय परै बथ्थ लग्गेव सूर। थल घाव रिट्ठ मत्ती करूर ॥ छं०॥ २३६॥
चंपे सुमीर उप्परह धक्कि। सामंत सूर लग्गे विहक्कि ॥
धर परे षेत तहां दस्स मीर। सामंत पंच परि षेत तीर ॥ छं०॥२३७॥
धरि लियो साहि चामंड राइ। नव सहस मीर तुहे सुघाइ ॥
चामंड राव हय दिय षवास। साहूल नाम पावार तास ॥ छं०॥ २३८॥
भग्गौ सुषेत सुरतान सेन। जै जया सह सुर सह गेंन ॥
जे परे मीर सामंत षेत। वरदाय चंद ते गनिव हेत ॥ छं० ॥ २३९ ॥

कवित्त ॥ पर्यौ भीम चहुआंन। बंध भाषरह महाभर ॥
सांमदास चय बंध। सुतन चहुआंन नाह नर ॥
पर्यौ षेत जस धवल। सुअन चौहान समथ्थं ॥
केसर केहरि रुप। बंध चौहांन सुतथ्थं ॥
रन परे पंच सामंत बर। षेत रीठ मत्ती भरन ॥
चामंड राइ दाहर तनय। गहत साहि पष्षल सुरन ॥ छं० ॥ २४० ॥

पस्रो षांन सेर`न्न । विन`ड मुन्नांन षांन भर ॥
माह मीर सुभीर । मीर जेर्षांन महाभर ॥
मीर जमुन गजनीय । षांन महमुंद मीर वर ॥
फतेजंग मीरह सुभीर । हासंन रु अंनर ॥
काली वजाइ विरदैत वर । मीर अवन्न सुजुझ्झ मन ॥
इस परें षेत बानेत तव । गहन साहि पय्यह सुरन ॥ छं० ॥ २४१ ॥
अवर अनी सांमत । परे रन मीर महाभर ॥
सोलंकी रन वीर । सुतन वीभह सुराज वर ॥
षीचो राव प्रसंग । सुतन सागरह समथ्थ ॥
मडंन बंध पसंग । वीर पामार सु हथ्थ ॥
पामार नीरध्वज सिंधु सुअ । सुन प्रसंग सागर सुअन ॥
बग्घेल भीम लष्पन सुवन । राम बाम हृदय डरन ॥ छं० ॥ २४२ ॥

दूहा ॥ सहस एक हिंदू अवर । परे बाइ रिन षेत ॥
सहस अाठरह असुर दल । परे सुबंधन नेत ॥ छं० ॥ २४३ ॥
सहस सात हय षेत रहि । परे पंच से दंति ॥
लुथ्थि कोस पंचह प्रचर । परे सुपाइक्क अंति ॥ छं० ॥ २४४ ॥
षेचर भूचर हंसचर । पलचर रुधिचर चार ॥
न्नप चार्नंदिय राजकहुं । चवि जै जंपि उचार ॥ छं० ॥ २४५ ॥
सूरन सीस सु ईस जुरि । सुर रज्जे वर रथ्थ ॥
रजि अच्छरि आसिष्य दिय । बर लद्धे बर हथ्थ ॥ छं० ॥ २४६ ॥

चामंडराय का सुलतान को पकड़कर पृथ्वीराज के हाथ समर्पण करना ।

कवित्त ॥ बंधि`साह चामंड । दियौ प्रथिराज सुहथ्थह ॥
राज मांनि पतिसाह । आनि सुष्पासन तथ्थह ॥
किनौ दंड पतिसाह । सहस अट्ठह हय सुब्बर ॥
सोइ अड प्रथिराज । दियौ चामंड महाभर ॥

मुक्यौ सुराज सुरतांन गचि। रोचि सुवासन पठय घर॥
जित्यौ सुराज प्रथिराज रिन। जय जै सद्दय सुर अमर॥ छं०॥ २४७॥

सुलतान को एक महीना दिल्ली में रखकर छोड़ देना॥

बंधि साह सुरतांन। राज ढिल्लीपुर पत्तौ॥
दंड मंडि सुविद्दान। राज जस जस गुन रत्तौ॥
चामर छच रखत्त। सकल लुट्टे सुरतानं॥
मास एक बर बीर। रष्षि मुक्यौ सुविहानं॥
जय जय सुमत्त किस्तिय कवित। डोला राज नरिंद बर॥
सामंत सूर प्रथिराज सम। भयौ न को रवि चक्र तर॥ छं०॥ २४८॥

दूहा॥ माधौ भट्ट सुमंत कथ। सुमत चित्त परमांन॥
सुबर साहि गोरी न्रपति। बंधि छंडि उनमांन॥ छं०॥ २४९॥

इस विजय पर दिल्ली में आनंद मनाया जाना, बहुत कुछ दान दिया जाना।

बँटि बधाय दिल्ली सद्दर। जीते आवत राज॥
द्रब्य पटंबर विविध दिय। बज्जा जीत सु बाज॥ छं०॥ २५०॥
दुजिय सुबद्दिय प्रति दुजह। प्रिथ्थी ब्याह विगत्ति॥
किमि फिर बंध्यौ साह रिन। किम घन बद्द सुमत्ति॥ छं०॥ २५१॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके माधौ भाट कथा पातिसाह ग्रहन राजाविजय नांम उनविंसमो प्रस्ताव संपूर्णम्॥ १९॥

अथ पद्मावती समय लिख्यते।
(बीसवां समय।)

पूर्वदिशा में समुद्रशिषर गढ़ के यादवराजा विजय-पाल का वर्णन।

दूहा ॥ पूरब दिस गढ गढनपति। समुद सिषर अति द्रुग्ग।
तहँ सु विजय सुर राज पति। जादू कुलह अभग्ग ॥ छं० ॥ १ ॥
धसम चयगय देस अति। पति सायर सज्जाद ॥
प्रबल भूप सेवहिं सकल। धुनि निसाँन बहु साद ॥ छं० ॥ २ ॥

विजयपाल की सेना, कोष, दस बेटे, बेटी का वर्णन।

कवित्त ॥ धुनि[1] निसान बहु साद। नाद सुरपंच बजत दिन ॥
दस हजार हय चढ़त। हेम नग जटित साज तिन ॥
गज असंष गजपतिय। मुहर सेना तिय संषह ॥
इक नायक कर धरी। पिनाक धरभर रज रष्षह ॥
दस पुत्र पुत्रिय एक सम। रथ सुरङ्ग उंमर डमर[2] ॥
भंडार लछिय अगनित पदम। सो पदम सेन कूँवर सुघर॥ छं० ॥ ३ ॥

कुँअर पद्मसेन की बेटी पद्मावती के रूप गुण आदि का वर्णन।

दूहा ॥ पदम सेन कूँवर सुघर। ता घर नारि सुजांन ॥
ता उर इक पुत्री प्रगट। मनहुँ कला ससिभांन ॥ छं० ॥ ४ ॥
कवित्त ॥ मनहुँ कला ससिभांन। कला सोलह सो बन्निय ॥
बाल बेस ससिता समीप। अंम्रित रस पिन्निय ॥
बिगसि कमल स्रिग भमर। बैन षंजन म्रग लुट्टिय ॥
हीर कीर अरु बिंब। मोति नष सिष अहि घुट्टिय ॥
छत्रपति गयंद हरि हंस गति। बिह बनाय संचै सचिय ॥
पदमिनिय रूप पदमावतिय। मनहु कांम कामिनि रचिय॥ छं० ॥ ५ ॥

(१) छ-घन। (२) को-भ्रमर।

दूहा ॥ मनहु काम कामिनि रचिय । रचिय रूप की रास ।।
पसु पंछी सब[१] मोहनी । सुर नर मुनियर पास ॥ छं० ॥ ६ ॥
सामुद्रिक लच्छन सकल । चौसठि कला सुजान ॥
जानि चतुर दस अंग षट । रति बसंत परमान ॥ छं० ॥ ७ ॥

पद्मावती एक दिन खेलते समय एक सुग्गे के देख कर मोहित हो गई और उसने उसे पकड़ लिया और महल में पिंजरे में रक्खा ।

सखियन संग खेलत फिरत । महलनि बाग निवास ॥
कीर इक्क दिष्षिय नयन । तब मन भयौ हुलास ॥ छं० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ मन अति भयौ हुलास । बिगसि जनु कोक किरन रवि ॥
अरुन अधर तिय सघर । बिंब फल जानि कीर छवि ॥
यह चाहत चष चकित । उहजु तक्किय झरपि झर ॥
चंच चहुट्टिय लोभ । लियौ तब गहित अप्प कर ॥
हरषत अनंद मन मंहि हुलस । लै जु महल भीतर गई ॥
पंजर अनूप नग मनि जटित । सो तिहि मँह रष्षत भई ॥ छं० ॥ ९ ॥

पद्मावती कीर के प्रेम में खेल कूद भूल कर सदा उसी के पढ़ाया करती ।

दूहा ॥ तिही महल रष्षत भइय । गइय षेल सब भुल्ल ॥
चित्त चहुट्यौ कीर सों । राम पढ़ावत फुल्ल ॥ छं० ॥ १० ॥

पद्मावती के रूप के देख कर सुग्गे का मन में विचार करना कि इसके पृथ्वीराज पति मिलै तो ठीक है ।

कीर कुँवरि तन निरषि दिषि । नष सिष लौं यह रूप ॥
करता करी बनाय कै । यह पदमिनी सरूप ॥ छं० ॥ ११ ॥

कवित्त ॥ कुट्टिल केस सुदेस । पौंह परचियत पिक्क सद ॥
कमल गंध वय संध । हंस गति चलत मंद मद ॥
सेत वस्त्र सोहै सरीर । नष स्वाति बुंद जस ॥

(१) ल-मृग ।

भ्रमर भंवहि भुल्लहि सुभाव। मकरंद वास रस ॥
नैन निरषि सुष पाय सुक। यह सदिन मूरति रचिय ॥
उमा प्रसाद हर हेरियन। मिलहि राज प्रथिराज जिय ॥ छं० ॥ १२ ॥

पद्मावती का सुग्गे से पूछना कि तुम्हारा देश कौन है।

दूहा ॥ सुक समीप मन कुँवरि कौ। लग्यो वचन कै हेत ॥
अति विचित्र पंडित सुआ। कथत जु कथा अमेत ॥ छं० ॥ १३ ॥
गाथा ॥ पुच्छत वयन सुवाले। उचरिय कीर सच सचाये ॥
कवन नाम तुम देस। कवन थंद करै परवेस ॥ छं० ॥ १४ ॥

सुग्गे का उत्तर देना कि मैं दिल्ली का हूं वहां का राजा पृथ्वीराज मानो इंद्र का अवतार है।

उचरिय कीर सुनि वयनं। हिंदवान दिल्ली गढ अयनं ॥
तहाँ इंद अवतार चहुवांनं। तहं प्रथिराजह सूर सुभारं ॥ छं० ॥ १५ ॥

पृथ्वीराज के रूप, गुण और चरित्र का विस्तार से वर्णन करना।

छंद पद्धरी ॥ पदमावतिहि कुँवरी सँघत्त। दुज कथा कहन सुनि सुनि सुवत्त ॥
हिंदवांन थान उत्तम सुदेस। तहँ उदत द्रुग्ग दिल्ली सुदेस ॥ छं०॥१६॥
संभरि नरेस चहुआंन थांन। प्रथिराज तहां राजंत भांन ॥
वैसह बरीस षोडस नरिंद। आजानबाहु भुअ लोक यंद ॥ छं०॥१७॥
*संभरि नरेस सोमेस पूत। देवंत रूप अवतार धूत ॥
सामंत सूर सब्बै अपार। भूजांन भीम जिम सार भार ॥ छं० ॥ १८ ॥
जिहि पकरि साह साहाब लीन। तिहुं बेर करिय पानीप हीन ॥
सिंगिनि सुसद्द गुन चढ़ि जँजीर। चुक्कै न सबद बेधंत तीर ॥छं०॥१९॥
बल बैन करन जिम दाँन पान। सत सहस सील हरिचँद समान ॥
साहस सुक्रंम विक्रम जुवीर। दाँनव सुमत्त अवतार धीर ॥ छं० ॥ २० ॥
दिस च्यार जांनि सब कला भूप। कंद्रप्प जांनि अवतार रूप ॥छं०॥२१॥
दूहा ॥ कामदेव अवतार हुअ। सुअ सोमेसर नंद ॥
सहस किरन झलहल कमल। रिति समीप वर विंद[1] ॥ छं० ॥ २२ ॥

* को० क्ष–में यह तुक नहीं है। (१.) को–विंदं।

पृथ्वीराज का रूप, गुण सुन कर पद्मावती का मोहित हो जाना ।

सुनत श्रवन प्रथिराज जस । उमग बाल विधि अंग ॥
तन मन चित चहुआँन पर । बस्यौ सु रत्तह रंग ॥ छं० ॥ २३ ॥

कुँवरी के स्यानी होने पर विवाह करने के लिये मा बाप का चिंतित होना ।

वेस बिती ससिता लछ्छ । आगम कियौ बसंत ॥
मात पिता चिंता भई । सोधि जुगति कौ कंत ॥ छं० ॥ २४ ॥

राजा का बर ढूँढने के लिये पुरोहित को देश देशांतर भेजना ।

कवित्त ॥ सोधि जुगति कौ कंत । कियौ तब चित्त चवौं दिस ॥
कयौ विप्र गुर बोल । कही समझाय बात तस ॥
नर नरिंद नर पती । बड़े गढ़ द्रुग्ग अधेसह ॥
सीलवंत कुल सुद्ध । देहु कन्या सुनरेसह ॥
तब चलन देहु दुज्जह लगन । सगुन बंद दिय अप्प तन ॥
आनंद उछाह समुदह सिषर । बजत नद्द नीसान घन ॥ छं० ॥ २५ ॥

पुरोहित का कमाऊँ के राजा कुमोदमनि के यहाँ पहुँचना ।

दूहा ॥ सवालष्य उत्तर सयल । कमऊँ गढ दूरंग ॥
राजत राज कुमोदमनि । हय गय द्रिव्व अभंग ॥ छं० ॥ २६ ॥

पुरोहित ने कन्या के योग्य समझ कर कमोदमनि को लग्न चढ़ा दिया ।

नारिकेल फल परठि दुज । चौक पूरि मनि मुत्ति ॥
दई जु कन्या बचन बर । अति अनँद करि जुत्ति ॥ छं० ॥ २७ ॥

कुमोदमनि का बड़ी धूम से व्याह के लिये बारात लाना, पद्मावती का दुखित हो कर सुग्गे को पृथ्वीराज के पास भेजना ।

छंद भुजंगी ॥ विहिसिसवरं लगन लिन्नौ नरिंदं । बजी द्वार द्वारं सु आनंद दुंदं ॥
गढंनं गढं पत्ति सब बोलि मुं से । आइयं भूप सब कटु बंस जुत्ते ॥ छं० ॥ २८ ॥

चले दस सहस्सं असव्वार जानं । पूरियं पैदलं तेतीसु थानं ॥
मंत मद गलित सैं पंच दंती । मनों साँम पाहार दुग पंति पंती ॥छं०॥२९॥
चल्लै अग्गि तेजी सु तत्ते तुषारं । षीवरं षीरासी सु साकत्ति भारं ॥
कंठ नग नूपं अनोपं सु लाषं । रँगं पंच रंगं ढलकंत ढाषं ॥ छं० ॥ ३० ॥
पंच सुर सावद्द वाजित्र वाजं । सहस सहनाय छिग मोहि राजं ॥
समुद सिर सिषर उच्छाह छाईं । रचित मंडपं तोरनं श्रीयगाईं ॥ छं० ॥ ३१ ॥
पद्मावती विलषि वर वाल वेली । कही कीर सों बात तब होइ केली ॥
झटं जाहु तुम्ह कीर दिल्ली सुदेसं । वरं चाहुवानं जु आनौ नरेसं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

सुग्गे से संदेसा कहलाना और चिट्ठी देना कि रुक्मिनी की तरह मेरा उद्धार कीजिए ।

दूहा ॥ आनौ तुम्ह चहुवांन वर । अरु कहि इहै सँदेस ॥
सांस सरीरहि जो रहै । प्रिय प्रथिराज नरेस ॥ छं० ॥ ३३ ॥

कवित्त ॥ प्रिय प्रिथिराज नरेस । जोग लिषि कग्गर दिन्नौ ॥
लगु नव रग रचि सरब । दिन द्वादस ससि लिन्नौ ॥
सैं ग्यारह तीस[1] । साष संवत परमानह ॥
जोविची कुल सुद्ध । वरनि वर रष्पहु प्रानह ॥
दिष्षंत दिष्ट उच्चरिय[2] वर । इक पलक विलंब न करिय ॥
अलगार रयन दिन पंच महि । ज्यों रुकमनि कन्हर वरिय ॥ छं० ॥ ३४ ॥

शिव पूजन के समय हरन करने का संकेत लिखना ।

दूहा ॥ ज्यों रुकमनि कन्हर वरी । ज्यों वरि संभरि कांत ॥
शिव मंडप पच्छिम दिसा । पूजि समय स प्रांत ॥ छं० ॥ ३५ ॥

सुग्गे का चिट्ठी लेकर आठ पहर में दिल्ली पहुँचना ।

लै पत्री सुक यों चल्यौ । उड्यौ गगनि गहि वाव ॥
जहँ दिल्ली प्रथिराज नर । अट्ठ जाम में जाव ॥ छं० ॥ ३६ ॥

(१) मो—ग्यारहतीस ।
(२) मो—वर वरिय ।

सुग्गे का पत्र पृथ्वीराज को देना और पृथ्वीराज का चलने के लिये प्रस्तुत होना।

दिय कग्गर न्टप राज कर। पुत्नि वंचिय प्रथिराज॥
सुक देखत मन में हँसे। कियौ चलन कौ साज॥ छं०॥ ३७॥

चामंड राय को दिल्ली में रख कर और सरदारों को साथ लेकर उसी समय पृथ्वीराज का यात्रा करना।

कवित्त॥ उद्दै घरी उद्दि पलनि। उद्दै दिन बेर उद्दै सजि॥
सकल सूर सामंत। लिये सब बोलि बंब बजि॥
अरु कविचंद अनूप। रूप सरसै बर कव्ह बहु॥
और सेन सब पच्छ। सहस सेना तिय सष्षहु॥
चामंड राय दिल्ली धरह। गढपति करि गढ़ भार दिय॥
अलगार राज प्रथिराज तब। पूरब दिस तब गमन किय॥ छं०॥ ३८॥

जिस दिन समुद्र शिषर गढ में बारात पहुँची उसी दिन पृथ्वीराज भी पहुँच गया और उसी दिन गज़नी में शहाबुद्दीन को भी समाचार मिला।

जा दिन सिषर बरात गय। ता दिन गय प्रथिराज॥
ताही दिन पतिसाह कौं। भइ गज्जनै अवाज॥ छं०॥ ३९॥

यह समाचार पाते ही अपने उमरावों के साथ शहाबुद्दीन ने पृथ्वीराज का रास्ता आगे बढ़ कर रोका और इधर इसकी सूचना चंद ने पृथ्वीराज को दी।

कवित्त॥ सुनि गज्जनै अवाज। चल्यौ साहाब दीन बर॥
षुरासाँन सुलतान। कास काबिलिय मीर धुर॥
जंग जुरन जालिम जुझार। भुज सार भार भुञ्र॥
धर धमंकि भजि सेस। गगन रवि लुप्पि रैन हुअ॥
उलटि प्रवाह मनौं सिंधु सर। रुक्कि राह अड्डौ रचिय॥
तिहि घरिय राज प्रथिराज सौं। चंद वचन इहि बिधि कहिय॥ छं०॥ ४०॥

बारात का निकलना, नगर की स्त्रियों का गौष आदि से बारात देखना, पद्मावती का पृथ्वीराज के लिये व्याकुल होना।

निकट नगर जब जांनि । जाय बर विंद उभय भय ॥
समुद सिषर घन नद्द । दुंद दुहुँ ओर घोर गय ॥
अगिवानिय अगिवान । कुँअर बनि बनि हय सज्जति ॥
दिष्पन को चिय सवनि । चढ़ि गौष छाजन रज्जति ॥
बिलषि अवास कुँवरि बदन । मनौं राह छाया सुरन ॥
झंपति गवष्षि पल पल पलकि । दिपत पंथ दिल्ली सुपति ॥ छं० ॥ ४१ ॥

सुग्गे का आकर पद्मावती को समाचार देना, उसका प्रसन्न होकर शृङ्गार करना, और सखियों के साथ शिव जी की पूजा को जाना वहां पृथ्वीराज का उसे उठाकर अपने पीछे घोड़े पर बैठाकर दिल्ली की ओर रवाना होना, नगर में यह समाचार पहुँचना, राजा की सेना का पीछा करना, पृथ्वीरान के साथ घोर युद्ध होना।

छं० पद्धरी ॥ दिपत पंथ दिल्ली दिसांन । सूष भयौ सुक जब मिल्यौ आंन ॥
संदेस सुनत आनंद नैंन । उमगिय बाल मन मथ्य सैन ॥ छं० ॥ ४२ ॥
तन चिकट चीर डास्यो उतारि । मज्जन[1] मयंक नव सत सिंगार ॥
भूषन मँगाय नष सिष अनूप । सजि सेन मनौं मनमथ्य भूप ॥ छं० ॥ ४३ ॥
सोवन्न थार मोतिन भराय । झलर[2] हल करंत दीपक जराय ॥
संगह सषिय लिय सहस बाल[3] । रुकमनिय जेम मज्जन मराल ॥ छं० ॥ ४४ ॥
पूजिय गवरि शंकर मनाय । दच्छिनै अंग कर लगिय पाय ॥
फिर देषि देषि प्रथिराज राज । हस मुद्द मुद्ध पर पट्ट लाज ॥ छं० ॥ ४५ ॥
कर पकर पीठ हय परि चढ़ाय । लै चल्यौ नृपति दिल्ली सुराय ॥
भइ षबरि नगर बाहिर सुनाय । पद्मावतीय हरि लीय जाय ॥ छं० ॥ ४६ ॥

(१) ऐ० ङ-मंडान । (२) को-झल । (३) को-यंव रस चाल । (४) ङ-दुरि ।

बाजी सुबंन हय गय पलांन। दौरे सुसज्जि दिस्सह दिसांन ॥
तुम्ह लेहु लेहु सुष जंपि जोध। हक्काह सूर सब पहरि क्रोध॥ छं० ॥ ४७ ॥
अग्गैं जु राज प्रिथिराज भूप। पक्कै सु भयौ सब सेन रूप ॥
पहुंचे सुजाय नक्के तुरंग। भुअ भिरन भूप जुरि जोध जंग ॥ छं० ॥ ४८ ॥
उलटी जु राज प्रथिराज वाग। थकि सूर गगन धर धसत नाग ॥
सामंत सूर सब काल रूप। गहि लोह छोह वाहै सु भूप॥ छं० ॥ ४९ ॥
कम्मांन बाँन कुट्टहि अपार। लागंत लोह इम सारि धार ॥
घमसान घान सब बीर षेत। घन श्रोन षहत अरु रुकत रेत ॥ छं० ॥ ५० ॥
मारे बरात के जोध जोह। परि रुंड मुंड अरि षेत सोह ॥ छं० ॥ ५१ ॥

पृथ्वीराज का जय करके दिल्ली की ओर बढ़ना।

दूहा ॥ परे रहत रिन षेत अरि। करि दिल्लिय मुष रुष्य ॥
जीति चल्यौ प्रथिराज रिन। सकल सूर भय सुष्य ॥ छं० ५२ ॥

पद्मावती के साथ आगे बढ़ने पर शहाबुद्दीन का समाचार मिलना।

पदमावति इम लै चल्यौ। हरषि राज प्रिथिराज ॥
एतैं परि पतिसाह कौ। भइ जु आनि अवाज ॥ छं० ॥ ५३ ॥

अवसर जान कर शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज को पकड़ने के विचार से सेना सजना।

कवित्त ॥ भई जु आँनि अवाज। आय सहाबदीन सुर ॥
आज गहौं प्रथिराज। बोल बुल्लंत गजत धुर ॥
क्रोध जोध जोधा अनंत। करिय पंती अनि गज्जिय ॥
बांन नालि हथनालि। तुपक तीरह अब सज्जिय ॥
पवै पहार मनों सार के। भिरि भुजांन गजनेस बल ॥
आये हकारि हंकार करि। षुरासान सुलतान दल ॥ छं० ॥ ५४ ॥

शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन, पृथ्वीराज को चारों ओर से घेर लेना।

छं० पद्धरी॥ पुरासान मुलतान षंधार मीरं। बलक स्रो बलं तेग अच्चूक तीरं॥
रुहंगी फिरंगी हलब्बी समानी। ठटी ठट्ट बल्लोच ढालं निसानी॥ छं०॥ ५५॥
मँजारी चषी मुष्ष जंबक्क लारी। हजारी हजारी हुकैं जोध भारी॥
तिनं पष्परं पीठ हय जीन सालं। फिरंगी कती पास सुकलात लालं॥छं०॥५६॥
तहाँ बाघ बाघं सहरी रिछोरी। घनं सारसंमूह अरु चौंर झोरी॥
षराकी अरब्बी पटी तेज ताजी। तुरक्की महाबांन कम्मांन बाजी॥ छं०॥ ५७॥
ऐसे असिव असवार अगोल गोलं। भिरे जून जेते सुनत्ते अमोलं॥
तिनं मद्धि सुलतांन साहाव आपं। इसे रूप सों फौज बरनाय जापं॥ छं०॥५८॥
तिनं घेरियं राज प्रथिराज राजं। चिहौ ओर घन घोर नीसांन बाजं॥ छं०॥५९॥

पृथ्वीराज का तेग सँभाल शत्रुओं पर टूटना।

कवित्त॥ वज्जिय घोर निसाँन। राँन चौहाँन चिहौ दिस॥
सकल सूर सामंत। समरि बल जंच मंच तस॥
उट्ठि राज प्रथिराज। बागं मनों लग बीर नट॥
कढ़त तेग मनों बेग। लगत मनों बीज भह घट॥
थकि रहे सूर कौतिग गिगन। रगन मगन भइ स्रोन धर॥
हर हरषि वीर जग्गे हुलस। हुरव रंगि नव रत्त वर॥ छं०॥ ६०॥

दिन रात घोर युद्ध हुआ, पर किसी की हार जीत न हुई।

दूहा॥ हुरव रंग नव रंत वर। भयौ जुद्ध अति चित्त॥
निस वासुर समुझि न परत। न को हार नह जित्त॥ छं०॥ ६१॥

युद्ध का वर्णन।

कवित्त॥ न को हार नह जित्त। रहेइ न रहहि सूरबर॥
धर उप्पर भर परत। करत अति जुद्ध महाभर॥
कहौं कमध कहौं मथ्थ। कहौ कर चरन अंत हरि[1]॥
कहौं कंध वहि तेग। कहौं सिर जुट्टि फुट्टि उर॥

(१) क—हुरि।

कढ़ैां दंत मंत च्चय षुर षुपरि । कुंभ असुंडच्च रुंड सब ॥
छिंदवान रान मयभांन मुष । गच्चिय तेग चहुवांन जब ॥ छं० ॥ ६२ ॥

पृथ्वीराज की बीरता का वर्णन, शहाबुद्दीन के कमान डाल पृथ्वीराज का पकड़ लेना और अपने साथ लेकर चलना ।

छंद भुजंगी॥ गही तेन चहुवाँन छिंदवाँन रानं । गजं जूथ परि कोप केहरि समानं ॥
कारे रुंड सुंडं करी कुंभ फारे । बरं सूर सामंत छुकि गजं भारे ॥छं०॥६३॥
करी चीह चिक्कारं करि कलप भग्गे । मदं तंजियं लाज[1] जमंग मग्गे ॥
दौरि गज अंध चहुआँन केरो । घेरियं[2] गिरद्दं चिहै चक्क फेरो ॥छं०॥६४॥
गिरद्दं उडी भँान अंधार रैनं । गई सूधि सुझ्झै नहीँ मक्खिक्क नैनं ॥
सिरं[3] नाय कम्मांनं प्रथिराज राजं । पकरियै साहि जिम कुलिंगबाजं ॥
छं० ॥ ६५ ॥
लै चल्यौ सितावी करी फारि फौजं[4] । परेँ मीर सै पंच तहँ षेत चौजं ॥
रजंपुत्त पंचास झुझ्झे अमोरं । बजै जीत के नद्द नीसांन घोरं ॥ छं० ॥६६॥

पृथ्वीराज का जीत कर गंगा पार कर दिल्ली आना ।

दूहा ॥ जीति भई प्रथिराज की । पकरि साह लै संग ॥
दिल्ली दिसि मारगि लगौ । उतरि घाट गिर गंग ॥ छं० ॥ ६७ ॥

पद्मावती का वर कर गोरी शाह को पकड़ कर दिल्ली के निकट चत्रभुजा के स्थान में पृथ्वीराज का पहुँचना ॥

वर गोरी पद्मावती । गहि गोरी सुरताँन ॥
निकट नगर दिल्ली गये । चभुजा चहुआँन ॥ छं० ॥ ६८ ॥

लग्न साध कर धूम धाम से विवाह करना ।

कवित्त ॥ बोलि विप्र सोधे लगन्न । सुध घरी परट्ठिय ॥
हर बांसह मंडप बनाय । करि भांवरि गंठिय ॥
ब्रह्म वेद उच्चरहिँ । होम चौरी जु प्रत्ति वर ॥
पद्मावति दुलहिन अनूप । दुल्लह प्रथिराज राज नर ॥

(१) कृ०—जाल । (२) कृ०—करीयं ।
(३) को०—सब । (४) को०—में "लै चल्यौ निकसि सब फारि फौजं" लिखा है ।

संड्यौ साह साबाद्दी । अट्ठ सहस्स है वर सुवर ॥
दै दीन सौन पट भेष कौ । चढ़े राज द्रग्गा हुजर ॥ छं० ॥ ६९ ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को छोड़ देना और दुलहिन के साथ अपने महल में आना ।

कवित्त ॥ चढ़िय राज प्रथिराज । छाड़ि साहाबदीन सुर ॥
न्रिपत सूर सामंत । बजत नीसान गजत धुर ॥
चंद्र वदनि म्रग नयनि । कल्ल ले सिर सनमुष्य जुप ॥
कनक थार अति बनाय । मोतिन बँधाय सुप ॥
संडन्न मयंक वर नार सब । आनँद कंठह गाइयव ॥
ढोरंत चवर किङ्कर करहि । मुकट सीस तिक जु दियव ॥ छं० ॥ ७० ॥

महल में पहुँचने पर आनंद मनाया जाना ।

दूहा ॥ चढ़े राज द्रुग्गह न्रिपति । सुमन राज प्रथिराज ॥
अति अनंद आनंद सैं । छिंदवांन सिर ताज ॥ छं० ॥ ७१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासके श्री प्रिथीराज समुद शिखर गढ़ पद्मावती पाणि ग्रहणं जुद्ध पश्चात पातिसाह प्रिथीराज जुद्धं श्री प्रिथीराज जुद्ध विजय पातिसाह ग्रहनं मोषनं नाम विंशति प्रस्ताव संपूर्णम् ॥

अथ प्रिथा व्याह वर्णनं लिष्यते ॥

(इक्कीसवां समय।)

चित्तौर के रावल समर के साथ सोमेश्वर की बेटी के विवाह की सूचना।

कवित्त ॥ चित्र कोट रावर नरिंद। सा सिंघ तुल्य बल ॥
सोमेसर संभरिय। राव मानिक्क सुभग्ग कुल ॥
सुप मंत्री कैमास। पांन अवलंबन संडिय ॥
मास जेठ तेरसि सुमधि। ऐन उत्तर दिसि छिंडिय ॥
सुक्रवार सुकल तेरसि घरह। घर लिन्नौ तिन वर घरह ॥
सुकलंक लगन मेवार धर। समर सिंघ रावर बरह ॥ छं० ॥ १ ॥

सोमेश्वर का अपनी कन्या समर सिंह को देने का विचार करके पत्र भेजना।

दूहा ॥ उत्तर दिसि आहुट्ठ कौं। दे कग्गद लिषि वत्त ॥
सोमेसर कीनौ मतौ। भगिनि दियै प्रथु पुत्त ॥ छं० ॥ २ ॥

समरसिंह के गुणों का वर्णन।

चौपाई ॥ प्रवत्तवै[1] पहुमी यल राजं। अरु जोगिंद सवन सिरताजं ॥
समर सिंघ रावर चिंत्तिज्जै। पुचि प्रिथा चित्रंग सुदिज्जै ॥ छं० ॥ ३ ॥

कवित्त ॥ वर प्रब्बत वैराज। नरव उत्तिम चित्रंगी ॥
वर आहुट्ठ नरेस। समर साहस अनभंगी ॥
वर मालव गुज्जर नरिंद। सार बंधौ वर अड्डौ ॥
उंच सग्गपन किये। पुत्त आवै घन अड्डौ ॥
वर बीर धीर जाजुलति तप[2]। श्रिवप्रसाद अविचल घरह ॥
प्रियकज्ज अज्ज मन संभरौ। सुनि संमर कीजै बरह ॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ सोमेसर नंदन मतौ। पुच्छि कन्ह चहुआन ॥
आदि अंम घर पंथ ए। हिंदवान कुल भान ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) मो०—पव्वयपति। (२) को०—ए—पत ॥

कवित्त ॥ हिंदवान कुल भान। भ्रंम रष्षन सुवेद वर॥
जै मुंजांनी ढाल। जुध्ध संग्राम सार गुर॥
सो चिचंग नरिंद। प्रिथा दीनी प्रथिराजं॥
चैम चयं गय अध्यि। देन दिल्लीय सब साजं॥
गरु अत्त बत्त गचिचौत गुर। सिंगी नाद निसांन बर॥
कार्थक राइ कुष्पन बिरद। भद्दन रंभ चाहंत धर॥ छं० ॥ ६॥

दूहा॥ सो भगिनी दीनी प्रिथा। सकल रूप गुन लच्छि॥
चिचंगी रावर समर। अंगन अहन सु अच्छि॥ छं० ॥ ७॥

पत्र लेकर गुरूराम पुरोहित और कन्ह चैाहान का जाना।

कुंडलिया॥ बाल बेस भगिनी प्रिथा। बर समर केलि चिचंग॥
राज गुरू गुरराम सम। ताजी तेरह तुंग॥
ताजी तेरह तुंग। मुक्ति नग माल सुरंगी॥
बर दाखिम कैमास। बीर बंधव मुकि रंगी॥
रूप कागद गहि हथ्य। कन्ह अग्या बर एसं॥
नर उत्तिम चिचंग। दई बर बाल सुबेसं॥ छं० ॥ ८॥

पृथा कुंअरि के रूप का वर्णन।

दूहा॥ बर बरनत भगिनी प्रिथा। कहि न परै कवि चंद॥
मानौं रति कै रूप लै। धरि आई मुष इंद॥ छं० ॥ ९॥

चौपाई॥ सुफल दियौ फल लह्यौ नांहि। इंद्र सुबल बलि नवला बांहि॥
सीस मूर मुष अगनि कुबेर। इन समानह सुंदर हेर॥ छं० ॥ १०॥

पृथा कुंअरि और समरसिंह के उपयुक्त दम्पति होने का वर्णन।

कवित्त॥ स्वाहा ज्यों ग्रह अगनि। सीय ग्रह राम काम रति॥
नल दमयंत संयोग। द्रुपद कन्या अरजुनपति॥
इंद्र सची या जोग। जोग गवरिय अरु शंकर॥
भोंनर नालिनि कन्ह। सोम रोहिनी नारि घर॥

फल अप्प दध्य सो दीन न्टप । लष्षि सहज लच्छी सुमन ॥
दुज राज रस ग्रह लगन लिपि । सद्दि महूरत चिंति मन ॥ छं० ॥११॥
इंद्र जोग पंचमी । सुवर पंचमि अधिकारी ॥
भोस बीय न्टप थान । सूर ग्रह केत उचारी ॥
इस सुमंत ग्रह लगन । व्याह दंपति दंपति गन ॥
ग्रैार सवै सुभ जोग । होइ सुप जान धान घन ॥
इक मास लगन वर थप्पि कै । दिल्ली वै दिल्ली गयो ॥
सुरतांन दंड लीनैा सुकर । सुक्रर भ्रंम कारज ठयो ॥ छं० ॥ १२ ॥

लग्न का शोधा जाना ।

दूहा ॥ थप्पि सु लगनह राज ग्रह । सोधि पुरान उरान ॥
वाजपेय सुप उद्धरे । प्रिथा व्याह उनमान ॥ छं० ॥ १३ ॥

कवि चंद कहता है कि मैं पूरा वर्णन तो कर नहीं सकता पर जहां तक बनैगा उठा न रक्खूंगा ।

वहुत मोहि कहत न बनै । बरनन कठिन कठोर ॥
गुन मैं थोरिन थप्पि हैां । कछु धरनिहैां सुथोर ॥ छं० ॥ १४ ॥

स्त्रियों के शरीर की उपमाओं का वर्णन ।

कवित्त विधानजाति ॥ अहि ससि सन उतंग । पिक्क उर केहरि करिवर ॥
अलक बयन चष चंच । जीह कटि जघन नराधर ॥
किस सकल चल अचल । अदिठ अलसंत चलंतह ॥
चंदन नभ वन भवन । अंब गिरि व्यंभ्र वसंतह ॥
सुमनि सरद भय भीत निसि । रति पति लंघन मंदगति ॥
अवला सुअंग ओपम इतिय । कही चंद इन परि विगति ॥
छं० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ को कवि ओपम वाल की । कहिवे कैां समरथ्थ ॥
सब संयोग बनाइ कै । काम चल्यैा मनुरथ्थ ॥ छं० ॥ १६ ॥

पृथा कुँअरि के रूप तथा नव यैावनावस्था का वर्णन ।

छंद मोतीदाम ॥ बरनों ससि जुब्बन की वय संधि । तिनं उपमा बरनो बल बंधि ॥
मिली सिसरं रिति राजह जोर । चंप्यौ न मनं बिपनं नह कोर ॥ छं० ॥१७॥

कवै चलि चंचलता चलि जाइ। धरै कबहूं धन धीरज पाइ ॥
तिनं उपमा बरनी कबिचाई। पढ़ावत कांम नई गत ताई ॥ छं० ॥ १८ ॥
करं सिर ठंकि सँवारत वार। सिषावत कांम मनों चट सार ॥
दुती उपमा बरनै कबि चंद। चलै घट रूप दिषावत दुंद ॥ छं० ॥ १९ ॥
चती उपमा बरनी कबि चाह। लरैं दुअ कोर मनों ससि राह ॥
उठे थन थोर विराजत वाम। धरैं मनु हाटक सालिग राम ॥ छं० ॥ २० ॥
किधों फल तिंदुअ कंचन जान। धरे मनु अंग सुधा रस पान ॥
तुछं रूम राजिय राजत बाम। पपीलकि सोवन थंभ विश्राम ॥ छं० ॥ २१ ॥
जु बंकिय भोंह न तुच्छ गह्वर। उठे मनु मच्छ धनंक अँकूर ॥
सुवालय उष्टन मोर सुदीस। मिले जनु संगल द्वै ससि रीस ॥ छं० ॥ २२ ॥
कहूं उठि लागित मोर सुसीर। उठे मनु अंकुर कांम सरीर ॥
तुछं द्रग सोभत कज्जल ताम। चढ़े जनु बाहन बल्लिय काम ॥ छं० ॥ २३ ॥
दुहूं कुच बीच सरोमय नह। लगी म्रग मद्दय कीन सुघह ॥
तिनं उपमा बरनी कबि रंग। पिये जनु कालिय के सुनसंग ॥ छं० ॥ २४ ॥
कवै मिलि श्रोंन द्रिगस्सुतु लेहि। मनों सिसु जुब्बन नारिय देहि ॥
स विभ्रम हाइ उभारित चक्र। इसं द्रिग इष्य कटाच्छ सुवक्र ॥ छं० ॥ २५ ॥
इते गुन लच्छिन नच्छिन बाल। करी मनों काम सिरी रति साल ॥
भई जब बाल चढंतय बेस। दई तब पिथ्थ नरिंद गिरेस ॥ छं० ॥ २६ ॥

रावल समर सिंह का गुण वर्णन।

दूहा ॥ नर नरिंद जोगिंद पति। मुंजी ढाल विरद्द ॥
उडगन निकट नरिंद विय। सेवत रचन गिरद्द ॥ छं० ॥ २७ ॥*

कवित्त ॥ सिंगी रा अवधूत। बीर चिचंग नरिंदं ॥
कमल पानि सारथ्थ। अरुन तेज कहि चंदं ॥
बर कप्पन कालकं। विरद साहन सुरतानं ॥
बर प्रब्बत वैराज। भोग जोगह षड़ दानं ॥
सो मद्दन रंभ आरंभवै। एक रंग रत्तौ रहै ॥
कलिकाल घाम किष्पै नहीं। झलहलंत दुज्जन दहै ॥ छं० ॥ २८ ॥

* यह दोहा मो. में नहीं है।

श्रीफल देकर पुरोहित को तिलक चढ़ाने को भेजना और इस संबन्ध से अपने को बड़ भागी मानना ।

दूहा ॥ फल श्रीफल दुज हथ्थ कै । जाद्र सँपतो देव ॥
आज घनंदे पाप घम । मिलि चिचंगी सेव ॥ छं० ॥ २९ ॥
भोजन भाव अनंत किय । दिसि उत्तर ग्रह रष्षि ॥
पाप जन्म बहु न्हान कौ । गय दुज राज सु इष्पि ॥ छं० ॥ ३० ॥

पुरोहित का चित्तौर में पहुंचकर वसंत पंचमी को तिलक देना ।

कवित्त ॥ आज घनंदे पाप । समर संमुह ग्रह भग्गे ॥
वय अक्रम मन नट्टए[1] । क्रंम सुक्रत[2] फल जग्गे ॥
पंच दिवस रष्षि थांन । जंपि दुज राज सु आइय ॥
वर वसंत वैसाष । लगन पंचमि थिर पाइय ॥
चतुरंग लष्षि चिचंग दिय । कुयन राम विग्रह सुतह ॥
जाने कि अग्गि समसान की । देषि सुतन लग्गे सु जंह ॥ छं० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज के विवाह की तयारी करने का वर्णन ।

वाजपेय राज सू । होइ कलजुग्ग भंम गुर ॥
और जगनि ना होइ । व्याह मंड्यो सुभ्रंम धुर ॥
रथ चौसट्ठि प्रमान । रथ वर जोग प्रमानं ॥
वार वार पर वाज । वीर सज्जे उनमानं ॥
सा इक्क इक्क कर ना किरनि । सत्त सत्त सो वेद[3] विधि ॥
चिचंग राव रावर सुभ्रम । करन मतौ प्रिथिराज सिधि ॥ छं० ॥ ३२ ॥
हेम चयं गय जुगति । सचे मिष्टान पान वर ॥
वर कुवेर लभ्भेन । पार प्रथिराज राज नर ॥
चाव दिसि वर गांन । दांन चाव दिसि अप्पै ॥
ब्रह्मा वेद क्रम छेद । सूर नहि सोरथ थप्पै ॥
जे जोग भोग जोगिंद नव । सो जगत मधि भुल्लई ॥
प्रथिराज राज राजन बली । बलिन जग्ग सम तुल्लई ॥ छं० ॥ ३३ ॥

(१) ह. मो.—अक्रंम नट्टुए । (२) को. ह. ए.—अक्रंत । (३) मो.—देव ।

दूहा ॥ धरम सुथिर राजन बली। देव दैव दुति चाव ॥
चाव हिसि सो देषिये। लच्छि मोल लषि भाव ॥ छं० ॥ ३४ ॥

छंद मोतीदाम ॥ जयं जय छंद जयं गुन रूप। कटावन हेम सु बारह भूप ॥
दिसं दिसि पूरि न्रपं न्रप थांन। मनों विधि जग्ग कि देवन थांन ॥ छं० ॥ ३५ ॥
रसं रस तोरन बंधन बार। मनो नट वत्त कला गुन चार ॥
सुभै अति सोभ सुभद्रह हेम। मनों बर मेर बिराजत नेम ॥ छं० ॥ ३६ ॥
सबै बर बीर फिरै जिहि पास। मनो बर भांन कलान प्रकास ॥
कढ़ै गर सुंदरि नान प्रकार। मनों ससि भांन उगे इक बार ॥ छं० ॥ ३७ ॥
बिराजत मुत्तिंन बंदरवार। मनों भुअ आंन मयूष प्रचार ॥
अहं अग्र उंच सु पंति बिसाल। मनों कयलासय सोभति चाल ॥ छं० ॥ ३८ ॥
कथा कविचंद सु उप्पम थोर। बिराजत पंतिय कंतिय चैार ॥
धरैं घर अंम्रत पंच प्रकार। जचें तिन देत संतोष अचार ॥ छं० ॥ ३९ ॥
टगं टग लग्गिय दिष्ट प्रकार। दिषे चहुआंन कलाधर सार ॥
अली विधि रूप प्रकार प्रकार। सुभै जनु इंद्र सु जानिह दार ॥ छं० ॥ ४० ॥

कवित्त ॥ नहिन हेम पर भास। लच्छि कुबेर लच्छि गुन ॥
थांन थांन नवनिद्ध। देव जंपे सुदेष मन ॥
अनिम मद्दिम गरिमास। लभि देवात मद्धिधिय ॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि। राज द्वारह बर बंधिय ॥
जीतिय जितीक सुरतांन निधि। प्रिथा व्याह व्रिंमत करै ॥
धंनि धंनि धंन नव षंड हुअ। संक पंक गड्डिय डरै ॥ छं० ॥ ४१ ॥

पृथ्वीराज ने ऐसी तयारी की मानो इन्द्रपूरी है।

साटक ॥ हिंम हेमय द्वार द्वारुन गनं[१]। दीसंत लच्छी बरं ॥
एंच हून सु च्यारि रत्न गुन ए। सिद्धांत सारं गुरं ॥
संभया वाहन ताह नैव तनयं। धन पैार संधं गुनं ॥
जानिज्जै सुर लोक इंद्र उदितं। धामं सचीवं बरं ॥ छं० ॥ ४२ ॥

(१) छ. मो.–नग।

पृथ्वीराज का चारो दिशा में निमन्त्रण भेजना, घर घर में तयारी होना।

छंद चन्द्रायण॥ धनि ध्रंम धनि प्रथिराज। गुन दच्छि लच्छि विराज॥
मधि जमुन में यों धांम। सुर नाक सुर विश्रांम॥ छं०॥ ४३॥
धज ढ्रंच फरहर रूप। सुरतान पट्ठय भूप॥
त्रैलोक न्योतें काज। मनो देव व्याह विराज॥ छं०॥ ४४॥
विधि वरन वरन सु धाम। कुब्बेर वरषिय काम॥
वर ध्रंम जग्गि प्रकार। सम दांन विनयह सार॥ छं०॥ ४५॥
फिरि राज राजन चाल। लछि देव एवनि पाल॥
घट पाल कै ग्रथु पाल। ……………………॥ छं०॥ ४६॥
मति ध्रंम भूपति साज। आनंद उछव विराज॥
जगि जोग जुग्गनि नैर। उच्छाह घर घर कैर॥ छं०॥ ४७॥
विधि भांन सुरपति भांन। चहुआंन तिन सम मांन॥
नव नेह ग्रह ग्रह दांन। कवि करै कैान वषान॥ छं०॥ ४८॥
वर जीह फनपति होइ। चहुआन व्याचक जोइ॥ छं०॥ ४९॥

हाथी घोड़े सेना आदि की तयारी का वर्णन।

छंद वृद्धनाराच॥ परट्ठि सेन सज्जि वीर वज्जए निसानयं॥
नाराच छंद चंद जंपि पिंगलं प्रमानयं।
गजं गजं चिलं मलं चला चलं गरिट्ठयं॥
कसंमसं उकस्सि सेस कच्छ पिट्ठ उट्ठयं॥ छं०॥ ५०॥
पक्को सुमोस भार हो वराह कंध उक्कयं॥
चले सयम्म बंधि भूप चंद जंपि बोलयं॥
मनैां दसंति काज सेन मेछि इंद्र तोलयं॥
तुरंत चोंर गज्ज सीसमा सिंदूर राजयं॥ छं०॥ ५१॥
मनों चिजाम कंठ सूर चंद बंधि लाजयं॥
……………………………………
फिरंत होरि कुंडली सुबाज राज दिक्खयों॥

वी चष्य भोर चंद कब्वि ता समंत पिष्यहीं ॥ छं० ॥ ५२ ॥
सु नष्चई सुरंग धाप बाज ताज उट्ठहीं ॥
मनों कि डोरि चक्करी सुचष्य चष्यि नष्चहीं ॥
सुवीयता सुरंग चंद उप्पमा सु रद्दई ॥
मनोकि तार नभ्रतेय काल तेज तुट्टई ॥ छं० ॥ ५३ ॥
लजै भजै मनं गतीय पुब्वता[1] कवी कहै ॥
सु चंपिका कुरंग गत्ति भांन देषिता रहै ॥
रजं रजं जराइ राइ छित्तयं किरावलं ॥
उपम्म चंद कब्विता कही तहां उतावलं ॥ छं० ॥ ५४ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों की तयारी का वर्णन।

कवित्त ॥ पंच राइ पंचाल। लिन्न वैराट बद्ध वर ॥
जैत सींह भोंहा भुआल। का कन्ह नाह नर ॥
रा पज्जून नरिंद[2]। पांन ठंठरिय सिंघनग ॥
दह रावत आजांन। बाह बंधव सुबत्त अग ॥
बंधन सुमीर मेवार पति। अति उछाह आनंद धरि ॥
संजुरिय[3] जांन कचन सहस। सहस अह्र बज्जन सुघरि ॥ छं० ॥ ५५ ॥
दूहा ॥ जस वेली वर चष्य चै। फल पुच्छै चित रंग ॥
वर सोमेसर चष्य द्रै। ग्रह सज्जै रस अंग ॥ छं० ॥ ५६ ॥

रावल समर सिंह का व्याह के लिये पहुंचना, रावल की शोभा वर्णन।

आयो वर रावर समर। तोरन संभरि वार ॥
बाल देस बनिता बनी। मनों संग रति मार ॥ छं० ॥ ५७ ॥
सूर रूप रावर समर। बेस बाल सत पच ॥
प्रीत चंद कमनिय कुमुद। परस सरस सित[4] रत्त ॥ छं० ॥ ५८ ॥

(१) ह. मो.-पुब्बका।
(२) ह. ए.-रा पज्जून पूरंन।
(३) मो.-संमिलियं।
(४) मो.-छिततयं।

नगर में स्त्रियों की शोभा देखने की शोभा का वर्णन ।

छंद मोतीदाम ॥ चढ़ी घर जाल्हिन बाल[1] बिसाल । रही लघुबेस लगी चित्रसाल ॥
मनं सुष बालिय अंचल लेहिं । चपं चपला कुलटा गति केहिं ॥छं०॥५९॥
हलावत चंचल अंचल नारि । मनों विधि देंहि कटाच्छन गारि ॥
बंधे सुर नारि कयं सुर रंग । उरिं निरखें घन विद्युन अंग[2] ॥ छं० ॥ ६० ॥
झमं झम होइ सुहेम किरन्न । ससी पर होड़ मयूष अरुन्न[3] ॥
मची वर बीरन पीकह[4] कीच । बरष्य कि मंगल सूर सु बीच ॥ छं० ॥६१॥
झमं झम होत करं नष पान । परी छवि होड़ रवी ससि जानि ॥
मिनं मुष यों नष में झलकाइ । न दिष्यहि उंच रचै ललचाय ॥ छं० ॥६२॥
दिपै नग चीर चिराकन वांम । रचै जनु दीपक कामय धांम ॥
सु उज्जल भांन चिराकनि जोति । फिरै तहां बाल जराइन कोति ॥छं०॥६३॥
उदै जनु लिच्छमी कंति [5]बिगास । किधौं तप तेज किराज विलास ॥
कहै कवि चंद उधम्म प्रकास । बन्यौ जनु प्रप्पन[6] तेज विलास ॥छं० ॥ ६४ ॥

समरसिंह के पहुंचने पर मंगलाचार होना ।

कवित्त ॥ वर कलस्स वर बंदि । बंदि नरुनिय सर लिन्नौ ॥
अष्ह सुरंग कवि चंद । तहां उप्पम बर दिन्नौ ॥
घन चंदन वर पट्ठ । सिंढ़िय सोभा सुफटिक मनि ॥
घन प्रवाल पुंभिय बिलास[7] । सिर सोभ सुरंग फुनि ॥
उत्तरिय वीर रावर समर । बर जोगिंद नरिंद गति ॥
स्रृंगार बाल भूषन कहौं । जु कछु चंद बरदाइ मति ॥ छं० ॥ ६५ ॥

दूहा ॥ स्यांम बेस नन बालभय । घटि न कछूव किसोर ॥
दोष बाल बरनत कविय । भयौ भेंर घर चौर ॥ छं० ॥ ६६ ॥
वर सुवस्त्र तजि बाल नें । सैसव[8] मिस सुंडारि ॥
अब भूषन जब ग्रष्ह करहिं । जोवन चढत सवारि ॥ छं० ॥६७ ॥

---

(१) मो०—बाम ।　　(२) ए० कृ० को०—दुरि देखत मेघ तड़िस सु अंग ।
(३) मो०—अरंग ।　　(४) मो०—बीरह पीकन ।
(५) ए०—बिगास ।　　(६) मो०—दर्प्पन ।
(७) मो०—बिसाल ।　　(८) मो०—सैशव ।

शृंगार का वर्णन।

छंद चोटक॥ तजि मज्जन सज्जि सिंगार अली। प्रगटी जनु कंद्रप जोति कली॥
जुसँवारिय केस सुरंग सुगंध। तिनं बर गुंथि प्रसून सु बंधि॥ ६८॥
तिनं उपमा सु कहै कवि सुद्ध। लग्यौ ससि राह अभ्रंमय[1] जुद्ध॥
चलें अलकें अलि चंचल घट्ट। लगी जुनु कालिय नागिनि पट्ट॥ छं०॥ ६९॥
जच्यौ ससि फूल धर्यौ मनिबद्ध। उग्यौ गुर देव किधौं निसि अद्ध॥
त्रियं उपमा कबरी सु अलप्प। चढे मनु[2] मेर ससी लय अप्प॥ छं०॥ ७०॥
सी मंति सुमुत्तिय बंधि संवारि। तिनं उपमा बरनी सु विचारि॥
परी रवि दोउ मयूषने तार। भए जनु सिद्ध उधातम धार॥ छं०॥ ७१॥
बनी कबरी बर पुत्तरि धांम। अध्यातम पाठि पढावत कांम॥
धर्यौ बर भाल तिलक्क मिलाइ। मनों ससि रोहिनि आनि मिलाइ॥
छं०॥ ७२॥

मनों ससि बीयक तीय समान। तिनं सिरसाइ लिलाट सुजांन[3]॥
हुती दुतियं बरनो कवि चंद। दुत्यौ छबि देखि सरद्द कौ इंद॥ छं०॥ ७३॥
बनी बर भौंह सु बंकिय एह। मनों धनु कांम धरं चिन जेह॥
कहौं बर नासिक ओपम एह। सु काम भवन्न कि दीपक तेह॥ छं०॥ ७४॥
द्रगं उपमा दुति यौं दमकै। सु मनों सुत षंजन के चमकै॥
जु दिषै बर भाइ दुलोचन कोर। मुचावत कांम कमान के जोर॥ छं०॥ ७५॥
चाटंकन की उपमा इतनी। जु कही कवि चंद सुरंग घनी॥
जु सुन्यौ रवि राह अख्यौ ससि पै। सु फिरै दुहु बीच सहायक ह्वै॥ छं०॥ ७६॥
उपमा सु कपोलन की चिलकै। जु मनों ससि ह्वै रवि में झलकै॥
जुटि गंठिग मुत्तिय पंतिन की। तिनकी उपमा कवि नै मनकी॥ छं॥ ७७॥
दुअ पास कपोलन तेज कुच्यौ। मनों तारक ह्वै ससि उग्गि उच्यौ॥
जु चिबुक्कन की उपमा छिलज्यौं। मनों धंग सुता सितपष तज्यौं॥
छं०॥ ७८॥

---

(१) मो०—अधर्म्मय।
(२) मो०—मनों।
(३) ए० कृ०—सुजानि।

कल ग्रीव त्रिवल्लिय रेष वनं। सु ग्रह्यौ मनु कन्दर पंच जनं॥
त्रिय वाल सुमालन लाल सजै। सुष सी जनु भारति नभ्भ नजै॥छं०॥७९॥
गुँथी पट स्यांम सु मत्तिय माल। भयौ जनु तीरथ राज विसाल[1]॥
उठी पट कुट्टिय कंचुकि वांम। कि जीवन कों त्रिपुरं चलि कांम॥
छं०॥ ८०॥
कछू छवि छत्तिय की वरनं। सु रह्यौ मनों कांम तिनं सरनं॥
वर लंकिय लंकय सिंघ किनै। वर मुंट्ठिय मांहि समाइ तिनै॥ छं०॥ ८१॥
* पसरे नन द्रष्टि न ठैर रुकै। * मृगनित्तच देषि मनौं सु चुकै॥
कटि मेषल उप्पम एह धरं। मनों नौग्रह सिंघ सहाइ वरं॥ छं०॥ ८२॥
सुभंत समुपित्त अंगुरि तच्च। मिले गुरु मंगल वस्सनि षच्च॥
वनी कर पींचिय पट्टय स्यांम। तिनं उपमा वरनी वर ताम[2]॥ छं०॥ ८३॥
लटक्कै वर अंग सु फूंदन लाष। झुलैं मनुं नागिनि चंदन साष॥
वरनों मनि वल्लि वढंत नितंब। सुभै जनु उज्जल दै रवि विंब॥ छं०॥ ८४॥
सकोमल जंघ सु रंग सुढार। थमी मन चित्त पराद्दिय मार॥
सजे बहु वार सिंगार सुरत्ति। चली तव हंस उथप्पन गत्ति॥ छं०॥ ८५॥
सु एडिय उप्पमता कवि एह। रची जनु कीरिय कुंद नरेह॥
वरने नख की उपमा कविता। सुजरे मनुं कुंदन मुत्तियता॥ छं०॥ ८६॥
†जल बूंद पुहप्प कि द्रप्पन दुत्ति। †कि तारकि तेज कि हीर प्रभत्ति॥
वर गोप्प सुगंध सुजांनियनं। प्रगटै वर वास सदेव घनं॥ छं०॥ ८७॥
षट दून चवग्गुन में वरनं। सिनगार अभूषन ए कहनं॥
तव सज्जिय वालत मोर सुषं। उपमा कविचंद कही सुरुषं॥ छं०॥ ८८॥
द्दून भाइ सुमुत्तिय गुंज[3] वहोइ। द्रिगं अधरं प्रतिविंब सजोइ॥
करैं रंगरत्त दुकूल सु ओर। झुलै मुष जरष पाइ झकोर॥ छं०॥ ८९॥
बन्यो मनवंक मनोरथ जंम। करे जष चंद सु धूरिक क्रम्म॥
मिले कि कंहू अधरा रस पांन। कहै कविचंद सु जीरन जांनि॥छं०॥९०॥

---

(१) को०—प्रयाग।
* ये दो पंक्तियां मो० प्रति में नहीं हैं।
(२) मो०—कष्टिस्तांम।　　　　† ये दो पंक्तियां मो० प्रति में नहीं हैं।
(३) मो०—गर्ज।

सु देषि कच्छौ कविद्दव अभ्यास । मनों उठई मकरंद सुवास ॥
सजे षट दून अभूषन बाल । मनों करि काम करी रति माल ॥ छं०॥८१॥
सु उज्ज सु संकर सों मन अंध । मनों अरनामद अग्ग सुबंध ॥
धस्यो तन कौरव वस्त्र कुंआरि । मंडी जनु संभ मनंमथ रारि ॥छं०॥८२॥

पांच सौ वैदिक पंडित, दो सहस्त्र कोविद, एक सहस्त्र मागध आदि गुण गाते हुए, ऐसी धूमधाम से रावल समरसिंह का मंडप में आना ।

कवित्त ॥ सय सुपंच वर विप्र । बेद मंचं अधिकारिय ॥
उभय सहस कोविद्द । छंद तक्कह[1] अनुसारिय ॥
सहस एक मागध सु । सित्त पौरान पविचिय[2] ॥
सहस अट्ठ डाहालगत । गाइन सुर जित्तिय ॥
उडिरेन धेन गोधूल कह । सहस दोष कट्टन घरिय ॥
संभरिय ग्रेह[3] आहुट्ठ पति । मिलि विधान[4] मंडप भरिय ॥ छं० ॥ ८३ ॥

विवाह मंडप की शोभा का वर्णन ।

छंद नाराच ॥ विधांन धान मंडपं । अनंत जग्ग[5] पन्नयं ॥
विपष्य चारि कित्तनं । समर्घ दैव रत्तनं[6] ॥ ८४ ॥
धुनइ धुंम्म साजियं । अषंड संन वाजियं ॥
प्रजान पुन्य पानयं । सु पंच कोटि दानयं ॥
सभूत मेम लच्छिनं । अभूत दांन दच्छिनं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
दमित्त काम संवरं । कलंक किंत्ति रावरं ॥ छं० ॥ ८६ ॥
असेंन भूमि भारियं । अग्रंत पांनि धारियं ॥
कुसंभ चीर गंठियं । प्रथा प्रसंग पठियं ॥ छं० ॥ ८७ ॥
सु सद्दियं जयं जयं । सु सद्द विप्रयं लयं ॥

(१) ए० को० क०—तक्के ।
(२) मो०—पविचिय ।
(३) मो०—ग्रह । (४) ए०—विवान ।
(५) मो०—जग । (६) यह तुक मो० में नहीं है ।

पहनवी सु उद्दयं। सिकार सद्दयं सयं ॥ छं० ॥ ९८ ॥
अचिज्ज सिद्ध चारनं। विचार बार बारनं ॥ छं० ॥ ९९ ॥

दूहा ॥ परनि वीर रावर समर। बहुत कहूं रस जोइ ॥
कवि वर बरनत ना बनत। और सुखय बहु होइ ॥ छं० ॥ १०० ॥
करे चंद वरदाइ दुहुं। बार बार मनुहार ॥
राज राज ढिग ढिग फिरै। मनों ससहु रविसार ॥ छं० ॥ १०१ ॥

कवि कहता है कि पृथ्वीराज के यहां बिवाह मंडप में इन्द्रादिक देवता जय जय कर रहे हैं और लग्न का समय ज्यों ज्यों पास आता है आनन्द बढ़ता है।

कवित्त ॥ चौदानन के ग्रेह। इंद्र जचि[1] होय अग्नि वर ॥
अष्ट देव सत सील। नाम[2] संतोष मंच वर ॥
सहस नयन वर राज। धीर ढिल्ली अधिकारिय ॥
जच्छ देव गंध्रव्व। जयति जै जै उच्चारिय ॥
दिव देव लगन आवै घरी। तिम तिम बाढै पेम रस ॥
ज्यौं चढे समुद हिल्लोर वर। तिम सु वीर बढ्ढति जस ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दान सकल सामंत। न्यांत जग्गै अधिकारिय ॥
इंद्र राज कुब्बेर। इंद्र वासम न विचारिय[3] ॥
वचन रचन रुचि कव्वचि। देव रुचि कहै ग्यान सधि ॥
अष्ट जोग भुंजै सभोग। निरषंत सकल सिध ॥
जे जे नरिंद संभरि धनी। संभरि विधि संभरि चरित ॥
भूपाल वीर दरबार वर। तिच्छित देव लागे सुगन ॥ छं० ॥ १०३ ॥

सांमतों और राजाओं ने जो जो दहेज दिया उसका वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ प्रथंमं सुकन्दं निवंत्यौ सु राजं। कही उप्पमा चंद कव्वीति साजं ॥
शतं[4] एक बाजी करी पंच दूनं। दियौ राज कन्दं निवंतौ स जनं ॥ छं० १०४ ॥

(१) मो०—जब।   (२) ए०—नांव।
(३) मो०—प्रति में "दान वरषत जलधारिय" पाठ है।
(४) को० कृ० ए०—सितं।

लछ्छी वस्त्र हेमं नगं पारि पारं। तिनं देषते देव गत्ती विचारं ॥
दियं निड्डुरं राइ रट्ठौर राजं। भुजंगादि भुछ्छै कहै सव्व साजं॥ छं०॥१०५॥
दियं बंध राजं सलष्षं पवारं। धनं राइ कुव्वेर लभ्भै न पारं ॥
महा दंत दंतीन की पंति बंधी। दरव्वार मानों नगं जोति संधी ॥छं०॥१०६॥
दियौ जाम जद्दों सु लद्दो जुवानं। सहस्सं दसं हेम गज एक पानं ॥
दियौ राज षीची प्रसंगंति बीरं[1]। उभै दून हथ्थी हयं सत्त सूरं॥ छं० ॥१०७॥
रजक्की सु वस्त्रं अनेकं प्रकारं। दिषै बीर बीरं महा बीर सारं ॥
दियौ राज गौइंद आहुट्ठ राजं। दियं तीस हथ्थी महातेज साजं ॥छं०१०८॥
इकं माल मुत्ती उतंगं सरूपं। तिनं देखतें भांन झंनं न भूपं ॥
अनत्ताइ दीयौ लियौ नाहि राजं। धुनी ईस मत्तां उदै देव साजं ॥छं०॥१०९ ॥
पिया रूप आगें महा पाप लच्छी। तिनं राज राजं निरष्षी अनछ्छी ॥
दियौ राम राजं रघुव्वंस बीरं। तिनें पार कुव्वेर लभ्भै न तीरं॥ छं०॥११०॥
उभै सत्त बाजी उभै सत्त हथ्थी। तिनं सथ्थ एकं किरन्नी बिरथ्थी ॥
उभे एक राजं दियौ एक भानं। दसं तेज राकी पराकी प्रमानं॥ छं० ॥१११॥
दियं सत्त बंधं कनक्कू बिराजं। उभै सहस हेमं इकं बाज राजं ॥
कियौ राज न्यौंते अजम्मेर बीरं। सदा सागरं गौरयं लाज नीरं॥छं॥११२॥
दिए पंच बाजी सुरंगं तुरक्की। जिने धावतें बाइ की गत्ति थक्की ॥
दियौ राज चंदं पुँडीरं सु बीरं। महा हेम सहसं उभै बाज तीरं॥छं०॥११३॥
दियौ राज कैमास न्यौतौ नरिंदं। घरं पंचमौ भाग लच्छी स व्यंदं।
जितौ राज राजं दरव्वार हेमं। तितौ पंचमौभाग अप्पौ सु तेमं॥छं०॥११४॥
दियौ चाइ चामंड लष्षि प्रकारं। नवं निद्धि सिद्धं सुलभ्भै न पारं ॥
रष्यो एक वस्त्रं उभै पंच बाजी। दियौ राजराजिंद राजिंद साजी॥छं०॥११५॥
दियौ अल्हनं अंग इत्तौ प्रकारं। तिए तात के नग्ग चिन्हे सुधारं ॥
हयं हेम रूपं गयदं सु लच्छी[2]। जिनं देषतें इंद्र कै। अब्ब गच्छी॥छं०११६॥
दियौ दान सूक्रम्म[3] सादस्स मोरी। इकं बाज बीरं रजं पंच कोरी ॥
दियौ राज चंदेल भोंहा विचारं। तिनं न्यौंत कौ कोइ लभ्भै न पारं॥छं०११७॥

---

(१) को०—चीरं। (२) ए० को० ह०—में "तिनं अंग अंगं विरष्षं सुलच्छी" पाठ है।
(३) ए० को० ह०—सूक्रस।

नगं पंच मुत्ती इसी अट्ठ माला । जिनें द्रव्य कौ छेह आवै न पाला ॥
बंधे साथि गोरी लही तस्सवीरं । दई राज चौहान ज्योंनें सरीरं छं०॥११८॥
सतं पंच वाजी सतं अट्ठ हथ्थी । तिनं देखतें तेज कुब्बेर नथ्थी ॥
दियौ राज जंघार जहां नरिंदं । तिनें नाम भीमं महातेज कंदं ॥छं०॥११९॥
दसं बाज पंचं इकं[1] मुत्ति मालं । तिनं तेज आवत्त रवि किरन झालं[2] ॥
घसं मीनि च्यारं सयं समरकंदी । गुरं राम दीयौ मनौं राज इंदी ॥
छं० ॥ १२० ॥
लियौ ना सुराजं कछू नाहिं रष्यौ । पछै धर्म राजं सु राजं विसष्यौ ॥
दियौ वीर चालुक्क बाजार मीरं[3] । सिरं काज राजं सुभारथ्थ भीरं ॥
छं० ॥ १२१ ॥
न्रपं हथ्थ देतं सु सेवक्क मंडै । महा छत्र छत्री न छत्रीन षंडै ॥
हस्यौ राज प्रथिराज दै हथ्थ तारी । तिनं भारती कौन आवै प्रकारी ॥
छं० ॥ १२२ ॥
दियौ टांक चाटा चपल्ल प्रकारं । इकं बाज तेजं मनौं अग्गि सारं ॥
दियौ बग्गरी देव देवाधि दानं । सहस्सं न वाजी दियं बाद पानं ॥छं०॥१२३॥
दियं अंबरं काव सै पंच दूनं[4] । तिनं तेज आवन्न देषंत भूनं ॥
हुल्यौ सर्व सामंत कौ गर्भ भारी । पछें दीन सीसं दियं हथ्थतारी ॥
छं० ॥ १२४ ॥
दियौ राज हम्मीर चाहुल्लि इंदं । तवां कव्वि चंदं उपम्मा सु छंदं ॥
म्रगं नाभि कप्पूरयं गुंट वाजी । दियौ मुद्द[5] मुष्टं तनं तेज साजी ॥
छं० ॥ १२५ ॥
इकं कास मीरं पची संभी थंभं । इकं भद्र जाती सु हथ्थी अचंभं ॥
सबं सांइ हज्जार भारं प्रमानं । दियौ चारके कष्ट सोभिनं दानं ॥छं०॥१२६॥
दइ एक माथं सुमुत्ती सुरंगं । दिनं एक कौ मोल आवै सुभंगं ॥
दियौ नीति रायं खुषिचीय दानं । षिभ्यौ राज चहुआन घल्यौ न पानं ॥
छं० ॥ १२७ ॥

(१) मो०—नगं । (२) को०—जालं । (३) ए० कृ०—बीरं ।
(४) ए०—पूनं ।
(५) मो०—धुमीव ।

दई भांन भट्टी निधी नाप कारं। उभै एक बाजी तुकं द्रव्य चारं॥
दियौ वीर पाचार न्यौंतौ प्रमानं। तिनं दांन कैमास कों चाव थानं॥
छं०॥ १२८॥

सुरं दोइ बाजी सु मत्तं प्रकारं। दई लष्ष दूनं अधं तानि तारं॥
दियं अल्हनं दानयं सत्ति घट्टी। इकं बाज रूपं अधं सहस पट्टी॥ छं०॥१२९॥
हुतौ अब्ब सामंत दीनौ प्रमानं। सगा रष्यदानं करै को बषानं॥छं०॥१३०॥

कवित्त॥ जालंधर वर बाइ। वीर थट्टा मुलतानी॥
बंग तिलंगी तुच्छ। कारनट्टी निठ्ठानी॥
वर गोतम दिसि गंग पार। परबत दिषि राजं॥
माहू मालव राज। वीर वीरह गति राजं॥
कुंकुन सकुंच कालिंग दिसि। कंदखेस कछ अच्छु गति॥
नृपराज राज राजन बली। सुवर वीर भा वीर मति॥ छं०॥ १३१॥

पृथ्वीराज और चित्तौर के रावल का सम्बन्ध बराबरी का है दोनों की प्रशंसा।

कवित्त॥ षत्रिय राज प्रथिराज। सुष्षत सगपन सु द्रष्ट[1] गति॥
कब्बल कौ बल राइ। सवर वीरह सुवीर मति॥
सुत्त मत्त रजपूत। फिरे चाव दिसि धारं॥
अंग अंग मनु कुसै। कम्म सा कम्मय सारं॥
मति गरुव राज राजन बली। धरैं अंभ लभ्भ सुधर॥
चित्रंग राव रावर बली। उंच सगपन तत्त वर॥ छं०॥ १३२॥

कवित्त। अति उदार पहु पंग। सुनिय जग वत्त श्रवन्नं॥
षत्रिय भाव आदरन। पवे सम पवित समन्नं॥
बहुरि गरुअ तोंअर चिनेत। मानव मातुल गुर॥
निश्चित राज चितंयौ। अंम ह्वरति विवाह धुर॥
इक मात पुत्र आनंग वर। दै भगनी दै पुत्र जनि॥
संसार संभरिय राज गुर। भए सलष या परि सुभनि॥ छं०॥ १३३॥

(१) मो०—दृष्ट।

पृथ्वीराज और पृथाबाई के नाना अनंगपाल का वर्णन ।

अनग पाल तोंअर सु । अम्म धारन उद्धारन ॥
बंस बीय मातुलह । भए द्वै बीर सुभारन ॥
कलि तारन अरि देह । जुगनि कित्ती बिस्तारन ॥
चाहुआंन कमधज्ज । बंस मातुल गुर पारन ॥
प्रथीराज दिल्ली न्यपति । चिचंगी वर चिंतयौ ॥
पंचमि बिवाह पंचमि घरिय । भद्दी सुहूरत में भयौ ॥ छं० ॥ १२४ ॥

कवित्त ॥ व्याह मद्धि कारनेस । जग्य मधैं चित डोले ॥
छूतौ पाप कविबंध । देव देवासुर बोले ॥
ज्यौं चारन घर[1] निंद । जाइ भुक्तै अनुधारी ॥
सा सुरिंद संग्रहै । दोष लग्गै जुग भारी ॥
ग्यार सें अंन भषह सुहन । महा दोष अति घी सुवर ॥
वडवंध होइ निग्रह घरन । लघु बंधव हुअ नरक पर ॥ छं० ॥ १२५ ॥

विवाह का देव विधि से होना, बहुत सा दान दहेज देना ।

छंद पद्धरी ॥ तिन मध्य विराजत राज राज । निर्मलिय कला रवि तेज साज ।
ज्यूं जुगति जूववर कारन भोग । आए सु राज राजन सभोग ॥ छं० ॥ १२६ ॥
आए सुराज तिस्सुत नरिंद । हाडाल अंन अन्नह सुभ्यंद ॥
पंचाल देस सोमेस सूर । अलकंत सुष्य न्नमल सनूर ॥ छं० ॥ १२७ ॥
आए सु वीर भिन्नाट कर्न । धूंमह सुदेव धूम्मह सुपंन ॥
एलची देस भांडेर वीर । आए सु कोटि मुष तिनह नीर ॥ छं० ॥ १२८ ॥
देवत्य व्याह चहुआंन कीन । दंध्यं सु व्याह सम वरह चीन्ह ॥
अप्पी सु पुष्पि सिबरह सु ग्रेह । कल बढी कला जिन लीन देह ॥ छं० ॥ १२९ ॥
अप्पे सु एक सिव ग्रह प्रमांन । आनन्न व्याह दुग्गह निधान ॥
मै मत्त मत्ति मंतह सु कीन । सिंगार सार सत सहस दीन ॥ छं० ॥ १४० ॥
हुअ व्याह जनक सीता प्रकार । मिलि जग्य राज राजन सुभार ॥
संभरि नरेस सोमेस पुत्त । रस मांनि बीर अब भूत भुत्त ॥ छं० ॥ १४१ ॥

---

(१) मो०—घर ।

साटक॥ ऐ सोमेस सुत्रंच संभरि जयं। तारंग सूरं वरं ॥
सा दुज्जं दुज भ्रंम्म देवनि धरा। ग्राहं ग्रहंजं षलं ॥
तामध्यं न्रप चंद सोम न्रपयं। नामं नरिंदं धुरं ॥
प्रिथ्यू नाथ सनाथ जग्य करनं। राज्यंद राजं गुरं ॥ छं० ॥ १४२ ॥

व्याह के पीछे दर्बार में आना।

कवित्त॥ दुलन मंच सब राज। आइ दरबार सु वंदं ॥
ज्यों नक्षित्र विंटयौ। सरद सोहै ञ्चनि ढंदं ॥
कनक पंति नग व्यंट। भांन विंव्यौं सुमेर वर ॥
जस विंव्यौं बल सोई। ईस विंव्यौं सु जटहर ॥
यों विंव्यौ राइ सोमेस सुष। सवल राज राजन गहस्र ॥
आरत्ति बीर देषति न्रपति। भांन चंद लग्गै चहस्र ॥ ॥ छं० ॥ १४३ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा।

दूहा॥ चहस्र सु लग्ग सु अर गिरि। महस्र लगै प्रथिराज ॥
चावहिसि लक्ष्छी सु जन। काजन मुक्तिय काज(१)॥ छं० ॥ १४४ ॥
दूहा॥ लघौ जनम या कज्ज न्रप। घर घर धरपति कांम ॥
चाव दिसि भूपति सुभे। जु कछु भूमि पर थांम ॥ छं० ॥ १४५ ॥
छन्द पद्धरी॥ जो कछू राज राजन नरिंद। सो भये कांम प्रथमीस वृंद ॥
नर वर न्रपत्ति दीसै प्रमांन। उज्जले गंग ज्यों भ्रंम ध्यांन॥ छं०॥ १४६॥
वर सुबर बीर पग मुक्ति धीर। वहु द्रंव्य द्रंद्र राजन सरीर ॥
नव लच्छि ञ्चंग ग्रह ग्रह प्रमांन। उच्छाह होइ मंडै निधान॥ छं०॥१४७॥
कनवज्ज बीर मुक्ती सु लच्छि। निधि देषि द्रंद्र वै ग्रब्ब गच्छि॥
कुब्बेर कोपि ञ्चंतह निरष्षि। सो ब्रंन धार ग्रह ग्रह वरष्षि॥ छं०॥ १४८॥
बहु बंधि संधि मनु देव काज। मंगल सु जोर नीसांन बाज॥ छं०॥ १४९॥

रावल का रंनिवास में आना।

दूहा। वर बंदे सुंदरि सकल। चावद्दिसि फिरि पंति ॥
मनुं ञ्चंग ञ्चंग अनंगनह। रति वर राजति कंति॥ छं० ॥ १५० ॥

(१) मो०-प्रलं।

कवित्त ॥ बरनि चारु उप्पर । उतंड अच्छिन मुत्ताहल ॥
ससि उप्पर ससि किरनि । षीर सुपे गुन चाहल ॥
चावद्दिसि अंगनां । अंगनं मित गुन मंडहि ॥
पक्क पक्क कों मिलन । पक्क लज्जा तन पंडहि ॥
प्रिथा दिष्षि कंपि चित्तंगपति । अच्छित मंचह विक्रति ॥
छोडंत छोट छोटन किये । अंनयं नारि नंषै सुहत ॥ छं॰ ॥ १५१ ॥

तिलक होना, और भांवरी फिरना ।

छंद भुजंगी॥ दियं अंग अंगंति अंगं तिरंगं । वुल्ले वेद वेदं सुजं मंच भंगं ॥
कला की अनेकं प्रकारंत व्याहं। टरै लग्न हाहं मई मंत राहं॥छं॰॥१५२॥
दियं वस्त थालं तिलक्कंति राजं । तहां चंद कव्वी उपम्मानि साजं ॥
मनों क कमोदंत ज्यों इंद साजं[१] । मिल्यौ जाइ चंदं सु सुत्तीनि पाजं ॥
छं॰ ॥ १५३ ॥
दिसा देव मंचं अमंचंति धारैं । न्दपं भंम सोधै विधी देव टारैं ॥
वुल्ले विप्र अंगं सु विद्दी सुभेदं । मनों देवता अग्ग भूले सवेदं ॥ छं॰ ॥ १५४ ॥
नृपं राह दिट्ठं कहरंति टारै । फिरैं भावरी भांन सुम्मेर सारै ॥ छं॰ ॥ १५५ ॥

हरषीकेश वैद्य और चन्द के बेटे जल्ह आदि को दिया तब रावल फेरा फिरे ।

कवित्त ॥ श्री पति साह सुजांन । देस थंभह सँग दिन्नो ॥
अह प्रोचित गुर रांम । ताहि अग्या नृप किन्नो ॥
रिषिकेस दिय ब्रह्म । ताहि अनंतर पद सोहै ॥
चंद सुतन कवि जल्ह । असुर सुर नर मन मोहै ॥
कवि चंद कहै वर हाथ बर । फिरि सुराज अग्या करिय ॥
करि जोरि कह्यौ पीथल नृपति । रावर सत भावरि फिरिय ॥ छं॰ ॥ १५६ ॥

दोहा ॥ निगम बोध गोतंम रिष । थिरि जैहि दिल्ली थांन ॥
दास भगवती नांम दे । प्रिथीराज चहुवांन ॥ छं॰ ॥ १५७ ॥
रिषीकेस अरु राम रिष । बहु बिध देकर मांन ॥
प्रिथा कुंवरि परनाय कै । संगि चलावै जांन ॥ छं॰ ॥ १५८ ॥

(१) मो॰—छाजं ।

प्रत्येक भांवरी में बहुत कुछ दान देना ।

कवित्त ॥ एक फिरत भांवरी । साठि मेवात गांम दिय ॥
दुतीय फिरत भांवरी । दुरद दस एक अग्गरिय ॥
त्रितिय फिरत भांवरी । दयौ संभरि उदक्क कर ॥
चौथी भांवरि फिरत । द्रव्य दीनौ अनंत बर ॥
चहुवांन चतुठ चावद्दिसा । हिंदवान बर भांन बिधि ॥
गुन रूप सचज लच्छी सुबर । सहज बीर बंधी जु सिधि ॥ छं० ॥ १५९ ॥

रावल समरसिंह के पुरुषों को चित्तौर मिलने का इतिहास वर्णन ।

छंद भुजंगी ॥ अनेकं अनेकं प्रकारंन सच्ची । करै राज अम्मं सुतं भम्म कच्ची ॥
मिले सर्वे क्रिची इते व्याह राजं । तिखभै नहीं नेक राजं सुघाजं॥छं०॥१६०॥
मद्दं भाजनं रंग रामं प्रकारं । कला अट्ठ मांनौ सु हथ्थं पसारं ॥
रतं नील रेनं किने स्याम सेतं । तहां ओपमा चंद बरनै सहेतं ॥ छं० ॥ १६१ ॥
गुरं भांन चंदं अरी राह राजै । मनौं एक नषित्र सज्जे बिराजै ॥
उडंतं अबीरं घनं सार रंगं । तिनं देवता बास भूलंत अंगं ॥ छं० ॥ १६२ ॥
किने भेद भेदंन मिष्टांन रूपं । तिनं वास देवं लगै सोम भूपं ॥
बिधं कुंड मंडप्प मंडे उतंगं । तिनं वास औरं अली भूलि संगं ॥ छं० ॥ १६३ ॥
जिती विह चिचंग गावै अपारं । दियै विप्र गारी सर्व भक्ति सारं ॥
तुमं मद्धि क्रिची न जानंत तत्तं । तिनं बंस कोनं सु पुच्छै अभीतं ॥ छं०॥१६४॥
रसं रच्चि कच्छी बडी पग्ग छुट्ठी । तिनं ढुंढि ढंढान नीके लिपट्ठी ॥
बडे राज देवत्त बीसल्ल नारी । सराधार भारं बली सचु धारी ॥ छं० ॥ १६५ ॥
तुमें चित्त चित्रंग चित्तं विचारं । तुमं ब्रह्म बंसं चरें सचु भारं ॥
दियौ राज हारीत रिषं प्रमानं । कन्यौ तप्प एकं गए कंग पानं ॥ छं० ॥ १६६ ॥
सिवं लिंग बिक्के तुव्यो सो अघाटं । तिनं ठांम नामं धन्यो मेद पाटं ॥
रमै विप्र साथं सु हारीत रिष्षं । करै सेव बाखं स आवत्त सिष्षं ॥ छं० ॥ १६७ ॥
किते छेद भेदं किते गान गावै । किते देवता सेव पुष्पं चढ़ावै ॥
करै रष्षि तप्पं दिनं गंग न्हावै । तहां उज्जलं गंगषं नीर धावै ॥ छं० ॥ १६८ ॥
करै अंग कष्टं सधै पंच अग्गी । मद्धा तेज छीनं तनं पंच नग्गी ॥
कियं पूरनं तप्प तथ्थं स अग्गं । लियं लष्ष चारी अचारी सु मग्गं ॥छं०॥१६९॥

जिती काम्ह वेसं वदै वाल पत्या । तिनं देपिकैं सद्द जाजुल्य गत्या ॥
रिपं उंच तेनं पिनं सोल चायं । नचीं मुष्य संद्यौ लियौ झेलि पायं ॥छं०॥१७०॥
चल्यौ अद्ध सीसं किये उद्ध पायं । मद्दा तेज दुःष्पं दिष्यौ रिष्य रायं ॥
नमो मंच मंची नमो पीलपालं । दियौ राज वंसं जमं कौ विसालं ॥छं०॥१७१॥
रयं मंच प्रम्मान दिष्यौ सुरिष्यं । दई भूमि जुग्गं जुगंतं विसष्यं ॥
तिनं वंस चिचंग चिचं सु राजं । परं नीतिवीरं प्रिथा वाल वाजं ॥छं०॥१७२॥

छंद गीता मालची ॥ ढलकंत वैंनिय हास सैंनिय स्रग्ग नेनिय गावईं ।
मधुरं सबद्दं रहसि वद्दं चह्न चद्दं आवईं ॥
. वै स्यांम सोरं गुनति गोरं चित्त सोरं सोहईं ।
गुञ्जंत[1] थोरं उठे कोरं वेस भोरं मोहईं ॥ छं० ॥ १७३ ॥

बिवाह की शोभा का वर्णन ।

कवित्त ॥ विधि स्रृंगार रस वीर । हास करुना तन चारिय ॥
रुद्र भयानंक मंत । करी करुना ना वारिय ॥
करुना तजि रस अट्ठ । भयौ नृप राज विवाहं ॥
सुप सनेह घन ग्रेह । राज जोगिंदनि साहं ॥
सुप व्याह सजन सम हत रवन । गई नट्ठि चय जांम निशि ॥
सहदेव देव देषन चलह । भुगति मुगति धन राज वशि ॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ सा सुंदरि सुंदरि सुकथ । रस[2] दरसन परिमांन ॥
मनों देव देवाल वजि । मर दुंदभी निसांन ॥ छं० ॥ १७५ ॥

छंद भुजंगी । वजे दुंदभी भेरि देवाल थानं । करे युत्ति रुपं अनेकं प्रमानं ॥
न्रिपं भीर अैसीं दरव्बार थानं । मिले षंड षंडं सुराजान जानं ॥ छं० ॥ १७६ ॥
प्रिथा रूप आगैं प्रथी कौन अैसी । जनक्कं सुदारं सिया रूप कैसी ॥
भुगत्ती मुगत्ती हित नाह कारं । सवै दिष्षियं राज राजं दुआरं ॥ छं० ॥ १७७ ॥
मषा भोजनं ते प्रकारं विलासं । तिनं स्वाद तें देव छंडे न पासं ॥
रचै अग्नि स्वाहा सुदेपत्ति होज । महा जग्य जापं अहतंत सोज ॥
छं० ॥ १७८ ॥

---

(१) कृ०—उवंत । (२) को० कृ०—सर ।

छिन छिन्न लंका सपत्तौ विराजै। दिनं अष्ट अेषं रचै द्वार साजै ॥
सुई राज लच्छी न पूजै सुकंती। जये देवता जग्य में जीमवंती ॥ छं० ॥ १७९ ॥

कवित्त ॥ बहुत मंसघन सार। असन षलमीन समंकत ॥
अनँग जोग फल अनत। पान मिष्टान असंकत ॥
छिति छिची विधि सजवि। देइ लज्जी लक्खि रूपं ॥
रंक रंक गति छंति। होइ राजिंद सुभूपं ॥
नवनीत सुनीत पुनीत प्रभु। चाहुआन रंजे सुभर ॥
जानियै राज राजंन कै। सुरा थान माया सुधर ॥ छं० ॥ १८० ॥
धूप दीप घनसार। बंटि म्रगमद पान रस ॥
बहुत सरस रस राज। दिष्षि प्रतिव्यंब अप्प जस ॥
आरति व्यंद अरबिंद। कमल कैरव ससि सागर ॥
भुगति मुगति संग्रहै। मुकति भंजै अति आगर ॥
मय मंत कूअ[1] अष्षा अषम। लषिन बतीस सुबंधि गुन ॥
निर्हि काज भोज राजन करत। उक्कांइ प्रथिराज मन ॥ छं० ॥ १८१ ॥

दूहा ॥ माया सोष[2] सु देषि कैं। गति भूले चालाहि[3] ॥
मानों मंच सुमंति[4] गति। बर ब्रह्मा बस भांचि ॥ छं० ॥ १८२ ॥

पृथ्वीराज के दान दहेज देने का वर्णन।

कवित्त ॥ एक एक रन जोग। गरुअ चरुअत्त चित्त विधि ॥
सांम दांन लघुसंति कंति मग्गीति संति सिधि ॥
अवक्लि बाज गज एक। उभै अप्पै नर बस्तं ॥
छेम धीर रजकीय। पार पावै ना मंतं[5] ॥
गरुअत्त गरुअ भय सत्त हों। सत हथ्थिय करनिय जुगति ॥
प्रथिराज राज राजन वलिय। देष दांन राजन भुगति ॥ छं० ॥ १८३ ॥

कवित्त ॥ राज दांन विधि देत। लगि आचिज्ज थांन थिय ॥
नाग लोक सुर लोक। रवी मंडल नर नर हिय ॥

---

(१) मो०--कुआ। (२) मो०--सोभ। को०--सोख।
(३) मो० क० को०--चलाहिः।
(४) ए०--को०--क०--मंत। (५) मो०--मवं।

दयति दांनि दांनियनि । दथ्थ पंतिय रवि राजै ॥
सु कवि चंद वर दाइ । देपि देवाधि सु लाजै ॥
वदि राज षांन संभरि धनी । किहि विधि लछी लछैं गुनौ ॥
ईंद्र सुगंग उड्गनति नभ । पत्त नरोवर गिर घनौं ॥ छं० ॥ १८४ ॥

दूहा ॥ दांन मांन निरमांन गुन । भगति रत्ति नृप जोर ॥
कथा दिष्षि कोइ लेइ निधि । भयौ भरैं(१) घर चोर ॥ छं० ॥ १८५ ॥

दूहा ॥ तन अग्गै मन चलत है । मन अग्गे तन जाइ ॥
जिहि विधि दांन सु उच्चरै । तिहि विधि पाप सु जाइ ॥ छं० ॥ १८६ ॥

दूहा ॥ कम्मसु जनि विधिनां रची । अंग रोर सिर पान ॥
तिन भंजन सोमेस सुअ । धनि संभरि चहुआन ॥ छं० ॥ १८७ ॥

चौपाई ॥ दिसि दिसि पूरिय हय गय राज । प्रिथीराज सुरपुर सम साज ॥
बाजै पंच सबद बनि रंग । रष्षनि दादस सूर अभंग ॥ छं० ॥ १८८ ॥

कवित्त ॥ एक दीह निड्डरह । राज रष्यो चिचंगी ॥
* दुतिय दीह सामंत । गरुअ गोविन्द अभंगी ॥
त्रितिय दीह पज्जून । बलि कूरंभ सुधारी ॥
चतुर दीह नर नाह । कन्ह कीनी किति भारी ॥
पंचमै दिवस कैमास बलि । बलि सुराइ सम जग्य किय ॥
छट्ठैं सु दीह पुंडीर धनि । धीर रष्षि कीरत्ति लिय ॥ छं० ॥ १८९ ॥

कवित्त ॥ सत्तम दिन रघुवंस । राम करनी कर मेरं ॥
जिहि नंदी पुर भंजि । समर मनुषारि सुबेरं ॥
अष्टम दिन अचलेस । अचल कीरति जिन रष्षी ॥
नमम दिवस पाचार । जगत दारिद्द सु नंषी ॥
दसमें पँवार धाराधि पति । सलष सु लषि पूरन्न विधि ॥
दिन एक एक रष्षे सवन । पंच च्यार लुहाय निधि ॥ छं० ॥ १९० ॥

(१) ए० कृ० को०—उड्गनसि । (२) मो०—भस्यो ।

* ए० को० कृ० प्रति में "दुतिय गोविन्द सु दीह । गरुअ सामंत अभंगी" पाठ है ।

रावल का बारह दिन तक बारह सामंतों ने अपने अपने यहां नेवता किया।

कुंडलिया ॥ रष्षि उभय घट[1] वीर वर। वर जंघारो भीम ॥
जिहि छोलें प्रथिराज की। को अरि चंपे सीम ॥
को अरि चंप्य सीम। देव दुज्जन अधिकारिय ॥
तिहि रष्यो चिचंग। समर रावर ग्रह चारिय ॥
विधि विधान विम्मान। द्रव्य अर्चन करि चष्यो ॥
रावर समर नरिंद। न्योति द्वादस दिन रष्यो ॥ छं० ॥ १८१ ॥

बारह दिन तक रहकर रावल का कूच की तयारी करना।

दूहा ॥ घट बीय छौस रत्तौ सु नृप। भर सु भांति बहु राज ॥
दिन बारह चिचंग पति। बज्जे बज्जन बाज ॥ छं० ॥ १८३ ॥

कवित्त। बजि बाजन अनुराग। सबर उच्छव बर धारिय ॥
नूर धूप तें अक्क। पंथ हथिनापुर सारिय ॥
हुअ उक्काह दिल्लीस। बंधि गुड्डिय ग्रह[2] बारं ॥
मनों खेम कल कोट[3]। करिय कल बल बिस्तारं ॥
धन ग्रहति ग्रेह उच्छाह हुअ। चाहुआन रवि वद्दयौ ॥
वेनिय[4] सुजस्स पुरवाननह। बल अनंत घट चढ्ढयौ ॥ छं० ॥ १८४ ॥

बरात लौटने की शोभा का वर्णन।

छं० मोतीदाम ॥ इति छंद सुछंद सुचंद प्रकार। सु मुत्तियदाम पयं पय चार ॥
परे गजनां जिहि कंकन चार। इसो गुन पिंगल नाम उचार ॥ छं० ॥ १८५ ॥
दसों दिसि पूरि नृपत्तिय सेन। बिराजय राज अनंद सु अैन ॥
सुधिं सुधि बीर प्रकार प्रकार। चलें संग दंपति ज्यों रति मार ॥ छं० ॥ १८६ ॥
ठनंकिय घंटनि घघ्घिय घूर। किनं किय बाजिय गाजिय सूर ॥
इकं इक चघ्घिय दासिय पंच। इसी सरसं गुन रचिय संच ॥ छं० ॥ १८७ ॥

---

(१) ए--इ--घर। (२) मो--घर द्वारं।
(३) मो--कोटि। (४) ए. कृ.--विलिय।

विधिं विधि पूरन पत्तिय सोम । निनं किय उज्जल सज्जल व्योम ॥
रहं रह राजन साजत सेन । मनों दिव देव दिवाधिप तेन ॥ छं० ॥ १९८ ॥
तुरंगनि तुंगनि की प्रति चींस । लगै तिन मंद सुच्छंदह ईस ॥ छं० ॥ १९९ ॥

दूहा ॥ ईस मंद संकर उदित । ब्रह्म ध्यान सिव पान ॥
संभरि घर चिचंगपति । को सन मानन जान ॥ छं० ॥ २०० ॥

कवित्त ॥ वर सु वुद्धि साधन सरीर । जोगह अधिकारी ॥
कार अदग्ग जग दग्ग । सरन रप्पन जुगचारी ॥
माया सों नहिं छिपत । नीर नीरज समान वर ॥
यों चिचंगं नरिंद । चतुर विद्या कोविद नर ॥
गोरी सु वंध सुरतान रन । जस लेयन जै जैनि वर ॥
सा लच्छि रूप भगनी प्रिथा । परनि राज पत्तौ सुघर ॥ छं० ॥ २०१ ॥

दूहा ॥ जहां परनि चिचंगपति । करी उलटि विपरीति ॥
सिर अप्पौ जुगिगनि नृपत । देव लोक दिवजीति ॥ छं० ॥ २०२ ॥

अनंगपाल का बहुत कुछ दान देना ।

कवित्त ॥ वाजे षीर सु वाजि । राज बज्जा सो वज्जा ॥
जस बज्जा वज्जासु । ध्रम्म क्रंमं चित रज्जा ॥
सम न कोई चिचंग । गरुअ गहिलोत गरुअ मति ॥
धनि सुध्रम्म अरु दान । दियौ दिल्लीस बहु भँति ॥
अर मंडि षीर घुट्ट दिवस । सत्त अट्ठ अरु पंच भति ॥
अग्गरें बांन बर काम छत्त । ढक्क वार चट्टइ सुगति ॥ छं० ॥ २०३ ॥

रोला[1] ॥ जो दिन रची ढिल्ली प्रति मांनिय देव गति ॥
रति संपति सुख श्रेष्ठ भार आर अति
दुहुं तन सुमन निरष्षिय लोइ वर ॥
मानों सची सँजोग सुरपति आपु घर ॥ छं० ॥ २०४ ॥

दूहा ॥ कनक कोड सुष्षे जथति । रतिन कथै कवि चंद ॥
बर जानै कै दंपती । कै[2] दीपक कै चंद ॥ छं० ॥ २०५ ॥

(१) ए०—कृ०—को०—चोपाई ।　　(२) ए० को०—को ।

कवित्त । मति मध्या अय बाल । सिनी प्रौढा अधिकारी ॥
लच्छी सोज सपज्ज । रूप रति वरन सु वारी ॥
धीरं तन सिय सार । विरच मंदोदरि नारी ॥
पति सु इता दमयनी । गिनी[१] रुंभिनि अधिकारी ॥
सा प्रथीराज अग्गनी प्रिया । देव जग्य सम जग्य किय ॥
आनंद रूप आनंद कथ । सोम नंद जस वंद छिय ॥ छं० ॥ २०६ ॥

कवित्त ॥ अरुन तरुन उदयंत । सिद्ध सिक्कर फिक्कारिय ॥
दिसि उत्तर ईसान । दिसा दस दसन उक्कारिय ॥
विमल नाग बच्छिय विनोद । केलिय अविलंबिय ॥
बागवान द्रिसीय । रवन राजन कर संमिय ॥
संचार सुमन सौरभ्भ बर । थमर रोरि रंगिय करिय ॥
आगम अरंभ बर वरव फल । जगति जोति व्यासह धरिय ॥ छं० ॥ २०७ ॥

व्यास जगजोति की भविष्यद्वाणी ।

कवत्त व्यास जगजोति । नयर नागोर वसंतह ॥
जोइ नंदै सोइ नंद । वसै सो रचै वसंतह ॥
प्रंद्रपथ्य पुर आदि । राज राजन चहुआनह ॥
उमर वोलि कीरति । अछेद साधन सुरतानह ॥
आविज्ज वत्त हिंदुअ तुरक । चलत चैत चल्लै भुअन ॥
प्रथमंग पुब्ब पच्छिम पथिर । चैत वत्त गंध्रव सुअन ॥ छं० ॥ २०८ ॥

कवित्त ॥ रुधिर भकम्भित न्हान । रूच पुब्बह पच्छिम पर ॥
कोलाहल कमिनिय । कज्ज चारम्य देव चरि ॥
समर सून्य[२] मंडलीय । अमर विचार बार[३] किय ॥
द्रुपद राय पंचाल । दुसह द्रोपदिय चीर छिय ॥
* सोइ समय वरव इकईस मय । चरचंत जुग्गनि कहिय ॥
संचे विचार हिंदू तुरक । इक्क अचल कीरति रहिय ॥ छं० ॥ २०९ ॥

(१) ए०–को०-क०–गिनि ।
(२) ए०–सुम्य । (३) मो०–सार ।
* मो० प्रति में "सोई समय समय चढं लिय वरव" पाठ है ।

सबों का अपने अपने घर लौटना ।

कवित्त । * "अप अप ग्रेह गुरंस्य" । राज राजन संपत्ते ॥
मोरा राव भिसंग । वत्त पुच्छै जग जित्ते ॥
पामारिय पारंभ । खोर संभरि[1] आहानव ॥
सा रंडै वोमिस । पुत्त वंधन सुरतानप ॥
ढिल्ला पमीर पम्मीर वों । विजय राज कमधज्ज किय ॥
अच्छर अपन्न[2]गल्हां गहत्र । घरनि पंच चहुआन लिय ॥ छं० ॥ २१० ॥

कवित्त ॥ घरनि पंच चहुआनि । आनि फेरिय कर जित्तौ ॥
ता पक्ष हिंदू तुरक । सवै[3] वीतक ज्यौं वित्यौ ॥
धीर मीर संग्रहिग । भीर भंजिय भिरि राजन[4] ॥
जै जै नन चहुवान । देव दुंदुभि घन पाजन ॥
जिहि ग्रहन पानि रावर समर । दूत्र आगम जोतिग कहै ॥
अप अप्प क्रंम केलिय कहन । लिप लिलाट तित्तौ लहै ॥ छं० ॥ २११ ॥

दूहा ॥ सत्तरि सत निय अग्ग करि । रज रज अप्प ग्रहास ॥
छीन सगोरी दंड षपि । पह सित्त पंचास ॥ छं० ॥ २१२ ॥

शाह गोरी का रावल को दहेज देना ।

कवित्त ॥ सत्तरि सत निय अग्ग । वीर गज राज सु अप्पिय ॥
ते छीनीं सुरतान । साहि गोरी गोरी किय ॥
पंच सित्त पंचास । एक सौ तुंग तुरंगम ॥
सौ दासी चतुरंग । सत्त ढोलिय अचंभम ॥
चतुरंग लच्छि चिषंग दे । वर सोमेसर थप्पियै ॥
मुक्ताइ[5] सजन रावर समर । पंच कोस मिलि अंपियै ॥ छं० ॥ २१३ ॥

---

* मो॰ प्रति में यह पंक्ति नहीं है ।
(१) ए॰ को॰ कृ॰—संभि ।
(२) ए॰—प्रबंध ।
(३) ए॰ को॰ कृ॰ प्रति में नहीं है ।
(४) ए॰ को॰ कृ॰—राजन ।
(५) कृ॰—वोलाई ।

पृथा ब्याह की फल स्तुति।

सुनै अचै उग्रचै। बत्त विय सम उच्चारै॥
लिषै दिषै अरु सुनै। सुद्ध मंची सुद्धारै॥
प्रथा व्याह संभरै। पंच भौ अंचन लग्गै॥
सेस फनंमित सुभट। काल पंसी नन लग्गै॥
साधवी सीय भगनी प्रिथा। प्रथा बरन चित्रंग पर॥
इन सम न कोइ भुवनह भयौ। नन ह्वैहै रवि चक्र तर॥ छं०॥ २१४॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके प्रिया विवाह वर्णनं नाम एकविंसमो प्रस्ताव संपूर्णम्॥ २१॥

अथ होली कथा[1] लिष्यते ॥

[बारहवां समय ।]

पृथ्वीराज का चन्द से पूछना कि होली में लोग लज्जा और छोटे बड़े का विचार छोड़कर अबोल बकते हैं इसका वृत्तान्त कहो ।

दूहा ॥ इक दिन प्रिथु नृप पुच्छयो । कहि कविचंद विचारि ॥
नर नारी लज्जा गई । फागुन मास मझार ॥ छं० ॥ १ ॥
बाल वृद्ध जुव्वन पुरुष । बुल्लैं बोल अबोल ॥
मात पिता गुर ना गिनैं । निकसैं टोला टोल ॥ छं० ॥ २ ॥
च्यार बरन इक्कत्त मिल । कलह करै कलकंत ॥
पाधि अपाधि न जानहीं । ज्यों मन्[2] नहिं विलसंत ॥ छं० ॥ ३ ॥
या पुच्छी कविचंद कौं । दिय दरप्प सुषदाय ॥
सु कछु भयौ सु कहौ तुम । तुम बानी वरदाय ॥ छं० ॥ ४ ॥

चन्द का कहना कि चौहान वंश का ढुंढा नामक एक राक्षस था उसकी छोटी बहिन ढुंढिका थी ।

ढुंढा नाम राषस हुतो । चहुवाना कुल मझिझ ॥
तस लघु भगिनी ढुंढिका । जोंवन रै सुष संझि ॥ ५ ॥

ढुंढा ने काशी में जाकर सौ वर्ष तप किया, यह सुन ढुंढिका भी भाई के पास गई, ढुंढा भस्म हो गया तौ भी ढुंढिका बैठी रही, उसे सौ वर्ष योंही सेवा करते बीता ।

ढुंढि गयौ बानारसी । सत्त बरस तप किन्न ॥
तब ढुंढी सुनकैं गई । रही आन सुष चिन्द ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) मो॰ और को॰ प्रति में यह (होली) समय नहीं है ।   (२) ए॰—मादि ।

ढुंढै तन मन जग्य मैं । बाल कियौ भसमंत ॥
प्रिथीराज चहुवान भय । भए सूर सामंत ॥ छं० ॥ ७ ॥
तब ढुंढी बैठी रही । सत्त बरष जग जान ॥
पवन खाय सेवा करै । ताको सुनौ वषान ॥ छं० ॥ ८ ॥

तब गिरिजा ने प्रसन्न होकर ढुंढिका से कहा कि मैं प्रसन्न हूं वर मांग ।

तब गिरिजा सु प्रसन्न भय । मँगि ढुंढी वरदान ॥
चम रुद्दे तब सच करनि । भष्पि करै नर जान ॥ छं० ॥ ९ ॥

ढुंढिका ने कहा कि यह वर दे। कि बाल वृद्ध सब को मैं भक्षण कर सकूं ।

बाल वृद्ध भष्पन करौं । चर्म को दै महमाय ॥
यह बानी सुनि सामुही । रष्या करनी राय ॥ छं० ॥ १० ॥

गिरिजा ने शिव जी से कहा कि ऐसा उपाय कीजिए कि ढुंढिका की बात रहे और वह नर भक्षण न कर सके ।

तब गिरिजा पति सौं कह्यौ । ढुंढी रष्यसु वत्त ॥
ढुंढी नर भष्पन करै । सोय विचारौ मत्त ॥ छं० ॥ ११ ॥
गिरिजा सिव भिष्यि यौं कहै । एक अपूरब वत्त ॥
जोगी जंगम बाहुरैं । मे रावे नित नित्त ॥ छं० ॥ १२ ॥

शिवजी ने आज्ञा दी कि फागुन में तीन दिन जो लोग गाली बकैं, गदहे पर चढ़ें, तरह तरह के स्वांग बनावैं उनको छोड़ और जिसको पावै वह भक्षण करै ।

विहल विकल बानी असुर । बोलहिं बोल अनन्त ॥
एता नर मारीत जवि । अवरनि कौ करि अंत ॥ छं० ॥ १३ ॥
सिव आग्या पवनह दई । प्रिथमी घर सहु अंग ॥
फागुन मासंह तीन दिन । करौ अनेरौ रंग ॥ छं० ॥ १४ ॥
रासभ परि चढ़ि चढ़ि चलहिं । सूप सीस धर लेहु ॥
गोसा बंधे गलि फिरै । हो हो सबद करेहु ॥ छं० ॥ १५ ॥

ढुंढिका ने जब आकर देखा तो सभों को गाली बकते, पागल से बने, गाते, बजाते, आग जलाते, धूल राख उड़ाते पाया ।

ढुंढी आइ जहां तहां । दिष्षे लोग अजान ॥
हो हो करि रासभ चढ़ैं । ए कवि कहै बषान ॥ छं० ॥ १६ ॥
चटक चटक दिन प्रति सपैं । मद मादक अप्रमान ॥
नर नारी सम मति गई । ए पल मन अनुमान ॥ छं० ॥ १७ ॥
सिंधू राग बजावहीं । गावहिं नवल्ला गीत ॥
हो हो करि हा हा करैं । य मंडी विपरीत ॥ छं० ॥ १८ ॥
घरि घरि अगनि प्रजारहीं । उक्किल धूर अरु राष ॥
नाचैं गावैं परस्पर । चिथा दिपावन काप ॥ छं० ॥ १९ ॥
इहि विधि वाउ जनावित । फगुन मास को भाव ॥
लज्ज भज्ज विग्घन गई । भावै पात सुपाव ॥ छं० ॥ २० ॥

इस प्रकार से लोगों ने इस आपत्ति को टाला, चैत का महीना आया घर घर आनन्द हो गया ।

इहि विधि दुरित निवारियो । मिट्यो दवी उर दंद ॥
आयो चैत सुहामनो । ग्रह ग्रह भयो अनंद ॥ छं० ॥ २१ ॥

जाड़ा बीतने और बसंत के आगमन पर लोग होलिका की पूजा करते और ढुंढिका की स्तुति करते हैं ।

श्लोक ॥ गतेनु पार समये । वसंते च समागमे ॥
होलिका प्रब्ब पूज्यंते । ढुंढा देवी नमोस्तु ते ॥ छं० ॥ २२ ॥

इति श्री कवि चंद विरचिते प्रिथीराज रासके होली कथा समय नांम बावीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ।

अथ दीपमालिका कथा लिष्यते।

(तेइसवां समय।)

पृथ्वीराज ने फिर चन्द से पूछा कि कार्तिक में दीपमालिका पर्व होता है उसका वृत्तान्त कहो।

दूहा ॥ फिर पूछी पृथिराज नृप। कहो चंद कवि सब्ब ॥
होंतु सुकातिक मास मधिं। दीप मालिका प्रब्ब ॥ छं० ॥ १ ॥

चन्द का दीपमालिका की उत्पत्ति कहना।

कहि कविचंद नरिंद सुनि। जो पुच्छौ कथ मोहि ॥
दीपमालिका उनिपत्ति सब। कहै सुनाऊं तोहि ॥ छं० ॥ २ ॥

सत्ययुग में सत्यव्रत राजा का बेटा सोमेश्वर बड़ा प्रतापी था, सुर नर उसकी सेवा करते थे, वह प्रजा पालन में दक्ष था, सब लोग उससे प्रसन्न थे।

सतयुग सतव्रत राजसय। प्रकय दिपायौ देव ॥
तासुत सोमेसर कहिय। सुर नर करत सुसेव ॥ छं० ॥ ३ ॥
बहुत पुण्य पालै प्रजा। रिद्धि सिद्धि मंडान ॥
च्यार वर्न चंहु आश्रमहि। दान मान परिधान ॥ छं० ॥ ४ ॥

उस नगरी में समुद्र तट पर बहुत अच्छे बाग़ लगे थे वहां एक वैदिक ब्राह्मण रहता था, उसकी स्त्री छल रहित थी।

ता नगरी सत्यावती। सरित समुद्रह तहि ॥
बारी बाग विचित्र नर। ग्यान ध्यान घटि घहि ॥ छं० ॥ ५ ॥
तहां बसे सतब्रंम द्विज। वेदवंत बल बुद्धि ॥
ताकी नारी नागरी। नाकर नारी रिद्धि ॥ छं० ॥ ६ ॥

स्त्री ने पति से कहा कि धनहीन दशा में जीना और दुःख भोगने से मरना अच्छा है, सो इसका कुछ उपाय करो।

अवर न कोई नर दुषी। सुष भोगवै अनंत ॥

नारी कहि जिसु रप्प सम। त्रिया जीव तुम कंत ॥ छं० ॥ ७ ॥
विथ्था जीवन मनुष कौ। जो धन नाहीं पास ॥
तातें को[1] उपचार कर। करै रहै बन बास ॥ छं० ॥ ८ ॥

सत्यश्रम ब्राह्मण ने ज्ञान ध्यान की ओर चित्त दिया।

तब सतिश्रम आदर करिय। ग्यान ध्यान चित देषि ॥
जीवन जनम विथा गयो। पाप उदय तन देखि ॥ छं० ॥ ९ ॥
गाथा ॥ सपनो अप्प विहूनौ। खेवरनै न भापयौ दीनौ ॥
संगह मरन मह गौन। वीकि नेम न मानि किन ॥ छं० ॥ १० ॥

सत्याश्रम ने सौ वर्ष तक विष्णु का ध्यान किया, विष्णु ने ब्रह्मा को बताया, ब्रह्मा ने रुद्र को कहा, रुद्र ने कहा कि माया को प्रसन्न करो हमारा सब काम वही करती है।

दोहा ॥ सत्ति सरस सत बरष लो। सेये विष्णु नरंत।
विष्णु बतायौ ब्रह्म कौं। ताको पार न अंत ॥ छं० ॥ ११ ॥
तब ब्रह्मा सु प्रसन्न भय। रुद्र बतायौ नाम ॥
रुद्र कह्यौ माया बरहु। करै हमारौ काम ॥ छं० ॥ १२ ॥

तीन वर्ष तीन महीना तीन घड़ी में वह प्रसन्न हुई और उसने चौदह रत्न दिए॥

चियत बरस चिय मास दिन। चीय घटी पल उन्न ॥
सु प्रसन भइ सा कामिनी। दिय चौदचौ रतन्न ॥ छं० ॥ १३ ॥

सत्यश्रम ने विचार किया कि राजा की सेवा करनी चाहिए, ऋद्धि सिद्धि से क्या होता है।

तब सतिश्रम ऐसी कही। कहा रिद्ध अरु सिद्धि ॥
सेवौ नरपति नाह कौं। एह बातएह सिद्ध ॥ छं० ॥ १४ ॥
दिन पहर बुधि उप्पजी। दिन विचक्षि बुधि जाइ ॥

(१) कृ०–का।

दीप दिषायौ बुद्धि वर। बभै दीप उछि जाइ॥ छं० ॥ १५ ॥

गाथा। को कौन पथीयौ। को कौन जची'१॥

कच कचन नामियं सौस। दुभर' गभर चक्क श्री कितवं किन कायवं॥ छं० ॥ १६ ॥

ब्राह्मण की बुद्धि में प्रकाश हुआ कि कार्तिक की अमावस सोमवार को लक्ष्मी उसके पास आती है।

दोहा॥ बंभन बुधि विकास हुइ। तहं दिष्षै लछिवास॥

कातिक मावस सोम दिन। लछि आवहि निचि पास॥ छं० ॥ १७ ॥

लच्छी जस निधि ही वसी। निकसि निहू दिन दिश्व॥

अगर कपूर सुदीप दर। जहां थान उर विश्व॥ छं० ॥ १८॥

ब्राह्मण को चार वर्ष राजा की सेवा करते बीता तब राजा ने कहा कि वर मांग।

बंभन राजा सेवतै। बरस भये दुश्र च्यार॥

तब राजा वरदान दिय। मंगौ मत्ति विचार॥ छं० ॥ १९ ॥

ब्राह्मण ने दीपदान वर माँगा अर्थात् कार्तिक की अमावस को उसके अतिरिक्त संसार में दीपक न जलै।

तब बंभन ऐसी मँगी। दीपहु दान विचारि॥

कार्तिक मास समुद्ध दिन। दीप नवै संसारि॥ छं० ॥ २० ॥

अच्छे लोयन अछि तहां। अच्छे लोयन निपांन॥

नर नारी उहिम रहै। पीक परी निचिपान॥ छं० ॥ २१ ॥

राजा ने कहा कि तुमने क्या माँगा ब्राह्मणों की पिछली बुद्धि होती है, अन्न धन गाँव माँगना था, अस्तु अब घर जाओ।

कहा मँगी तुम देवता। पच्छिम बुद्धी विप्र॥

अन धन गांव गंमार मगि। घर जाओ तुम विप्र॥ छं० ॥ २२ ॥

ब्राह्मण ने घर आकर एक मन तेल और सवा सेर रुई मंगाई।

(१) ए०-उभर।

अपने घर तब आय करि। तेन लियौ मन एक ॥
रुई सेर सवा लई। इह मन की जु विवेक ॥ छं० ॥ २३ ॥

कार्तिक आया, ब्राह्मण ने उत्साह के साथ राजा से कहा कि जो मांगा था सो दीजिए।

कार्तिक आयौ कलपतरु। विप्रह भयौ उछाह ॥
संग्यो हनौ सु देउ प्रभु। पढ़ह वाज बहु नाय ॥ छं० ॥ २४ ॥

राजा ने आज्ञा प्रचार कर दी कि उस दिन कोई दीपक न बाले।

तब आयस नरपति कियौ। कोय न बालै दीप ॥
आज्ञा भंग जो को करै। नाहि बँधाऊं चीप ॥ छं० ॥ २५ ॥

लक्ष्मी समुद्र से निकली तो उसने सारे नगर में अँधेरा पाया केवल ब्राह्मण के घर दीपक देखकर वहीं आई और विचार किया कि यहीं सदा रहना चाहिए।

लच्छि समंद निस्सरी। आई नगरहु मध्य ॥
अंधारौ अहि पूरजे। सु दीपक दिट्ठौ जथ्थ ॥ छं० ॥ २६ ॥
वंभन कै घरि दिप्पि करि। आइ सही दरबार ॥
अह निसि वासै हम वसै। लच्छी कहै विचार ॥ छं० २७ ॥
लच्छी वच्छी क्या करै। दारिद दहि सुचि मत्त ॥
तू पाला घर थान रहि। सदा दुचित्तै चित्त ॥ छं० ॥ २८ ॥
मो संगि सथ्थि जु निरवहौ। नदी पवनि गिर दंद ॥
रात दिट्ठ वासी वसों। सं छंड्यौ मति दंद ॥ छं० २९ ॥

लक्ष्मी ने प्रसन्न होकर उसका दारिद्र काट कर वर दिया कि सात जन्म मैं तेरे घर बसूंगी।

तब लच्छी सु प्रसन्न हुइ। कहै रोर करंक ॥
सात जनम तुरि घर वसौं। एक वसन अकलंक ॥ छं० ॥ ३० ॥

तब दरिद्र भागा ब्राह्मण ने उसे पकड़ा कि मैं तुझे न जाने दूंगा।

तब दारिद्र जु भजि चल्यौ। वंभन पकर्यौ धाय ॥

इक छोरी तुम पुब्ब सों। लच्छिक देव न जाय ॥ छं० ॥ ३१ ॥

दरिद्र ने वाक्य दिया कि मुझे जाने दो मैं कभी इस नगर में न आऊंगा।

तब दरिद्र वाचा दई। मो कूं तूं दे जान।
बहुरि न आऊँ इह पुरी। कैसो कहीं बषान ॥ छं० ॥ ३२ ॥

उसी घड़ी से उसके यहाँ आनन्द हो गया हाथी घोड़े झूमने लगे। उसी दिन से यह दीपमालिका चली।

घरि लच्छी आनंद मन। हय गय मान मदंत ॥
दीपमालिका तदिन तैं। यह चली महि वंत ॥ छं० ॥ ३३ ॥

चारो दिशा में दीप मालिका का मान्य है। यह कथा कवि चन्द ने कह सुनाई ॥

पुब्ब पछिम उत्तर दछिन। दीपमालिका मान ॥
षान पान परिमान मन। काम मनोरथ थान ॥ छं० ॥ ३४ ॥
कही चंद आनंद सौं। पुच्छी न्रप प्रिथीराज ॥
दीपमालिका प्रगट हुइ। घरि घरि मंगल साज ॥ छं० ॥ ३५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रिथीराज रासके दीपमालिका पर्ब्ब कथा समय नाम तेवीसमों प्रस्ताव संपूरणम् ॥

अथ वन कथा लिप्यते ।

(चैाबीसवां समय ।)

खट्टू वन में शिकार खेलने और नागौर में शाह गोरी के कैद करने की सूचना ।

दूहा ॥ पट्टू आपेटक रमे । मदिम मुरस्थल[1] थांन ॥
नागौरै गोरी ग्रहन । सथ व्रिंमत्त परधांन ॥ छं० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज का कैमास की वीरता, बुद्धिमत्ता आदि की प्रशंसा करके प्रश्न करना ॥

कवित्त ॥ मंच जोग कयमास । मंच प्रथिराज सु पुच्छन ॥
तूं मंची मंचंग । मंच जानहि सुभ लच्छन ॥
सांम दांन अरु भेद । डंड निरनै करि लष्पै ॥
वहु मंचह उप्पाइ । राज मंचह करि रष्पै ॥
मंचह सुमंच मन अनुसरै । अरु मंच भेद जानै सकल ॥
अदभुन चरित्त पापांन लिपि । वंचिन किन आवै अकल ॥ छं० ॥ २ ॥
तू मंची कयमास । मंच पय पय उप्पावहि ॥
तू मंची संचंग । मंच मंचीन दिपावहि ॥
तू मंची सामंत । * स्वांम ध्रम्मं बिचारै ॥
धर सब्बह संग्रहै । मंच करि अरिन विडारै ॥
तुम जोग मंच मंची न कोइ । सह बत्तन उद्दार कैं ॥
संसार सार मंत्रह प्रवल । कहौ मंच विचारि कैं ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का प्रश्न करना कि तालाब के ऊपर एक विचित्र पुतली है जिसके सिर पर एक वाक्य खुदा है, इसके अर्थ करने में सब भटकते हैं सो तुम इसका अर्थ करो ।

(१) मो॰—मरुस्थल क॰—मुरस्थल ।
* मो प्रति में "सांमि ध्रम्मं सुविचारै" पाठ है ।

कवित्त ॥ खलिल सुवर पार्थान । मध्य पूतली अचंभं ॥
खलिल मत्त तन जा विसाल । उप्पम रिस रंभं ॥
ता उप्पर बिय नाम । प्रगट प्राकार उचारै ॥
बूलि बूलि श्रमि होइ । गुद्ध लक्ता करि डारै ॥
वंचौ सु वीर कैमास तुम । लिषौ बंच नाची वनिय ॥
भूतच भविष्य अरु बत्तमन । इच अपुब्ब सें कथ सुनिय ॥ छं० ॥ ४ ॥

पुतली के सिर का लेख "सिर कटने से धन मिलै सिर रहने से धन जाय" ।

दूहा ॥ सिर कट्टे धन संग्रहै । सिर रज्जै धन जाइ ॥
सो मंची कैमास तूं । मंचचि करै उपाइ ॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का मंत्री के कर्तव्यों का वर्णन करके कैमास से परामर्श करना ।

कवित्त ॥ श्रवन राज हग रत्त[१] । श्रवन जानचि परिमानन[२] ॥
भेद दिष्ट देषै सु । भेद अभेद सु ग्यानन ॥
पसुच नयन आचरचि । धनच परिमान सु लष्षइ[३] ॥
विपति होइ संसार । सार द्रिग इक्कय दिष्षइ ॥
मंचीन दिष्ट मंचं तनी । मंच भेद अनुसर सरति ॥
व्रमान[४] वीर जाने सकल । हढ ग्यांन प्रौढ़च सुमति ॥ छं० ॥ ६ ॥

कवित्त ॥ निष्ष तरंगन पद्यौ[५] । मंच तारक चरि सुहरि ॥
बहुरि[६] अंध कहार । राज दंडह लिय उद्धरि ॥
सारथंध अंक जीव । नयन व्रिघात घात जुरि ॥
अविल अवेटक बूझि । बुझि जव चित्त मित्त परि ॥
भुझचि सुदान व्रिग्यान गति । मरन मंत्र[७] नचि छिप्पवै ॥
मंची न मंच भुझै तबैं । विधि विचार विधि दिष्षवै ॥ छं० ॥ ७ ॥

(१) मो०—रस ।
(२) मो०—की प्रति में "श्रव जानन परि मानन" पाठ है (३) मो०—लाहचि ।
(४) ए०—धमांन । (५)—मो—पद्यौ । (६) मो० कृ०—बंदरि ।
(७) मो०—मतं ।

पृथ्वीराज का कहना कि सुना है कि वीर वाहन कोई राजा था वह बड़ा प्रजा पीड़क था और धन बटोरता था सब प्रजा ने उसे शाप दिया कि तू निर्वंश मरैगा और राक्षस होगा सो यह उसी का धन है।

छंद पद्धरी॥ अब कहौं मंत तुम पुच्छ सोइ। मनि ग्रहौं नैम जिन करौ सोइ॥
पाषान अंक सों लिषे राइ। दृत्तंत सोइ सब कहुँ सुनाइ॥ छं०॥ ८॥
वाहन सुवीर कोइ भयौ राइ। निहि पाप क्रंम कीनौ उपाइ॥
संसार सकल निहि दुष्प दीन। सेवकन सेवनिह द्रव्य कीन॥ छं०॥ ९॥
प्रज पीड़ माल संग्रह्यौ कोरि। भरि जनम छड़ भंडार जोरि॥
संसार सकल तिन दुष्प पाइ। सव आप दीन इह अगनि जाइ॥ छं०॥ १०॥
विन वंस हंस इह तजै देह। इम प्रजा सकल कहि अप्पग्रेह॥
कितनेक दिवस तिन तज्यौ ओर। भंडार पाहि वह सुनौ वीर॥ छं०॥ ११॥

कैमास का कहना कि इस काम में अकेले हाथ न डालिए चित्तौर से रावल समरसिंह को बुलवा लीजिए क्योंकि जयचन्द, शहाबुद्दीन, भीमदेव आदि शत्रु चारों ओर हैं।

अप पास कढ़न नहिं जाइ राइ। चित्रंग राव लिज्जै बुलाइ॥
मिलि सुभट तास कढ्ढौ भँडार। तिन विना दंद मचै अपार॥ छं०॥ १२॥
कनवज्ज राव जैचंद देव। नर असी लष्प तिन करत सेव॥
गज्जन नरेस साहाब साह। दस लष्प मेच्छ सेवंत ताह॥ छं०॥ १३॥
गुज्जर नरिंद भीमंग देव। तिन अप्प अच्छ[1] परिअंक्क कोव॥
ढिल्लीस तेज तुंअर नरिंद। तस बध्यो वैर उपजै[2] सु दंद॥ छं०॥ १४॥
अप तुच्छ सेन इह मत्त मानि। मिलि समर सथ्य पुच्छि लच्छवानि॥ छं०॥ १५॥

पृथ्वीराज का कैमास की इस सलाह को मानकर उसको सिरोपाव देना और उसकी बड़ाई करना।

चौपाई॥ राजा ढिग कैमास बुलाइय। पधराइय सुतव्व सिरपाइय॥
बगसि अप्प आरोचन बाजन। करी सुपारस सुसर कि राजन॥ छं०॥ १६॥

(१) ए.—अच्छ। (२) मो.—उपज्यो।

दूहा ॥ हरषि राज प्रथिराज कहि। मति कैमास दै नाम ॥
मति कैमास[1] कैमास तुम। सकल सुमति के धाम ॥ छं० ॥ १७ ॥
दूहा ॥ जां मंचह पूछत न्रपति। सांई अंग सु कांम ॥
समर सिंघ रावर मिले। धन काढ़ै अभिरांम ॥ छं० ॥ १८ ॥

पृथ्वीराज का चन्द पुंडीर को बुलाकर चिट्ठी दे समरसिंह के पास भेजना।

मांनि मंच चहुआंन हद। बोलिय चंद पुँडीर ॥
समर सिंघ रावर दिसा। दै कग्गद मति धीर ॥ छं० ॥ १९ ॥

रावल की भेट को घोड़े हाथी आदि भेजना।

दूहा ॥ दस हैवर इक बग्ग वर। अरु दिय सिंगिनि पांनि ॥
कहि जुहार विधि जंपियौ। न्रप पुच्छिय कुसलांनि ॥ छं० ॥ २० ॥

चन्द पुंडीर का रावल के पास पहुंच कर पत्र देना और गड़े धन के निकालने में सहायता के लिये रावल से कहना, क्योंकि पृथ्वीराज के शत्रु चारों ओर हैं।

कवित्त ॥ लै कग्गद प्रथिराज। बीर पुंडीर संपत्तौ ॥
सुबर जोर साहाब। मंडि गोरी धर धत्तौ ॥
बर भोरा भीमंग। चंपि चालुक्क बिलग्गा ॥
नाहर राउ नरिंद। सेन सध्यां अरि दग्गा ॥
आवंड द्रव्य दिल्ली धरां। सुनि चढ्ढे दिगपाल सजि ॥
कढ्ढियै मंच मंची अपुन। बर बिभूति लच्छी सुरजि ॥ छं० ॥ २१ ॥

रावल समरसिंह के योगाभ्यास और जल कमल की तरह राज्य करने की प्रशंसा।

कवित्त ॥ समरसिंघ रावर नरिंद। समर सह संभर जित्तन ॥
चरह जोगिंद नरिंद। चित्त जोगिंद समत्तन ॥
कमल मास सो भत्ति। चंद लिल्लाट बीय दुति ॥

(१) मो०—कैमास।

नयन रंभ आरंभ । जोग पारंभ सिंभ मति ॥
सुंजीव ढाल जीपन विरद । नाग सुधी सिद्धार वनि ॥
सा चित्र कोट ओटह न्रपति । मघन रंभ मंडचि सुमनि ॥ छं० ॥ २२ ॥

पत्र पढ़कर समरसिंह ने हंसकर चन्द पुंडीर से कहा कि संसार की यही गति है कि मांस के एक लोथड़े को एक गिद्ध लाता है और दूसरा खाता है, कोई कमाता है कोई भोगता है यह दैव गति है।

दूहा ॥ बंचि वीर कग्गद न्रपति । हसिय चित्त वर बंक ॥
कछु लज्जा सगपन सु हित । रष्प पुंडीरां संक ॥ छं० ॥ २३ ॥

कवित्त ॥ हसि जोगिंद नरिंद । वत्त सें सुष उच्चारिय ॥
*एक ग्रभ्र संग्रह । मंस लद्धौ पल हारिय ॥
अन्य ग्रिद्ध विंटयौ । मंस चष्यौ जै कारिय ॥
तव सुमंत उप्पनौ । मंस लद्धौ गहि डारिय ॥
भुगवैति कोइ गड्डैति कोइ । कोइक पढ़ कोइ लभ्भवै ॥
दैवान दुसंकह दैवगति । जो व्विम्मान सु व्विम्मवै ॥ छं० २४ ॥

चन्द पुंडीर ने कहा कि आपने ठीक कहा पर पृथ्वीराज आपका बड़ा भरोसा रखते हैं सो चलिए।

कवित्त ॥ सुनि रुवत्त पुंडीर । वत्त जंपी सुमत्त जोइ ॥
तुम जोगिंद नरिंद । मत्त जंपौ सुमत्त होइ ॥
सुच सोमेस नरिंद । सुवन सगपन मित्त पुच्छिय ॥
तुन चहुआनां[1] गहच । सुष्य कढ्ढौ किम ओछिय ॥
सामंत नाथ सामंत बध । मेर टेकि दच्छिन धरचि ॥
प्रथिराज आज राजिंद गुर । इंद फुनिंद न सो डरचि ॥ छं० ॥ २५ ॥

शहाबुद्दीन आदि पृथ्वीराज के प्रचंड शत्रुओं का सामना है इस लिये सहायता में आपको चलना चाहिए।

* यह पंक्ति मो० प्रति में नहीं है।
(१) मो० को०--लहुआंना।

कवित्त ॥ अग्गैहू रावर समर। करन साहस चहुवानिय ॥
हलचल अग्ग प्रचंड। खंभ सोभै गर बानिय ॥
*अग्गौं अग्ग जुगिंद। अग्गि लग्गै विहस्कांनिय ॥
अग्ग सिंध निड्डुर नरिंद। उट्ठ चंपै परवांनिय ॥
अग्गे व काल सुनिये दुसह। सह पिच्छै फिरि टट्टुयौ[1] ॥
चित्रंग राव रावर समर। संभरि वै दिसि चट्ठयौ ॥ छं० ॥ २६ ॥

रावल समरसिंह का सेना आदि सजकर चलना सेना की तैयारी का वर्णन।

रिंग्यो सवर[2] नरिंद। सज्जि है गै चतुरंगिय ॥
हय गय दल चतुरंग। जंपि माहा भर जंगिय ॥
महा सुभर गज्जंत। छुंदि धुरधर आहुहिय ॥
सेस सहस फन फहि। सकिलि[3] सल मखि साहुहिय ॥
फट्यौ सु सेस फन चंद कहि। तब फूंकर करि जग्गयौ ॥
फन किन्न उद्ध कुंडल करिय। तब सु सेस बल भग्गयौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

छंद भुजंगी ॥ वरं विंटियं समर साहस नरिंदं। मनो विंटियं उड्डगनं अख्य चंदं ॥
किधो इंद्र पासं सवं देव राजै। किधौं मेर तीरं सु पब्बै बिराजै ॥ छं० ॥ २८ ॥
उद्यौ छत्र सीसं बिराजै कला की। मनों इंद्र इंदी बरं चंद[4] जाकी ॥
दुतीता उपम्मा कवी का बषानं। मनों हेम के दंड पर चंद जानं ॥ छं० ॥ २९ ॥
कछू स्यांम पाटं बिराजै करारी। मनो कहई सोम कालंक कारी ॥
मयंमद गज्जं सबद्दं सु उट्ठै। बरष्यंन दानं मनो मेघ वुट्ठै ॥ छं० ॥ ३० ॥
बजै ता जंजीरं अनेकं सबद्दं। मनों बुल्लियं झिंगुरं मास भद्दं ॥
धजं धज्ज हालै बिराजै फिरंती। मनों मंडियं बग्ग घन मक्खि पंती ॥ छं० ॥ ३१ ॥
गजं उप्परं ढाल सोहै ढलक्कै[5]। मनों केलि उग्गी गिरं कज्जलक्कै[6] ॥

---

* यह पंक्ति मो०—प्रति में नहीं है।

(१) मो०—उट्ठयो। (२) मो०—समर।
(३) मो०—सफल। (४) मो०—चन्द।
(५) मो०—ठलक्कं। (६) मो०—कज्जलक्कं।

सिर्त चह हज्जार विंझौ नरिंदं । तिनं उप्पमा दिष्षि जंपी सु चंदं ॥छं० ३१॥
चले सेन चतुरंग सज्जी अनेकं । मनों पारसं आन अप एक एकं ॥ छं० ॥ ३३ ॥

परामर्श करके रावल समरसिंह पृथ्वीराज के पास नागौर को चले ।

दूहा ॥ करि सलो चढ्ढे न्रपति । समर राव चहूवांन ॥
नागौरह आए धरा । मद्धि कढ्ढि सेनांन ॥ छं० ॥ ३४ ॥*

धर्मायन कायस्थ ने यह समाचार चुपचाप दूत भेजकर शहाबुद्दीन को दिया कि दिल्लीश और चित्तौरपति धन निकालने नागौर आए हैं ।

धर्मायन कायथ सभे । पठि दूत पतसाह ॥
ढिल्लि वै चित्तौर पति । धन कढ्ढै धरमाहि ॥ छं० ॥ ३५ ॥*

समरसिंह का दिल्ली के पास पहुंचना और दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना ।

कवित्त ॥ जाइ सपत्तौ समर । चंपि ढिल्ली धरवानं ॥
चहुआना रै हथ्थ । दूत दीनौ फुरमानं ॥
असम विषम साहसी । रत्त मावा अनुरत्तं ॥
समत पत्त जत्त जत्त । मध्य पत न्यारौ जत्तं ॥
छिप्पै न कलक काटन कलक । राज बंध बंध्यौ नहीं ॥
दस कोस कोस ढिल्लीय तें । राज मुक्कि राजन तहीं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

पृथ्वीराज का आध कोस आगे से बढ़कर अगवानी करना ।

कवित्त ॥ राजं दै दरबार । सुवर आनंद उपन्नौ ॥
पुब्ब पाप कट्टनह । समर जित समर संपन्नौ ॥
सुवर वीर जोगिंद । चंद बिरदावलि दिन्नौ ॥
दिल्ली तें अधकोस । राज अग्गे होइ लिन्नौ ॥

---

* छंद ३४-३५ मो०-प्रति में नहीं है और को० प्रति में ये ४० छंद के बाद मिलते हैं ।

मंडरी मंडि देषै सु कवि। मति डंमरि लभ्भै न दुह ॥
समरह सु ग्रेह अरु समर अग्नि। समर सुबय अरु समर जुद्द[1] ॥ छं०॥ ३७॥

समरसिंह का अनङ्गपाल के घर में डेरा देना, दो दिन रहकर सब सामतों को इकट्ठा करके सलाह पूछना कि अब धन निकालने का क्या उपाय करना चाहिए।

कवित्त ॥ अनँगपाल ग्रह जा विसाल। समर उत्तरिय प्रिथा पति ॥
विधि अनेक भोजन सु व्रत। राज उत्तर सु सार भति ॥
उभय दिवस बित्तीय। सब्ब सामंत सु पुच्छिय ॥
साम दांन अरु भेद। कंक भजि कढ्ढौ लच्छिय ॥
कं काढन बंक तुम अनुसरहु। समरसिंघ रावर सुमन ॥
उप्पाइ मिद्दि सामंत करि। सु बर बीर कढ्ढौ सुधन ॥ छं०॥ ३८ ॥

कैमास ने कहा कि मेरी सम्मति है कि शहाबुद्दीन के आने के रास्ते पर दिल्लीपति रोकें, और भीमदेव चालुक्य का मुहाना रावल समरसिंह रोकें और तब धन निकाल लिया जाय।

कवित्त ॥ मति सुचारु कयमास। द्रव्य कढ्ढन उच्चारिय ॥
सेन मुष्ष सुरतांन। राज दिज्जै प्रथुभारिय ॥
चालुक्कां चंपै न सीम। रावल सुष दिज्जै ॥
अप्प अप्प मुष रष्षि। कढ्ढि लच्छी बर लिज्जै ॥
आलाभ जुच्छ[2] पय लाभ तुछ। सु कछु कांम किज्जै नही ॥
गोइंदराज षीची सुमति। मिलि विभूति कढ्ढ गही ॥ छं० ॥ ३९ ॥

रावल समरसिंह का इस मत को पसंद करना और मंत्री की प्रशंसा करना।

कवित्त ॥ तब चिचंग नरिंद। चंदपुंडीर बरज्जिय ॥
तुम कुमंत बल मंत। भंग जानौ न सरज्जिय ॥

(१) मो०—जुम।
(२) मो०—यच्छ।

ते संची संचंग। निगम आगम सब बुझ्झैं॥
अंगन कै कुहंत। घरह सुझ्झैं मन बुझ्झैं॥
अरि अरिन मुष्प हक्कहि सुभर। तव सु द्रव्य मिलि कढ्ढिये॥
सुरतान भीर भंजै समर। सुमन मंत करि चढ्ढिये॥ छं०॥ ४०॥

नागौर के पास सब का पहुंचना, सुलतान के रुख़ पर पृथ्वीराज का अड़ना, शाह के चरों का पता लेना।

कवित्त॥ जाइ संपतौ समर। मध्य नागौर प्रमानह॥
सुरताना रै मुष्प। कोट अड्डो चहुआनह॥
धन असंप कढ़ तहां। साह चर वर पगधाइय॥
चरचि चित्त सब सरित। वित्त करि दव्य दिपाइय॥
साहाब सुकर फुरमान दिय। गांभी छल वल लगगया॥
वद्दी सुलष्षि आहुट पति। सुप चहुआन विलगगया॥ छं०॥ ४१॥

दो दो कोस पर पृथ्वीराज और समरसिंह का डेरा देना।

कवित्त॥ उभय दूत नागौर। दूत चहुआन पास हुअ॥
सब चरित्त धरि चित्त। लपन लष्यौ सुसेन सुअ॥
है कोसां चहुआन। कोस चित्रंगराज हुअ॥
अवन गवन जानहु सुवत्त। अनुसरहु पंथ जुअ॥
मन मध्य कथ्य जानहु सकल। चल्लहु कग्गर राज कै॥
धन भ्रंम अर्थ कढ्ढइ चरित। कहौं बत्त दिष्पै सु जै॥ छं० ४२॥

दूत का शाह को समाचार देना कि नागौर में धन निकालने के लिये दिल्लीपति आगए।

दूहा॥ कहि चरित्त नागौर पहु। दूत सपत्ते आइ॥
दिल्ली वै कढ्ढै सुधन। बज्जा बज्जन वाइ॥ छं०॥ ४३॥

नागौर के समाचार पाकर सुलतान का उमरा ख़ां के साथ डङ्का निशान के सहित पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना।

कवित्त ॥ बज्जा बज्जन वाइ । देषि देवान दुसँकाइ ॥
चित्रकोट रावर नरिंद । कढन भुज चंकाइ ॥
संभरि वै आहुट्ठ । बद्धि बद्धन बत्तीसइ ॥
गज्जन वै सुरतांन । द्वन चै आइ चरीसइ ॥
सुनि सच्च नच्च नीसान किय । बोलि उम्मरा षांन सह ॥
बज्जौ सुसज्ज संभरि दिसा । चाहुआन किज्जै बसह ॥ छं० ॥ ४४ ॥

शाह का चक्रव्यूह रचना करके चलना, सेना की सजावट का वर्णन ।

कवित्त । साह बद्दौ[1] सुरतांन । चक्का व्यूहं रचि चल्लिय ॥
एक एक असवार । बिच पाइक तिह मिल्लिय ॥
ता पच्छै गज पंति । पंति असवार सबद्धं ॥
अमर जंग औराक । गौर जंबूरनि ऊद्धं ॥
ता पच्छ पंति षुरसांन षां । ता पच्छै बंधी अनिय ॥
ततार षांन निसुरत्ति षां । चांसिमह्न बेवर पनिय ॥ छं० ॥ ४५ ॥

पृथ्वीराज को बाईं ओर से बचाता सुलतान धूमधाम से चला, शेषनाग को कँपाता पृथ्वी को धसाता रात दिन चलकर नागौर से आध कोस पर जा पहुंचा ।

कवित्त ॥ वाम कोद प्रथिराज । भुक्कि सुरतान सुचल्लय ॥
सज्जि सेन चतुरंग । समर द्रिसि समर सुचल्लय ॥
भूमि धसिय धर मसिय । सेस कसमस्सि उकस्सिय ॥
कमठ विमठ हुच पिट्ठ । ढक्कु कूरंभ करस्सिय ॥
रिंगयौ सबल षुरसान दल । करि मुकाम सक्यौ न कोइ ॥
नुर अद्ध कोस नागौर तें । सज्जि बाज चंप्यौ सु जोइ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

यह समाचार सुन समरसिंह का धन पर मंत्री कैमास को रखकर आप सुलतान पर क्रोध के साथ चढ़ाई करना ।

(१) मो॰ ए॰—साहाबद्दी ।

कवित्त ॥ समर सिंघ सुनि श्रवन । बीर नीसान दिपंदे ॥
सज्जि सेन चतुरंग । नरकि[1] तोपार चढंदे ॥
थिर थप्पौ कैमास । लच्छि उप्पर गषि रष्षिय ॥
नरकि तोन सजि द्रोन । वलिय पारथ सम दिष्षिय ॥
भारथ्थ कथ्थ कवि चंद कहि । समर सार वर चल्लवै ॥
उल्हारि सेन सुरतान कौ । चय अठुनि करि चल्लवै ॥ छं० ॥ ४७ ॥

जैसे समुद्र में कमल फूले हों इस प्रकार से सुलतान की सेना ने डेरा दिया ।

*दूहा ॥ सायस कर पत्तिय समुद । कमुद प्रफुल्लिय रंग ॥
उतरि सेन सुरतांन तँह । सच आई समरंग ॥ छं० ॥ ४८ ॥

सवेरे उठते ही समरसिंहं आगे सुलतान के दल की ओर बढ़ा, उसकी सेना के चलने से धूल उड़ने लगी ।

प्रात उदित रवि रत्त रँग । समर समर दिसि जग्गि ॥
नव लगि दल सुलतान के । षेह सु उड्डुन लग्गि ॥ छं० ॥ ४९ ॥

धूल उड़ने से सब दिशा धूंधरी हो गई, दोनों दलों का हथियार सज सज कर लड़ने के लिये तैयार हो जाना ।

कवित्त ॥ पह सुषेह डंमरिय । दिसा धुंधरी सुराजै ॥
अग्ग मग्ग उक्छरै । चित्त उक्छरै पराजै ॥
पवन वेग संजुरै । श्रवनं लग्गा असि मंचं ॥
रथ कुबेर चढ्ढये । बांन बढ्ढये सुमंतं ॥
दोउ दीन कर दुंद दल । लरन लोह सज्जे सु वर ॥
चंप्यौ नरिंद आहुट्ठ पति । अगनि सार उड्डिय दुजर ॥ छं० ॥ ५० ॥

लड़ाई का आरम्भ होना ।

कवित्त ॥ धन नरिंद सुरतान । पांन दोइ बीच समाच्चिय ॥
दोइ मुष्ष अरि हक्कि । सिंघ बन की गति साच्चिय ॥

(१) ए० को० कृ०—तरकि ।
* यह दूहा (छन्द) मो० प्रति में नहीं है ।

धार धार बज्जै प्रहार। नइ लग्गे[1] नीसानं ॥
संभरि वै सुरतान। मीर उट्ठे झुकि पानं ॥
घरि च्यारि लगि तरवार झार। बहु उक्कार लगिग्य फरन[2] ॥
दोउ दीन मीन घट घुम्मि घन। उक्करि सेन लग्गे लरन ॥ छं०॥५१॥

युद्ध का वर्णन।

छंद पद्धरी॥ बलवंत सबल पावार पुंज। कर धरै षग्ग धावौ सु नंज ॥
तै पच चली कालिका नारि। पर बत्त गहै गय दंत भार ॥ छं०॥५२॥
सिर तीर बुंद बरषंत वारि। सिर नषै दंद अप्पित अपार ॥
षग्ग सों षग्ग बज्जै करार। घन टहै घाइ जनु मत्त वार ॥ छं०॥५३॥
मस्संद मीर महुवत्त षांन। ढाचनह धीर धायौ परांन ॥
पावार कुंन किय पुंज राज। समसेल चल्लै चनि षग्ग गाज ॥ छं०॥५४॥
तुट्यौ सु भीम संमेत पांनि। ढाहे कमंध महुबत्ति षांन ॥
लघु बंधु रुस्तमा चलिय सूर। बर माल बरै ले चलीं हूर ॥ छं०॥५५॥
जै जैत सबद जंपै जगत्त। पावार करी अविगत्त वत्त ॥
पावार पुंज रुस्तम्म षांन। मुच जुरे मरद हूये उतांन ॥ छं०॥५६॥
दै दयौ षग्ग रुस्तम मरद्द। बाचयौं षग्ग पुंजा दरद्द ॥
तुद्दयौ सीस सा पुंज राज। अच्छरी बरै करि उद्द काज ॥ छं०॥५७॥
नारद्द वद्द ग्रद्द दंद मद्द। पलचरी कालिका करै नद्द ॥
प्राक्रम सूर देषै पचार। षनि षन्नि कहै भर सकल सार ॥ ५८ ॥
ब्रह्मा पूरि भेदि गय सूर सार। अति उंच क्रंम पामेव वार ॥ छं०॥५९॥

कवित्त॥ बलिय फौज पावार। दुतिय भारथ जिन मंड्यौ ॥
धरि अक्करि बर वीर। धार धारह तन षंड्यौ ॥
ईस सीस संग्रह्यौ। दुक्क तें चष्य न मुक्यौ ॥
सुर सुरीय कँह जांनि। सरस सिंगारहु चुक्यौ ॥
जानयौ गवरि कच मानि किय। कहा जानि नंदी चल्यौ ॥
जांनयै चंद इय कब्ब करि। चंद लिलाटचतें षस्यौ ॥ छं०॥ ६०॥

---

(१) ए० कृ० को०--मग्गे।
(२) मो० प्रति में "बल उभ्भारिय बग झरन" पाठ है।

कवित्त ॥ मुत्ति लुद्दन सामंत । सिद्ध मन डोल्लन लग्गा ॥
चुकि समाधि जगि सिंभ । वंभ आराधन भग्गा ॥
* आप्तुचा तजि सूर । तुचा झग्गन काराधी ॥
तन तुट्टिग अधि[1] धार । मग्ग नचि अक्करिवाधी ॥
अचरिज्ज एक आतम गमन । देह मटी मुक्की निमुप[2] ॥
पंपेरि पाल सुक्किय जगन । सुकार किति चल्लिय सुरुप ॥ छं० ॥ ६१ ॥
दूहा ॥ पां ततार रुस्तम सुभर । अरु जे मीर ससंद ॥
सोइ तत्ते गहि तेग परि । वर वीरा रस मंद ॥ छं० ॥ ६२ ॥
दूहा ॥ चंद वंध पुंडीर वर । लप्पन लप्पा सार ॥
मिल्ले मीर मरदान सुप । धरि कर पग्ग करार ॥ छं० ॥ ६३ ॥
कवित्त ॥ पां ततार रुस्तम हुजाव । मुस्तफा महंमद ॥
† है सज्जे वर सार । तथ्य आए मीरंवद ॥
मार मार कहि मीर । मिल्ले लप्पन लप्पेसर ॥
सार धार वज्जंत । भिच्चो सुप हम्मीर गुर ॥
पुण्डीर सुवर साहस वरह । करिव पुह पहे सुपल्ल ॥
कौतिग्ग देव देपंत सिर । अरिय भूत नंचे अकल्ल ॥ छं० ॥ ६४ ॥
छंद चनूफाल ॥ आए सुमीर मसंद । वर पग्ग धारिव द्वंद ॥
चक्कंत चक्क करार । वज्जंत कार करतार ॥ छं० ॥ ६५ ॥
चिघ्घाय पग्ग चिकूट । वहि सार सामत जूट ॥
पंडीर लप्पन लोइ । भर मीर आए दोइ ॥ छं० ॥ ६६ ॥
वाहै दुसार करार । लरि लप्प लप्पन सार ॥
भंडे सु पग्ग उभ्भहि । तुहे सु भ्भसर तहि ॥
उकि उक्कि ईस रनद्द[3] । नारद नंचि उमद्द ॥
भगि मीर पुर घुर तार । जुरवंत मीर जुभ्भार ॥ छं० ॥ ६८ ॥

* "पिति संपुट पलभल्यौ । तुचा झगव आराधी" मो०—प्रति में ऐसा पाठ है ।
(१) मो०—असि ।　　　　(२) मो०—निमप ।
† मो०—प्रति में छन्द ६४ की प्रथम दो पंक्तियों का पाठ "खां ततार रुस्तम उजाव, खान मुस्तफा महांभर, है सज्जे वर सार, तथ्य आए सुर सरवर" है ।
(३) मो०—सुनद्द । ए०—नरद्द ।

भज्जंत सेन सुचाव। गंज्जंत लष्षन गाव॥
मत्तार नूरि हुजाव। हल्लम महमुद आव॥ छं० ॥ ६९ ॥
बाहै सुलष्षन सार। चिसि टोप झिप्पर झार॥
चौचनी लष्षन धार। परसंसि मीर भुम्भार॥ छं० ॥ ७० ॥
गय सूर मंडल भेदि। भल कंचन अच्छर वेद॥ छं० ॥ ७१ ॥
कवित्त॥ चंद वंध पुंडीर। नाम लष्षन लष्षे सुर॥
हूंद देवि पष्षार। दिवी हुंकार हक्कि गुर॥
ईस सीस आनंद। पिंड गिद्धिन मन भाइय॥
हूर सूर अच्छरि विमान। चढ़ि देवन आइय॥
आतंम सोई उतपति चल्यौ। देव थांन विस्रांम भय॥
जस लोक लोपि बसि ब्रह्म पुर। जंपि सेन दोउ सद्द जय॥ छं० ॥ ७२ ॥
छंद दुमिला॥ छष गुर लहु पायं अक्खिर दायं विधि विधि रायं दुंदोई॥
दुमिलानय छंदं पढ़य फुनिंदं कवि कविचंदं गुनगोई॥
बज्जै रन तालं झसि बर भालं भर भर चालं अंभीरं॥
पारस सुविचारं कुट्टिय धारं चढ़ि मध्यानं कुटि तीरं॥ छं० ॥ ७३ ॥
गंजी जननं अरि अंगै दिक्करि लरि रज उच्छरि गगनेदं॥
धर धीर धरंतं जोग जुगंतं लरि लरि जोरं अरि भेदं॥
किरवांन करक्कै बिज्ज तरक्कै छिच्छ उछक्कै इन भेसं॥
दो उप्पम भासं माधव मासं अलि उल्हासं दुति केसं॥ छं० ॥ ७४ ॥
उडि सकै न गिद्धं सरवधि विद्धं चसयनि सिद्धं दै तारी॥
षप्पर अधिकारी पंख उकारी जै जै कारी किलकारी॥
गज दंत न बड्डै दै पग चड्डै कुंत सु कड्डै सिर चड्डै॥
कांदल परि उड्डै सीस बिछुट्टै चलचि न रुड्डै भर बड्डै॥ छं० ॥ ७५ ॥
दूहा॥ सल्लन सल्ल न उब्बरिय। मन बर कुट्टिय नांचि॥
ज्यों मध्या प्रिय तुच्छ निसि। सेरो सद्दर समांचि॥ ७६ ॥

रावल समरसिंह के युद्ध का वर्णन।

छंद रसावला॥ रोस राजं भरी। चित्रकोटे सुरी[१]॥

(१) मो०—सरी।

हथ्थ बथ्थं जुरी । जुट्टि लोहैं पुरी[1] ॥ छं० ॥ ७७ ॥
नीच हौनं परी । वीर हक्कै उरी ॥
कुंत कड्ढे छुरी । हथ्थ बथ्थं करी ॥ छं० ॥ ७८ ॥
दंद कड्ढै हरी । कंध सोभै धरी ॥
नुथ्थि आनुथ्थरी[2] । जंमता विक्कुरी ॥ छं० ॥ ७९ ॥
देवता संभरी । ढिल्ल राजं भरी ॥
जोग मत्ते जुरी । रंभ ढूंढै वरी ॥ छं० ॥ ८० ॥
वीर जा संभरी । छुट्टि कुक्कै करी ॥
मात पित्तं उरी । पत्त कन्दै नरी ॥ छं० ॥ ८१ ॥
स्वामिना सुद्धरी । पुप्फ नंषे सुरी ॥
... ... । कित्ति जुग्गं करी ॥ छं० ॥ ८२ ॥

दूहा ॥ कित्ति जोग करनह समथ । मिले सक्क सासेन ॥
आप मीर सुकूह करि । परिय सिंघ सिर जेन ॥ छं० ॥ ८३ ॥

अरिल्ल ॥ कोप्यो रावन्न राज महाभर । सेना साह सहाबद निय पर ॥
हिंदुअ सेन चक्कि भर उट्ठे । पंच पांन सिर सारह वुट्ठे ॥ छं० ॥ ८४ ॥

छंद भुजंगी ॥ उठे पंच पानं बरं आसुरानं । वजे भेरि नफ्फेरि चंबे[3] निसानं ॥
धमक्के धरा नाग गज्जै सुगेनं । चढ़े देव कौतिग्ग देषंत नैनं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
मिल्ली अक्कुरी रथ्थ अप्पार रंजै । नचै नारदं ईसुरं अप्प कज्ज ॥
करै कूह दौरै भरं आसुरानं । जुटे सूर सामंत लग्गे भरानं ॥ छं० ॥ ८६ ॥
पगं दूअ वाहै भरै टोप मथ्थै । मनों झल्लरं देवलं कूटि हथ्थै ॥
जुरै पांन सामंत देसार सारं । कढै दीन रामं जपै हह सारं[4] ॥ छं० ॥ ८७ ॥
पडे आइयं अप्प आकूत मीरं । छुटै भ्रंम धीरज्ज कंपै अधीरं ॥
नवै आइ चामंड दाहिंम रायं । हयौ सेल मीरं गहक्कै गुरायं ॥ छं० ॥ ८८ ॥
हमं सेल षानं वहै षग्गझट्टं । पस्यौ अश्व चामंड भग्गै सुघट्टं ॥
उठे चोंड रायं गहै षांन सारं । तुटै मंडलं तुट्टिहै भाग पारं ॥ छं० ॥ ८९ ॥

---

(१) मो०--खरी । (२) मो०--लोथि लोथं परी ।
(३) ए०--को०--अंबे ।
(४) मो०--चारं ।

ढढ्ढौ षांन दष्यौं सु चामंड रायं। इनै देषि मीरं निकट्टं सु नायं ॥
बढ़े षग्ग ढाचे चढ्ढौ श्रप्प सायं। चली फौज साढं चंपे असुरायं ॥ छं० ॥ ८० ॥
तबै केलियं षान षानौं कुलाहं। दुश्रं षारि षग्गं तुहें हिंदु थांहं ॥
तबै आइ अड्डो अरं अत्तताई। लिए षिप्परं घाव निच्छे सुताई ॥ छं० ॥ ८१ ॥
बढ़े दूअ षग्गं करै मार भांई। मनों रंभथंभं दुश्रं सीस कहुं ॥
गुरं गज्जते अत्तताई अभंगं। भरक्के सुहेना सबै मीर भग्गं ॥ छं० ॥ ८२ ॥
इकं सेर नंमीर साहब्ब षानं। दुश्रं बंध पुत्तं सु आरब्ब जानं ॥
दुश्रं भ्रंम धारी उरं जागियानं। उभै दौरि बंधं लगे आसमानं ॥ छं० ॥ ८३ ॥
चपे मीर मुब्बं चबै मार वानं। लगे दाव घावं करै षग्ग पानं ॥
इयं जुद्ध आनुद्ध देष्यौ अपारं। भरं निड्डुरं देषि धायौ सुभारं ॥ छं० ॥ ८४ ॥
चए निड्डुरं संगि हय बंध मीरं। मनों सीर[१] इक्कं करे दो सरीरं ॥
चले तेग तुरियं सुकंमधज्जरामं। ढढ्ढौ अंस श्रोहंस उढ्ढौ निसामं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
उठे निड्डुरं चक्कि रट्ठौर[२] रानं। सिता[३] बंस बीडं सुषं मानि भानं ॥
इते आइ दीनौ तुरंगं अपानं। चाढ्ढौ राव हयमीर कमधज्ज मानं ॥ छं० ॥ ८६ ॥
धये आइ तत्तं करै अप्प पानं। भगे सेन मीरं ढहे पंच दानं ॥
बढी जैत देषी वरं हिंदुआनं। ... ... ॥ ८७ ॥
रिझें नारं कंकक्करी गिद्ध सिद्धं। मनं बांछि प्रेमं जयं जस्स लिद्धं ॥
जयं जंपियं जोगिनी जे गमत्तं। करी किंत्ति चंदं गयं गेतं पत्तं ॥ छं० ॥ ८८ ॥

पृथ्वीराज की विजय, शाहाबुद्दीन की सेना का भागना।

कवित्त ॥ घरिय अद्ध दिन रह्यौ। साह साहब बल भग्गिय ॥
गात षंभ निरघात। हथ्थ सामंतन लग्गिय ॥
पच्चौ षांन आलब। जैन सेना ढंढोरिय ॥
केलीषां कुंजर कुलाह। तुहि तिन संग[४] विछोरिय ॥
चहुआंन सेन चव दंत चढ़ि। तनु तिन रव रनंबरौ ॥
सुरतांन भीच पंचौ परत। जलधि मध्य पत्तांबरौ ॥ छं० ॥ ८९ ॥

(१) मो०—शीश। (२) मो०—रत्तौरे।
(३) मो०—सबे।
(४) मो०—संग।

सूर्यास्त होना ।

गाथा ॥ अथ वन दीह सुधीरं । साहिब सेरंन हंनि निड्डरयं ॥
　　करि प्राक्रंम अपारं । जलनिधि मद्धि गत पतंगं ॥ छं० ॥ १०० ॥

रात होना । सेना का डेरे में आना ।

कवित्त ॥ जल निधि मध्य पतंग । पत्त[1] दिष्षिय नभ ग्रासिय ॥
　　कायर पंकज मुदिग । कुमुद उघघरि अलि वासिय ॥
　　नर को चिनव विहंग । वाम विरहनि दुष वढ्ढिय ॥
　　संजोगिनि स्रंगार । चित्त कामह रय चढ्ढिय ॥
　　चक्रवाक चित चक्रित हुआ । चोर विटप मन उल्लह्यि ॥
　　औसरे सेन विय उत्तरिय । स्वांमि ध्रंम मन में वसिय ॥ छं० ॥ १०१ ॥

गाथा ॥ निसचर वरचिन चित्तं । चितं जाग्रत उभय सयनेयं ॥
　　जामं सर सरि हितं । वामीयं काम सपनायं ॥ छं० ॥ १०२ ॥

अरिल्ल ॥ पतत पतंग सुदिष्षिय अंबं । मानहु गीय सुद्ध प्रनि व्यंबं ॥
　　नष मयूष कोदह उप्पारै । मानो तिमिर जोग जंभारै ॥ छं० ॥ १०३ ॥

चामंडराय आदि सरदारों का रात भर जागकर चौकसी करना ।

कवित्त ॥ जवहि राज प्रथिराज । सेन उत्तरिय रयन गत ॥
　　तवहि सुराजन कज्ज । रहे सामंत सु जग्गत ॥
　　राचो मंड निडुरकमंध । अत ताइय ईस वर ॥
　　सु गुरु जैन पामार । करिय भंजन अलष्ष भर ॥
　　अवरें सु सब्ब सामंत भर । चढ़े राज चौकी समथ ॥
　　गुर लज्ज अवर भर सज्जि रहि । है पष्पर चवरार रथ ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अरिल्ल ॥ डेरा करि वर राज मह्राभर । तुक अंतर मिलि रहे सिंघ गुर ॥
　　चौकी सेन चढ़े भर सिंघं । एक एक सक सूर अभंगं ॥ छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ राम रेंन पावार भर । अरु सु कन्ह भत्तीज ॥
　　फुनि रघुवंसी राज घर । सब चौको सजि नींज ॥ छं० ॥ १०६ ॥

---

(१) मो०—पतत ।

अरिल्ल ॥ सजि चौक्की अप सथ्थ सकल मिलि। चढ़न सूर भर व्रप बरज्जि[1] बलि ॥
गुरु सामंत अयति अप्प गढ़ि। रचे सुच्चारि दुअं चौकी चढ़ि ॥ छं० ॥ १०७ ॥
इक चौकी वर सिंघ राज सज। भर दुअ चढ़े अप्प अप्पन काज ॥
थांन थांन जकि रहे सूर वर। सज्जि संनाह रहे जु छंस नर ॥ छं० ॥ १०८ ॥

शहाबुद्दीन के सरदारों का रात के चौकी देना।

छंद भुजंगी ॥ चढ़ो साह चौकी सुरत्तांन षांनं। दोई दीन बज्जै निसानं रिसानं ॥
चमक्कै सनाहं उपंमा सु चंडी। मनो चंदनी रैंन प्रति व्यंब मंडी॥ छं०॥ १०९॥
फिरै पंति दंती नकी कंति एसं। मनों कज्जलं कूट कंगूर हेमं ॥
फिरै पष्परी पंति कूदंत बाजी। तिनं देखतें बंदरं द्रोन लाजी ॥ छं० ॥ ११० ॥
लगे पारसी बोलनं मेक सथ्यं। मनो प्रब्बतं बंदरं केलि कथ्यं ॥
इकं एक चित्ते दुअं चित्त नांही। तिनं षंचिये[2] सार सा भ्रंम सांही॥ छं०॥ १११॥
षिझै मुष्प बोलै सुरत्तान दोही। करै भूमि दुज्जन पुरं काल कोही ॥
इसी सेन जोरी सु गोरी नरिंदं। मनों बंटियं पारसं नख्ख चंदं ॥ छं० ॥ ११२ ॥

पृथ्वीराज की सेना की शोभा का वर्णन।

अरिल्ल ॥ सिन्नह सज्जि प्रिथिराज मद्दाभर सेन सह।
मनों प्रप्पन प्रति व्यंब प्रगट्टिय जानि ग्रह ॥
यापर ओपम और विचार लो अष्पियै।
ज्यों बद्दर में चंद दुरै कछु दिष्षियै ॥ छं० ॥ ११३ ॥
घुरि निसांन घन सद्द स्रवंन न संभरै।
हय गय साजिय साज चक्कतें उब्भरै[3] ॥
भेरि भनंकिय भंकिन फेरिय नद्दयं।
*एक तवे उत दिष्षि दल बल बद्दयं ॥ छं० ॥ ११४ ॥

शहाबुद्दीन के सेना का वर्णन।

कवित्त ॥ षां रुस्तम तत्तार। षांन चौकी वै लग्गा ॥
षां नूरी हुजाब षां। मद्दमद असि जग्गा ॥

---

(१) मो०--बररजि। (२) मो०--षंचियं।
(३) मो०--प्रति में "है गै साजिय साज फूकतें उभ्भरै" पाठ है।
* मो०--प्रति में ए 'तन वे उन दिष्ष' पाठ है।

केवी पाँ भष्परी । रोम पोषर पाँ पत्नी ॥
वर भट्टी मत्त नंग । स्वामि मंधी ता ऋजी ॥
धीरंग वीर वज्जर विरज । वर चरित्त चिहुं दिसि लगे ॥
सुरतान कांम ऋरि भंजनौ । सुवर वीर वीरह पगे ॥ छं० ॥ ११५ ॥

सुलतान के सरदारों के क्रम से सजकर खड़े होने का वर्णन ।

कवित्त ॥ ऋग्गिवांन उजवक्क । धाइ धावक्क सुरतांनी ॥
ता पाछै सारात्र । षांन वंध्यौ तुम्र सानी ॥
ता पाछै तूरी । तूजाव सेई संचारी ॥
केलीषां कुंजर कुलाइ । किन्नौ कुट मारी ॥
वांनिक्र विराइ दुज्जाइ वर । आई षा भट्टी सु सिर ॥
प्रिथिराज राज चाहुट्ठ नें । वर निसान वज्जे दुसर ॥ छं० ॥ ११६ ॥

घड़ी दिन चढ़े सुलतान का सामना करने के लिये पृथ्वीराज का आगे बढ़ना, दोनों सेना का साम्हना होना ।

कवित्त ॥ सुलतानां रै मुष्य । समर उत्तमौ नरिंदं ॥
मनों विद्धि विहान । मांड सजाद समुंदं ॥
टोज सेन उत्तरिय । भंमर भ्रष्प प्रप्पन उचारिय[१] ॥
धरि सन्नाह करि ग्रांन । जुद्ध वर मंडि उझारिय ॥
पहु फट्टि निसा पह फट्टि कर । घरिय वज्जि घ रिआर घन ॥
प्राची सुमंत दिसि वर किछिय[२] । ऋमर कित्ति चिंते सुमन ॥ छं० ॥ ११७ ॥

प्रातःकाल के समय दोनों सेनाओं की शोभा का वर्णन ।

छंद गीतामालती ॥ नव भवय प्रानय विरह-प्रामय[३] संप दिव धुनि वज्जियं ।
भलकंत पवनह मधुर गवनह ऋसु ऋम्र करज्जियं ॥
विकुरंत चंद सुमंत दंदं दिवस ता गम जानयं ॥
पच फट्टि चीरं परिग पीरं तोरि भूषंन नायथं ॥ छं० ॥ ११८ ॥
नव मिलहि ऋलिनी चलै नलिनी सहं मंद प्रकासयं ।

(१) मो०—विच्चारिय ।
(२) क०—किछिय । ए०—मिलिय । (३) मो०—पाट्य ।

नय[1] मुदिय कुमुदिय अचित प्रमुदिय सत्त पत्त सुभासयं ॥
जुग जपत अजयं धरत सजयं चित्त मरन विचारयं।
सामंत सूरय चढ़े नूरय देव तूरय नारयं ॥ छं० ॥ ११९ ॥
घरि अद्ध भानय चढ़ि प्रमानय राज सेनय सज्जियं।
उभ्भारि वीरय बंधि नीरय अप्प अप्पय गज्जियं ॥ छं० ॥ १२० ॥

कवित्त ॥ अद्ध सूर उग्गंत। ढाल ढुक्की सुरतानिय।
ठांम ठांम सघगंध। सज्जि चल्लै अगवांनिय ॥
धर तर गिर धावत समूह। जूह चतुरंग जगाइय ॥
ढिल्ली वै सुरतान। धुक्कि नीसान बजाइय ॥
धा हथ्थ हथ्थ कविचंद कहि। अल्लह देइ सुगाइयै ॥
तत्तार षांन निसुरत्ति षां। सुबर सेनरि गाइयै[2] ॥ छं० ॥ १२१ ॥

रावल समरसिंह का सब सरदारों से पूछना कि क्या हाल है कौन दृढ़ है और डरता है। सभों का उत्साह पूर्ण वीरता का उत्तर देना।

कवित्त ॥ प्रात समर रावर नरिंद। साहस गत पुच्छिय ॥
कहै सब्ब सामंत। मत्ति जंपौ मनि अच्छिय ॥
कोन वीर को धीर। कोन साहस को कातर ॥
कवन दूत अवधूत। जोग कार्बंध समातर ॥
बंधनह कोंन को बंधियै। अरु किन बंधन तन छुट्टयौ ॥
चित्रंगराज राजंग गुर। रहसि मंत वर छुट्टयौ[3] ॥ छं० ॥ १२२ ॥

रावल का कहना कि ऐसे समय में जो प्राण का मोह छोड़कर स्वामी का साथ देता है वही सच्चा वीर है।

छूटै वीर अवजोग। प्रांन पति रुघ्य न छुट्टै ॥
चुक्कै न वीर अवसर प्रमांन। जिहि जोग अछुट्टै ॥
इक बंधन बंधियै। छूटत तन बंधन अग्गै ॥

(१) मो०—नय।
(२) ए०—कृ०—को०—रंगाइय। (३) मो०—छुट्टयौ।

स्वांमि संकरैं छांड़ि । स्वांमि चक्कारति भग्गै ॥
सोई वीर धीर साहस सुई । सुद रन वीर सुवीर दुई ॥
चिचंग राव रावल चवै । जस बुझत रन कीर सोइ ॥ छं० ॥ १२३ ॥

दोनों सेनाओं का उत्साह के साथ बढ़ना ।

दूहा ॥ उदित अर्क दिसि पुब्ब पहुं । जगे सेन दोइ अंग ॥
अश्व अप्प बल बढुए । बल बअंगी[1] अंग ॥ छं० ॥ १२४ ॥

पृथ्वीराज का सेना के साथ बढ़ना ।

कवित्त ॥ तब प्रथिराज नरिंद । समर उत्तरिय चढ़ाइय ॥
सज्जि सेन चतुरंग । बाम कोर[2] दाव सराइय ॥
स्वांम सेत धजबंधि । नेन निक्कारि निकाइय ॥
वंदि वीर विभूत । लुब्बिय विहाट लगाइय ॥
नारद दद तुंबर सु'चर । सिव समाधि जग्गाय बसि ॥
अदभुत जुद्ध दोउ दीन कौ । अप्प आन दिप्पै रहसि ॥ छं० ॥ १२५ ॥

सुलतान का रणसज्या से सजकर सवार होना ।

दूहा ॥ सुनि रु बत्त सुरतांन चढ़ि । सजि नवसिव अपरिछ ॥
अबभर सकल सनाह कसि । चढ़ि अवधूत सनद्ध ॥ छं० ॥ १२६ ॥

हिन्दुओं के तेज के आगे मीरों का धीर छूटना ।

दूहा ॥ अब हिंदू दल जोर हुअ । छुटि मीर धर भ्रंम ॥
* असमय आर बवांन चवि । कारन उद्दसा क्रंम ॥ छं० ॥ १२७ ॥

एक ओर से पृथ्वीराज और दूसरी ओर से रावल समर सिंह का शत्रुओं पर टूटना ।

दूहा ॥ इत राजन उत समर वर । दुअ दूब सज्जि असंध ॥
तन तुरंग तिन बर करन । नमिय तेज चय नंध ॥ छं० ॥ १२८ ॥

---

(१) मो०—बअंगिय ।
(२) मो०—कोर्द ।
* मो० प्रति में "असरल मय साह करि बाखवां प्राक्रंम" पाठ है ।

युद्धारम्भ, युद्ध वर्णन, अरब खां का मारा जाना।

छंद भुजंगी ॥ मिले लोह चथ्थं सु बथ्थं चकारे। मनों वारुनी रत्त मै गंध भारे ॥
दिठी दिठ्ठ हूनं भरं आसुरानं। पलं कूच कज्जै उभै सिंध जानं॥छं०॥१२९॥
जपै दुष्ट मंचं मुषं राम नामं। कढै मेच्छ दीनं ग्रहै मुठ्ठि षामं ॥
छुटै तीर भारं द्रुमं कै निसानं। मनों भादवं गज्जियं मघ्घवानं॥ छं०॥ १३०॥
बजै भेरि तूरं बजै संष नद्दं। मनों सज्जई बीर अनचद्द रुद्दं ॥
भिरें मेच्छ हिंदू लरै लोह नत्ते। सचै ईस सीसं षहं देव पत्ते॥ छं०॥ १३१॥
हुए षंड षंडं भरं सो अलग्गं। मनों देव दानैं विरुध्यें बिलग्गं ॥
षिजै लोह आरब्ब बाहै करूरं। चली फौज चहुआंन गय सूर नूरं ॥छं०॥१३२॥
तबैं आइ ठढ्ढो भरं सिंघ सेनं। तनं आवरे बीर रूपं पथेनं ॥
दिठं दिठ्ठ लग्गी समं षांन षानं। चयंती चयंती मुषं आसुरानं॥ छं० ॥ १३३ ॥
तुरी छंडि राजं सचे संग पानं। चप सेल सथ्थं पटे षांन थानं ॥
छुटे सेल संन्हो बहै षग्ग झट्टं। परै टहरी[1] झट्ट लग्गै सुघट्टं ॥ छं० ॥ १३४ ॥
भई भीर सिंघं अनुद्धं अपारं। कढै बीर धीरं मुषं मार मारं ॥
रढ्यौ आइ अड्डो पतीधार स्थामं। चढौ षग्ग षानं सु पंमार रामं ॥ छं० ॥ १३५ ॥
ढह्यौ आरबं षांन दो दीन साषी। जिने दीन के अंग की लाज राषी ॥छं०॥१३६॥

पाँच घड़ी दिन चढ़े वीरता के साथ लड़ कर अरब ख़ां का मारा जाना।

कवित्त ॥ पंच घटी दिन चढ्यौ। उमरि आरब्ब षांन लरि ॥
हिंदुअ सेन सम्हद्द। छोह छंड्यौ सुकंक अरि ॥
असि प्रहार चढ़ि धार। मन तुट्यौ तन तुट्टिय ॥
अस्त्र बस्त्र बज्जी कपाट। दट्टीवन जुट्टिय ॥
पग पगनि सिंभ पग पग मुगनि। भुगनि भूमि कित्तिय चल्लिय ॥
धनि सेन साह सुरतांन दल। दरिय बीर मुत्ती षुल्लिय ॥ छं० ॥ १३७ ॥

खुमान खां का क्रोध करके लड़ने को आना।

कवित्त ॥ एकादस दिन जुद्ध। उमड़ि आरब्ब षांन जुरि ॥

(१) मो०--टट्टरं।

* बल घट्यौ पतिसाह । पक्करि पुरसांन षांन सुनि ॥
परि अरिष्ट सु विचांन । भए सत्र सथ्थ उतारै ॥
अप्प अप्प मुष छंडि । मंडि करि वार करारै ॥
घरियार सघन समघाइ वजि । उरत लोह भए उल्लरिय ॥
दोइ दीन दुंद दारुन दरिय । करैं वीर गुन गल्हरिय ॥ छं० ॥ १३८ ॥

युद्ध का वर्णन ।

छंद मोतीदाम ॥ सुअंन कमंन बढै क्रनदोस । परै घन षत्त सरोसिय रोस ॥
उठै जनु सांझ भयानक भंति । करै घन गज्जं घनं वन कंति ॥ छं० ॥ १३९ ॥
वहै असि अंक निसंक नि नारि । उतारत भाजन सूत कुंभार ॥
तकै सिर छंन तकत्तिय घाउ । वहै करि वार मनो वधि वाउ ॥ छं० ॥ १४० ॥
जहां तहां धुक्कन उट्ठन एक । तरफै तरफै रन नच्चिय नेक ॥
हलंमल होत दरभ्भर फीर । षचै असमांन अनुद्विय नीर ॥ छं० ॥ १४१ ॥
वहै सर पष्पर निक्करि जात । तकै तन घह करंत निघात ॥
परैं वर वज्र गुरज्ज सिरंन । षचै सिर रत्त कै पब्ब झिरंन ॥ छं० ॥ १४२ ॥
अदभ्भुत आवध बज्जिय मार । ढहै जिमि हच्च सुनद्द किनार ॥
हलंमिल है दल पैदल एक । भयं इम युद्ध घरी भर एक ॥ छंद ॥ १४३ ॥

ग्यारह दिन युद्ध होने पर सुलतान की सेना का निर्बल होना । रावल समरसिंह का तिरछी ओर से शत्रु सेना पर टूटना ।

कवित्त ॥ एकादस दिन जुद्ध । सबर संघट्ट[1] पंच घटि ॥
बल घट्टिय पतिसाह । षग्ग परभरिय षांन जुरि ॥
चाइ चाइ आरिष्ट । सक्कल हिंदून सेन करि ॥
समर सिंघ मुष छंडि । जाइ भंज्यौ तिरछौ परि ॥
घन घाइ सजाइ सु. फौज फिरि । उरन लोह कढ्ढै भिरन ॥
दोउ दीन दीन उप्पम विसल । मद मैगल छुट्टे उरन ॥ छंद ॥ १४४ ॥

---

* यह पंक्ति मो० प्रति में नहीं है ।
(१) मो०—संघट ।

युद्ध वर्णन ।

छंद त्रिभंगी ॥ मद मोष कि कुट्टं दो बर जुट्टं संकर तुट्टं आहुट्टं ।
भर भर भूमाखं बूथर चाखं कर बजि ताखं तर तुट्टं ॥
करि कार बर कुंतं सजि बलवंतं भिरि गज दंतं चढ़ि दंतं ।
करि घन संमानं बीर भरानं उप्पम जानं करि नंतं ॥ छं० ॥ १४५ ॥
तज्जे सब सम्मं बीर सुमिम्मिं वजि अनुरत्तं उत्तंगे ।
उर उर बर घट्टे रुधि रस लुट्टे छवि बल पट्टे रग रंगे ॥
धर धरनि फुरक्कं चलत न ढिक्कं अंतर रुक्कं अवलुक्कं ॥
बग्गं अघ जानं को किरवानं गिल छिन पानं जच भक्खं ॥ छं० ॥ १४६ ॥
द्वै वै हिंदवानं नजै न थानं द्रोन समानं गुर पिंडं ॥
रिमु राज बसंतं दोउनि चिंतं संकुचि जंतं मिल षंडं ॥
नेजे बर षानं बलि लखि ध्यानं मीर घरानं सभि द्वंद्वं ॥
सब सेन सनाहं सुरपति छाहं को गिग राहं वै चंदं ॥ छं० ॥ १४७ ॥

खुरासान ख़ां का घोर युद्ध करना ।

कवित्त ॥ षां षुरसांन ढचाइ । षांन षुरसांन गचन पति ॥
सत्त दून भर समर । समर आहुन्नि मंडि छिति ॥
सेन नवत षिन नक्स । नक्स गजराज साज नव ॥
ते समस्त नव मंच । मंच नंच नव्वंत सब ॥
दिन अदित हंस इक सध्य उड़ि । रन आहुटिय बीर बर ॥
दिष्षिहि सुजध्य गंध्रव गुननि । जुबर कित्त बित्तो सुभर ॥ छं० ॥ १४८ ॥

समर सिंह की बीरता का वर्णन ।

कवित्त ॥ पच्चौ समर षाषाव । समर जित्ते सुरतानी[1] ॥
परि भट्टी मच नंग । सस्त्र बाहे सुविचानी ॥
पच्चौ गौर केचरी । रेह्न अजमेरां षष्यिय[2] ॥
स्वामि ध्रम जस रत्त । कित्ति भारथ भर भष्यिय ॥
रघुबंस पंच पंचौ मिले । बर पंचानन नाम क्रमि ॥
चिचंग बीर पंचो परत । चढ्‌यौ भान मध्यान नमि ॥ छं० ॥ १४९ ॥

(१) मो०—सुरतानी । (२) मो०—रषिय ।

कवित्त ॥ चढ़त भांन सध्यांन । वीर गष्पर उग्गरि घर ॥
सुमरि सेन सामंत । ओट तत्तार षान भर ॥
बन्न घात आरिष्ट । वीरता रिष्ट गरिष्टिय ॥
लुध्यि लुध्यि आहुट्टि । लुध्यि लुथ्थन पर लुट्टिय ॥
धारंग कुट्टि अन कुट्टिचै । डंक बज्जि बज्जी विपष ॥
चरनंत देखि उभ्भै चरन । उघरि सिंभ दिष्षै सुपष ॥ छंद ॥ १५० ॥

बड़े बड़े बीरों का मारा जाना ।

पन उघघरि दिषि सिंभु । ब्रह्म दिष्यौ ब्रह्मासन ॥
प्रकृति पुरुष दिष्षीन । प्रकृति दिष्यौ गुरु षासन ॥
थान थान जम पुक्कि । रंभ पुच्छै पक ग्रह फिरि ॥
भौ अचंभ कविचंद । लोक मंगै सु लोग सुरि ॥
लभ्भी जु सुगति षग मग्ग करि । जोग मग्ग जिन मुक्कयौ ॥
सामंत सूर मिलि सूर ग्रह । फिरि न तिनन तन चुक्कयौ ॥ छं० ॥ १५१ ॥

गष्षर ख़ां और तातार ख़ां दोनों का मारा जाना ।

दूहा ॥ उभय सहस गष्पर परिग । थल विंध्यो सुरतान ॥
समरसिंघ रावर स्रिमुख । परिग वीर[1] विय षांन ॥ छं० ॥ १५२ ॥

याकूब ख़ां का घोर युद्ध वर्णन ।

छंद भुजंगी॥ पच्चौ षांन याकूब मुष्षं समाई । बजे टोप टंकार के तार साई ॥
कटै कंध कामंध नंचे विभंगं । मनों अग्गि लग्गी समीपं न दंगं ॥छं० ॥ १५३॥
करै वीर भंगं सुभट्टं करं कं । मनो उच्छरै मीन जल मभ्भ पंकं ॥
करे दोह दोही समं चित्त कोटं । परे वीर बीरं सुरत्तान जोटं ॥ छं० ॥ १५४ ॥
मथी सेन दूनं भई थोर थोरी । मनों वारिजं पंति दंती झकोरी ॥
बजै घाइ अघ्घाइ निघघाइ घट्टं । पढ़ै वेद विप्रा बकै ज्ञान भट्टं ॥ छं० ॥१५५॥
परै ढाल मालं विराजै कला की । मनों भीति गौषं भिदै नीर जाकी ॥
जिनैं नीर मुष्षं षगं नीर झल्लै । मनों माधवं मास वे वंक फुल्लै ॥ छं० ॥ १५६ ॥
किरव्वान कुंतं झरै पैसु कक्की । मनों बीज छुट्टी कुघट्टा मनक्की ॥ छं० ॥ १५७ ॥

(१) मो०—वीय ।

जब आधी घड़ी दिन रह गया तो निसरत ख़ां और तातार ख़ां ने सेना का भार अपने ऊपर लिया।

दूहा ॥ रचिग जांम तन अद्ध घटि। टरिन बीर जुध वार ॥
षां निसुरत्ति तत्तार षां। लयौ सैन सिर भार ॥ छं० ॥ १५८ ॥

घोर युद्ध होना, पृथ्वीराज का स्वयं तलवार लेकर टूट पड़ना।

छंद भ्रमरावली ॥ जयं जय सद्द सु सद्दिय सूर। जु अच्छरि पुक्क उक्कारत दूर ॥
हचा हुहु गंध सुगंध्रव गांन[1]। पच्चौ घरि एक उभै रथ भांन ॥ छं० ॥ १५९ ॥
भवं[2] रुंड मुंडय सुगुंथय माल। अमीय उपावहि ढुंढहि लाल ॥
जु षिच्चै चहुवांन क्रपान कसी। सुमनो दुति दामिनि सी निकसी ॥ छं० ॥ १६० ॥
तुटि पट्टन गौ उपमाहि लद्धौ। सुपच्चौ जनु मेर सुरंग कढ्ढौ ॥
नव जंपि नवै रस बीर नच्चौ। भ्रमरावलि छंद सु चंद रच्यौ ॥ छं० ॥ १६१ ॥
नव नंचिय रुंडति मुंड रच्यौ। तिन ठौर विभच्छक भयानक सौ ॥
परि लुथ्यिअ लुथ्यि तहां सरसं। सुभयौ रस भंकर रुद्र रसं[3] ॥ छं० ॥ १६२ ॥
रुधि सों गज राजति दांन झरै। कवि चंद तहां उपमा उचरै ॥
छवि भो घन स्यांम सुरत्त परी। मनों बिंब बचे नदि है उतरी ॥ छं० ॥ १६३ ॥
उपमा दुसरी रंग देषि कहै। जमुना जल में सरसत्ति बहै ॥
घन अच्छरि अच्छ कटाच्छ करै। रस भेद श्रृंगार पनाह धरै ॥ छं० ॥ १६४ ॥
तिन जारन भाखन को न बचै। रनसं[4] रस तीय सु हास्य नचै ॥
धरकै घर कादर चित्त थियं। करुना रस केलि कुलांन कियं ॥ छं० ॥ १६५ ॥
बर बीरन जुद्ध इतौ संपज्यौ। तिहि ठौर भयानक सौ उपज्यौ ॥ छं० ॥ १६६ ॥

रावल की वीरता का वर्णन।

दूहा ॥ अति प्राक्रम रावर सुभर। कूरंम नरसिंघ जग्गि ॥
रघुवंसी अति क्रम्म गुर। कथ्थ करन कवि लग्गि ॥ छं० ॥ १६७ ॥

शाह का प्रबल पराक्रम करना। हिन्दू सेना का घबड़ाना।

गाथा ॥ जब भषि रीठ अपारं। किय अति क्रम्म जवनयं साहं ॥

(१) मो०—थांन। (२) मो०—भवि।
(३) मो०—हसं। (४) को०—कृ०—संघर।

भर घर छिंदुञ भग्गं । कर धरि पग्ग धाय क्रूरंसं ॥ छं० ॥ १६८ ॥

रावल का क्रोध कर स्वयं सिंह के समान टूट पड़ना ।

कवित्त ॥ जवहि सेन चतुरंग । साहि अरि जंग आइ जुरि ॥
तवहि राज रघुवंस । कुवित बर पग्ग अप्प गहि ॥
चलिय मत्त गजराज । सिंघ कर मथ्य सिघ[1] वहि ॥
मनो वसन रंगरेज । मह फुथ्यौ सुरंग ढहि ॥
दौरे मसंद किलकार करि । धुम्म समान साहस धरे ॥
वज्जे वढ्ढन असिवर सवर । सुकवि चंद कीरति करे ॥ छं० ॥ १६९ ॥

दोनों सेनाओं का लथ्थ पथ्थ होकर घोर युद्ध करना ।

छं० त्रिराज। जुरे हिंदु मीरं वहे पग्ग तीरं। सुपें मार मारं वचे सूर सारं ॥ छं० ॥ १७० ॥
भिरे हूञ भारं तुटै* पग्ग तारं। अकथ्थं करारं कहे देव पारं ॥ छं० ॥ १७१ ॥
जुटे पंच पानं करक्के कमानं। रघूवंस रायं धरै पग्ग धायं ॥ छं० ॥ १७२ ॥
नरं सिंघ रूपं जुरै नेक जूपं। महंसद पानं रघूवंस रानं ॥ छं० ॥ १७३ ॥
घयौ खेल मीरं पल्लौ मध्य बीरं। कचौ फौज साईं वचे कळ्क्वाईं ॥ छं० ॥ १७४ ॥
दुअं तीन पानं चयं तीहि यानं। वचे पग्ग झट्टं सुदा हिंस घट्टं ॥ छं० ॥ १७५ ॥
वचे धार धारं करै मार मारं। चलो चल्ल मीरं नयौ नाग पीरं ॥ छं० ॥ १७६ ॥
सिरै तुट्टि तारं मिले पांन सारं। अनुज्जं अपारं ……… ॥ छं० ॥ १७७ ॥
ढचावंत घायं मनो हप्प वायं। गए सूर भेदं बरी अच्छ छेदं ॥ छं० ॥ १७८ ॥
दुअं फौज राजं जु साचाव गाजं। रचै दोस सामं करै सामि कामं ॥ छं० ॥ १७९ ॥
करै देव साषी सबै कित्ति भाषी । ……………………… ॥ छं० ॥ १८० ॥

रावल के क्रोध कर लड़ने का वर्णन ।

कवित्त ॥ हु तत्तो रघुवंस। भीर भंजन चहुआँनिय ॥
भयौ दुचच तिन बेर । बरन बरनौं सुरतानिय ॥
वीर मंच उचार । लोह अच्छित उच्छारै ॥
मिलि अच्छरि करि गांन । लोन गिद्धनि उत्तारै ॥
पुव्वंतर[2] कलस थपि धवल सिर । कलच केलि भावरि फिरहि ॥
मंडप्प षेत मांनिनि सुगल । सत्त कटाछ सु भुक्ति करहि ॥ छं० ॥ १८१ ॥

---

१ मो०—सिंघ । 　* यह पंक्ति मो०—प्रति में नहीं है । 　(२) मो०—पूर्वंत ।

युद्ध की शोभा का वर्णन ।

छंद चोटक॥ दोउ दीन सु दुंदुभि लोच भिले[1]। अँग अंग करक्कत[2] जंग पिले ॥
सधनाइ नफेरिय नैंक बजं। सु मनों घट भद्दव मास गजं॥ छं० ॥ १८२ ॥
घन टोप सु रंगिय तेज घुले। जनु पंतिय बग्ग अनेक मिले ॥
घन पाइक पंति झनंकत थें। मनों मोर कला करि नाचत थें ॥छं०॥ १८३ ॥
धुँधुरी दिस दिस्स* सबंग दिसा। दिष्षि पीत सु पत्तिय अद्ध निसा ॥
गज बंधि सनैन चमंकनि यों। सुमनो लगि जक परव्वत ज्यों ॥छं०॥१८४॥
किरवान कढंत कला दुसरी। सुमनों झर चौरिय सी पसरी ॥
कटिकंध[3] कमंधन कुट्टि जुरी। मनों बीज कला कुय छूटि परी॥ छं० ॥ १८५ ॥
असवार सु पष्षर कट्टि तबै। सुमनों घर बंटत[4] बंधव है ॥
करि फुट्टि बगत्तर रत्त रयो। मनु जावक मैं जल बंटत ज्यौ ॥ छं०॥ १८६ ॥
भभकंत भसुंडन रुंड परी। बढि पावक ज्वाल मनों निकरी ॥
दुहु बीच भसुंडन देव लसै। मनों बाल गनेस द्वि पूजि हंसै ॥ छं० ॥ १८७॥
सिर फूटत भेजिय उड्डि चली। सु मनों दधि मट्ट उपट्टि चली ॥
तरफै घन घंटन घट्ट सुधं। सु फिरै जल सुक्कय मीन उधं॥ छं० ॥ १८८ ॥
गज उप्पर ढाल गिरै बर तैं। सु गिरैं गिरि कोलि मनों जरतें ॥
गिरि कोलि कमंधन चंत षरे। मनों भेष पिसाचन सांच करे॥ छं० ॥ १८९ ॥
† बढ़ि बढ़ि घनं घट सीस जरै। जनु बद्दल बद्दल बीज अरै ॥
सु सनाहन घाइ सुभै तन मैं। झर दीरिका सी प्रगटी घन में॥ छं०॥ १९० ॥
चवसट्ठियों तारिय दै किलकी। सु नचै जनु गोपिय पेम ककी ॥
घन घाव सु बिहल[5] दों घुरकैं। मनों बोलि कबूतर दै सुरकैं॥ छं० ॥ १९१ ॥
दुतियं उपमा कविता सुर कै। मनो पूर नदी चय ज्यों फुरकै ॥
तरवारनि तेज परै तरसी। घन घुम्मचि मध्य मनों झरसी ॥ छं०॥ १९२ ॥
तिन उप्पर पंषिय बंधिय पंति। मनो षष इंद्र धनंकिय पंति ॥
पिलवान चलै करि पील गिरै। कलसा मनो देवल के बिहरैं॥ छं० ॥१९३॥

---

१ मो०—मिले । २ ह०—षरक्कत ।
* को०—ए०—प्रति में "दिशि जीतिय नीति" पाठ है ।
३ ह०—को०—ए०—बंध । ४ मो०—"बंधव बंटत" ।
† ये दोनों पंक्तियां मो०—प्रति में नहीं हैं । ५ ए०—बहिल ।

घन छिंछ उपंम करै सुरपै । मनो मेघ प्रवाल्लनि कै बरपै ॥
घन नाइ रही घन घुघ्घरियं । सु नचै मनों बालक विल्लरियं ॥ छं० ॥ १८४ ॥
इक सूरह की उपमा बरनों । दर मध्य गरज्जत सिंघ मनों ॥
सुर तीन हजार सु लोह मिल्लें । तिन में दस तीन कमंध पिल्लें ॥ छं० ॥ १८५ ॥
दस रावर हिं बर षेत चढ्यौ । टुक की टुकरा नव टूक बढ्यौ ॥
दोइ दीन रहै इतनै उनमान । मनों नारक प्रात[१] विचंद समान ॥ छं० ॥ १८६ ॥

रावल का शत्रु सेना को इतना काटकर गिराना कि सुलतान और उसके सेनानियों का घबड़ा जाना ।

कवित्त ॥ दसहै वर कटि समर । छोरि गज गाह हथ्थ लिय ॥
छिंछ श्रोन सब अंग । पुह्प जनु दृष्टि देव किय ॥
किन्न किंचित रस भख्यौ । लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
सीस हक्कि धर जुट्टि । कुट्टि अरियन फिर जुट्टिय ॥
विड्डुरुयौ देषि सुरतांन मन । सेन सब्ब मन विड्डुरुयौ ॥
अटि हार कोइ पुज्जै नहीं । वह अभूत आनम कर्यौ ॥ छं० ॥ १८७ ॥

पृथ्वीराज का अपनी कमान संभाल कर शत्रुओं का नाश करना ।

कवित्त ॥ तब पृथिराज नरिंद । साह सन्हौ गज साह्यि ॥
पंच बान कम्मान । साचि गोरी झुकि वाह्यि ॥
सरकि सेन सब धरकि । पक्क जंगम भए ठड्डै ॥
पथ्थ जेम भारथ्थ । क्रष्ण सारथ सम[२] गड्डै ॥
बर करकि करकि कंमान कर । पंष तेज कुट्यौ सबल ॥
नट डोरि जानि पहह चढ्यौ । रुधिर कोरि मंडी तिलक[३] ॥ छं० ॥ १८८ ॥

सुलतान का अपनी सेना को ललकारना कि प्राण के लोभ से जिसको भागना हो सो भाग जाओ मैं तो यहीं प्राण दूंगा ।

कुंडलिया ॥ तब जंपै सुरतान अप । जीवत जाइ सु जाउ ॥

१ ए०—को०—प्रान ।
(२) ए०—मन । (३) मो०—[illegible]

हूं जीवन रन रक्खिहों । मो मनि इच्छै सुभाउ ॥
मो मनि इच्छै सुभाउ । ताहि निरवन बल एही ॥
कर तारी घन छांह । तून अग्गै जिम देही ॥
बीज छटा जिम प्रांन । नई काया मिच्छ ढंपै ॥
ग्रह लोभी ग्रह जाउ । ताहि आलम इम जंपै ॥ छं० ॥ १९९ ॥

सब लोगों का सुलतान की बात सुन बड़ाई करना ।

कवित्त ॥ सुबर बीर गज्जनेस । चंग चौरंग बात सुनि ॥
राज रंक चिच्चै विचार । नर नाग देव मुनि ॥
तुम गज्जन वै साह । दाव दिज्जै नहिं दुज्जन ॥
जस अपजस मै मरन । जदु बंधै सज्जन इन ॥
दिसि अदिसि और दुष सुष्ष गति । य सरीर लग्गा रचै ॥
उच नीच चंपत चक्र गति । पति विपत्ति जिय सव सचै ॥ छं० ॥ २०० ॥

दूहा ॥ का काया मायानिका । का ग्रहनी ग्रह कोन ॥
अप्पन चंपिय मिच्चतें । जो देषिये सुलोन ॥ छं० ॥ २०१ ॥

सुलतान का तातार ख़ां से कहना कि संसार में सब स्वार्थी हैं मरने पर कोई किसी के काम नहीं आते ।

कवित्त ॥ सुनहि षांन तत्तार । अप्प स्वारथ सब लग्गे ॥
पसु पंषी बर जिते । तत्त सोइ तत मग्गे ॥
चियं बंध सेवक सुमंत । तन पें तन जाचै ॥
सुर नर गनधर घोर । जग्य जापह अवगाचै ॥
आचेत अवर परवसि परै । भूहन बिन मरदंग कह ॥
जम चष्य जीव पंजर परै । पंच सछाकह तुक्क ग्रह ॥ छं० ॥ २०२ ॥

दूहा ॥ अमर काम सो व्याज भ्रम । प्रंजर तुट्टत तेम ॥
षां ततार अरदास सुनि । मो आलम मति एम ॥ छं० ॥ २०३ ॥

षांह का कहना कि सच्चा सेवक, मित्र, स्त्री वही है जो स्वामी के गाढ़े समय मुंह न मोड़े ।

कवित्त ॥ सो सेवक सुनि [illegible] । स्वामि संकटै छुड़ावै ॥

*सो सु मित्त अप्पनौ । चित्त मित्तें न दुरावै ॥
*सो बंधव अप्पनौ । दसा अवदसा न कथ्थै ॥
सोइ त्रिया अप्पनी । आस मुक्कै अंसु रथ्थै ॥
मति सोइ जोइ पग उप्पजै । तत्त सोइ तत्तह मिलै ॥
इम परत भिरत सुरतान सुनि । गज्जन वै गज्जन चलै ॥ छं० ॥ २०४ ॥

सुलतान की सेना का फिर तमक कर लौट पड़ना और लड़ाई करना ।

कवित्त ॥ तमकि तेज गोरी । नरिंद चित डोलै वत्त[१] सच्चौ ॥
अधम अत्त विन अब्ब । पुट्ठि गोरी न समच्चौ ॥
सुबर वीर सुरतान । सेन चहुआंन ढँढोरिय ॥
पगी जांनि पारथ्थ । जेम दरियाव विलोरिय ॥
पल्लिलो वत्तन सुरतान दिषि । सिंघ लोक अविलरकथौ ॥
मुरि गयो सेन सुरतान कौ । छच सीस तब नंषयौ ॥ छं० ॥ २०५ ॥

पांच खाँ और पांच ख़वासों का घोर युद्ध मचाना ।

कवित्त ॥ पंच षान सुरतान । पंच षावास सु चढ्ढिय ॥
पासवान सुरतान । पास बाजू दोइ ठढ्ढिय ॥
रन रंध्यौ सुरतान । सेन चहुआन ढँढोरिय ॥
मनु पलथ्यौ नट मेर । वीर करुना रस रुज्जिय ॥
भर भीर तीर छुट्टिय दिषिय । तब सु ओट[२] आलम गहिय ॥
तत्तार षांन षुरसान षां । मंत मंडि सब दिषि कहिय ॥ छं० ॥ २०६ ॥
कवित्त ॥ जब सुषान षावास । भरर लग्गिय भय तप्पन ॥
बन्धिय सार सुष मार । छंडि गोरिय बल अप्पन ॥
लाल डंड सिर छत्र । देषि सुरतान सांचि पर ॥
तब दौरे भर सुभर । चलै चल चल्ल धराधर ॥
विचलिय सुफौज सुरतान षषि । तब छुट्टिय षर धीर सचिं ॥
षानह सुपंच षावास भिरि । सिर पर आवध रीठ मचि ॥ छं० ॥ २०७ ॥

(१) मो—मौर्वत्त ।
(२) ए—कृ—कोल ।

कवित्त ॥ इत सुधान षावास। उतह सामंत सिंघ भर ॥
रिस रिन सत्ती रीठ। तुट्टि ताइय मसंद घर ॥
गह गहंत उच्चार। कढी राजेंद्र राज गुर ॥
तबह षांन रिस ग्रब्ब। रुध्य बाहंत हंस धर ॥
जै जै सुसद्द जुग्गिनि करघि। कर षप्पर उन्मंत मत ॥
दुअ लरै दीन वल स्वांम कैं। घुरत चंब चंबान घत ॥ छं० ॥ २०८ ॥

युद्ध का वर्णन।

छंद रसावला ॥ चिंदु मेक्कंभरी। नाल वज्जै चरी ॥
घाय घायं घुरी। मत्त कक्के परी ॥ छं० ॥ २०९ ॥
साचि साचावरी। षान षुस्सै घरी ॥
राज रावत्तरी। कंध कंधे धरी ॥ छं० ॥ २१० ॥
सीन तुट्टे तुरी। डक्क नद्दं करी ॥
ईस सीसं जुरी। नंचि नारद्दरी ॥ छं० ॥ २११ ॥
थेइ थेई धरी। गिद्ध सिद्धं करी ॥
जस्स जंगल्लरी। षांन षाषासरी ॥ छं० ॥ २१२ ॥
जंग जुद्धं भरी। भीर राजं परी ॥
मार मारुघरी। चिंदु सामंतरी ॥ छं० ॥ २१३ ॥
चल्ल चल्लं धरी। मन्न टूहं[१] मुरी ॥
फौज पिक्खी फिरी। राज राजंगरी ॥ छं० ॥ २१४ ॥
धीर कुट्टै धरी। बोल्लि रावत्तरी ॥
हनौ मीरन्नरी। श्रम्म छंडे परी ॥ छं० ॥ २१५ ॥
घाय घायं सुरी। बढ्ढियं बंबरी ॥
काच दिट्ठं सुरी। मद्द घट्टं करी ॥ छं० ॥ २१६ ॥
दिष्षि राजंतरी। छंडि हंसं चरी ॥
कंक बंकं करी। मीरषांनू नरी ॥ छं० ॥ २१७ ॥
ढाल षांनं ढरी। अप्प चैरैं अरी ॥
कढ्ढि कीरं मरी। बाचि टूषां नरी ॥ छं० ॥ २१८ ॥

सेस विच्छेदरी। रंभ थंभं ढरी॥
देषि दाडिंम्मरी। पीप सा निड्डुरी॥ छं०॥ २१९॥
अल्ह सारौ सरी। दूर राजं वरी॥
देषि लोइं जरी। पग्ग पग्गं भरी॥ छं०॥ २२०॥
जुद्ध भूनं करी। काम सामंतरी॥
सीर पक्की परी। चक्कि हंसे सुरी॥ छं०॥ २२१॥
भान भल्लै सुरी। राज कित्तं करी॥
अठ्ठ थानं गिरी। दूब रावल्लरी॥ छं०॥ २२२॥
औार सब्बं मरी। पांन ढाहे धरी॥
कित्ति चंदं करी। नाम ले अन्नरी॥ छं०॥ २२३॥
दीह दस्सं वरी। सेष सेषं परी॥
संक सुक्कं सुरी। भान थानं परी॥ छं०॥ २२४॥
मेद चल्ले सुरी। हूर सें अंवरी॥
विंद ढुंढै फिरी। जैत राजंगिरी॥ छं॥ २२५॥
कित्ति देवं करी। फौज चल्लै धुरी॥
चल्ल विचल्लरी। कुस्स कुस्सं मरी॥ छं०॥ २२६॥
........................। देव नंषै परी॥ २२७॥

कन्ह का खुरासान ख़ां को मारना।

छंद मोतीदाम॥ पत्यौ जहँा सेन सुरावर सार। मनों मदमत्त कँठीर गुँजार॥
नयौ सिर नाग सुमंडिय जंग। घुरें सुर जोरय[1] चंवक संग॥ छं०॥२२८॥
वहै करि धार सु संगिय सूर। परे पर नार असूर पनूर॥
गही वर सिद्ध रु सूर समंत। भयौ जनु आंनि कै ईसर अंत॥छं०॥२२९॥
नचै दय तारिय चौसठि नारि। वरें वर सूरय देय धमारि॥
मिले सम कन्ह अनी षुरसान। वकै दुह ईसह थान समान॥छं०॥ २३०॥
दुअं वर धारिय संग गुमान। चए विय कन्ह सुषान उरांन॥
पत्यौ षुरसान सु वंधव नेत। वढी अति देषि प्रथी पति जेत॥ छं० ॥२३१॥

(१) मो०—जोरसु।

खुरासान खां के गिरते हिन्दुओं की सेना का फिर तेज़ होना।

दूहा ॥ परे षेत षुरसान षां। ढहि घन घाय अचेत ॥
फिरि दल हिंदू जोर हुअ। बजि वरनाई षेत ॥ छं० ॥ १३२ ॥

पृथ्वीराज का ललकारना कि सुलतान जाने न पावे इसको पकड़ो। सब सरदारों का टूट पड़ना।

छंद मोतीदाम॥ मिले बर हिंदु तुरक्क सुनार। कटंक्कट वज्जिय लोह करार ॥
उडै बर षग्ग न टूक निनार। मनों छुटि सूर किरन्न प्रचार॥ छं० ॥ २३३॥
कहै[1] बर क्रुद्दि सुबोन उचार। जपै उर राम कहै मुष मार ॥
भिरैं भर मीर सु सामंत सुद्द[2]। कहै कवि कथ्थ सु अंषिन लद्द ॥छं०॥२३४॥
बचै स्वर[3] संग दोजन अपार। ढचै बर मीर सुअंग अगार ॥
चंपे दल साहि जके चहुआन। गहैा सुरतान चवैा षग पान॥ छं० ॥ २३५ ॥
फुले मनो सारूप भ्रम्म सुरत्त। बह्यौ मन सांहि गदंन सुवत्त ॥
चवै चहुआन अचो बर सूर। करै सबमीर षरग्गय चूरि ॥ छं० ॥ २३६ ॥
नपे गहि राज सु संग चिभ.ग। कुटे धर मीर सु धीरज नाग ॥
चवै मुष मार सुचावंड राइ। दखों सुरतान करों इक घाइ॥ छं० ॥ २३७॥
सुने बलिभद्रय पीप सु अल्ह। नरां सिर[4] निडुर रष्षन गल्ह ॥
चंपे चव सामंत धाइ परेस। बचै बर सेल कियै इच भेस॥ छं० ॥ २३८॥
लगी बर सेल कमद्द निसास। फुले मधु[5]माधुअ केसु पलास ॥
कटे बर षग्ग कमद्द निसार। तुटै बर देवल अंड अधार॥ छं० ॥ २३९ ॥
चकै बर सामंत जुद्द अनुद्द। परे असि टेकत उट्ठि कमंध ॥
चले बर नालय हद्दि प्रनाल। नषै वर सूर अपच्छर माल ॥ छं० ॥ २४० ॥
कुध्यौ धर धीरज मीर अभंग। बढ़ी बर जैत सु दिष्षिय जंग ॥
फटी बर फौज अनंधिय जान। अघाइय गिद्ध रु सिद्ध सुमान॥ छं० ॥ २४१॥
नचै बर नारद बीर निसान। थेई थेइ कहत वै थिरतान ॥

(१) मो०—बहै। (२) मो०—शुद्ध। (३) ए०—कृ०—को०—वर।
(४) ए०—कृ०—को०—ठहै बर। (५) मो०—मनु माधव।

रिनै[1] अति नाइ तुनार सुढांन। मिले मुकु और तुष सं दान॥ छं० ॥२४२॥
पए छिय नेज ननार सुनंन। पच्छौ ४र मुच्छि काढौ धनि धंनि ॥
करै सुष किति नषै कुसमंन। एली वर फौजय साहि सुनंन ॥ छं० ॥ २४३॥
ढषै वर मीर नु साहिज संन। ....॥ छं० ॥ २४४॥

घोर युद्ध होना, शाह और पृथ्वीराज का सम्मुख युद्ध ।

दूहा ॥ अनि संकर वर जुद्ध हुअ। इन राजन उन साहि ॥
दोऊ नैंन अंकुरि परे। वजि वीरा रस माहि ॥ छं० ॥ २४५ ॥

शहाबुद्दीन का तलवार से और पृथ्वीराज का कमान से लड़ना ।

उअ तुष आइ सषावढ़ी। इय रुष आइय राज ॥
इय कर पोले षग्ग वर। उअ कमान कर साज ॥ छं० ॥ २४६ ॥

दोनों नरेशों का युद्ध वर्णन ।

कवित्त ॥ जबहि साह आलम्म। झुक्कि[2] कम्मान अप्पगहि ॥
तबहि राज प्रथिराज। तेग पक्करिय अप्प रहि ॥
षह वरषन वर तीर। पंचि वरपंत सार ढहि ॥
इहै तेज पग झमषि। करी तुट्टे कमंध वहि ॥
आलम्म राज दुअ जुद्ध हुअ। नह दिष्यो दानव सुर ॥
वर दाय चंद इम उच्चरें। करत किति गैनह अमर ॥ छं० ॥ २४७ ॥

घोर युद्ध वर्णन। शाह की सेना का भागना ।

छंद त्रिभंगी॥ पढ़ मंदह रतनं[3] अठुह रतनं[4] पुनि वसु हरनं रस रहनं।
त्रभंगी छंदं पढ़ सु चंदं गुन वहि दंदं गुन सोई।
अंते गुर सोहै मधि लय मोहै सिव समोहै यह होई।
विज्जू वर षग्गं असि मर लग्गं भिरि भिरि जग्गं रजि रंघं॥ छं०॥ २४८॥
बज्जै रिन मालं माछो मालं षग्ग सु षालं भिरि चालं।
राजा प्रथिराजं असवर भाजं स.हि सु साजं भिरि भाजं।

---

(१) मो०--रचे।　　(२) मो०--झुकित।　　(३) ए०--कृ०--को०--हरयं।
(४) ए०--कृ०--को०--हरयं।

किरवान ढकंतं सजि बल्लवंतं भिरि भयकंतं कलमंतं।
षप्पर अधिकारी चौसट्ठि नारी दैदै तारी किलकारी ॥ छं० ॥ २४९ ॥
उक्क ईसर नई नचि उन मई रजि रज सई जुरि अंगं।
अदभुत रस अंगं षग्ग उनंगं सार सुभंगं परि रंगं ॥
सामंतं सूरं चढ़ि बिक्सूरं बजि रन तूरं असि चूरं।
तुट्टै धर मीरं साह सुधीरं गजि गंभीरं भिरि बीरं ॥ छं० ॥ २५० ॥
नचि मीर कमंधं चसै तसिद्दं भिरि भिरि जुद्धं षग षद्धं।
नंषे षग हंसं तेज तरंसं रुचित सरंसं करिगंसं ॥
बुझिय सुचिचानं हिंदुअ रानं कढ्ढि कृपानं गचि पानं ॥
झारे षग झहं विज्जल छुट्टं वाचि बिकट्टं नचि नट्टं ॥ छं० ॥ २५१ ॥
घनि घनि सामंतं जानि कुमंतं भिरि भर जंतं अरि अंतं।
चच्चर चहुआनं गच गच बानं साचि सुतानं बलपानं ॥
छंडे सिर छत्तं साचि सु नत्तं गोघीरत्तं मनमंतं ॥
बद्दरी तजि बाजं रचि गजराजं छरि षग साजं कच काजं ॥ छं० ॥ २५२ ॥
तत्ते षरि राजं साचि सु साजं जै जुग काजं रस साजं ॥
आलम अह राजं दुम्म दे चाजं[१] घनि घनि वाजं भिर वाजं ॥
दिषवी नर्चा राजं तजि गज राजं चैंवर साजं गुर गाजं ॥
गचि कर कंमानं तीर सुतानं लगि असमानं बचि वानं ॥ छं० ॥ २५३ ॥
चिस अक्खर टोपं राजन घोपं असि वर ओपं वहु कोपं ॥
चै घनि सु विद्यानं कर अप्पानं ग्रचि सुरतानं बलवानं ॥
उड़ि दिसि दिसि भाजं मीर अकाजं पच्चि सचाजं गचि बाजं ॥
भग्गी वर फौजं साचि सु जौजं मन करि मौजं धरि धौजं ॥ छं० ॥ २५४ ॥

शाह की सेना का भागना और शाह का पकड़ा जाना।

दूहा ॥ भगी अनी धुरसान षाँ। कुट्टि मीर घर भ्रंम ॥
गह्यो साह आलंम कर। विचल्लि सुभर तजि श्रंम ॥ छं० ॥ २५५ ॥

सुलतान की सेना के भगेड़ का वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ कुसादे कुसादे कहै षानजादे।

(१) मो०—राजं।

ग्रह्यौ चष्य गोरी ऋवें साहि बादे ॥
लग्यौ चित्त कोटी सुरत्तांन राह्यौ ।
बजे वे निसानं सजित्यौ सराह्या ॥ छं० ॥ २५६ ॥
गयौ भग्गि कूरंभ मरचठ्ठ वाली ।
गयौ सत्त मुक्के न्टपं वे पँचाली ॥
सवें सेन बंधी रहे सेन सुक्के ।
गयौ चव्दसी रोमसा भ्रंम चुक्के ॥ छं० ॥ २५७ ॥
बरा रोन गौरं भगे रुंड मुंडं ।
पह्यौ मभ्भ सामंत गोवाल कुंडं ॥
भग्यौ कंनरी चक्त वे चक्त वानं ।
भग्यौ वेदरी वल कद्दी कंडि पानं ॥ छं० ॥ २५८ ॥
बदं वे कुसादी पद्धौ कासमीरं ।
मुलत्तान पट्टू कुंच्यौ दथ्य तीरं ॥
भग्यौ प्रव्वती पलची झारपंडी ।
जिनै भुज्ज गोरी ग्रहं लाज मंडी ॥ छं० ॥ २५९ ॥
भग्यौ वै बंगाली करंनाट वाली ।
भग्यो भागि सांद्रोह कूरंभ धानी ॥
पद्धौ झूभि सा बद्दरी बद्द तीनौ ।
जिने ठेलि चहुआन सब सद दीनौ ॥ छं० ॥ २६० ॥
वयं विंदु वाली भग्यौ सथ्य सव्वं ।
जिने लोहची लग्गि अंची[1] न कव्वं ॥
मयं मेछ बड्डे मयं मक्क राथा ।
जितें भागतें बार लागी न काया ॥ छं० ॥ २६१ ॥
भग्यौ ब्रह्म जा पुत्र अची कुचीरं ।
जिनें भग्ग तें भग्गि सुरतान धीरं ॥
भग्यौ गज्ज पीरा उसा रत्त नाथं ।
भग्यौ अग्गिवानं सु मानं सु साथं ॥ छं० ॥ २६२ ॥

(१) मो०—अंचन ।

पच्चौ षांन आजुब संसार साषी ।
जिने दीन बंदेन की लाज राषी ॥ छं० ॥ २६३ ॥

रविवार चतुर्दशी को समरसिंह का यह युद्ध जीतना और धन निकालने को चलना ।

कवित्त ॥ गहि लीनौ सुरतान । समर लिन्नौ जसुभारी ॥
चामर छत्र रषत्त । बषत लुट्टे रन रारी[1] ॥
चित्र कोट चव रंग । साहि दिन्नौ चहुआनं ॥
चतुर दसी रवि वार । वीर बज्जे परवानं ॥
बुल्लयौ बीर कैमास तब । धन कढ्ढन चल्लो समुद्द ॥
आरब्ब राव भीरा सुबर । चंपि जु रष्यौ गंज उद्द[2] ॥ छं० ॥ २६४ ॥

पृथ्वीराज के सुलतान को पकड़ने पर जय जयकार होना ।

दूहा ॥ परे सेन गोरी गरुअ । गहि लीनौ सुरतान ॥
सोमेसर नंदन सुकर । जै लिन्नौ जय पान ॥ छं० ॥ २६५ ॥

इस विजय पर चारों ओर आनन्द ध्वनि होना ।

कवित्त ॥ गह्यौ साहि आलम्म । सुजस लीनौ चहुआनं ॥
षल्लक षांन भग्गिय विहाल[3] । परे दै गै भर थानं ॥
मीर मसंद मसंद । कटे सामंद हथ्थ भर ॥
दुअ राजन भर जुरे । सुबर लिन्नौ सु अप्पकर ॥
जै जै सबद्द जुग्गिनि करै । सीस गहै ईसन समथ ॥
कवि कहै चंद भारथ्थ बर । करिय राज्य प्रारंभ कथ ॥ छं० ॥ २६६ ॥

राजगुरु का कहना कि अब विजय कर के एक बेर दिल्ली चलिए फिर मुहूर्त बदलकर आइएगा ।

दूहा ॥ करिय जैत राजन सु बर । चलिय ढिल्लि बर साज ॥
तब विचार राजन गुर । कही राज सिरताज ॥ छं० ॥ २६७ ॥
तब रावर बर राज गुर । कहिय राज प्रथिराज ॥

---

(१) मो०—नारी ।
(२) मो०—वह ।
(३) ए० कृ० को०—विहाल ।

ढिल्ली दिसि ग्रच चल्लियै । फिरि सु मुहूरत साज ॥ छं० ॥ २६८ ॥

राजा का पूछना कि पीछे लौटने को क्यों कहते हो इसका कारण कहो ।

फिरि राजन इम उचरिय । सुनौ ग्रहुहु नरिंद ॥
का कारन पीछै फिरै । सो कारन कहि नंद ॥ छं० ॥ २६९ ॥

उनका उत्तर देना कि इस विजय का उत्सव घर पर चलकर करना चाहिए ।

तवै सिंघ फुनि उच्चरिय । ऋहो सामंतन राज ॥
साह गह्यौ तुम्र जैत हुम्र । ग्रह करि मंगल काज ॥ छं० ॥ २७० ॥

यहां राव दाहिम के साथ सेना चन्द भट्ट और सामंतों को छोड़कर शुभ काम कीजिए ।

रहै ग्रप्प सेना सुसथ । ग्रह दाहिम्म सुराज ॥
भट्ट चंद सामंत सथ　करि सुभ मंगल काज[1] ॥ छं० ॥ २७१ ॥

वहां से लौट कर तब धन निकालना चाहिए ।

जनन लच्छि वर किज्जियै । रचौ सुभर ग्रप्पानि ॥
जब रच फिर दूरजिंद दून । तब कढ्ढे लच्छि ग्रानि[2] ॥ छं० ॥ २७२ ॥

पृथ्वीराज का दाहिम का मत मानकर दिल्ली चलना स्वीकार करना ।

गाथा ॥ कहि प्रथिराज नरिंदं । जु कक्कु कहै सिंघ दाहिमं ॥
सोइ थप्पिय द्रढ मंतं । चहि राजिंद ढिल्लि मग्गेयं[3] ॥ छं० ॥ २७३ ॥

फागुन सुदी तेरस को दिल्ली यात्रा करना ।

ढिल्ली मग्ग सु चलयं । फागुन सुदि त्रयोदसी दिवसं ॥
क्रमे सु दस दिन मग्गं । ग्रवरं रष्षि सब्ब भार तथ्यं ॥ छं० ॥ २७४ ॥

---

(१) मो०—करि चल दिल्ली साज ।
(२) मो० प्रति में "जब चांक दिल्ली सुने तब कढ्ढि लछिपान" ।
(३) ए० कृ० को०—मग्गार ।

रावल के साथ दाहिम आदि सरदारों और सेना को छोड़कर और कुछ सामंतों और सेना को लेकर दिल्ली यात्रा करना।

दूहा ॥ सकल सथ्थ रावर सुभर। अरु दाहिम गुर राज ॥
भट्ट चंद बर दाइ बर। आनि समंत सकाज ॥ छं० ॥ २७५ ॥

कवित्त ॥ बड़ सामंत सु काज। अचल पुंडीर मंच गुर ॥
राम रैन पावार। चंद चाहुंडि सेन वर ॥
रष्षि पास न्त्रप सिंघ। रचै थह लष्षि सुभट्टं ॥
और सकल सब सथ्थ। जुद्द जस लच्छन सुघट्टं ॥
ता मद्धि राज संबोधि थपि। सु गुर मंच बरदाइ थिर ॥
चढ़ि चल्ले राज दिल्ली दिसा। लै जद्द पज्जून भर ॥ छं० ॥ २७६ ॥

राव पज्जून, कन्ह आदि राजा के साथ चले।

दूहा ॥ जास देव पज्जून नर। बलि भद्र जैत अरु सिंग ॥
कन्ह काय चहुआन बर। चले राज गुर संग ॥ छं० ॥ २७७ ॥

शत्रु को जीत कर होलिका पूजन के निकट राजा चले।

अरिय जीति ग्रह दिसि चले। आइ निकट हूतास ॥
चलत पंथ राजंन नें। पूजा करनह जास ॥ छं० ॥ २७८ ॥

होलिका की पूजा विधि से करके ब्याह के लिए घर की ओर चले।

कवित्त ॥ निकट सुदिन हूतास। पूजि इन भंति राज नर ॥
चंदन कुमकुम अगर। नंषि श्रीफल असंष फर ॥
फिरि परदछिन राज। मानि बर बिप्र बेद धुर ॥
धुरै नद्द नीसांन। गांन नर नर्त्त नचै बर ॥
ज्वालनिय माल तृप्पय न्त्रपति। अति सुदेव नइवेद जुत ॥
दिन बीच चल्ले जोगिन पुरह। ग्रहिय मेछ संग्रहनि भति ॥ छं० ॥ २७९ ॥

कुमार का पैदल आध कोस आगे बढ़कर मिलना।

दूहा ॥ ग्रहिय साहि ग्रेह गवन। आइ मिले सुकुमार ॥
मधुसाह अध कोस पर। छंडि तुरिय पै पारि ॥ छं० ॥ २८० ॥

राजा का कुमार को सवार होने की आज्ञा देना।

चढन राज वर हुकुम दिय। रेत सुसंतहु साज ॥
छैन हुई आनंद करि। ग्रह जित्तन सुभ काज ॥ छं० ॥ २८१ ॥

चैत बदी सप्तमी को महलों में पहुंचे।

गाथा ॥ ग्रहन जित्त अरि ग्रविथं। चैत्र बदी सत्तमी दिवसं ॥
गुरुवारं सुभ जोगं। राजा संपत्त धवल सभक्षेनं ॥ छं० ॥ २८२ ॥

महल में सब स्त्रियों ने आकर निछावर किया।

आये राज सुधामं। गए ग्रह महि साल सुभ तथ्यं ॥
वोलि आइ सब वासं। निवछावरं करि गई ग्रेहं ॥ २८३ ॥

स्त्रियां अपने अपने घर गईं। राजा ने विश्राम किया और वे नाना भोग विलास कर सुखी हुए।

गई ग्रेह ते वीयं। राजन सुख विस्तसियं तथ्यं ॥
अति मादक उनमादं। करि सुष सेंन रमन रस क्रीडा ॥ छं ॥ २८४ ॥
दूहा ॥ क्रीड़ि मांम न्रप रंग करि। नेह संपूरन काज ॥
दीय वचन रष्पन सुजन। डोली साह सुराज ॥ छं० ॥ २८५ ॥

शहाबुद्दीन की डोली मंगाकर उसे भोजन कराया और आज्ञा दी कि इन्हें सुख से रक्खा जाय।

डोली साह सहाब की। दोइ रषेव वर सथ्य ॥
सो डोली कज दस असुर। करि हुकंम सर मथ्य ॥ छं० २८६ ॥
दस आदम साहाव कज। रषि भोजन न्रप पास ॥
सुष सचाव तुम रष्षियौ। रहै राज सुभ भास[1] ॥ छं० ॥ २८७ ॥

शाह के पकड़े जाने और दिल्ली पहुंचने का समाचार पाकर उसके अनुचरों का आतुर होना।

सुनिय बत्त गज्जन पुरह। ग्रहत साह की घत्त ॥
अनुचर आतुर अति भयौ। उर जानी अविगत्त ॥ छं० ॥ २८८ ॥

(१) ए-कृ-को-वास।

एक बीर ने दैाड़ आकर यह,समाचार तातार ख़ां का दिया।

डर जांनी अविगत्त जब। भजि आयै। भट मभ्भिक्ष॥
कायर चक्कि पानीय चढि। कचि ततार अग गुभ्भक्ष॥ छं० २८९॥

ततार ख़ां ने खत्री का तुरंत पत्र देकर दिल्ली भेजा कि आप बड़े भारी राजा हैं अब कृपा कर शाह को छोड़ दीजिए।

गाथा॥ सुनिय ततार सु तब्बं। रष्षनं तुक्क दिल्लीपुर राजं॥
षिची आतुर पठयं। बेगं साहि दंड कज्जेनं॥ छं०॥ २९०॥

दूहा॥ तुम जाहु सु चहुआन प्रति। कहु सलाम सब सथ्थ॥
तुम सु बडे हिंदून में। छुटै साहि सुभ बत्त॥ छं०॥ २९१॥
तब ततार अरदास लिषि। प्रति पठई राजान॥
तुम छंडो पतिसाह कैां। तुम सुं बडे चहुआन॥ छं०॥ २९२॥

खत्री का पांच सैा सवार लेकर दिल्ली की ओर चलना।

षिची चल्लि चहुआन पै। करिके सबन सलाम॥
पंच सत्त असवार लै। कोस सत्त मुक्कांम॥ छं०॥ २९३॥

खत्री शकुनों का विचार करता, बारह कोस नित्य चलता हुआ दिल्ली की ओर बढ़ा।

छंद पद्धरी॥ धर मग्ग चल्यौ षचीस हिंदु। अति चिंत सुरतान बंद॥
द्वादसह कोस प्रति चलै मग्ग। निज मंच दृष्ट चित बन सु लग्ग॥ छं०॥ २९४॥
अपसगुन सगुन चितै विचार। दिषि बाम सिंघ दिष्षो दवार॥
उल्लूक सबद दिय गिरह सीस। दाच्छिन सुपत्त म्रग म्रगी ईस॥ छं०॥ २९५॥
म्रतक रथी सनमुषह आइ। फुनि समुष ग्राम लग्गी स लाइ॥
अति उभ्भर षिषि आनंद जंग्ग। आतुरह चल्यौ दिल्ली समग्ग॥ छं०॥ २९६॥

खत्री लोरक का दिल्ली के पास पहुंचना।

कवित्त॥ तब षिची लोरक्क। चले दिल्ली पुर मग्गं॥
पंच सत्त असवार। उर सु चिंता मन भग्गं॥
वामी देव चवंत। तार उल्लूव सिर उप्परि॥
म्रग सम्मुह दाच्छिने। चल्यौ पहु पिंगी निक्कारि॥

बंदेव चित्त मन मत्त हुअ । चल्यौ कूच पर कूच धरि ॥
आए निकट दिल्ली सु तट । मन चिंता अंदेस हरि ॥ छं० ॥ २९७ ॥

लोरक खत्री का दिल्ली के फाटक पर एक बाग में ठहरना और वहीं भोजन करना ।

गाहा ॥ मन चिंता अंदेहं । षिची आइ दिल्ली मझ्झेनं ॥
अहनि सिरह मे क्रमियं । आयं डाक चौकि लोरष्षं ॥ छं० ॥ २९८ ॥
तहां उतरि लोरष्षं । बाग निरष्षि उत्तिमं ठाहं ॥
भोजन करि बहु भंतं । आहारे अन्न तथ्याहं ॥ छं० ॥ २९९ ॥

दो घड़ी दिन रहे दिल्ली में प्रवेश किया ।

दूहा ॥ दोइ घरी दिन पक्क रहि । चल्यौ दिल्ली पुर मांहि ॥
अति उज्जल वस्त्रंग वर । प्रावर षिचि उछाह ॥ छं० ॥ ३०० ॥

नगर में घुसते ही फूल की डाली लिए मालिन मिली । यह शुभ शकुन हुआ ।

नैर प्रवेस सगुन्न हुअ । मालनि फूल उछंग ॥
लिय वंदि षिची सुमन । मुक्कि मधुर सुभ नंग ॥ छं० ॥ ३०१ ॥

खत्री का पृथ्वीराज की सभा में पहुंचना ।

चलि षिची दरबार मग । जहां राज प्रथिराज ॥
अवर सूर सामंत सुभ । बैठे सभा विराज ॥ छं० ॥ ३०२ ॥

ड्योढ़ी पर से समाचार भिजवाया कि तातार खां का भेजा वकील आया है । राजा ने तुरंत साम्हने लाने की आज्ञा दी । लोरक ने दर्बार में आकर सलाम किया ।

कवित्त ॥ गय षिची दरबार । द्वार पालक सम अष्षिय ॥
कूरम केहरि कहीं । साहि उक्कील सुलष्षिय ॥
गय केहरि न्रप निकट । कह्यो गज्जन पुर दूतं ॥
पठयो षान ततार । साथ कंडावन बत्तं ॥
न्रप बोलि कह्यौ हज्जूर लिहि । एका एकी मध्य लिय ॥
सनमुष्ष आइ चहुवान को । सीस नाइ तसलीम किय ॥ ३०३ ॥

सभा में बैठे सामंतों का वर्णन। राजा की आज्ञा से लोरक का सलाम कर के बैठना॥

कवित्त॥ सभा विराजत राज। आइ बैठे सुब्बर भर॥
कन्ह आइ चहुवांन। जैत बलिभद्र सिंघ नर॥
जांम देव पज्जून। बड़े सामंत सज्जभर॥
और सकल भर राज। बैठि तहां मधुत्त रंग जुरि॥
आए सुनांम लोरक्क तब। मिलि सलाम राजन करिय॥
बैठन हुकुम राजांन किय। करि सलांम बैठो नरिय॥ छं०॥ ३०४॥

लोरक ने तीन सलाम करके तातार खां की अर्ज़ी राजा को दी।

दूहा॥ तब पिथी प्रथिराज कों। करि सलांम तिय वार॥
लिषि अरदास ततारषां। समपी बीर विचार॥ छं०॥ ३०५॥

मद्धु शाह प्रधान को पत्र दिया कि पढ़ो।

मधू साह परधांन कर। दिय पत्री षचीस॥
किय हुकम्म बर राज नें। बंचे साह जगीस[1]॥ छं०॥ ३०६॥

तत्तार खां की अर्ज़ी में शहाबुद्दीन के छोड़े जाने की प्रार्थना।

साटक॥ स्वस्ति श्री राजंग राजन बरं धर्म्मोधि धर्मं गुरं॥
इंद्रप्रस्त सु इंद्र इंद्र समयं राजं गुरं वर्त्तते॥
अरदासं तत्तार षांन लिषियं सुरतांन मोचं करं॥
तुम बड्डे बड्डाइ राजन सुरं राजाधिपो राजनं॥ छं०॥ ३०७॥

राजा ने अर्ज़ी सुनकर हँस दिया और खत्री को विदा किया।

दूहा॥ तब पिथी अरदास किय। बंचि सुनाइबर[2] राज॥
तब राजंन प्रसन्न हुअ। दई सीष षत्र काज॥ छं०॥ ३०८॥
उठि राजन दीने बहुरि। षत्र पिथी गय अप्प॥
मन चिंता लग्गी घनी। राजन देषन तप्प॥ छं०॥ ३०९॥

(१) ए.-कृ.-को.-गुहीर। (२) मो.-कृ.-को.-ए.-बर।

दूसरे दिन लोरक फिर दर्बार में आया ।

कछुरि सु आए दिन अवर । मिलि राजन किय वत्त ॥
सुंमुष राजन उच्चरिय । मन सु अगोचर तत्त ॥ छं० ॥ ३१० ॥

लोरक का पृथ्वीराज की बड़ाई करके शाह को छोड़ने की प्रार्थना करना । पृथ्वीराज का पूछना कि गोरी नाम क्यों पड़ा ?

छंद पद्धरी॥ पचीस वेंन सम अप्पि राज । चहुवांन वंस तुम हिंदुलाज ॥
चौनैार स्वांमि कै संभरेस । चालुक्क राज जिहि पग्ग पेस ॥ छं० ॥ ३११ ॥
कामधज्ज संगि तिहि व्याहि अप्प । जैचंद उरद्धि[1] दिय अनुज नप्प[2] ॥
कइ वार साहि वंधयौ पांन । दीनो केवार जिहि जीव दांन ॥ छं० ॥ ३१२ ॥
तब लोरक सम[3] पुछै नरेस । गोरी सु नांम किहि विधि कहेस ॥
सम राज अप्पि पची निवार । न्रप राज एह अदभुत विचार ॥ छं० ॥ ३१३ ॥

लोरक का इतिहास कहना कि असुरों के राज्य पर शाह जलालुद्दीन बैठा, वह बड़ा कामी था । पांच सौ दस उसके हरम थीं पर संतान न हुआ, तब शाह निजाम की टहल करने लगा ।

कवित्त ॥ बैठि पाट असुरांन । साह जल्लाल प्रमानं ॥
अनँन तेज पग ताप । अनँन दातार दिशानं ॥
पंच सत्त दस हरम । साह कामी तप भारी ॥
हमस हरम निज जांनि । *हनै कर असि बर नारी ॥
सुत ताप राज डरतैं गहन । कांम पैर निसि साह मन ॥
सुरतांन पैर अग्गैं धरिग । सेष निजांम सु हुअ प्रसन ॥ छं० ॥ ३१४ ॥

शेख निजामुद्दीन ने प्रसन्न होकर आशिर्वाद दिया कि तुम्हें

(१) को०—क०—ए०—तुअर । (२) क०—ए०—नाय ।
(३) मो०—समह ।
* मो०—प्रति में "हनै कर बर कर नारी" पाठ है ।

ऐसा प्रतापी बेटा होगा कि चारों ओर असुरों का राज्य फैलावेगा और हिन्दुओं को जीत दिल्ली पर तपैगा।

प्रसंन निजांम सुखेषं[1]। खेष सांई इमखेषं॥
अहो सांह जहांन। आवि तुझ समथ सदष्षं॥
महा प्रबल तप तीन। दीन हिंदू दल[2] आलम॥
धरि करिहै निज पांन। जोर जुग्गिनि पुर जालम॥
अज्जाव नारि तिहि पाप तें। असुध कित्ति दुनियां रहै॥
दस दिसा दप्प असुरांन दल। लिहि लिलाट नित्तौ लहै॥ छं०॥ ३१५॥

शाह घर आया। चित्त में चिन्ता हुई कि जो यह लड़का ऐसा प्रतापी होगा तो मुझे मार कर राज्य लेगा। इतने ही में एक बेगम को गर्भ रहने का समाचार मिला। शाह ने सिर ठोका और उस बेगम को निकाल दिया। पांच वर्ष बीते शाह मर गया, वजीर लोग सोच में पड़े किसे गद्दी पर बैठावें। एक शेख ने गोर में रहने वाले एक सुन्दर बालक को दिखलाया।

छंद विअक्खरी॥ आयो निज सुरतानह गेहं। बेन निजाम उभर दुष लेहं॥
जौ मुझ सुन ह्वैहै बल कारो। तौ मुझ मारि लेइ धर सारी॥ छं०॥ ३१६॥
तितें नारि इक ग्रभह धरयौ। दासी कांन साह अनुसरयौ॥
ततष्षिन साह सीस हनि नारी। समह गरभ धर मंड[3] सुधारी॥ छं०॥ ३१७॥
बरष पंच अनि ऊपर बीतं। हुअं साह सुरतान सुअतं॥
सबै षांन मिलि मंत विचारं। कवन सीस अब छत्र सुधारं॥ छं०॥ ३१८॥
सेष एक मधि गोर निवासी। तिहि अदभुत रस दिष्षि प्रकासी॥
अ.ष्षिय आइ जहां मिलि षानं। कुदरति[4] कथा एक परमानं॥ छं०॥ ३१९॥
झूठी होइ तौ सजा लहीजै। सची हूऔ निवाजस कीजै॥
सबै षांन मिलि पूछै बत्तं। कहिवे सेष सु क्या कुदरत्तं॥ छं०॥ ३२०॥

[१] मो०—प्रसंनि कानि हंसेव। [२] ए०—कृ०—को०—बलि।
[३] मो०—मंडह। [४] ए०—कृ०—को०—कुद्दरति।

बीबी फतेसाह की घरनी । कुदरति गोर मद्धि एक धरनी ॥
गोरि मद्धि इक चेलक वासं । देष सरूप कोटि रवि भासं ॥ छं० ॥३२१॥
सबै षांन मषि गोर सिधाए । करि अंगुरी तिहि सेष दिषाए ॥ छं० ॥३२२ ॥

उस बालक का प्रताप सूर्य के समान चमकता दिखाई दिया ।

दूहा ॥ गोरि दिखाई षांन तिहि । ततषिन भंजी पाज ॥
निकस्यौ सूरति सरस कै । जोति भांन मदराज ॥ छं० ॥ ३२३ ॥

ज्योतिषी को बुलाकर जन्मपत्र बनवाया उसने कहा कि यह जलालुद्दीन से भी बढ़कर प्रतापी होगा । इस की जाति गोरी है । यह हिन्दुस्तान पर राज्य करेगा ।

कवित्त ॥ जोति रूप मदराज । साहतें प्रगट सवायौ ॥
षांना षांन जिहान । वेगि निज्जूमि बुलायौ ॥
लिषिय जनम तिय लेष । सेष तत षिन इम अष्यौ ॥
नाम साह साहाव । जाति गोरी तिहि दष्यौ ॥
बहुतेज तपन तप जग्गि है । धरा हिंद सम लग्गि है ॥
दस दिसा साह दौही फिरै । घन वीरा रस भुग्गि है ॥ छं० ॥ ३२४ ॥

लोरक ने शाह की पूर्व कथा इस प्रकार कह सुनाई ।

दूहा ॥ जातें बहु दिन भग्गि है । फुनि तिहि गहि है पांनि ॥
पुब्ब कथा षित्री कहै । सुनहु राज चहुआंन ॥ छं० ॥ ३२५ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि शाह के पास एक महा बलवान शृङ्गारहार नाम का हाथी है उसको शाह बहुत चाहता है । उसको और तीस हजार उत्तम घोड़े दो तो शाह छूटे ।

कवित्त ॥ तब सुराज प्रथिराज । कहै षित्री सुनि वत्तं ॥
हम आयस गति कहैं । सोइ मानै करि सत्तं ॥
गज सु एक सिंघली । नाम श्रृंगारहार गज ॥
अति पीय साह साहाव । लषै निसि दिन आसम सुज ॥

अप्पौ सु सोहि वह डंड करि। तीस सहस हय नेक वल॥
छुट्टै जु साहि सावाव नव। हम तुम रहै सु प्रेम भल॥ छं०॥ ३२६॥

खत्री ने कहा कि जो आप मांगेंगे वही दूंगा पर शाह छूटना चाहिए।

दूहा। तव विची हम उच्चरै। सुनौ राज प्रथुराज॥
जो मंगो सो देउ तुम। छुटै साहि वर आज॥ छं०॥ ३२७॥

पत्र लिखकर दूत को दिया कि जो इकरार हुआ है वह भेजो।

थपि वत्त दुह पच लिषि। दियौ दूत के हथ्थ॥
जो कछु किधौ करार कर। सो पठवो तुम अथ्थ॥ छं०॥ ३२८॥

पत्र पाते तातार खां ने हाथी घोड़े भेज दिए जो दस दिन में रात दिन चलकर पहुंचे।

तव ततार षां मुक्कि दिय। रजत हयग्गय नंग॥
अहि निस आतुर आइवर। उभय सु दस दिन संग॥ छं०॥ ३२९॥

दण्ड पाने पर सुलतान को छोड़ देना।

कवित्त॥ दिय सु दंड सुरतांन। गय सु इक्कति पंचह हय॥
औराकी वर उंच। उभय पष्षैं सु निरम्मय॥
नाम पह श्रृंगार। सह रिति मह पह भार॥
अलि गुंजत मकरंद। वास भज्जंत अवर डर॥
है सहस तीस अति साज भल। दिय सु दंड सुरतान तय॥
मुक्यौ सु राज प्रथिराज तव। चल्यौ साह गज्जन पुरय॥ छं०॥ ३३०॥

सुलतान का ग़ज़नी पहुंचकर अपने उमरावों से मिलना।

दूहा॥ चल्यौ मेच्छ गज्जन पुरय। दै सुदंड प्रति पिथ्थ॥
मिलिय उम्मरा अप्पने। करिय वैर सम सथ्थ॥ छं०॥ ३३१॥

शाह के महल में आने पर तातार खां खुरासान खां का बड़ा आनन्द मनाना।

गयौ साहि आवस महल। करी वैर वर अप्प॥
मिलि ततार षुरसांन षां। बड़ वपत्त मिलि तप्प॥ छं०॥ ३३२॥

पृथ्वीराज का शृङ्गारहार को सामने रखना। हाथी की बड़ाई और राजा की सवारी की शोभा का वर्णन।

कवित्त ॥ वद्द सु पट्ट स्रंगार । मत्त गज राज पटा भर ॥
रष्षै नरिंद सुष अग्ग । रास रेसंम फंद पर ॥
जव राजन चढ़ि चल्लै । तवहि सुष अग्ग निरष्षै ॥
जे अनंत गज प्रवल्ल । ते सु प्रंमल सव षष्षै ॥
जब चढ़ै राज टामंक करि । तव अजव्व सोभा लहै ॥
आतस चरित्त अद्भूत लिषि । दुअ कपोल वूंदन वहै ॥ छं० ॥ २३३ ॥

हाथी के रूप और गुणों का वर्णन।

कवित्त ॥ सत्त हथ्थ जरह । हथ्थ नव देह सँवाहय ॥
दस हथ्थां परिमांन । पीठ छत्ती गिर दाहय ॥
भद्र जात उतपंन: दुरह्ह हद पाट स्रंगारं ॥
जो शवर कहि चंद । कोट गढ़ ढाहन वारं ॥
च्यालीस कोस चालंत मग । लियें लोह च्यालीस मन ॥
दिन प्रति गुलाल थानं करज । संभारैं डारंत घन* ॥ छं० ॥ ३३४ ॥

सब सामंतों को साथ ले एक दिन शिकार के लिये राजा का जाना। वहां कन्ह चैाहान का आना।

एक सुदिन राजन्न । चढिय सिक्कार प्रपत्ते ॥
और सकल सामंत । जाइ सथ पच्छ मिलंते ॥
उत्त सहस असवार । मिले सुष राज सुरत्ते ॥
जांम देव पज्जून । मान मरदन मरदत्ते ॥
सिंघल पवार सुभ सथ्थ लहैं । जैत राव वलिभद्र सम ॥
चहुआन कन्ह नर नाह वर । आतुर चरि आयेव स्रम ॥ छं० ॥ ३३५ ॥
गाथा ॥ परि कार सकल सिकारं । लीने सब राजनं राजं ॥
अवर सूर सामंतं । धरियं साज अप्प सा काजं ॥ छं० ॥ ३३६ ॥

एक अनुचर का आकर एक सूअर के निकलने का समाचार देना।

* छन्द ३३४ मो० प्रति में नहीं है।

दूहा ॥ तब प्रथिराज नरिंद प्रति । कही सु अनुचर एक ॥
सुभ वराह एकल प्रबल । कही षबरि सु बिबेक ॥ छं० ॥ ३३७ ॥

राजा का आज्ञा देना कि उसे रोको भागने न पावे ।

तब प्रथिराज सु उच्चरिय । अरे सिकारी स्राज ॥
मति एकल बन जाइ भजि । करि रोकन को साज ॥ छं० ॥ ३३८ ॥

चारों ओर से नाका रोक कर सूअर को खदेरना और उसके निकलने पर राजा का तीर मारना ।

कवित्त ॥ एक दिसा कूकरह । एक दिसि ब्रलह धारिय ॥
एक दिसा षेदा अनंग । एक दिसि औेर प्रचारिय ॥
एक दिसा राजंग । एक दिसि अनि अनुचारिय ॥
एक दिसा सामंत । एक बहु भांतिय तारिय ॥
यौं ब्यौंत सब्ब राजन करिय । चक्कि सोर उच्चारि भर ॥
निकसंत सु सूकर अप्प रह । चने तीर षंचे सु कर ॥ छं० ॥ ३३९ ॥

सूअर का मरना सरदारों का राजा की बड़ाई करना ।

दूहा ॥ सरौ बांन वाराह उर । पर्यौ षेत धर मुच्छि ॥
मिले सकल सामंत तब । कही सबन धन[1] अच्छि ॥ छं० ॥ ३४० ॥

बड़े आनन्द से राजा राज को लौटता था कि एक पारधी ने एक शेर निकलने का समाचार दिया ।

घन अनंद राजन भरिय । चल्यौ राज चढ़ि बाज ॥
तब सु एक पारधि कही । नाहर घात सु राज ॥ छं० ॥ ३४१ ॥

राजा का आज्ञा देना कि बिना इसको मारे तो न चलेंगे ।

तब सुराज से मुष्ष कहि । सुनौ सबै प्रति सूर ॥
बिन सुघान अप्पार मैं । आन राज ढूँढ़ नूर ॥ छं० ॥ ३४२ ॥

एक नदी के किनारे वृषभ को मारकर सिंह खाता था राजा ने पारधी को आज्ञा दी कि तुम उसको हांको ।

(१) मो०—धरिकार ।

कवित्त ॥ नदि सु एक जल विंदु । तहं सु एकन्त सुभ कोहर ॥
वहु तर वर जल छीन । थान सोभंत मनोहर ॥
ता नीचै केहरी । धनिव इक इपभ ऋहारै ॥
अनि ऋरिष्ट ऋामून । कोइन पग लग संचारै ॥
उचरे राज दिल्ली धनिय । पारद्धी एक्कौ तुमैं ॥
बड़ सुभट ऋांन सोमेस की । विन ऋग्या घातन रमै ॥ छं० ॥ ३४३ ॥

राजा का शृङ्गारहार गज पर चढ़कर सिंह को मारने चलना और सिंह को हंकारने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ तव सु राज प्रथिराज । पाट श्रृंगार मंगि गज ॥
वड पष्पर[1] तन रक्खि । दंति कट्टारि बंधि सज ॥
उभय पष्प ऋसवार । गिरद रष्पे करि राजन ॥
तीरंदाज ऋभूत । छ्त्त रष्पे करि ताजन ॥
सें सुष्प राज यों उच्चरे । हक्कारौ केहरि सकल ॥
सा वचन सुनत करि कूच भर । गज्ज सु केहरि ऋप्प वल ॥ छं० ॥३४४॥

कोलाहल सुन सिंह का क्रोधकर निकलना । राजा का तीर मारना और तीर का पार हो जाना । कूरम्भ का बढ़ कर तलवार से दो टूक कर डालना । सब का प्रशंसा करना ।

निसांनी ॥ सुने गहव्वह केहरी उट्ठो हक्कारे ।
कंपि थरहर मेदिनी गल्हन गल्हारे ॥
कोहक काल ऋभून कैं पचायन भारे ।
गात सु दीरघ हथ्थ गुर जीहा जक भारे[2] ॥ छं० ॥ ३४५ ॥
नष तिष्पा गिर वज्ज कै पुंछन तिष्पारे ।
कंध सु जड्डा केहरी नेनां ज्यों तारे ॥
दिष्षौ मरद महाबली कंधा उप्पारे ।
गज्जत गज्जत ऋाइया ऋरियन कें थारे ॥ छं० ॥ ३४६ ॥

(१) ए॰ क॰ को॰—घत । (२) मो॰—जीहा झक झारे ।

सिंघ सु सम्हा चल्लिया गजराज संभारे।
तब राजन गज चंपिया छैंवर टट टारे॥
नीर सनंमुष नंषिया कोइ लग्गै न्यारे।
नेरों आयौ जैत राव सिंगनि उभ्भारे॥ छं०॥ ३४७॥
छोड़े कोह सु चल्लिया नाहर ललकारे।
पारधि एकैं चंपिया दृष्यल पक्कारे॥
राज कमान सु षंचि कर तरीन तिष्षारे।
फूटि दुबा सुवार पार गल्लन जिभ्भारे॥ छं०॥ ३४८॥
करिचै तत्ता कूरंभ भुक्या असि भ्झारे।
बाहे बब्बर बीचल्लै द्वै टूक निनारे॥
मनों सबन बिच सुभ्भि थाळि तंतू सारे।
भञ्च भञ्च सब सेना कचै कूरंभ करारे॥ छं०॥ ३४९॥
घनि माता अरु धनि पिता पञ्जून पचारे॥ छं०॥ ३५०॥

राजा के शिकार करने पर बाजे बजने लगे।

दूहा॥ घन सिकार राजन करिय। चनि बराह अनि थट्ट॥
बाजे बज्जन सुबर[1] बजि। करि राजन पहु पट्ट॥ छं०॥ ३५१॥

सब सरदारों में शिकार बँटवा दिया।

चनि सिकार बाराह बर। दीए सब सामंत॥
बंटि सु दीनौ अवर भर। करि उच्छाह अनंत॥ छं०॥ ३५२॥

राजा का दिल्ली लौटना, कवि चन्द का आकर फूलों की वर्षा करना।

कवित्त॥ तब प्रथिराज नरिंद। आइ दिल्ली पुर मझ्झं॥
अप्प चिंत बर अवर। बैठि सिंघासन रज्जं॥
अवर सूर सामंत। सकल सभ्भा भर मंडे॥
तब सु चंद बरदाइ। आइ कुसुमावलि छंडे॥
बैठे सु सबनि उच्चार करि। सुनिय गान गायन सकल॥
दिल्लीय नैर दिल्लीय पति। करि अनंद दंडे सुषल॥ छं०॥ ३५३॥

(१) मो०—सुरस।

राजा का गुरु से धन निकालने चलने का मुहूर्त पूछना।

दूहा ॥ एक सुदिन देवंग सों। बोलिय राज नरिंद ॥
देउ सुहूरत दुज सु गुर। जिहि चम करैं अनंद ॥ छं० ॥ ३५४ ॥

राजगुरु का बैसाष सुदी तीज के मुहूर्त निकालना।

तव दुजराज सु उच्चरिय। सुनि सामंत सु नाथ ॥
सेत चतिय बैसाष दिन। सुभ दिन चनैा समाथ ॥ छं० ॥ ३५५ ॥
सुभ सँजोग चंतर घरी। कहन वचन देवगिन ॥
सोइ सुदिन आनंद करि। चल्लो सुराज गुनग्गिन ॥ छं० ॥ ३५६ ॥

पृथ्वीराज का मुहूर्त पर धूमधाम से यात्रा करना।

कवित्त ॥ चढिय राज सुभ जोग। करि सुमंगल अनंद गुर[१] ॥
दै सु विप्र धन चंड। दीन चनि दान लोक कर ॥
वढि सामंत रु सूर। करै उच्छव उमत्त पर ॥
बजन नद्द नीसान। चवै जै जया देव नर ॥
सेनच सु सथ्य चै पंच सथ। नैर निकरि बाहिर चले ॥
मत्तच सुक्कक कुक्कान घट। भरि वाहन मै मग मिले ॥ छं० ॥ ३५७ ॥

एक वेश्या का शृङ्गार किए मिलना। राजा का शुभ शकुन मानना।

दूहा ॥ नैरनाइका एक चलि। तन आभ्रन अलंकि ॥
देखि निपति रद सिर मिल्ले। दुच्च आनंद असंकि ॥ छं० ॥ ३५८ ॥

रात दिन कूच करते हुए राजा का चलना।

गज राजन द्वादस रहे। सुभ सँजोग सुभ साथ ॥
करिग कूक उतिम प्रचर। षडि ससकर प्रथि माथ ॥ छं० ॥ ३५९ ॥
कूच कूच राजन चल्ले। सथ सामंत अभंग ॥
पंच सत्त असवार संग। षडि मिलि सावंत संग ॥ छं० ॥ ३६० ॥

रावल और सामंतों तथा सेना का आगे बढ़कर राजा से मिलना।

(१) मो.—गुर।

दीह निसा चहुआंन चलि। आइ अचानक राज॥
तब जानी जब दिष्षि न्रप। मिलि सब सेन समाज॥ छं०॥ ३६१॥

सब सरदारों और रावल के मिलने से बड़ी प्रसन्नता का होना।

कवित्त॥ मिले सुभर अप्पान। जांनि आतुर चढि राजं॥
चाहुलि रा पुंडीर। अचल चौहान सु साजं॥
राम रेंन पावार। सु गुर गुरराज समाजं॥
अवर सुभर सामंत। बहुत परिकर सम राजं॥
इत्तने आइ सब बैठि मिलि। तब जानी जब दिष्षि न्रप॥
सुनि बेंनि षबरि आतुर तुरत। मन प्रमोद आनंद वप॥ छं०॥ ३६२॥

गाथा॥ आतुर षढि[1] राजानं। मिलियं सेना सु अप्प भर मग्गं॥
हुअ आनंद अपारं। मिलियं सिंघ राज सामंतं॥ छं०॥ ३६३॥

रावल से मिलकर राजा का प्रेम पूर्वक शिकार और शाह के दण्ड का समाचार कहना।

कवित्त॥ मिले राज वर सिंघ। प्रेम पूरन राजन भर॥
घरी दोइ बैठे सुतथ। बत्त सिकार कहिय गुर॥
अरु सु दंड पतिसाह। कत्य कारन कहि राजन॥
सुनि हर्षिस्सह चंद। सुभट[2] सब कही सभा जन॥
चल राज सिंघ प्रति सब कही। अरु कछुन लछी गचिय॥
आयौ सु राज थह अप्पनै। एक निसा राजन रचिय॥ छं०॥ ३६४॥

शाह के पकड़ने और दण्ड देकर छोड़ने आदि का सविस्तार समाचार कहने पर बड़ा आनन्द उत्साह होना।

कवित्त॥ बजि नरिंद जय पत्त। बीय बज्जा घन बज्जै॥
ताइप घर गजराज। राज दरबारन गज्जै॥
चामर छच रषत्त। तषत कीनौ सुरतानी॥
उत्तर वै साचाव। गयौ मुलतानह पानी॥
छंडयौ छच सुरतांन सिर। राज छच सिर मंडयौ॥
बाजंत नद्द नीसान घन। बंधि साह दंडि छंडयौ॥ छं०॥ ३६५॥

(१) ए० कृ० को०—षरि। (२) ए०—सुनि।

गाथा ॥ जित्ते वज्जन वज्जं । सज्जे सेन सब सुभट्टायं ॥
सुट्टे षेत सु सूरं । उष्पारियं कोक सुभट्टायं ॥ छं० ॥ ३६६ ॥

राजा का गुप्त से लक्ष्मी निकालने के विषय में ऋषिष्ठों का प्रश्न करना ।

कवित्त ॥ वर बंध्यौ सुरतान । लच्छि कढ्ढन क्रम दिन्ना ॥
भई षबरि कै मास । राज अग्गै होय खिन्ना ॥
सत्त मंत जोतिगी[1] । सब्ब जोतिग उच्चारै ॥
द्रिष्टि राह ग्रह दुष्ट । मंच अंचह वर टारै[2] ॥
पुच्छौ वीर चहुआंन तब । घन अरिष्ट गुन संभवै ॥
लच्छिय लच्छि अह बंचि विधि । तब बचि मंतन सुच्चवै ॥ छं० ॥ ३६७ ॥

धन निकालने के विषय में राजा ने कैमास को बुलाकर परामर्श किया। कैमास ने कहा कि मैं चौहानों की पूर्व कथा सब जानता हूं, आप को देवी का वर है यह निश्चय जानिए। इस धन के निकालने के समय देव प्रगट होगा, उससे लोग डर कर भागेंगे।

कवित्त ॥ धन कढ्ढन चहुआंन । बोलि कैमासह पुच्छिय ॥
बहु अदभुत जस सुन्यौ । आइ कढ्ढन वर लच्छिय ॥
पुब्ब कथा चहुआंन । हों जु आगम सब जानो ॥
देवी सुर वरदाई । कहों सु उर अंतर आनो ॥
अदभुत वत्त धन निक्करत । होइ वीर दानव जगे ॥
सो सूर धीर धीरज्ज जिय । ढंडिय सत्त कादर भगे ॥ छं० ॥ ३६८ ॥

पृथ्वीराज शिकार खेलते खट्टू वन में चले वहां एक पत्थर का शिलालेख कैमास को दिखलाई दिया।

दूहा ॥ सो षट्टू रहे थांन वर । द्रव्य अजै जै राज ॥
ता देषन चहुआन फिरि । गौ आषेट बिराज ॥ छं० ॥ ३६९ ॥

(१) मो०--जोतिषी ।　　(२) मो०--वर टारै ।

उस शिलालेख को देखकर सब प्रसन्न हुए और आशा बँधी।

अति आदर आखेट न्रप। पति पुर बहू पास॥
पाहन एक पखाल सें। संपेष्यो कैमास॥ छं०॥ ३७०॥

कवित्त॥ संपेष्यो कैमास। आस बंधी मन संती॥
ज्यों बाल चंद निसि करक। मकर दिन मास बसंती॥
यों उदित न्रप सेव। सेव न्रप सेव सुमंती॥
ज्यों कन कलंक लगि अंक। सुवर बर बीर असंती॥
बच क्रम्म क्रोध अम्मर अरस। सुमन वास ज्यौं बायवर॥
लछिनह लछि ग्रह बंचि चित। हुवर बीर तत्तह सुनर॥ छं०॥३७१॥

कैमास उस बीजक को पढ़ने लगा।

दूहा॥ मंत्री न्रप सामंत सम। परी सु पाहन पास॥
रास थंभ जनु ग्वाल लिखि। लगि बंचन कैमास॥ छं०॥ ३७२॥
अरध अंगुल सठ चिसठ। तीर काहन चवसट्ठि॥
तहां अक्कर लिख्यौ सु इम। सरमै द्रव्य अनिट्ठ॥ छं०॥ ३७३॥
अरि प्रसंक अंगुल भरिग। तिय अंगुल सत[1] अंक॥
अंगुल अंगुल अंक सें। एकादसौ प्रसंक॥ छं०॥ ३७४॥
भवनव्यह जो दुज लषै। घरी दोय पल मास॥
हृदय क्रोध ज्यों द्रिग लषै। त्यों लष्यौ कैमास॥ छं०॥ ३७५॥

उसे पढ़कर उसी के प्रमाण से नाप कर खोदवाना आरम्भ किया।

बंचि उचारि सुमंत निधि। सरमय[2] मष्यिय बांच॥
मंडि सु अंगुल बिगुंनह। द्रव्य निरत्तिय नाच॥ छं०॥ ३७६॥

दुष्ट ग्रह और अरिष्ट दूर करने के लिये रावल समरसिंह पूजा करने लगे।

ग्रह सु दुष्ट दूरी करन। धनं अरिष्ट न्रप जोर॥
सोइ पूजा क्रत चित पति। तिन पर बज्जन घोर॥ छं०॥ ३७७॥

(१) मो०—छह। (२) मो०—सरमै।

चन्द यह पहिले ही कह चुका था कि व्यास जगजोति कह गए हैं कि पृथ्वीराज सब अरिष्टों को दूर करके नागौर वन के धन को पावेंगे ।

पहिलै अष्षिय चंद वर । कष्षिय व्यास जग जोति ॥
वीर सघन नागौर धन । * सभ अरिष्ट प्रथु होत ॥ छं० ॥ ३७८ ॥

राजा ने रावल से कहा कि अरिष्ट दूर करने के लिये पूजा करनी चाहिए, रावल ने उत्तर दिया मैं पहिले ही से पूजा कर रहा हूं ।

कवित्त ॥ पुछि राजा गुर सिंघ । सु गुरु देवगिन सत्ति पति ॥
धन अरिष्ट गुन होइ । तास मेटन्न रचौ मति ॥
होइ सुभ काज सु राज । सुजस संग्रहौ सक्क भति ॥
सुर सुकाज सुद्धरै । अप्प उद्धरत कज्ज गति ॥
बुल्लिय सु राज सम चिच पति । तुम कारन पुज्जौ सुग्रघ ॥
आरिष्ट सु गुन दूरी करन । या मंगल कज्जै सुबंद ॥ छं० ॥ ३७९ ॥

तब चन्द को बुलाया, उसने कहा कि आप लक्ष्मी निकालिए, जो ध्रुव हो चुका है उसे मिटाने वाला कौन है ।

गाथा ॥ बुल्लिय भट्ट सु चंदं । हो राजन लच्छि कढ्ढिज्जै ॥
ज्यों बंध्यौ निरमांन । मेटन कवन होइ विधि पषं ॥ छं० ॥ ३८० ॥

रात को सब सामंतों को रखकर रखवाली करो ।

दूहा ॥ थांन निरष्षिय राज वदि । अछिर द्रव्य सु अछ ॥
सुबर सूर सामंत मिलि । निसि सथ रष्षा अछ ॥ छं० ॥ ३८१ ॥

कुछ सरदार साथ रहे कुछ सोए । सवेरे वह स्थान खोदा गया, वहां एक पुरुष की मूर्त्ति निकली उस पर कुछ अक्षर खुदे थे, उनको कैमास ने पढ़ा ।

कवित्त ॥ सथ्थ तथ्थ निसि रष्षि । दीन धासन प्रष थानष ॥
अवर सब्ब सामंत । कीन पारस विस्रामष ॥

* मो०—प्रति में "लभहिं अरिष्टं होत" पाठ है ।

रैनि मध्य बिन चंद। जगे सामंत स्वामि तँह ॥
नीद सयन हुच सथ्य। घनिय सम द्रब्य राज यह ॥
पोर्दन पुरष इक्कह प्रगट। सिलह धत्त सत्तह सुमय ॥
नहि सकय चंक लिख्यौ सुपर। बंचि राज कैमास तथ ॥ छं० ॥ ३८२ ॥

उस पर लिखा था कि हे सूर सामंत सब सुनो जो मुझे देखकर तुम न हँसो तो पाखान को देखो (?)

दूहा ॥ सुनो सूर सामंत सब। सु हृदय सकल सजान ॥
जो न चसौ मुचि ववर[1] कोइ। तौ दिष्यौ पाषान ॥ छं० ॥ ३८३ ॥

सब लोग कैमास की बड़ाई करने लगे।

न्याय नाम कैमास तुअ। दुअ दीनौ सुहाइ ॥
ज्यों बेली फल आरतें। न्याइन मैं सुस्याइ ॥ छं० ॥ ३८४ ॥

शुभ मुहूर्त आतेही कमान की मूठ में ताली थी वह देखी (?)

अथौ समय इमरत्तरी। ज्यों वय संधि सुवाल ॥
मध्य सुद्रि कमान की। रची रत्ति तिन ताल ॥ छं० ॥ ३८५ ॥

उसे शस्त्र से तोड़ते ही एक बड़ा भारी सर्प दिखलाई पड़ा जिसे देख सब भागे।

तब दिष्यो षच थांन तिन। सस्त्र ऊनी छिति भंजि ॥
अप सु दिष्यो चव सुबल। रहे दूरि सब भज्जि ॥ छं० ॥ ३८६ ॥

विक्रम संवत ग्यारह सौ अड़तीस को सोमेश्वर के बेटे पृथ्वीराज ने असंख्य धन पाया।

साक सुविक्रम इक्क दह। तीसह अट्ठ संपत्त ॥
चहुआनां न्रप सोम सुच। लभ्भि वित्त अनमित्त ॥ छं० ॥ ३८७ ॥

चन्द ने मन्त्र से कीलकर सर्प को पकड़ लिया तब धन देखने लगे।

(१) ए० कृ० को०—सकल।

अप्प मंच बंध्यौ सु कवि । द्रव्य निरष्यौ जाइ ॥
चिहूं दिसा जौ देखिये । दिष्ट न आवे ठाइ ॥ छं० ॥ ३८८ ॥

कवित्त ॥ दिप्पौ जीयउ प्रमांन । मध्य राजा रघुवंसिय ॥
वाचन सोसन पुत्त । नांन अग्यान न गंसिय ॥
दुष्ट देइ दिन मान । राज अग्या सुन मांनै ॥
सोक अग्गि तन दभ्भ । गयौ सुरलोक निथांनै ॥
रचि मंच जंच पुत्तलि करिय । होम दिष्ट दानव जष्षिय ॥
चिंतै सु चित्त कविचंद तहं । करयि वात इह चम भष्षिय ॥ ३८९ ॥

चन्द की बात मानकर धन निकालने के लिये स्वयं राजा वहां आए ।

गाथा ॥ ग्रह धरदाइय वत्तं । कहन लष्षि भयं क्रमयं ॥
तुछ अंतर भर सेनं । आप लष्षि ठाइयं राजं ॥ छं० ॥ ३९० ॥

राजा ने आज्ञा दी कि इस शिला का सिर काटकर धन निकालो ।

दूहा ॥ थह आए वर राज धर । दिय हुकम्म सिल कढि ॥
हुअ हुकम्म राजंन कौ । कढै सिला सिर कढि ॥ छं० ॥ ३९१ ॥

शिला काटकर भूमि खोदने की आज्ञा दी कि इतने में पृथ्वी कांपने लगी ।

कढि सीस सिल कढ्ढि करि । दियौ बचन षोदान ॥
तब सु कंपि भुम्म धर धरिय । चांक सुनी न्रप कान ॥ छं० ॥ ३९२ ॥

शस्त्र की नोक से तीस अंगुल मोटा, बारह अंगुल ऊँचा खोदा तब ख़ज़ाने का मुंह खुल गया ।

कवित्त ॥ सस्त्र अनी छिति षनी । सेन सुत्तौ चावद्दिसि ॥
सपत धात पाषांन । तीस अंगुल दल बल कसि ॥
द्वादस अंगुल उंच । निठ करि ओवद[1] साइय ॥
उघरि मुष्ष वर द्रव्य । कही कवि चंद न जाइय ॥

(१) ए० क्र० को०—खावद ।

सिख तरनि षलंतह भम्म षचि। द्रव्य परष्षिय मध्य असि ॥
सामंत सूर हम उच्चरै। भयौ बीर कैमास लसि ॥ छं० ॥ ३९३ ॥

बारह हाथ खोदने पर एक भयानक देव निकला।

सुनिय बत्त चहुआन। भयौ आचिज्ज सब्बघन ॥
भूमि किन्नि संजुत्त। अहे आवै अभंग घन ॥
पुर सु निष्प धर मध्य। क्रोध जाजुल्य नैन रत ॥
मुर संगर चिच बंधि। ग्रीव[1] लीनी उछंग तन ॥
षोदयो भूमि द्वादस सु पथ। हंकि बीर दानव गजिय ॥
कवि चंद दंद मन मद्धि बँध्यौ। चित्त चिंत ब्रंह्मंड लगिय ॥ छं० ॥ ३९४ ॥

उस राक्षस ने निकल कर तरह तरह की माया करके लड़ना आरम्भ किया।

छंद भुजंगप्रयात ॥ प्रकारे सुचारे भुजंगं प्रयातं। षगप्पत्ति गायं अचप्पत्ति गातं ॥
स्वयं वीर दानव्व षक्यौ चकारं। वरं बंध रक्षी षरक्के प्रहारं ॥ छं० ॥ ३९५ ॥
वरं व्योम ग्रब्बं षहं पत्ति संक्यौ। करे कोटि माया निसा पत्ति हंक्यौ ॥
पयं पाइ उट्ठै महा रोम[2] झुम्मी। मनौं चक्क फेरै कुलालं स भुम्मी ॥
छं० ॥ ३९६ ॥

षिनं रत्त दीसै षिनं मत्त माया। षिनं रत्त पीतं षिनं स्याम छाया ॥
षिनं मेघ रूपं षिनं अग्गि सीसं। षिनं कोटि रूपं षिनं एक दीसं ॥
छं० ॥ ३९७ ॥

षिनं बाल रद्धं षिनं वै किसोरं। भयं भीम भीमं षिनं दिव्य गौरं ॥
षिनं मोह माया षिनं दट्ठ बज्जै। षिनं मोहनी मोह रूपंति सज्जै ॥
छं० ॥ ३९८ ॥

षिनं मै विडाली षिनं षिप्र माया। षिनं मेळ रूपं षगं षथ्य धाया ॥
षयं ग्रीव रूपं षिनं मक्ष दीसै। षिनं गज्जियं सिंघ आरत्त रीसै ॥
छं० ॥ ३९९ ॥

(१) ए० कृ० को०—राव। (२) मो०—रोस।

जब बहुत उपद्रव मचाया तब चन्द ने देवी की स्तुति की कि मा अब सहाय हो कि लक्ष्मी निकाले ।

कवित्त ॥ तोरि वीर संकर सबद्द । छंडि गजराज थांन गय ॥
भयौ सब्द्द अरिष्ट । ढुंढि लभी न मत्ति पय ॥
सत्त मत्त छुट्टयौ । अप्प अप्पन संभारै ॥
भो अचिज्ज सामंत । व्यास बचनं न विचारै ॥
कविचंद संच आरंभ बर । उमा उमा कवि बंचयौ ॥
लष्यियै वचन सुचि मात इह । तुअ काली कालजचयौ ॥ छं० ॥ ४०० ॥

दूहा ॥ करि अस्तुति कविचंद बर । अषो मात बरदान ॥
इह माया मैं बहु तन । कढ़ै लच्छि तुअ पान ॥ छं० ॥ ४०१ ॥

देवी की स्तुति ।

छंद विराज ॥ सुनी देवि बानी । चढ़ी सिंघ रानी ॥
मयं मत्त माया । तुंही तूं उपाया ॥ छं० ॥ ४०२ ॥
अरी सुद्ध भष्यं । प्रकत्ती पुरष्यं ॥
निराधार बंधी । निसंधे निसंधी ॥ छं० ॥ ४०३ ॥
चिहूं चक्र चंडी । इकं पाइ मंडी ॥
जपौं तोहि तोषी । जगचक्र मोषी ॥ छं० ॥ ४०४ ॥
निसा पत्त मारै । दया बज्ज तारै ॥
तूही मंच मंची । तनं जा पचिंची ॥ छं० ॥ ४०५ ॥
तुही आसमानं । तुही भूमि थानं ॥
तुही बाग बानी । कला निद्धि रानी ॥ छं० ॥ ४०६ ॥
कवी चंद चंदं । करै दूरि दंदं ॥
कबं षग्ग धारै । प्रनेता उचारै ॥ छं० ॥ ४०७ ॥
निसा बीर बद्धौ । इसी आइ ठढ्ढौ ॥ छं० ॥ ४०८ ॥

देवी ने प्रसन्न होकर दानव को मारने का वरदान दिया ।

दूहा ॥ मात प्रसंनन गुन गहिर । दियौ हुंकि हुंकार ॥
दियौ बर सु दानव मचन । कियौ देव जयकार ॥ छं० ॥ ४०९ ॥

बर पाकर पृथ्वीराज ने राक्षस को ललकारा और घोर युद्ध हुआ। दानव मारा गया।

कवित्त ॥ तब प्रथि राज नरिंद। वीर दानव हक्कारिय ॥
सबद द्रुग्ग संभल्यौ। पच्छ दीनी हुंकारिय ॥
दिषत षथ्थ सब हथ्थ। कथ्थ कोइ बैन न मंडै ॥
भीन सीत भय अंग[1]। रंग[2] रस रोस सु चंडै ॥
अह नाइ प्रान सम ग्रेह तिह। कज्जल कूट समान सुइ ॥
मन चिंत चंद प्रारथ्थनह। जवै देवि डर आन उइ ॥ छं० ॥ ४१० ॥
बल उत्तंग सुमेर। दक्षि संकिन मग मुक्किन ॥
छिनक मंत निय संत। तेज आहुटि बल तक्किन ॥
सबर बीर कविचंद। मंच दुरगा तब पढ्यौ ॥
करी नवनि कर जोर। आइ अग्गै भयौ ठढ्ढौ ॥
अस्तुति अनेक उच्चार मुष। चरन चंपि द्रढ कर गहिय ॥
धन जोग कथा पूछी सुचित। उचित चंद अप्पन कहिय ॥ छं० ॥४११॥

चन्द ने स्तुति करके इस राक्षस और धन की पूर्व कथा पूछी।

दूहा ॥ करि अस्तुति द्रढ चरन गहि। पूछी अट्ट विगत्ति ॥
जु कछु आदि पुच्छै सुचित। कहन सु बीर विगत्ति ॥ छं० ॥ ४१२ ॥

देवी ने कहा कि जी लगाकर तू इसकी पूर्व कथा सुन।

कहै बीर कविचंद सुच। पूब कथा कहुं मंडि ॥
जिन सच्ची धर मुंक्किये। धर रष्यै धन छंडि ॥ छं० ॥ ४१३ ॥

सतयुग में मंत्र, त्रेता में सत्य, द्वापर में पूजा और कलियुग में वीरता प्रधान है।

जुग सु आदि हुच मंत्र गुर। त्रेता जुग हुअ सत्त ॥
द्वापर जुग पूजा प्रबिष। कलि जुग बीर दत्त ॥ छं० ॥ ४१४ ॥

रघुवंश में आनन्द नामक एक राजा हुआ है उसकी कथा कहती हूं।

(१) मो० ह० को०–अग। (२) मो०–सार।

गाथा ॥ हुश्र आनंद सु वीरं । वुझिय सु प्रसंन चोह कल वानी ॥
सुनि उतपत्ति सु कव्वी । कहि अव रघुवंस आदि संकेतं ॥ छं० ॥ ४१५ ॥

वह राजा बड़ा अन्यायी था धर्म विरुद्ध काम करता था ।

कवित्त ॥ *तिहि तजिय सु रघुवंस । पुत्र मारंत इह विज्जि ॥
चित कीनो चरचित्त । मरन अँग आगम लज्जि ॥
जो वरजै वहु वार । भ्रंम मानै न भयंकर ॥
सोक अगिन तिन दहिसा । प्रान छंडौ रतियंकर[1] ॥
† सत वरस राज तप श्रंत करि । किति भ्रंम संगह यह्य ॥
आभ्रंम किति ज्यों संडनह । सो उब्बरि वीरनि रचिय ॥ छं० ॥ ४१६ ॥

यज्ञ विध्वंस करता था ऐसे बुरे कर्मों को देख ऋषियों ने शाप दिया कि जा तू राक्षस हो जा ।

कवित्त ॥ तिहि वाहन वल सूरं । धरम रष्यो रघुवंसी ॥
वेद भ्रंम उथ्थापि । कांत कंटक वल कंसी ॥
यज्ञि तेज जाजुल्य । जग्य विध्वंसिय सव्वल ॥
कमल सब्बह अरिष्ट । जीति दगपाल थंभ पल ॥
मारग्ग चंति उथ्थापि करि । दिव सराप सव रिष्यि मिलि ॥
जा वीर दांन दानव सु वरि । अमर सिंघ वल जीति इलि ॥ छं० ॥ ४१७ ॥

उसका शरीर भस्म हो गया और वह दैत्य होकर यहां रहने लगा ।

सिंचि अयास आयास । आप मिलि आप अहुट्टिय ॥
मिलि समीर संमीर । धरा धर धार आहुट्टिय ॥
तेज जोति चहु बीर सुवर अंगल फिरि आइय ॥
विंचि अभ्रंम जरि तास । मांचि सो कछु न समाइय ॥

* मो०—"तिहि तजिय हर रघुवंस पुत्र चारस पुच्छ खिव ।"　　(१) मो०—अंकर ।

† मो० प्रति में इन दो पदों के स्थान में तीन पद दिए हैं जिसमें से अंतिम पद तो चारों प्रतियों में समान है किन्तु मो० प्रति में दोनों में एक का सारांश मिलता है यथा—मो०—"सत्त वरस राजा ने सवंस राजंस अंस कर, सब सोरंथ्य गिंड अरि. अंत करि किस धर्म संगह गहिय ।

आकास मध्य ना मध्यतें । फटिक बीर है चीर हुअ ॥
ते बीर बहुत दानव अतुल । भये काल थानय रष्य ॥ छं० ॥ ४१८ ॥

इसको बहुत काल बीता, इसके पीछे रामचन्द्र हुए, काल पुराना हो गया पर यह लक्ष्मी पुरानी न हुई ।

बहु बित्ते बर काल । चंद बरदाइ थान चम ॥
को जीवन देष्यो न । मरन देष्यौ न न जे हम ॥
मात अभ्भ जम निका । राम नामस करि नच्यौ ॥
दूख चहै अंगनै । कौन रुचै को रुच्यौ ॥
जीरन सु जगा संसार भौ । लच्छि न जीरन भइस इव ॥
आयंत जात धंधौ सकल । ग्यानवंत जानहि सु इव ॥ छं० ॥ ४१९ ॥

तब पृथ्वीराज और चन्द ने प्रार्थना की कि अब धन निकालने में दैत्य दुःख न दे ।

दूहा ॥ तब प्रथिराज नरिंद बर । अह सुमंचि कविचंद ॥
इष्ट बत्त बर संमुचे । ज्यो दानव करै न दंद ॥ छं० ॥ ४२० ॥

इष्ट मंत्र का साधन करते यज्ञ करते हुए खोदकर लक्ष्मी निकालना आरम्भ किया ।

छंद चोटक ॥ कढ़ि लच्छिदिसंक्रम दीन व्रपं । निज मंच वर्ख काल तच जपं ॥
भुज भान सुरं भज भाल दिसं । बर इष्टय चंद कविंद कसं ॥
॥ छं० ॥ ४२१ ॥

सब देव क्रमं क्रम दीन न्रपं । जय जग्यह जाप करंत तपं ॥
घन गंध सुगंधन की चलितं । चलि सीत न तप्प सुभं मरुतं ॥
॥ छं० ॥ ४२२ ॥

घन सार मृगम्मद होम जरैं । तिन उप्पर भौरन भौर परैं ॥
उड़ि धूम चिहूं दिसि छाय घनं । करि मंच सुदेव बलिं बलनं ॥
॥ छं० ॥ ४२३ ॥

देव ने चन्द से कहा मेरे पिता रघुवंशी धर्माधिराज थे मैं उनका बेटा आनन्दचन्द बड़ा अन्यायी हुआ मैं ने अन्याय से संसार को जीता, इस लिये शाप से मैं दैत्य हुआ और मेरा नाम बीर पड़ा ।

कवित्त ॥ न्टप पुच्छी रघुवंस । नाम धृम्माधिराज तुम्ह ॥
　　जिय वाहन न्टप सूर । पुच आनंद चंद हुम्ह ॥
　　सव जित्ते द्रगपाल । माल लिन्नौ अर्ध्म छजि ॥
　　राज नीति सव मुक्कि । क्रंम वंध्यौ अक्रंम कजि ॥
　　अद्भुत मरन छिन भंग गति । चित वित्त क्रम अनुसरिय ॥
　　नप संग[1] गच्छना जांनि नह । न म बीर दानव धरिय ॥ छं॰ ॥ ४२४ ॥

वीर ने कहा कि इस लक्ष्मी को मैंने ही यहां रक्खा था ।
दैवगति से इसीको लेकर मेरी यह गति हुई ।

दूहा ॥ कहै वीर सुनि चंद तुम्ह । अप्प कथा कहैं मंडि ॥
　　जा मुक्की लच्छी धरनि । सो रच्यों उर मंडि ॥ छं॰ ॥ ४२५ ॥
　　यों रच्यैं इन भंति करि । अहो चंद वरदाइ ॥
　　रघुवंसी अति मोह मय । अवगति कोइ सुभाइ ॥ छं॰ ॥ ४२६ ॥
　　माया काया पुत्तरी । क्रोधवंत वस वीर ॥
　　रचे छंडि है लच्छि यह । वसिमत तुम इह धीर ॥ छं॰ ॥ ४२७ ॥

वीर का अपने पिता रघुवंश राज की प्रशंसा करना ।

कवित्त ॥ क्रोध लोभ जानी न । मोह माया नं चलंकन ॥
　　मोह मीत अरु सीत । जगि जा जापय सुक्कृन ॥
　　वहु विवेक विमांन । राज विसतरहि नीति वहु ॥
　　नव निवर्त धुनि वेद । कर्म छेदन अभेद लहि ॥
　　सो वहि सांइ सेसव सुरूप । जोवन वै विय अलप मन ॥
　　रघुवंस इह आवस्त चिय । जोग मग्ग सो छंडि[2] तन ॥ छं॰ ॥ ४२८ ॥

चारों युगों के धर्म का वर्णन ।

स्लोक ॥ सत जुगे वंधयो देवो । चेतायां सोम आधयो[3] ॥
　　द्वापरे वाहनो सूरो । कलिजुगे वीर भीषम ॥ छं॰ ॥ ४२९ ॥
　　सतजुगे ब्रह्मपुचश्च । चेतायां वीर अंसय[4] ॥
　　द्वापरे विधि वंशश्च । कलिजुगे सूद्र अचलिका ॥ छं॰ ॥ ४३० ॥

(१) मो॰-भग्ग ।　　(२) मो॰-छंडि ।
(३) मो॰-अेाधयो ।　　(४) मो॰-अंविय ।

बीर का अपने बल का वर्णन करके, अपने साम्हने धन निकालने को कहना।

कवित्त ॥ हम सु भयंकर बल । भट्ट सुभटन हंकारहि ॥
हम प्रचंड प्रब्बल । कनिष्ट अंगुलि उप्पारहि ॥
सत्तों समुद प्रमान । सु तन छिन गिरि दिष्षहि ॥
सुनि न होइ देखी न । तोइ ब्रहमंड सु लष्षहि ॥
दैवान दुसंकह दुष्ट गति । देव जोग को गह्वै ॥
आतम्म मनुच्छन जीव बल । सो देषन धन कढ्ढवै ॥ छं० ॥ ४३१ ॥

चन्द ने कहा कि हे बीर तुम सब समर्थ हो तुम्हारे कहने से अब राजा धन निकालेंगे।

अरिल्ल ॥ *बुल्लै चंद सुनो बर बीरं । तुम त्रिकाल दरसी अति धीरं ॥
तुम अनंत बल रूप सरूपं । कढ्ढै धन तुम वचन सु भूपं ॥ छं० ॥ ४३२ ॥
गाथा ॥ कहै बीर चंदं बर बंदं । हो देवाधि देव बलवंनं ॥
तुम देषत गत पापं । होइ प्रसंन देहु बर बचनं ॥ छं० ॥ ४३३ ॥

चन्द की सुन्दर बानी सुनकर बीर ने प्रसन्न होकर धन निकालने की आज्ञा दी।

दूहा ॥ सुर बानी सुन भट्ट की । मन प्रमोद बरबीर ॥
दई बाच कढ्ढौ सु धन । प्रसन देव करि धीर ॥ छं० ४३४ ॥

बीर की बात सुनकर चन्द ने राजा से कहा कि होम आदि शुभ कर्म कराओ और आनन्द से धन निकालो।

अरिल्ल ॥ बीर बचंनति चंद प्रकासिय । कहै राज गुरजन प्रति भासिय ॥
करो होम देवान मंत्र जप । सब प्रसंन हुआ लहैं धन्न छप ॥ छं० ॥ ४३५ ॥

चन्द का बीर से पूछना कि हमारे राजा तुम्हारी प्रसन्नता के लिये जो कहो वही करें।

कवित्त ॥ तुम समान कोइ आन । पान पन दान मान मन ॥
कवन स्रवन रस राग । दैव परंग अंग नन ॥

* मो०—प्रति में "बुल्लै धन चन्द सुनों बर बीरं" पाठ है और धन शब्द यहां विशेष है।

राजस तामस सत्त । मत्त जोगिंद् विराजहि ॥
जीव एव गुन कोटि । रत्ति सो वोलन लाजहि ॥
महदेव[१] सेव तुम चरन रत । पति पवित्र मन मोद धरि ॥
चिंद्यौ सु वीर उत्तर दिसा । इह पसाव चहुआन करि ॥ छं० ॥ ४३६ ॥

बीर का कहना कि मेरी प्रसन्नता के लिये पंडित से जप कराओ और महिष का बलि देकर धन निकालो।

दूहा ॥ कहै वीर कमिचंद सौं । हौं सु प्रसन्नौं तोहि ॥
तीन लोक में जुगति वर्ति । सुक्खन नाहीं मोहि ॥ छं० ॥ ४३७ ॥
पंडित बोलि ह जप करौ । होम दान ग्रह मान ॥
महिष मोहि पूजा करौ । तौ कढ्ढौ पाषान ॥ छं० ४३८ ॥

दानव यह कहकर स्वर्ग गया । चन्द का राजा से कहना कि ग्राह को तो तुम बांध चुके अब रावल के साथ धन निकालो ।

कवित्त ॥ सुरग गयौ दानव्व । वत्त वल महिष उचारिय ॥
मंच तंच बंधयौ । बलन अप्पन सम्हारिय ॥
वर गज्जनी नरिंद । बंधि कंढ्यौ चहुवानं ॥
धन कढ्ढन[२] तिन थांन । बज्जि निर्घोष निसानं ॥
अनंद मंचि कैमास वर । लिष्षि घरी वर पुच्छिवर ॥
जै जया सिंघ आंचुह पति । मिलि विभूत कढ्ढौ सुभर ॥ छं० ॥ ४३९ ॥

राजा ने रावल को बुलाकर ज्योतिषी पंडित को बुलाय, पंडित ने होम की सामिग्री मँगाकर वेदी आदि बनवाकर शुभ अनुष्ठान का प्रारम्भ किया ।

छंद चोटक ॥ तब बुल्लिय राजन राज गुरं । सु मनो गुर राजत देव दुरं ।
बुल्लि बेद सु पंडित जोतिगयं । जिन बुद्धि सु अद्भय सुद्ध लयं ॥
छं० ॥ ४४० ॥

(१) मो०— सहदेव । (२) मो०—कढ्ढव ।

तिन संगिय होम प्रकार सयं। रचि जग्य अकार प्रकार मयं ॥
मिटई[४] जिह दोष[१] सु होइ जयं। ... ... छं० ॥ ४४१ ॥
कढ़ि उच्छि दिसा क्रमि देवि व्रपं। कवि चंद अनंदिय मंच जपं ॥
विधि भांन सुरंभिय भांन दिसं। सव देव क्रमं क्रम होइ रसं ॥ छं० ॥४४२॥
जय जग्य रु जाप करै बलिता। धन गंध सुगंधन की ढलिता ॥
सु रची रवनीय सबै अवनी। धज छत्तन वेदिय मंडि फनी ॥ छं० ॥ ४४३ ॥
भरि चंदन पाटक पाट करी। अनुराग सु कुंकम होम जरी ॥
नव रत्त कला कल सान छुटे। मनुं द्वादस भान इहां प्रगटे ॥
छं० ॥ ४४४ ॥
धुनि सुंनिय बेदन होत सपं। प्रगट्यौ कमलानन तास मुषं ॥
छं० ॥ ४४५ ॥

छः प्रधानों को पास रखकर राजा ने पत्थर खोदकर हटवाया।

कवित्त ॥ कढ्ढि बीर पाषान। राज षट रष्षि प्रधानं ॥
चंद भट्ट गुरराम। कन्ह रष्षिग चहुआनं ॥
रष्षे अत्ता ताइ। ईस लद्धौ बर भारी ॥
दैव बत्त संजोग। भोग लद्धौ रन रारी ॥
रष्षिजै भीम रघुबंस वल। अह रष्षै पुंडीर सह ॥
अनवत्त अग्य वै स्वांम की। पंच दीह तिन थान रहि[१] ॥ छं० ॥ ४४६ ॥

वह स्थान खोदने पर एक बड़ा भारी पत्थर का अद्भुत घर निकला, उसमें एक सोने के हीराजटित हिंडोले पर सोने की पुतली सोने की वीणा बजाती और नाचती हुई निकली, उसका नाच देख कर आश्चर्य होने लगा।

षोदि थान पाषान। ग्रेह निकस्यौ अचंभम ॥
हेम हीर हिंडोल। हेम पुत्तरी सुरंभम ॥
हेम षध्य बाजिच। न्रत्य पुत्तरि जरि जंचिय ॥
इह अचंभ पुत्तरी। जानि सर जीवन मंचिय ॥

(१) मो०--लहि।

आलिंग नयन करि सिथल गति। मिथि दिष्षन मन नयन रुकि॥
आचंभ चंद देखत भयौ। रंभ कि न्रत्यन तार चुकि॥ छं॰॥ ४४७॥

पुतली को देख गुरुराम का आश्चर्य करना।

दूहा॥ सुर उद्योत गुररांज तिथि। पुत्तरि दिष्षि अचंभ॥
रति पति मन संमुह धरै। घट सु घटिय आरंभ॥ छं॰॥ ४४८॥

चन्द का कहना कि यह मायारूपी है।

कहै चंद गुर राज सुनि। यह माया बस रूप॥
न करि मोह कर गचि सु दुज। कहिं[१] वहोरिय भूप॥ छं॰॥ ४४९॥

रावल का फिर चन्द से पूछना कि यह पुतली किसका अवतार है?

राज गुरु कहि चंद सों। हो कविराज विचारि॥
कोन रूप अवतार किय। कयों लच्छिय-धर नारि॥ छं॰॥ ४५०॥

चन्द ने कहा कि ठहरिये तब कहूंगा और उसने बीर को स्मरण करके पुतली का भेद पूछा।

कवित्त॥ तन सु चंद वर दाइ। राज गुरु वचन अप्प उर॥
छिन इक धरौ विलंब। कहौं वर वीर पुच्छि नर॥
करि अस्तुति कवि बानि। वीर देवाधि देव सुनि॥
हम मनुष्य मय मोह। तास नहिं लहै अंत पुनि[२]॥
पुच्छइ सु देव आपुब्ब कथ। कोन रूप इच पुत्तरिय॥
रच लच्छि थान सुर केम तन[३]। कौन काज वर सुद्दरिय॥ छं॰॥ ४५१॥

देव का उत्तर देना कि यह ऋद्धि रानी है।

गाथा॥ सुर वांनीयं चंदं। सुप्रसन्नं देव मय कव्वी॥
इच तेजं रिधि रांनी। संपेषे सु चंद गुर कव्वी॥ छं॰॥ ४५२॥

यह ऋद्धि साक्षात लक्ष्मी का रूप है इसे तुम ले खटके भोग

(१) मो॰–मुरछि। (२) मो॰–कुनि।
(३) मो॰–तन।

सकते हो । यह देव बानी सुनकर चन्द प्रसन्न हुआ और रावल का संशय मिटा ।

कवित्त ॥ इह सु छत्य बच रूप । देव देखहु सु मोह मन ॥
माया छाया सु लच्छि । अनुहरै सु लच्छि रत ॥
इह लच्छी बर रूप । तेज आजुख्य प्रमानं ॥
हम बचंन इह रिद्धि । तुमहु सुप्रसंन सुथानं ॥
भोगवन काज संभरि सुपहु[1] । इह बिधिना अप कर गढ़िय[2] ॥
सुनि चंद बचन आनंद हुआ । राज गुरू संसय मिटिय ॥ छं० ॥ ४५३ ॥

इस हिंडोले को पूजन में रखना यह कहकर देव अन्तर्ध्यान हो गए । राजा फिर धन निकालने लगे ।

दूहा ॥ हिंडौलौ बर हेम करि । सिंघासन सुरराज ॥
बह प्रसंन होइ रष्षियौ । पूजन हरि गुर राज ॥ छं० ॥ ४५४ ॥
फिन धरि माया अप्प दुरि । गए सु अंमर देव ॥
फिरि खाळन लग्गे सु द्रव । लहै सुरप्पति भेव ॥ छं० ॥ ४५५ ॥

कुवेर के से भण्डार का धन निकलना, सब को आश्चर्य होना और तब सुरंग को देखना ।

कवित्त ॥ कलस बंक चंबक्क । लोह संकर बर बंध्यौ ॥
रजत कलस अह हीर । रत्त अंतर चित संध्यौ ॥
हेम कलस नग भरिग । कंति दीपन जनु अग्गी ॥
सुइर कलस पाषान । मद्धि मन तेज उपंगी ॥
आचिज्ज चंद बरदाइ भय । ग्रह कुबेर करि लष्षयौ[3] ॥
गुरराज राम अहह सचित । फिरि सुरंग सब दिष्षयौ ॥ छं० ॥ ४५६ ॥

पुतली का बिना कुछ बोले चन्द और रावल की ओर तीक्ष्ण कटाक्ष से देखना ।

कवित्त ॥ ता पच्छैं कबि चंद । राज गुर संमुह दिष्यौ ॥

(१) मो०—सपहु ।
(२) ए० कृ० को०—घटिय । (३) मो०—लिष्यौ ।

ब्रह्म थांन शिव थान। थान पति नाक विसथ्थौ॥
नवति वीर ग्रह जोग। सिद्ध नव निद्ध सु अट्ठौ॥
च्यारि च्यंग लच्छी प्रमान। धूम द्वादस अँग दिट्ठा॥
सा अंग बाल पुत्तलि अचँभ। चाहू भाइ विभ्रम वद्दै॥
लावंनि दिंत उत्तंर रहति। दंक कटाछन चित्त द्दै॥ छं० ॥ ४५७॥

चन्द और रावल का मूर्छित होकर गिरना। कुछ देर में सँभल कर उठना।

कवित्त॥ मुच्छि पथ्थौ कवि चंद। मुच्छि दुजराज पथ्थौ कन्ह॥
नाच भंग तन भंग। अंप झल्ल मलिय नैन जल॥
उष्ट कंप तन स्वेद। भेद वल विन [1]कवि किन्नौ॥
चढ़िय अंग पिंडुरिय। गात सोभन जल भिन्नौ॥
सिथल चरन गति भंग ह्वै। वै विलास अभिलाप गति॥
जग्गेष मुच्छि दुजराज सब। देव एव चिंचं सुभति॥ छं० ॥ ४५८॥

उठने पर राज गुरु का पृथ्वीराज से पूछना कि असंख्य धन निकला अब क्या आज्ञा है।

दूहा॥ सुछि उठ्यौ गुर राज तब। पुछ्यौ संभरि वार।
जु कछु सुवर अग्या न्रपति। धन निकस्यौ अप्पार॥ छं० ॥ ४५९॥

धन के कलश आदि का वर्णन। रावल और पृथ्वीराज का एक सिंहासन पर बैठना।

कवित्त॥ सत्त[2] कलस चंपकिय। सत्त[3] अध मंडि रजक्किय॥
हेम कलस सत पंच। कलस पाषान सतक्किय॥
सत्त अष्ट बाजिच। सहस अध षग्ग प्रमानं॥
हेम चीर हिंडोल। एक आचंभ सु थानं॥
जान्यो न देव देवाधि गति। दैव जोग सिंघासनह॥
चिचंग राव रावर समर। सम सुराज प्रथु आसनह॥ छं० ॥ ४६०॥

---

(१) ए० कृ० को०—कंठ।
(२) ए० कृ० को०—सित्त। (३) ए० कृ० को०—सित्त।

एक दिन संध्या के समय देवी के मठ के पास पृथ्वीराज और रावल आए।

एक सुदिन संध्या समय। विंध्यासनि के थान ॥
एक अचंभो देखिये। जो आवै चहुआन ॥ छं० ॥ ४९१ ॥
उभय राज बर वत्त करि। चले सुथानक देव ॥
निकट देखि देवी सुभट। गए सिंघ बर सेव ॥ छं० ॥ ४९२ ॥
आए न्रप चित्रंग पति। अरु संभरी नरिंद ॥
तब लगि राम सु विप्र ने। करिय अचिन्न सु चंद ॥ छं० ॥ ४९३ ॥

पृथ्वीराज और रावल के शोभा और गुण का वर्णन।

छंद भुजंगी। समं चढ्ढियं समर रावर नरिंदं। तिनं वाम भुज्जं समं सूर नदं ॥
घनं रुध्य मध्यं दोऊ बीर राजं। तिनं देषतें बामता काम लाजं ॥ छं० ॥ ४९४ ॥
उठी सुच्छ आनं धुनी लग्गि गेनं। मनों चंद बीयं सियं[1] कीय चेनं ॥
दोऊ राज राजन्नता राज सक्की। दोऊ भ्रंम षंडे जमं षंड चक्की ॥ छं० ॥ ४९५ ॥
दोऊ रत्त[2] माया ननं अग्ग लग्गै। मनों कंज[3] पचं जथं भिंटि भग्गै ॥
उभै सूर नूरं विराजंत राजं। जिनै सोभियं कंठ रद्द छिंदु लाजं ॥ छं० ॥ ४९६ ॥

वेद मंत्र से दोनों राजाओं के लिये पूजा की और दस महिष बलि चढ़ाया। चतुःषष्टि देवि ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया।

कवित्त। वेद मंच दुज राम। उभय कारन क्रित किन्नौ ॥
समर समरसंन कीन। राज उनहार सुखिन्नौ ॥
दस मह्षिय बल भंजि। चंद मंचं प्रारंभे ॥
नृप आग्या नन दीन्। सस्त्र मंगै प्रारंभे ॥
आरंभ मंच चवसट्ठि जगि। चै हुंकारव सद्द हुअ ॥
गत दंद चंद चंदाननह्‌ु। मात प्रसंनन मत्त हुअ ॥ छं० ॥ ४९७ ॥

---

(१) ए०—सियंकी अ।   (२) ए०—दत्त।
(३) ए० कृ० को०—कंप।   (४) मो०—मगं।

राजा ने सिंहासन हाथ में लेकर देवी की स्तुति की
देवी ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया ।

दूहा ॥ सिंघासन प्रिथिराज ले । मान वरंनन कौन ॥
मान प्रसन चहुआन कौं । जै हुंकारव दीन ॥ छं० ॥ ४६८ ॥

देवी पृथ्वीराज को आशिर्वाद देकर अन्तर्ध्यान हो गई ।

कवित्त । दुर्ग प्रसाद चवसठ्ठि । चथ्थ सिंघासन अप्पिय ॥
वथ अप्पौ प्रथिराज । क्रित्ति कलसां लगि थप्पिय ॥
बिय सपत्त लभ्भै न । पुत्र लभ्भै सु थान तुम ॥
मन तु वंस जय लभै । सज्ज अनुहन पित्त जुम ॥
पूजनह थान रविवार कवि । आदिष्ट मान अंतर भरय ॥
सुभ लच्छि सुभग्गह आइ तँह । वर सुहेम चर्त्यां दरय ॥

पृथ्वीराज ने सिंहासन और लक्ष्मी मँगाकर रावल के साम्हने रक्खी । रावल ने कहा कि यह लक्ष्मी तुम्हारे पास आई है, तुम्हारी है । पाटन के यादव राजा की कुवँरि ससिव्रता की सगाई का विचार ॥

कवित्त । मँगि सिंघासन राज । लच्छि चतुरंग सु अप्पिय ॥
समर सिंघ रावर नरिंद । अग्गैं धरि जप्पिय ॥
रंजि राज आहुट्ठ । राज दिल्लिय दिस आइय ॥
वर पट्टन जद्दों नरिंद । लिखि दूत पठाइय ॥
चौहान राग चहुआन हुअ । कथा जंपि ससिव्रत्त किय ॥
पावस प्रमान कहिय विकट । सुवर राज यों मत्त किय ॥ छं० ॥ ४७० ॥

गाथा । सिंघासने सुरेसं । अह सु लच्छि सा चयं अप्पियं ॥
सो अग्गै वर सिंघं । मुक्के राज परिकारं सव्वं ॥ छं० ॥ ४७१ ॥

रावल समरसिंह का धन लेने से इंकार करना और कहना कि यह धन तुम्हें प्राप्त हुआ है सो तुम्हीं लो ।

कवित्त ॥ रंजि राज दछ्छिन गिरेस । राजन प्रति बुल्लिय ॥
तुम सु बड़े राजिंद । कथा गुन कहे सु भल्लिय ॥

हम सु तुम्ह समप्पंन[1]। जानि आप तुम सथ्थं ॥
तुम सहुए उच्चांन। मुष्य कढ्ढौ सु अरथ्थं ॥
तुम काढिय बत्त अब जो हमैं। तुम समान नहिं प्रीति भति ॥
उच्चरौ वचन तुम राज वर। दो हम हृदय सुमत्ति गत्ति ॥ छं० ॥ ४७२ ॥

पृथ्वीराज ने जब देखा कि धन लेने की बात से रावल को क्रोध आ गया तब उन्होंने अनुचरों को धन ले लेने को कहा।

दूहा ॥ अति क्रोधित रावर समर। जब दिष्यौ प्रथिराज ॥
तब अनुचर प्रति उच्चरिय। लेहु लच्छि भरि साज ॥ ॥ छं० ॥ ४७३ ॥

पृथ्वीराज से रावल का घर जाने के लिये सीख मांगना पृथ्वीराज का कहना कि दस दिन और ठहरिए शिकार खेलिए। रावल का आग्रह करना।

कवित्त ॥ तवहि जुग्गवर समर। राज राजन प्रति बुल्लिय ॥
हम सु सीष संभवैं। चलैं चित्रकोट सु थल्लिय ॥
तब राजन उच्चरिय। रहौ दस दिन सब मिल्लिय ॥
रचौं सरस आषेट। करैं क्रीडा धर दिल्लिय ॥
तब कहत राज आतुरप्पति। अहो राज राजंन[2] गुर ॥
हम चलैं राज कारज गुर। भर सु सब्ब सम नेह उर ॥ छं० ॥ ४७४ ॥

प्रेमाश्रु भरकर रावल ने विदा मांगी, पृथ्वीराज उठकर गले से गले मिले।

दूहा ॥ भरे सु सकज सनेह करि। रावर मंगिय सीष ॥
तब सुराज राजंन गुर। उठि मिलि सज्जन दीष ॥ छं० ॥ ४७५ ॥

पृथ्वीराज ने जाने की सीख देकर कहा कि हम पर सदा ऐसा ही स्नेह बनाए रहिएगा।

देत सीष प्रथिराज नृप। इह बुल्लिय गुर सज ॥
होत समप्पन प्रेम रस। रष्यन रषियौ[3] काज ॥ छं० ॥ ४७६ ॥

(१) ए० कृ० को०—समपक। (२) मो०—राजंग।
(३) मो०—रषिय

रावल ने कहा कि हम तुम एक प्राण दो देह हैं, हमको तुम से बढ़कर कोई प्रिय नहीं है ।

नृप सम रावर उच्चरिय । तुम सम नेह न कोइ ॥
जीव एक पंजर उभय । क्यन छोड़ै दोइ ॥ छं० ॥ ४७७ ॥

रावल समर सिंह गद्गद हो विदा हुए, और अपने देश की ओर चले ।

तब सनेह नृप नैन भरि । अंसुअ आप सु राज ॥
समर सिंघ चित्तौर कौं । दिय अग्या सु समाज ॥ छं० ॥ ४७८ ॥

रावल को विदा कर राजा ने चन्द और कैमास को बुलाया और रावल के यहां हाथी आदि भेट भेजा ।

जब रावर सीषह सु करि । चढ़ि दष्षिन गिर राष ॥
तब सुराज प्रथिराज गुर । बोल्लि चंद बिरदाष ॥ छं० ॥ ४७९ ॥

कवित्त ॥ तदपि राज प्रथिराज । बोल्लि कैमास चंद वर ॥
दिय अग्या वर सेव । कीए आएस राव गुर ॥
*जुगम सिंघ वर क्रमिय । लेहु परिकर करि वेसं ॥
गय सुपंच मद गंध । सघ हय साज सुरेसं ॥
लै चले चंद वर दाइ घर । जहां राज रावर सुभर ॥
चौधरी वसंत अनेक सुर । करि अस्तुति रुप कोटि नर[1] ॥ छं० ॥ ४८० ॥

रावल ने चन्द को मोती की माला देकर विदा किया और आप चित्तौर को कूच किया ॥

दूहा । राजन घर रष्षिय प्रसन । करिय सब्ब सालंन ॥
माल मुत्ति दिय चंद कवि । चल्यौ चित्रगढ़ भंति ॥ छं० ॥ ४८१ ॥

कैमास और चन्द का राजा के पास आना और राजा का दिल्ली चलना ।

* मो०—"मन सिंह लिहि क्रमिय" ।

(१) मो०—नर ।

अरिल्ल ॥ फिरि आये कैमास चंद बर। मिले राज तहं पूर्न प्रेम भर ॥
ढिल्ली पुर आवन चहुआनह। अति तोरन उच्छव संमानह ॥ छं० ॥ ४८२ ॥

कैमास ने सब धन हाथियों पर लदवाया। राजा खट्टू बन में शिकार खेलता चला।

कवित्त ॥ बंचि राज कैमास। दोइ अंमर सिख कीनह ॥
द्रव्य नाम उभरीय। भरिय कर चाले तीनह ॥
एकादस गज पूर। पंथ संभरि पुर थानह ॥
पासुर सन संक्रमे। भरिय भंडार विधानह ॥
संचरिव राज म्रगया बहुरि। दुर चहू पारस रवन ॥
कर पप कढ़ जहां[1] सुपद। आइ राज भेंष्या सुजन ॥ छं० ॥ ४८३ ॥

पृथ्वीराज ने बहुत से धन को बराबर भाग कर के सब सामंतों को बांट दिया। सरदारों का बांट का वर्णन।

बंटि दियौ प्रथिराज। भाग किन्ने षट अब्बर ॥
एक भाग कैमास। तीय अप्पे नरसिंघ नर ॥
पंच भाग चावंड। भाग अट्ठौ बर कन्हं ॥
द्वादस भाग नरिंद। दियौ परिगाह सब धंनं ॥
प्रथिराज दिष्ट चाहै नहीं। चिकट कुंभ ज्यों जल अभिद ॥
लग्गै न नीर पच्चद कमल। भिदै न मनि छीवै उछिद ॥ छं० ॥ ४८४ ॥

दूहा ॥ एक भाग दिय विप्र कर। करै राज सुष कंद ॥
धन लछ्छिय प्रथिराज धन। कथी कथ्थ कवि चंद ॥ छं० ॥ ४८५ ॥

बड़ी धूमधाम से दिल्ली के पास पहुंचे, राजकुमार ने आगे से आकर दण्डवत किया। बड़ा आनन्द उत्सव हुआ।

कवित्त ॥ अति तोरन उच्छछव। आइ ढिल्लीय निकट बर ॥
रैंन कुमार सु आइ। सुबर सामंत मधुत्तर ॥
सत्त दूम असवार। कंचन नामी अग्गै भर ॥
छंडि तुरिय पय लग्गि। दीय सा पढ़न सीष गुर ॥

(१) मो०— जटाजूट चढ़।

षंदे ष चढ़ै तुरियं समय । ज्ञाण नंद उद्दाप वर ॥
जित्ते मलेच्छ लभ्भौ सुधन । ग्रति तोरन उच्छव नयर ॥ छं० ॥ ४८६ ॥

जेठ सुदी तेरस रविवार को राजा दिल्ली आए।

गाथा ॥ ग्रति तोरन उच्छाहं । आए जेठ सुदि त्रयोदसियं ॥
सुभ जोगं रविवारं । गहनं साह बद्धि जस भारं ॥ छं० ॥ ४८७ ॥

महल में आने पर रानियों ने आकर मुजरा किया।

दूहा ॥ ग्रहन साहि जस बढ़िय धर । आइ धवल मधि साज ॥
चिदा सकल आईं सु तहँ । मुजरा करन सु काज ॥ छं० ॥ ४८८ ॥

दाहिमा, आदि रानियां न्योछावर कर राजा की सीख पा अपने महल में गईं।

गाथा ॥ दाहिम्मी प्रथु भट्टी । पुंडीरी आइ नृप ढिग्गं ॥
करि न्यौछाअरि सकळं । नृप दी सीष गहय ग्रप ग्रप्पं ॥ छं० ॥ ४८९ ॥

रात को राजा पुण्डीरी के महल में रहे। सवेरे बाहर आए, मन में शाह के दण्ड का विचार उठा।

राजा धवल संपत्तं । गये ग्रह रति नथ्थ पुंडीरं ॥
करि रस अनंग क्रीडा । वढ़िय सुबेलि सुमन मन मथी ॥ छं० ॥ ४९० ॥
सुमन बेलि मन मथ्थी । करि क्रीडा कुष्प पर प्रातं ॥
अंतर साल थयट्टं । मन विचार साहयं दंडं ॥ छं ॥ ४९१ ॥

बादशाह से जो घोड़े आदि दण्ड लिया था सब सरदारों में बांट दिया। अपने पास केवल यश रक्खा॥

कवित्त ॥ दंड सुवर पतिसाह । दीय हय बंटि राज वर ॥
बीस सुभर हय कन्ह । बीस हय उंबर निठ्ठुर ॥
बीस दून्य रघुबंस । बीस उभ्भय दाहिम्मं ॥
अत्तताइ अल्हन पहाड़ । बीस हय जैत गुरंमं ॥
औरह सु सकल भर बीस अध । बंटि बंटि दिय सबन भर ॥
रष्पन सु गल्ह राजिंद गुर । जस रष्यौ निज वर सुकर ॥ छं० ॥ ४९२ ॥

गाथा ॥ जस रष्षौ कर अप्पं । सुत्तिय माल लानयं दब्वं ॥
आरोधी पुर दत्तं । कवि दीनौ सु अवर कर साहं ॥ छं० ॥ ४८३ ॥
दूहा ॥ सकल दंड पतिसाह कौ । बंटि दियौ सब सूर ॥
तपन राज अनि पविहर । भीषम विग्गिय पूर ॥ छं० ॥ ४८४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते पथिराज रासके षट्टू बन सध्ये आखेटक रमन धनसंग्रहन पातिसाहबंधनं धनकथा नाम चौबीसमों प्रस्तावः ॥ २४ ॥

अथ शशिवृतावर्णनं नाम प्रस्ताव ।

(पचीसवां समय ।)

शशिव्रता की आदि कथा वर्णन की सूचना ।

दूहा ॥ आदि कथा शशिव्रत्त की । कहत अब्ब संब्रत्त ॥
दिल्ली वै पतिसाहि ग्रहि । कढ़ि खच्छि उन मत्त ॥ छं० ॥ १ ॥

ग्रीष्म में पृथ्वीराज का विहार करना ।

अरिल्ल ॥ ग्रीषम ऋतु क्रीड़त[1] सुराजन । पिति उकषंत षेष नभ साजन ॥
विषम वायु तपित[2] तनुभांजन । लगि सीत सम्मीर सुकाजन[3] ॥ छं० ॥ २ ॥

कवित्त ॥ लगि सीत कच मंद । नीर निकटं सु रजत पट[4] ॥
अमित सुरंग सुर संध । तनह उवटंत रज़ति पट ॥
मलय चंद मल्लिका । धाम धारा ग्रह सुव्वर ॥
रंजि विपन वाटिका । तीस द्रुम कांह रजंति तरु ॥
कुमकुमा अंग उवटंत अनि । मधि केसर घनसार घनि ॥
क्रीलंत राज ग्रीषम सुरिति । आगम पावस भद्दय भनि ॥ छं० ॥ ३ ॥

ग्रीष्म वीतकर वर्षा का आरम्भ होना ।

गाथा ॥ ग्रीषम वित्तिय कालं । आगम पावस दीह मझेनं ॥
दिसि दष्षिन वर देसं । नाटक[5] आइ चंद्रोदयं नामं ॥ छं० ॥ ४ ॥

राजा सभा में बैठे थे कि एक नट आया, राजा ने आदर कर उसका परिचय पूछा ।

सभा विराजित राजं । नर्त्ता नट आइ पत्त संगीतं ॥
मिलन मान दिय राजं । पुच्छिय विगति देस रच मझमं[6] ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) ए०—कृ०—को०—क्रीलंत । (२) ए०—कृ०—को०—तपि तम तन ।
(३) मो०—राजन । (४) मो०—पट ।
(५) ए०—कृ०—को०—नाटक । (६) ए०—कृ०—को०—मध्यं ।

नट को गुण दिखलाने की आज्ञा देना ।

दूहा ॥ इय संभरि न्रप उच्चरिय । अहो सु नट गुरराइ ॥
गुन उचार[1] कछु किज्जियै । ज्यौं दिक्खै दानाइ ॥ छं० ॥ ६ ॥

नट का कहना कि मैं नाटक आदि सब गुण जानता हूं आप देखिए सब दिखाता हूं ।

गाथा ॥ नाटक प्रमान कथयं[2] । सुनि राजन धी ढिल्लीसं ॥
पाचं घर के सब्बं । गुन सुनियै चित्तयं लायं ॥ छं० ॥ ७ ॥

दूहा ॥ अवसर नत्त प्रगट किय । जंघ मृदंग सुतान ॥
करिय राग श्री उंचकर । कारन न्रत्य बहु गान ॥ छं० ॥ ८ ॥

देवी की वन्दना करके नृत्य आरम्भ करना ।

आदि सकल अस्तुति करिय । पहुपंजलि परिदेव ॥
कहि मंगल[3] धरनी निरषि । करन नृत्य अति भेव ॥ छं० ॥ ९ ॥
चंद चारु मागध सुअह[4] । गीत प्रबंध प्रसन्न[5] ॥
उघटि चिघटि सद प्रमुष है । देषि विग्रनि सुर भिन्न[6] ॥ छं० ॥ १० ॥

नट का नाच के आठ भेद बतलाना ।

तब सुनहु इम उच्चरिय । हो राजन नर इंद ॥
बहु विवेक संगीत कल । अष्ट नृत्य सुनंद ॥ छं० ॥ ११ ॥

आठों भेदों के नाम ।

श्लोक ॥ मृदंगी दंडिका नाली । कदली स्रुन धुहंरी[7] ॥
नृत्य गीत प्रबंधं च । अष्टांगो[8] नृत्य उच्यते ॥ छं० ॥ १२ ॥

नृत्य देख कर बैठने का हुक्म देना ।

दूहा ॥ कहिय नृपति अष्टंग सुधि । रंजि राज कल गान ॥
बहुरि हुकंम बैठन दिय । फिरि पुच्छिय थच्च न्यान ॥ छं० ॥ १३ ॥

---

(१) ए.—उचार । (२) मो—कथियं ।
(३) मो.—धरती । (४) मो.—सुवयं । (५) मो.—प्रमान । (६) मो.—तान ।
(७) मो. धधंरी । (८) ए.—कृ.—को.—अष्टागो ।

राजा का नट से उसके निवासस्थान का नाम पूछना।

तब राजन यों उच्चरिय। अहो सु नटवर राय॥
कौन ग्राम ठौरह सु तुम। कहो सु गुन प्रति भाय॥ छं०॥ १४॥

नट का कहना कि देवगिर में मैं रहता हूं वहां का राजा सोम-वंशी जादव बड़ा प्रतापी है। राजा की बड़ाई।

तब नट नमि करि उच्चरिय। सुनहु राज दिल्लीस॥
सोम वंश जद्दव नृपति। देव गिरी बसि जीस॥ छं०॥ १५॥

कवित्त॥ देवगिरी जद्दव नरेश। अति प्रबल तपन तप॥
संगीतह बर कला। लछन शुभ ग्यान सुभन वय॥
ग्यान[1] तान[2]गुन लछन। भेद सुन ग्यान विचारं॥
तास राज संमीप। रहौं नट विद्य उचारं।
ता यच सु पाय अन्नेक गुन। रहैं सु तहं लिखि दीव पर॥
राजंत राज जद्दव नृपति। ज्यों सुदेव[3] पति नाक गुर॥ छं०॥ १६॥

मैं उनका नट हूं आपका नाम सुन यहां आया।

गाथा॥ तिहि ग्रह नट वर रूपं। आए संगेव सीष कुरषेतं॥
तुम गुन अति संभरियं[4]। आवन हूअ एम दिल्लि मझ्झेनं॥ छं०॥ १७॥

राजा का पूछना कि उनकी कन्या का बिवाह किसके साथ निश्चय हुआ है।

कहि संभरि नृप राजं। हो नट राइ सुनहु वर बचनं॥
किहि व्याहन वर संगं। को राजन कवन घर मझ्झं॥ छं०॥ १८॥

नट का कहना कि उज्जैन के कमधज्ज राजा के यहां सगाई ठहरी है।

पर घर उजेन मझ्झं। करि पामरि सगप्पनं राजं॥
शुभ अंत करि आदं। व्याहन मन कीन राइ कमधज्जं*॥ छं०॥ १९॥

(१) मो०—तान। (२) मो०—मान।
(३) ए०—कृ०—को०—इंद। (४) ए०—कृ०—को०—संभरिय।
* व्याहन कीन कमधज्जं।

दूहा ॥ कै सगपन जद्दव नृपति। करै सु दिसि कमधज्ज ॥
कोई पुच अनूप है। तिन गुन व्याहन कज्ज ॥ छं० ॥ २० ॥
व्याहन मन कमधज्ज करि। सगपन राजद्दोरं[1] ॥
पंस्सारी दिय पुच पर। तिहि पुची बर दौरं ॥ छं० ॥ २१ ॥
पुची वरी उज्जेन दिसि। पहिलै पंग स पुत्त ॥
ग्रबन गवन पुर आदि दै। पढि जद्दव ग्रह नत्त ॥ छं० ॥ २२ ॥

यादव राजा ने सगाई के लिये ब्राह्मण उज्जैन भेजा है। पर लड़की को यह सम्बन्ध नहीं भाया।

गाथा ॥ पठवन किय दुज जद्दों। पुची दीथ दुरो[2] उज्जेनं ॥
तिहि पुचो नारत्तं। व्याही पंग पुत्त अज इंदं ॥ छं० ॥ २३ ॥

नट का शशिव्रता के रूप की बड़ाई करना।

दूहा। सुनि राजन क्यों करि कहौं। जो शशिवृत्ता रूप ॥
जीह एक ब्रम्हन न बनि। तिन गुन ब्रम्ह अनूप ॥ छं० ॥ २४ ॥

सभा उठने पर राजा का नट को एकान्त में बुलाना।

तब राजन उठी सभा। फिरि दीनी सब सीष ॥
अंदर नट बुलाइ कैं। पुछिय बिगति बिसीष[3] ॥ छं० ॥ २५ ॥

नट का शशिव्रता का रूप वर्णन करना।

कवित्त ॥ कहै सु नट राजिंद। ब्रह्म आमोदक दिन ॥
चंद कला मुष कंज। कच्छि सदजँघ सढपनन ॥
नैंन सु म्रग शुक नास। अधर बर बिंब पक्क मनि ॥
कंठ कपोत म्रनाल भुज्ज। नारंगि उरज सनि ॥
कटि लंक सिद्ध शुभ जंघ रँभ। चलन हंस गति गयँद लजि ॥
सा कुंमरि काज ब्रम्मिय नहनि। मनों मेनिका रूप सजि ॥ छं० ॥ २६ ॥
दोहा ॥ कह गुन बरनौं राज कवि। कुंअरी जद्दव नाथ ॥
बिधना रचि पचि कर करी। मनुं मेंनिका समाथ ॥ छं० ॥ २७ ॥

(१) मो०—रजद्दोरं। (२) ए०—कृ०—को०—पुरं।
(३) ए०—कृ०—को०—बिसेष।

उसका रूप सुन राजा का आसक्त हो जाना और नट से पूछना कि इसकी सगाई मुझ से कैसे हो ।

अरिल्ल ॥ सुनि राजन त्यों कौतनं । लग्गो सौन केतु कन दानं ॥
　　कहै नट कैं राजंन वर प्रेमं । मद सगपन मो करहि सुनेमं ॥ छं० ॥ २८ ॥

नट का कहना कि इसका उत्तर पीछे दूंगा । मुझ से इस में जो हो सकेगा उठा न रक्खूंगा ।

दूहा ॥ पुनि नट वर यों उच्चरिय । फिरि कहिहौं राजिंद ॥
　　जो मुझ कीनो होइ है । तो करि दैां नृप इंद ॥ छं० ॥ २९ ॥

राजा का नट को इनाम देकर विदा करना, नट का कुरुक्षेत्र की ओर जाना ।

तब राजन नट सोंप दिय । गज सु एक है पंच ॥
　　चल्यौ दिसि कुरषेत प्रति । परसन चरि चरनंच ॥ छं० ॥ ३० ॥

ग्रीष्म बीतकर वर्षा का आगमन हुआ, राजा का मन शिव-व्रता के ओर लगा रहा ।

अरिल्ल ॥ ग्रीषम रिति बित्ती सुभ राजं । पावस आगम भई समाजं ॥
　　सुनि नट बैन अपुब जदव नथ । नन धीरज्ज धंस आनम पथ ॥ छं० ॥ ३१ ॥

राजा का शिव जी की पूजा करना, शिव जी का प्रसन्न होकर आधी रात के समय दर्शन देना ।

दूहा ॥ चर सुध राजन करन । अमिय मास जव संग ॥
　　अद्ध निसा शिव आइ कै । दिय सु वचन मन रंग ॥ छं० ॥ ३२ ॥

शिव जी का मनोरथ सिद्ध होने का बर देना ।

जो कामन मन सहई । सो पूरे चर ईस ॥
　　मन चिंता करि राज गुर । आयो गुन गुरु दीस ॥ छं० ॥ ३३ ॥

राजा का स्वप्न में बर पाकर प्रसन्न होना और किसी तरह वर्षा-ऋतु काटना ।

कवित्त ॥ हुअ प्रभात जब राज । सुपन मन मद्धि राज रस ॥
　　प्रहन होइ शिव शिवा । काम सीझै सु इंद जस ॥

मन जाने बर अप्प। लग्गि ओनान राज उर॥
चिप महायतगैंद[1]। बहुरि उतरैन अवर पर॥
नन धीर करत पावस सुरिति। छिन छिन जुग जुग जान जिय॥
बर मोर सोर दद्दुर बचन। लग्गि तपन तन अस्सम किय॥ छं०॥ २४॥

वर्षा की शोभा का वर्णन-राजा का शशिव्रता के विरह में व्याकुल होना।

कवित्त॥ मोर सोर चिहुं ओर। घटा आसाढ़ बंधि नभ॥
बच दादुर झिंगुरन। रटन चातिग[2] रंजत सुभ॥
नील बरन बसुमतिय। पहिर आभंन अलंकिय॥
चंद बधू सिर बंज[3]। धरे बसुमत्ति सु रज्जिय॥
बरषंत बूंद घन मेघ सर। नव सुमरै जद्दव कुँअरि॥
नन हंस धीर धीरज सुनन। इष फुट्टे मनमथ्थ करि॥ छं०॥ २५॥

वर्षा वर्णन-राजा का विरह वर्णन।

छंद पद्धरी॥ घन घटा बंधि नभ मेघ छाय। दामिनिय दमकि जामिनिय जाय॥
बोलंत मोर ।गर बर सुघाइ। चातिग्ग रटत चिहुं ओर नाइ॥छं०॥ ३६॥
दादुरन सोर दस दिस डराइ। रह पंथ पथिक थकि पाइ साइ॥
विरहिनी हूरि जिन[4] पंथ नाह। तिहि बुंद लगत जनु ईष जाह॥छं०॥३७॥
दंपती करैं क्रीडा उलंग[5]। मनमथ्थ रहसि बढि अंग अंग॥
विरहनी रटत पप्पीह[6] नार। प्रफुल्लित लता लहरिय बार॥छं०॥३८॥
घन हच्छ लता लखिपुष्फ[7] मंत। सब रंग रंग पावसह कंत॥
उछ्छरिय चल्लिय सलिता संपूर। चलि मिल्लिय संग सायरह नूर॥छं०॥३९।
रति करन क्रीलनह[8] राज थाह। नन हंस धीर मन सुष्ष नाह॥
नहि सजे सुष्ष सवि विषम बाइ। तन होत तपनि शीतल सुहाइ॥छं०॥४०॥
मन प्रीत सुचय गय नारि मांहि। अतिताप अंत तन रोम मांहि॥
नन नींदसुष्ष[9] नल राज अंग। लग्गेसु बाग मन मथ्थ पंग॥छं०॥४१॥

---

१. ए० कृ० को०--गयंद, गयँद। २ मो०--चातुक। ३ मो०--ध्वंद।
४ ए०--तिन। ५ मो०--कृ०--उलंग। ६ मो०--बप्पीह।
७ ए०--पुष्प। ८ ए० कृ०--कील। ९ मो०--सुषं।

सेदेव अंग अँग रोम राइ। जानै न कोइ दर खबर भाइ॥
यों करत गई पावसी विषम्म। किय सुमन[1] दसा दच्छन करंम ॥छं०॥४२॥

वर्षा बीत कर शरद का आगमन।

दूहा॥ गत पावस आगम शरद। गई गुडन नभ मान॥
ज्यों सद गुरु भिखि अंदरद। [2]मिखि प्रगट गुरु ग्यान॥ छं०॥ ४३॥

शरदागमन-शरद वर्णन।

सुक्कि पंक उत्तरि सरित। गय वल्ली[3] कुमिलाइ॥
जलधर बिन यों मेदिनी। ज्यों पति हीन त्रियाइ॥ छं०॥ ४४॥
छंद पद्धरी॥ न्नमलिय[4] कला उग्गयो सोम। कंदर्प प्रगट उदित्त[5] व्योम॥
सरिता सुनीर आए निवांन। पंगु रन हरै चित्र द्रग सजान॥
मल्लिका फूल सुगंध धाय[6]। संजोगि कंत रहिं लपटाइ॥
फल फूल सकल लूटंत अंब। जल प्रभा सुभ्भ सुनि राज ब्यंब॥
देवास पूजि न्नप रजि विवेक[7]। सिर छत्र चौर राजंत[8] नेक॥
आगम्म शरद रितु चलन साज। आनंद उम्भर उमगे सु राज॥
अति प्रीति सूर सामंत काज। पति नाक सभा हेमंत लाग॥
किय सुमन चलन गिरि दलनेस। ओतान राग लग्यो अलेस॥छं०॥४५॥
अरिल्ल॥ पावस रितु कीलंत सु राजन। फिरि आइय दिन सरद समाजन॥
करन राज क्रीडा आषेटं। संक्रमि देस मह्हि मन भेटं॥ छं०॥ ४६॥

राजा का अपने सरदारों के साथ शिकार के लिये तय्यारी करना।

कवित्त॥ सम सिकार कविराज। सबर चतुरंग सु सज्जिय॥
सघन सूर सामंत। अप्प अप्पन भर गज्जिय॥
रंजि राज प्रथिराज। राज कीलन मन चाइय[8]॥
बर पहन जद्दवन। दून राज पै पठाइय॥

(१) मो०--दिसा। (२) मो०--मिलै पगट। (३) मो०--बेली।
(४) मो०--निम्मेली। (५) मो० ह० को०--उद्दित सु। (६) ए० ह० को--धाइ।
(७) ए०--ह०--को०--विमेक। (८) मो०--राजत अनेक।

स्रोतान राग बहुआन हुअ। कथा जंपि संक्षिप्त किय॥
अब कहत कथ विस्तार किय। जो राजन हुनन करिय॥ छं० ॥ ४७॥

राजा का शिकार के लिये सवार होना।

गाथा॥ नह दिन अन्तर क्रमियं। राज[१] कीलंत अप्प घर मक्कं॥
एक सुदिन राजानं। कीलन आषेट अप्प चढ़ि चलियं॥ छं० ॥ ४८॥

दूहा॥ कील राज आषेट चढ़ि। अन्तर दिन हुअ आदि॥
मिलिन जोग विधि लिखियवर। करि सनह चढ़ि सादि॥ छं० ॥ ४९॥

माघ बदी मङ्गलवार को शिकार के लिये निकलना।

अरिल्ल॥ कीलन राज[२] चढ्ढे आषेटं। माघ वद्दि दुतिया दिन भेटं॥
दिन सुभवार सु मंगल चलियं। करन सिकार अप्प चढ़ि चलियं॥ छं० ॥ ५०॥

राजा की धूमधाम का वर्णन।

कवित्त॥ चढ़िय राज प्रथिराज। साज आषेट लिए सजि॥
हथ्थ सुभट सामंत। संग होना सु तुच्छ रजि॥
जाम देव का कन्ह। अत्त ताई निडर गुर॥
कनि संची कैमास। राव चामंड जुभ्भक[३] भर॥
परमार सिंघ सूरन समथ। रघुवंसी राजन सुबर॥
इतनें सुद्धिन भर सेन चलि। उडी रेनु आकास पर॥ छं० ॥ ५१॥

बन में जानवरों का वर्णन।

बागुर जाल बयल्ल। हिरन चीतें सु स्वांन गन॥
जालबूत, खग, विहंग। विवाह तहीय चंचल बन॥
सर नावक बंदूक। चरित जन बंसन विरञ्जिय॥
गै जिमि गिरि करि खग। अप्प बन संपति सज्जिय॥
चै भारि भईय कीनन सकल। मग अभंगि दल संचरिय॥
विल्लन सिकार चढ्ढिय नृपति। प्रथिराज मचि संभरिय॥ छं० ॥ ५२॥

शिकार का वर्णन।

(१) मो०--हलाधव। (२) मो०--भाइय। (३) मो०--चढ्ढेल।

इन[1] सु साज म्रगया सु । राज उत्तंग अंग वर ॥
निरष निसव संघरहि । निमिर जोजन जोजन सर ॥
छित्त लिये जिम पवन । वेग जग्गै जिम अग्गिय ॥
घट छुट्टै जिम सद्द । उरद्द पक्कनाक विसग्गिय[2] ॥
यों बंधि राज आषेट वर । वपु सुव सुभ्र दिष्ये सु चष ॥
चह संगि अंपि संगल पवन । सवै होइ जोजन समष ॥ छं० ॥ ५३ ॥
घुर घुंत घन स्वांन । अप्प पंजर तीतर वर ॥
लच्छ जान वग्गुरि हि । फंद फैदैत सुवर धर ॥
धनक वान दक्कां सु । सिंघ पंजर अल रष्षन ॥
पंट पैर विसमिल्ल । नार नारक्क चिच पन ॥
सुर चढ्ढ तुरस जग्गै रसन । भुज्जै साथ श्री नाथ पति ॥
कविचंद विरद मंजन करै । श्रवन सुनै दिल्लिय न्रपति ॥ छं० ॥ ५४ ॥

शिकार पर जानवरों का छोड़ा जाना ।

गाथा ॥ जिन जिन छुट्टे पंषी । थावर जलह जंगमं जोनी ॥
रुसि पालं चरि[3] पालं[4] । भूपालं काल प्रति पालं ॥ छं० ॥ ५५ ॥

भालू, सूअर आदि का आगे होकर निकलना ।

भालुक आइ सहीयं । बाराहं कोस अट्ठयं पंचं ॥
आतुर षरि राजानं । अति अदभुत रूप सूकरयं ॥ छं० ॥ ५६ ॥

राजा के बन में घुसने पर कोलाहल होने से शूकरों का भागना ।

दूहा ॥ गये सुबन राजन सुभर । करन घात सु प्रपंच ॥
कोलाहल सुनि सूकरह । उठि चय कोस पुलंच ॥ छं० ॥ ५७ ॥
सिंहि को भर इक प्रबल षह । षोदि सुचै डर नार ॥
फिरि चष्षी राजन प्रति । ब्यौरो बोल उचार ॥ छं० ॥ ५८ ॥

---

(१) क्ष०-राजन ।　　(२) ए०-क्ष०-को०-राजन ।　　(३) ए०-शुभ्र ।
(१) ए०-इन ।　　(२) मो०-विकस्सिय ।
(१) मो०-हर ।　　(२) मो०-माल ।

तब सरदारों का भी वहां पहुंचना, एक वधिक का आकर शूकर का पता देकर राजा से पैदल चलने के लिये निवेदन करना ।

और सकल सामंत भर । आइ संपते तथ्य ॥
अरज राज प्रथिराज सम । कही बधिक इह[1] कथ्य ॥ छं० ॥ ५८ ॥
चय सु दिवस राजन क्रमिय । तीस कोस चै अग्ग ॥
जंगल धरनें बेद चय । सिल नाहर सुरंग ॥ छं० ॥ ६० ॥
बधिक कही इह राजप्रति । घात करै सुभ संच ॥
दल सम्रह तजि चल्लियै । तुबक गही तुर तंच ॥ छं० ॥ ६१ ॥

राजा का तुरंत घोड़ा छोड़ तुबक कन्धे पर रख बाराह की खोज में चलना ।

तब राजन्न तुरंग तजि । गहि दिढ़ तुबक सुकंध ॥
कोहर मध्य बराह वर । करिय चोट सुर संध ॥ छं० ॥ ६२ ॥

सूअर को राजा ने मार कर बधिक को इनाम दे कर सुन्दर बारी में विश्राम किया, समय होने पर भोजन की तय्यारी होना ।

कवित्त ॥ हनिग राज बाराह । अप्प बधिक इनाम दिय ॥
सुभर सकल सामंत । रंजि राजन्न[2] सुभंनिय ॥
बारी को सदुआन । तास धरा ग्रह सुब्बर ॥
तहं विराम करि राज । अवर सामंत अप्प जुर ॥
जब भई गोठि तथ्थह सुबर । तब परिहार सु सह किय ॥
सामंत सुभर राजंन[3] अप । आहारे बिंजन सुनिय[4] ॥ छं० ॥ ६३ ॥

चारों ओर राजा के शिकार की बड़ाई होना ।

दूहा ॥ दिल्ली वैचै वैगहन । खना * अषेटक राज ॥
चावद्दिसि सुर जंपई । धन चहुआन समाज ॥ छं० ॥ ६४ ॥

---

(१) मो०--इक । (२) मो०--राजप्रति । (३) मो०--राजान ।
(१) मो०--धारी । (२) मो०--राजान । (३) मो०--सय ।
* ए०--कृ०--को०--वैगहन बरन चखेटक राज ।

कवित्त ॥ उभय लत्त म्रग सुदिन । बंधि पै दैन रयनि वर ॥
यों बंधे म्रग बीय । कहै ओपमा चंद वर ॥
मन बंधि कुलटा विटप । ग्यांन बधि मुकनित आवै ॥
दिन बंधि आवै कुमति । काल नर बुद्धि डुलावै ॥
आनई लज्ज गुन जस पकरि । आनि संचि आवै अजस ॥
आनई क्रोध वर कलह को । यों आने म्रग बीय गस ॥ छं० ॥ ९५ ॥
नाम स्वान गति सीह । पत्त पर भवन वाय पुर ॥
कल दृढ़ अग्गि सु ज्वाल । जीव पुज्जै न चित्त जुर ॥
दीप नयन प्रज्जरै । कन्न लंबे कंध डारे ॥
कवि ओपम कवि चंद । वीज चंचल गति चारे ॥
अति ज्वाल परिग्रह रोसभर । दुति तरंग छिति जल छलिय ॥
पासर कपाट पंजर विहर । राज पास दसदिसि चलिय ॥ छं० ॥ ९६ ॥

राजा का अकेले बधिक के साथ शिकार के पीछे चलना और सरदारों का राजा के पीछे पीछे चलना ।

कवित्त ॥ इक्क समय राजन्न । करन क्रीडा धर अप्पं ॥
विपन मध्य संक्रमन । करन आखेट सु तप्पं ॥
ग्रह करि तुपक सु राज । खग्ग छत्ती धर चल्लिय ॥
अवर सूर सामंत । फौज पच्छें धरि हल्लिय ॥
कर दथ्य डार इक्कन सुपर । चले रोज तुछ बधिक सथ ॥
लग्यौ सुरंग आखेट कौ । कस्यौ राज पर भूमि पथ ॥ छं० ॥ ९७ ॥

शुकी का शुक से पूछना कि दिल्ली के राजा के गन्धर्व विवाह का समाचार कहो शुक ने कहा कि जादव राजा ने नारियल देकर ब्राह्मण को भेजा ।

पुच्छ कथा शुक कहो । समद गंध्रवी सुप्रेमहि ॥
स्रवन भंमि संजोगि । राज समधरी सुनेमहि ॥

(४) उपमा सु ।　　　　(५) मो-सु ।
(१) आखेटक ।

... ... । इम चिंतिय मन मझ्झि ।
कै करो पनि जुग्गनि ईसह । ईस पुज्जै सु अमीसह ॥
शुक चिति बाल अति लघु सुनत । ततक्षिन विस उपजै तिहि ॥
देव सभा न अहुव नृपति । नाल केर दुज अनुसरहि ॥ छं० ॥ ६८ ॥

ब्राह्मण का जैचन्द के यहां जाकर उसके भतीजे वीरचन्द से शशिव्रता की सगाई का संदेसा देना। एक गन्धर्व यह सुनता था वह तुरंत देवगिरि की ओर चला।

नाल केर दुज गहिय। द्वार जै चंद गयो बपु ॥
करी षबर हे जमह। आप अंदर बुलाइ अप ॥
नाल केर दुज आनि। कह्यो राजन अब धारी ॥
देव सु गिरि न्रिप थान। पुंज ससि वृत्त कुमारी ॥
सो दइय बंध नृप बीर कहु। लगन मास दिन पंच वर ॥
सुनि श्रवन एह गंध्रव कथ। चल्यौ सु दक्खन देव घर ॥ छं० ॥ ६९ ॥

गन्धर्व का शशिव्रता के पास आना, वह वन में विचर रही थी।

दूहा ॥ चल्यौ सु दक्खिन देव गिरि। जहां शशिवृत्त कुमारि ॥
विपन सहित क्रीड़ा करत। समह बाल चितचारि ॥ छं० ॥ ७० ॥

सोने के हंस का रूप धरकर गन्धर्व का दिखलाई देना, शशिव्रता का उसको पकड़ना और पूछना कि तुम कौन हो। हंस का कहना कि मैं गन्धर्व हूं देवराज के काम को आया हूं।

कवित्त ॥ हेम हंस तन धरिय। विपन मद्ध विश्राम किय।
दिष्षि तास शशिवृत्त। अनिहि अचरिज्ज मानि जिय ॥
वल कर गहिय सु तत्व। चत्त लै करि तिहि पुच्छिय ॥
कवन देव तुम थान। कवन माया तन अच्छिय ॥
उचरौ हंस ससिव्रत्त सम। मति प्रधान गन्धर्व हम ॥
सुरराज काज आए करन। तीन लोक हम बाल गम ॥ छं० ॥ ७१ ॥

शशिव्रता का पूछना कि हम पहिले कौन थीं और हमारा पति कौन होगा हंस का कहना कि तू चित्ररेखा नाम की अप्सरा थी, अपने रूप और गान के गर्व में इन्द्र से लड़ गई इससे दक्षिण के राजा की बेटी हुई।

कवित्त ॥ कहै बाल सुनि हंस। कवन हम पुव्व जम्म कह ॥
कवन पत्ति हम लहँहिं। लेव विहार लहो इह ॥
तबै हंस उच्चरौ। सुनहि शशिवृत्ता नारी ॥
चित्ररेष अपच्छरि। सगीन अनि रूप धरारी ॥
तिहि गरव इन्द्र सम कलह करि। क्रोध देववंडी सुरस ॥
दच्छिन नरेस न्रप तान वँधु। पुंज ग्रहै अवतार सुम ॥ छं० ॥ ७२ ॥

हंस ने कहा कि पङ्ग अर्थात् कान्यकुब्ज नरेश के भतीजा वीरचन्द्र के साथ तुम्हारे मा बाप ने सगाई की है पर वह तुम्हारे योग्य बर नहीं है।

चौपाई ॥ कहै हंस सुनि बाल विचारी। पंग बधुर बीर सु पुत्तारी ॥
तिहि तु दई मातु पितु बंधं। सो तुम जोग नहीं वर कंधं ॥ छं० ॥ ७३ ॥

उसकी आयु एक ही वर्ष है, इस लिये दया करके राजा इन्द्र ने मुझको तुम्हारे पास भेजा है।

तेम रहै वर वरष इक्क महि। षय गय अनन ज्ञुमिक्क है समतहि ॥
तिहि चार करि तुमहि पै आयौ। करि करुना यह इन्द्र पठायौ ॥ छं० ॥७४॥

शशिव्रता ने कहा कि तुमने मा बाप के समान स्नेह किया सो तुम जिससे कहो उसी से मैं ब्याह करूं॥

तब उच्चरिय बाल सम तेहं। तुम माता सम पिता सनेहं ॥
मुझक सहाय अवरि को करिहै। पानि ग्रहन तुम चित अनुचरिहै ॥
छं० ॥ ७५ ॥

हंस का कहना कि दिल्लीपति चौहान तुम्हारे योग्य बर है।

चौपाई ॥ तब बोल्यौ दुजराज बिचारं । सुनि सखिदत्त कथ्य इक सारं ॥
दिल्ली वै चहुआन सचा भर । सो तुम जोग चिन्त्यौ चम बर ॥
छं० ॥ ७६ ॥

उसके सौ सरदार हैं, उसने गजनीपति को पकड़कर दण्ड लेकर छोड़ दिया ।

सत सामंत सूर बलकारी । तिन सम जुद्ध सु देव बिचारी ॥
जिन गहियौ सुर बर गज्जन वै । चव गय मंडि छंडि फुनि दिय वै ।
छं० ॥ ७७ ॥

महा बली चालुक्य भीमदेव को जीता है । यह सुन शशिव्रता का प्रसन्न होकर कहना कि तुम जाओ और उन्हें लाओ जो वह न आवेंगे तो मैं शरीर छोड़ दूंगी ।

गुज्जर वै चालुक भीमनर । ते दिन राति डरै जंगल घर ॥
बरन जोग तुम नेह बिचारं । सुनि की सुंदरि हरष अपारं ॥ छं० ॥ ७८ ॥
तहां तुम पिता क्षपा करि जाउ । दिल्ली वै अनुराग उपाउ ॥
मांस षटह वौ इत्तह मंडों । ध्युना आवै तौ तन छंडों ॥ छं० ॥ ७९ ॥

हंस वहां से उड़कर दिल्ली आया ।

तब उड़ि चल्यौ देव दिस उत्तरि । ढिग ससिव्रत रष्षि निज सुंदरि ॥
जुग्गिनि पुर आयो दुजराजं । सोवन देह नगं नग साजं ॥ छं० ॥ ८० ॥

बन में शिकार के समय हंस का आना उसे देखकर आश्चर्य में आकर पृथ्वीराज का पकड़ लेना ।

कवित्त ॥ वय किसोर प्रथिराज । रम्य चा रम्य प्रकारं ॥
सेत पष्य बिय चंद । कला उद्दित तन मारं ॥
विपन मध्य चहुआन । हंस दिष्यौ अप ऋष्यिय ॥
चरन भग्ग दुति हेत । हेम पक्खी वियलष्यिय ॥
आचिज्ज देषि प्रथिराज बर । धाइ न्वपति बर कर गहिय ॥
आपुच्छ दुज्ज गति दूत कथ । रचसि राज सों सब कहिय ॥ छं० ॥ ८१ ॥

दूहा ॥ विपन मध्य आचिज्ज हुए । दिष्पि राज प्रथिराज ॥
धून दून कलधौत तन । हंस सहर विराज ॥ छं० ॥ ८२ ॥

संध्या के हंस रूपी दूत का सबको हटाकर राजा को पत्र देना ।

संझ्झ सपत्तौ न्त्रपति पै । दुन सु जद्दव राइ ॥
वर कग्गद न्त्रप दध्य दै । कहि श्रोतान वधाइ ॥ छं० ॥ ८३ ॥

दूत का कहना कि एकान्त में कहने की बात है । इतना कहकर चुप हो जाना ।

कह्यो दून मन अप्पनै । जो त्रंनो विधि जोइ ॥
दोषु[1] जानि नन ग्रंन वहि । न्त्रप श्रोतान न होइ ॥ छं० ॥ ८४ ॥
चौपाई ॥ अति सु मनह चिंते परि मांन । मानहु थके सिंध जल वांन ॥
दारुन अप्प एक सोइ जाइ । चिंतौ कहा सु अंनह पाइ ॥ छं० ॥ ८५ ॥
दूहा ॥ इह कहि वत्त ठठुक्कि रहि । उत्तर एक न आइ ॥
मानो उरग छछूंदरी । कंठ लगावहि धाइ ॥ छं० ॥ ८६ ॥
गाथा ॥ मुप जंपी मन घत्तं । दूतं जे नवाइ हिर पुछं ॥
घर चहुआन कमानं । किम जदों नमों नम नाउं ॥ छं० ॥ ८७ ॥

हंस का कहना कि शशिव्रता का गुण कहने को शारदा भी समर्थ नहीं है ।

दूहा ॥ इह अप्पी चहुआन सों । नतो मार कहि आइ ॥
सुनिवेकों ससिहत्त गुन । सारदह ललचाइ ॥ छं० ॥ ८८ ॥

चन्द्र और सूर्य के बीच में शशिव्रता ऐसी सुशोभित है मानों शृङ्गार का सुमेर हो ।

राका अरु सूरज्ज बिच । उदै अस्त दुहु वेर ॥
वर शशिव्रत्ता सोभई । मनों स्रृङ्गार सुमेर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

शशिव्रता के रूप का वर्णन ।

इन वै इन रूपह तरुनि । इन गुन आवै मान ॥
सो बर बर कविचंद कहि । सुनहु तो कहूं प्रमान ॥ छं० ॥ ९० ॥

(१) मो०—देषु ।

छंद चोटक ॥ बय संधिह बाल प्रमान व्रनं । कहिं चोटक छंद प्रमान सुनं ॥
बय स्यांमऽह ग्रीष्म अंकुरयं । अह अंत निसागम संकरयं ॥ छं० ॥ ९१ ॥
जल सैसव सुद्ध समान भयं । रवि बाल बद्धिक्रम ज्ञौ अथयं[1] ॥
बरसै सब जोबन संधि अती । सु मिलें जनु षित्तह बाल जती ॥ छं० ९२ ॥
जुर चौ लगि सै सब जुव्वनता* । सुमनों ससि रंतन राज[2] चिता ॥
जु चलै सुरि मारुत अंकुरिता । सु मनों सुरवेस सुरी सुरिता ॥ छं० ॥ ९३ ॥
कलकंठ सु कंठय पंष अली । गुन जंपि कवित्त सु चंद बली. ॥ छं० ९४ ॥

कवित्त ॥ ससिर अंत आवन बसंत । बालह सैसव गम ॥
अलिन पंष कोकिल सुकंठ । सजि गुंड मिलत भ्रम ॥
सुर मारुत सुरि चले । सुरे सुरि वैस प्रमानं ॥
तुछ कों परसिस फुट्टि । आन किस्सोर रँगानं ॥
लोनी न अमि नक्ष स्यांस मन । मधुप मधुर धुनि धुनि करिय ॥
जानी न वयन आवन बसन । अग्याना जोबन अरिय ॥ छं० ॥ ९५ ॥

कवित्त ॥ पत्त पुरातन झरिग । पत्त अंकुरिय उठ्ठ तुछ ॥
ज्यों सैसव उत्तरिय । चढ़िय सैसब किसोर कुछ ॥
शीतल[3] मंद सुगंध । आइ रिति राज अचानं ॥
रोम राइ अंकुच नितंब । तुच्छं सरसानं ॥
बढ्ढै न सीत कटि छीन ह्वै । लज्ज मांन टंकनि फिरै ॥
ढंकै न पत्त ढंकै कढै । बन बसंत मंत जु करै ॥ छं० ॥ ९६ ॥

पृथ्वीराज का शशिव्रता का रूप सुनकर उसके मिलने की चिन्ता में रात दिन लगे रहना । सबेरे उठते ही राजा के दूत से पूछना ।

दूहा ॥ श्रवनन भव श्रोतान व्रप । मन बंछै चषुआन ॥
मनु ससिव्रत्त कुंआरि कौ । पर्यो उर व्रर बान ॥ छं० ॥ ९७ ॥

(१) मो०—अत्थमियं । * मो०—सु लगी जनु शैशव योबनता ।
(२) मो०—रोज । (३) मो०—शीत ।

कवित्त ॥ निसि नरिंद चहुआन । चित्त मनोरथ्थ विचारै ॥
भई दीह सब निसा । निसा सयनंतर धारै ॥
सयनंतर ससिवृत्त । चाटु चटु वैन उचारैं[1] ॥
चारु चारु बर वयन । मान मानति संभारै ॥
देवान मनोरथ चित्त वर । भव भव कवन कह करै ॥
मो प्रान दूत पुच्छे न्रपति । अहोवै चित्ते धरै ॥ छं० ॥ ९८ ॥

हंस का राजा देवगिरि का जैचन्द के यहां सगाई भेजने और शशिव्रता के पण ठानने का वृतान्त कहना ।

दूहा ॥ वर वंध्यौ ससि वृत्त कौं । अरु न्रप भान कुंआर ॥
वंदी दिन कमधज्ज कै । नाम वीरवर भार ॥ छं० ॥ ९९ ॥
ससिव्रता इन आइ कै । वर देख्यौ वर कौन ॥
न्रप वै भान स्वयंवरह । एक व्रत्त वच लीन ॥ छं० ॥ १०० ॥
जैत षंभ मंड्यौ नृपति । वान चनन इन लीन ॥
ता काजै दिसि दिसि नृपति । घर घर कग्गर दीन ॥ छं० ॥ १०१ ॥
इह अमंत[2] न्रप वर जितै । किधौ न मन्नै नाम ॥
दारुन दन लीजै नयौं । इह कहि पूरि सु ठाम ॥ छं० ॥ १०२ ॥
इह सुनंत प्रस्थान दै । वर पंचमि रवि वार[3] ॥
पच्छ चलाइ गवन्न सुनि । कांनन वीरन बार ॥ छं० ॥ १०३ ॥
ढोल बाल पावक्क वनि । सुनि परि उठ्ठय गात ॥
मानों चीय चतुर्द्दशी । कै शशि उद्दिय प्रात ॥ छं० ॥ १०४ ॥
सुनि कै आसन उठ्ठि वर । ढुंढत फिरत सु जोइ ॥
कंत कंत के करत ची । कान भनक कछु होई ॥ छं० ॥ १०५ ॥
वीर चंद जैचंद वँधु । देवह पुंज कुंआरि ॥
न्रप पठये चहुआन पै । दै शशिवृत्ता नारि ॥ छं० ॥ १०६ ॥

शशिव्रता की विरह जल्पना का वर्णन ।

(१) ए०—कृ०—को०—उचारैं । (२) मो०—अमृत ।
(३) कृ०—वार ।

आगम बीर वसंत कौ। शिशिर संपने अंत॥
प्रीतम पतन सु प्रीन कौ। दैन बांच सो कंत॥ छं० ॥ १०७ ॥

कवित्त ॥ शशिर सु विथुरत बन। वियोग बिछुरत बन कंते॥
दुचन आस रचि साथ। कंत आयो न वसंते॥
उपवन पत्त अंझरिय। बिरह पंजर संझंझरि॥
आस अनदिन हुलसि। विपन हुलसै सु समंझरि॥
अनमेष जपत इच्छा सुघन। आनँद उर भूषन तजै॥
दोऊन होइ कवि चंद कहि। असु रम्भिह धज सम सजै॥ छं० ॥ १०८ ॥

शशिव्रता का चित्ररेखा के अवतार होने तथा पृथ्वीराज के पाने के लिये रात दिन शिव जी की पूजा करने का वर्णन।

कवित्त ॥ चित्र रेष बाला विचित्र। चंद्री चन्द्रानन॥
स्वर्ग मग्ग उत्तरी। चित पुत्तरि परमानन[१]॥
काम वान सुंजुरी। बान अंजुरी सु लच्छिय॥
मार कलह उत्तरी। पुब्ब अच्छरी सु लच्छिय॥
लच्छिन बत्तीस लच्छी सहज। रति पति चित्त समंभरै॥
संग्रहै हत चहुआन कौ। गवरि पुज्ज दिन प्रति करै॥ छं० ॥ १०९ ॥

दूहा ॥ बरनी जोग बरन्न को। वर भुखें करतार॥
तिहि कारन ढुंढ़त फिरै। सत्त समुद्दह पार॥ छं० ॥ ११० ॥

वह आप अब मिल गए देर न कीजिए चलिए।

जा कारन ढुंढ़न फिरत। सो पायौ दीसीस॥
अब जहव सहित चढ़िय। दीनी ईस जगीस॥ छं० ॥ १११ ॥

मैं महादेव जी की आज्ञा से तुम्हारे पास आया हूं।

शिवा वानि शिव वचन करि। हो येठयो प्रति तुम्झ॥
कारन कुंअरि हत्त कौ। मन कामन भय मुझ्झ॥ छं० ॥ ११२ ॥

शशिव्रता के रूप गुण का वर्णन।

(१) मे०—समानन।

सुभ मच्छ जद्दव प्रिया । कहिये त्ता सु विवेक ॥
हंस कहै राजन सुनिय । उत्तिम लच्छिन केक ॥ छं० ॥ ११३ ॥

काव्य ॥ पीनो रूपीन उरजा, सम शशि वदना, पद्म पत्रायताक्षी ॥
व्यंवोष्टी तुंग नासा, गज गति गमना, दसना दृत्त नाभी ॥
संस्निग्धा चारु केशी, सृदु प्रथु जघ्ना, क्षाम मध्या सु वेसी ॥
हेमांगी कंनि हेला, वर रुचि दसना, काम वाना कटाक्षी ॥ छं० ॥११४ ॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुम सब शास्त्र जानते हो सो चार प्रकार की स्त्रियों के गुणादि का वर्णन करो ।

मुरिल्ल ॥ सुनि प्रथिराज हंस फिरि पुच्छिय । तुम सब जान सु लच्छिन लच्छिय ॥
चारि जुगत्ति त्रिया परकारं । कहु दुजराज सु लच्छिन सारं ॥ छं० ॥११५॥

हंस को देर होने के भय से कोई बात अच्छी नहीं लगती ।

दूहा ॥ कही हंस जदो सु कथ । लगि श्रोतान सुराज ॥
छिनन हंस धीरज धरै । लगै बान सम साज ॥ छं० ॥ ११६ ॥

हंस कहता है कि स्त्रियों की बहुत जाति हैं पर शशिव्रता पद्मिनी है ।

कहै हंस वर राज सुनि । अति अनेक है जाति ॥
पदमनि है जद्दव कुंअरि । आंन तरुनि अनि भांति ॥ छं० ॥ ११७ ॥

राजा का उत्तम स्त्रियों का लक्षण पूछना ।

राज कहै दुजराज सुनि । करि वरनन कथि सोइ ॥
को लच्छिन उत्तिम त्रिया । कहिये सो सब जोइ ॥ छं० ॥ ११८ ॥

हंस का पद्मिनी, हस्तिनी, चित्रणी, और संखिनी इन चारों का नाम गिनाना ।

चारि जाति है त्रीय तन । पदमिनि चत्रिनि चित्त ॥
फुनि संषिनिय प्रम्मान इह । मन नच रंजिय मित्त ॥ छं० ॥ ११९ ॥

राजा का चारों के लक्षण पूछना ।

छंद पद्धरी ॥ सुनि हंस बैनं उर लगी वत्त । विधिना लिषंत कों मिटै पत्त ।
श्रोतान राग उर लगे राज । तन लगे बान समरह सु साज ॥ छं० ॥ १२० ॥

वुल्लस राज फिरि हंस वत्त। सुनि श्रवन बेंन मन भयौ रत्त॥
पुच्छनंह राज सब त्रिय विवेक। उच्चरौ* हंस सो वत्त एक॥ छं०॥ १२१॥
तुम देव अंस जानौ सु भेउ। हम कहत परम दुज लहै केउ॥
लच्छिन प्रकार चव त्रिय विवेक। करि वरन सुनावहु भांति नेक॥ छं०॥१२२॥

हंस का लक्षण वर्णन करना।

गाथा॥ कहै विवेक सुहंसं। त्रीय प्रकार चार लहि इंदं॥
सुनि राजन सुभ वांनी। आनंदे श्रवन मझ्झनं॥ छं०॥ १२३॥

दूहा॥ तब दुजराज सु उच्चरिय, हे संभरि पुर इंद॥
पद्मिनि हस्तिनी चित्रिनी, संषिनि संषन नंद॥ छं०॥ १२४॥

स्त्रियों के उत्तम गुणों का वर्णन।

अरिल्ल॥ रत्त जीभ म्रग अंक सु लच्छिन वान इहि॥
बचन सु अम्रत धार रती रति जांनि जिहि॥
इला[1] सील कुल वाल क्रती कामोदरी॥
इन गुन नृप भय चारु सु चार जु सुंदरी॥ छं०॥ १२५॥

पद्मिनी का वर्णन।

कवित्त॥ कुटिल केस पद्मिनी। चक्र हस्तन तन सोभा॥
स्निग्ध दंत सोभा विसाल। गँध पद्म आलोभा॥
सुर सब्रुह हंसी प्रमांन। निंद्रा तुछ जंपै॥
अलप वाद मित काम। रत्त अभया भै कंपै॥
धीरज्ज छिमा लच्छिन सहज। असन बसन चतुरंग गति॥
आवंक लोइ लग्गै सहज। कांम वांन भूखंत रति॥ छं०॥ १२६॥

हस्तिनी का वर्णन।

उर्द्ध केस हस्तिनी। वक्र अस्तन दसनं दुति॥
मधुर गंध गरनाट। भुक्ति स्रम कांम बाम रति॥
गूढ़ सबद मन जा। विषान रंगन क्रामोदरि॥
चिख नयन चंचल। विसाल बरनी अंमोदरि॥

* मो०—करि हंस राज यों वत्त एक। (१) क्र० ह०—इली।

छिन रन्द उतय विरुमय लहय। वलि चितह चिन पुत्तलिय[1] ॥
तोतीय ग्यान जानैं बहुन। कंत चित्त जाइ न कलिय ॥ छं० ॥ १२७ ॥

चित्रनी का वर्णन ।

दीर्घ केस चिचिनी। चित्त हरनी चंद्रानन ॥
गंध स्रग चिप निद्र। कोक शब्दन उच्चारन ॥
मीन नील लज्जा मलीन। रत्ति मैं भय घन मारै ॥
चाहत मदन रसु रत्तिन। कामिन दास बोल उचारै ॥
धीरज्ज क्रिमा छवि लोक करि। अवलोकन गुन औसरै ॥
विस्तीर्ण अंच मोहन पढै। चित्त वित्त कंतहु हरै ॥ छं० ॥ १२८ ॥

संषिनी का वर्णन ।

अलप केस कुच स्थूल। थूल दंती उच्चारन ॥
थूल उदर संकीस। थूल क्रिस लंगध वारन ॥
घोर निद्र[2] तन नास। अलप रसना रस छंडै ॥
अलप सील गंभीर। सबद कलहंतर मंडै ॥
आचार भ्रंन नहि सुद्द मन। विधि विचार बिभचार घन ॥
आसंप संप संषिनि गुननि। सुप्प नाह पावै न तन ॥ छं० ॥ १२९ ॥

पतिव्रता के रूप तथा नखशिख शोभा का वर्णन ।

दूहा ॥ सुनौ श्रवन चहुआंन वर। देवगिरि न्रप भान ॥
रूप अनूप अनूप गति। कहि ओपम सुनि कान ॥ छं० ॥ १३० ॥

छंदनाराच ॥ चढंत वेस सामयं। अरंभ ग्रेह कामयं ॥
उठंति पच्छि पच्छिना। वियद्ध चंद्र चच्छिना ॥ छं० ॥ १३१ ॥
नषं सुरंग रंजनं। तरक्क दप्प कंजनं ॥
चलंत पेंड रच्चयौ। अरुन नील कच्चयौ ॥ छं० ॥ १३२ ॥
रची सु कंति थावकं[3]। चलंत हंस सावकं ॥
दे हंस चंग चंगुरी। उपंम काक विज्जुरी ॥ छं० ॥ १३३ ॥

(१) मो०—कुसलिय।
(२) मो०—नीद।
(३) ए० कृ० को०—जावकं।

मराल छोड़ मुक्कियं। चरंन चंपि लुक्कियं ॥
सुरेष पिंड सुक्षियं। अनंग अंग लुक्षियं ॥ छं० ॥ १३४ ॥
दीपंत जंघ पिंडरी। अराइ काम सुंदरी ॥
दुती उपंम जंघ की। किधौं उलट्टि रंभ की ॥ छं० ॥ १३५ ॥
चितिय उपंम जंघरी। धराद् काम की करी ॥
कनक्क थंभ रंभ सी। अनंग रंग रंग सी ॥ छं० १३६ ॥
नितंब तुंग मंडली। सयन्न काम की चली ॥
उतंग भाग अग्गता। मनौं तुताकि दंडिता ॥ छं० ॥ १३७ ॥
छक्षीन षीन लंकयं। कमांन काम अंकयं ॥
सरोम राइ राजई। उपंम कव्वि साजई ॥ छं० ॥ १३८ ॥
सुमेर स्रृंग कंदकै। चढ़े पपील चंद कै ॥
उपंम कव्वि ठहई। अनंक सुद्धि चढ्ढई ॥ छं० ॥ १३९ ॥
थनं विपांन थोरयौ। अनंग बान ओरयौ[1] ॥
सुरंग रोम बाल सी। जु केवलं प्रवाल सी ॥ छं० ॥ १४० ॥
उपंम चंद ग्रीव की। मनो अनंग सीव की ॥
दुती उपंम तं लहै। कपोत कंठ कंक चै ॥ छं० ॥ १४१ ॥
चिबुक्क चारु बिंद कौ। चच्यौ कलंक चंद कौ ॥
दसन्न जोति कामिनी। मनौं दमक्कि दामिनी ॥ छं० ॥ १४२ ॥
चसंत कब्बि मैं कही। सु लच्छि रंक ढंकही ॥
सुरंग ओठ अद्ध सी। सु अद्ध रेष चंद्र सी ॥ छं० ॥ १४३ ॥
दसन्न चारु मानयं। प्रभात कै प्रमानयं ॥
दिपंत जोति नासिका। सु गत्ति कीर चासिका ॥ छं० ॥ १४४ ॥
पुभी अराइ राजई। उपंम कव्वि साजई ॥
मनौं तरक्क विक्कुरे। मिलंत चंद उक्कुरे ॥ छं० ॥ १४५ ॥
तटंक कन्न राजई। उपंम ना समाजई ॥
सुकांम बाम चाढ़िकै। धरे प्रंरास बाढ़िकै। छं० ॥ १४६ ॥

(१) ए० कृ० को०--भारयौ।

सुमत्ति नास जीपकै । चुनंत कीर छीपकै ॥
सुभाइ वंक नैन की । धरंत चित्त मैंन की ॥ छं० ॥ १४७ ॥
छजंत नैंन भ्रूव ले । धरंत चंद ज्रूव ले ॥
लिलाट आड़ सोभई । अनंग थान लोभई ॥ छं० ॥ १४८ ॥
सुरंग केस पासयं । सु मुत्ति मंडि भासयं ॥
किरंन सूर राजकी । अचार दूध भास की ॥ छं ॥ १४९ ॥
चिपंड मंडयौ गुची । उपंम काक विज्जुची ॥
सोवन्न पंभ दुत्तरी । उरग्ग चीय उत्तरी ॥ छं० ॥ १५० ॥
स्रंगार भार भारियं । विलोकि काम पारियं ॥
श्रवन्न मंडनं घरी । अनंग चित्त चीं धरी ॥ छं० ॥ छं० ॥ १५१ ॥
विसाल बाल विभ्भरी । कविंद बुद्धि बिस्तरी ॥ छं० ॥ १५२ ॥

राजा का पूछना कि अप्सरा का अवतार क्यों हुआ ।

दूहा ॥ जंपि राज दुज राज सम । तुम मति रूप अलोइ ॥
कवन काज अवतार इत । सत्य कहौ तुम सोइ ॥ छं० ॥ १५३ ॥

हंस का विवरण कहना ।

हंस कहै राजन्नसुनि । [1]कहैों उतपत्ति चियेन ॥
सुनहु राज मन प्रसन होइ । बिवरि कहैों सब वेंन ॥ छं० १५४ ॥

इन्द्र और चित्ररेखा के झगड़ा तथा शाप का वर्णन ।

कवित्त ॥ एक समै सुर ईस । अप्प पुर इन्द्र थान गय ॥
आगम देव सुनेव । नाग पति अति उछाह भय ॥
अरघ पाद करि धूप । करै मंगल अपुव्व सुर ॥
सुभ आसन रजि इन्द्र । करै घर सार बारि नर ॥
अस्तुत्ति करन लग्गौ सुरिंद । तब प्रसन्न भय ईस प्रति ॥
उचरिय कूट जट इंद सोँ । सुभ दिष्यौ अच्छर नृपति ॥ छं ॥ १५५ ॥

पृथ्वी पर जन्म लेने का शाप इन्द्र का देना ।

रंभ घृताची मैन । मंजुघोषा सुरंग चिय ॥
उरवसि केसी नारि । तुरंत तिल्लोत्तमानि पिय ॥

(१) मो०--कह उतपति तिय वैन ।

किय स्रृंगार सुंदरिय। आइ उभी सुर बामं॥
देषि चियां मन प्रमुदि। हुओ मन उद्दित कामं॥
अब सरस न्रत्य कारनह काजि। जंच म्रदंग [1]उपन्न सजि
अस्तुति अनेक पढि घोष चिय। पहुपंजुलि सुर इंद्र बजि॥छं०॥१५६॥

अनेक स्तुति करने पर शिव जी का प्रसन्न होना।

तब सु कोप धरि ईस। दियौ सुर स्राप पतन धरि॥
और रंभ किय न्रत्य। सुबर अनेक बिदि पर॥
बहु बिवेक कल मान। ताल मंडै चिग्गन सुर॥
रंजि राज सुर ईस। दीन बर बानि रंभगुर॥
अति प्रमुदि चित्त कैलास पति। उभय देव आनंद हुआ॥
सुभ सभा बिराजै राज सुर। सुबर प्रमोदिय मन संमुअ॥ छं० ॥ १५७॥

शिवजी का प्रसन्न होकर बर देना कि तेरा जन्म राजकुल में होगा और ब्याह भी छत्रधारी से होगा। पर तेरा हरन होगा और तेरे कारण घोर जुद्ध होगा।

दूहा॥ करि प्रसंन सुर राज चिय। मुष अस्तुति सुर कीन॥
बर बानी पुर इंदकै। [2]यह सुबाक्य सिव दीन॥ छं० ॥ १५८॥
परै तुम्भ्भ उत्तिम घरनि। पुत्री भूमि नरिंद॥
हुअ पर्ध्यां सिर छचहै। करि सेवा हर इंद॥ छं॥ १५९॥
बचन ईस तें बर लहै। हरन होइ तुअ नारि॥
कलह केलि भावन भवन। ह्वै है जुद्ध अपार॥ छं० ॥ १६०॥

शिव की उसी बानी के अनुसार वह अपने समान पति चाहती है।

कही बांनि कैलास पति। मैनकेस सुनि नारि॥
परस दोष भरतार सम। करत सु क्रीड़ अपार॥ छं० ॥ १६१॥

(१) मो०-उपन्न। (२) किय वधाय दिवलीन।

छिन पूरा होने पर उत्तम पति पाकर फिर अप्सरा योनि पावेगी।

गाथा ॥ तुछ दिन अंतर क्रमियं। आगम भरतार पांमि उद्ध लोकं ॥
फिरि अच्छरि अवतारं पांमै तुम्भह ईस वर वांनी ॥ छं० ॥ १६२ ॥

शाप के पीछे शिव जी कैलस गए अप्सरा मृत्युलोक में गिरी, वही जादव राज की कन्या शशिव्रता है और तुम्हें उसने पति वरन किया है।

कवित्त ॥ दै सराय सुर नारि। अप्प करि ईस थान चलि ॥
घन अस्तुति कर इंद्र। प्रमुदि अति रुद्र वानि फलि ॥
चल्लै थान कैलास। परी अच्छरी [1]म्रतं पुर ॥
जद्दव ग्रह त्रिय जाइ। उअर उप्पजी कुंअरि वर ॥
देवास थान नपि भान न्रप। तिहि पुत्री ससिव्रत कुंअरि ॥
सोई वाच रुद्र देवह सुनिय। तुअ कारन साथह उअरि ॥ छं० ॥ १६३ ॥

हंस कहता है कि इस अप्सरा का अवतार तुम्हारे ही लिये हुआ है।

दूहा ॥ और सुवर संकेत [2]सुनि। हंस कहै नर राज ॥
मेंन केस अवतार हुह। तुअ कारन [3]कहि साज ॥ छं० ॥ १६४ ॥

हंस कहता है कि राजा जादव ने शशिव्रता को कान्यकुब्जेश्वर को व्याहना बिचारा है पर शशिव्रता ने तुम्हें मन सर्पण कर शिव की आराधना की। शिव की आज्ञा से मैं हंस रूप धर तुम्हारे पास आया हूं। शीघ्र चलो। राजा का प्रस्तुत होना। दस सहस्र सेना सजना।

(१) ए०—धारा।　　(२) मो०—कह।　　(३) मो०—करि।

छंदगाथा ॥ हंस कहै न्रप राज बिचारं। जो पुछै कारन कत्यारं ॥
देव गिरि जहां न्रप भानं। ता पुत्री ससिवृत्त सुजानं ॥ छं० ॥ १६५ ॥
सो मंगी कम धज्ज सुराजं। तिहि गुन सुनि चहुवानं सुताजं ॥
छंडे तमि जिम मान सुहानं। दरन दत्त जोनै चहुवानं ॥ छं० ॥ १६६ ॥
घर सेवा सुमंध्य कलेसं। तप आचरन क्रम्म संदेसं ॥
चौं गुन तास हंस भय रूपं। पुछि चिय कारन सुनिय सु भूपं ॥छं०॥१६७॥
दीछी वै अच्छे दृढ़ नेमं। चौं पठयौ सु तुम्मह प्रति प्रेमं ॥
प्रसन ईस अंबिका सुमेनं। बुल्यौ राज सैल संकेनं ॥ छं० ॥ १६८ ॥
चढ़न कहिय राजन सो देसं। उड्डि चल्यो दच्छिन तुम देसं ॥
सुनत श्रवन चल्यौ न्रप राजं। कहि कहि दूत दुजन सिरताजं॥छं०॥१६९॥
भय अनुराग राज ढिल्ली वै। दस सहस्स सज्जी न्रप हेवै ॥ छं० ॥१७०॥

राजा का कहना कि जादव राजा के गुणों का वर्णन करो।

गाथा। जंपै दुज सम राजं। तव गुन वंन कीन अपारं ॥
हम गुन किम संभरियं। लग्गे श्रोतान राग किम जहां ॥ छं० ॥ १७१ ॥

हंस का राजा भानु जादव के गुण प्रताप का वर्णन करना।

दूहा ॥ हंस कहै राजन सुनि। दृष्ट उतपति अनुराग ॥
श्रवन सुनी संभरि सु पहु। कहीं वृत्त संजाग ॥ छं० ॥ १७२ ॥

कवित्त ॥ देवगिरि नृपभान। सोम वंसी सुनपै नृप ॥
तिन अनंत बल तेज। बहुत्त है गै पैदल तप ॥
नयर मध्य कोटीस। वसै मानिक्क अनंत छवि ॥
धर्म तप्पनह पार। न कोऊ दास रचै इक ॥
सो एक लख्य पयदल पुत्तन। पग्ग जोर 'धूंनं वचै ॥
जद्दव नरिंद सब गुन कुसल। धन प्रताप दिन दिन लचै ॥छं० ॥ १७३ ॥

उनके बेटे और बेटी के रूप गुण का वर्णन।

तास पुत्र नारेन। पुत्रि ससिवृत्ता प्रमानं ॥
दुअ अनंत सूरत्ति। रूप मकरंद सु जानं ॥

(१) मो०--धूनी।

भगिनि भ्रात दुत्र प्रीत। पिता माता प्रिय मानं॥
अति उछाह रंग रमै। असन इक ठाम प्रधानं॥
सवरिव्य भई सचदह दुत्र। अति अभूत खच्छिन प्रबल॥
लाजित सरूप यिय चंद सम। राजकुंअरि राजै अतुल॥ छं० ॥१७४॥

एक आनन्दचन्द खत्री था उसकी बहिन चन्द्रिका कोट में ब्याही थी, वह विधवा हो गई और भाई उसको अपने यहां ले आया।

तिन राजन कै मंच। नाम आनंद चंद भर॥
तिन भगिनी चंद्रिका। व्याह व्याही सु दूरि धरि॥
नैर कोट विस्तार। तास थिचीय प्रमथ बर॥
अति सु प्रीति नर नारि। सुष्य अनुभवै दीह पर॥
कोइक्क दिवस भर तार वहि। तुच्छ दीह परलोक गत॥
आनई वहनि फिर अप्प ग्रह। अति सु दुष्य निसि दिन करत॥छं०॥१७५॥

वह गान आदि विद्या में बड़ी प्रवीणा थी।

दूहा॥ अति प्रवीन विद्या लहन। गान तान सुभ साज॥
केइक दिन अंतर वहिग। गइ अंते बर राज॥ छं० ॥ १७६॥

उसके पास शशिव्रता विद्या पढ़ती थी।

तिन संगह ससिव्रत्त सुत्र। पठन विद्य सुभ काज॥
देवि कुंवरि अद्भुत अवय। रंजित है अति लाज॥ छं० ॥ १७७॥

उसी के मुख से आपकी प्रशंसा सुन कर वह आप पर मोहित हो गई है।

कवित्त॥ जब थिचिन चंद्रिका। कहै गुन नित चहुवानं॥
जेस पराक्रम राज। तेइ बरनै दिन मानं॥
राजकुंअरि जब सुनै। तबै उभरै रोम तन॥
फिरि पुच्छै ससिव्रत्त। सहि एकंत मत्त गुन॥

जे जे सु पराक्रम राज किय। सोइ कहै षिचिन समथ॥
श्रोतान राग लग्यौ उभर। तो हत्त खिनौ सुनौ सुकथ॥ छं०॥१७८॥

यों ही दो वर्ष बीत गए, बाल्यावस्था बीतने पर काम की चटपटी लगी।

दूहा॥ यों वरष दुत्र वित्ति गय। भइय वैस बर उंच॥
तब कामन सु कलेव सुर। करे सेव सुचि संच॥ छं०॥ १७९॥

तभी से नित्य शिव की पूजा कर के वह तुम्हें मिलने की प्रार्थना करती रही।

हर सेवा निस प्रति करै[1]। मन वचा क्रम बंध॥
बर चहुआन सुकामना। सेवा ईस सुगंध॥ १८०॥
कवित्त॥ कहै हंस सुनि राज। करौं ब्रंनन सु कह्यो गुर॥
दिवस च्यार प्रजंत। ओर मो सरन लह्यो पर॥
सेवत नित प्रति ईस। मास पंचह वित्तिय वर॥
एक सुदिन सिव सिवा। वचन संपुट लग्गी कर॥
देवाधि देव सुनि ईस बर। करि सुचित्त कूंअरि सु व्रत॥
पारथ्थ खंड माली सरस। पर संगा गवरी करत॥ छं०॥ १८१॥
दूहा॥ इह सुनि दस दिन गए बहि। सुनि रहि वचन सुईश॥
एक सुदिन ससिवृत्त ने। किय द्रढ नेम जगीश॥ छं०॥ १८२॥
बर बरिहौं संभरि सु पहु। वियौ पुरुष सुभ भ्रात॥
मिलन कियो हर मास प्रति। भविवै संनर घात॥ छं०॥ १८३॥

शिव पार्वती का प्रसन्न हो कर सपने में बर देना।

बचन सिवा सिव बाच दिया। पति पावै चहुआन॥
बर प्रमुदिय प्रथमाधि पति। हुअ सुपनंतर मान॥ छं०॥ १८४॥
कै जानै मन अप्पनौ। कै षिचिन कै ईस॥
और शिवा सुनि ईस प्रति। किय अस्तुति बर दीस॥ छं०॥ १८५॥

(१) मो.—करन।

प्रसन्न हो कर शिव पार्वती ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है
कि जयचन्द ब्याहने आवेगा सो तुम रुक्मिणी
हरण की भांति इसे हरण करो।

कवित्त ॥ हुअ प्रसंन सिव सिवा। वोलि हूं पठय तुम्भ प्रति ॥
इह वरनी तुम जोग। चंद जोसना वान हत ॥
ज्यों रुक्मिनि हरि देव। प्रीति अति वढ़ै प्रेम भर ॥
इह गुन हंस सरूप। नाम दुजराज भनिय चर' ॥
वुल्लिय सु पिता कमधज्ज नर। व्याहन पठयौ सु गुर दुज ॥
आवै सु भ्रात जैचंद सुत। कमध पुंज व्याहन सुकज ॥ छं० ॥ १८६ ॥

राजा ने फिर पूछा कि उसके पिता ने क्यों व्याह
रचा और क्यों प्रोहित भेजा।

दूहा ॥ फिरि राजन यों उच्चरिय। सुनि दुजराज सुजान ॥
पिता व्याह क्यों कर रचिय। क्यों प्रोहित पठवान ॥ छं० ॥ १८७ ॥

हंस का कहना कि राजा ने बहुत ढूंढ़ा पर दैव की इच्छा उसे
जयचन्द ही जंचा। वहां श्रीफल ले प्रोहित को भेजा।

कवित्त ॥ कहै दुज सकल वांनि। अहो ढिल्ली नरेस सुनि॥
देवगिरी जद्दव नरेस। रचि वहु भांति व्याह गुनि ॥
अति रचना विधि करिय। तासु गुन कहि न सकों वर ॥
संपयक दुज कही। सुनि र राजंन कहै नर ॥
प्रोहित सुहत्थ जदुनाथ लै। पठइय श्रीफल सुदिन धरि ॥
कनवज्ज दिसा इकमास प्रति। चलि' राजन गुर मिलि सुजुरि॥छं०॥१८८॥

प्रोहित ने जयचन्द को जाकर श्रीफल और
वस्त्राभूषण आदि अर्पण किया।

मिले राज जयचंद। सु गुर प्रोहित्त समत्थं ॥

(१) मो.—चं। (२) मो.—चलि राजग।

पठए जद्व सुनाथ। वस्त श्रीफल सुभ सत्थं॥
हय साकति सजि पंच। सहस इक वस्त्र पटंबर॥
मुत्ति माल जुरि पंच। अवर जो वस्त व्याह पर॥
हेमंग पंच सत छेइ दुज। सुर राजन अग्गै धरिय॥
ते वस्त अनेकं विधि सुबर। रंजि राज अप्पन सु जिय॥ छं० ॥ १८८॥

टीका देकर प्रोहित ने कहा कि साहे को दिन
थोड़ा है सो शीघ्र चलिए।

मिलि प्रोहित जैचंद। दियौ श्रीफल सुबिंद कर॥
जे पठई बर वस्त। अग्ग लै धरिय राज बर॥
सोइ श्रीफल कमधज्ज। दियौ सुइ अवध पुंज नर॥
अति उछाह माननिय। मिले रस हास परसपर॥
बोलयौ तब प्रोहित सुबर। अहो राज पंगुरन सुनि॥
लै चलै बींद नमकरि [1]बिलंब। दिन तुच्छै साहौ सु पुनि॥ छं०॥१९०॥

प्रसन्न होकर जयचन्द का चलने की तयारी
और उत्सव करने की आज्ञा देना।

दूहा॥ ह्वै प्रसन्न बहु पंगुरै। दियौ हुकुम सुभ बंध॥
प्रेरि सथ्थ जब अप्प पर। आति पर घर सुभ नंघ॥ छं० ॥ १९१॥
सज्जि सेन चतुरंग नर। देवग्गिरि कज व्याह॥
अति अगनित सथ द्रव्य लिय। नर उच्छव करनाह॥ छं० ॥१९२॥

हंस कहता है कि वह पचास सहसू सेना और सात सहसू
हाथी लेकर आता है अब तुम भी चलो। पृथ्वीराज
ने दस सहसू सेना लेकर चलना विचारा।

छंद पद्धरी॥ चढि चलिय सब्ब रट्ठौर सेन। उडि रैंन रथ्थ रुकिय सुगेन॥
दस लष्ष सेन सज्जिय कमंध। वाहनिय गंध दै सजि मदंध॥छं०॥१९३॥
सा अब लष्ष पै पुच्छिय नैर। इज्जार सात दैगल सु भैर॥

(१) मो.- बिरम।

दर क्रूच परे वल वंस ¹वीर । व्याहनह काज उच्छव सु बीर ॥छं०॥१९४॥
कह हंस राज राजन सु वत्त । चढ़ि चलौ कबू रय्यन सुकत्थ ॥
तुम योग नारि बरनी ²कुमारि । हूं पठय ईस तुअ हत्त नारि ॥छं०॥१९५॥
उन लियौ हत्त तुअ हढ़ह नेम । नन करि विरम्म राजन सु एम ॥
इक मास अवधि दुजकहै वत्त । व्याहन सु काज मन करौ ³रत्त॥छं०॥१९६॥
वर ईस भयौ अह सिवा वानि । सुख लहौ बहुत हम दुज बखानि ॥
सुनि सुनि श्रवन अनुराग कीन । तन रोम अंग उम्भारि चीन्ह॥छं०॥१९७॥
दस सहस सेन सजि पास राज। चह्नैं सुचित्त करि वाज साज ॥छं०॥१९८॥

पृथ्वीराज का शशिवृता से मिलने के लिये संकेतस्थान पूछना ।

दूहा ॥ कह संभारि वर हंस सुनि । कह जद्दों संकेत ॥
कौन थान हम मिलन है । कहन वीच संमेत ॥ छं० ॥१९९॥

ब्राह्मण का संकेतस्थान बतलाना ।

गाथा ॥ कह यह दुज संकेतं । हो राज्यंद धीर ढिल्लेसं ।
तेरसि उज्जल माघे । व्याहन बरनीय थान हर सिद्धिं ॥छं०॥२००॥

राजा का कहना कि मैं अवश्य आऊंगा ।

दूहा ॥ तब राजन फिरि उच्चरै । हो देवस दुजराज ॥
जो संकेत सु हम कहिय । सो अप्पौ चिय काज॥ छं० ॥ २०१ ॥

हंस का कहना कि माघ सुदी १३ को आप वहां अवश्य पहुंचिए ।

अरिल्ल॥ सो अप्पिय हम नेम सु दृढ्ढं । तुम अवस्य आवो प्रभु गढ्ढं ॥
सेत माघ त्रयोदसि सा वद्धि । हर सुकलेव थांन सुति भावद्धि॥छं०॥२०२॥

इतनी वार्ता करके हंस का उड़ जाना ।

दूहा ॥ इह कहि हंस सु उड़ि गयौ । लग्यौ राज श्रोतान ॥
छिन न हंस धीरज धरत । सुख जीवन दुख प्रांन ॥ छं० ॥ २०३ ॥

(१) मो.-चरि ।　(२) मो.-कुंआरि ।　(३) मो.-सत्त ।

दस हजार सेना सहित पथ्वीराज का तैयारी करना।

दस सहस्र हैंवर चढ़िय। न्नप दिल्ली चहुआन ॥
हुकम सद्दि साहन कियौ। दै हृरन विलहान ॥ छं० ॥ २०४ ॥

राजा का सब सामंतों को हाथी घोड़े इत्यादि बाहन देना।

छंद भुजंगी॥ दियौ कन्ह चहुआंन मानिक्क बाजी। जिनैं देषतें चित्त की गत्ति लाजी।
सुषं मभ्भ्क पायं कढ़ै वाज राजं। मनो वग्ग भीषं छतं कढ्ढि पाजं ॥छं०॥२०५॥
दियौ बाजि इंदं बरं जास देवं। दियै तेज ऐसैं चिरं पंघ एवं ॥
धरै पाइ ऐसे इलं मक्खिक्क जैसे। सुनै जैन भ्रंमं धरै पाइ तैसे॥ छं० ॥ २०६॥
चढ्यौ राव कैमास चिन्तं तुरंगी। रहै तेज पासं उछद्दंत अंगी ॥
[1]चमक्कंत [2]नालं दिसालं खुरंगी। मनो बीज छब्बी कि आभा अनंगी छं०॥२०७
उड़ै भ्कार भ्कारं पयं नाल झारी। समं बूंद धावै मनैां चार तारी ॥
चढ़े राजहंसं सु चामंड [3]जोटं। मनो तेज बंधी मुनी बाइ मोटं॥छं० ॥२०८॥
डुलै [4]कंन नांहीं सिखीका सुग्रीवं। मनों जोति बंधी [5]सुनूवात दीवं ॥
चढ्यौ राज षीची प्रसंगं पह्रूपा। उड़ै वास ज्यों वाय [6]वग्गै अनूपा॥छं० २०९॥
बंध चैार चित्तं चमक्कंत चाहं। हरद्दार छुट्टै कि गंगा प्रवाहं ॥
चढ्यौ राज पट्टं अजानंत बाहं। कही कव्विराजं उपम्माति चाहं॥ छं० ॥२१०॥
दियै [7]बीच तारी कोई नाहि पुज्जै। बलं ताहि दिष्षै सरित्ता अमुझै ॥
दियौ म्रग्गराजं चढ्यौ देवराजी। उड़ै पंखि पाजी रही पच्छ लाजी॥छं०॥२११॥
चढ्यौ निड्डुरं राइ अंगं अभंगं। छुटै जानि तारान के व्योम मग्गं ॥
चढ्यौ हाहुलौ राइ जंभू नरिंदं। बढ्यौ बांन ज्यों तेज कम्मान चंदं॥छं०॥२१२॥
चढ्यौ लंगरी राव लंगा सुबीरं। किधों वाय बढ्यौ बुभ्रं जानि धीरं ॥
चढ्यौ राज गोइंद आहुट्ठ राजं। किधों वाय बुंदं स छुट्टीय साजं॥ छं० ॥२१३॥
चढ्थौ राव लघषं सु लषषं पवारं। भ्रमें अंग ऐसे उपम्मा विचारं ॥
किधों अग्गि दंडं भ्रजं बाल फेरैं। किधों भोर हथ्थं किधों चक्र हेरैं॥छं०॥२१४॥

---

(१) मो.—चमक्काति। (२) मो.—तालं।
(३) ए.—जोतं। (४) ए.—कैन। (५) ए.—सुनि बात।
(६) मो.—अगै। (७) मो.—बाच।

किधौं राति वोहिथ्य भ्रमि भोर नारं। कही चंद कव्वी उपंमाति चारं।
चढ्यौ चंद पुंडीर राजीव नामं। तिनं [1]ओपमा चंद देषी विरामं॥छं०॥२१५॥
जिनें गत्ति जीती सयन्नं पगारं। चली झंपि के पंष चित्तं वधारं॥
चढ्यौ अत्त ताई उतंगं तुरंगा। मनों बीज की गत्ति आभा अनंगा॥छं०॥२१६॥
चढ्यौ राव रामं [2]रघूवंस वीरं। गतिं सूर जित्ती म्रगं चंद भीरं॥
चढ्यौ दाहिमं देव नर सिंघ कैसे। मनों चित्त की अर्थ की गत्ति जैसे॥छं०॥२१७
चढ्यौ भोज राजं पहारं चिनैतं। फुटै सद्द तेजं अवाजं [3]चितंतं॥
चढ्यौ वीर जोद्धं कनक्कं कुमारं। चली क्रत्य पूरन्न आचार पारं॥छं०॥२१८॥
चढ्यौ राव पज्जून कूरंभ वीरं। वढ़े लोह अग्गं धनं जैतपूरं॥
चढ्यौ सामलौ सूर सारंग ताजी। गही होड़ वंधी वयं वाम पाजी॥छं०॥२१९॥
चढ्यौ अल्हनं वीर वंधव्व पानं। चढ्यौ दान ज्यों अहनं जुद्ध वानं॥
चढ्यौ लष्प लष्पी सलष्पं वघेला। चढ्यौ नेत ज्यों देह देषै सु हेला॥छं०॥२२०॥
चढ़े सव्व सामंत छल वलत वीरं। मनों भान छुट्टी [4]किरन्नौ कि तीरं॥
चढ्यौ वाज राजं प्रथीराज राजं। तवै पष्षर्यो वाज साकत्ति साजं॥छं०॥२२१
उड़ैं सूर ज्यों हंस तुट्टै कमंधं। वरं ओपमा चंद जंपी कविंदं॥
द्रुमं ज्यों मरोरै [5]शिरं स्वामि हेतं। मयूरं कला वाज रची वंधि नेतं॥छं०॥२२२॥
चढ़े सव्व सामंत सामंत वीरं। तवै जग्गियं जानि जोगाधिधीरं॥
जगी जोग माया सु जग्गीय थानं। प्रलीनं प्रलै ज्यों प्रलीनं प्रमानं॥छं०॥२२३॥
जगें वीर वीराधि डोरू बजावैं। नचै नद्द नंदी चिघाई चिघावैं॥छं०॥२२४॥

माघ बदी पञ्चमी शुक्रवार को पृथ्वीराज का यात्रा करना।

दूहा॥ [6]आगम निगम जांनि कै। चलि न्रप [6]सुक्रवार॥
माह वद्दि पंचमि दिवस। चढ़ि चलिये तुर तार॥ छं०॥ २२५॥

चन्द का सेना की शोभा वर्णन करना।

छंद चोटक॥ कवि चंद सु वंनन राज करं। सोइ चोटक छंद प्रमान धरं॥

(१) मो.-उप्पमा। (२) मो.-रघोवंस।
(३) मो.-चिनेतं। (४) मो.-किरन्नं।
(५) ए.-सिरं। (६) ए.-अगम निरागम।

जिहि च्यार परे सगना सगनं। सुभ अच्छिर लाइ तजै अगनं॥छं०॥२२६॥
विवहार धरै बरनं सु बरं। पढ़ि पिंगल बाहन कोन हरं॥
वर चोजन चारु सुरंग इलं। तहां और न मोर सुरंग हुलं॥छं०॥२२७॥
गज उप्पर ढाल ढलक्कि तरं। सुकहौं तहां केलि [1]अचिज्ज बरं॥
तहां पल्लव [2]लल्लित रत्त वचं। तहां जे धन दंतिय पंति रचं॥छं०॥२२८॥
झमकैं बर नंग मयूष कसी। निकसी तहां केतक सी बिकसी॥
सु चलें बर मंद सुगंध प्रकार। बढ़ी दिसि दस्स सु उज्जल मार॥छं०॥२२९॥
बजै मह रंग सु गंधन अंग। बजे सहनाइ न फेरि [3]उपंग॥
हलै बर लत्त पवन्न झकोर। घरघ्घर होहिं पिलप्पित जोर॥छं०॥२३०॥
बुलै कल कंठ सु कंठह सद्द। तहां चढ़ कव्वि वसीठ उवद्द॥
सकेस कुसंम रु अंकुस पानि। हने हर काम असो [4]गज जानि॥छं०॥२३१॥
अतसी बर पुप्फ सु वाढ़हि भृंग। बजै गज पांनि सु इंदुब रंग॥
लता ललिताइ हलावन ढाल। उतह जम लग्गय रुपतिताल॥छं०॥२३२॥
विकासित केसर [5]कुंकुम कांम। सरोज [6]सुरंभ अनूपम नांम॥
उहां मिटि ताल तरंगिनि कांम। उहां चलिते निय ना तिहि ठांम॥छं०॥२३३॥
उहां बरहा जनु उप्परि केल। किने तब ढीठ हिया छबि मेल॥
हलं जनु नेजे षजूर बसंत। ढली बन राह सुढालह मंत॥छं०॥२३४॥
तजी बर बाल सुरंग सुभेस। चल्यौ प्रथिराज सु दष्षिन देस॥
विरदै चहु विप्र कहै कविचंद। सही चहुआन प्रथी पर इंद॥छं०॥२३५॥

दूहा॥ चढ़्ढि चलिय प्रथिराज बर। देवग्गिरिधर राज।
तब सुकन्ह बरदाय बर। पुच्छिय बिगत सुकाज॥ छं० ॥ २३६ ॥
कहत कन्ह बरदाय बर। अहो राज सुभ मांनि॥
कहो पयांन सज्यौ कहां। सोहम कहौं प्रमांन॥ छं० ॥ २३७ ॥

चलने के सयम राजा को भय दिलानेवाले सकुनों का होना।

(१) मो.--अचज्जि। (२) मो--लालित।
(३) ए.--उतंग। (४) मो.--गिन।
(५) ए.--कुसुम। (६) मो.--सरूप।

कवित्त ॥ चढ़त राज प्रथिराज । सगुन भै भीत उपन्नौ ॥
स्याम अंग तन छिद्र । कलस संसुहं सपन्नौ ॥
रत्त वस्त्र आरुह्य । रत्त तिलकावलि छुट्टिय ॥
लुकत माल छुट्टियं । केस छुट्टिय कस तुट्टिय ॥
तुट्टिय अनंग भय भीत गति । मन असुभ्भ निद्रा [1]असति ॥
विम्भाइ भाइ जनमोद पति । मंद मंद सक्रति हसति ॥छं०॥२३८॥

राजा का इन शकुनों का फल चन्द से पूछना ।

अरिल्ल ॥ लो भय भीत रेपि कवि पुच्छिय । जंपि कहौ मति सोहि सु अच्छिय ॥
तुम सव जांन विभान प्रमानं । जंपि कहौ कविराज सुजानं॥छं०॥२३९॥

चन्द का कहना कि इस शकुन का फल यह होगा कि या तो कोई भारी झगड़ा होगा या ग्रहविच्छेद ।

दूहा ॥ पाछे वीर सगुन्न भय । ते कहंत कविचंद ॥
कै दंदग्गेनय ऊपजै । कै नवीन ग्रह दंद ॥ छं० ॥ २४० ॥

चन्द ने राजा को जैचन्द के पूर्व वैर का स्मरण दिलाकर कहा कि इस काम में हाथ देना मानों बैठे बैठाए भारी शत्रु को जगाना है ।

कवित्त ॥ सीस डोलि कविचंद । चित्त अंदेह उपन्नौ ॥
पुव्व वैर चहुआन । वैर कमधज्ज दिपन्नौ ॥
सवर जोर संग्राम । निवर अँगम्यौ न जाइय ॥
को जम हथ्थ पसारि । लेह [2]ग्रह अप्प बुलाइय ।
[3]मंडाय पेट डंकिन सरसि । कोन वांह सायर तिरै ॥
[4]अपसगुन जानि चहुआन चलि । दै विधान न्निम्मित करै ॥छं०॥२४१॥

वय, पराक्रम, राज और काम मद से मत्त राजा ने कुछ ध्यान न दिया और दक्षिण की ओर शीघ्रता से वह चला ।

(१) मो.-असित (२) मो.-सह । (३) ए. कृ. को.-मंडाय । (४) ए. कृ. को.-असुम्भ ।

कवित्त ॥ बेस मद्द वल मद्द । और बंध्यौ सुरतानी ॥
राज मद्द उनमद्द । काम मद्दह परिमानी ॥
अरु अवनी औतांन । तौन बंध्यौ चहुआनं ॥
दल बद्दल पावल्ल । चल्यौ दछ्छिन धर वानं ॥
[1]छतीस कुली वर वंस विय । चढ़ि प्रथिराज नरिंद चलि ॥
उपवन्न बंब वज्जी विषम । खान यान दिगपाल हलि ॥छं०॥२४२॥

पृथ्वीराज से पहिले जैचन्द का देवगिरि पहुंचना।

दूहा ॥ इन अग्गैं कमधज्ज लै । आइ संपती थांन ॥
माघ नवमि चंबक बजै । चहुआना परिमान ॥ छं० ॥ २४३ ॥

जैचन्द के साथ की एक लाख दस हजार सेना का वर्णन।

जैचन्द का आना सुन शशिव्रता का दुखी होना।

कवित्त ॥ [2]एक लष्ष दस अग्ग । सेन सज्जे कमधज्जं ॥
बीय सहस बारुन्न । सत्त हज्जार फवज्जं ॥
अद्ध लष्ष पैदल्ल । अद्ध साइक वहंतं ॥
सजि समूह चतुरंग । दिसा दछ्छिन [3]परजंतं ॥
सुनि श्रवन कुंअरि शशिव्रत्त लिय । सुनि अवाज वर बीर घन ।
चहुआन हत्त लीनी अभ्रम । प्रान हीन कद्ढन सुमन ॥छं०॥२४४॥

शशिव्रता मन ही मन देवताओं को मनाती है कि मेरा धर्म न जाय और उसका प्राण देने को प्रस्तुत होना।

दूहा ॥ भिखि पूजै वर बीर कौ । करी भगति घन भाइ ॥
बाला प्रान [4]सुकढ्ढनह । अंतर अम्म न जाइ ॥ छं० ॥ २४५ ॥

सखी का समझाना कि व्यर्थ प्राण न दे, देख ईश्वर क्या करता है। ईश्वरी लीला कोई नहीं जानता। सखियों

(१) मो.-छत्रीस। (२) ए.कृ. को.-एह।
(३) ए. कृ. को.-फरजंतं। (४) मो.-फढ्ढतँह।

का श्रीरामचन्द्र, पाण्डव आदि के प्राचीन इतिहास सुनाकर धीरज धराना।

[1]कहै सपौ समझाइ कर। पुत्र गाथा कहुं मंडि ॥
घरी अद्ध जो सुनिहि तुम्र। प्रान वाल नन छंडि ॥ छं० ॥ २४६ ॥
छंद पद्धरी॥ मिलि वाल ताहि रचि कहैं वत्त। संग्रहन भवन क्यों मिटै पत्त॥
दैवान वत्त जानै न कोइ। लिष्ये जु अंक मिट्टय न सोइ ॥छं०२४७॥
वल वीर जुद्ध पंडव नरेश। वन ग्रह्यौ राज मुक्यौ सुदेश॥
[2]जिप्पनह सब्ब दुगपाल जोग। संध्यो सुजोग तजि राज भोग ॥छं०॥२४८॥
वलि राइ जग्य आरंभ सत्य। जित्तनह इंद्र आरंभ पत्त ॥
मुक्किय सुथान तिन मान पंडि। सेवह सुदेव पाताल मंडि ॥छं०॥२४९॥
कट्टन कलंक शशि जग्य कीन। का कुष्ट अंग छिन मान हीन ॥
नघु राइ कीन राज सु अनूप। का कुष्ट काल संहर्यौ कूप ॥छं०॥२५०॥
श्रीराम हथ्थ पकर्यौ प्रवीन। आरन्य वहुत दुष सीय कीन ॥
गुरुदेव त्रिया तारा प्रमान। झकझोरि परी देवन समान॥छं०॥२५१॥
सिय लई निशाचर रूप चीन्ह। मिलि देव जुद्ध आरंभ कीन॥
आतम्म घात [3]मंडो विशाल। पावैं न सुष्ष व भ्रमें काल॥छं०॥२५२॥
तिय मात तात बंधह सु देहि। वाला विचित्र ते [4]हत्त लेहि ॥
कुलजाहि भ्रंम ग्रह राजनीति। जे मँडहि वाल गुर जनन जीति॥छं०॥२५३॥
शशिवृत्त जु वत्तिय मत्ति मानि। हित काज मत्ति हम दै प्रमान ॥
पंषी न पच्छि वो लगै धाइ। आवै न हत्त पै जंम जाइ ॥छं०॥२५४॥
आवै न मेह ग्रह लगै अग्गि। पावै न जीव को दान मग्गि ॥
मानै न विनति तिन मंत सुझ्झ। जनु कान हीन गुर कही गुझ्झ॥२५५॥
मंनै न वाल उर मत्त मान। चिंत्यौ सुतात कढ्ढन परान ॥छं०॥२५६॥
चौपाई ॥ मिलि मिलि बाल रचावैं बाल। तन मनः मनेः न चित व्रत साले ॥
बहुत करे सिंगार सार। मनो मृतक नव रंग न धारं ॥छं०॥ २५७॥
छंद पद्धरी ॥ राजन अनक पुत्री त्ति व्याह। शशिवृत्त देव कन्या सिवाह ॥

(१) मो.-कही। (२) मो.-जिप्पतह।
(३) मो.-मंडे। (४) ए. कृ. को.-हृद्द।

चहुआन चिंत जुग्गिन [1]पुरेस। आवृत्त बीर जिन करहु मेस॥ छं०॥२५८॥
निश्चरै वाद जौ करौ मंच। साभम्म वीर कढ्ढै [2]जु कंत ॥छं०॥ २५९॥

राजा का पृथ्वीराज के आने और शशिवृता के प्रेम का समाचार जानकर हंमीर संमीर (?) से मत पूछने लगा।

दूहा॥ कंति कंति प्रति बढ्ढई। चढ्ढ चाइ चहुआन॥
मो पुच्छै प्रति तान जो। बीर चंद दै दान॥ छं०॥ २६०॥

हंमीर संमीर का मत देना कि वीरचन्द को कन्यादान दीजिए।

गाथा॥ बीरं चंद सुदानं। पानं विधाय निक्तयौ गुरयं॥
बुल्लै न्रप हंमीरं। साइ संमीरं साइ मंगायं॥ छं॥ २६१॥
दूहा॥ जं हंमीर संमीर गति। समुंद सु दुज्जन मेव॥
जिन बड़वानल कुप्पयौ। सार मंत्ति प्रति सेव॥ छं०॥ २६२॥
सार भार संसार कौ। नव निधि नव प्रति पान॥
व्याह वीर शशिवृत्त कौं। अप दीजैं प्रति दान॥ छं०॥ २६३॥

कन्या के प्राण देने के विचार और शकुन विचार से राजा भानु ने चुपचाप पृथ्वीराज के पास दूत भेजा।

बाल प्रान कढ्ढत सुपुनि। सगुन एक मन मान॥
बढि अवाज चहुआन की। अखी सुन्यौ अप कान॥ छं०॥ २६४॥
यौं सु सुनिय न्रप भांन नैं। पुनि प्रलय व्रत कीन॥
चर [3]पिष्षिय चहुआन पै। जइव [4]मोकल दीन॥ छं०॥ २६५॥

राजा ने पत्र में लिखा कि शिव पूजा के बहाने शिवाले में तुम को शशिवृता मिलेगी।

सुकार मति वंतिनी। न्रप कग्गद दै हथ्थ॥
पूजा मिसि बाला सुभर। संभु थान मिलि तथ्थ॥ छं०॥ २६६॥

(१) ए. कृ. को.- परेस। (२) मो.-सु।
(३) ए. कृ. को.-छिप्पय। (४) मो.-कलि।

इधर पृथ्वीराज के सरदारों का उत्साहित होना।

कवित्त ॥ हय गय दल चतुरंग। कांक संझोति कन्ह सिर ॥
राजहव वग्गरी। रांम रघुवंस जुद्ध जुर ॥
निडुर रा रट्ठौर। सेन सज्जै धत रज्जै ॥
एक एक संपज्ज। एक एकन गुन लज्जै ॥
जुग्गिनि डहकि वंवरि लसथ। जिम जिम शंकर सिर [1]धुनिय ॥
अत ताइ उत उत्तंग वर। बावारो सारह [2]सुनिय ॥ छं० ॥ २६७ ॥

कवि कहता है गन्धर्व व्याह शूरवीर ही करते हैं।

गाथा ॥ सार प्रहारति भेवो। देवो देवत्त जुद्धयौ वलयं
गंध्रव्वी प्रति व्याहं। सा व्याहं सूर कलयामं[3] ॥ छं० ॥ २६८ ॥

पृथ्वीराज का आना सुनकर मन ही मन राजा भान का प्रसन्न होना, परन्तु वीरचन्द का सशंकित होना।

कवित्त ॥ सन [4]सद्धि संमुहिय। भान आवाज राज सुनि ॥
प्रान लद्धि जो मद्धि। लाज लभ्भी जु सूर धुनि ॥
प्रिय विरहिनि रिधि रंक। कै ध्यांन लभ्भै जोगिंदं ॥
वलह काम कलहंत। कि कह विश्वासत इंदं ॥
संभरिय कान संभरि न्रपति। बीर चंद आगम विपम ॥
निह काल काल भंजन गढ़ै। वढ़ै सार सारह विद्धम ॥छं०॥२६९॥
दूहा ॥ सार धार पूजै नहै। पिति सामंत न नाथ ॥
आवृत बीर क्यों पूजई। दैव दैवतह साथ ॥ छं० ॥ २७० ॥
गाथा ॥ दुअ वंस हंस सरिसं। वज्जं बाहू वलयो वलयं ॥
वज्जं दृष्टित रिष्टं। सानिष्टं अष्टयो किलयं ॥ छं० ॥ २७१ ॥
अरिल्ल ॥ वर वारिष्ट वर लोभ प्रकार। लष्य लष्य सा मंतह सार ॥
तिन वर बर अगम प्रति जानिय। सो देवत देवत्तह मानिय ॥छं०॥२७२॥
कवित्त ॥ अति प्रचंड बलवंड। वैर [5]वाहरू तत्ताइय।

---

(१) मो.-धुनय। (२) मो.-सुनय। (३) कलयामि। (४) मो.-मध्य।
(८) मो.-वाहरू तनाइय।

माया हीन मसंद। दंद दारुन डर नाइय॥
दल दुंदन सिंधु रहि। बाहु दंतन उप्पारहि॥
एक एक संग्रहै। एक शस्त्र करि डारहि॥
दैवत्त वाह दैवत्त भर। दवग्गिरि संरुद्धौ चलिय॥
बर बीर धीर साधन सकल। अकल महूरति मति कलिय॥छं०॥२७३॥

दूहा॥ अकल वीर रस अफल भुज। कलि न जाहि सामंत॥
भीम भयानक बल सु हत। जे भंजै गज दंत॥ छं० ॥२७४॥
[1]लभ्भै जस लिग्घीय बर। दैव जोग नह[2] हथ्थ॥
पुब्ब दई प्रथिराज कौं। सोइ प्रन मन समरथ्थ॥ छं० ॥ २७५ ॥
चाहुआन के कृत सयन। मरन सरन प्रथिराज॥
उभै सिंघ दुअ बीच पल। उभै सिंघ सिर ताज॥ छं० ॥२७६॥

गाथा॥ घटिका उभय सु देवो। रहियं निकट राजनं ग्रामं॥
जानिज्जै न्रप नैरं। दिष्ष न काजैव सोभियं नैनं॥ छं० ॥ २७७॥

दूहा॥ रंभ गवष्षनि नैर मधि। जारि न चिंत प्रमान॥
मानहु न्रप प्रथिराज कौ। रंभ नैन [3]प्रत प्रान॥ छं० २७८॥

पृथ्वीराज का नगर में होकर निकलना, स्त्रियों का झरोखों से देखना। शशिव्रता का प्रसन्न होना।

कवित्त॥ दुक्क पास न्रप नयर। राज दिष्षै प्रति राजं॥
मनों हथ्थ बर नयर। राज संमुह प्रति साजं॥
कोट कठिन मेखल सु। कटि दिग पलक उघारिय॥
राज किति संभरन। गोष श्रवनन संभारिय॥
किंकिनि सुपाइ घुंघर सु गज। राज निसान सबद्द प्रति॥
चहुआन राव आगम सुन्रत। कमल हीय बद्दिय सुरति॥छं०॥२७९॥

राजा भान के हृदय में पृथ्वीराज का आना सुनकर हर्ष शोक साथ ही उदय हुआ।

(१) मो.-लभै सुजस लिक्खंत बर। (२) मो.-नन।
(३) मो.-तजि।

दूहा ॥ कास कलह रत बद्दिह प्रति। सुनिव भाम न्रप कान ॥
आनंदह दुप उप्पज्यो। मरन सु निश्चय मान ॥ छं° २८० ॥
श्लोक ॥ मंगलस्य सदा व्याहं। अव्याहं सु मंगलं ॥
ब्रह्मा चकितं समो दृष्टे। [1]अेक कंज सु वंजभिः ॥ छं° २८१ ॥

पृथ्वीराज की सेना का उमङ्ग के साथ नगर में घूमना।

कवित्त ॥ फिरिग पंति [2]चिहु पास। सूर उभ्भौ चाव दिसि ॥
अतित जुड आवद्द। मत्त[3] वरपंत वीर असि ॥
और व्याह मंगलह। व्याह मंगल अधिकारिय ॥
परि पिशाच दानव। सु बुधि मग्गह विच्चारिय ॥
नन करहु तात दुप पुत्त कौ। घर लीनौ जम सद्दवैं ॥
प्रथिराज राज राजन बलिय। को पुज्जै रन वद्दिवैं॥ छं° ॥ २८२ ॥
दूहा ॥ को पुज्जै वद्दत [4]सुरन। वयन सयन प्रथिराज ॥
अद्दत जित्ति जित्तिय सयल। [4]को मंडै कृत काज ॥ छं° ॥ २८३ ॥
गाथा ॥ को मंडै क्रत काजं। साजं जुद्दय सूर योवनं ॥
तारिज्जैं सजि राजं। वंकिम भूमायं विषमयं होई ॥ छं° ॥ २८४ ॥

देवालय में शिव पूजा के लिये शशिवृता का जाना। पृथ्वीराज का वहां पहुंचना।

देवालय भगवती। पूजैवं पूजयो बालं ॥
सुवर पुछ्यौ प्रथिराजं। कुज संसा वीरयो हथ्यं ॥ छं° ॥ २८५ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा।

दूहा ॥ विषम ठौर बंकम विषम। कल [5]सोभित हत कंद ॥
जो प्रथिराजह अंग मैं। मनों प्रथी पुर इंद ॥ छं° ॥ २८६ ॥
मनों राज पृथ्वी पुरह। धनि सुभ्रम्म लवलेश ॥
मानहु वीर नरिंद कौ। रति आयौ अविशेश ॥ २८७ ॥

(१) मो.-अंबे कंम सुकं कज्जवि। (२) ए. कृ. को.-चरपत्त। (३) ए. कृ. को.-नर। (४) मो.-मंडै को। (५) मो.-सोमत।

सखी का शशिव्रता से कहना कि तू जिसका ध्यान करती थी वह आ गया, देख।

यौं करंत [1]दुत्तिय वियौ। कथा श्रवन सुनि मंत॥
जाकौ तें पतिव्रत्त [2]लिय। सो आयौ अलि कंत॥ छं०॥ २८८॥

शशिव्रता का आँख उठाकर देखना। दोनों की आँखे मिलना।

श्रवन नयन का मेल कै। भय चंचल चल चित्त॥
श्रोताने दिष्टांन अरु। मिलि पुच्छै [3]दोइ मित्त॥ छं०॥ २८९॥

मारे लाज के कुछ बोल न सकी पर नैन की सैन से ही बात हो गई।

चंद्रायना॥ कर्न प्रयंत कटाछ सुरंग विराजही।
कछु पुच्छन कौं जाहिपै पुच्छत लाजही॥
नेंन सेंन मैं बात स्रवनन सौं कहै॥
काम किधौं प्रथिराज भेद करिना लहै॥ छं०॥ २९०॥

नैन श्रवण का संवाद।

दूहा॥ नैंन श्रवन्नन पूछई। तुम जानैं बहु भंत॥
भेद जौय अंदेस है। कहौ न मैं पिय जंत॥ छं०॥ २९१॥
श्रवनन सन नैंना कही। [4]तुम जानौ बहुथान॥
काम न्रपति कौ रूप धरि। आवत है इन थान॥ छं०॥ २९२॥

हंस ने पहुँचकर शशिव्रता से कहा कि ले पृथ्वीराज शिवालय मे तुझ से मिलने आ गया।

ताम हंस आयौ समषि। कह्यो अहो शशिवृत्त॥
चाहुआन आयौ प्रछन। मिलन थांन हर सित्त॥ छं०॥ २९३॥
कवित्त॥ [5]घेरि गांम जद्दव नरिंद। उभ्भै चिहु पासं॥

(१) मो.-दुंदिय। (२) मो.-लियौ।
(३) मो.-दोय। (४) ए. कृ.-जिन। (५) ए.-घेरि

पम्न लंपिय रंभा सु। करन आरंभ प्रवात्तं ॥
एक एक गुन करहि। सम्र फूले सत पत्तं ॥
तिन मध्यह शशिवृत्त। भई कम्मोदनि मंचं ॥
[1]पित पुच्छि पुच्छि परिवार सव। पुच्छि वंध रज्जन सकल ॥
आहत्त तात अग्या सुग्रहि। भईय बाल बुध्या विकल ॥ छं० ॥ २९४ ॥
दूहा ॥ विकल बाल जहं सकल हुअ। वुद्धि विकल प्रति साज ॥
[2]भान वचन सच्चै सुकरि। जिन अप्पौ प्रथिराज ॥ छं० ॥ २९५ ॥
गाथा ॥ वीरं चंद सुव्याहं। सो व्याहं जोगिनीपुरयं ॥
संभरि क्रन शशिवृतं। अगम वीराइसं जनंत तयौ ॥ छं० ॥ २९६ ॥

माता पिता की आज्ञा ले शशिवृता का देवालय में जाना।

कवित्त ॥ पुच्छि मात पित पुच्छि। पुच्छि परिवार ग्रेह सव ॥
में व्रत लियौ निवद्ध। गवरि पुज्जनं बाल जव ॥
तिन थानक सव देव। नीति आरंभ व्रत लीनौ ॥
तव प्रसाद उप्पनौ। मोहि इच्छा व्रत दीनौ ॥
तिन काज व्रत्त लीनौ सुमैं। गवरि प्रसाद सु पुज्ज फल ॥
वारंज वात तुअ मोह हुअ। कहै और अव लहि [3]अफल ॥ छं० ॥ २९७ ॥
दूहा ॥ दुप देवल कौ छंडनह। उर सिंचन अंकुर ॥
दीह काल वल वीचि वदि। लिय समान संपूर ॥ छं० ॥ २९८ ॥

शशिवृता के रूप का वर्णन।

वाला वेनी छोरि करि। छुट्टे चिहर सुभाइ ॥
कनक थंभ तें उतरी। उरग सुता दरसाइ ॥ छं० ॥ २९९ ॥
कवित्त ॥ तजि भूखन वर वाल। एक आचिज्ज उपन्नौ ॥
लता हेम पर चंद। उभै षंजन ढिग चिन्नौ ॥
श्रीफल उरज विसाल। वाववर भंग सुपत्ती ॥
सुकि सुत रंग अरन्नि। करी भग्गावल वत्ती ॥
सोभंत उरगपति भुअ अरन। हंस मुत्ति चर [4]वर करी ॥
सुध काज चढ़ै पप्पील सुत। काम पत्तिनी दुख डरी ॥ छं० ॥ ३०० ॥

(१) मो.-पति। (२) मो.-तान। (३) मो.-नफल। (४) मो.-चर।

दस दासियों के साथ शशिवृता का शिवालय में आना।

दूहा ॥ ते दासी दस बाल ढिग । तिर बरने कवि चंद ॥
तिन में बाल सु सोभियै । मनों प्रथीपुर इंद ॥ छं० ॥ ३०१ ॥

शशिवृता का रूप वर्णन।

छंद चोटक ॥ मय मंजन मंडित बाल तनं । घनसार सुगंध सुघोरि घनं ॥
नव लोइन अंजित मंजि चली । कि मनो कस कुंदन षंभ इली ॥ छं० ॥ ३०२ ॥
सुभ वस्त्र सुअंग सुरंगनसी । सुहली मनु साथ मदन्न कसी ॥
जरि जेहरि पाइ जराइ जरी । सजि भूषन नभ्भ मनौ उतरी ॥ छं० ॥ ३०३ ॥
सिगरी छुट यों बिथरी विगसें । ससि के मुख तें अहि सें निकसें ॥
रँग रत्त उवट्टन उज्जल के । तिन में कछु सेत सुधा चलि के ॥ छं० ॥ ३०४ ॥
नव राजियरोम बिराज इसी । जमना पर गंग सरस्वति सी ॥
परि पान सु कुंकम मज्जन कै । नव नीरज अंजन नैननि कै ॥ छं० ॥ ३०५ ॥

दूहा ॥ छुटि मग मद कै कांम छुटि । छुटि सुगंध की बास ॥
तुंग मनों दो तन दियौ । कंचन षंभ प्रकास ॥ छं० ॥ ३०६ ॥

कुंडलिया ॥ धर उप्पर कुच कनि परी । राजस तामस रंग ॥
तीजौ तिहि सत काम मिलि । सो ओपम कवि अंग ॥
सो ओपम कवि अंग । मदिन मिलि काम पतंगी ॥
चढ़त घरं संभूह । भरी भइ फेरि पतंगी ॥
*वरं सिर दार विमार । सेंभु चहुआन नाह नर ॥
गंग यमुन आरत्थ । हत्थ जोरंत सु अड्डर ॥ छं० ॥ ३०७ ॥

दूहा ॥ तिमिर बीर गवनं कुवट । चिगुन तेज रवि चास ॥
चवनित विक्रम परसि कौ । (१)काम ज्वाल बल हास ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

कुंडलिया ॥ करि मज्जन सज्जन सुक्रम । आभूषन न समान ॥
केहं काके कोहि दिसि । सजि सषि नैन कमान ॥
सजि सषि नैन कमान । केश वागुरि विस्तारिय ॥

* छंद ३०७ के दोनों अंतिम पद अशुद्ध हैं। पाठ चारों प्रतियों में समान है।
(१) मो.-बल।

हावभाव कटाच्छ । ठुंकि पुट्टी दिय भारिय ॥
वेठि नैन न्रय मूल । पेम [1]देषन गह सज्जन ॥
मन म्रग पिय क्रत काज । ताकि बंधन किय मज्जन ॥ छं० ॥ ३०९ ॥

छंद नाराच ॥ सुगंध केस पासयं । सुलग्गि मुत्ति छंडियं ॥
अनेक पुष्प बीचि गुंथि । भासिता चिषंडियं ॥
मनों सनाग पुष्फ जाति । तीन पंथि मंडियं ॥
दुती कि नाग चंदनं । चढ़ंत दुह पंडियं ॥ छं० ॥ ३१० ॥
सिंदूर मध्य गुच्छता । म्रगंमदं विराजयं ॥
मनो कि सूर उग्गतें । [2]गहे सु पुच लाजयं ॥
सु तुच्छ सुच्छ पाट आट । पेम वाट सोभियं ॥
मनो कि चंदं राह वान । वे प्रमान लोभयं ॥ छं० ॥ ३११ ॥
कनक्क काम कुंडिलं । हसंत तेज उभ्भरे ॥
ससी सहाइ मान भाइ । सज्जि सूर दो करे ॥
दुती उपम्म विंद की । किरन्न चंद दिट्ठयं ॥
मनों कि सुर इंद गोदि । अप्प आनि विट्ठयं ॥ छं० ॥ ३१२ ॥
भुवन्न वंक संक जूअ । नैन म्रग्ग जूवयं ॥
करन्नता चपल गत्ति । [3]अच्छ आनि जवयं ॥
कटाक्ष नैन वंक संक । चित्त मान वंकयं ॥
सुछंडि वै सु कुंचितं । अवन्न वान नंषयं ॥ छं० ॥ ३१३ ॥
सुगंधता अनेक भांति । चीर चारु मंडियं ॥
सु केहरी कटिं प्रमान । बीच बंधि छंडियं ॥
सुरंग [4]अंग कंचुकी । सुभंत गात ता जरी ॥
बनाइ काम पंच वान । ओट जोट लै धरी ॥ छं० ॥ ३१४ ॥
सुरंग [5]माल लाल वाल । ता विसाल छंडयं ॥
सु पुब्ब बैर आनि काम । अग्गि संभ मंडयं ॥
[6]दुती उपम्म मुत्ति माल । यों विसाल ता कही ॥

(१) मो.-षेदन ।　(२) मो.-गहंत रहे लाजयं ।　(३) ए. कृ. को.-अप्प ।
(४) ए. कृ को.-रंग ।　(५) मो.-लाल माल　(६) ए.-उदी

जु भारथी सु [1]गंग लै। सुमेर शृंग तें बही ॥ छं० ॥ ३१५ ॥
जराइ चौकि स्याम पाट। रत्ति पत्ति तें घुली ॥
सुरंग तिष्य थान मंडि। ईस शीश तें चली ॥
सुवर्न छुद्रघंटिकादि। षोडसं वषानयं ॥
सु मुत्ति तात मीर तन्न। [2]गोदरं बषानयं ॥ छं० ॥ ३१६ ॥
सुगंध गोप चिन्ह मंडि। पीत रत्त जावकं ॥
अभूषनं धरंत चित्त। मित्त हित्त शावकं ॥
बनाइ कें चौंडोल लोल। चढ्ढिता सु सुंदरी ॥
सुदोषिता सुरंग थान। अत्तु तास उच्चरी ॥ छं० ॥ ३१७ ॥

शशिवृता का चंडोल पर चढ़ कर देवी की पूजा को आना।

दूहा ॥ सजि शृंगार शशिव्रत्त तन। चढ़ि चौंडोल सुरंग ॥
पूजन कौं बर अंबिका। आई बाल सु अंग ॥ छं० ॥ ३१८ ॥

तेरह चंडोलों को चारों ओर से घेरकर राजा भानु की सेना का चलना।

सज्जि सेन जद्दव न्त्रपति। दसत तीन चौंडोल ॥
लकरि लाल से पंच अग। दस दिसि [3]लष्यन लोल ॥ छं० ॥ ३१९ ॥

सूर्योदय के समय पूजा के लिये आना।
राजा की सेना का वर्णन।

कवित्त ॥ अरुनोदय उद्यमह। सुच्छि छिन्नै सु बंध भर ॥
उभय सहस बाजित्त। ढोल चंबकी सुमत गुर ॥
अह सहस नप्फेरि। सहस सहनाइ सुरंगी ॥
सुवर बीर पूजा प्रमांन। कीनी मति चंगी ॥
बिन पुंज संग सेना सकल। अकल अपूरब वत्त बर ॥
चर सकल विकल अलि कुलन कौं। सुचित मित्त इकह सु थिर॥छं०॥३२०॥

---

(१) मो.-भंग (२) ए.-सांदरं
(३) मो.-दिष्यन।

गाथा ॥ गुज्जर वै गुज्जर धनी । सथ्थं सेनाह सथ्यौ वीरं ॥
जानैनि सवर अद्धं । उग्गे वा तिमिर तप हरनं ॥ छं० ॥ ३२१ ॥

मन्दिर के पास पहुंचकर शशिव्रता का पैदल चलना ।

हरनंत पति तुरंगं । साहस मंचाय गिद्धयो रनयं ॥
देवालेयं पासं । सा पासं बालयं चालं ॥ छं० ॥ ३२२ ॥

शशिव्रता के उस समय की शोभा का वर्णन ।

छंद नाराच ॥ चली अली घनं बनं । सुभंत सथ्थ संघनं ॥
विहंग भंगयो पुरं । चलंत सोभ नोपुरं ॥ छं० ॥ ३२३ ॥
अलीन जुथ्थ आवरं । मनो विहंग सावरं ॥
चुवंत पत्त रत्त जा । उवंत जानि अंवजा ॥ ३२४ ॥
कलिंद सोभ केसयं । अनंग अंग लोभयं ॥
उटंत कुंभ कुच्चयं । उपंम कब्बि सुच्चयं ॥ छं० ॥ ३२५ ॥
मनों जरंत वाल कौ । धरी सु आनि लालकौ ॥
सुभंत रोमराजयं । [1]प्रपील पंति छाजयं ॥ छं० ॥ ३२६ ॥
मनोज कूप नाभिका । चलंत लोभ आलिका ॥
सुरंग सोभ पिंडुरी । षरादि काम पिंडुरी ॥ छं० ॥ ३२७ ॥
नितंव तुंग सोभए । अनंग अंग लोभए ॥
मनौ कि रथ्थ रंभ के । सुरंभ चक्क संभके ॥ छं० ॥ ३२८ ॥
नषादि आदि अच्छनं । मनों कि इंद्र [2]दृप्पनं ॥
ढरंत रत्त एड़ियं । उपम्म कब्बि टेरियं ॥ छं ॥ ३२९ ॥
मनौ कि रत्त रत्तजा । चिकंत पत्र अंबुजा ॥ छं० ॥ ३३० ॥
गाथा ॥ [3]मद्ध मे रष्यत बाले । लग्गा सेनाय पास चिहु वीरं ॥
धरि धीरं तंन दुरयं । रोमं राज रोमयं अंचं ॥ छं० ॥ ३३१ ॥

कान्यकुब्जेश्वर को देख कर शशिवृता का दुखी होना और मन में चिन्ता करना ।

दूहा ॥ बाल धरकति वचनि गति । ग्यान मोह विष पान ॥
त्यों कामधज्जै देषि कै । वर चिंतै चहुआन ॥ छं० ॥ ३३२ ॥

(१) मो.-पपील । (२) मो.-दर्प्पनं । (३) को.-पद्ध ।

एक ओर कान्यकुब्जेश्वर की सेना का जमाव होना और दूसरी ओर पृथ्वीराज की सेना का घेरना।

कवित्त ॥ देषि सुभर [1]लच्छिनति। फौज चतुरंग रिंगावै ॥
अरी सेन सम भार। धार भंजत मग पावै ॥
बहु गिरष्टता रिष्ट। हक्कि अप्पन पर धावहु ॥
सुबर स्यंघ आलस्य। स्याल ह्रधौ करि पावहु ॥
उट्ठैन बीर बीरहु उठत। सुबर मंच फुनि करिय वर ॥
अम्भंग सेन भद्दव सरिस। अभँग अंग [2]सज्जे कहर ॥छं०॥३३३॥

पृथ्वीराज की सेना का चारों ओर से घेरना।

दूहा ॥ चाहुआन सब सेन जुरि। भिरि रूंधे चहुंपास।
देव दुतिय देवह दरस। बल बढ्ढिय आयास ॥ छं० ॥ ३३४ ॥

जैचन्द और पृथ्वीराज की सेना की तुलना।

कवित्त ॥ असुर सेन कमधज्ज। सु सुर प्रथिराज सेन वर ॥
अम्रत कित्ति संग्रह्यौ। मदह भौ क्रोध वीर [3]तर ॥
मथन मोह रंभनी। तहां शशिव्रता समानं ॥
दुहुन बीच सुभ्भयै। हंत चहुआन सुआनं ॥
अक्कित्त राह पच्छै फिरग। चक्क तेग सज्जिय सुबुधि ॥
अलि सकति सेन माया विषम। सुबर बीर बढ्ढिय सु सुधि ॥छं०॥३३५॥

दोनों सेनाएं तलवार लिए तैयार हैं। जिसने द्रोपती का पण रक्खा वही शशिवृता का पण रक्खेगा।

दूहा ॥ दुहूं तेग तारुन्य तन। सयन सुक्रति प्रतिकाल ॥
जिन रष्यौ द्रोपत्त पन। सो [4]रष्षै प्रति बाल ॥ छं० ॥ ३३६ ॥
देह कंचुकि दह दून अलि। बिच सुंदरी अमूल।
डोल तीस संयोग भति। भी भारथ्थ समूल ॥ छं० ॥ ३३७ ॥

---

(१) मो.-लष्षिन सु। (२) मो.-सज्जै।
(३) ए. कृ. को.-त्रसि। (४) ए. कृ. को-रष्षै।

गाथा ॥ आरथ्यं प्रति राजं । सज्जे सेनाव वीर वीरयं ॥
धीरं धीर सधीरं । अधीरं [१]रूद्र सेनावं ॥ छं० ॥ ३३८ ॥

दूहा ॥ देषि बाल पारस फिरिय । मेर भान प्रति मान ॥
ज्यों शशि पछ पारस सुभति । शंकर सोभत थान ॥ छं० ॥ ३३९ ॥

मठ को देख कर शशिव्रता के मन में काम उत्पन्न हुआ और उसने मनही मन शिव को प्रणाम किया।

शंकर रस आचार किय । मढ़ दिष्षिय प्रति जोइ ॥
मन लग्गिय बंधत सु पय । मन कंद्रप रस भोइ ॥ छं० ॥ ३४० ॥

तीस डोलियों के बीच में शशिव्रता का चौंडोल था जिसको ५०० दासी घेरे हुई थीं। ५००० सवार और ५०००० पैदल सिपाही साथ में थे।

कवित्त ॥ [२]दहति तीन चौंडोल । मध्य चौंडोल बाल भय ॥
भमर टोल झंकार । दासि विंटिय सु पंच सय ॥
सित्त पंच असवार । पंति मंडिय चावद्दिसि ॥
अद्ध लष्ष पैद्दल्ल । सथ्थ आयो सुत्रंग कसि ॥
मंगल विवेक विधि उच्चरे । बंधी बंदन मार करि ॥
उत्तरी बाल देवल सुढिग । लग्गि पाइ परदच्छि फिरि ॥ छं० ॥ ३४१ ॥

शशिव्रता ने चौंडोल से उतर कर पृथ्वीराज के कुशल की प्रार्थना की।

दूहा ॥ उतरि बाल चौंडोल तें । प्रीति हेत प्रथिराज ॥
जिन देवत्त जु संपज्जौ । सो मंडन प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३४२ ॥

बाजों का शब्द सुनकर सामंतों का चित्त पलट जाना।

मंडन रन छंडन कलह । दल दैवत्त सु जुद्ध ॥
बर बज्जे बाजिच सुनि । भौ सामंत विरुद्ध ॥ छं० ॥ ३४३ ॥

(१) मो.-सर्व, सरव। (२) ए. कृ. को.-दसत।

विरुध जुद्ध बंधन सुदल। स्वामि भ्रंम चित पान ॥
दुतिय भ्रंम जानै नही। धनि सामंत बषान ॥ छं० ॥ ३४४ ॥
गाथा ॥ बढ्ढे दलं समूरं। लभ्यं सेनाय अद्दतं बलयं ॥
ते जग्गे रस बीरं। जानिज्जै जोग जोगायं ॥ छं० ॥ ३४५ ॥

सेना में बीर रस का जाग्रत होना।

छंद भुजंगी ॥ जग्यौ बीर बीरं सु डौंरू बजावै।
महा चित्त चित्तं सुमंतं निपावै ॥
जग्यौ बीर बीराधि बिराधि रूपं।
मनो ईश शीशं नचै बीर [१]रूपं ॥ छं० ॥ ३४६ ॥
दूहा ॥ भयौ बीर बीरह तिगुन। नच्यौ रुद्द बहु भेद ॥
सो दिष्यौ दिष्यौ [२]नहै। सो देषन गुन छेद ॥ छं० ॥ ३४७ ॥
नह तारक्कि सु जुद्ध बर। नह देवा सुर मान ॥
सो दिष्यौ कमधज्ज सौ। चाहुआन बलवान ॥ छं० ॥ ३४८ ॥
चाहुआन कामधज्ज बर। बरै षटक्क सुबद्द ॥
देवग्गिरि [३]उग्गाहिये। करि भारथ्थ न सद्द ॥ छं० ॥ ३४९ ॥

देवालय के पास सब लोगों का चित्रलिखे से खड़े रह जाना।

छंद भुजंगी ॥ सुसद्दे विसद्दे विसद्दे निसानं।
[४]रहे देव थानं [५]बटे देव थानं ॥
रहे सब्ब थोंही ठगी ठग्गा लग्गे।
मनो चित्रलिष्षे विचित्तंत ठग्गे ॥ छं० ॥ ३५० ॥
गाथा ॥ जो इज्जै मन चरियं। हरियं एक कग्गयौ सवदं ॥
सब सेना कमधज्जं। बिंटे वा बाल सर सायं ॥ छं० ॥ ३५१ ॥

सखियों का जैचंद के भाई को शशिव्रता का वर कहना जो उसे बिष सा लगा।

(१) ए. कृ. को.-सूपं। (२) मो.-नहीं।
(३) मो.-सु उगाहिए। (४) मो.-रहं (५) कृ. को.-वट्टे, ए.-वट्टे

वर जैचंद सुवंधं। प्रोहित पंग रष्पियं [1]आद्वयं ॥
सहचर चारु सुपढ़ियं। हालाहलं बालयं मनयं ॥ छं० ॥ ३५२ ॥

अपनी सेना सहित वह भी शिवपूजन के लिये वहाँ आया।

दूहा ॥ चढ्यौ पंज नव साज वर। अरु भर लिन्नै सथ्थ ॥
संभु थान पूजन मिसह। चलि वर आयौ तथ्थ ॥ छं० ॥ ३५३ ॥

तब तक पृथ्वीराज के भी ७००० सैनिक हथियारबंद कपट भेष धारण किए हुए भीड़ में धँस पड़े।

तब लगि दल चहुआन के। ग्रह गुपंति कर आइ ॥
तकि सकै नन मथ्थ लिय। बोलै संमुह धाइ ॥ छं० ॥ ३५४ ॥

कवित्त ॥ सहस सत्त कप्परिय। भेष कीनौ तिन वारं ॥
गोप तेग गहि गुपत। कपट कावरि सब भारं ॥
किहुन फरस किहुं छुरी। चक्र किन हाथन माही ॥
किन त्रिसूल किन डंड। सिंगि सब सथ्थ समाही ॥
सा अंग सिद्ध चहुआन लै। दूतन दूत बताइ हरि ॥
सा अंग बाल उतकंठ करि। पै लग्गी परदच्छि फिरि ॥छं०॥३५५॥

शशिव्रता ने चौंडोल से उतर कर शिव की परिक्रमा की और पृथ्वीराज से मिलन होने की प्रार्थना की।

अरिल्ल ॥ फिरि परदच्छि बाल अपु लग्गी।
सुमन काम कामना सुभग्गी ॥
मन सन बंधि [2]कियौ हथ लेवं।
सुमन संच प्रारंभ सुदेवं ॥ छं० ॥ ३५६ ॥
* दोहा ॥ उतरि बाल चौंडोल तें। प्रीत प्रात छुटि लाज ॥
शिवहिं पूजि अस्तुति करी। मिलन करै प्रथुराज ॥ छं० ॥ ३५७ ॥

शशिव्रता का शिव जी की स्तुति करना।

(१) ए. कृ. को.-आंहि।
(२) कृ.-किए, कियउ, कियत्र। * यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

छंद हनूफाल ॥ प्रारंभ मंच सु राम। तिहि जपौ अजपा नाम ॥
हरि हरी बरन विरत्ति। कवि कही चंद किरत्ति ॥ छं० ॥ ३५८ ॥
श्रुत कह्यौ वेद पुरान। ज्यों सुन्यौ श्रवन निदान ॥
तन स्याम अम्मर पीत। रघुवंस राजस रीत ॥ छं० ॥ ३५९ ॥
हग कमल कमला पान। मधु मधुर मिष्टत बान ॥
जिन नाम [१]जनमह [२]कोट। कंद्रप्प लावन मोट ॥ छं० ॥ ३६० ॥
गंभीर साइर मान। आदिष्टवान प्रमान ॥
नह बाल हद्द किशोर। उर बरन स्याम न गौर ॥ छं० ॥ ३६१ ॥
अरि दहन उग्रस कोट। पौवै कि गोपिन [३]पोटि ॥
श्रम लूलि ब्रह्म भुलाइ। सुरलाय नाथ नचाइ ॥ छं० ॥ ३६२ ॥
निज पानि पद्म कटाच्छ। जिन भूमिय भूतल लाछ ॥
आदित्य कोटि प्रकास। सय सक्क कोटि विलास ॥ छं० ॥ ३६३ ॥
आराम कलप निधान। सुर तीन कोट प्रमान ॥
नव रूप रेष अनंग। परकार गर्व विभंग ॥ छं० ॥ ३६४ ॥
पर पाप छिपत इवै न। भुत्र भुक्ति मुक्ति सु दैन ॥
काकुस्थ करुना कार। गुन निद्धि सुम्भर भार ॥ छं० ॥ ३६५ ॥
रन रंग धीर सधीर। भव पार कढ्ढन तीर ॥
सुर सुरी नाथ नचाइ। श्रम भूल ब्रह्म भमाइ ॥ छं० ॥ ३६६ ॥
चतुरान घट्ट सु घूमि। सुरपत्ति फनपति तूमि ॥
तारुन्य रूप प्रकास। सद्दभूत अंग निवास ॥ छं० ॥ ३६७ ॥
चय मंच जंपित वार। हर दीन तँह हंकार ॥ छं० ॥ ३६८ ॥
अरिल्ल ॥ बाले मित्त विषम्म प्रमानं। हय गय दल रंध्यौ चहुआनं ॥
कुंकुम कलस सखेवर हेमं। देव देव साधारन नेमं ॥ छं० ३६९ ॥
पंगी पय सतह परिमानं। संमुह दलन रुँध्या चहुआनं ॥
गहह गहह कित्ती अविसेसं। सुवर चित्त चिंतं जु नरेसं ॥ छं० ॥ ३७० ॥
गाथा ॥ वर छित्ती छिति धारी। सारं संग्राम नेहयो बलयं ॥
अग्गैई मग जूथं। ना भ्रुक्कै [४]मग्गयं राजं ॥ छं० ॥ ३७१ ॥

(१) ए. कृ. को.-जनमहि। (२) ए. कृ. को-मोट। (३) मो.-पोटि।
(४) ए. कृ. को.-मूग्गयो।

उद्दरे सेन सेनो। [1]संग्रामं वीर सुभट्टायं ॥
कालिंदीय तुरंगे। सो श्रंगो सुद्ध [2]भूतायं ॥ छं० ॥ ३७२ ॥

पृथ्वीराज सात हजार कपट वेषधारी कामरथी वीरों के साथ देवी के मन्दिर में धँस पड़े।

कवित्त ॥ सहस सत्त कप्परिय। भेष कीनो तिन वारं ॥
कपट कंध आवरिय। धसिय देवी दरबारं ॥
सर्व शस्त्र आरंभ। हस्त आरंभ सुरी सख ॥
धसिय भीर सम्मूह। जूह पाई समंडि कल ॥
दल प्रबल उदधि ज्यों मथन कज। भुज सुकिल चहुआन किय ॥
शशिवृत्त बाल रंभह समह। मिलिय गंठि बंधन सुहिय ॥छं०॥३७३॥

पृथ्वीराज और शशिवृता की चार आंखें होते ही लज्जा से शशिवृता की नज़र नीची हो गई और पृथ्वीराज ने हाथ पकड़ लिया ।

दिट्ठ दिट्ठ लग्गी समूह। उतकंठ सु भग्गिय ॥
निप लज्जानिय नयन। मयन माया रस पग्गिय ॥
छल बल काल चहुआन। बाल कुअंरप्पन भंजे ॥
दोषचीय मिट्टयौ। उभय भारी मन रंजे ॥
चौहान हथ्थ बाला गहिय। सो ओपम कविचंद कहि ॥
मानों कि लता कंचन लहरि। मत्त बीर गजराज गहि ॥छं०॥३७४॥

पृथ्वीराज के हाथ पकड़ते ही शशिवृता को अपने गुरुजनों की खबर आगई और इससे आंख में आंसू आने लगे पर उन्हें अशुभ जानकर उसने छिपा लिया।

चंद्रायना ॥ गहत बाल पिय पानि। सु गुर जन संभरे ॥
लोचन [3]मोचि सुरंग। सु अंसु वहे धरे ॥

(१) ए.कृ.को.-संग्रामे। (२) ए.कृ.को.-भूताय। (३) मो.-कामुच्चि।

अपमंगल जिय जानि। सु नैंन सुष बही॥
मनौं षंजन सुष मुत्ति। भरकत नंषही॥ छं०॥ ३७५॥
दुहु कपोल कल मेद। सुरंग ढरक्कही।
सज्जन बाल बिसाल। सु उरज षरक्कही॥
सो ओपम कवि चंद। चित में बस रही।
मनु कनक कसौटी मंडि। मग्ग मद् [1]कसरही॥ छं०॥ ३७६॥

गाथा॥ म्रग मद् कसयति चित्ते। मित्तं पुनरोपि चित्तयं बसयं॥
अजहूं कन्ह वियोगे। कालिंदी कन्हयो नीरं॥ छं०॥ ३७७॥
गहियं गह गह कंठी। बचनं संजनाइ निठुयो कहियं॥
जानिज्जै सत [2]पच। बंधे [3]सदाइ भवरयं गहियं॥ छं०॥ ३७८॥
तप तंदिल में रहियं। अंगं तपताइ उप्परं होइ॥
जानिज्जै कसु लाखं। घटनो अंग एकयौ सरिसौ॥ छं०॥ ३७९॥
अपमंगल अस्त बाले। नेनं नषाइ नष किं सलयौ॥
जानिज्जै धन छपनं। सपनंतरो दत्तयं धनयं॥ छं०॥ ३८०॥

जिस समय पृथ्वीराज ने शशिवृता का हाथ पकड़ा पृथ्वीराज के हृदय में रुद्र, शशिवृता के हृदय में करुणा और उन शशि के शत्रुओं के हृदय में वीभत्स रस का संचार हुआ।

कवित्त॥ गहि ग्रग्रिहत्त नरिंद्। सिढी लंघत ढढि योरी॥
काम लता कलहरी। पेम मारुत भकभोरी॥
बर लीनी करि साहि। चंपि उर पुट्ठि लगाई॥
मन सुरंग सोइ [4]बत्त। कंत लगि कान र नाई॥
न्रप भयौ रुद्र करुना सुचिय। बीर भोग बर सुभर गति।
सगपन सुहास बीभच्छरिन। भय भयान कमधज्ज दुति॥छं०॥३८१॥

(१) मो.- फरसही। (२) ए. पत्तं। (३) ए. कृ. को. शब्दाय।
(४) ए. कृ. को.-बात।

वरिवृत्त से एक घरी ठहर कर पृथ्वीराज शशिवृता को साथ ले कर चल दिए ।

दोहा ॥ वीर गत्ति संधिय सुमति । हत्त अहत्त न जाइ ॥
　　घरी एक आहत्त रषि । सुवर बाल अनुराइ ॥ छं० ॥ ३८२ ॥

शशिवृता के पिता ने कन्या के वैर से और कमधज्ज ने स्त्री के वैर से लड़ाई का विचार किया और सेना सजी ।

　　बाल सु वैर स वैर चिय । भान विरुद्ध न कौन ॥
　　नकाम सेन साधन घरी । कलहंकत गति [1]चौन ॥ छं० ३८३ ॥

अरिल्ल ॥ आहत्त हत्त गुन निग्रह राज । देव जुद्ध देवत्तह साज ॥
　　है गै दल सज्जी तिहि वीर । हरी बाल चहुआन सधीर ॥छं०॥३८४॥

शशिवृता के पिता का कमधज्ज के साथ मिलकर पांच घरी दिन रहे सकट व्यूह रचना ।

कवित्त ॥ घरिय पंच दिन रह्यौ । मंत जद्दव प्रारंभिय ॥
　　मिलि कमधज्ज नरिंद । सकट व्यूह आरंभिय ॥
　　अद्ध सथ्य अप्पनौ । चरन मंडिय वाम दिसि ॥
　　व्यूह चक्क विय पाइ । सथ्थ उभ्भौ नरिंद कसि ॥
　　उज्झवन भार अंगत सकट । सवर पुंज अप्पन सजिय ॥
　　रघुनाथ साथ वलियं विहसि । हंकि सु लछिमन तहँ रजिय ॥
　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ३८५ ॥

कमधज्ज की सेना का वर्णन ।

छंद रसावला ॥ भरं भीर भाजी । कहं क्रूह वाजी ॥
　　सुने पुंज राजी । मनो मेघ गाजी ॥ छं० ॥ ३८६ ॥
　　सनाहं सु साजी । चढ़्यो वीर वाजी ॥
　　वगं मेल ताजी । सबें सेन साजी ॥ छं० ॥ ३८७ ॥
　　करौं काम आजी । सिरं मोहि लाजी ॥

(१) ए.-चिन्ह ।

उठी मुच्छि एनं। सिरं लग्गि गेनं॥ छं॰॥ ३८८॥
कमंधं निहारी। सयंनं विहारी॥
कमानै निहारी। तरक्कस्स झारी॥ छं॰ ३८९॥
अरी तुंग तारी। फिरै [1]गज्ज भारी॥
सरोसं विहारी। मया मोह जारी॥ छं॰॥ ३९०॥
महंतं विडारी। ....॥
किए नैन रत्तं। रसं रोस पत्तं॥ छं॰॥ ३९१॥
सुरं बीन बीरं। करी आज तीरं॥
परै मोहि गत्तं। हरै ग्रिग्रिहत्तं॥ छं॰॥ ३९२॥
असी जा पहारं। चढ्यौ धार धारं॥
लियौ हत भारी। पगं सीस डारी॥ छं॰॥ ३९३॥
पर्‌यौ मद्ध धाई। असीजा पुलाई॥
बजी क्रूह क्रूहं। अवाजं समूहं॥ छं॰॥ ३९४॥

घरियाल के बजते ही सब सेना जुट गई।

कवित्त॥ सुनि वज्जी [2]घरियाल। लाग [3]नीसानन बाजिय॥
इक दिन दोऊ सेंन। चंपि चावद्दिसि साजिय॥
महन रंभ सा जग्य। मध्य मोहन ग्रिहित्तं॥
असुर सु सुर मिलि मथहि। सूर बंसी रजपूतं॥
आरंभ पच मंड्यौ कपट। कपट मुक्कि कढ्ढिय लपट॥
दुहूं बीच जहों कुंआरि। उभय सिंह सारह झपट॥ छं॰॥ ३९५॥

चहुआन और कमधज्ज शस्त्र लेकर मिले।

दूहा॥ चाहुआन कमधज्ज बर। मिले लोह अल लोह॥
भर भर टट्टर बज्जही। बंसह लग्गिय कोह॥ छं॰॥ ३९६॥

शत्रुता का भाव उच्चारण करके दोनों ने अपने अपने हथियार कसे।

(१) मो.-गल। (२) ए. कृ. को.-घरि, घरी पंच।
(३) मो.-नीसानत।

गाथा ॥ उच्चरियं अरि भायं। तायक कस्सेव अप्प अप्पायं ॥
कढ्ढे लोह करारं। मार सारं जंपि जी हाई ॥ छं० ॥ ३९७ ॥

दूहा ॥ अहत घाइ घट भंग कौ। करन मतहु वर वीर ॥
मनहु कास कपि दख निरति। लेन [1]लंक मति धीर ॥ छं० ॥३९८॥
[2]धर धीरत्तन बीर बर। करिय न पंग प्रवाह ॥
चचर सोचव रंग गति। विधि वंधन रिन चाह ॥ छं० ॥ ३९९ ॥

दोनों सेनाओं के युद्ध का वर्णन।

छंद सुजंगी ॥ मिले घाइ [3]न्रिघाइ सा पुंज राजै। लगे अंग अंगं सुरंगति छाजै ॥
मिले हथ्थ वथ्थं सु सथ्थं निनारै। मनो वारुनी मत्त [4]मय मत्त भारै ॥
छं० ॥ ४०० ॥
किधौं जुध लग्गे कि मल्लं सवारे ॥ .... ॥
उरै लोह पंती परै श्रोन रुद्रं। मनों रत्त धारा वरष्षै समुद्रं ॥
छं० ॥ ४०१ ॥
उड़ै छिंछि इछं सनाहं सुभिज्जै। मनो पुफरत्तं नभं देव पुज्जै ॥
सुनै ईस सद्दं निसानं गहारं। वजै धार धारं घनं कै प्रहारं ॥
छं० ॥ ४०२ ॥
मनो पट्टनं मंझि कंसी डकारं। दुती [5]ओपमा चंद जंपै विचारं ॥
वजं झल्लरी देवलं द्वार मारं। उड़ै सार किंची कि रचै प्रहारं ॥
छं० ॥ ४०३ ॥
मनो झिंगनं भद्दवं रैनि भारं। .... ॥
*सवै सस्त्र मंचं भरं जेम वाहे। षिझै षग्ग कढ्ढै विहथ्थै समाहे ॥
छं० ॥ ४०४ ॥
करं कंस मत्तं पलं पारि छंडै। रुधं धार हस्तै प्रसादेति मंडै ॥
सिवा लीति सोभै [6]प्रनाली अनेकं। फिरै अच्छरी पंति बिय बार वेकं ॥
छं० ॥ ४०५ ॥

(१) ए. कृ. को.-फलक। (२) मो.-घन।
(३) मा.-निध्यान। (४) मैं.-मै।
(५) मो.-उप्पमा। (६) ए. कृ. को.-मूनाली।
* ए. कृ. को.-सबै शास्त्र मंत्रं भमैरं समाह। बिझै खग्ग कढै बिबी हथ्थ बाह ॥

बहै नाग सुष्षी सु सोहै विकंतं। फटै हस्ति कुंभं ठनंकंत घंटं॥
यियं वांह वंचै गिरै गज्जराजं। मनो द्रोन षंचै कपी काज पाजं॥
छं० ॥ ४०६ ॥
षिजै दंत दंती भरं कंध डारै॥ मनो कोपियं भीम हथ्थी उच्छारै॥
भरं लोहि गिद्धी भ्रमै भंति छुट्टै। मनो देवलं इष्ट चढि डोरि तुट्टै॥
छं॥ ४०७॥
लगै लोह हथ्थी सिरं वंविझारै। तिनं गात तिंदू जरै अग्गि लारै॥
परै षोपरी तुट्टि भेजौ सुभावै। दधी [1]भाजनं जानि वायस्स आवै॥
छं० ॥ ४०८ ॥
फटै बीर बीरं सुबीरं सुघट्टं। मनो कर्क करवत्त विहरंत कट्टं॥
नचैजा कमंधं करै हाक शीशं। चरंमं सुभज्जै हसै देषि ईशं॥
छं० ॥ ४०९ ॥

युद्ध के समय शूरबीरों की शोभा वर्णन।

गाथा॥ मानिक्क प्रति ताजं। हेमं हेमेल विद्ध साधरियं॥
जानिज्जै निसि मद्धं। निरमल तारक सोभियं गैनं॥ छं०॥४१०॥
मुच्छी उच्चस बंकी। बाल चंद सुभियं [2]नभ्भं॥
[3]गज गुर घन नीसानं। रीसालं षंग षल याई॥ छं० ॥ ४११॥
अरिल्ल॥ दहकि बज्जि नीसानति [4]नद्दं। सबै सेन संग्राम बिवद्दं॥
इक अंग चावहिसि सेनं। जरै राज रत्ते [5]रस नेनं॥ छं० ॥ ४१२॥
छंद रसावला॥ लगी कर कोह। लगें घन लोह॥
छकै अति छोह। महा तजि मोह॥ छं० ॥ ४१३॥
भरा भर भार। तुटै तरवार॥
मची घन मार। परंत प्रहार॥ छं० ॥ ४१४॥
धुकंत धरन्नि। सरोस सरन्नि॥
निफूटत रन्नि। बरै सु बरन्नि॥ छं० ॥ ४१५॥

(१) मो.- भोजनं। (२) मो.-नैनं।
(३) मो. को.-गत्त, गत। (४) ए. क. को.-नद्दै, बिवद्दै। ५ मो.-नन।

करै घन घत्त । मद्दा इत भित्त ॥
लरै वर लत्त । फटै रिन पत्त ॥ छं० ॥ ४१६ ॥
कटारिय एक । लगंत अनेक ॥
सु चंदन साष । संजोइय भाष ॥ छं० ॥ ४१७ ॥
धपै अति धीर । मनों वर वीर ॥ छं० ॥ ४१८ ॥

कमधज्ज की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ तवर वीर कमधज्ज । अरध अप्पिय षग मग्गं ॥
इप [1]अच्छित उच्छरहि । जानि परिमानन सग्गं ॥
सार धार पुंधियै । वीर मंगल उच्चारै ॥
सवै साथ वंदियहि । सकल पूजा संभारै ॥
वर मुक्ति वरन वरनी सुवर । इह अपुब्ब पिष्यौ नयन ॥
उप्पनौ वीर सिंगार सँग । रुद्र वीर चौरों नयन ॥ छं० ॥ ४१९ ॥

दूहा ॥ सिर सोहत वर सेहरौ । टोप ओप अति अंग ॥
वगतर वागे केसरे । रुधि भीजत विषमंग ॥ छं० ॥ ४२० ॥
[2]सकट भग्ग लइ वग्ग वर । कमधज गौर विसेज ॥
[3]मिले वीर वीरत्त वर । दोउ दैवत तज ॥ छं० ॥ ४२१ ॥

शशिवृता का चहुआन प्रति सच्चा अनुराग था।

देव तेज दैवत्त गुन । अद्दत भत्ति गुन कंति ॥
शशिव्रत्ता चहुआन सौं । सुद्दत मंत गुन पंति ॥ छं० ॥ ४२२ ॥
सांइ छूर सांई सु गति । दल दुंदुभि दैवत्त ॥
विधरं कर वीरह करह । सुवर वीर मारुत्त ॥ छं० ॥ ४२३ ॥
कालकूट कौनौ विषम । कोलाहल घन कौन ॥
अद्दत दत्त अंतह भवै । सो भारथ्थ प्रवीन ॥ छं० ॥ ४२४ ॥
भारथ दिष्यिय तत्त मति । अद्दत चिंत बल छीन ॥
जिन गुन प्रगटित पिंड किय । सो भारथ्थ प्रवीन ॥ छं० ॥ ४२५ ॥

---

(१) मो.-अच्छित ।　　　(२) मो.-संगट ।
(३) मो.-मिलें ।

कंठ कीज कीजी सुरत। हतत जुद्ध सम पाइ॥
सुबर बीर भारथ्य गुन। उठे बीर विरझाइ॥ छं० ॥ ४२६ ॥
षल संकुल भंकुल प्रकित। चतुर चित्त विरझाइ॥
मनु बड़वानल मध्य तें। समुद सत्त गुन भाइ॥ छं० ॥ ४२७ ॥
वीर थान विभ्रम भइय। नयन रत्त सम सार॥
मानहु बर धरि श्रङ्ग में। नाकपत्ति गिरि भार॥ छं० ॥ ४२८ ॥

पृथ्वीराज की श्री शेषजी से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ नाक पत्ति संभरिय। उभै काया अधिकारिय॥
वह जित्यौ बलि राइ। यहन दुज्जन सम सारिय॥
छित्ति पत्ति अति अभ्भ। दुहून आभा पति बुड्ढ॥
वह गोरी सुरतान। इहति दानवति विरुद्ध॥
पग धुलै दुहुन पुज्जै न को। दोऊ बाउ बर बीर रन॥
लै चल्यौ हरिव प्रथिराज कौं। पहु पंजलि पुज्जै तरुन॥छं०॥४२९॥
दूहा॥ तरुन तेज तम हरन बर। बाल बहिक्रम उच्छि॥
मानौं रति आरूढ़ करि। बर बारधि मति लच्छि॥ छं० ॥ ४३० ॥
लच्छि सु लच्छिह लीन हरि। इह लीनौ संग्राम॥
घटि बढ़ि मंचह समन करि। दोऊ बीर बढ़ि [१]बाम॥ छं० ॥ ४३१ ॥
गाथा ॥ चावहिसि म्रप [२]बिंधौ। पुंज सेनायं सेनयौ बीरं॥
धर धरनी आधारं। सा धारं डुल्लियं प्रीत्रं॥ छं० ॥ ४३२ ॥

उस युद्ध में वीरों को आनन्द होता और कायर डरते थे।

[३]मुरिल्ल॥ बढ़ि सत्त दुहाइय बीर रसं। दुहु सेन सुधावत अंग कसं॥
मुष वीर बिगस्सिय रंन ससी। भय कायर चंद प्रभात दिसी॥
छं० ॥ ४३३ ॥
छंद विराज॥ लगे लोह सारं। दोऊ बीर भारं॥
महा तेज तारं। बरं कंज भारं॥ छं० ॥ ४३४ ॥

(१) मो.-काम। (२) मो.-बिंटं।
(३) मो.-प्रति में यह छन्द त्रोटक नाम से लिखा है।

घरी यार सारं । परें कै प्रहारं ॥
भए पार पारं । मनों प्रात तारं ॥ छं० ॥ ४३५ ॥
करैं मार मारं । ववक्कैं वकारं ॥
चखैं रुद्धि धारं । पलं मच्चि गारं ॥ छं० ॥ ४३६ ॥
चरे मंस चारं । दिपै प्रेत द्वारं ॥
धपै धार धारं । टरैं जे न टारं ॥ छं० ॥ ४३७ ॥
डकै भूत डारं । ढरै सीस ढारं ॥
उड़ी बीर रैंनी । भ्रमै भौंर सैंनी ॥ छं० ॥ ४३८ ॥
ग्रवध्यं न गोपं । इसे बीर कोपं ॥ छं० ॥ ४३९ ॥

दूहा ॥ कोपि बीर कायर धरकि । परघि पयंपन जोग ॥
यह गति छंडै बीर बर । परै परत्तर भोग ॥ छं० ॥ ४४० ॥

कवित्त ॥ बांन पथ्थ बलभीम । सत्त [1]सिवरौ अधिकारी ॥
[2]गंभीरां गुर सिंघ । नेह करनह क्रत [3]धारी ॥
बल सुजग्य सक्रह बिसाख । पुरषारथ सारी ॥
सुर सिधि बुद्धि गनेश । क्रम्मन घुन घू अधिकारी ॥
सामंत सूर सूरह विरुध । बीर बीर पारस फिरिय ॥
बर सिंघ सिंघ रष्यै मरन । बर कोविद कोविद डरिय ॥ छं० ॥ ४४१ ॥

कवि का पृथ्वीराज को कलि में वीरों का सिरताज कहना ।

दुहा ॥ सु रिधि बुद्धि बुध्यां तरन । मिरन सूर दुति राज ॥
चाहुआन प्रथिराज कल । मंडि बीर सिर ताज ॥ छं० ॥ ४४२ ॥

पृथ्वीराज और कमधज्ज का मुकाबला होना ।

चाहुआन कमधज्ज बर । मिले लोह छुटि छोह ॥
धार मुरैं मुष ना मुरैं । मरट [4]मुच्छ क्रत जोह ॥ छं० ॥ ४४३ ॥
चाहुआन कमधज्ज दुति । रति बाहक प्रति धीर ॥
सारंगी सारंग बल । इह लग्गी अति बीर ॥ छं० ॥ ४४४ ॥

(१) मो.-सिवरं । (२) मो.-गंभीरं ।
(३) मो.-सारी । (४) मो.-मूल ।

धन्य है उन शूरवीरों को जो स्वामिकार्य्य के लिये प्राणों का मोह नहीं करते।

अरिल्ल ॥ द्रव्य (१)वस्य नन होइ प्रमानं। अप्पन (२)प्रान स्वांम छत दानं॥
जिन जग जिति किति बसि कीनी। मरन हूर सखह वर लीनी॥
छं० ॥ ४४५ ॥

दूहा ॥ कहां पंच पंची बसत। कहां प्रकृति प्रति अंग॥
कहां हंस हंसह बसै। कौन करै रन जंग॥ छं० ॥ ४४६ ॥

पृथ्वीराज और कमधज्ज का युद्ध।

इह कहि कढ़िय सार कर। घोखि खग्ग दोउ पानि॥
मानहु मत्त अनंग है। छुत छुट्टै (३)जम जांनि॥ छं० ॥ ४४७ ॥

घोर युद्ध वर्णन।

छंद भुजंगी॥ मिले हथ्थ बथ्थं न सथ्थं स धारे। मनौ वारुनी मत्त गज दंत न्यारे॥
उड़ै लोह पंती परै स्रोन (४)रुंदं। मनौ रुद्दि धारा वरष्षंत बुंदं॥
छं० ॥ ४४८ ॥

घुमे घाय घायं अघायं अघायं। झुमै झार झारं झनंकै झकायं॥
करैं जोगनी जोग काली कराली। फिर पैठ धावे महा विकराली॥
छं० ॥ ४४९ ॥

परै सूर वाहै बहथ्थी छपानं। कढ़ी तांत बाढ़ी मलं चारि जानं॥
धमां धम्म मत्ती महो माहि (५)धानों। पिंजारे सतं रुव पीजंत मानों॥
छं० ॥ ४५० ॥

महादेव मालानि में गूथि मथ्थं। (६)कहैं वाह वाहं वहै सुर हथ्थं॥
छं० ॥ ४५१ ॥

मुरिल्ल॥ (७)हाहरे रूप कायर प्रकारे। (८)छंडीति लज्ज अरु बीर मार॥
अभ्यसै सूर जिन सूर रूप। दैवत्त भूप दिव्यै अनूप ॥छं०॥ ४५२॥

(१) मो.-बसें। (२) ए. कृ. को.-काम। (३) मो.-यम।
(४) ए. कृ. को.-रुदं। (५) मो.-धानों। (६) मो.-वहै।
(७) मो.-हारे। (८) मो.-छंडी लज्ज भये बारि मार।

युद्ध की यज्ञ से उपमा वर्णन ।

कवित्त ॥ विषम जग्य आरंभ । वेद प्रारंभ शस्त्र वल ॥
है गै नर होमियें । शीश आहुत्ति [1]स्वस्ति कल ॥
क्रोध कुंड विस्तरिय । कित्ति मंडप करि मंडिय ॥
गिद्धि सिद्धि वेताल । पेषि पल साक्षत छंडिय ॥
तुंवर सु नाग किंनर सु चर । अच्छरि अच्छ सु गावहीं ॥
मिलि दान अस्र अप्पन जुगति । भुगति मुगति तत पावहीं ॥
छं० ॥ ४५३ ॥

दूहा ॥ करि सुचार आचार सव । समद कित्ति फल दीन ॥
गुरुजन मिलि करुना करिय । कायर हाहर कीन ॥ छं० ॥ ४५४ ॥

कमधज्ज का सर्पव्यूह रचना ।

कवित्त ॥ मिलि जद्दव कमधज्ज । अहिर व्यूहं आरंभिय ॥
पुच्छ सु खवि मनि वंध । पांइ गुज्जर पारंभिय ॥
सुधर मंडि वर वीर । पंग वंधह रचि गट्ठै ॥
फन अप्पन भय पुंज । जीभ क्रूरंभ सु ठट्टै ॥
हयनारि जोरि जंवूर घन । दसन हट्ट हग मुष्य करि ॥
मनि भयौ मेर मारूफ खां । [2]चच्चर सीचौ रंग परि ॥ छं० ॥ ४५५ ॥

गाथा ॥ अप्पं व्यूह अरंभो । प्रारंभो वीर भद्रायं ॥
जानिज्जै चव रंगं । चतुरंग दक्ष घंटायं ॥ छं० ॥ ४५६ ॥

दूहा ॥ घटिय घट्ट अघटन घटिय । पढ़िय सार दुअ सैन ॥
पंगराइ वंध्यौ सु हत । किये रत्त वर नैन ॥ छं० ॥ ४५७ ॥
रत्ते नैन विषम्म गति । दावानल प्रथिराज ॥
वीर चंद घन उन्नयौ । सार सु वुट्ठन आज ॥ छं० ॥ ४५८ ॥

पृथ्वीराज का मयूरव्यूह रचना ।

कवित्त ॥ मोर व्यूह प्रथिराज । सध्य [3]सज अप्पन कीनौ ॥
चुंच केम मंडली । कन्ह चहुआन सु दीनौ ॥

(१) ए.-सुत्ति । (२) को.-च्चर । (३) मो.-जल ।

पांइ पिंड विधि पंष । गरुअ गहिलोत बीर सजि ॥
पुंच्छ राज रघुवंश । चरन पुंडीर चंद रजि ॥
दुहु लोह कढ्ढि परियार तें । सारधार में अग्गि भर ॥
पल पंच तरंगनि रुक्कि जल । जांनि कमोदनि नंचि सर ॥छं०॥४५९॥
दिषि वर [1]लष्षिन फवज । चंपि चतुरंग रिंगावहु ॥
अरि सयल संभार । धीर भंजै मग पावहु ॥
बहु गरिष्ट तारिष्ट । हक्कि अप्पन पर धावहिं ॥
सु वर सिंघ आलसैं । स्याल हूधौ करि ध्यावहिं ॥
उट्ठै न बीर बीरह उठत । सुवर [2]मंत फुन्नि फुनि करैं ॥
वरसै न अंब सर मेघ कौ । जो न [3]समर सरवर भरै ॥ छं० ॥ ४६० ॥
गाथा ॥ समर सु मथ्थौ सेनं । तारं झंकार बीर भद्रायं ॥
केवल गति काल रूपं । भूयं बीर जुझयो समरं ॥ छं० ॥ ४६१ ॥

वीररस में श्रृंगाररस का वर्णन ।

दूहा ॥ समर जुद्ध मच्चिय समर । हालाहल बर [4]मत्ति ॥
कोलाहल पंषिन कियौ । कांम रूप बर जित्त ॥ छं० ॥ ४६२ ॥
छंद नाराच ॥ बरंत काम रूपयं । असी वहै अनूपयं ॥
लगै सु गौरि पासयं । परक्किया कटाछयं ॥ छं० ॥ ४६३ ॥
सरंत तीर सोहयं । उरंद मुट्ठि छोहयं ॥
हला हलं हलं मलं । भिलंत अंग संभिलं ॥ छं० ॥ ४६४ ॥
[5]कडा कडी कडक्कयं । दडा दडी दडक्कयं ॥
पडै सिरं पडक्कयं । डकंत बीर डक्कयं ॥ छं० ॥ ४६५ ॥
षिसै न ज्यों षडक्कयं । तुटंत तेजि डक्कयं ॥
हडा हडी हडक्कयं । .... ॥ छं० ॥ ४६६ ॥
निरष्षि पत्ति नाकयं । परंत हीय धाकयं ॥
बरंत अच्छरी बरं । भषंत गिद्धनी भरं ॥ छं० ॥ ४६७ ॥
लगंत लोह [6]सो लरं । अरिंम मत्त संमरं ॥ छं० ॥ ४६८ ॥

(१) ए. कृ. को.-लष्छन । (२) ए कृ. को.-मंत्र । (३) मो.-समूर ।
(४) को.-सत्ति । (५) ए. कृ. को-कटा कटी । (६) मो.-सौलं ॥

अरिल्ल ॥ अरिष्टन सम दिष्टन दिष्षिय । वीर चंद गए गह सुष भष्षिय ॥
यद् भरि होंन न परत सुबंधं । बर भारथ वीर रस संधं ॥
छं० ॥ ४६८ ॥

गाथा ॥ उठ्ठहि एक प्रमानो । धावंताय पंचयो सयनं ॥
[1]वाहंतं वर लोहं । साइनं देपयौ वीरं ॥ छं० ॥ ४७० ॥
रुधिरं पव तसतयौ । दो मझ [2]काय हकयौ सिरयं ॥
अति गति दुष्ट प्रकारं । अगिनत होंइ वीर सम सेनं ॥ छं ॥ ४७१ ॥
अगनित गने न आर्न । ई कोइ कोपि रुद्रयो सहसं ॥
वर वीरार सुभट्टं । दावानलं पंगयौ वीरं ॥ छं० ॥ ४७२ ॥

पृथ्वीराज की आज्ञा पाकर कन्ह का क्रुद्ध होकर झपटना।

दूहा ॥ तव चहुआन सु कन्ह वर । ठट्टौ करि गुरुराज ॥
हुकम नृपति छुट्टौति इम । [3]जनु तीतर पर बाज ॥ छं० ॥ ४७३ ॥

कवित्त ॥ सुष छुट्टत नृप वैन । नैन दिठ्ठौ धावंतौ ॥
क्रंम बंध बल मोह । छोह बंध्यौ सु वरत्तौ ॥
सु वर सेन चहुआन । सिंग अद्दूनं [4]नमाई ॥
जनुं मंदिर विय बार । ढंकि इक बार बनाई ॥
तकसीर करन दोउ अंस वर । किति मग्ग करतव्य कर ॥
अथवंत रविह आदित्य दिन । अगनि सार वुट्टिय कहर ॥
छं० ॥ ४७४ ॥

गाथा ॥ सुष छुट्टा नृप वैनं । कै दिठ्ठाय धावता नैनं ॥
बजजी वाहु सुवारं । धारं ढारि [5]मत्तयौ धरयं ॥ छं० ॥ ४७५ ॥

कन्ह का युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ मत्त ढरहि संमुष भिरहि । स्वांमि सनाह सहर ॥
आज सुष्य चहुआन कन्ह । सिंधु सत्त कौ नूर ॥ छं० ॥ ४७६ ॥

गाथा ॥ सद सिह्वत नूरं । कारूरं करनयो नंध्यौ ॥
एको अंग सुरंगो । दिष्षे वा वीरयं वीरं ॥ छं० ॥ ४७७ ॥

(१) को.-व्याहंतं । (२) मो.-काम । (३) मो.-मनु
(४) मो.-नमाई । (५) ए. कृ. को-मत्तयो ।

घनयं खहि नरिंदं। तिहि संचिय सायरो नव्यौ ॥
कलहंतं बल विषमं। जुधमं देहीय लज्जतौ सूरं ॥ छं० ॥ ४७८ ॥
कढ्ढ लोह दुहथ्थं। सत्तं घरियाय वज्जयौ अंगं ॥
चावद्दिसि चतुरंगी। अनुरंगी सेन सब्बाइं ॥ छं० ॥ ४७९ ॥

दूहा ॥ अनुरंगी सेना [1]सकल। सह सुरह विरुद्ध ॥
अबुध बुद्ध भारथ्थ में। दान मान सु [2]प्रबद्ध ॥ छं० ॥ ४८० ॥

गाथा ॥ बर अथवंत सु दीहं। सुभं विन जोतयं कलयं ॥
घरिघट अघट नरिंदं। सा बुड्ढ बीर भद्रायं ॥ छं० ॥ ४८१ ॥

पृथ्वीराज के वीर सामंतों का प्रशंसा।

मुरिल्ल ॥ बीरभद्र अरु रुद्र जलप्पिय। कह्यौ सत्त संकरषन थप्पिय ॥
तुम सकल कलित भारथ फिरि दिष्यौ। इन समान कोइ बीर विसष्यौ ॥ छं० ॥ ४८२ ॥

गाथा ॥ को [3]दिठौ समं बीरं। सामंतं स्वामयौ [4]क्रमयं ॥
इकं करन प्रमानं। अंगद कालेय रावनो [5]भिरयं ॥ छं० ॥ ४८३ ॥

चौपाई ॥ राम कांम अंगद अधिकारी। स्वांमि कांम सामंतव धारी ॥
जिन हय गय तन तिन वर जान्यौ। सुमत भ्रंम स्वामित्त पिछान्यौ ॥ छं० ॥ ४८४ ॥
[6]सुपति भ्रम्म जिन तंत प्रमानिय। मुकति सुर्ग केवल सुनि बानिय ॥
घट्टिय घट्ट विघट्ट सुषंड्यौ। सुपथ साथि आपथं सु मंड्यौ ॥ छं० ॥ ४८५ ॥
जिन छंडिय संडिय क्रत धारिय। सार कढ्ढि हय तज्जि सु धारिय ॥
[7]परनि प्रहार सार तजि सारं। जड़ता तज्ज लगतं तम तारं ॥ छं० ॥ ४८६ ॥

छंद विराज ॥ लगे बीर सारं। किए मत्त पारं ॥
बहथ्थंत धारं। अनुज्जा प्रहारं ॥ छं० ॥ ४८७ ॥
तुटै धार धारं। मनों श्रुत्त तारं ॥
अवित्तं विहारं। कलिंदी कहारं ॥ छं० ॥ ४८८ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुबल। (२) ए. कृ. को.-मबुद्ध।
(३) मो.-नट्ठौ। (४) को-मो.-कृतयं।
(५) मो.-भरयं। (६) ए.-सुमति। (७) मो.-परति।

मनौं नभ्भ धारं । सु भारथ्थ सारं ॥ छं० ॥ ४८६ ॥

* चौपाई ॥ सार धार भारथ प्रहारं । मानहु दुत्तिय अंग विहारं ॥
धार तिथ्थ कै तिथ्थह राजं । जनक काम कामनि सिरताजं ॥
छं० ॥ ४९० ॥

कवित्त ॥ वर अथवंत सु दीह । भुझिझ [1]लच्छिन जद्दव भर ॥
लोह धार लगि विषम । ईस लीनौं जु शीश कर ॥
रह्यौ न तन दक्खन सु मंस । पल चरन न पाइय ॥
अश्व शस्त्र पष्पर [2]पलान । ढुढंत नन पाइय ॥
वरि लियन वीर अंतर मिल्यौ । [3]अच्छर [4]सुच्छर ना लियौ ॥
मिलि गय सु भान सुत भान कौ। दिव दुंदुभि वज्जत वियौ ॥ छं० ॥ ४९१ ॥
अगनि झार धर धार । सार वज्जी प्रहार असि ॥
कंक दिए सिंघा सुरारि । भग्गौ नल गंभरि ॥
शस्त्र घात आघात । वथ्थ अन वथ्थ सु लग्गा ॥
सुरत अंतरित सेत । मिले दूती मन भग्गा ॥
सिरदार सैन नृप द्वै करिय । दोज घाव घन घुम्मि घट ॥
उवर्‌यौ कन्ह प्रथिराज क्रम । झुझ्झि पुंज बंध्यौ सुभट ॥ छं० ॥ ४९२ ॥

इस युद्ध को देख कर देवताओं का प्रसन्न हो कर पुष्पवृष्टि करना ।

छंद भुजंगी ॥ वजी दुंदुभी आज आयास यानं। करे लोह लोहं [5]सुलोकंति गानं।
कहै चंद सूरं महावीर पाई । परे पुष्फ वर विष्ट वज्जै विधाई॥ छं० ॥ ४९३ ॥

सांझ हो गई परंतु कमधज्ज की अनी न मुड़ी।

कवित्त ॥ जौति लियौ जै पत्ति । चार चतुरंग स मोरी ॥
वर बंध्यौ नृप पुंज । ढाल जद्दव न ढँढोरी ॥
वर [6]लच्छिन परि पंत । कन्ह चहुआन उपारिय ॥

* मो.-प्रति में अधिक । (१) मो.-लन ।
(२) मो.-प्रमान । (३) मो.-अस्सर । (४) मो.-सुसर ।
(५) ए. कृ. को.-लोकेमु । (६) मो०-लच्छिन ।

घेत ढूंढ़ि प्रथिराज। सुभृत भोरी करि डारिय॥
इतनें सु भान अस्तमित भये। दोऊ सेन बर उत्तरिय॥
मुक्की न बग्ग कमधज्ज की। रोस राह विसरन भरिय॥छं०॥४९४॥
बजी संझ घरियार। सार बज्यौ तन भंभर॥
जनु कि बज्जि झननंक। ठनकि घन टीप स 'उब्बर॥
अनल अग्गि सम जग्गि। जेन धज बंधि सलग्गा॥
मनु दुप्पन में बैठि। नेत बडवा नल जग्गा॥
घन स्यांम पीत रत रंग बर। विविध बीर गुन बर भरिय॥
हर हार गंठि रुठि उमां। किम उतारि पच्छो धरिय॥छं०॥४९५॥

कमधज्ज का अपने वीरों को उत्साहित करना।

छंद भुजंगी॥ भिर्‌यौ राम रन बीर कमधज्ज वीरं।
करो आज सर्व्वं 'सुन्निद्वीर धीरं॥
गुहे माल ईसं नचें जोग बीरं।
भिरं तंत मेतं धरं धीर हीरं॥ छं०॥ ४९६॥

सब रन भूमि में तीन हाथ ऊँची लाशें पड़ गई।

दूहा॥ परि पथ्थर सथ्थर सुरन। गमक गमें नहिं जाइ॥
हथ्थ तीन लुथ्थह चढ़ी। मुरबी 'मह न माइ॥ छं०॥ ४९७॥
संझ सपत्ते न्रपति बर। नव नव रस अरपंत॥
बर प्रथिराज नरिंद दुति। सो ओपम कविकंत॥ छं०॥ ४९८॥

तीन घड़ी रात्रि होजाने पर युद्ध बंद हुआ।

कवित्त॥ घरिय तीन निसि गइय। बार बर सुक्र सु आगम॥
पंति परी अरिजूह। बीर विंब्यौ अरि जागम॥
कोट पखन सोभै। विसाल सामंत सूर थँभ॥
जस देवल उप्पनौ ३ब्रीय गय गिरी सेत रँभ॥
प्रथिराज देव दानव दलन। लच्छि रूप जद्दव कुँअरि॥
नव रस विलास पूजा करहि। बर अच्छरि भइ पहुप सरि॥छं०॥४९९॥

(१) ए.—उब्बर। (२) ए०—सन्निवरि। (३) ए०-सद्ध।

पृथ्वीराज की सेना की समुद्र से उपमा वर्णन।

श्रम सु श्रंग बिंटयौ। सुधा [1]बिंटयौ जु बाल रस॥
श्रमिय चंद बिंटयौ। समुद बिंटयौ वडवा तस॥
श्ररि कैं दिल विष उरग। मंत्र ससि वृत्त प्रेम श्नर॥
लहि न सुद्धि सब बसन। श्राइ लग्गेति रोस भर॥
बजि वीर धार दुज दल सघन। लाग निसानन नृत्य पर॥
प्रथिराज सेन बंधौ स श्रति। सु कविचंद उच्चारि वर॥ छं० ॥ ५०० ॥

युद्ध में नव रस वर्णन करना।

भान कुंश्ररि श्रश्विहृत। नैन श्रृंगार सुराजै॥
वीर रूप सामंत। रुद्र प्रथिराज बिराजै॥
चंद श्रद्भुत जानि। भए कातर करुना मय॥
बीभछ श्ररिन समूह। सात उप्पनौ मरन भय॥
उप्पज्यौ हास श्रपछरि श्रमर। भौ भयान भावी बिगति॥
कूरंभराव प्रथिराज [2]बर। लरन लोह चिंते तरनि॥ छं० ॥ ५०१ ॥

राम रघुवंश का कहना कि जिस वीर ने युद्धरूपी काशी क्षेत्र में शरीर त्याग करके इस लोक में यश और अंत में ब्रह्म पद न पाया उसका जीवन वृथा है।

कहै राम रघुवंस। सुनौ सामंत सूर तुम॥
श्रमर नरन बंछहि सु। जुद्ध किन कथ्थ नरिंद भ्रम॥
धार तिथ्थ वर श्रादि। तिथ्थ काशी सम भज्जै॥
श्रसि वरुना तिन मध्य। लोह तेज सम गज्जै॥
सिव सिद्ध जोग सज्जै सकल। श्रकल श्रपूरब वत्त इह॥
लभ्यौ न वीर जिन ब्रह्म पद। छिनक मद्धि गति लभ्भि इह॥ छं०॥ ५०२॥

गुरुराम का पृथ्वीराज को विष्णु पंजर कवच देना।

पढ़ि सुमंच गुर राम। विष्णु पंजर सनाह दिय॥

(१) मो.-बींध्यौ।　　(२) ए. कृ. को.-छर।

केस कंस मरद्दन। नंद नंदन खिलाट किय॥
भोह भुअद्दर धरि समुद्द। नैंन निज्जिय नाराइन॥
बदन दिष्ट श्रीलष्य। हृदय थप्पौ मथुराइन॥
कटि जंघ गुविंद रष्षा करन। चरन थप्पि असरन सरन॥
मुर इष्ट समरि प्रथिराज कौ। इह सुदिट्ठ रष्षा करन॥ छं०॥ ५०३॥

कमधज्ज और जद्दव की मृत फौज की शोभा वर्णन।

दूहा॥ परि पारस जद्दव सयन। मिलि कमधज्ज प्रमान॥
षट बिय ग्रह मनु नछित लै। [1]पंति सु मंडिय भान॥ छं०॥ ५०४॥

किन किन बीरों का मुकाबला हुआ।

छंद चोटक॥ परि पारस पंग नरिंद घनं। मनो भान सुमेर कि पंति बनं॥
घन सद्द सुरंग निसान धुनं। मनौं बज्जत दुंदुभि देव तनं॥ ५०५॥
चव दून निसान सु कन्ह धनी। जु कियौ सिरदार सु पंग अनी॥
दिसि पच्छिम बालुकराय अर्यौ। तिनके मुख कन्ह पजून खर्यौ॥
छं०॥ ५०६॥
हुअ ईस दिसान दिसा न्रप मान। तिन कें मुष भो रन भाटिय भान॥
दिसि पूरब भो षुरसान षँधार। तिन कै मुष मंडि सलष्ष पंवार॥
छं०॥ ५०७॥
अगिनेव दिसा बन सिंघ अचाह। तिन के मुष मंडिय निड्डुर राय॥
दिसा जम बच्छिन बंधिय फौज। तिन के मुष चामँड दाहर कौज॥
छं०॥ ५०८॥
सुनै रति छच उब्यौ कर बीर। तिन कें मुष मंडिय चंद पुंडीर॥
जु बायु दिशा दिशि इंद्रयपाल। [2]तिनें मुष भौम भिरे रिनमाल॥
छं०॥ ५०९॥
[3]सु उत्तर दै प्रभु पंग कुँआर। तिनें रघुवंस बजावत सार॥
बढै गुर जंबुर [4]हथ्थह नार। मनौं गज भद्दव कौ उनिहार॥
छं०॥ ५१०॥

---

(१) ए०—पति।
(२, ३) पंक्ति मो.-प्रति में नहीं है। (४) ए. कृ.०को.-हथं हथ।

छुट्टे गुरजं वदियानन सें। उड़ तें पलटे मनों तारक सें॥
पति बंधि सनाह सयान करें। अरि के मुष सामँत सूर लरें॥
छं० ॥ ५११ ॥

रात्रि व्यतीत हुई और प्रातःकाल हुआ।

भयें प्रात जगंतय सूर परे। तिन कें लरतें ब्रह्मण्ड डरे॥
गय रुद्र निशा पहु फट्टि ननं। दोउ संगम अंग विरंग घनं॥
छं० ॥ ५१२ ॥

प्रिय प्रातक सीत चलै मधुरं। निशि छीय उसास निसास डरं॥
वर तोरत तारक भूषन सो। मुष मूंदि कमोदनि ना बिगसो॥
छं० ॥ ५१३ ॥

पहु फट्टिय वीर प्रमांन नयै। रवि रत्त सुतत्त वियोग लयै॥
जु भई गति सिद्धथल ता सगरी। सर छिप्पन कोलि कला निसरी॥
छं० ॥ ५१४ ॥

वजि दुंदुभि देव निसान धुअं। प्रगटे सत पच सुरंग हुअं॥
वर रंग जवा सन जोति फिरी। घन देहि असीस चकी चतुरी॥
छं० ॥ ५१५ ॥

घन रोर चकोर कमोद भगे। जु गए दुरि चोर सु देव जगे॥
जमुना हुलसी जमराज हंस्यौ। जु गयौ तिमरं भजि तेज सज्यौ॥
छं० ॥ ५१६ ॥

वर इंद अनंदिय चंद कह्यौ। जु सज्यौ रथ उंच अरुन्न गह्यौ॥
सु चल्यौ चक्र एकहु चक्र कह्यौ। सु गह्यौ कमलं कर को अकारयौ॥
छं० ॥ ५१७ ॥

वर उड्डग नीर पवन्न उडं। जु चले सब कांमज अग्गि गडं॥
जु भयौ धनं भ्रंम मिटी वनिता। वल जाप अजाप न सो जपता॥
छं० ॥ ५१८ ॥

गाथा॥ गई सर्व्वरी सु संबं। फट्टौ पहुवँ नट्ठयौ तिमिरं॥
तंम चूरन प्रति किरनं। तरुनं विराइ तरुनयो रचयं॥ छं०॥ ५१९॥

(१) को.-वृत्त। (२) को.-बट्टि। (३) ए.-नवासनि।

प्रातःकाल होते ही घोड़ों ने ठीं लगाई, शूरबीरों ने तयारी की और दोनों तरफ के फौजी निशान उठे।

कवित्त ॥ [1]सुफट किरनि पहु बीर। परिय आरन्नि निसा गय ॥
उभय षट्ट प्रगटीय। हक्क बोलंत हयनि हय ॥
तिमिर तेज भंजन। प्रमान कमधज्ज नरिंदह ॥
मांन तुंग चहुआन। जग्य जंपिय कवि चंदह ॥
नव ग्रेह नवम्मिय नव निसा। नव निसान दिघ्घि मान धुरि ॥
सामंत सूर भुज उप्परै। रहसि राज प्रथिराज फिरि ॥ छं० ॥ ५२० ॥

शूरबीरों के पराक्रम से और सूर्य्य से उपमा वर्णन।

गाथा ॥ सुघटं किरनं वीरं। पारस मिसह सेन कमधज्जं ॥
उदयं अस्तमि भानो। मेर पच्छि दच्छिनो फिरयं ॥ छं० ॥ ५२१ ॥
दूहा ॥ दच्छिन पत्त सुमेर फिरि। यों पारस पहु यंग ॥
सार धार धारह मिले। सुबर बीर प्रति अंग ॥ छं० ॥ ५२२ ॥
चौपाई ॥ सार धार प्राहार प्रकार। मनौं मत्त घन पंति विभार ॥
उठे बीर सत्तौं विरुझाइ। भान पयान न मत्त सुचाइ॥ छं०॥५२३॥

पृथ्वीराज का शुद्ध हो कर विष्णु पंजर कवच को धारण करना।

गाथा ॥ ग्रह सुद्धा प्रथिराजं। अष्ट ग्रहं बंकमो विषयं ॥
विष्णुं वीर सुधारं। पंजर भंजे राजयो अंगं ॥ छं० ॥ ५२४ ॥

उस पंजर में यह गुण था कि हजार शस्त्र प्रहार होने पर भी शस्त्र नहीं लगता था।

दूहा ॥ सा पंजर दिय राज वर। सस्त्र लगै नहिं घाइ ॥
कोटि अंग धावह घने। भुज प्रमान सो पाइ ॥ छं० ॥ ५२५ ॥

बैकुंठ बासी विष्णु भगवान पृथ्वीराज की रक्षा पर थे।

गाथा ॥ बैकुंठह बर वासी। सासी गहनाथ गिरन सा धरियं ॥
सो रक्षा चहुआनं। अनरथ्था मंचयो धरयं ॥ छं० ॥ ५२६ ॥

(१) ए. कृ. को.-मट।

इधर से पृथ्वीराज उधर से कमधज्ज की सेना की तैयारी होना।

दूहा ॥ बज्जि राग चौहान भर । उत कमधज्ज नरिंद ॥
सार धार वज्जिय विषम । कहि अनंन कविचंद ॥ छं० ॥ ५२७ ॥

आगे यादवराय की सेना तिस पीछे कमधज्ज की सेना, तिस के पीछे हाथियों की कतार देकर रूमी और अरबी, का सेना सज कर युद्ध के लिये चलना।

छंद त्रोटक ॥ सुर तीन फवज्ज सु बंध यपी ।
अग जद्दव राइ नरिंद रूपी ॥
तिन पच्छ सु बीर सुरंग अनी ।
बिच बंधिय हथ्थिय पंति घनी ॥ छं० ॥ ५२८ ॥
बर हथ्थसि किन्नर रूमि बिचै ।
झननंकत पाइक पंति नचै ॥
तिन सौर सुगंध बिछाइ घनं ।
बहु जुम्मक कपट्टिय मंडि डनं ॥ छं० ॥ ५२९ ॥
हय उच्छरि पेह अयास लगी ॥
नव तुट्टि [1]तिनं बनि बारि भगी ॥
अरबी सरसीरुह [2]संकुचिता ।
चकई चक मूंकति चूक तता ॥ छं० ॥ ५३० ॥
पवनं गवनं नन पंथ वहै ।
नव नेज धजा [3]धज लग्गि रहै ॥
फन फूंक फनं पति को बिसरी ।
सुदरी दिग अट्ठ हगं धुँधरी ॥ छं० ॥ ५३१ ॥
घन बज्जत घंट सघंट घनं ।
नव नोरव नारि निभंग मनं ॥
ढलकै गज ढाल सुनेज बनं ।
[4]चमकै बल के मन चौज मनं ॥ छं० ॥ ५३२ ॥

(१) मो. नितम्बनि । (२) ए. कृ. को.-संकुरित, संकरित ।
(३) मो.-धन । (४) मो.-चमकें चल्कें चमकें चमनं ।

तिन की उपमा कविचंद करी।
मनौं मेघ महेंद्रव बीज झरी॥
घन मन्निय नइ विबंक सुरं।
सुभिहै बिब हथ्थ धजा विघुरं॥ छं०॥ ५३३॥
गज नइ जंजीरन के घुरयं।
मनौं बंधिय झिंगुर सा सुरयं॥
तिन के कछु दान कपोल झरे।
सु मनौं नभ के बरसे बदरे॥ छं०॥ ५३४॥
बजि लाग निसान धमंक सजी।
सहनाइन सिंधुअ राग बजी॥
नव नारद सारद ते किलकै।
नव बंदि बिरद्द नद्दे हलकै॥ छं०॥ ५३५॥
घन देषि अरिष्ट सुवाल डरी।
मुदरी नव आनद चित्त हरी॥
कमधज्ज कला चढ़ती बर पेषि।
मुंदरी ससिहत्त दइ [1]अग्गि [2]लेखि॥ छं०॥ ५३६॥

सेना की सजावट की शोभा वर्णन और उसे देख कर भूत वेताल योगिनी आदि का प्रसन्न हो कर नाचना।

निसाणी॥ फौज रची तिन दीय घन मध्य मसंदा।
जालिम जोध जुवान सेर रस बीर रजिंदा॥
अग्गैं उभ्भा अप्प आइ जादव्व नरिंदा।
मनौ उभ्भै मेर कै अड्डी अग डंदा॥ छं०॥ ५३७॥
पीछै ठाढ़े राठ बड़ बल जे बिचरंदा।
जानकि उत्तर उन्नया घन लोह सहंदा॥
पाइक पंति अपार वर जनु मोर नचंदा।
बाग गहिग्गहि बाज कीन रन बीर नचंदा॥ छं०॥ ५३८॥

(१) ए. कृ. को.–गति। (२) मो.–पेषि।

वीरा रस्स उतावल न रहै वरजिंदा ।
अलवेला सु उछंछला अनमी अवसंदा ॥
गाहड़ सल्ल गुमान गुर गुन गात गुरंदा ।
वज्जे निसान नफेरियान घोर घुरंदा ॥ छं० ॥ ५३९ ॥
सत्त वीर सुनंत तन तामस्स भरंदा ।
सुनि चौसट्ठी जुगिन किलकि किलकंदा ॥
भूत भयानक भाय भरि भहरें भहरंदा ।
पेइ थेई गति पेष पाल किलकार करंदा ॥ छं० ॥ ५४० ॥
बावन वीर [1]वलिष्ट वर वल कारि विलसंदा ।
देषैं देव विमान चढ़ि कौतिग्ग अनंदा ॥
तारी दै दै तान तुट्टि नारद नचंदा ॥ छं० ॥ ५४१ ॥
गाथा ॥ नंचै नारद सिद्धं । बुद्धे बुद्धिवंत सुभट्टाई ॥
वंधे बुधिवर भट्टं । सहकारं वीर [2]भट्टायं ॥ छं० ॥ ५४२ ॥

सुसज्जित सेना से पावस की उपमा वर्णन ।

चौपाई ॥ नाम नाम जिम पूरन स्याम । तडित वेन धुक्की धर धाम ॥
गर्जित सिंह अपास सवद्द । करनि भज्जि होते जिन मद्द ॥ छं० ॥ ५४३ ॥
गाथा ॥ मदंक रीति भग्गा । आकास यौ सद्दयौ सद्दं ॥
सो कसं वर मंचं । फेरे अकुंस सीसए मारं ॥ छं० ॥ ५४४ ॥

अंकुस लगा कर हाथी बढ़ाए गए और शस्त्र निकाल कर शूरबीर लोग आगे बढ़े ।

दूहा ॥ अकुंस मारि प्रहारि गज । बंधन अध पूजान ॥
शस्त्र कड्ढि संमुह भिरन । धनि संभरि चहुआन ॥ छं० ॥ ५४५ ॥

कमधज्ज के शीश पर छत्र उठा उसकी शोभा ।

अरिल्ल ॥ उग्यौ छत्र कमधज्ज नरिंदह शीश पर ॥
मनों कनक दंड पर ज्यूं इंदी इंदवर ॥

(१) ए० कृ० को०—अरिष्ट ।　　(२) ए. कृ. को.-भट्टाई ।

घोड़ों की टापों से आकाश में धूलि छागई ।

हय षुर [1]उच्छरि षेह अयासह धुंधरी।
भान गंग प्रथिराज देषनह उत्तरी ॥ छं० ॥ ५४६ ॥

चहुआन का घोड़े पर सवार होना ।

दूहा ॥ वहकि निरह नष्यर भिदै । यह पारथ पविचान ॥
सो प्रति सारह उत्तरन । फिरि चढ्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ ५४७ ॥

उस दिन तिथि दसमी को युद्ध के समय के तिथि योग नक्षत्रादि का वर्णन ।

कवित्त ॥ दैव दसमि दिन दीह । दीह पहरौ नरिंदं ॥
गुरु पंचम रवि नमो । सुबर ग्यारमो सुचंदं ॥
चतिय थान बर भोम । सुक्र सप्तम वर कीनौ ॥
ब्रुप सुपनंतर आइ । ईस [2]जौपन वर दीनौ ॥
चौसट्ठि पुट्ठि वि पुट्ठियन । अरिन सेन संमुह [3]परे ॥
न्त्रिघोष सह बज्जैत सब । सुबर लोह कट्टे करे ॥ छं० ॥ ५४८ ॥

युद्ध वर्णन ।

छंद त्रिभंगी ॥ कविचंद सुबरनं करै सुकरनं सूरह लरनं भर भिरनं ॥
तिरभंगी छंदं नाग नरिंदं कथ्थ करिंदं दुष हरनं ॥
[4]पढ़ मंदह मत्ता पुनि अठ मत्ता असु वसु मत्ता रस मत्ता ॥
घन घाइ सघत्ता सूर सरत्ता में गल मत्ता करि धत्ता ॥ छं० ॥ ५४९ ॥
बज्जे बर कोहं लग्गौ लोहं छक्के छोहं तजि मोहं ॥
सूरा तन सोहं स्वामिन द्रोहं मत्ते ढोहं रिन डोहं ॥
बर बान बिछुट्टे बगतर फुट्टे पारन षुट्टे धर तुट्टे ॥
तरवारनि तुट्टे धम्भर लुट्टै अंग अहुट्टे गहि झुट्टे ॥ छं० ॥ ५५० ॥
बीरा रस रज्जं सूरस गज्जं सिंधुअ बज्जं गज गज्जं ॥
अच्छरि तन सज्जं बरं वर जंजं चित्ते बज्जं मन मज्जं ॥

(१) मो.-उच्छरि। (२) को.-जीयन (३) मो.-परै, करै।
(४) ए. कृ. को.-परि मंदह मत्तापुर नन्दी।

कायर रन भज्जं तज्जि सलज्जं स्वामि सु काज्जं भर सज्जं ॥
जम दट्ठ सु सज्जे हट्टह मज्जे छिन्नन छज्जे रिन रज्जे ॥छं०॥५५१॥

घायल सामंतों की शोभा ।

सोरठा ॥ रिन मंते सामंत । घाइ अंग तज्जे घने ॥
मनो मत्त मय मंत । विना महावत रारि मिलि ॥ छं० ॥ ५५२ ॥

शूरवीरों का क्रोध में आकर युद्ध करना ।

छंद भुजंगी ॥ कढै लोह कोहं दुदीनंति वज्जै ।
सजे तामसं राज सा तुक तज्जै ॥
काटे कंध सूरं मिले सार कोहं ।
सना हंत सूरं फिर वेश सोहं ॥ छं० ॥ ५५३ ॥
उड़ै टोप टूकं वजै सार घंटै ।
मनो अग्ग दंगी लगी बंस फुट्टै ॥
मनों मीन माया जलं सब्ब तुट्टै ।
.... ॥ छं० ॥ ५५४ ॥
असी मंस तुट्टै कारं कंस हल्लै ॥
मनो कग्गदं काल बूतं सु चल्लै
सु भट्टं सु सूरं कुभट्टं सु कीनं ।
उलट्टयं समेजीं हतं जान थीनं ॥ छं० ॥ ५५५ ॥
चढ़यौ पावसं जुद्धं संभरेशं ।
दलं बद्दलं सद्दलं ते नरेशं ॥
घनं घोर घंटा निसानं दिसानं ।
तिनं सूलियं सह आषाढ मानं ॥ छं० ॥ ५५६ ॥
कवै दामिनी तेग वेगं प्रमानं ।
पड़ै भट्ट बीरं वुलै मोर बानं ॥
लगै बाइ बुट्ठ सरं सार गोरी ।
रुधिं नार मानो प्रवाहै स जोरी ॥ छं० ॥ ५५७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-में । (२) मो.-सात्विक ।
(३) ए. कृ. को.-कढे । (४) ए. कृ. को.-भेस । (५) ए.-भारी ।

करैं कायरं चीय करुना प्रमानं।
लगै बाह कालंदि चंपे समानं॥*
जनं चीय जंपी उनं पीय जंप्पौ।
सोई ओपमा चंद बरदाइ थप्पौ॥ छं०॥ ५५८॥

कवि का कथन कि उन सामंतों की जहां तक प्रशंसा की जाय थोड़ी है।

दूहा॥ देवप्पति देवह सु दुति। मति सामंत सधंत॥
जिन अच्छरि सच्छरि कहीं। सो जस बाढ बर कंत॥ छं०॥ ५५९॥
गाथा॥ जस धवली बर बढयं। चय लोकं साध [1]यौ तरयं॥
जानिज्जै परिमानं। सतं समुद्द सींचयो [2]नीरं॥ छं०॥ ५६०॥
छंद लघुत्रोटक॥ मिलि जुद्ध मच्यौ। रन षेत रच्यौ॥
सम सार सच्यौ। नव एक मुच्यौ॥ छं०॥ ५६१॥
रस बीर षच्यौ। तन रारि [3]तच्यौ॥
कहुँ जाई बच्यौ। .... ॥ छं०॥ ५६२॥
जुग्गनि जितनी। किलकैं तितनी॥
घन घाइ घुरैं। पट सीस परैं॥ छं०॥ ५६३॥
दोउ बीर बड़े। लगि लोह अड़े॥
घट घाइ पड़े। झुर होइ झड़े॥ ५६४॥
सस केश डफै। तन सों तड़फै॥
फिफरा फड़कै। कढि सों कड़कै॥ छं०॥ ५६५॥
पग हथ्थ परैं। ढी चाल [4]ढुरैं॥
धक धींग धकैं। मुष मार बकैं॥ छं०॥ ५६६॥
रस बीर छकैं। हक हूक हकैं॥
बहु सूर लरैं। न्रप भार परैं॥ छं०॥ ५६७॥

---

* ए. कृ. को. प्रतियों में इसके आगे ये दो पंक्तियां हैं।
उनै मैन त्रासं उनै सत्र सारं। कम्यो काइरं कामनी ना प्रभासं॥

(१) ए. कृ. को.-सो। (२) मो.-नीयं।
(३) ए. कृ. को.-रच्यौ। (४) मो.-ढरे।

कमधज्ज के वीर खवास का युद्ध और पराक्रम वर्णन ।

दूहा ॥ सुवर वीर षावास भिरि । मुक्कि सु धाम धमारि ॥
सो श्रोपम कविचंद कहि । भुकि कट्ठी परिहार ॥ छं० ॥ ५६८ ॥

अरिल्ल ॥ मोह पारि जिन छंडिय सूर । तिरन वीर भारथ्थह पूर ॥
दैव जुद्ध आर्कात्त अबुद्ध । कढ़े लोह दुव-लोदह जुद्ध ॥ छं० ॥ ५६९ ॥

छंद विराज ॥ कढ़े लोह वीरं । महा मल्ल तीरं ॥
हको हक्क वज्जी । गिरं जानि गज्जी ॥ छं० ॥ ५७० ॥
कढें मत्त मंती । अहतं न दंती ॥
वहै लोह सारं । प्रहारंत भारं ॥ छं० ॥ ५७१ ॥
भनंके भनंकी । रथं भान थक्की ॥
हलक्कंत सूरं । बजे देव तूरं ॥ छं० ॥ ५७२ ॥
उतं मंग तुट्टै । [1]घरी दोम लुट्टै ॥
घरी इक जानं । सु भारथ्थ मानं ॥ छं० ॥ ५७३ ॥

दूहा ॥ सुवर वीर षावास विजि । कट्ठी बंकी असि ॥
सोभै सीस गयंद कै । मनुं तेरस की ससि ॥ छं० ॥ ५७४ ॥

खवास तो मारा गया परंतु उसका अखंड यश युगान युग चलेगा ।

कवित्त ॥ सुवर वीर षावास । षिम्भि कट्ठी सु बंकि असि ॥
सुभै सीस गज राज । अन्न तेरसि कि बाल ससि ॥
सुठ्ठि चंपि द्रग पानि । नीर वानं सुवारह ॥
मनु मुत्तिय वारुन्न । बंदु बंधे इन बारह ॥
साम रम देन पावरि धनि । स्वामि सु अंतर फुनि मिलिय ॥
जीरन [2]युगास संदेस सदि । गल्ह एक जुग जुग चलिय ॥ छं० ॥ ५७५ ॥

खवास के मरने से कमधज्ज को बड़ा दुःख हुआ और उसने अपने मंत्रियों से पूछा कि अब क्या करना चाहिए ।

(१) मो.-घरी ।　　(२) ए. कृ. को.-जुगा ।

सुबर बीर कमधज्ज। राज संमुह अरि झारिय॥
मरन थूंज षावास। मरन अप्पनौ विचारिय॥
सब सु सथ्थ पुच्छयौ। तंत मंतह उच्चारिय॥
सकल मंत रजपूत। मंत मो देहु सुचारिय॥
हारिये थूंम जित्ते सुसब। ता उप्पर तन रष्षियै॥
मो मंत्त सुनौ तौहूं कहूं। दुज्जन दल बल भष्षियै॥ छं० ॥ ५७६॥

मंत्रियों का कहना कि समय पड़ने पर सुग्रीव, दुर्योधन, श्री रामचन्द्र, पांडव, अर्जुन इत्यादि सब ने अपनी अपनी स्त्रियों को छोड़ दिया।

एक समै सुग्रीव। त्रिया रष्षीं न अप्प बल॥
एक समै दुरजोध। छन्नि पुक्कार मंडि कल॥
एक समै श्रीराम। त्रिया अप्पनी न रष्षी॥
एक समै पंडवन। चीर कड्डत द्रग लष्षी॥
रष्षिय न गोप पारथ बलिय। ससि सुबैर तारक बर॥
त्रिघात बात गोविंद बिना। जीव रषिन सर्बंग गहि॥छं०॥५७७॥

कमधज्ज के मंत्रियों के मंत्र देने के विषय में कवि की उक्ति।

दूहा॥ भल भल तुरी चढंत बर। तिन अष्षरन अषार॥
मरन जानि भूलंग हर। कट्टर चड़े तुषार॥ छं०॥ ५७८॥
कवित्त॥ सु कवि गत्ति ननग्रही। कु कवि गतिय सु क्रम बदन॥
सलिल बानि बोलै न। कठिन कुव्वचन सु स्वदन॥
छूटत घोट कवित्त। चित्त लहु गुरन प्रकासं॥
अघट घाट गुन करै। घाट सुद्धं न प्रगासं॥
अच्छरि सुरंग जै जै करहि। बन प्रस्तावन पढ्ढियै॥
घन घट्ट थट्ट भुम्म्यौ करै। कुकबि जे मद्दि चढ्ढियै॥छं०॥५७९॥
दूहा॥ फेरि पंति पारस सु दल। अगति करी नहिं गत्ति॥
जिन सांईं सधनौ कला। बनि सामंति सु मत्ति॥ छं०॥ ५८०॥

मंत्रियों के मंत्र के अनुसार कमधज्ज ने अपनी अनी मोड़ली।

सुनति मत्ति पारस फिरि। सुभट सेन कमधज्ज॥
एक लष्य दस लष्य में। धनि सामंत सु रज्ज॥ छं०॥ ५८१॥

कमधज्ज की सेना के फिरने से सामंतों का दिल बढ़ा।

गाथा॥ लग्गा दस बल कलनं। सिंधुर असमान सीस गोरनयं॥
बल वक्या सामंतं [1] कायर कर पेव छूर क्रम [2] छलयं॥ छं०॥ ५८२॥

दूहा॥ [3] बल छचिय संचिय तरन। भिरि भंजै गज दंत॥
रंभ अरंभन ढूंढए। अच्छे अच्छरि कंत॥ छं०॥ ५८३॥
झुकि भारी भगवान भिरि। राम कुलह कुल चंद॥
सार सार संमुह [3] भिन्यौ। स्वामि सु मेटन दंद॥ छं०॥ ५८४॥
रघुवंसी कमधज्ज झुकि। वंध सु पंग नरिंद॥
सो ओमें देखौ सवर। कहि तत्तौ कविचंद॥ छं०॥ ५८५॥
वसि चौनौ सामंत जुरि। वल अबुद्धि बुद्धि षेन॥
छिति संग्रह संग्राम किय। वल बलिष्ट बल तेन॥ छं०॥ ५८६॥

गाथा॥ डंको कांच उछारे। उछारंत मत्त नो हथ्थौ॥
मत्तौ मत्त सुमंतं। सो दिट्ठो भारथं नथ्थौ॥ छं०॥ ५८७॥

कवित्त॥ कहै मात बड़ कौय। सुरत मत्तौ अप्पारै॥
दुति पहार संभार। बीर बीरह [4] विचारै॥
रुधिर बूंद कंदल। परत कंदल परि उट्ठै॥
सार धार निरधार। सार धारह असि बुट्ठै॥
चावंड राइ दाहर तनौ। तिन बोहिथ चढ़ि उत्तरै॥
बीजलह दाग तिलकं मिसह। अदग दग्ग नहि विस्तरै॥छं०॥५८८॥

गाथा॥ सौ दग्गंत तिलकानं। सो दिष्टाय सारयो सरयं॥
अपकित्ती मिस दग्गं। ना लग्गंत तासयं कुसलयं॥ छं०॥ ५८९॥

जिस कुल में चामुंड है उसको दाग नहीं लग सकता।

दूहा॥ तिन कुल दग्ग न लग्ग वर। जिन कुल वल [5] चावंड॥
दोष रहित अच्छरि अमौ। किए षंड षायंड॥ छं०॥ ५९०॥

(१) मो.-छलनं। (२) ए. कृ. को.-छल। (३) ए. कृ. को.-पन्यौ।
(४) मो.-सुविचारै। (५) ए. कृ. को.-चामंड।

अरि मंडल षंडल करन। तिरन मोह मति [1]सिंध॥
रस्स बली बीरा विषम। लै भारथ्थ सकंध॥ छं०॥ ५९१॥

दुपहर के समय कमधज्ज की फौज फिर से लौट पड़ी।

कंध बंध संधिय निजर। परी पहर मध्यान॥
तब बहुर्‌यौ पारस फिरिय। फिर्‌यौ [2]भीछ चहुआन॥ छं०॥५९२॥

कमधज्ज और चहुआन खड्ग लेकर क्षत्री धर्म्म में प्रवृत्त हुए।

कवित्त॥ छल संज्यौ बल जोग। बुद्धि बलजोग पसारिय॥
चाहुआन कमधज्ज। षग्ग षत्रीवंस डारिय॥
रत्तन जुद्ध विरुद्ध। सह सद्दह मति कीनी॥
चावहिसि विढ्ढुरै। बीर बीरं रस पीनी॥
संग्राम धाम धंमार परि। काम धाम धम्मार तजि॥
सामंत सूर सांमत वर। धीर बीर धारहति लजि॥ छं०॥ ५९३॥

शूरबीर हाथियों के दांत पकड़ पकड़ कर पछाड़ने लगे।

दूहा॥ सें लज्जानी लज्ज वर। गज्ज दज्ज सामंत॥
अंत असुभभ्भय पंति पय। भिरि भंजै गज दंत॥ छं०॥५९४॥
भै रत्त अरत्त सरीर गति। सिंध सरोज सु पान॥
सूर बदों सामंत दुज। जिन अप्पै जिय दान॥ छं०॥ ५९५॥
जीव दान अप्पन सु हत। दल दंतिय बढ़ि कंत॥
हनूमान जिम द्रोन वर। बारधि मंत [3]सुपंति॥ छं०॥ ५९६॥
चौपाई॥ बार बारधि बर पंति सुमान। सूर धीर सामंत सुजान॥
दल बल बल विछोरहि बीर। षग्ग सुष झलकंतह नीर॥ छं०॥५९७॥

महाभारत में अर्जुन के अग्निबाण के युद्ध से इस युद्ध की उपमा देना।

कवित्त॥ षग मुष बर चढ्ढिये। धाइ तुट्टै है राजं॥
बार बार हक्कही। करै अग्या बिन साजं॥

(१) ए. कृ. को.-छंध, छंद। (२) मो. -भीच। (३) ए. कृ. को.-सुपाति।

[1]बाल स्वामि चग्या। विभंग चित ओपम चंदं॥
चिय कठोर निर्द्दन। क्रमै चग्या गुन मंदं॥
करतलह सु कवि कित्तिय सुवर। पथ यक्कै चाजान जिम॥
भारथ्थ वीर पारथ्थ जिम। अग्गिवान सामंत [2]असि॥छं०॥५९८॥

घोर संग्राम का वर्णन।

छंद हनूफाल॥ इति हनूफालय छंद। कवि पढ़ै भारथ चंद॥
भ्रम भ्रमहि वीर प्रकार। ज्यों चक्र चक्किय धार॥ छं०॥ ५९९॥
घरि घट्टै एक विघट्ट। वर बीर भंज्या पट्ट॥ छं०॥ ६००॥
दूहा॥ पट्टन भंज्या बीरवर। ज्यों दधीच सु चस्ति॥
देवकाज वज्जी लियौ। सोइ वर तत्त सबत्ति॥ छं०॥ ६०१॥
कवित्त॥ वस चत्तीय प्रकार। घाइ वज्जै घट घुम्मै॥
मार मार उच्चार। सार सारहु वर झुम्मै॥
एक मार संमार इक। सु मारति तै मारै॥
एक झार उझार। एक जारति उझझारै॥
घरि एक तरंगनि जक्कि जल। कमल जानि नंच्यौति सर॥
सामंत सूर सामंत बल। पहर वज्जि वज्जे पहर॥ छं०॥ ६०२॥
दूहा॥ पहर वज्जि पर पहर वर। पहर पहर आहत्त॥
मत्त दंत मद्दह सुवै। वान राज साहत्त॥ छं०॥ ६०३॥
वान राज साहत्त दुति। छिति छनी आकार॥
धन्नि सूर जे चंग मैं। धनि [3]किल्लै सु दुधार॥ छं०॥ ६०४॥
गाथा॥ दुद्धार सार सद्दियं। हय गय नर बीर बीरायं॥
जुद्धिय धीमति धीमं। सा बीरं बीरयो राजं॥ छं०॥ ६०५॥
बीरं राजिय बीरं। बीरं बीरं सु बीर सुब बीरं॥
बीरं होइ सबीरं। सो बीरं उव्वियं नथ्थी॥ छं०॥ ६०६॥
दूहा॥ नथ्थह सुद्धौ बीर वर। वल बंकम घट घाइ॥
घरी एक चाचिज्ज भौ। जोति मग्ग विरूझाइ॥ छं०॥ ६०७॥

(१) मो.-ज्यों वालि। (२) ए. कृ. को.-अरि।
(३) मो.-झेलै।

छंद भुजंगी॥ विसम्मभाय उड्डे रनं रोस वीरं। महा मत्त दंतीन की पंतिभीरं॥
गहै दंत धावै सु वाहै पचारै। महा मत्त बोलै सुवारं अधारै॥
छं० ॥ ६०८॥
काली किंत्त क्राटं करै दूरि दंदं। वजै सार सारं महा काल मंदं॥
महा ठट्ट घट्टै अहुट्टै जु थट्टं। बजै घाइ ऐसे बकै जानि भट्टं॥
छं० ॥ ६०९ ॥
रुधिं धार रत्ती सु मत्ती उझारै। इसी वीर वत्ती सु भारथ्थ भारै॥
छं० ॥ ६१० ॥

दूहा॥ भारथ्थह नथ्थी सुरत। अहत हत्त गति देव॥
जिन सांई दुज्जन हत्यौ। सो सांई प्रति सेव॥ छं० ॥ ६११ ॥
सेव देव देवन सुवल। रुधत गिद्ध सु मंस॥
मोह पान माया सुक्षत। उडत मुक्कि तिन हंस॥ छं० ॥ ६१२ ॥
हंसन हंसिय हंस वर। सुगति सरोवर बीय॥
तनु छंड्यौ जह मंडि कै। निसा ध्रम्म नह नीय॥ छं० ॥ ६१३ ॥
क्रू सांई पर हथ्थत्रें। [1]परम तंत पद पाइ॥
देवगिरि भंजन मती। रा चामंड विरुझाइ॥ छं० ॥ ६१४ ॥

कवित्त। रा चामंड जैतसी। राम बड़ [2]गुज्जर बुल्लिय॥
वलियभद्र बलिराम। सार धारह मति घुल्लिय॥
कलह किंत्ती विस्तरै। राइ निड्डुर सम सारं॥
दुहु बोल दुश्च चरन। मरन किंत्ती [3]अधिकारं॥
बैकुंठ खेन लिग्गे सु पग। विहंग मग्ग पंथी सुगति॥
नरसिंह सिंह छंडै नहै। सार धार मारह थियति॥ छं० ॥ ६१५ ॥

गाथा॥ सारं धार वरदियंति। रुधिरं छंडेव छूरयो श्रंगं॥
जानिज्जै मधु मासं। सा फूलेव पष्परो वनयं॥ छं० ॥ ६१६॥

अरिल्ल॥ रत्त सु रत्त सु वीर उडाइय। घाइ मृदंग उपंग बनाइय॥
के माया मोह ग्गति छंडै। काल दंड कालह क्रत छंडै॥ छं० ॥६१७॥

दूहा॥ काल दंड षंडन करै। भिरै वीर भारथ्थ॥
सुवर वीर सामंत गति। दै दुवाह पारथ्थ॥ छं० ॥ ६१८ ॥

(१) मो.-सुगति परम पद पाय। (२) मो.-गूजर। (३) मो.-अवधारै।

पारथ पारत्थिय सुदत्त। सारत्थिय चहुआन॥
मानहु वीर समुद्र गति। तिरन मते भ्रम मान॥ छं०॥ ९१९॥

प्रातःकाल से युद्ध होते संध्या हो गई और कमधज्ज की सेना मुड़ गई परंतु चौहान की सेना का बल न घटा।

भ्रम्म पार सामंत वर। उद्दै अस्त भौं भान॥
बहुरि पंग पारस फिरिय। बल न घट्यौ चहुआन॥ छं०॥ ९२०॥

दोनों सेनाओं के वीर युद्ध से संतुष्ट न हुए तब इधर से भीमराय और उधर से मृत षवास के भाई ने क्रुद्ध होकर धावा किया।

कवित्त॥ बल छंड्यौ न विराज। सूर उभ्भै दुअ पासं॥
जंघारौ रा भीम। स्वामि सन्नाह सुभासं॥
दुहु वाहां सामंत। दून दह दहु अधिकारिय॥
अमर बधं षावास। षग्ग बोल्यौ पिष्षि सारिय॥
जंघार राव जोगिंद वर। भुगति मुगति अप्पन अमिय॥
तामस न बुज्झयौ दोउ सेन कौ। बजि निसान आभा धुनिय॥
छं०॥ ९२१॥

गाथा॥ आभ सुनिय सु देवी। बज्जे साराइ मंदर वज्जे॥
नीसानं निसि सारं। साहारं [1]पारवं होई॥ छं०॥ ९२२॥

दूहा॥ पर पषरत पविच गति। रा निड्डुर राठौर॥
बंधु दोष जान्यो नहीं। स्वामि भ्रम पति मौर॥ छं०॥ ९२३॥

स्वामिकार्य्य के लिये जो शरीर का मूल्य नहीं करता वही सच्चा स्वामिभक्त सेवक है।

कुंडलिया॥ तजिय पुंज षावास वर। तिरन तुंग तन अप्प॥
चरन लग्गि बंध्यो मरन। सो सांइ भृत तप्प॥
सो सांईं भृत तप्प। जन्म जानत अंजारे॥

(१) ए. कृ. को.-तज्यौ न। (२) मो.-पारखा।

.... ॥
मयन मत्त बिच्छुरिय। मीह पारी तजि पग्गिय ॥
धनि निड्डुर रट्टौर। स्वामि छल स्वामि सु जग्गिय ॥ छं० ॥ ६२४ ॥
गाथा ॥ जग्गिय स्वामित कामं। भूमियं बीर बीरं बिस्तारं ॥
तिम तिम तामस तेजं। सेनं सज्जि मुक्ति साधीरं ॥ छं० ॥ ६२५ ॥

शशिवृता का व्याह धन्य है जिस में अनन्त वीरों को मुक्ति मिली।

मुक्ती धारन धोरं। पंजर सव्वेव मथ्थनो परयं ॥
बर ससिव्रत्त सु व्याहं। दाहं देहाइ दुष्पनो तजयं ॥ छं० ॥ ६२६ ॥

कमधज्ज के दस बड़े बड़े शूरवीर थे वे दसों इस युद्ध में काम आए।

दूहा ॥ देह दुष्प कट्टिय सुक्रम। रन जित्तिय सुग पान ॥
पंच दून पंचो परिग। सुनिय बीर रस पान ॥ छं० ॥ ६२७ ॥
गाथा ॥ परियं बीरति नामं। सुरति चौदह नंदह घटी ॥
सजले स्नूर सुधारी। भारी भरनेव भारथं भिरयं॥ छं० ॥ ६२८ ॥

कमधज्ज के जो वीर मारे गए उन के नाम।

दूहा ॥ परे स्नूर तिन नाम कहि। बरनत बनै बिसेष ॥
देव देव अस्तुति करहिं। नाग रह्यौ सिर सेष ॥ छं० ॥ ६२९ ॥
छंद भुजंगी ॥ परे बीर बीरं तिनं नाम आनं।
पर्यौ पुंज राजं महा [1]बीर थानं॥
पर्यौ देव सिंहंत सादुल्ल बंधं।
मुर्यौ मग्ग नाहीं भयो रंध रंधं ॥ छं० ॥ ६३० ॥
पर्यौ किल्ह कामं जु जद्दौ जुवानं।
तिनं कट्टिया जेन गयदंत मानं ॥
पर्यौ बीर भट्टी कियौ अंग घट्टं।
जिनें मोरिया पंग रा मीच थट्टं ॥ छं० ॥ ६३१ ॥
पर्यौ राइ राइं अजम्मेर स्नूरं।

(१) ए. कृ. को. बंध।

जिनं स्वामि भ्रंमं तज्यौ सिंध पूरं ॥
पर्यौ अंग अंगं सु अर्जोन रायं।
लगे पंच दूनं महा वीर घायं ॥ छं० ॥ ६३२ ॥
परे पंच वंधो वलीभद्र वीरं ।
जिनें अंग अंगं कियौ सा सरीरं ॥ छं० ॥ ६३३ ॥

कवित्त ॥ परत देव वर क्रंन । सरन रष्षन सांई वर ॥
परि मुष रन पुंडीर । सार सारंग देव धर॥
पर्यौ वीर बलिभद्र । जात पंावार पवित्रं ॥
धार धनी चढि धार । सलष लष्षन दुति मंत्रं ॥
लायन्न सिंह भुज पाइ वर । अरिन पाइ उठाइ जिय॥
धनि धन्नि सूर सामंत वर । जुग जीरन जीरन सुजिय ॥छं०॥६३४॥

शूरवीरों की प्रशंसा ।

दूहा ॥ जुग जीरन जीरन सुबर । चरन कित्ति सा किद्ध ॥
सुबर वीर सामंत बर । गत्ति न पुज्जै सिद्ध ॥ छं० ॥ ६३५ ॥
सिद्ध न पूजै गत्ति तिन । छाया मोहन माय॥
इन छाया मंडी तहां । भ्रंम छांह रहि छाइ ॥ छं० ॥ ६३६ ॥
भ्रंम छांह रहि छाइ वर । करिय सूर सामंत ॥
सो करनी करिहै न को । करिय वीर गुन मंत ॥ छं० ॥ ६३७ ॥
गुननि मंत गंभीर गुर । जै जै सद्द सु सिद्ध ॥
वरन विहुसि वरनिय वरहि । रंभ अरंभन सिद्ध ॥ छं० ॥ ६३८ ॥

गाथा ॥ रंभा अरंभ वरयौ । अच्छी अच्छीव अच्छरी सरनौ ॥
केकी गवनी कित्ती । साकित्ती बंधयौ रष्षौ ॥ छं० ॥ ६३९ ॥

चौपाई ॥ वज्जि रष्षि कित्तिय परिकार । सार सिंध उत्तर वन पार ॥
जोग सिद्ध जोगाधिय अंत । बजि डक डमरु उमया कंत ॥छं०॥६४०॥
उमा कंति जोगाधि सु जानै । वीर सगुन बीरा रस मानै ॥
जै जै सद्द भयौ तिन वार । राज द्वार घरियार विभार ॥छं०॥६४१॥

दूहा ॥ राज द्वार घरियार बजि । सार बज्जि रंन्नि सार ॥
सूर सुमति सामंत की । वीर उतारन पार ॥ छं० ॥ ६४२ ॥

छंद चोटक ॥ सु उतारन पारति बीर भटं। घटकै घन नह उमह घटं ॥
झननंकत हथ्थत हथ्थ करं। मनु याइक पंति पुँतार वरं ॥
छं० ॥ ६४३ ॥
किधौं केवल की सुगती मति पान। किधौं रस 'बीर' विश्रम सु मान॥
किधौं करुना करकै किधु काम। मनौं मय मत्त भिरं रस जाम ॥
छं० ॥ ६४४ ॥
किधौं विधि बंधन बंधहि जोर। पढ़े दोउ मंच सु बीरह और ॥
करै दोउ बीर दुहाइय मुष्ष। मनो रवि उग्गव मासम पुष्ष ॥
छं० ॥ ६४५ ॥

दूहा ॥ पुष्प मास रवि उग्गयौ। भूमि न छिचन सीस॥
मनहु बुद्ध बंदन सु बुधि। करन काम क्रत ईस ॥ छं० ॥ ६४६ ॥
क्रतन ईस बल बुद्धि बल। बुद्धि परक्रम संधि ॥
सुबर बीर संग्राम गुन। अति गुन निर्गन बंधि ॥ छं० ॥ ६४७ ॥

गाथा ॥ बंधे बुद्धि सु धारं। प्राहारं बीर सु भद्दायं॥
निजतं नेह सुधारी। आहारी अंकुरी बीरं छं० ॥ ६४८ ॥

दूहा ॥ अंकुरि बीर शरीर गति। सुभट सुथट्ट सुभट्ट ॥
अघट घट्ट नह कियो परै। परे बीर दह पट्ट ॥ छं० ॥ ६४९ ॥

कमधज्ज का स्वेत छत्र देख कर चामुंड राय का उसे काट देना और सब सेना का आश्चर्य और कमधज्ज की सेना में हाय हाय मच जाना।

कवित्त ॥ हाइ हाइ आरिट्ठ। दिट्ट अंबरिय स्तर वर॥
मुक्कि कर बल चामंड। करहु गोलक उप्पर धर॥
गोलक तुंबा भग्ग। बंध भग्गै चहुआनं॥
स्वेत छच दिषि सीस। पर्यो कमधज्ज निधानं॥
परी एक विभ्रम भयौ। सार सार प्राहार वर॥
जानै कि मत्ति दंतिन कला। कूट मंच धारह सुधर॥ छं० ॥ ६५० ॥

(१) ए. कृ. को.-वीरा रस, बीर रस।

दूहा ॥ धारा हर वित्यौ सुधर । दर चरिष्ट चतुरंग ॥
　　रा निड्डुर रट्ठौर बर । रुप्यौ षेत भ्रत भंग ॥ छं० ॥ ६५१ ॥

गाथा ॥ पंगुर पाइ सुधारं । पंगु भयौ चित तिन वीरं ॥
　　नह पंगुर कार नैंनं । पंगुर नां सूरयौ वैनं ॥ छं० ॥ ६५२ ॥

दूहा ॥ वयन सूर चंचल भइय । निहचल पग सिर नाग ॥
　　अदग दग्ग भंजै सकल । करत अदग्ग न दाग ॥ छं० ॥ ६५३ ॥
　　अदग दग्ग मग्गिय सु छत । वर वीरा रस पान ॥
　　छित्ति छित्ति स्वामित्त गति । सु कति सु अप्पन वान ॥ छं० ६५४ ॥

कवित्त ॥ घरी इक्क इक रंग । रंग सवरथ्थ बिछोरिय ॥
　　पनी जानि पारष्ष । जेम दरिया हिल्लोरिय ॥
　　यों [1]पग धपि दोउ सेन । सूर सामंत विलोकिय ॥
　　मनों मत्त उठि द्रष्टि । पिय वीयोग विसोकिय ॥
　　झुंम्मयौ धार धारह धनी । सुनिय कित्ति मित्तह पनौ ॥
　　सामंत सूर सामंत गुन । सु [2]वर वीर सत्तह सुनौ ॥ छं० ॥ ६५५ ॥

छंद रसावला ॥ सार वुठ्ठी अनी । मत्त मत्तं धुनी ॥
　　लूह मच्ची घनी । अंत तुट्टै रनी ॥ छं० ॥ ६५६ ॥
　　वीर वीरं अनी । देव वज्जी धुनी ॥
　　नेह भंज्यौ पनी । काल [3]जैसो पनी ॥ ६५७ ॥
　　वीर वीरं वनी । रत्त रंगं रनी ॥
　　सार सारं धुनी । जोति मग्गं जनी ॥ छं० ॥ ६५८ ॥
　　पिंड सारे घनी । कब्बि [4]चंदं तनी ॥
　　.... .... । मुक्ति [5]लुट्टै फनी ॥ छं० ॥ ६५९ ॥

दूहा ॥ फनि मनि लुट्टन काज गुर । भौ गुर इत गुर देव ॥
　　सार सूर संरुद्दौ भिरिय । बरन पथ्थ सुष सेव ॥ छं० ॥ ६६० ॥

कमधज्ज का छत्र गिरने से शूरवीरों को भय न हुआ ।

---

(१) मो.-पग्ग ।　　(२) मो.-बीर, बीर ।
(३) मो.-जैसें, जैसे　　(४) ए. कृ. को.-चित　　(५) मो.-लुट्टैं ।

गाथा॥ लग्गिय चास न खूरं। बीरं सुभटाइ मत्तयो दंती॥
जानिज्जै परिमानं। भारथ्थं बीरयो कंती॥छं०॥ ६६१॥
दूहा॥ हल देवत बिछरत्त बर। परषिय जंपहि जोग॥
सुबर सूर सामंत गुन। [1]श्रम मत्त [2]मति भोग॥ छं०॥ ६६२॥

स्त्रियों की प्रशंसा।

भोग जोग दुञ्च बिहि बिध। दान भ्रुगति संगाइ॥
चीय कहै नट्टै सु चिय। चियन गती सुह पाइ॥ छं०॥ ६६३॥
चियन गत्ति पावहि पुरुष। धरन धरत्तिय ताम॥
सूर धीर सूरह भिरत। वर विश्राम तजि जाम॥ छं०॥ ६६४॥
चौपाई॥ एक एक उड्डै परिमानं। सुमति मंत मंचिय गुरु दानं॥
[3]षग्ग टेकि बाढ़े बर षग्गं। ज्यों बावन छलि भूमि [4]विगंगं॥छं०॥६६५॥
दूहा॥ भुमि बिभग कौनिय सुहत। देवत्तह प्रति देव॥
मदन रंभ मच्यौ सु अर। गुन भ्रम न भ्रम भेव॥ छं०॥ ६६६॥
मरन सीस मुक्यौ सु वसु। रस पारायन देव॥
दुतिय सुतिय दुति बैर तिन। भूम भग्गा जुग भेव॥ छं०॥६६७॥
चहत हत्त बिभ्रम [5]भइग। हय गय दुल चतुरंग॥
चाहुआन कमधज्ज सों। भय बीरा रस भंग॥ छं०॥ ६६८॥
गाथा॥ भौ बीरा रस भंग। जंग जुग तीय बीर सु [6]भट्टाइं॥
सहिर सुहिर सुघटं। साठट्ठई घट्टयौ भंगं॥ छं०॥ ६६९॥

रात्रि का कुछ अंश बीतने पर चन्द्रमा का उदय हो गया और दोनों सेनाओं के बीर विश्राम के लिये रण से मुक्त हुए।

मुरिल्ल॥ ठट्ठ सेन [7]भग्गौ चतुरंगह। लुथ्थि लुथ्थि आलुथ्थि बिभंगह॥
कल किंचित किंचित रस भारी। इते अस्तमित भानं [8]सारी॥छं०॥६७०॥
गाथा॥ अस्तमितं [9]बर भानु। यायानौ परम संतोषं॥
जानिज्जै जस बंधुचं। नव चंदनं तिलकयौ दीयं॥ छं०॥ ६७१॥

(१) ए. कृ. को.-स्वर्ग (२) को.-मानि। (३) मो.-खडग। (४) मो.-बगंगं।
(५) मो.-ए-भइय। (६) ए. कृ. को.-सुट्टयं।
(७) ए. कृ. को.-भग्गौं (८) ए.-सारं। (९) ए. कृ. को.-मांनुं सु भानु

चंद्रायना ॥ दुरि निसान गत भान अइन वर ।
सिंधु संपतौ जाइ तिमिर चढ़े गुर ॥
कुसुद विसुद अंकूर हरातन धरियं ।
मानौ तम को तेज सु तत्त उधरियं ॥ छं० ॥ ६७२ ॥

[1]सुरिल्ल ॥ वर भान संपतौ थान गुरं । [2]सरसीरुह उद्दित सुदित वरं ॥
वर वीर कमोदनि की सु गती । सु भए रिसिराज उदोतपती ॥
छं० ॥ ६७३ ॥

सूर्य्योदय से भ्रमर चकवा चकई और शूरवीरों को आनन्द होता है।

दूहा ॥ निसि गत वंछे भान वर । भँवर चक्कि अरु सुर ॥
संतह मत्त पयान गति । वर भारथ्थ अँकूर ॥ छं० ॥ ६७४ ॥

रात्रि को संयोगिनी स्त्री और रण से श्रमित सेना विश्राम करती है पर कुमोदिनी और वियोगिनी को कल नहीं पड़ती ।

कवित्त ॥ कुमुद उघरि मूँदिय । सु बंधि सतपत्त प्रकारय ॥
चकिय चक्क विच्छुरहि । चक्कि ससिवत्त निहारय ॥
जुवती जन चढ़ि काम । जाहि कातर तर पंषी ॥
अवृत वृत्त सुंदरिय । काम वढ्ढिय वर अंषी ॥
नव नित्त हंस हंसह मिलै । विमल चंद उग्यौ सु नभ ॥
सामंत सूर न्वप रषि कै । करहि बीर बीश्राम सभ ॥ छं० ॥ ६७५ ॥

गाथा ॥ विश्रामं वर लैही । सूरं सूरयौ धरयं ॥
धायं अंग विश्रंगं । आनिज्जै [3]कैतु यो लग्गी ॥ छं० ॥ ६७६ ॥

दूहा ॥ तम वढ्ढिय धुंधर धरा । परष पयं पन सुष्ष ॥
तम्म तेज चावहिसह । जुझ्झनि भग्गि अरुष्ष ॥ छं० ॥ ६७७ ॥
जुझ्झ भग्गि आरुष्ष वर । रोकि रष्षिग वर स्याम ॥
सुबर सूर सामंत गुन । तम पुच्छे न्वप ताम ॥ छं० ॥ ६७८ ॥

---

(१) मो.-त्रोटक ।   (२) ए. कृ. को.-सरसी रुह उद्धित वरं ।
(३) ए. कृ. को.-कैन, केत ।

सहस्त्रों सेना में भी छिपा हुआ चहुआन का शत्रु बच नहीं सकता।

गाथा ॥ जै जै घर चहुआन । एकं होइ सथ्थयौ छूरं ॥
को रष्षो परमानं । अरि रष्षै कहुयौ मच्छो ॥ छं० ॥ ६७९ ॥

चौपाई ॥ कोटि मभ्भ्ति अरि होइ प्रमान ।
ता भंजै निश्चै चहुआन ॥
हरि शशिवृत्त जाइ पडु इंद ।
रुकमनि व्याह वरिय गोविंद ॥ छं० ॥ ६८० ॥

गाथा ॥ गोविंदं प्रति व्याहं । सनमानं छूरयो हत्ती ॥
आप रष्षै अरि जुद्धं । रष्षै स्वामि मरनयौ अप्पं ॥ छं० ॥ ६८१ ॥

चहुआन के सामंत स्वामिकार्य्य के लिये प्राण को कुछ वस्तु नहीं समझते और यह स्वभाव चहुआन का स्वयं भी है।

दूहा ॥ अप्प हत्त इह छूर किय । छूर हत्त चहुआन ॥
स्वामि रहै लज्जै जलनि । भौ हत [1]हत्तिय पान ॥ छं० ॥ ६८२ ॥

गाथा ॥ कालिंदी तन स्यामं । लग्गो नथ्थि अगनतं स्यामं ॥
अय अवि हत्तिय तासं । अन्यं आनि नत्तयो सारं ॥ छं० ॥ ६८३ ॥

सामंतों का पृथ्वीराज से कहना कि आप दिल्ली को जांय हम लड़ाई करेंगे।

अरिल्ल ॥ तत्त सार प्रति प्रत्ति प्रमानं । जाहु राज दिल्ली चहुआनं ॥
गुन बहु हस बहु सखं । दुष मानि सुनि सुनिय विरत्तं ॥
छं० ॥ ६८४ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि सूर्य्य बिना चंद्र तथा तारागण से कार्य्य नहीं हो सकता, हनुमान के समुद्र लांघने पर भी रामचंद्र जी के बिना कार्य्य नहीं हो सका। मैं तुम्हें छोड़ कर नहीं जा सकता।

(१) मो.—हत्तपौ।

कवित्त ॥ दुष्प मानि सो रत्त । सुनैं सामंत सूर वर ॥
[1]चंद उडग्गन काम । सर्यौ कहुं दिपि सूर नर ॥
भान कास नन सरें । अरुन जो होइ तेज बर ॥
काम राम [2]नन सरै । हनू [3]कूचौति लंक धर ॥
नन सरैं काम मंगल सु विधि । जो मंगल आछत्त तप ॥
सामंत सूर इम उच्चरै । कढ्ढि मोहि भुम्भहुति अप ॥ छं० ॥ ६८५ ॥

तुम्हें रण में छोड़ कर मैं दिल्ली में जाकर आनन्द करूं यह मैंने नहीं पढ़ा है।

दूहा ॥ मुहि कढ्ढिस तुम रहौ वर । जियत जांहि उन थान ॥
ऐसी रीति अरीत वर । पढ्ढी नह चहुआन ॥ छं० ॥ ६८६ ॥
गाथा ॥ जम्मन मक्खि सुरंगं । सो जंपेव सूर तुम तत्तं ॥
दिन भौ रव संग्रामं । [4]सम्मान दारेति एव गसं ॥ छं० ॥ ६८७ ॥

राजा का उत्तर सब को बुरा लगा परंतु किसी ने राजा की बात का उत्तर न दिया।

विष लग्गा न्नप वैनं । हाला हलयो तत्तयो सूरं ॥
उत्तर दिय नह राजं । गाम निस भा बुद्धि जन वत्तं ॥ छं० ॥ ६८८ ॥

कवि चंदादि सब सामंतों ने समझाया पर राजा ने न माना और यही उत्तर दिया कि शत्रु के साम्हने से भागने वाले क्षत्री को धिक्कार है, मैं प्रातः काल भारत मचाऊँगा।

कवित्त ॥ बार बार भर कहिग । राज मानै न तत्त [5]मत ॥
बीर चंद ता अग्ग । चलै प्रथिराज हारि गत ॥
मो भंजै अरि गज्ज । मोहि [6]भंजै अरि भंजै ॥

(१) मो.-चंद उगन काम सन्यौ। (२) ए. कृ. को.-तन। (३) मो.-उचौत।
(४) मो.-समान दारें निय वगसं। (५) ए. कृ. को.-मत। (६) मो.-गंजै।

ता छचौ कुल लज्ज। छच धरि सिर छति [1]लज्जै॥
जं होइ प्रात दिष्षौ सकल। मद्दन रंभ इत्तौ करौं॥
चहुआन चिंत चिंतइ सुरा। वर भारथ गुन विस्तरौं॥ छं०॥ ६८८॥

गाथा॥ विस्तरि गुनयो प्रातं। रत्तं रत्त छर बीरायं॥
चावद्दिसि वर वीरं। सा धीरं मत्तयो बीरं॥ छं०॥ ६९०॥

सब का यह मत होना कि सूर्योदय से प्रथम ही युद्ध आरंभ हो जाय।

दूहा॥ मत्ति बीर संमुह [2]भिरत। कठिन शस्त्र अति पान॥
भान पयानह दीह गुन। लोह पयान पयान॥ छं०॥ ६९१॥

सूर्योदय से प्रथम ही फौज का तैयार हो जाना।

चोटक॥ विन भान पयानति लोह कढ़े।
जल सत्तिय रत्तिय बीर पढ़े॥
दोउ बीर दुवं दिशि धुंध धरी।
कलहं तत केलिय ता उघरी॥ छं०॥ ६९२॥

रण मदमाते निढ़ढर का घोड़े पर सवार होना और साठ योधाओं को लेकर हेरावल में बढ़ना।

गाथा॥ अंकुर बीर सुभट्टं। अघटं घट्टाइ क्रोधयो कलहं॥
हय मुक्या चलि बंधी। निडुर सथ्थव सठयो बीरं॥ छं०॥ ६९३॥

शूरबीर लोग माया मोह को छोड़ कर आगे बढ़े।

दूहा॥ बीर बीर बीराधि बर। [3]कढ़े लोह तजि छोह॥
छर धीर सामंत गति। नहिं माया नहिं मोह॥ छं०॥ ६९४॥

तीसरे दिवस का युद्ध वर्णन।

रसावला॥ जिते छर पत्ती। लगै लोह तत्ती॥
नचे छर छत्ती। उड़े काल षत्ती॥ छं०॥ ६९५॥

(१) मो.-भज्जै। (२) मो.-भिरन। (३) मो.-कढ़ि।

[1]छुटे क्रोध पत्ती। उडी रेन गत्ती ॥
मद्दा वेन तत्ती। काला कोटि कत्ती ॥ छं० ॥ ६९६ ॥
ग्रवं ग्राव गत्ती। सुरं पंच छत्ती ॥
मचे क्रुद्ध मत्ती। पचे रोस रत्ती ॥ छं० ॥ ६९७ ॥
करे घाव कत्ती। इसे सूर चित्ती ॥
शिए फल सत्ती। घुमें घाइ घत्ती ॥ छं० ॥ ६९८ ॥
भजै भीम मत्ती। हनूमान जत्ती ॥
अनाभूत अत्ती। दिवे दारु दत्ती ॥ छं० ॥ ६९९ ॥
रुधिं धार [2]रुक्कं। भभक्कै भभक्कं ॥
धका धीग धक्कं। वकै मार वक्कं ॥ छं० ॥ ७०० ॥
इसे चित्त अक्कं। छुटे मत्त छक्कं ॥
डकारंत डक्कं। चिलोकंत इक्कं ॥ छं० ॥ ७०१ ॥
सनो मोह यक्कं। हको हक्क वक्कं ॥ छं० ॥ ७०२ ॥

युद्ध करते हुए वीरों की प्रशंसा।

कवित्त ॥ हको हकि वजिय प्रकार। सार वज्जै सु वीर वर ॥
सु वुधि वुद्ध आवुद्ध। मत्त लग्गै असि वर झर ॥
इकत रुद्ध आरुद्ध। नद नारद अधिकारिय ॥
रंभ सिंभ आरंभ। सिद्ध वुद्धं दै तारिय ॥
धनि धनि सूर दिन धनित वल। छल छचिय अंकूर रजि ॥
कलहंत काल कालह विषम। सुवर वीर वीरत्त रजि ॥ छं० ॥ ७०३ ॥
दूहा ॥ वीर रजित्र वीराधि भर। वजिय वीर गन सज्जि ॥
सुवर सूर सामंत के। मंत कलह तुटि वज्जि ॥ छं० ॥ ७०४ ॥
मंत कलह वज्जिय तुटहि। घटहि अघट तुटि मंस ॥
सुवर सूर सामंत कौ। वर उड्डै तन अंस ॥ छं० ॥ ७०५ ॥
इंसति उड्डहि अंस दै। कंसत केसिय प्रान ॥
वर पंथिय पावै न जन। वर छुट्टै किरवान ॥ छं० ॥ ७०६ ॥

(१) यह छंद मो. प्रति में नहीं है। (२) मो.-रुक्कं।

शूरवीर सामंतों का रणमत्त होकर विचित्र कौशल से शास्त्राघात करते हुए युद्ध करना।

रसावला ॥ पंच छुट्टै ननं । सूर मत्ते घनं ॥
घाव बज्जै घनं । टूक टूकं तनं ॥ छं० ॥ ७०७ ॥
श्राज इक्कं मनं । बाल नंसं [१]धनं ।
भीतकं विरघनं । कीय लीयं पनं ॥ छं० ॥ ७०८ ॥
जद्ध भुम्मै बनं । जानि कुल्लालनं ॥
षोदि कढ़्ढै गनं । देव चढ़्ढि विमनं ॥ छं० ॥ ७०९ ॥
पेषि इक्कं मनं । कुहक बानं घनं ॥
नारि छुट्टै पनं । .... ॥ छं० ॥ ७१० ॥
गज्ज तें गग्गनं । सार वे सग्गनं ॥
सिद्धता मग्गनं । लीह ज्यों लग्गनं ॥ छं० ॥ ७११ ॥
इक्क इक्कं गनं । कुंभ हथ्थी [२]छिनं ॥
रुद्धि धारा घनं । दुद्ध मानौं थनं ॥ छं० ॥७१२ ॥
दौड पट्टै दनं । ओप इभ्भै इनं ॥
इष्ष वेसं मनं । मत्त गिज्जं गनं ॥ छं० ॥ ७१३ ॥
गोरियं छन छनं । टूक होयं रनं ॥
सूर छूटै तन तनं । नंमतं फन फनं ॥ छं० ॥ ७१४ ॥
बार पारं जनं । रोस चट्टै रनं ॥
लग्ग गे बंभनं । रुंड केसिं भनं ॥ छं० ॥ ७१५ ॥
गिद्ध सिद्धं गनं । टारि रखै तनं ॥
दद्धि ज्यों उप्फनं । असि वाहै बनं ॥ छं० ॥ ७१६ ॥
मौन जातं पनं । पिष्षनं चिम्मनं ॥
कौन को चिम्मनं । भूत प्रेतं धुनं ॥ छं० ॥ ७१७ ॥
जुग्गनी जित्तनं । पत्त भृत्तं तनं ॥
नारदं नंचनं । मुत्ति मै संचनं ॥ छं० ॥ ७१८ ॥
अमरं गंमनं । विष्टता सुमनं ॥ छं० ॥ ७१९ ॥

(१) मो.-घनं । (२) ए. कृ. को.-छिन, बिन ।

शूरवीर स्वामिकार्य्य साधन करने के लिये वीरता से रण में प्राण दे कर पूर्व्व कर्म्मों की संधि को लांघ कर स्वर्ग पाते हैं।

कवित्त ॥ सूर संधि विधि करहि । क्रम्म संधी जस तोरहि ॥
दृक्क लष्य आहुटहि । एक लष्यं रन मोरहि ॥
सुबर बीर मिथ्या । विवाद भारथ्थह पंडै ॥
[१]विचि बीर गजराज । वाद अंकुस को मंडै ॥
कलहंत केलि काली विषम । जुद्ध देह देही सु गति ॥
सामंत सूर भीषम वलह । स्वामि काज लग्गंति मति ॥ छं० ॥ ७२०॥

स्वामिकार्य्य में जो वीर रण में मारे जाते हैं उन का शिर श्री महादेव जी की माला (हार) में गुहा जाता है।

दूहा ॥ [२]स्वामि काज लग्गे सुमति । षंड षंड धर धार ॥
हार हार मंडै हियै । गुथ्थि हार [३]हर हार ॥ छं० ॥ ७२१ ॥
गाथा ॥ सिर तुट्टै धुर तारं । [४]तारं तुट्टि वीरयो सिरयं ॥
धर तुट्टं प्राहारं । सा वज्जै तारयं तारं ॥ छं० ॥ ७२२ ॥
तारं तार प्रहारं । देवल दरियाइ झझरी वज्जं ॥
वज्जं ते सिर सारं । प्राहारं पंच घट्टि काई ॥ छं० ॥ ७२३ ॥

तीसरे दिन एकादशी सोमवार को युद्ध होते होते पांच घड़ी चढ़ आई शूरवीर मार मार कर हाथियों की कला कला को पछेलते जाते थे।

कवित्त ॥ घटिय पंच दिन चढ्यौ । उमरि आरब्ब पुंज घिरि ॥
रुक दिना दोउ सेन । मोह छंडयौ क्रम निकरि ॥
बान गंग पत्तयौ । बीर ग्यारसि दिन सोमं ॥
सूर धीर सामंत । सूर उड्डे रन रोमं ॥

(१) ए. कृ. को.-वेचि । (२) मो.-पति काज लग्गे तिमत ।
(३) मो.-हाथ । (४) को.-तारयं ।

क्रत काम काज सांई विभ्रम । द्रुस दंतिय पंतिय[1]गमै ॥
सामंत सूर सांई विभ्रम । रोम रोम राजी [2]भ्रमै ॥ छं० ॥ ७२४ ॥

इधर पृथ्वीराज ने शशिवृता की उत्कंठा पूर्ण की।

दूहा ॥ रोम राज राजी भ्रमहि । [3]थोर थनी ढुंढि बाल ॥
उतकंठा उतकंठ की । ते पुज्जी प्रतिपाल ॥ छं० ॥ ७२५ ॥

साटक ॥ साता से उतकंठ रंभति गुना रंभा अरं भावरं ॥
संधं बिद्धि सु सुद्ध कारन मिते देवंगना संदरी ॥
जा बंदे मिति चंद कारन मिते निर्भासितं भासितं ॥
पाषंडं तजि स्नीन सूरति बरं आरंभ पारं भनं ॥ छं० ॥ ७२६ ॥

सम्मिलन के प्रारंभ में पृथ्वीराज ने प्रण किया कि मैं तुझे तीनों पन में एक सा धारण किए रहूंगा।

गाथा ॥ आरंभं प्रारंभौ । उतकंठा किंनयौ हतयं ॥
साधा धरी सु धरयं । रन छुट्टै तीनयौ पनयं ॥ छं० ॥ ७२७ ॥

यह वर पाने के लिये कवि का शशिवृता को धन्य कहना ।

मुरिल्ल ॥ बालप्पन जुव्वन पन बीर । दई बीर बडपन्नह [4]धीर ॥
बडपन्नह मति सु तजि डिढाइ । धंनि लई तिहुं पन्न बड़ाइ ॥छं०॥७२८॥

दूहा ॥ बालप्पन जुवपनह गति । कथ तिय पनहति काज ॥
भर कट्टै न्रप राज गुन । नह चलै प्रथिराज ॥ छं० ॥ ७२९ ॥

पृथ्वीराज का अटल प्रेम देख कर पैर पकड़ कर शशिवृता का कहना कि दिल्ली चलिए।

नह चलै प्रथिराज दिन । लज्ज लपट्टिय पाइ ॥
चय जोरै कर हथ्थ दो । चलि संभरि वै राइ ॥ छं० ॥ ७३० ॥

(१) मो.–गमैं, भ्रमैं । (२) मो.-भ्रमैं ।
(३) मो.-चोरि । (४) मो.-मीर ।

उक्त विषय पर पृथ्वीराज का विचार में पड़ जाना कि क्या करना चाहिए।

लज्ज परब्बत ह्वै रही। वैन तजै न्रप पास ॥
दुहूं वीर [1]मंडन सु बुधि। अति गत्तिय रति चास ॥ छं ॥ ७३१॥

यह देख शशिवृता का कहना कि मेरी लज्जा रखिए।

फिरि वुल्ली लज्जी सुनहि। हौं मंडन तन वीर ॥
मो विन इक्कै काज न्रप। वुद्धि न आवै तीर ॥ छं० ॥ ७३२ ॥

राजा का कहना कि तेरी सब बातें रस कसूम (अफीम के शर्बत) के समान मेरे जीवन भर मेरे साथ हैं।

तूं वै एकह पन रहै। रंग कसूंभ प्रमान ॥
हौं नन छंडौं पास तुम्र। तीनौं पनह समान ॥ छं० ॥ ७३३॥
तूं लज्जी मो सथ्थ है। दान पग्ग अरु रूप ॥
मों चल्लै तीनौं चलैं। संची चवै न भूप ॥ छं० ॥ ७३४ ॥
सुन रे वै लज्जी चवै। हूं मंडन नर लोइ ॥
मो विन अप्पन [2]लद्ध है। नर [3]न्त्रिभासन होइ ॥ छं० ॥ ७३५ ॥

शशिव्रता का कहना कि मैं भी क्षण क्षण आपकी प्रसन्नता का यत्न करती रहूंगी।

वै वुल्ली लज्जी कलह। क्रत कै काम सुनंत ॥
इक्कै पल पल मंडनौ। हे रज्जन रजकंत ॥ छं० ॥ ७३६ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि चहुआन का धर्म ही लज्जा का रखना है।

अरिल्ल ॥ [4]लज्जी सुनि सुनि हसी प्रमान। तूं जानै सुनि [5]वैन निधान ॥
लज्ज रूप मंडन चहुआन। सुवर वीर [6]आकास निधान ॥ छं०॥७३७॥

---

(१) मो.-मंतह। (२) मो.-लद्ध, लम्भ, लम। (३) मो.-निर्भासन।
(४) मो.-लज्जा सुन रहसी प्रमान। (५) ए.-कृ. को.-वै सुन निधान। (६) मो.-आकार।

तू अपने धर्म अनुसार सत्य कहती है।

दूहा ॥ तूं लज्जी सची चवै। तत लंगि भ्रंम प्रकास ॥
आहत्तह गुन भृत्त किय। जोग सुछंदा चार ॥ छं० ॥ ७३८ ॥

इस प्रकार शशिवृता और पृथ्वीराज का परामर्श होता रहा, पृथ्वीराज रूप रस में मत्त था और उस के स्वामिधर्म में रत सामंत उस तक कोई बाधा न पहुंचने देते थे।

छंद पद्धरी ॥ निब्बन्यौ बाद वै वर [1]प्रमान।
मानहि न वत्त लज्जी निधान ॥
वै जाहु जाहु तन रूप छंडि।
जिन चखै लज्ज लज्जी चिषंडि ॥ छं० ॥ ७३९ ॥
कहि बीर राज आए स बीर।
मानहु कि छुट्टि धन वर सरीर ॥
आभास भार तुट्टैति अंग।
जोर वरज हर मत्तीत जंग ॥ छं० ॥ ७४० ॥
कतल केलि कत करहि काम।
सोभहति सूर दक्षिन ति[2]ताम ॥
अति स्वामि भ्रंम नह वाम मग्ग।
लग्यौ न सूर जिम स्वामि दग्ग ॥ छं० ॥ ७४१ ॥
प्रथिराज दिष्ट दिष्टत प्रमान।
अरि भजत मनहुं तिन अग्गि जान ॥ छं० ॥ ७४२ ॥

यद्यपि सामंत बड़े बलवान थे किन्तु तब भी पृथ्वीराज का मन युद्ध ही की ओर लगा था।

दूहा ॥ अग्गि यान सामंत बल। अत धीरत्त न जोध ॥
ग्रस्व लग्गि लग्गौ न मन। तउन पच पति जोध ॥ छं० ७४३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-प्रकांम। (२) मो.-नाम।

शशिवृता की आशा पूजो, शिवजी की मुंडमाल पूरी हुई और भगवती रुधिर से तृप्त हुई।

चिय चिघाइ ह्वरन भए। चिपति उमापति मुंड ॥
उमा चपति रुधिर भई। धनि ह्वरन भुज दंड ॥ छं० ॥ ७४४ ॥

शूरवीरों के शौर्य्य और बल की प्रशंसा।

ह्वर सुधनि भुज दंड बल। बल विक्रम ज्यों [१]याय ॥
बल किन्नौ छल छंडयौ। वर वीरा रस चाइ ॥ छं० ॥ ७४५ ॥

कवित्त ॥ वीर घाइ आघाइ। वीर विरुझाइ सेन वर ॥
लष्य लष्य ट्रक सहि। लष्य उभिभरे लषष भर ॥
दल दंतन विच्छुरे। धाइ है वर किन तंकहि ॥
एक लष्य रुधियै। षग्ग षग्गनि भननंकहि ॥
ठननंकि घंट घंटिय परहि। कज्जल क्रूट विवान भ्रम ॥
सामंत ह्वर सामंत हथ। करहि चंद अस्तुति सु क्रम ॥ छं० ॥ ७४६ ॥

शशिवृता के व्याह की देवासुर संग्राम से उपमा वर्णन।

छंद पद्धरी ॥ आरंभ सेन सेना विरुद्ध। शशिवृत्त व्याह दैवान जुद्ध ॥
नर मघहि मेघ रथ गज सु वादि। छोमियै षग्ग रिस अग्ग सादि॥
छं० ॥ ७४७ ॥
उच्चरे वैन बाजंत वीर। सद्दै जु जुद्ध बुद्धं सरीर ॥
दैवत्त दुर्ग छिति मति अक्रूर। निर्घोष दोष वज्जै सपूर॥ छं०॥७४८॥
हय गय गँभीर तन तुंग ताम। ह्वरह सु वीर विश्राम जाम ॥
छं० ॥ ७४९ ॥

गाथा ॥ रन घन तन विश्रामं। सँग्रामं इक्क घरी पाइ॥
दावानल चहुआनं। सा वीरं वीर वीराधं ॥ छं० ॥ ७५० ॥
वीराधं वर वरयौ। सा भज्जै आवनं गवनं ॥
[२]मोहं सलाकं भंजो। नां सज्जं पंजरो दिवो ॥ छं० ॥ ७५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-आइ। (२) मो.-मोहे।

शूरवीरों का कहना कि हमारी जय तो हुई किन्तु जयचंद का भाई कमधज्ज क्यों जीवित जाने पावे।

चौपाई ॥ नह सज्जै पंजर प्रतिमान। कहै सूर निहचै प्रतिमान ॥
बीरचंद बंधव कमधज्ज। जीवत स्वामि जाइ क्यों लज्ज ॥छं०॥७५२॥

गाथा ॥ हम बहुलं बेसतयं। बंधे तेग मुक्कि न्रप जायं ॥
जीवत मुनि कमधज्जं। ना मुक्कै लष्षयो बलयं ॥ छं० ॥ ७५३ ॥

मुरिल्ल ॥ लष्ष लष्ष वर सुभट सु भट्टह।
अघट घट्ट सु घटै न घट्टह ॥
सूहत बीर छचिय छिति राजै।
मनो इंद घन मद्धि विराजै ॥ छं० ॥ ७५४ ॥

गाथा ॥ यों रज्जै न्रप भरयौ। सरनं सूर सूर गत्ताइं ॥
उग्गं तौ रवि मानं। यों रत्ताइ रत्तयो सुषयं ॥ छं० ॥ ७५५ ॥

राजा का कहना कि उसे मार कर क्या करोगे।

दूहा ॥ सत्य सु तुम्म कह्यौ सु सब। सुभट भट्ट बड़ भृत्य ॥
क्यों न जाइ जीवत घरह। कहा करौगे म्रत्य ॥ छं० ॥ ७५६ ॥

आताताई का कहना कि उसे युद्ध में खंड खंड कर ही दूंगा।

छंद भुजंगी॥ तवै उच्चर्यौ अत्तताइ अभंगं। सज्यौ गैन सीसं जुर्यौ जुद्ध रंगं॥
हनों याहि भंजों सु गंजो पत्तानं। करों षंड षंडं जु मंडै बलानं॥
छं० ॥ ७५७ ॥

इसी प्रकार गुरुराम की आज्ञा होने से घोर युद्ध का होना।

तवै गज्जि झम्यौ गुरं चाहुआनं। अगे जोगिनी जग्गिझम्यौ गुरानं॥
झम्यौ सध्य जद्दो स जामानि तामं। दुअंबह हड्डा चले बंध ठामं॥
छं० ॥ ७५८ ॥

मिलौ रारि अंकं दुअंकं प्रमानं। परे जादवं राइ अरु चाहुआनं॥
कहै सूषि भारत्थ इसे सपूरं। उठे कंदलं हक्कि ते कौन सूरं॥
छं० ॥ ७५९ ॥

नर रक्त वीज विनं केन दिट्ठं । इतें दंकि सामंत की वुंद उट्ठं ॥
मिले घाइ घायं असी पंगदायं । मिली रीठ आवद्ध सावद्ध घायं ॥
छं० ॥ ७६० ॥

परे सीस भारं चहुआन धारं । मनो इम्भ भंकोर अंबूज झारं ॥
गजं बाज तुट्टं परे षंड षंडं । नचंतं पिनाकी करं सज्जि दंडं ॥
छं० ॥ ७६१ ॥

कटे तुच्छ हड्डं सु मंसं निमंसं । परे ह्नर मुष्मकोति मध्यं उतंसं ॥
तिनं सस्त नामं जुअं जू वषानं । रठं निड्डुरं कन्ह वर वीर जानं ॥
छं० ॥ ७६२ ॥

तहां अत्तताई स गोविंद मानं । उठे हक्कि हाकं सु पज्जून पानं ॥
रघूवंस भीमं तिनं नाम जानं । परीहार नन्हं तिनं नाम ठानं ॥
छं० ॥ ७६३ ॥

इते उग्गरे कंदलं चंद कव्वी । मनों देषियं जामता जोति छव्वी ॥
परे पंच रायं ढहे राज सत्तं । सुरं पंच रा इत्त मा वेद इत्तं ॥ छं० ॥ ७६४ ॥

दुहुं पष्प लग्गो तिनं नाम जानं । तिनं जाति चंदं स ह्नरं बषानं ॥
पन्यौ भूमि रघुवंस परताप राजं । परयौ राव चालुक्क ता जंत लाजं ॥
छं० ॥ ७६५ ॥

पन्यौ दलपती राउ दल सब्ब संध्यौ । पन्यौ कन्ह राजा दलं नेत वंध्यौ ॥
भाँडा गहि वीरं पन्यौ राज षीची । जिने किति लच्छी तियं लोक सींची ॥
छं० ॥ ७६६ ॥

पन्यौ जावलौ राव सारंग सूरं । तिने भ्रग्गरौं अच्छरी छंडि ह्नरं ॥
पन्यौ दाहिमा देव मिलि धार पंती । इरं अंत कंती विराजं संदती ॥
छं० ॥ ७६७ ॥

पन्यौ किल्हनं राव माल्हन हंसं । तुन्यौ सार धारं मिल्यौ हंस वंसं ॥
पन्यौ अंगली राव दहिया नरिंदं । न्रपं किति भष्षी भषी किति चंदं ॥
॥ छं० ॥ ७६८ ॥

पन्यौ टांक ह्नरं मिल्यौ ह्नर मंदे । मिल्यौ सार धारं जमं डंड वंडे ॥
चल्यौ धार धारं धनी धार नाथं । मुक्यौ मोह माया लई किति हाथं ॥
छं० ॥ ७६९ ॥

पन्यौ राव मोरी सुरयौ अव्व सथ्थं । ननं याइ चल्लै चलै हथ्थ वथ्थं ॥
परे सूर हक्केव धक्के कलेवं । सिरं जुह आनुह देयंत देवं ॥
छं० ॥ ७७० ॥

करे जोगिनी डक्क हक्कं गहक्कं । गजै बीर सूरं सु आवद्ध धक्कं ॥
चलै ओन अंमान पूरं प्रनारं । अदभ्भूत माया न रच्यौ सु भारं ॥
छं० ॥ ७७१ ॥

तवै अत्तताई लग्यौ लोह रस्सं । भगौ फौज कमधज्ज दिस्सं विदिस्सं ॥
परे सेत सेते न थानं सु दिस्सं । लगै अच्छरी माल नभ्भं सु जिस्सं ॥
छं० ॥ ७७२ ॥

अनंछित्त अंगं वरं अत्तताई । भई जीत चहुआन प्रथिराज राई ॥
छं० ॥ ७७३॥

रण में अगनित सेन को मरा देख कर निढ्ढर का कमधज्ज से कहना कि अब तूं किस के भरोसे युद्ध करता है । पृथ्वीराज तो शशिवृता को लेकर चला गया ।

दूहा ॥ परे सुभर दोजन दल । निढ्ढुर देष्यौ वंध ॥
कोन सुजा बल जुध करै । सुनि कमधज्ज अमंध ॥ छं० ॥ ७७४ ॥
बाला लै प्रथिराज गय । गहिय वग्ग कमधज्ज ॥
रोस रीस बिरसोज भय । रह बाजे अनवज्ज ॥ छं० ॥ ७७५ ॥

पृथ्वीराज शशिवृता को लेकर आध कोस आगे जाकर खड़ा हुआ ।

कवित्त ॥ अद्ध कोस न्टप अग्ग । बीर ठढ्यौ करि ठट्टौ ॥
मद समूह गजराज । छंडि पट्टै वल गट्टौ ॥
लाज बंधि संकरिय । बीर बंध्यौ सु अष्ट कसि ॥
अरिन बीर छंडै न । क्रन्न मंडै द्वितीय दिसि ॥
मनमथ्थ महावत वंधि अति । मन मत्तौ उन वो धरै ॥
घन घाइ रुधिर छुट्टै परे । अमर पुहप पूजा करै ॥
छं० ॥ ७७६ ॥

अपनी और कमधज्ज की सब सेना मरी देख करयद्दव का हार मानना और सब डोलीं पृथ्वीराज को सौंप देना ।

पूब राज प्रथिराज । पूब जैचंद बंध बर ॥
पूब सूर सामंत । पूब न्रप सेन पंग बर ॥
पूब सेन ढंढोरि । पूब झोरी करि डारिय ॥
पूब खेत विधि गाम । बानगंगा पथ झारिय ॥
आसेर आस छंडिय न्रपति । विपति सपति जानीय भर ॥
सुठिहार राज प्रथिराज कौ । धरे सबह चौंडोल घर ॥छं०॥७७७॥

पृथ्वीराज ने तेंतालीस डोलियों सहित बीच में शशिव्रता को ले कर दिल्ली को कूच किया ।

चौपाई ॥ गौ ढिल्ली ढिल्लौ प्रति बीर । सूर घाइ जर्जर किय श्रीर ॥
कित्ति सजी चंबोल प्रमानं । अंग कियौ जर्जर चहुआनं ॥छं०॥७७८॥

दूहा ॥ डोला ग्यारह दून दस । एकादस तिन मद्धि ॥
मद्धि अमोलिक सुंदरी । काम विरामन संधि ॥ छं० ॥ ७७९ ॥
डोला घाइन बंधि न्रप । बजि निसान न्रिघोष ॥
सब सामंत समंध चढ़ि । बिच सुंदरी [१]अमोघ ॥ छं० ॥७८० ॥

शशिवृता को ले कर पृथ्वीराज तेरस को दिल्ली पहुंचे ।

गाथा ॥ विच सुंदरी अमोघं । दोयं नैव वाजयो मद्धिं ॥
तेरसि गुन अधिकारी । संपत्ते राजयो ग्रेहं ॥ छं० ॥ ७८१॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा वर्णन ।

दूहा ॥ इन परंत पत्तौ सु ग्रह । सुवर राज प्रथिराज ॥
हय गय दल मल मथत वर । रंभ सजीवन काज ॥ छं० ॥ ७८२ ॥

चामुंडराय की प्रशंसा ।

सह जहाँ चामंड वर । बर बर जुद्ध विरुद्ध ॥
जुद्ध करै सामंत कौ । बर धीरज्ज सु बुद्ध ॥ छं० ७८३ ॥

(१) ए. कृ. को.-अदोष ।

युद्ध में कमधज्ज और यद्दव को जीत कर शशिवृता को ले कर पृथ्वीराज दिल्ली जा पहुंचे।

चाहुआन चतुरंग जिति। निगम बोध रहि राज ॥
बर शशिव्रत्ता जित्तिगौ। धाम सु ढिल्ली साज ॥ छं० ॥ ७८४ ॥

शशिवृता के साथ विलास करते हुए सब सामंतों सहित पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करने लगे।

गाथा ॥ तपय सु नरपति ढिल्ली। दीह दीहं पद्धरे राजं ॥
जं मंगै क्रत कामं। सा देवं सोइयं देहिं ॥ छं० ॥ ७८५ ॥
दीहं पासा रूवं। सारूवं भूपयो सब्बं ॥
जे नच्चै ते मंगै। देवानं देवयो दीहं ॥ छं० ॥ ७८६ ॥

दूहा ॥ सारिन सालै पंस वर। सारि पंस वर भोग ॥
सुबर स्हूर सामंत लै। करि ढिल्ली प्रति जोग ॥ छं० ॥ ७८७॥

इस जय के प्राप्त होने से चहुआन का यश और बादशाह से बैर बढ़ा।

जै जै जस लद्धौ सुबर। बैर न्रपति सुरतान ॥
सुबर बैर बर बड्ढयौ। सुबर जित्ति चहुआन ॥ छं० ॥ ७८८ ॥

पृथ्वीराज शत्रुओं को पराजय कर के अदंड बादशाह को दंड दे कर नीति पूर्वक दिल्ली का राज्य करता था।

कवित्त ॥ भई जीति चहुआन। अरिय भंजे अभंग भर ॥
जै जै स्हूर बषान। देव नंषै सुमन्न वर ॥
लै शशिव्रत्ता राज। अप्प दिल्लीय संपत्तौ ॥
अति तोरन आनंद। चित्त रत्तौ मन मत्तौ ॥
अरि अवनि कोन मंडै मनहु। षग्ग दाग अरि षंडइय ॥
कवि चंद दंद दारुन कयहि। द्रुग अडंड करि डंडइय ॥छं०॥७८९॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासक शशिव्रता कथा नाम पचीसमो समय संपूर्ण ॥

———:o:———

अथ देवगिरि समयौ लिख्यते ।

(छव्वीसवां समय ।)

जयचन्द की सेना ने देवगिरि गढ़ को घेर रक्खा ।

दूहा ॥ ना चलै कमधज्ज ग्रह । गढ़ घेर्यौ फिरि भान ॥
मानहु चंद सरद्द [1]जिम । गिर नछिच [2]परिमान ॥ छं० ॥ १ ॥

कुंडलिया ॥ गढ़ घेन्यौ फिरि भान कौ । दूत सु दिल्लिय मुक्कि ॥
[3]यह [4]अजोग संजोग करि । अदिन कज्ज हम रुक्कि ॥
अदिन कज्ज हम रुक्कि । प्रान इन कै दुप मुक्कै ॥
इन समान भर सत्त । जीव जावंतै धुक्कै ॥
* प्रथम पुंजा लष्यिन । कुंआरि ससिव्रत्त धीर वढ़ ॥
धन भर लज्ज सुबंध । घेरि सह मीर राजगढ़ ॥ छं० ॥ २ ॥

राजा जयचन्द के भाई ने कन्नौज को और देवगिरि के राजा ने पृथ्वीराज के पास सव समाचार भेजा ।

दूहा ॥ इन कग्गद चहुआन पै । उन मुक्कि [4]कनवज्ज ॥
दुहूं वीर कविचंद इह । कै वज्जै कै वज्ज ॥ छं० ॥ ३ ॥

दूत ने लज्जा के साथ जयचन्द को पत्र दिया । जयचन्द के पूछने पर दूत ने युद्ध और पराजय का हाल कहा ।

---

(१) ए. कृ. को.-दिन । (२) ए. कृ. को-परनानि ।
(३) ए. कृ. को.-ग्रह । (४) ए.कृ.को.-कमधज्ज ।

* छंद २ की अंतिम दोनों पंक्तियों का चारों प्रतियों में समान मूल पाठ इस प्रकार है—“प्रथम पुंज लष्यिन कुँअरि कुँअर ससिवृत सुधीरह । धन भर लज्ज सुबंध रागगढ़ घेरि सबीरह ”—यह कुँडलिया छंद के नियम से विरुद्ध पड़ता है परंतु यह कवि की भूल नहीं है, लेखकों की असावधानी या भूल से ऐसा हुआ है क्योंकि उन्हीं शब्दों के हेर फेर से शुद्ध पाठ होगया है और अर्थ में भी किसी प्रकार की त्रुटि नहीं हुई ।

कवित्त ॥ सुबर बीर कम्गदह । पंग करि अप्पि सु जंपिय ॥
बहु दुचित्त संजुत्त । लज्ज आजुत्त प्रकंपिय ॥
सुर सुकीय कर पंग । नैन नीचे न्टप दिट्ठौ ॥
तब पहु पंग नरिंद । कुशल जानी न गरिट्ठौ ॥
पुच्छी सु बात इह करिय तम । जानि सोक कह उप्पनिय ॥
संग्राम तेज भंजन भिरन । मरन कह्यौ मारन पुनिय ॥ छं० ॥ ४ ॥
दूहा ॥ दुज्जन दवने पीर के । वज्जै पै बर केक ॥
भर भीरी रहि अंक के । मरन सरन के केक ॥ छं० ॥ ५ ॥
कुंडलिया ॥ तब पहु पंग नरिंद प्रति । दूत सु उत्तर जप्पु ॥
इह अपुब्ब कथ सुनि न्टपति । जीतें हार सु अप्पु ॥
जीतें हारि सु अप्पु । देषि कह्यौ चहुआनं ॥
ढिल्ली वै अधकोस । बीर मुक्यौ तिहि थानं ॥
आइ सेन घन घाइ । अंब भर पारि असुर जब ॥
दिषि निढ्ढुर कमधज्ज । वग्ग सेना पंचय तब ॥ छं० ॥ ६ ॥
दूहा ॥ देवग्गिरि गढ़ घेरि फिरि । [1]हीं मुक्यौ न्टप काज ॥
मतौ मंडि रा पंग पै । वें [2]पुक्करि प्रथिराज ॥ छं० ॥ ७ ॥
चौपाई ॥ इह कहंत न्टप पंग सु अष्षी । वियौ दूत न्टप अंषन दष्षी ॥
दुचित चित्त मुक्की बर बामी । कुसल बीर कमधज्ज न [3]जानी ॥
छं० ॥ ८ ॥

दूहा ॥ भयौ स्वेद सुर भंग भौ । नैन झलक्यौ पानि ॥
कै फिरि दंद सु उप्पनौ । कै वर बंधव हानि ॥ छं० ॥ ९ ॥
कवित्त । [4]कही कुसल तन दूत । कित्ति कुसलत्तन भग्गिय ॥
जेनि रहे कमधज्ज । रहे सो जम्भह लग्गिय ॥
जे निकलँक ग्रह आदि । कलँक कालंक सु कुप्पै ॥
[5]दे विधान न्निम्मान । कौन मेंटै को थप्पै ॥
भष जोइ सिंघ जम्बक हरै । काकलंब षप्पीस गहि ॥
जहिनह भई भावी विगत । जिम रक्खै तिमि तिमि सुरहि ॥ १० ॥

(१) कृ.-होन। (२) मो.-पुकारि। (३) ए. को.-आनी।
(४) मो.-कहै। (५) मो.-दो।

कवित्त । यह कहंत पहु पंग । दूत तिय आन सपत्तौ ॥
दाघा शीतल झंपि । अंग आरम्भ न सत्तौ ॥
चढ़ि नरिन्द कमधज्ज । तौन तन सज्जन वारौ ॥
मिलि यद्दव चहुआन । वीर परिहै ससि भारौ ॥
दाहिम्मराय चामुंड सौं । सह साथ न्रप यप्पयौ ॥
ते काज राज सम्हैं सुमति । लिपि कग्गद महिं अप्पयौ ॥ ११ ॥

जयचन्द की महा क्रोध से कहना कि पृथ्वीराज की कितनी सेना है । उसे मेरा एक मीर वंदा जीत कर बांध सकता है ।

क्रोध भरिय कमधज्ज । काक वर वोल उचारैं ॥
जो भज्जै ग्रह अपन । कौन अप्पनौ विचारैं ॥
अरे सुनहु भर सुभर । जुम्झ भग्गौ पति छंडै ॥
पेपि वीर गजराज । वाद अंकुस कौ मंडै ॥
चहुआन सेन किक्तिक है । एक मीर वंदा बंधै ॥
सम्भयौ राज अप अप्पुनह । लोह धार मो सम सधै ॥ छं० ॥ १२ ॥

जयचन्द ने मंत्रियों से मत करके अपने स्नेही राजाओं को सेना सहित आने को पत्र भेजा ।

कुंडलिया ॥ सुनि सुमंत्त मंत्रिय समत । कुमति मंत क्यों मंत ॥
वचन भेद जिहि हम कही । सोइ गही वल तंत ॥
सोइ गहि वल तंत । वल न अप्पन पहिचान्यौ ॥
उदो राग उचन्यौ । संच तेता करि मान्यौ ॥
उननैं कुंवरी [१]वरी । तिनं कु करै तिन गुन्नौ ॥
[२]जु वरि एक वुल्ले दुवान । सो सब सह सुन्नौ ॥ छं० ॥ १३ ॥

पत्र भेज कर अपनी तयारी की आज्ञा दी । सवारी के लिये घोड़ा तय्यार कराया ।

कवित्त ॥ वर अयवंत सु दीह । आइ चतुरंग सपन्नौ ॥
मम्म्म महल न्रप वोल । वंचि कग्गद कर लिन्नौ ॥

(१) मो.-गुरी ।   (२) क-सुवरन ।

निसा मंत उप्पाइ। सहस नव लिषि बर पट्टै ॥
इष्ट ध्रत्त सगपन्न। सु ध्रत बहु फट्टत पट्टे ॥
वज्जित्त न्निघोष अरि घोष घर। छोरि पंग दिष्षे सु हय ॥
रवि रथ्थ तथ्थ आवहि जु सम। [1]गात गिरव्वर नाग सय ॥छं०॥१४॥

घोड़े की प्रशंसा वर्णन।

भुजंगी ॥ [2]तियं फेरियं अश्व दीसैति पंगा। तिनं देषते छाँह कंपंत अंगा ॥
तिनं ओपमा चंद बरदाइ कैसो। दिषै तीर मानों छुट्टै अंग तैसी॥
छं० ॥ १५ ॥

पयं मझ्झ मंडै तिमं चित्त इष्षं। पयं पातुरं चातुरं तो बिसष्षं ॥
षुरं वज्जतें भुम्मि [3]धुज्जै धसक्कै। फनं फेलि से संमुहं फूंक सक्कै ॥
छं० ॥ १६ ॥

द्रुमं सीस दीसै सु केकी पुछंगी। मनों मंडियं नील[4]कंठं उछंगी ॥
तिनं भाल संमेलयं धाट झुझ्झै। [5]छिलै पूर ऐसें सरित्तान सुझ्झै ॥
छं० ॥ १७ ॥

डुलै कंन नाही छुरी कास ग्रीवं। मनो देषियं सीष निर्वात दीवं ॥
दिषै कब्बि चंदं सुरंगं सु सेसी। दुहं पष्ष नाहीं तिनं घोरि कैसी ॥
छं० ॥ १८ ॥

सुभै सालिग्रामं समानंत अंषी। तिनं पूजिवै चित्त चित्तंत नंषी ॥
पियें अंजुली नीर डीसै उपंगा। फिरै काच रचीन में रत्त गंगा ॥
छं० ॥ १९ ॥

दिसानं दिसानं सबै जाति राकी। कही चंद कब्बी उपंमा सु ताकी ॥
छं० ॥ २० ॥

[6]कवित्त। षत्तिय नथन रुद्र कै। उट्ठि घन अग्गि तिनंगा ॥
तास मध्य ते प्रगटि। तेजवंता सु तुरंगा ॥
भुअपत्ती संग्रहे। पीठ मंडै पलानं ॥
अंबर करत बिहार। देषि कोपपौ मघवानं ॥

---

(१) ए.-जात। (२) ए. नियं।
(३) क.-धूजे। (४) मो.-कंठी।
(५) ए.-दिलै। (६) २१ छंद मो. प्रति में नहीं है।

प्रगट्टि नपि दिय वज्ज सों। गयन गवन तन सिट्टि गय ॥
कहि चंद मनहु [1]पहुपंग तें। फेरि आज पप्परत हय ॥ छं० ॥२१॥

जयचन्द घोडे पर चढ़ा। तीन हजार डंका निशान और तीस लाख पैदल सजकर झट से तय्यार हुआ।

चढ़त पंग हय सज्जि। सज्जि गजराज सज्जि [2]नर ॥
यों जानी सुर असुर। करै कामधज्ज विया पुर ॥
बजि त्रिघोष त्रिय सहस। मीर बंदा दस लष्षिय ॥
तीस लष्ष पाइक्क। सुबक्क पारंक विअप्पिय ॥
सू तन विरांग बल बीर सजि। दल सज्यौ गंजन अरिन ॥
पहु पंग वीर परलष्षि सै। किरन सु सम सज्जी किरन ॥छं०॥२२॥

जयचन्द ने प्रतिज्ञा की कि जादव और चौहान दोनों को मार कर तब मैं राजसूय यज्ञ करूंगा।

दूहा। इह प्रतंग पहुपंग लिय। बधि जद्दव चहुआन ॥
जग्य अरंभ जु मंडिहौं। ता पच्छै परवान ॥ छं० ॥ २३ ॥

सेना की शोभा वर्णन।

कवित्त। चढ़त पंग मिलि सेन। पूर जिम नद्दिय मिलत घिन ॥
बज्जि बीर वा तूल। जत्थ कत्थह उहुँ पिन ॥
एकट्ठां फुनि जम्म। तुट्टि जू जू फल लद्धौ ॥
दैव क्रम्म करि जोग। आइ एकट्ठ अरुद्धौ ॥
बंधेत काल डोरी तनै। छूटि धार घन मिलहि [3]तिम ॥
आहत्त क्रम्म लिष्षे बिना। मिलै न पंचौ [4]पंच [5]जिमि॥छं०॥२४॥

जयचन्द्र की स्त्री का विरह वर्णन।

दूहा। इह अवस्थ पहु पंग की। बाल अवस्था कौन ॥
जियन आस नहिं सांस तन। डरहि देषि [6]अलि औन्ह ॥छं०॥२५॥

---

(१) ए.को.-पहु। (२) ए.-हय। (३) ए. कृ.-जिम।
(४) ए. को.-पंप। (५) ए. कृ. को.-जिम। (६) ए. कृ. मो.-अति।

गाथा। वाले मलयं चंपं। द्वै द्वै चंपत उरह [1]उरहीती॥
तिन विपरीतं वामं। कामं रस जग्गयौ घनयौ॥ छं०॥ २६॥

भ्रमरावली॥ बढ़ि बाल वियोग सिंगार छुब्यौ।
सुख कौ अभिराम कि काम लुब्यौ॥
घन सार सुगंध सु घोरि घनं।
बनि आनि मलीन क्रपान बनं॥ छं०॥ २७॥
तल पत्ति तजे तल पत्ति मनों।
बपु बाढ़िहै अंग अनंग घनों॥
नव चंदन अंग अनंग जरै।
दिप दीपक भौन में भान बरै॥ छं०॥ २८॥
लगि मोदक से अन मोदकयं॥
दिसि प्राचिय देषि परी धुकयं॥
प्रति हत्ति सरत्ति यपी पयनं।
उमगे तहां अंसुअ है नयनं॥ छं०॥ २९॥
घन ज्यौं तन छंडि न उत्तर [2]देइ।
लगि कानन नास पिया अलि लेइ॥
कछू बर भौंहन उत्तर देत।
मनौं दस [3]वस्थन दंग अचेत॥ छं०॥ ३०॥
चषयं सुभि चंचल रंजनयं।
सु मनो गहि मुत्तिय षंजनयं॥
बिय भाव सु अंसु अनंदि लता।
घर नंषिय रष्ष तिगौ पतिता॥ छं०॥ ३१॥
तिन अंग अचेतकिता क्षमयं।
दुष दूषन भूषन से तनयं॥
दिषि दिष्षि अली अलिके जकरें।
लय सास उसासन तानि परे॥ छं०॥ ३२॥
पन प्रान प्रियान प्रयान घुटं।
लगि साहस एक घटी न घटं॥

(१) ए. कृ. को.-उरहीति। (२) मो.-देत, लेत। (३) ए. कृ. को.-अयत्थन।

सु'थनं मद तैं विमनं मन तैं।
निज निश्चल 'रैनि गई गिनतैं ॥ छं० ॥ ३३ ॥
चलि सीत सुगंध सुमंदय वात।
मनौं लगि पावक अंभन जात ॥
डुलावत अंचल शीतल काज।
लगै मनौं तीर 'तरुन्निय जाज ॥ छं० ॥ ३४ ॥
भुअंगम भोजन अंगम नारि।
करै कलना रसकी उनिहारि ॥
सवै सु सषी मिलि पूछत ताहि।
मनौं जड़ श्रोत सुने रस आहि ॥ छं० ॥ ३५ ॥
चल्यौ कुटिलं रथ चित्तह धाइ।
'सु जे मरविंद समादक लाइ ॥
इनं रिति नारि न मुक्कइ नाह।
लगे विहजानि कुमुद्दिन राह ॥ छं० ॥ ३६ ॥
नदीय निवान 'अपीत सयं।
नव पंथय सुम्भझय वुम्भझ कयं ॥
बजि मारुत तत्त समीत प्रकार।
उड़ै घन भ्रम्म बढ़ै अनिवार ॥ छं० ॥ ३७ ॥
करै तरु तुंग गई सुधि धाम।
तजी यहु पंग नरिंद सु वाम ॥ छं० ॥ ३८ ॥

जयचन्द की चढ़ाई का वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ पंग कमधज्ज राय। सो छिन्न भिन्न उम्मरित छाइ॥
पद्धरी छंद बरनो सुरंग। लहु बरन बीच विचि अति सुरंगाछं०॥३९॥
दलकंत ढाल तरवर प्रमान। हलके हलंत गज नग समान ॥
अपसुकन सुकन 'चित्तहि न चित्त। 'न्त्रिम्मान वत्त गुन धरत तत्त॥
छं० ॥ ४० ॥

(१) ए. को.-सुथानं। (२) ए. को.-नैति। (३) मो.-तरुनित।
(४) ए.-सजे। (५) ए. को.-अपीन।
(६) मो.-मझहि। (७) ए.-न्त्रिम्मान, निमान।

कद्दवत्ति सलिल जहां सलिल पंक। चित चित्त बकं जे करें कंक ॥
चल्ले नरिंद अरि पुव्व गाव। भुमियां ससंक सब लगत पांव॥छं०॥४१॥

गढ़ घेरि पंग किय अप्रमान। मानों कि मेर पारस्स भान॥
पंगह सुबीर गढ़ करि गिरह। सर्व्वरी परस चंदा सरह ॥छं०॥४२॥

चढ़ अमरसीय चढ़ि अमरसिंघ। गहिलौत स नरवर लहु सु बंध॥
पंगुरा सुभर लगि उंच गत्त। जाने कलंक लंगूर यत्त॥छं०॥४३॥

जयचन्द का दक्षिण की ओर चढ़ चलना।

कवित्त॥ दिसि दष्षिन को वलिय। गयौ कमधज्ज चित्त करि॥
यों फिरंत तहँ सूर। षित्त आगत्ति पान फिरि॥
पंच तत्त विय विरह। छुट्टि लग्गो सु पंच पथ॥
तोड़ काज हम करें। चरन सेवकह जंपि तथ॥
तो श्रंब प्रपौ अब जानि बस। जस क्रीड़ा धर उग्गनह॥
कच्छू सु जोति बलि जोति तन। छवि सरक भेदै सनह ॥छं०॥४४॥

हाथियों की शोभा वर्णन।

गज्जनेस कमधज्ज। दान बरषंत बीर सजि॥
नव अंगुर इक विहय। सूर तन इक प्रवाह लजि॥
सिरी सत्त सोभै। विसाल सिंदूर विराजै॥
मत्त कज्जल गिरि शिखर। सूर मंगल तन साजै॥
सज्जिय अनेक न्रप पंग नै। गामी तर गोड़न वियौ॥
जाने कि अकासह भान दिन। ऐ वसह गिर पय दियौ ॥छं०॥४५॥

दूहा। रंभ ऊन्न तट पंगुरी। लग्गि बधू सित माल॥
अंग सुता की पंति तें। बढ़ी विरह बनमाल॥ छं० ॥ ४६॥

राजा भान का यह समाचार पृथ्वीराज को लिखना।

बान पंग पहु पंग परि। मिली अनंग की कान॥
इह अपुव्व बर भान सजि। दै कग्गद चहुआन॥ छं० ॥ ४७॥

उक्त समाचार पाकर काम क्रीड़ा प्रवृत्त पृथ्वीराज का वीरता के जोम में आजाना ।

रति पति पत आलुझ्झि घन । तिहि कग्गद मुकि दूत ॥
तजि सिंगार भौ [१]वीर रस । जिमि आयौ वर [२]धूत्त ॥छं०॥४८॥
ताल कमोदनि पीय ढिग । ससि समान रस पान ॥
वर विलोकि जो देपियै । तौ [३]चहुआनह भान ॥ छं० ॥ ४९ ॥

कवित्त ॥ लाज सरस चहुआन । जोग उज्जै जुध सुत्तस ॥
चियन पाइ दिपि काम । वेर दिप्पे जु वीर सम ॥
घरि इक पंग नरिंद । कलंक उननि करि देपै ॥
इक्त सु जद्दव राइ । सजन अप्पनौ सु लेपै ॥
सुरतंत स्वामि अभिलाप रिन । ग्रव्व राज महह न्त्रपति ॥
मार सु नरिंद संकर भयौ । अति निकलंकह चित दिपति ॥ ५० ॥

इधर शहाबुद्दीन की चढ़ाई उधर जयचन्द की राजा भान से लड़ाई देखकर पृथ्वीराज ने चित्तौर के रावल समर सिंहजी को सब वृत्तान्त लिख कर सहायता चाही और सम्मति पूछी।

दूहा । घरी एक बंधी सुनौ । पै मुक्कलि प्रथिराज ॥
वीव सोम अप्पन चढ़न । लै दीनौ रस पाज ॥ छं० ॥ ५१ ॥
चढ़त राज प्रथिराज कौ । चढ़ ग्रवाज सुरतान ॥
समर सिंघ रावर दिशा । दै कग्गद चहुआन ॥ छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ दिल्ली धर गोरी नरिंद । बँध पल्हन प्रपत्तौ ॥
षां हुसेन कै वैर । अनगपाल सु मिलत्तौ ॥
तिर भर जल गंभीर । हसम है गै कमधज्जी ॥
देवग्गिरि दिसि भान । वीर पावस जिम सज्जी ॥

(१) ए-वार । (२) ए. को.-धत्त । (३) मो.-चहुआनै ।

धर लई सब्ब साहिब जुरत। भान न्न उप्पर मुक्की ॥
चित्त'ग राअ रावर समर। इह अवसान न चुक्की ॥ ५३ ॥

समर सिंह ने पत्र पढ़कर कहा इस समय पृथ्वीराज को दिल्ली में अकेले न छोड़ना चाहिए। मेरे साथ अपने सावंत और अपनी सेना दें मैं पंग से लड़ लूंगा।

बंचिय कग्गद समर। समर साहस उच्चारिय ॥
तव सुमंत बर न्नपति। मंत जानै न विचारिय ॥
हम सुमंत जो करै। राज दिल्ली मति छंडौ ॥
इह गौरी सुरतान। अनगपालह फिर मंडौ ॥
सामंत [1]देहु हम संग बर। रन रुंधै पहुपंग नर ॥
आरंभ मद्दन रंभह मतौ। इह [2]सुमंत कुसलत्त घर ॥ ५४ ॥

समरसिंह की सलाह मान पृथ्वीराज ने अपने सावंत चामुंडराय और रामराय बड़गूजर के साथ अपनी सेना रवाना की।

कुंडलिया ॥ समुद रूप गोरिय सुबर। पंग ग्रेह भय कौन ॥
चाहुआन तिन विवध कै। सो ओपम कवि जौन ॥
सो ओपम कवि जौन। समर कग्गद लिय हथ्थं ॥
भिरन पुच्छि बट सुरँग। बंधि चतुरंग रजथ्थं ॥
समर सु सुक्कलि सोर। खोह फुख्यौ जस कुमुदं ॥
रा चावँड जैतसी। रा बड़गुज्जर समुदं। छं० ॥ ५५ ॥

रावल समरसिंह ने अपने भाई अमरसिंह को साथ लिया। ये लोग देवगिरि की ओर चले।

दूहा। अमरसिंघ बंधव समर। समर समोकलि दीन ॥
ते सामंतन संग लै। देवग्गिरि मग लीन ॥ छं० ॥ ५६ ॥

(१) ए. कृ. को.-दीहै। (२) ए.-समतं।

इम सु राज चहुआन नें। रापे घेरी राइ ॥
पंग [1]औट वर कोट है। देवग्गिरि गढ़ जाइ ॥ छं० ॥ ५७ ॥

जयचन्द को गढ़ घेरे देख चामुंडराय ने चढ़ाई की। इधर राजा भान मिला।

कवित्त ॥ देवग्गिरि गढ़ घरि। ढोह मंड्यौ वर पंगं ॥
[2]रन व्हिषोप प्रमान। वीर बाजे रन जंगं ॥
चिहुद्दिसान उड़ि चक्र। उनैंभौ झंझर खग्गा ॥
द्वादस दिन रन मंडि। राव चामंड भिरि भग्गा ॥
सामंत पंग वित्ते न्रपति। छत्त सज्जे बलद्धारियां ॥
दाहिम्म राव दाहिर तनय। रत्ति वाह बिचारियां ॥ छं० ॥ ५८ ॥
मिलि जद्दव चामंड। रत्ति वाहं संपन्नौ ॥
ओड्ड्जै सथ टारि। साथ टारिजै अपन्नौ ॥
षंत साथ सो साथ। और सव साथ [3]सुपन्नौ ॥
कै भर तरकस वंध। थान मन [4]आकन्नौ ॥
जीवंत दान भोगइ समर। मरन तित्थरंभ [5]भिरन गति ॥
ए करैं बात उभ्भैत नर। ता स राज मंडल [6]मिलति ॥ छं० ॥ ५९ ॥

राजा भान और चामंडराय की सेना का वर्णन।

हथ्थ हथ्थ सुझझैन। मेघ डंमरि मडि रज्जी ॥
निशि निशीथ अंतरी। भान उत्तरि सथ सज्जी ॥
विज्ज वीर झलकंत। [7]पवन पच्छिम दिशि वज्जै ॥
मोर सोर चप्पीह। अवनि सज्जित घन गज्जै ॥
वट्टी जु सिलह निशि सत्त मिलि। [8]धसिय पंग दरवार दिसि ॥
चामंड राइ दाहर तनौ। लरन लोह कट्ठेति रिसि ॥ छं० ॥ ६० ॥

राजा भान का मिलना देखकर जयचन्द का क्रोध करना।

(१) ए.-ओर। (२) ए.-इन।
(३) ए.-सुपंथ। (४) ए. कृ.को.-आकण्य.। (५) ए.-निरन।
(६) मो.-मिळनि। (७) ए.-भवन। (८) ए. कृ. को.-सथिय।

धसि नरिंद चामंड। कूह बज्जी रन जंगं॥
भर अग्गी चौकी समूह। लग्गा रन जंगं॥
रन नरिंद ¹वाहन कुआर। सारह हसि भिल्लै॥
पंग टटी बीहार। जितै भिंजे तित मिल्लै॥
आरिष्ट काल बज्जत घरी। उघरि मेह घन सार जल॥
जग्गयौ जोध कमधज्ज अब। मनौं सिंघ जुथ्यौ सु छल॥छं०॥६१॥
तब ²रावत उच्चरे। राज जोरी बर पंगं॥
जिन ³चंपे बल पुंछ। रोस जग्यौ न्रप ⁴दंगं॥
नाग पत्ति कोपत्ति। अप्प वर कन्ह जगायौ॥
राह सुमनि चित्तए। जम्म जुग राज भुकायौ॥
उच्चरे वीर कुट वार रिन। रन रुंध्या अप डिंभरू॥
संभरे बीर कमधज्ज कौं। भये रोम गति विभ्भरू॥ छं०॥६२॥

अमरसिंह ने जयचन्द के हाथी को मार गिराया।

अमरसिंह आहुट्ठ। नाग ⁵मुग्घी वर कट्ठी॥
शीश शोभि गजराज। नाग सुष नागिनि चट्ठी॥
हाउ हटक्की हथ्थि। बीर पच्चौ कर सद्दे॥
के हथनापुर चन्द। वीर चंचै बलिभद्दे॥
दंती सुभग्गि धर पर पच्यौ। दूल सुच्यौ दत अष्टकबि॥
सिंघ हति सूमि बर सुभ्भई। मिलत भूमि हथ्थह तिरव॥ ६३॥

हाथी के मारे जाने पर जयचन्द का क्रोध करना और स्वयं टूट पड़ना।

हस्ति काल जम जाल। काल रुध्यौ चामंडह॥
सुनत पंग रस भगं। सौस लग्यौ ब्रह्मंडह॥
रन रुंध्यौ वद्दरू। मीन गति ⁶नीर प्रमानं॥
जग्गि बीर पहुपंग। तोन पारथ्थ प्रमानं॥

(१) क़-प्रति में "पंगु पुत्र" भी पाठ ऊपर दिया हुआ है।
(२) ए.-राअन, रावन। (३) ए.-जंप। (४) ए.-दंसं।
(५) ए.-मुठीं मुट्ठी। (६) मो.-हीन।

जग जोह कोह कढ्ढिय सु असि। भिरत न अप्पु अरि तक्कर ॥
रहि जाम एक निसि पच्छली। चढ़ि विहूर हय नष्षर ॥छं०॥६४॥
रसावला ॥ पंग जंगं घुलं, कूह मची हुलं। सार तुट्टे पलं, षग्ग मच्चेपलं॥
छं० ॥ ६५ ॥
हाल हालाहलं, सोह वित्थौ तलं। गिद्ध कोलाहलं, अंत हंती रलं॥
छं० ॥ ६६ ॥
उडपौयं छलं, चर्म अस्तिं तलं। वीर निद्दीचलं, सिद्ध ठट्टे रलं ॥
छं० ॥ ६७ ॥
संभु मालं गलं, ब्रह्म चित्ता चलं। भूत वित्ता तलं, पथ्थ पारथ्थलं॥
छं० ॥ ६८ ॥
देव देवा नलं, फट्टि फारक्कलं। घाय छब्बे घलं, सूर घुम्मै रलं ॥
छं० ॥ ६९ ॥
तारचौ सट्टलं, वाइ भूत त्तलं। रौति पछछौ षिनं, तार आयासनं ॥
छं० ॥ ७० ॥
सूर उग्यो नमं। कोर चढ्ढू फनं ॥............ छं० ॥ ७१ ॥

लड़ाई खतम होने पर जयचन्द का अपने घायलों को उठवाना।

दूहा ॥ रन सुक्के गो भान चढ़ि। सब सामंतन सथ्थ ॥
भूत वीर पङ्गु पंग ने। वत सु हुअौ तथ्थ ॥ छं० ॥ ७२ ॥

इस युद्ध में मारे गए सूर सामंतों के नाम।

कवित्त ॥ पन्यौ बंध गोइंद। नाम हरचन्द प्रमानं ॥
पन्यौ बंध नरसिंघ। रेह रष्षन चहुआनं
पन्यौ कन्ह पुंडीर। वीर जैचन्द सु जायौ ॥
पन्यौ सूर बाघेल। हक्कि कपिजिम बल धायौ ॥
चतुरंग सब्ब मिल्लिय वही। असिन हार बड़गुज्जरै ॥
सामंत हथय बर बब्ब सम। षेत सु ढुंढहि पंगरै ॥ छं० ॥ ७३ ॥

रणभूमि में जयचन्द के घोड़े की चंचलता और तेजी का वर्णन।

रिस छुट्यौ कमधज्ज। बोल बंका बर बोले॥
ज्यों बावन बल रूप। कुहर यानह बल भेलहै॥
रावन पवय समान। काज कैलास झुलावै॥
कै बलि बंधन पाज। द्रोन हनुमंत जु ल्यावै॥
गिरिराज काज साइर मथन। कै अमरस मिल्लिय नहीं॥
[1]नंषयौ अश्व कमधज्ज नै। सो उप्पम कवि भाषहीं॥
॥ छं० ॥ ७४ ॥

देवगिरि के किले की नाप और जंगी तैयारी का वर्णन।

मापि पंग गढ़ देखि। कोस द्वादस बर ऊंचौ॥
दहति कोस विसतार। कोठ मरहथ्थ चिपंचौ॥
नारिगोरि सा बत्ति। राज मंडी चावद्दिसि॥
ढोह मंडि पाषान। तीर बरषंत मंच असि॥
पावस्स मास बीती उभै। जुरि कमधज्ज सु छंडयौं॥
मंची सुमंच परधान ने। फेरि मंचंतव मंडयौ॥ ७५ ॥

जयचन्द का राजा भान को मिलाने का प्रबंध करना।

बल बंध्यौ कमधज्ज। किरह भंज्यौ भंभानं॥
लग्गि चरन पहु पंग। बंदि लीनौ फुरमानं॥
दूत भेद्यौ मंडि। द्रब्ब नंषै चावद्दिसि॥
कछु सलोभ कछु मोह। लेखिह पर ध्यान पलहनिसि॥
[2]अप्पनौ साथ लै सिंध तब। जियन मरन ते उद्दर॥
जम जीव भार पंजर परै। कोइन कलि महि छुट्टर॥ छं० ॥ ७६ ॥
संवत ग्यार सँजुत्त। अदिस उन लग्गिय पंचं॥
मरन अग्गि जानिय न। गोज पल्हन जो पंचं॥
दिन नछिच रोहिनी। समय च्यालीस विअग्गल॥
मत्त वीर जइंव नरिंद। भग्गी ग्रह भग्गल॥
जग्गयौ धार धारह धनी। भीज कुंअर रन मंड कै॥
सा भ्रंम भ्रम्म छंडै नहीं। गो अभ्रंम छिति छंडि कै॥ छं० ॥ ७७ ॥

(१) ए.-अंपयौ। (२) ए.-सब।

इधर अमर सिंह का घोर युद्ध करना।

वज्जि कूह संमूह। अमर'उट्ठे समरं भिरि॥
पंड सुष्य भौ कोट। समर बंध सुद्धे जुरि॥
रा चावंड जैतसी। राव बड़गुज्जर पाए॥
आहुट्ठे कमधज्ज। सार वज्जे सुरस्राए॥
वर यंग जंग भज्जी सहर। लुथ्थि लुथ्थि आलुथ्थि परि॥
चहूने अरिय संग्राम भिरि। पट्ट सहस सेना गिरी॥ छं० ॥ ७८॥

जयचन्द का किले पर सुरंग लगाना।

परत पंग आरोहि। सु रंग दीनौ सुभान गढ़॥
नाग'समूह हरी। ढाहि देवल सुरंग मढ़॥
थान थान नर उड़ें। चंद तस उप्पम पाइय॥
कालवृत 'कागद। पंग इह काज उड़ाइय॥
अजर्जन सयिहिय सेन को। दच्छ देव वर बोलहीं॥
सामंत सूर संग्राम कल। ताप तुरंग न डोलहीं॥ छं० ॥ ७९॥

चौपाई॥ वह्न परपंच किए पहुपंग। गढ़े तूटंत मग्ग मन अंगं॥
गिरि सम्मूह वंक भर ठट्टं। मंतौ मडि सुक्यौ वर भट्टं ॥छं०॥ ८०॥

जयचन्द का किर्तिपाल नामक भाट को भीमदेव और चामंड के पास संधि का संदेसा लेकर भेजना।

कवित्त॥ कित्तिपाल वर भट्ट। बंधि'फुरमान पंग रन॥
जहँ जद्दव चामंड। द्रुग्ग दीय छचन जुरन॥
चौज चक्क चहुआन। पन्यौ सगपन मिस अट्टौ॥
उह मारन इन मरन। बज्जि गाहं बिन घट्टौ॥
आतुच्छ मिलौ बंधौ जियन। जुद्द मोहि क्यौं पूजिहौ॥
श्रृंगार भोग आनन्द रस। सबै बीर रस चुक्किहौ॥ छं० ॥ ८१॥

राजा भान को समझा कर जयचन्द के दूत का वश कर लेना।

(१) ए.-ठेहे।　　(२) कृ.-समुह बकरी ए.-समुहरची, समूहधरी।
(३) ए.-कागच्छ,कागछ।　　(४) ए. कृ. को.-फुरमास।

तब बसीठ न्प पंग। भान एकत्त मंत करि॥
मिलौं पंग कमधज्ज। जंम संसार जंम डरि॥
तमस भेद न्प ग्रह। बाल उत्तर गढ़ भेदं॥
चरि अमंत जद्दव। नरिंद कीनौ घर छेदं॥
लगि कान बात मंचो कही। आहुट्टां बल गट्टियां॥
चिय पुत्त हत्त पुची खिये। दुज्जत जनम सुवट्टियां॥ छं॰ ॥ ८२॥

दूहा॥ विष धर दुज्जन सिंघ फुनि। अग्गि अनंग अनेह॥
ए अपना ना लेषिये। ये परि अप्पै छेह॥ छं॰ ॥ ८३॥

कवित्त॥ हसि जद्दौं चामंड। पँवार हथ्थें दिय तारी॥
सुनि बड़गुज्जर राम। मतौ अप्पौ मो भारी॥
सामि एक बंदी स। प्रीति जल अंतं तक्की॥
लियौ अधर सम रस्स। बात सा दोहमन क्की॥
क्यौं जामन मंत रहंत हृत। केह कंत जो मंगयौ॥
सो मंत पंग कमधज्ज नें। अप्प चेत सो उग्गयौ॥ छं॰ ॥ ८४॥

दूहा। इह उत्तर न्प पंग सौं। कहै सु जद्दव राय॥
दूध विनट्ठौं सुब हिय। किन अप्पन सुष पाइ॥ छं॰ ॥ ८५॥

चौपाई॥ उठे भट्ट तिहि ठौर विचारी। ज्यों उठि जोगी कंथा झारी॥
मन को मनें रही मन माया। ज्यों तरंग जल जलें समाया॥छं॰॥८६॥

कवित्त॥ मतौ मंडि न्प पंग। गट्ठ सुक्के धर लीनी॥
पट्टन पाट नरिंद। थान थानं रचि दीनी॥
उभै बीर जौजन प्रमान। भारह रचि गाढ़ी॥
(१)अप्पलगै कमधज्ज। हाम राजसु मन बाढ़ी॥
कनवज नरिंद अज्जू समन। जोगी मिसि कर कट्ठयौ॥
दिसि विदिसि पंग जौपन सुबल। रचि चतुरंगी चट्ठयौ॥छं॰॥८७॥

जयचन्द का विचारना कि वह धन छोड़ कर यदि यह धरती मिली भी तो किस काम की।

(१) कृ.-अपलग्गौ।

दूहा। कोन हीन कों नीर विन। को तप भाल नरिंद॥
लद्द धन धर सुक्की मिलै। लज्ज रह्द जय चंद॥ छं० ॥ ८८॥

इसके परिणाम में चहुआन और राजा भान को यश मिला और जयचन्द नवमी को कन्नौज को फिर गया।

जस्स तिलक ग्रह भान कौ। जोगिन पुन्तर चिन्ह॥
मोकलिजै आहुट्ट पति। पग्ग पंग करि हीन॥ छं० ॥ ८९॥
गयौ पंग कनवज्ज दिसि। घन रप्पंधन मास॥
नव नवमी नव सरद निसि। तिन सुक्की अरि चास॥ छं० ॥ ९०॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके देवगिरि युद्ध वर्णनं नाम छाबीसमो प्रस्ताव संपूर्णम्॥ २६॥

अथ रेवा तट समयौ लिख्यते ।

(सत्ताइसवां समय ।)

देवगिरि से विजय कर चामंडराय का आना ।

दूहा ॥ देवग्गिरि जीते सुभट । आयौ चामँडराय ॥
जय जय न्टप कीरति सकल । कही कविजन आय ॥ छं० ॥ १ ॥

चामंडराय का पृथ्वीराज से रेवा तट के वन की प्रशंसा करके वहां शिकार के लिये चलने की सलाह देना ।

मिलत राज प्रथिराज सौं । कही राय चामंड ॥
रेवा तट जौ मन करौ । वन अपुब्ब गज झुंड ॥ छं० ॥ २ ॥

उक्त वन के हाथियों की उत्पत्ति और शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ विन्द लिलाट प्रसेद । कन्यौ शंकर गज राजं ॥
एरापति धरि नाम । दियौ चढ़नै सुर राजं ॥
दानव दल तिहि गंज । रंजि उमया उर अंदर ॥
छोड़ कपाल हत्तिनी । संग बगसी रचि सुंदर ॥
चौसादि तास तनु आय कें । रेवा तट वन विस्तरिय ॥
सामंत नाथ सौं मिलत इह । दाहिम्मै कथ उच्चरिय ॥ छं० ॥ ३ ॥

राजा का चन्द से पूछना कि मुख्य चार जाति में से यह किस जाति के हाथी हैं और स्वर्ग से इस लोक में क्यों आए ।

अरिल्ल ॥ च्यारि प्रकार पिष्षि वन वारुन । भद्र मंद म्रग जाति सधारन ॥
पुच्छि चंद कवि को नरपत्तिय । सुरवाहन किम आइ धरत्तिय ॥
छं० ॥ ४ ॥

चन्द का वर्णन करना कि हेमाचल पर एक वृक्ष था जिसकी शाखें सौ सौ योजन तक फैली हुई थीं मतवाले हाथियों ने उन्हें तोड़ दिया इस पर क्रोध करके मुनिवर ने शाप दिया कि तुम मनुष्यों की सवारी के लिये पृथ्वी पर जन्म लो।

कवित्त ॥ हेमाचल उपकंठ। एक वट वृष्य [1]उसंगं ॥
सौ जोजन परिमान। साष तस भंजि मतंगं ॥
बहुरि दुरद मद अंध। ढाहि मुनि वर आरामं ॥
दीर्घ [2]तपारौ देषि। श्राप दीनों कुपि तामं ॥
अंबर बिहार गति [3]मंद हुअ। नर आरूढ़न संग्रहिय ॥
संभरि नरिंद कबि चंद कहि। सुरग इंद इम भुवि रहिय ॥छं०॥५॥

अंग देश के पूर्व एक सुन्दर बनखंड है वहीं वह गजयूथ विहार करता था। वहां पालकाव्य नामक एक थोड़ी अवस्था का ऋषीश्वर रहता था उसे इन सभों से बड़ा स्नेह होगया था परंतु राजा रोमपाद फंदा डालकर हाथियों को चंपापुरी में पकड़ ले गया।

अंग देस पूरब्ब मद्धि। बन षंड गहब्बरि ॥
उज्जल जल दल कमल। बिपुल लुहिताच्छ सरब्बर ॥
आयति गज कौ जूथ। करत क्रीड़ा निसि बासर ॥
पालकाव्य लघु वेस। रहत एक तहां रुषेसर ॥
तिन प्रीति बंधि अति परसपर। रोमपाद न्दप संभरिय ॥
आषेट जाइ फंदनि पकरि। दुरद आनि चंपापुरिय ॥ छं० ॥ ६ ॥

पालकाव्य मारे बिरह के मरकर हाथी के रूप में जनमा।

(१) कृ.-उतंगं। (२) ए.मो.-तपारी। (३) को.ए.-मंड।

दूहा ॥ पालकाव्य के विरह करि। अंग भए अति पीन ॥
मुनि वर तब तहं आय कें। गज चिगछग्गुन कीन ॥ छं० ॥ ७ ॥
गाथा ॥ कोयर पराग पत्तं। (१)छालं डाल फूल फल कंदं ॥
फली कली दै अरियं। कुंजर करि थूलयं तनयं ॥ छं० ॥ ८ ॥

उधर ब्रह्मा के तप को भंग करने के लिये इन्द्र ने रंभा को भेजा था उसे शापवश हथिनी होना पड़ा वह भी वहीं आई।

कवित्त ॥ ब्रह्मा रिषि तप करत। देषि कंप्यौ मघवानं ॥
छलन काज पहु पठय। रंभ रुचिरा करि मानं ॥
श्राप दियौ तापसह। अवनि करिनी सु अवत्तरि ॥
क्रम्म बंधि इकं,जती। लयित ह्रूऔ सुपनंतरि ॥
तिहि ठाम आइ उहि हस्तिनी। वोर लियो पोगर सुनमि ॥
उर सुक्र अंस धरि चंद कहि। पालकाव्य मुनिवर जनमि ॥छं०॥९॥

पालकाव्य उस के साथ विहार करने लगा।

दोहा ॥ तायें तिन मुनि करिन सों। बांधि प्रीत अत्यंत ॥
चंद कह्यौ नृप पिथ्थ सम। सकल मंडि वरतंत ॥ छं० ॥ १० ॥

चन्द ने उस बन और जन्तुओं की प्रशंसा करके कहा कि आप अवश्य वहां चलकर शिकार खेलिए।

कवित्त ॥ सुनहिं राज प्रथिराज। विपन रवनीय करिय जुथ ॥
रेवा तट सुंदर समूह। गजवंत चवन रथ ॥
आषेटक आचंभ। पंथ पावर रुकि पिल्लौ ॥
सिंघ वट्ट दिल्लि ससुंह। राज विल्लत दोइ चल्लौ ॥
अल जूह क्रूह कसतूरि म्रग। पहपंगी अरु पर्वतह ॥
बहुआन मान देषें न्रपति। कहिन बनत दच्छिन सुरह ॥छं०॥११॥

(१) ए.-छलं, ढालं, छलं।

एक तो जयचन्द पर जलन हो रही थी दूसरें अच्छा रमणीक स्थान सुन पृथ्वीराज से न रहा गया।

दूहा ॥ एक ताप पहु पंग कौ। अरु रवनीक 'जु थान ॥
चावँडराव बचन्न सुनि। चढ़ि चल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ १२ ॥

पृथ्वीराज धूम से चला। रास्ते के राजा संग हो गए, स्वयं रेवानरेश भी साथ हुआ। इस समय सुलतान के भेदुए (नीतिराय) ने लाहौर से यह समाचार गजनी भेजा।

कवित्त ॥ चढ़त राज प्रथिराज। बीर अगनेव दिसा कसि ॥
सब्ब भूमि न्रप न्रपति। चरन चहुआन लग्गि ध्रसि ॥
मिल्यौ भान विस्तरी। मिल्यौ पट्टल गड्डी न्रप ॥
मिल्यौ नंदि पुर राज। मिल्यौ रेवा नरिंद अप ॥
बन जूथ म्रग्ग सिंघह सु गज। न्रप आषेटक खिल्लई ॥
लाहौर थान सुरतान तप। बर कग्गद लिषि सिल्लई ॥ छं० ॥ १३॥

मारू खां और तत्तार खां ने दिल्ली पर आक्रमण करने का *बीड़ा उठाया।

दूहा ॥ षां ततार मारूफ षां। लिये पान कर साहि ॥
धर चहुआनी उप्परै। बज्जा बज्जन वाइ ॥ छं० ॥ १४ ॥

यह समाचार पा शहाबुद्दीन का चढ़ाई की तयारी करना।

साटक ॥ श्रोतं भूपय गोरियं वर भरं, बज्जाइ सज्जाइने।
सा सेना चतुरंग बंधि उबलं, तत्तार मारूफयं ॥
तुअस्ली सारं स उप्प राव सरसो, पल्लानयं षानयं।
एकं जीव साहाब साहि ननयं, बीयं स्तयं सेनयं ॥ छं० ॥ १५ ॥

(१) मो.-सु।

* प्राचीन समय में यह नियम था कि जब कोई कठिन कार्य्य आ उपस्थित होता था तो दरबार में पान का बीड़ा रख कर अपेक्षित कार्य्य की सूचना दी जाती थी अतएव जो सरदार अपने को उस काम के करने योग्य देखता वह बीड़ा उठा लेता।

तातार खां आदि सभों ने कुरान हाथ में लेकर शपथ करके प्रस्थान किया।

दूहा ॥ अहि वेली फल हथ्य लै। तो ऊपर तत्तार ॥
मेच्छमहूरति सत्ति कैं। बंच कुरानी बार ॥ छं० ॥ १६ ॥

तत्तार खां का कहना कि चन्द पुंडीर को मार कर एक दिन में दिल्ली ले लूंगा।

कुंडलिया ॥ वर [1]मुसाफ तत्तार खां। मरन किंत्ति [2]नन बान ॥
मैं भंजे लाहौर धर। लैहूं सुनि सु विहान ॥
लैहैं सुनि सु विहान। सुनैं ढिल्ली सुरतानं ॥
जुध्थि पार पुंडीर। भीर परि है चहुआनं ॥
दुचित्त चित जिन करहु। राज आषेट [3]उथाप ॥
गज्जनेस आयस्स। चले सब छूप मुसाफं ॥ छं० ॥ १७ ॥

चन्द पुण्डीर ने पृथ्वीराज को समाचार लिखा। पृथ्वीराज का छः कोस लौट कर कूच का मुकाम करना।

दूहा ॥ षट सुर कोस मुकाम करि। चढ़ि चल्यौ चौहान ॥
चंद वीर पुंडीर कौ। कग्गद करि परिवान ॥ छं० ॥ १८ ॥

पृथ्वीराज का पंजाब तक सीधे शहाबुद्दीन की सेना के रुख पर जाना और उधर से शहाबुद्दीन की सेना का आना।

गोरी वै दल संमुहौ। गौ पंजाब प्रमान ॥
पुब्ब रू पच्छिम दुहु दिसा। मिलि चुहान सुरतान ॥ छं० ॥ १९ ॥

उसी समय कन्नौज के दूतों का यह समाचार जयचन्द से कहना।

दूत गये कनवज्ज दिसि। ते आए तिन थान ॥
कथा मंड चहुआन की। कहि कमधज्ज प्रमान ॥ छं० ॥ २० ॥

(१) ए.-मु साफ। (२) ए. कृ. को.-तन। (३) ए.-उथानं।

पृथ्वीराज का रेवा तट आना सुनकर सुलतान का सेना सजकर चलना ।

रेवा तट आयौ सुन्यौ । वर गोरी चहुआन ॥
वर अवाज सब मिट्टि कै । सजे सेन सुरतान ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि बहुत बड़े शत्रुरूपी मृगों का समूह शिकार करने को मिला ।

दूत बचन संभलि न्रपति । वर आषेटक षिल्ल ॥
रेंवातट [1]पद्धर धरा । जूह म्रगन वर मिल्लि ॥ छं० ॥ २२ ॥

राज्य मंत्रियों ने यह सम्मति दी कि अपने आप झगड़ा मोल लेना उचित नहीं किसी नीति द्वारा काम लेना ठीक है ।

कवित्त ॥ मिले सब्ब सामंत । मत्त मंड्यौ सु नरेसुर ॥
दह गूना [2]दल साहि । सज्जि चतुरंग सजी उर ॥
मवन मंत चुक्कौ न । सोइ वर मंत विचारौ ॥
बल घट्यौ अप्पनौ । सोच पच्छिलौ निहारौ ॥
[3]तन सट्टौ लीजै सुगति । जुगति बंध गोरी दलह ॥
संग्राम भीर प्रथिराज बल । अप्प मत्ति किज्जै कलह ॥ छं० ॥ २३ ॥

यह बात सुन कर सामंतों का मुसका कर कहना कि भारथ का बचन है कि रण में मरने से ही बीर का कल्याण है ।

सुनिय बत्त पज्जून । राव परसंग [4]मुसक्यौ ॥
देव राव बग्गरौ । सेन दे पाव कसक्यौ ॥

---

(१) ए.-पधार ।　　(२) मो.-बल ।
(३) मो.-सँट्टे लीजै, ए.-सद सटैं ।　　(४) मो.-मुसक्यौ ।

तन सट्टै [1]सहि मुकति। बोल भारथ्थौ बोलै ॥
लोह श्रंच उडुंत। पत्त तरवर जिम डोलै ॥
सुरतान चंपि सुप्पां लग्यौ। दिल्ली न्रप दल बानिबौ ॥
भर भीर धीर सामंत पुन। अबै पटंतर जानिबौ ॥ छं० ॥ २४ ॥

पज्जून राय का कहना कि मैंने सब शत्रुओं को पराजित किया और शहाबुद्दीन को भी पकड़ा। अब भी उस से नहीं डरता।

कहै राव पज्जून। तार कह्यौं तत्तारिय ॥
मैं दछ्छिन वै देस। भीर जद्दव पर [2]पारिय ॥
मैं बंध्यौ जंगलू। राव चामंड [3]सु सथ्थे ॥
वंभन वास विरास। वीर वड़ गुज्जर तथ्थे ॥.
भर विभर सेन चहुआन दल। गोरी दल [4]कित्तक गिनौ ॥
जानै कि [5]भीम कौरव सुबर। जर समूह तरवर किनौ ॥छं०॥२५॥

जैत राव का कहना कि शहाबुद्दीन की सेना से मिलान होना लाहौर के पास अनुमान किया जाता है अत एव अपनी सब तैयारी कर लेनी उचित है आगे जो आप की इच्छा हो।

कहै जैत पंवार। सुनहु प्रथिराज राज मत ॥
जुद्ध साहि गोरी। नरिंद लाहौर कोट गत ॥
सबै सैन अप्पनौ। राज एकट्ठ सु किज्ज ॥
इष्ट भृत्य सगपन सु। हित कागद लिषि दिज्जै ॥
सामंत सामि इहि मंत है। [6]अरु जु मंत चित्तै न्रपति ॥
धन रहै भ्रम्म जसु जोग ह्वै। दिपति दीप दिव लोकपति ॥छं०॥२६॥

---

(१) ए.-सटि। (२) मो.-परिहरिय।
(३) मो.-जु। (४) मो.-किन्ती।
(५) ए.-भीम, कौड, कौरूं, कौरौं। (६) ए.-अरु जुद्ध।

रघुबंस राम का कहना कि हम सामंत लोग मंत्र क्या जानें केवल मरना जानते हैं, पहिले शाह को पकड़ा था अब भी पकड़ेंगे।

तब वह कहि रघुबंश। राम हक्कारि सु उट्ठौ ॥
सुनौ सब्ब सामंत। साहि आए बल [1]छुट्टौ ॥
गज रु सिंघ सा पुरिष। जहां रुंधै तहां सुज्झै ॥
[2]असम समौ जानहि न। लज्ज पंकै आलुज्झै ॥
सामंत मंत जानैं नही। मत्त गहैं इक मरन कौ
सुरतान सेन पहिलै बंध्यौ। फिर बंधौं तौ करन कौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

कविचन्द का कहना कि हे गुज्जर गँवारी बातें न कहो इन्हीं बातों से राज्य का नाश होता है। हम सब के मरने पर राजा क्या करेगा।

रे गुज्जर गांवार। राज लै मंत न होई ॥
अप मर छिज्जै न्रपति। कौन कारज यह जोई ॥
सब सेवक चहुआन। देस भग्गै धर पिल्लै ॥
पच्छि काम कह करै। स्वामि संग्राम इकल्लै ॥
पंडित्त भट्ट कवि गाइना। न्रप सौदागिर वार हुअ ॥
गजराज [3]सीस सोभा वरन। क्रन उड़ाइ वह सोभ लह ॥छं०॥२८॥

पृथ्वीराज का कहना कि जो बात आगे आई है उस के लिये जुद्ध का सामान करो।

दूहा ॥ परी षोर तन दुंग [4]गम। अग्ग जुद्ध सुरतान ॥
अब इह मंत विचारये। लरन मरन परवान ॥ छं० ॥ २९ ॥

---

(१) ए.-छटयो, (२) ए. कृ. को.-समौ, असमौ।
(३) सा.-सीस। (४) ए.-मम।

'गजन संग प्रथिराज कैः। है लिष्षिय परवान ॥
वज्जी पष्पर पंड रै। चाहुआन सुरतान ॥ छं० ॥ ३० ॥
ग्यारह अष्षर पंच पट। लहु गुरु होइ समान ॥
कंठ सोभ वर छंद कौ। नाम कह्यौ परवान ॥ छं० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज के घोड़ों की शोभा वर्णन।

छंद कंठशोभा ॥ फिरे हय वष्पर पष्पर से। मनो फिर इंदुज पंष कसे ॥
सोई उपमा कविचंद कथे। सजे मनों पौंन पवंग रथें ॥ छं० ॥ ३२ ॥
उर पुट्ठिय ²सुट्ठिय दिठ्ठय ता। पयरो पय लंगत ता धरिता ॥
लग्गे उड़ि छित्तिय ³चौ नलयं। सुने षुर केइ अवत्तनयं ॥ छं० ॥ ३३ ॥
षग बंधि सु हेम हमेल घनं। तन चामर जोति पवंन रनं ॥
ग्रह अट्टस तारक ⁴पीत पगे। मनों सुत के उर भान ⁵उगे ॥ छं० ॥ ३४ ॥
पय मंडिहि अंसु धरै उलटा। मना बिंटय देषि चलै कुलटा ॥
सुष कट्टिन घूंघट अस्सु वलो। मनों घुंघट दै कुल वद्धु चलो ॥
छं० ॥ ३५ ॥
तिनं उपमा वरनो न घनं। पुजे नन वग्ग पवंन मनं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

आधी रात को दूत पृथ्वीराज के पास पहुंचा और समाचार दिया कि अट्ठारह हजार हाथी और अट्ठारह लाख सेना के साथ सुलतान लाहौर से चौदह कोस पर आ पहुंचा।

कुंडलिया ॥ नव वज्जी घरियार घर। राज महल उठि आइ ॥
निसा अद्ध वर उत्तरे। दूत संपते आइ ॥
दूत संपते आइ। धाइ चहुआन सु जग्गिय ॥
सिंघ विहथ्थं सुक्कि। साहि साहौउर तग्गिय ॥
अट्ठ सहस गजराज। लष्ष अट्ठारह ⁶ताजिय ॥
उभै सत्त वर कोस। साहि गोरी नव वाजिय ॥ छं० ॥ ३७ ॥

(१) ए. कृ. को.-गजन सिंग । (२) ए. कृ. को.-उर पप्पर पुट्ठिय दिट्ठियत ।
(३) ए.-दो, दौ । (४) ए. कृ. को.-पीत पगे । (५) ए.-उदे । (६) ए. कृ. को.-ताजिय ।

पृथ्वीराज ने दूत से पत्र लेकर पढ़ा—हिन्दुओं के दल में शोर मच गया।

दूहा ॥ बचि कागद चहुआन नें। फिरल चंद 'सह थान ॥
मनो बीर तनु अंकुरे। सुगति भोग बनि प्रान ॥ छं० ॥ ३८ ॥
मची कूह दल हिंदु के। 'कसे सनाह सनाह ॥
बर चिराक दस 'सहस भइ। बजि निसांन अरिदाह ॥ छं० ॥ ३९ ॥

दूत का दरबार में आकर पृथ्वीराज से कहना कि मुस्लमान सेना चिनाब के पार आगई। चन्द पुंडीर ने उसका रास्ता बांध कर मुझे इधर भेजा है।

*बा बढ़ नृप मुकतें। दूत आइ तिहि वार ॥
सजी सेन गोरी सुभर। उत्तरए नद पार ॥ छं० ॥ ४० ॥
पंचासज गोरी नृपति। बंध उतरि नहिं पार ॥
चंद बीर पुंडीर नें। 'थटि मुक्कै दरवार ॥ छं० ॥ ४१ ॥

सुलतान का अपने सामंतों के साथ युद्ध के लिये प्रस्तुत होना।

कवित्त ॥ षां मारुफ ततार। षान षिलची बर गद्दे ॥
चामर छच सुजक्क। गोल सेना रचि गद्दे ॥
नारि गोरि जम्बूर। सुबर कीना गजसार ॥
नूरीं षां हुज्जाव। नूर महमद सिर भार ॥
वज्जीर षान गोरी सुभर। षान षान हजरत्ति षां ॥
बिय सज्जि सैन हरवल करिय। तहां उभौ सजरत्ति षां ॥छं०॥४२॥

---

(१) क़.-सर। (२) ए. क़-कैरे सनाह अनाह। (३) ए. क़. को.-दस दस।
(४) ए.-उत्तर यौ नदि पार, मो.-घट मुक्यौ दरवार।
* यह दोहा ए. को. और क़. प्रति में नहीं है।

शाहजादे का सरदारों के साथ सेना हरवल रचना और सेना के मुख्य सरदारों के नाम स्थान और उन का पराक्रम वर्णन।

रचि हरवल सुरतान। साहिजादा सुरतानं॥
षां पैदा महमूद। वीर वंध्यौ सु विहानं॥
षां मंगोल लल्लरी। वीस टंकौ वर पंचै॥
चौ तेगीसह बाज। बान अरि प्रान सु अंचै॥
जँहगीर षान जह गोर वर। षां हिंदू वर वर विहर॥
पच्छिमी षांन पठ्ठान सह। रचि उभ्भै हरवल गहर॥छं०॥४३॥
रचि हरवल पठ्ठांन। षान इसमान रु गष्पर॥
केली षां कुंजरी। साह सारी दल षष्पर॥
षां भट्टी मह नंग। षान षुरसानी बब्बर॥
हवस षान हुज्जाव। ग्रब्ब आलम्म जास बर॥
तिन अग्ग अट्ठ गजराज वर। मद सरक्क पट्टे तिना॥
पंच विन पिंड जो जपजे। जुद्ध होइ लज्जी विना॥ छं०॥ ४४॥

शहावुद्दीन का इस पार तीस दूतों को रख कर चिनाव पार करना।

[1]करित माय बहु साहि। तीस तहँ रष्षि फिरस्ते॥
आलम षान गुमान। षान उजबक्क निरस्तं॥
लहु मारूफ गुमस्त। षान दुस्तम बजरंगी॥
हिंदु सेन उप्परें। साहि बज्जै रन जंगी॥
सह सेन टारि सोरा रच्यौ। साहि चिन्नाव सु उत्तर्‍यौ॥
संभले सूर सामंत नृप। रोस वीर वीरं दुर्‍यौ॥ छं०॥ ४५॥

यह सुन कर पृथ्वीराज का क्रोध करना और दूत का कहना पुंडीरं उसे रोके हुए है।

(१) ए.-करत माइ चौसाहि।

दूहा ॥ तमसि तमसि सामंत सब । रोस भरिग प्रथिराज ॥
जब लगि रुपि पुंडीर नें । रोक्यौ गोरी साज ॥ छं० ॥ ४६ ॥

जहां पर सुलतान चिनाब उतरने वाला था वहीं पुण्डीर ने रास्ता रोका। घोर युद्ध हुआ। चन्द पुण्डीर घायल हो कर गिरा। सुलतान चिनाब पार होने लगा।

भुजंगी ॥ जहां उतऱ्यौ साहि चिन्दाव मीरं । तहां नेज गड्डौ ठट्ठक्के पुडीरं ॥
करी आनि साहाव सा बंधि गोरी। धके धींग धींगं धकावैं सजोरी ॥
छं० ॥ ४७ ॥

दोऊ दीन दीनं कढ़ी बंकि अस्सी। किधौं मेघ में बीज कोटि विकस्सी॥
किए सिप्परं कोर ता सेल अग्गी। किधौं बद्दरं कोर नागिन्न नग्गी॥
छं० ॥ ४८ ॥

हवक्के जु मेछं भ्रमंतं जु छुट्टै । मनों घेरनी घुम्मि पारेव तुट्टै ॥
उरं फुट्टि बरछी बरं छबि नासी। मनौं जाल में मीन अच्छी निकासी॥
छं० ॥ ४९ ॥

लटक्के जुरंनं उड़ै ह ह है। रसं भीति सूरं चवग्गान पिड़ै ।
लगे सीस नेजा भ्रमें मेज तथ्यं । भवै बाहुसं भात दीर्पत्ति सथ्यं ॥
छं० ॥ ५० ॥

करै मार मारं महावीर धीरं । भये मेघ धारा बरष्षंत तीरं ॥
परे पंच पुडीर सा चंद कव्वो । तबै साहि गोरी स चन्दाव चव्वौ ॥
छं० ॥ ५१ ॥

सुलतान का चिनाब उतरना और चन्द पुण्डीर का गिरना देख कर दूत ने बढ़ कर पृथ्वीराज को समाचार दिया।

कवित्त ॥ उतरि साहि चिन्दाव । घाय पुंडीर सुध्धि पर ॥
उप्पाऱ्यौ बर चंद । पंच बंधव सु पथ्थ धर ॥
दिष्षि दूत बर चरित । पास आयौ चहुआनं ॥
उप्पर गोरी नरिंद । हास बढ़ढी सुरतानं ॥

वर सीर धीर मारूफ दुरि। [1]पंच अनी एकठ जुरी ॥
सुर पंच कोस लाहोर तें। मेच्छ मिलानह सो करी ॥ छं० ॥ ५२ ॥

पृथ्वीराज ने क्रोध के साथ प्रतिज्ञा की कि तब मैं सोमेश्वर का बेटा जो फिर सुलतान को कैद करूं। पृथ्वीराज ने चन्द्र ब्यूह की रचना करके चढ़ाई की।

दूहा ॥ वीर रोस वर वैर वर। भृकि लग्गै असमान ॥
तौ नंदन सोमेस कौ। फिरि बंधौ सुरतान ॥ छं० ॥ ५३ ॥
चन्द्रव्यूह न्रप बंधि दल। धनि प्रथिराज नरिंद ॥
साहि बंध सुरतान सौं। सेना विन विधि कंद ॥ छं० ॥ ५४ ॥

पञ्चमी मङ्गलवार को पृथ्वीराज ने चढ़ाई की। (कवि ने उस दिन के ग्रह स्थिति योग आदि का वर्णन किया है)

कवित्त ॥ वर मंगल पंचमी। दिन सु दीनौ प्रथिराजं ॥
राह केत जय दीन। दुष्ट टारे सुभ काजं ॥
अष्ट चक्र जोगनी। भोग भरनौ सुधि रारी ॥
गुर पंचम रवि पंच। अष्ट मंगल न्रप भारी ॥
कै इंद्र बुद्ध भारथ्थ भल। कर चिह्नल चक्रा वज्जिय ॥
सुभ घरिय राज वर लीन वर। चल्यौ उदै क्रूरह दज्जिय ॥ छं० ॥ ५५ ॥
दूहा ॥ सो रचि उद्व अवद्व अध। [2]उग्गि महव विधि [3]कंद ॥
वर निषेद न्रप वंदयौ। को न भाय कविचंद ॥ छं० ॥ ५६ ॥

जिस प्रकार चक्रवाक, साधु, रोगी, निर्धन, विरह वियोगी लोग रात्रि के अवसान और सूर्य्योदय की इच्छा करते हैं उसी प्रकार पृथ्वीराज भी सूर्य्योदय को चाहता था।

(१) ए.-खंच। (२) ए.-लगि। (३) ऐ.-मंदि, क्र.-मंदि मंद।

कवित्त ॥ प्रात सूर बंछई। चक्क चक्किय रवि बंछै ॥
प्रात सूर बंछई। सुरह बुद्धि बल सो इंछै ॥
प्रात सूर बंछई। प्रात वर बंछि वियोगी ॥
प्रात सूर बंछई। ज्यौं म्रु बंछै बर रोगी ॥
बंछयौ प्रात ज्यों त्यों उजल। बंछै रंक करन्न बर ॥
बंछयौ प्रात प्रथिराज नें। सती सत्त बंछेति उर ॥ छं० ॥ ५७ ॥

पृथ्वीराज की सेना तथा चढ़ाई का वर्णन।

दंडमाली ॥ भय प्रात रत्तिय, जुरत दीसय, चंद मंदय चंद यौ।
भर तमस तामस, सूर वर भरि, रास तामस छंद यौ ॥
बर बज्जियं नीसान धुनि, घन बीर बरनि अँकूरयं।
धर धरकि धाइर, करषि काइर, रस मिल्लर स क्रूरयं॥ छं० ॥ ५८॥
गज घंट घनकिय, रुद्र 'भन किय, घनकि संकर उद्दयौ।
रन नंकि 'भेरिय, कन्ह छोरिय, दंति दान धनं 'दयौ ॥
सुनि बीर सद्दइ, सबद पद्दई, सद्द असद्दइ छंडयौ।
तिह ठौर अद्भुत, होत न्रप दल, बंधि दुज्जन षंडयौ ॥छं०॥५९॥
सन्नाह सूरज सज्जि घाटं, चंद ओपम राजई।
मुकर में प्रतिब्यंब राजय, सत्त धन ससि साजई ॥
बर फल्लि बंबर, टोप आयो, त रोस सीसत आइए।
नष्षिच हस्त कि, भान चंपक, कमल सूरहि साइए ॥ छं० ॥ ६० ॥
बर बीर धा जोगिंद पत्तिय, कब्बि ओपम पाइयं ॥
तजि मोह माया, छोहं कल बर, धार तित्थह धाइयं ॥
संसार श्रंकर बंधि, गज जिम, अप्प बंधन हथ्थयं।
उनमत्त गज जिमि, नंख दीनौ, मोह माया सथ्थयं ॥ छं० ॥ ६१ ॥
सो प्रबल मद्द जुग, बंधि जोगी, मुनी आरस देवयौ।
सामंत धनि जिम, षिंत्ति कीनौ, पत्त तरु जिम मेवयौ ॥ छं० ॥ ६२॥

(१) ए.-भनषिय। (२) ए.-मेरिय।
(३) ए.-घनंजयौ।

दूहा ॥ क्रंम गाह इक सुगन की । क्यों करिजै वापान ॥
मन अनंप सामंत नै । [1]कच कर वति पापान ॥ छं० ॥ ६३ ॥
वाई विप धंधरि परिय । वद्दर छाए भान ॥
कुम घर मंगल वज्जही । कै चढ़ि मंगल आन ॥ छं० ॥ ६४ ॥

दोनों ओर की सेनाओं के चमकते हुए अस्त्र शस्त्र और निशानों का वर्णन।

दिष्ट देपि सुरतान दल । लोहा षक्कत वान ॥
पहकि फेरि उड़गन चले । निसि आगम फिरि [2]जान ॥ छं० ॥ ६५ ॥
धजा वाइ वंकुर उड़ति । छवि कविंद इह आइ ॥
उड़गन चंद नरिंद विय । लगो [3]मनों अइ पाइ ॥ छं० ॥ ६६ ॥
से सनि संकहि वजतहि । वाजे कुहकं सुरंग ॥
मेटै सद्द निसान के । सुने म श्रवनति अंग ॥ छं० ॥ ६७ ॥

जब दोनों सेनाएं साम्हने हुईं तब मेवारपति रावल समरसिंह ने आगे बढ़कर युद्ध आरम्भ किया।

अनी दोउ घन घोर ज्यौं । [4]घाय मिले कर घाठ ॥
चित्रंगी रावर विना । करै कोन इह वाट ॥ छं० ॥ ६८ ॥
कवित्त ॥ पवन रूप परचंड । घालि असु असि वर झारै ॥
मार मार सुर वज्जि । पत्त तरू अरि सिर पारै ॥
फहक्कि सद्द [5]फेफरा । इह्न कंकर उप्पारै ॥
कटि भसुंड परि मुंड । भिंड कंटक उप्पारै ॥
भज्जयौ विषम मेवारपति । रज उडाइ सुरतान दल ॥
समरथ्थ समर [6]सम्मर मिलिय । अनी मुष्ष पिष्षी सवल ॥ छं० ॥ ६९ ॥

रावल, जैत पँवार, चामंड राय और हुसैन षां का क्रमानुसार हरावल में आक्रमण करना। पीठि सेना का पीछे से बढ़ना।

(१) मो.-ज्यौं कचकरवर्ती । (२) को.ए.-जाम । (३) ए. मो.-मानौं-मानो ।
(४) ए. छ. को.-घाघा मिलेक थाट, कर थाट ।
(५) ए. छ. को.-फीफरा । (६) ए. कृ. को.-मनमथ मिल, मिली, मिल्यौ ।

रावर उप्पर धाई। पन्यौ पांवार जैत थिक्कि॥
तिहि उप्पर चांमंड। कन्यौ हुस्सेन षान सजि॥
धक्काई धक्काइ। दोइ हरवल बर मभ्भै॥
पच्छ सेन आहुट्टि। अनी बंधी आलुभ्भै॥
गजराज विय सु सुरतान दल। दुह चतुरंग बर बीर बर॥
धनि धार धार धारह धनी। बर भट्टी उप्पारि कर॥ छं० ॥ ७० ॥

हिन्दू सेना की चन्द्र व्यूह रचना।

छच सु जीक सु अप्पि। जैत दीनौ सिर छचं॥
चन्द्रव्यूह अंकुरिय। राज [१]दुच दहां इकचं॥
इक अग्र हुसेन। बीय अग्रह पुंडीरं॥
मद्धि भाग रघुवंस। राम उभ्भौ बर बीरं॥
सांषलौ सूर सारंग दे। उररि षान गोरीय ग्रुष॥
हयनारि [२]गोर जंबूर घन। दुहं बांह उभ्भंति [३]रष॥ छं० ॥७१॥

दो पहर के समय चंद पुंडीर का तिरछा रुख दे कर शत्रु सेना को दबाना।

छुट्टि अद्ध बर घटिय। चल्यौ मध्यान भान सिर॥
सूर कंध बर कट्टि। मिले कादर कुरंग बर॥
घरी अद्द बर अद्द। लोह सों लोह जु रुक्के॥
मन अग्गे अरि मिले। चित्त में कंक धरक्के॥
पुंडीर भीर भंजन भिरन। लरन तिरच्छौ लग्गयौ॥
नव वधू जेम संका सुबर। उदौ जानि जिम भग्गयौ॥ छं० ॥७२॥

पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन का सम्मुख घोर युद्ध होना। योगिनी भैरव आदि का आनन्द से नाचना।

भुजंगी॥ मिले चाहुचहुआन सा चंपि गोरी। स्वयं पंचकोरी निसानं अहोरी॥
बजे आवद्धं संभरे अद्ध कोसं। घने अग्ग नीसान मिलि अद्धकोसं॥
छं० ॥ ७३ ॥

(१) छ. मो.-दुअ। (२) ए. कृ. को. मो, जोरो। (३) कृ.-रख।

वरं बंवरं चौर माहौति साईं । इसे इच पीतं वखे धार घाईं ॥
बुलै दूर हक्के दृहक्के पचारं । घले बथ्थ दोज धरं वा ⁽¹⁾चंधारं ॥
छं० ॥ ७४ ॥

उतंमंग तुट्टै परै श्रोन धारी । मनों दंड सुक्की अंगीवाइ वारी ॥
नचै कंध बंधं इकैं सीस भारी । तहां जोग माया ⁽²⁾जकी सी विचारी ॥
छं० ॥ ७५ ॥

वही साँग लग्गी वजी धार धारं । तहां सैंन दूनं करै मार मारं ॥
नचै रंग भैरू गहै ताल वीरं । सुरंग अच्छरी बंधि नारह तीरं ॥
छं० ॥ ७६ ॥

इसी जुड बधं उच्चहे उभानं । भिरै गोरियं सेन अहचाहुआनं ॥
करै कुंडली तेग बग्गी ⁽³⁾प्रमानं । मनों मंडली रास तं कन्ह वालं ॥
॥ छं० ॥ ७७ ॥

फुटी आवधं माहि सामंत छूरं । बजै गोर ओरं मनों बज्ज भूरं ॥
लगै धार धारं तिनै धरह तुट्टै । दुहूं कुंभ भग्गं करं कं अहुट्टै ॥
॥ छं० ॥ ७८ ॥

फुटी श्रोन भोमं ⁽⁴⁾अपं बिंब राजं । मनों मेघ बुट्टै प्रथीमी समाजं ॥
पराक्रम राजं प्रथीपत्ति रुध्यौ । रनं रुंधि गोरी सहं जंग जुध्यौ ॥
छं० ॥ ७९ ॥

सुलतान का घबराना। तातार खां का धैर्य दिलाना।

दूहा ॥ तेज छुट्टि गोरी सुवर । दिय धीरजं तत्तार ॥
मो उभ्भै सुरतान को । ⁽⁵⁾भौर परी इन वार ॥ छं ॥ ८० ॥

उक्त युद्ध की बसंत ऋतु से उपमा वर्णन।

मोतीदाम ॥ रतिराज द जोवन राजत जोर। चंप्पौ ससिरं उर ग्रीषम कोर ॥
उनौं मधि मद्धि मधू धुनि होय । तिनं उपमा बरनी कवि ⁽⁶⁾कोय ॥
छं० ॥ ८१ ॥

---

(१) ए.-अपारं। (२) मो.-जुकीयं विचारी। (३) ए. कृ.-पमानी।
(४) कृ. ए.-अपी। (५) ए.-मरी। (६) ए. कृ. को.-कोह, कोय, होइ।

सुनौ वर आगम [1]जुब्बन बैन । नच्यौ कवहूं न सु उद्दिम मैन ॥
कवहूं दुरि आंनन [2]पुच्छत नैन । कहौ किन अन्न दुरी दुरि बैन ॥
छं० ॥ ८२ ॥

शशि रोर नसै सब दुंदभि बज्जि । उभै रतिराज [3]सुजोवन सज्जि ॥
कही बर श्रोन सुरंगिय रज्जि । चंपे [4]रन दोउ बनं बन भज्जि ॥
छं० ॥ ८३ ॥

इय मीनन लीन भये रत रज्जि । भम विभ्रम भारु परी गहि नज्ज
सुर मारुत फौज प्रथंम चलाइ । गति लज्जि सकुचि कछे मिलि आइ॥
छं ॥ ८४ ॥

दहि सीत मधूप न कंदहि जीव । प्रकटै उर तुच्छ सोज उर भीव॥
बिन पल्लव कोरहि [5]तारहि रंभ । गहना बिन बाल बिराजत अंभा॥
छं० ॥ ८५ ॥

कलि कंठन कंठ सज्यौ अलि पंथ । न उड्डिय अंग नवेलिय अंघ ॥
सजौ चतुरंग सज्यौ बन राइ । बजी इन उप्पर सैसब जाइ ॥
छं० ॥ ८६ ॥

कवि मत्तिय जुद्ध तिंन बहु घोर । बनं तब संधय चंद कठोर॥
छं० ॥ ८७॥

रसावला ॥ बोल बुद्दै घनं, स्वांमि जंपे मनं । रोस लग्गो तनं, सिंघ मद्दं मनं॥
छं० ॥ ८८ ॥

छोह मोहं बिनं, दांनं छुट्टे ननं । नाम राजं घनं, भ्रंम सातुक्कनं ॥
छं० ॥ ८९ ॥

भेच्छ बाहं बिनं, रत्तं कंधं ननं । ढल्ल जा ढाहनं, जीवनं सा हनं॥
छं० ॥ ९० ॥

बान जा संधनं, पंषि जा बंधनं । स्वांमि सेतं अनी, पीत रत्तं घनी॥
छं० ॥ ९१ ॥

क्रूह मची घरी, रोस दंती फिरी । फौज फट्टी पुनं, सूर जंभे घनं॥
छं० ॥ ९२ ॥

(१) ए.-जुब्बन । (२) मो.-ए.-को.-पुच्छन । (३) ए.-सैजोवन ।
(४) ए. कृ. को.-नर । (५) ए.-तौरै संभ ।

लेहुं लेहु झरी, लोह कट्टे ऋरी । कन्द जा संभरी, पाइ मंडे फिरी ॥
छं० ॥ ६३ ॥

वीर हक्कं करी, नैन रत्तं वरी । पंड जा योलियं, वीर सा बोलियं ॥
छं० ॥ ६४ ॥

वीर बज्जे घुरं, दंति पट्टे छुरं । भार संकोरीयं, फौज विप्फौरियं ॥
छं० ॥ ६५ ॥

दंत रुट्टी परे, अग्ग फूलं झरे । हेमयं नारियं, जावकं ढारियं ॥
छं० ॥ ६६ ॥

आननं हंकयं, अंग 'जानंचयं। सत्त सामंतयं, वांन सा पथ्थयं ॥
छं० ॥ ६७ ॥

फौज दोज फटी, जांनि जूनी टटी। .... ॥ छं० ॥ ६८ ॥

सोलंकी माधव राय से खिलजी खां से तलवार का युद्ध होने लगा। माधव राय की तलवार टूट गई तब वह कटार से लड़ने लगा। शत्रुओं ने अधर्म युद्ध से उसे मार गिराया।

कवित्त ॥ सौलंकी माधव । नरिंद खिलची सुष लग्गा ॥
सुबर वीर रस वीर । वीर वीरा रस पग्गा ॥
दुअन बुद्ध जुध तेग । दुह्र हथ्थन उम्भारिय ॥
तेग तुट्टि चालुक्क । बथ्थ परि कढ्ढि कटारिय ॥
अग अग्ग तकि ठिल्ले वलन । अधम जुद्ध लग्गे लरन ॥
सारंग बंध घन घाव परि । गोरी वै दिन्नौ मरन ॥ छं० ॥ ६९ ॥

वीर गति से मरने पर मोक्ष पद पाने की प्रशंसा।

पग्ग हटकि जुटिक्क । असन सेना समंद गजि ॥
हय गय बर छिल्लोर । गवक्ख गोइंद दिध्धि सजि ॥

अनम अठेल अभंग। नीर असि मीर समाहिय॥
अति दल बल आहुट्टि। पच्छ लग्गी पर वाहिय॥
रज तज्ज रज्ज मुक्कि न रह्यौ। रज न लगी रज रज भयौ॥
उच्छंगन अच्छर सो लयौ। देव विमानन चढ़ि गयौ॥ छं० ॥१००॥

जै सिंह की वीरता और उसकी वीर मृत्यु की प्रशंसा।

परि पतंग जै सिंघ। पतँग अप्पुन तन दभ्भै॥
नव पतंग गति लीन। करे अरि अरिधज धज्जै॥
तेल ठांम वात्तीय। [1]अगन्नि एकल विझ्झाइय॥
पंच अप्प अरि पंच। पंच अरि पंथ लगाइय॥
आरन्नि कूंआरी वर वन्यौ। द्वै दाहन दुज्जन दवन॥
जीतेव असुर महि मंडलह। और ताहि पुज्जै कवन॥ छं०॥१०१॥

वीर पुंडीर के भाई की वीरता और उस के कमंध का खड़ा होना।

रुप्यौ बीर पुंडरी। फिरी पारस सुरतानी॥
शस्त्र बीर चमकंत। तेज आरुहि सिर [2]ठानी॥
टोप ओप तुटि किरच। सार सारह जरि भारे॥
मिलि नच्चि रोहनी। सीस ससि उडगन चारे॥
उठि परत भिरत भंजत अरिन। जै जै जै सुर लोक हुअ॥
उठ्यौ कमंध पलपंच चव। कोन भाइ कथ्यौ जु धुअ॥ छं०॥१०२॥

पज्जून राय के भाई पल्हान राय का खुरसान खां के हाथ से मारा जाना।

दुजन सल्ल कूरंभ। बंध पल्हन सकारिय॥
संम्हौ षां षुरसान। तेग लंबी उभ्भारिय॥
टोप टुट्टि बर करी। सीस परि तुट्टि कमंधं॥
मार मार उच्चार। तार तं नंचि कमंधं॥

(१) मो.-अगन्नि। (२) ए.-तानी।

तहँ देपि रुद्र रुद्रह [1]हस्यौ। [2]हय हय हय नंदी कह्यौ ॥
कविचंद [3]शैलपुची चकित। पिष्पि वीर भारथ नयौ ॥छं०॥१०३॥

जै सिंह के भाई का मारा जाना।

सोलंकी सारंग। षान षिलची मुष लग्गा ॥
वह पंगानी भृत्त। इते चहुआन विलग्गा ॥
है कंध न दिय पाय। कन्ह उत्तरि विय वाजिय ॥
गज गुंजार हुँकार। धरा गिर कंदर गाजिय ॥
जय जयति देव जै जै करहिं। पहुपंजलि पूजत रिनह ॥
इक पन्यौ षेत सोधै सकल। इक रह्यौ बंधे धुनह ॥ छं० ॥ १०४ ॥

गोइन्द राय का तत्तार खां के हाथी और फीलवान को मार गिराना।

करी मुष्प आहुट्ठ। वीर गोइंद सु अप्पै ॥
कविल पील जनु कन्ह। दंत दारुन गहि नप्पै ॥
सुंड दंड भये षंड। पीलवानं गज मुक्यौ ॥
गिद्धि सिद्धि वेताल। आइ अंषिन पल रुक्यौ ॥
वर वीर पन्यौ भारथ्थ वर। लोह लहरी लगात भुल्यौ ॥
तत्तार षान सन्हौ सु क्रत। सिंघ हक्कि अंवर डुल्यौ ॥ छं० ॥ १०५ ॥

नरसिंह राय के सिर में घाव लगने से उसके गिर जाने पर चामुंडराय का उस की रक्षा करना।

षोलि षग्ग नरसिंघ। षिझ्झि पज सीसह झारिय ॥
तुटि धर धरनि परंत। परत संभरि कट्टारिय ॥
चरन अंत उरझंत। वीर क्रूरंभ करारौ ॥
तेग घाइ चुकंत। झरी झर लोह सँभारौ ॥
चलि गयौ [4]क्रमन क्रम्मन चलै। डुल्यौ न [5]डुल तन हथ्थ वर ॥
तिन परत वीर दाहर तनौ। चामंडा बज्जी लहर ॥ छं० ॥ १०६ ॥

---

(१) मो.-भयौ। (२) मो.-हयं हयं। (३) ए.- सवल, कृ. को.- सयल।
(४) मो.-न क्रमन क्रमनत। (५) ए.-नर डुलतन।

रात हो गई दूसरे दिन सवेरे फिर पृथ्वीराज ने शत्रुओं को आ घेरा।

भुजंगी॥ [1]छुटी छंदनी छंद सीमा प्रमानं। मिली ढालनी माल राही समानं॥
निसा मान नीसान नीसान धूत्रं। धुत्रं धूरिनं मूरिनं पूर कुत्रं॥
छं० ॥ १०७॥

सुरत्तान फौजं तिनें [2]पत्ति फेरी। मुषं लग्गि चहुआन पारस्स घेरी॥
भये प्रात सुज्जात संग्राम षालं। चहुव्वान उट्ठाय सालोपि थाल॥
छं० ॥ १०८॥

जैत राय के भाई लक्ष्मण राय के मरते समय अप्सराओं का उसके पाने की इच्छा करना परंतु उसका सूर्य्य लोक भेद कर मोक्ष पाना।

कवित्त॥ जैत बंध ढहि पर्‍यौ। लष्ष लष्षन कौ जायौ॥
तहं झगरी मह माय। देवि हुंकारौ पायौ॥
हुंकारै हुंकार। जूह गिद्धनि उड्डायौ॥
गिद्धिन तें अपछरा। लियौ चाहत नहि पायौ॥
अव तरन सोइ उतपति गयौ। देवथान बिभ्रम [3]बियौ॥
जम लोक न शिवपुर ब्रह्मपुर। भान थान भानै बियौ॥छं०॥१०९॥
तन झंझरि पावार। पर्‍यौ धर मुच्छि [4]घटिय बिय॥
बर अच्छर बिंटयौ। सुरंग मुक्के सुरंग हिय॥
[5]तिहित बाल तत काल। सलष बंधिव ढिग आइय॥
लिषिय अंग बिय अथ्थ। सोई बर बंच दिषाइय॥
जनम मरन सह दुह सुगति। नन मिटै भिंटह न तुत्र॥
ए वार सुबर बंटहु नहीं। बंधि लेहु सुकी बधुत्र॥ छं० ॥ ११०॥

महादेव का लक्ष्मण का सिर अपनी माला के लिये लेना।

(१) ए.-छंदानं, क. मो.—छदनी, छंदनीमा.। (२) ए. क. को.—पांति।
(३) मी.-मयौ। (४) ए.-घटय। (५) मो.-तिहित काल सतबाल।

दूहा ॥ राम वंध कौ सौस वर । ईस गह्यौ कर चाइ ॥
'अघि दरिद्री ज्यौं भयौ । देषि देषि ललचाइ ॥ छं० ॥ १११ ॥

एक पहर दिन चढ़े जंघा योगी ने त्रिशूल लेकर घोर युद्ध मचाया।

जाम एक दिन चढ़त वर । जंघारौ भुकि वीर ॥
तीर जेम तत्तौ पन्यो । धर अप्पारे मीर ॥ छं० ॥ ११२ ॥

कवित्त ॥ जंघारौ जोगी । जुगिंद कढ़यौ कट्टारौ ॥
परस पानि तुंगी । त्रिसूल मप्पर अधिकारौ ॥
जटत वांन सिंगी । विभूत हर वर हर सारौ ॥
सवर सद्द वद्दयौ । विषम मद गंधन झारौ ॥
आसन सदिट्ठ निज पत्ति मैं । लिय सिर चंद अस्मित अमर ॥
मंडलीक राम 'रावत भिरत । नमौ वीर इत्तौ समर ॥छं०॥११३॥

शस्त्र सजकर सुलतान का युद्ध में टूटना। लंगरी राय का घोर युद्ध मचाना। लंगरी राय की वीरता की प्रशंसा।

सिलह सज्जि सुरतान । झुकि वज्जे रन जंग ॥
सुनें श्रवन लंगरी । वीर लग्गा अनभंगं ॥
वीर धीर सत मध्य । बीर हुंकरि रन धायौ ॥
सामंता सत मद्धि । मरन दीनं भय सायौ ॥
पारंत धक्क हक्कंत 'रन । पग प्रवाह पग पुल्लयौ ॥
विभ्भूत चंद अंगन तिलकं । बहसि वीर हकि बुल्लयौ ॥छं०॥११४॥
लंगा लोह उचाइ । पन्यौ घुंमर घन सभ्भै ॥
जुरत तेग सम तेग । कोर बहर कछु सुभ्भै ॥
यौं लग्गौ सुरतान । अनल दावानल दग्गं ॥
ज्यौं लंगूर लंगया । अगनि अगै आलग्गं ॥
इक मार उभ्भारं अंधारं मलं । एकं उभ्भारं सुभ्भारयौ ॥
इक वार तन्यौ दुस्तर रुपे । दूजै तेग उभारयौ ॥ छं० ॥ ११५ ॥

(१) मो.-अधिरं। (२) मो.-रांवंन। (३) ए.-रिंस, तरिन।

कुंडलिया ॥ तेग झारि उभझारि वर । [1]फिरि उपमा कवि [2]कथ्थ ॥
नैन बान अंकुर [3]बुट्टरि । तन तुट्टै वहि हथ्थ ॥
तन तुट्टै वहि हथ्थ । फेरि वर वीर स वीरह ॥
मरन चित्त सिंचयौ । जनम [4]जिन तजौ त्रजीरह ॥
हथ्थ वथ्थ आहित्त । फेरि तक्के उर वेगा ॥
लंगा लंगरि राइ । वीर [5]उक्षाइ सु तेगा ॥ छं० ॥ ११६ ॥

लोहाने की वीरता का वर्णन। चौसठ खाँओं का मारा जाना।

कवित्त ॥ लोहानौ मद मुंद । बान मुक्कै बहु भारी ॥
फुट्टि सु ठट्टर श्वान । पिट्ठ जरह निकारी ॥
मनों किवारी लागि । पुट्ठि विरकी उघ्घारिय ॥
बट्टारौ वर कढ्ढि । वीर अवसान संभारिय ॥
एक झार मीर उरझारि [6]झर । करि सुमेर परि अरि सु फिरि ॥
चवसट्ठि षान गोरी परै । तिन [7]रावव इक राज परि ॥छं०॥११७॥

मानि लोह मारूफ । रोस विट्टुर गाहक्के ॥
मनु पंचानन बाहि । सद [8]सिरहद हक्के ॥
दुहूं मीर वर तेज । सीस इक सिंघह बाही ॥
टोप टुट्टि बहकरी । चंद [9]ओपमता पाई ॥
मनु सौस बीय शृंग विज्जुलह । रही हेत तुटि भान हति ॥
उतमंग सुहै बिब टूक ह्वै । मनु उडुगन न्वप तेज मति ॥छं०॥११८॥

चौसठ खान मारे गए और तेरह हिन्दू सरदार मारे गए। हिन्दू सरदारों के नाम तथा उनका किससे युद्ध हुआ इसका वर्णन।

(१) क्र.-फेरि उपम। (२) मो.-तत्थ। (३) मो.-परैं।
(४) ए.-कृ.-को.-तिन (५) ए.-उक्चार।
(६) ए.-कर। (७) ए. कृ. को.-राइ। (८) मो.-सिरहस, सिरह्सु।
(९) ए. कृ. को.-उपमा सु, उपमा सुइ।

भुजंगी ॥ परे पांन चौसट्ठि गोरी नरिंद । परे सुभर तेरह कहै नाम चंदं ॥
परे लुथ्थिलुथ्थी सु सेना अलुभ्भी । लिपे कंक अंकं विना कौन वुभ्भी॥
छं० ॥ ११९ ॥
पन्यौ गोर जैतं मधिं सेस ढारी । जिनं रापियं रेह अजमेर सारी ॥
पन्यौ कनक आहुट्ठ गोविंद वंधं । जिने मेछकी पारसं सब्ब पद्धं ॥
छं० ॥ १२० ॥
पन्यौ प्रथ्य वीरं रघूवंस राई । जिनें संधि पंधार गोरी गिराई ॥
पन्यौ जैत वंधं सु पावार भानं । जिनें भंजियं मीर बानेति वानं ॥
छं० ॥ १२१ ॥
पन्यौ जोध संग्राम सो हंक मोरी । जिनें कट्टियं वैर गोदंत गोरी ॥
पन्यौ दाहिमो देव नरसिंघ अंसी । जिनें साहि गोरी मिल्यौ षान गंसी॥
छं० ॥ १२२ ॥
पन्यौ वीर वानेत नादंत नादं । जिने साहि गोरी [1]गिल्यौ साहि जादं॥
पन्यौ जावलौ जाल्हते सैन भषपं। हय सार मुप्पं [2]निकस्संत नषयं॥
छं० ॥ १२३ ॥
पन्यौ पाल्हनं बंध माल्हन राजी। जिनें अग्ग गोरी क्रमं सत्त भाजी ॥
पन्यौ वीर चहुआन सारंग सोरं। वजे दोह ग्रैहंज आकास तोरं ॥
छं० ॥ १२४ ॥
पन्यौ राव भट्टी बरं पंच पंचं । जिनें मुक्ति के पंथ चल्लाइ संचं ॥
पन्यौ भान पुंडीर ते सोम कंमं। [1]भिल्ले जुभ्भयं वज्जयौ पंच जंमं ॥
छं० ॥ १२५ ॥
पन्यौ राउ परसंग लहु बंध भाई। तिनं मुक्ति अंसं छिनं मंभि पाई ॥
पन्यौ साहि गोरी भिरे चाहुआनं। कुसादे कुसादे चवै मुष्प षानं॥
छं० ॥ १२६ ॥

दूसरे दिन तत्तार खां का शहाबुद्दीन को विकट व्यूह के मध्य में रख कर युद्ध करना और सामंतों का क्रोध कर के शाह की तरफ बढ़ना।

(१) ए.-मिल्यौ। (२) मो.-तिसकंत। (१) ए.-जिने जुझतें वज्जयो पंच जंमं।

कवित्त ॥ दस हथ्थी सु बिहान। साहि गोरी सुष किन्नौं॥
कर अकास बादी। ततार चवकोद स दिन्नौं॥
नारि गोरि जंबूर। कुहक बर बान अघातं॥
गज्जि भग्ग प्रथिराज। चित्त करयो अकुलातं॥
सो मोह कोह बर बज्जि कों। ञ्ज उन धारय धमसि कैं॥
सामंत सूर बर बीर बर। उठे बीर वर हमसि कौं॥ छं० ॥ १२७॥
अद्ध अद्ध जोजनह। मीर उड़ि संगा केरी॥
तब गोरी सुरतान। रोस सामंतह घेरी॥
चक्क श्रवन चौंडोल। अग्ग [1]सेषन पंचासौ॥
सूरं कोट द्वै जोट। सार मारनह हुलासौ॥
बर अगनि बगी [2]हल्लौ नहीं। पहर कोट सुजोट हुत्र॥
बर बीर रास समरह परिय। सार [3]धार बर कोट [4]हुत्र। छं०॥१२८॥

रसावला॥ मेलि साहं भरं, षग्ग षोखे रुरं। हिंदु मेछं जुरं, मंत जा जंभरं॥ छं० ॥ १२९॥

दंत कढ्ढे करं, उप्पमा उप्परं। केद भीलं जुरं, कोपि कढ्ढे करं॥ छं० ॥ १३०॥

कंध नन्नं धरं, पंष जष्षं फिरं। तीर नंषे करं, मेघ बुट्ठं बरं॥ छं०॥१३१॥

आवधं संभरं, बंक तेगं करं। चंद बीजं बरं, अद्ध अद्धं धरं॥ छं० ॥ १३२॥

बीय बंधं धरं, कित्ति जपै सरं। अस्सु ढुंढै फिरं, रंभ बंछै बरं॥ छं० ॥ १३३॥

थान थांनं नरं, धारधारं तुटं। भंम वांसं छुटं, ... ॥ छं० ॥ १३४॥

साह गोरी बरं, षग्ग षोखे करं। .... ॥ छं० ॥ १३५॥

खुरासान खां का सुलतान के बचन पर तैश में आकर घोर युद्ध मचाना।

(१) ए.-नेषन। (२) मो.-हसौ, हस्यौ। (३) ए.कृ को.-धरि।
(४) ए.-तुव।

कवित्त ॥ पाँ षुरसान ततार । पिष्षि दुज्जन दल अप्पै ॥
वचन स्वामि उर पटकि । हटकि तमची कर नंपै ॥
कजल पंति गज विथुरि । मध्य सैनं चहुआनी ॥
अजै मानि जै रारि । वियस तेरह चपि प्रानी ॥
धामंत फिरस्तन कढ़ि असी । दहति पिंड सामंत भजि ॥
वर वीर भीर वाहन [1]कहर । परे धाइ चतुरंग सजि ॥छं० ॥१३६॥

रघुवंसी के घोर युद्ध का वर्णन।

भुजंगी ॥ पन्यौ रघ्घुवंसी अरी सेन जाड़ी। हतौ वाल वेसं संपं लज्ज डाड़ी ॥
विना लज्ज पप्पै सची ढुंढि पिष्यौ। मनों डिंभरू जानि कै मीन कष्यौ ॥
छं० ॥ १३७ ॥

पन्यौ रूक रिनवट्ट अरि सेन माही । मनो एक तेगं झरी नीर दाही ॥
फिरैं अट्टवट्टे उपम्मान वट्टे । विश्वंकम्म वंसी कि दारुन्न गट्टे ॥
छं० ॥ १३८ ॥

परे हिंदु मेच्छं [2]उलथ्थी पलथ्थी । करैं रंभ भैरं ततथ्थे ततथ्थी ॥
गहे अंत गिद्धं वरं जे कराली । मनों [3]नाल कट्टे कि सोभै दनाली ॥
छं० ॥ १३९ ॥

तुटे एकटं गाढ़ि कै पग्ग धायौ । मनौं विक्रमं राइ गेविंद पायौ ॥
गहै हिंदु हथ्थं मलेच्छं भ्रमायौ । जनौं भीम हथ्थीन उप्पम्म पायौ ॥
छं० ॥ १४० ॥

ननं मानवं जुद्ध दानव्व ऐसौ । ननं इंद तारक्क भारथ्थ कैसौ ॥
झकं वज्जि झंकारयं झंपि उट्ठै । वरं साह पंचं बधं पंच छुट्टै ॥
छं० ॥ १४१ ॥

मनों सिंघ उझ्झै अरुझ्झंत छुट्टै । रनं देव सांई सए आव घुट्टै ॥
घनं घोर ढुंढं उतक्कंठ फेरी । लगै झग्गरैं हंस हज्जार एरी ॥छं०॥१४२॥
तुटै रुंड मुंडं वरं जो करेरी । बरद्दाइ रिझ्झें दुहूं दिन्न भेरी ॥छं०॥१४३॥

(१) ए.-कारह। (२) मो.-उलथ्थी। (३) ए. को.-भाल।

लड़ाई के पीछे स्वर्ग में रम्भा ने मेनका से पूछा तू उदास क्यों है ? उसने उत्तर दिया कि आज किसी को वरन करने का अवसर नहीं मिला।

कवित्त ॥ पच्छै भौ संग्राम । अग्ग अप्छर विचारिय ॥
पुछै रंभ मेनिका । अज्ज चित्तं किम भारिय ॥
तब उत्तर दिय फेरि । अज्ज पहुनाई आइय ॥
रथ्थ बैठि औथांन । सोझतह कंत न पाइय ॥
भर सुभर परें भारथ्थ भिरि । ठाम ठाम चुप जीत सय ॥
उथकीय पंथ हलै चल्यौ । सुथिर सभौ देषीय 'तय ॥छं० ॥ १४४ ॥

रम्भा ने कहा कि इन वीरों ने या तो विष्णु लोक पाया या ये सूर्य में जा समाए।

कुंडलिया ॥ कहैं रंभ सुनि मेंनकनि । ए रहु जिन मत जुथ्थ ॥
अरिय अनंमति जानि करि । जुति आवें ग्रह रथ्थ ॥
जुति आवें ग्रह रथ्थ । ब्रह्म शिव लोकह छंडी ॥
विश्न लोक ग्रह कारै ।भान तन सों तन मंडीं ॥
रोमंचि तिलकं वसि वरी । इंद्र बधू पूजन जही ॥
ओपम्म जोग नन हुअ बहुरि । अब तारन बरहै कही ॥छं०॥१४५॥

हुसैन खां घोड़े से गिर पड़ा, उजबक खां खेत रहा, मारूफ खां, तातार खां सब पस्त हो गए, तब दूसरे दिन सबेरे सुलतान स्वयं तलवार निकाल कर लड़ने लगा।

कवित्त ॥ षां हुसेन ढरि पर्यौ । अस्व फुनि पर्यौ सार बहि ॥
झुझ्झ फेरि सति सीव । षान उजबक्क षेत रहि ॥
षां ततार मारूफ । षान षाना घट घुम्मैं ॥
तब गोरी सु विहान । आइ दुज्जन मुष झुम्मैं ॥

(१) ए.कृ.को.-नथ।

कर तेग कढ़ि 'सुद्दिय सुवर। नहि सुलतानह पन करी॥
अदि हार दीह पलटे सुवर। तवहि साहि फिरि पुक्करी ॥छं०॥१४६॥

सुलतान ने एक बान से रघुवंस गुसाईं को मारा दूसरे से भीम भट्टी को तीसरा बान हाथ का हाथ ही में रहा कि पृथ्वीराज ने उसे कमान डालकर पकड़ लिया।

तब साहिब गोरी नरिंद। सतबान समाहिय॥
पहिल बान वर वीर। हने रघुवंस गुसाइय॥
दूजै बानत कंठ। भीम भट्टी वर भंजिय॥
चाहुआन तिय बान। बान अद्ध धरि रज्जिय॥
चहुआन कमान सु संधि करि। तीय बान हथ हथ रहिय॥
तब लग्गि चंपि प्रथिराज नें। गोरी वै गुज्जर गहिय ॥छं० ॥१४७॥

सुलतान को पकड़ कर और हुसैन खां तातार खां आदि को विजय करके पृथ्वीराज दिल्ली गए। चारों ओर जैजैकार हो गया।

गहि गोरी सुरतान। षान हुस्सैन उपाऱ्यौ॥
षां ततार निसुरत्ति। साहि झारी करि डाऱ्यौ॥
चामर छच रपत्त। बषत लुट्टे सुलतानी॥
जै जै जै चहुआन। बजी रन जुग जुग बानी॥
गज बंधि बंधि सुरतान कों। गय ढिल्ली ढिल्लीन्वपति॥
नर नाग देव अस्तुति करैं। दिपति दीप दिव लोकपति॥
छं० ॥ १४८॥

एक समय प्रसन्न होकर पृथ्वीराज ने सुलतान को छोड़ दिया।

दूहा॥ समै एक षत्ती न्वपति। वर छंड्यौ सुरतान॥
तपै राज चहुआन यौ। ज्यों ग्रीषम मध्यान॥ छं० ॥ १४९॥

(१) मो.-सुद्दिय।

एक महीना तीन दिन क़ैद रखकर नौ हज़ार घोड़े और
बहुत से माणिक्य मोती आदि लेकर
सुलतान को गज़नी भेज दिया।

मास एक दिन तीन। साह संकट में रुंद्धौ॥
करिय अरज उमराउ। दंड हय मंगिय सुद्धौ॥
हय अमोल नव सहस। सत्त सै दिन ऐराकी॥
उज्जल दंतिय अट्ठ। बीस मुर ढाल सु जक्की॥
नग मोतिय मानिक नवल। करि सलाह संमेल करि॥
परि राइ राज मनुहार करि। गज्जन वै पठयौ सुघरि॥छं०॥१५०॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके रेवातट
पातिसाह ग्रहनं नांम सप्तवीसमो प्रस्ताव
संपूरणम्॥ २७॥

अथ अनंगपाल समयौ लिख्यते ।

(अट्ठाइसवां समय ।)

अनंगपाल दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को देकर तप करने चला गया था परंतु उसने पृथ्वीराज से फिर विग्रह क्यों किया, इस कथा का वर्णन ।

दूहा ॥ दिय दिल्ली चहुआन कौं । तूंअर बद्री जाइ ॥
कहौ दंद क्यौं पुक्करिय । फिरि दिल्ली पुर आइ ॥ छं० ॥ १ ॥

अनंगपाल के बद्रिकाश्रम जाने पर पृथ्वीराज का दिल्ली का निर्द्वन्द शासन करना ।

रष्पि वीर प्रथिराज कौं । गौ तीरथ्थह राज ॥
व्यास वचन आनंद सजि । तिहं पुर वज्जन बाज ॥ छं० ॥ २ ॥
जुग्गिनिपुर प्रथिराज लिय । वज्जि न्निघोष सुदंद ॥
अनंगपाल तूंअर बरन । किय तीरथ्थ अनंद ॥ छं० ॥ ३ ॥

यह समाचार देश देशान्तर में फैल गया कि पृथ्वीराज दिल्ली में निर्द्वन्द राज्य करता हुआ स्वजनों को मान देता है और उपकार को न मान कर अनङ्गपाल की प्रजा को बड़ा दुःख देता है ।

पद्धरी ॥ तूंअर नरिंद तप तेज जानि । प्रथिराज व्यास बचनह प्रमानि ॥
न्निमान ग्यान मेटै न कोइ । इंद्रादि अंत कालपंत होइ ॥ छं० ॥४॥
दस दिसा अमिट धरती अकास । [1]चंद्रादि सूर ग्रह ग्रह प्रकास ॥
ब्रह्मा टरंत टारंत काल । राहंत पंच भूते विचाल ॥ छं० ॥ ५ ॥
विष्यात बात दस दिसि कहंत । विथ्थुरी देस देसन तुरंत ॥
अप अप्प आनि दीजै निवास । तूंअर नरिंद परजा निकास ॥छं०॥६॥

(१) ए.कृ.को.-चंद्रमा सूर दिन दिन प्रकास ।

निरदै नरिंद इन विधि विसास। आनंग लोक हिरदै निरास॥
उपगार को न मानै विवेक। संसार माहिं ऐसे अनेक॥ छं० ॥ ७॥

अग्नि, पाहुना, विप्र, तस्कर आदि परदुःख नहीं जानते पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करता है और अनङ्गपाल पराए की भांति तप करता है।

कवित्त॥ तसकर, बेलक विप्प। बैद [1]दुरजन अति लोभी॥
प्राहुन अहि जल ज्वाल। काल न्निप इन में मोभी॥
इन परचिंता नाहिँ। बहुत करि जौपै कहिये॥
[2]अप्प सहज चालंत। चित्त की बात न लहिये॥
प्रथिराज लोक तूंअर घरह। अरुचि दिष्ट मंडै तनह॥
भोगवै धरा जीवत धनिय। संक न कोइ मानै मनह॥ छं० ॥ ८॥

सोमेश्वर अजमेर में राज्य करता है और पृथ्वीराज को दिल्ली मिली यह सुनकर मालवापति महिपाल को बड़ा बुरा लगा।

दूहा॥ संभरि वै सोमेस न्रप। अति उतंग आचार॥
ढिल्ली प्रथि तूंअर दइय। सुन्यौ षिज्यौ महिपार॥ छं० ॥ ९॥

मालवापति ने चारों ओर के राजाओं को पत्र लिख कर बुलाया। गक्खर, गुण्ड, भदौड़ और सोरपुर के राजा आए। सलाह हुई कि पहिले सोमेश्वर को जीत कर तब दिल्ली पर चढ़ाई की जाय।

कवित्त॥ चंदेरी चतुरंग। सैन हय गय पल्लानं॥
ठौर ठौर कग्गदह। दए मालव धरवानं॥
गष्षड़ गुंड भदौड़। सोरपुर सूर समाहे॥

---

(१) ए.-को. जुरजन।
(२) ए.कृ.को.-आप।

मिलि आए महिपाल । अप्प बल सेन उमाहें ॥
एकंत मत्त सोमेस पर । धुर संभरि वै लिज्जिये ॥
प्रथिराज ढुंअर ढिल्ली दिसा । फिरि कलहंतर किज्जिये ॥
छं० ॥ १० ॥

मालवपति का अजमेर पर चढ़ाई करने के लिये सेना सहित चंबल नदी पार होना ।

वर मालव महिपाल । चढ्यौ चहुआन [1]सु उप्पर ॥
सेन सजी चतुरंग । दियौ मेलानह सो पुर ॥
हय गय थट्ट अघट्ट । घाट चंबिल परि आइय ॥
घुरि निसान घमसान । थान थानह हल्लाइय ॥
जादव नरिंद हरिवंस कुल । अति आतुर अजमेर पर ॥
उत्तन्यौ सरित [2]संमित सकल । धुंस धरा रावत्त धर ॥ छं० ॥ ११ ॥

शत्रुओं के आने का समाचार सुन कर सोमेश्वर अपने सामंतों को इकट्ठा करके बोला कि पृथ्वीराज को तो अनंगपाल ने बुला लिया इधर शत्रु चढ़े हैं, ऐसा न हो कि कायरता का धब्बा लगै और नाम हँसा जाय ।

सुनि सोमेसर सूर । चिंति मन मंत उपाइय ॥
वर प्रथिराज नरिंद । अनँगपालह बुलाइय ॥
रज रजपट रक्षियै । राव रावत्तन कीजै ॥
रहै गलह संसार । आव जल अंजुल छीजैं ॥
मो बंस अंस आनल अटल । कोइ न कहो काइर कहिय ॥
अप्पान सुभ्भ संबोधि न्टप । जुद्ध घात [3]पुव्वत लइय ॥छं०॥१२॥

सामंतों ने सलाह दी कि शत्रु प्रबल हैं इससे इनको रात के समय छल करके जीतना चाहिए ।

(१) ए. क. को.-जु । (२) ए.-समंत । (३) ए. कृ. को.-पुस्तक ।

सिंघ पँवार ब्रसिंघ। गौड़ संजम चहुआनं॥
बाहन बीर सधीर। राज गुर राम सुजानं॥
मंत मंति भर अवर। करे समचित्त अनेकं॥
तुम लज्जा धर धीर। बीर बीराधि [1]विवेकं॥
संभरिय सोम पुच्छत वयन। कहिय बत्त सम तत्तकल॥
छल बल अनेक छचिय करन। तुच्छ सत्य पुज्जे न [2]पल॥छं०॥१३॥
दूहा॥ चंद चंद निसि दंद मति। [3]रुतु सरद गुरवार॥
तेरसि तकि सज्यौ सयन। रचि [4]रति बाह बिचार॥छं०॥१४॥

सोमेश्वर ने कहा कि तुम ने नीति ठीक कहा पर रात को छापा मारना अधर्म है इसमें बड़ी निन्दा होगी।

कवित्त॥ रत्ति बाह छल जुद्ध। अध्रम [5]षिची परिमानं॥
[6]कूड़ कपट मारियै। अध्रम निद्रा गति जानं॥
मल मोचन रति रवन। सेन पूजन जल न्हानं॥
मंच जाप जप्पंत। करै नह घात सुजानं॥
तुम मंत तंत संचौ कहिय। इह अध्रम्म ध्रम हारिये॥
जो गिनइ पुरुष निंदा अपर। लह रति बाह बिचारिये॥
छं०॥१५॥

सामंतों ने कहा कि सेतु बांधने में श्रीराम ने, सुग्रीव ने बालि को मारने में, नृसिंह ने हिरण्यकश्यप के मारने में और श्रीकृष्ण ने कंस के मारने में छल किया, इस में कोई दूषण नहीं है।

छल तक्यौ श्री राम। सेत सायर तब बंध्यौ॥
छल तक्यौ सुग्रीव। बालि जिउ ताड़ह संध्यौ॥
छल तक्यौ लछिमना। सूर मंडल अरि बेध्यौ॥
छल तक्यौ नरसिंघ। खग्गकुस नष उर छेद्यौ॥

(१) ए.कृ.को.-बिमेकं। (२) ए.कृ.को.-पक। (३) ए.कृ.को.-रित, रति।
(४) मो.-रवि। (५) ए.कृ.को.-छत्रि। (६) ए.कृ.को.-कूड कूड़।

छल वल करंत दूषन न कोइ। किन्न कन्नह कंसह करिय ॥
सोमेस राज तकि अप्प विधि। रत्तिवाह छल मन धरिय
छं० ॥ १६ ॥

दूहा ॥ ससि निम्मल ससि सूर अप। दिय अस अस्त उतान ॥
प्रथुक जोग जिन साल [1]धर। संजोजन सव्वान ॥ छं० ॥ १७ ॥

सोमेश्वर के सामंतों का युद्ध के लिये तयारी करना।

भुजंगी ॥ ग्रहे सूर सोसेम सा आयुधेसं। इकं सोभई राज जोगिंद भेसं ॥
तजे मोह माया ग्रहन्नी कहन्नौ। तजे बंध पुत्तं हरिं चित्त मन्नौ ॥
॥ छं० ॥ १८ ॥

इकं सामि भ्रम्मं ग्रहे अंग लाजं। * तिनं सस्त्र झल्ले जुधं किति काजं ॥
न काया न कामं धरे रामराजं। हवैं हाक सूरां कपै काइराजं ॥
छं० ॥ १९ ॥

पवं विस्नुकान्ता जलं जान्हवीयं। वपुं उब्बरे कोटि सौ पाप कीयं ॥
वरैं रंभ वामं दुती साम कामं। मनों दाहिनावृत्त धीरंभ रामं ॥
छं० ॥ २० ॥

तिनं सस्त्र हत्थैं जुधं क्रित्य काजं। हुवै हाक सूरं कपैं काइराजं ॥
सुरं द्वादसं आयुधं दंड धारैं। तिनं नाम चंदं सु छंदं उच्चारैं ॥
छं० ॥ २१ ॥

नसी तन्न चंसं ग्रहे सूल पासं। परस्सं असन्नी सकत्ती विकासं ॥
ग्रहे तून तोमार भल्ली क्रपानं। जुधं काज नालीक नाराज जानं ॥
छं० ॥ २२ ॥

सरं चक्क सारंग वज्जं गदायं। दंडं मुद्गरं भिंडिमालं सघायं ॥
हलं मूसलं सेल सावल्ल पग्गं। ग्रहे सूरता अप्प अप्पन्न वग्गं ॥
छं० ॥ २३ ॥

छुरिका कती कन्न वक्री कुंतायं। [2]फलक्कं कनीका भुसुंडी बलायं ॥
लियं संक [3]दुस्फोटकं पारिघायं। पटीसं छतीसं ग्रहे आयुधायं ॥
छं० ॥ २४ ॥

---

(१) मो.-भर।
(२) ए. कृ. को.-पलक्कं।
(३) मो.-दुसोटं।
* यह पंक्ति मो. प्रति में नहीं है।

पट्टन के यादव राजा ने आकर डेरा डाला। अजमेर जीतने का उत्साह जी में भरा था।

दूहा ॥ पट्टन जादव आय नृप। किय डेरा बरवान ॥
सुनि सोमेसर दौरि करि। ज्यों निधि रंक प्रमान ॥ छं० ॥ २५ ॥
अति आतुर अजमेर पहु। आइ कुलिंगन बाज ॥
यों रस रत्ता सूर भरं। मुकत्ति चिया धरि साज ॥ छं० ॥ २६ ॥

चारों ओर खलबली मच गई। रुद्रगण तथा नारद आनन्द से नाचने लगे।

कवित्त ॥ अप्प अप्प मुष अरिन। सूर संमुह झल्लारिय ॥
हाइ हाइ उच्चार। धरनि अंबर लुटि डारिय ॥
चमकि चित्त त्रिपुरारि। अट्ठ गन नारद नंचिय ॥
सेस सटप्पटि सलकि। दिसा दंतिन तन अंचिय ॥
मानों कि जलद तुट्टिय तड़ित। बर पट्टन आहुट्ट भर ॥
रति वाह मात हूं ते दियौ। अगनि सार बुल्यो कहर ॥ छं० ॥२७॥

योद्धाओं की तयारी तथा उनके उत्साह का वर्णन।

रसावला ॥ कढ्ढि षग्गं लगं, आइ जुट्टे अगं। जानि सूर उगं, लग्गि षग्गं बगं॥
छं० ॥ २८ ॥
जानि प्रलै जगं, सामि भ्रम्मं मगं। षंड षंडं अंगं, ओन (१)तुट्टे रगं॥
छं० ॥ २९ ॥
पानि वाहै षगं, सूर साधैं सगं। देषि (२)ताली ठगं, ठाम ठामं ठगं॥
छं० ॥ ३० ॥
डंक्कनीयं डगं, एक एकं दिगं। सूर रोपे पगं, नग्ग मानों नगं॥
छं० ॥ ३१ ॥
सार धारं तमं, जानि ऊर्क अगं। बसं जालंदगं, फुट्टि (३)षोपं षगं॥
छं० ॥ ३२ ॥

(१) ए. क.-बुट्ठे। (२) ए. क. को.-कामी।
(३) मो.-षोपे।

दद्धि मट्टं भगं, हंस उड्डै मगं। मार मारं रगं, मुष्ष बोले दगं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

खट्ट चट्टं परं, लथ्थ वथ्थं भरं। अंत ओनं भरं, जानि पब्बै सरं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

कट्टि षंडं गुरं, हथ्थ जंगं जुरं। जानि षित्ति षलं, चंच गिद्धी पलं ॥
छं० ॥ ३५ ॥

ईस सीसं भलं, माल मध्ये [1]घलं। हूर जहाँ बलं, अंम्भ तुच्छौ कलं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

भूर भूपं मिलं, आयुधं अत्तुलं। .... ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ सार मार मची कहर। दोउ दलनि सिर मंधि ॥
प्रौढ़ा नायक छयल रमि। प्रात न बंछै संधि ॥ छं० ॥ ३८ ॥

सोमेश्वर ने पिछली रात धावा कर दिया शत्रु के पैर उखड़ गए।

कवित्त ॥ सोमेश्वर भजि हूर। हूर उभ्भारिग भरि भरि ॥
सार फुट्टि चहुआन। भिरिय जहाँ भरि लरि लरि ॥
घरी एक तिन रत्त। सार मैगल सिर वुट्टिय ॥
संभर वैर सु आनि। सार भग्गि जु सिर तुट्टिय ॥
भग्गइय हूरमा दुहुं सयन। किह्नि न कोई बर चंपयौ ॥
उप्पारि लियौ अजमेर पहु। दागन [2]किहुं दीयौ गयौ ॥ छं० ॥ ३९ ॥
हथ्थिय ढाल ढलक्कि। घालि लीनौ अजमेरी ॥
परि लंगा लंगरी। सेन दुज्जन दल फेरी ॥
भाग वीर प्रथिराज। अरिन उप्पारि स लीनौ ॥
इन सोमेसर राव। सत्त हथ्थिन बर कीनौ ॥
जिम तिमर हूर भंजै सुभर। गुरु गरुहान न कवि टरै ॥
जब लगै भूमि साइर [3]सुथित। तब लगि कवित सु[4] उब्बरै ॥
छं० ॥ ४० ॥

(१) ए.-धलं, बलं। (२) मो.-किन। (३) मो.-सुमति। (४) मो.-विस्तरै।

संसार में एक मात्र कविकथित यश के अतिरिक्त और कुछ अमर नहीं है।

दूहा ॥ रह्यौ न को रवि मंडलह। रहि कवि मुष्ष सु भल्ह ॥
जीरन जुग पाषान ज्यों। पूर रहंदी गल्ह ॥ छं०॥ ४१॥

यादव राज ऐसा घायल होकर गिरा कि मुंह से बोल न सकता था।

फिरि जद्दव भर देस दिसि। समर घाइ लै सैन॥
अवर चित्त तें अवर परिं। कह्वि न सक्कै बैन ॥ छं०॥ ४२॥

सोमेश्वर उसे घर उठा लाया बड़ा यत्न किया। एक महीना बीस दिन में अच्छे होकर राजा ने आरोग्य स्नान किया। सोमेश्वर ने बहुत दान दिया।

ग्रिह सोमेसर आनि तिन। मास एक दिन बीस॥
रष्षि जतन किय न्हान जब। दियौ दान सु जगीस॥ छं०॥ ४३॥

पृथ्वीराज ने यह समाचार सुना। उसने प्रतिज्ञा की कि जब घात पाऊंगा शत्रुओं को मजा चखाऊंगा।

सुनिय [1]बत्त प्रथिराज न्रप। चिंति भविषषत बत्त ॥
अरियन तौ आहोड़ियै। जो लब्भौ घत्त ॥ छं०॥ ४४॥

इधर दिल्ली की प्रजा ने बद्रिकाश्रम में अनङ्गपाल, के पास जाकर पुकारा कि महाराज चौहान के अन्याय से हम लोगों को बचाइए।

कवित्त ॥ अनँगपाल प्रज लोक। जाइ बद्री [2]पुकारिय ॥
हम तुम सेवक सामि। छंडि ग्रह राज निकारिय ॥
नहि अदब मन्नयौ। क्रूर मचौ चहुआनं ॥

(१) मो.-षबर। (२) मो.-पुकारयं, निकारय।

हो अनंगेस नरेस । गई ढिल्ली धर जानं ॥
जा जियत राज धर पर बसिय । नीति न्याय न प्रकासियै ॥
नर नाग देव निंदैं सकल । न्रिप करंत तहँ वासियै ॥ छं० ॥ ४५ ॥

अनङ्गपाल ने क्रुद्ध होकर अपने मंत्री को बुलाकर समाचार कहा । मंत्री ने कहा कि पृथ्वी के विषय में बाप बेटे का विश्वास न करना चाहिए ।

सुनिय तेज आजुल्य । दूत परधान पठाइय ॥
हम भँडार धर धान । द्रब्ब सब्बह भरि लाइय ॥
व्यास वचन संभारि । कहै तब मंत्री पुच्छह ॥
देस ऋपी धन आदि । राज ग्रह्यो गढ़ सब्बह ॥
न्रिप सेव देव दुज्जन उरग । इन ढिल्लै नन मुक्कियै ॥
बर बंध पुत्त अरु तात न्रप । इन विसास धर चुक्कियै ॥ छं० ॥ ४६ ॥

राज्य प्राप्त करने के लिये गत ऐतहासिक घटनाओं का वर्णन।

धर काजैं कौरवन । पंड जानिय न [1]बंध गति ॥
धर काजैं [2]दसग्रीव । बंध बंध्यौ भभिषन मति ॥
धर काजैं नल राइ । बंधवन षेत न अप्पौ ॥
धर काजैं बलि राइ । देव देवाधि उथप्पौ ॥
धर काज मुंज त्रिय के कहे । भोज प्रहारन मत कियौ ॥
धर काज कान्ह तूंअर अधम । पुत्तह सै सुष [3]विष दियौ ॥छं०॥४७॥

तूंअर वंश ने सर्वदा भूल की, पहिलें किल्ली को उखाड़ा फिर आपने पृथ्वीराज को राज्य दिया ।

दूहा ॥ तुम तूंअर मति चूकना । करि किल्ली ढिल्लीय ॥
फुनि मत अप्पन ही करिय । प्रथीराज धर दीव ॥ छं० ॥ ४८ ॥

राजा हाथी घोड़ा स्वर्ण इत्यादि सब दे दे परंतु राज्य की सर्प मणि के समान रक्षा करे ।

(१) मो.-बेध । (२) मो.-दशशीश । (३) मो.-बासि ।

राज दान गज तुरिय [1]द्रव्व। देत न लग्गे बार ॥
धरतिय रष्षन यौ सुहद। अहि मनि रष्षन हार ॥ छं० ॥ ४९ ॥

अनङ्गपाल के आग्रह करने पर मंत्री लाचार होकर दिल्ली की ओर चला।

मंत्रि सु मंतह सीष लै। चलि दिल्लिय चहुआन ॥
आइस कौं जोइस का हा। [2]इह भ्रत भ्रम्म प्रमान ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज से मिलकर मंत्री ने कहा कि अनङ्गपाल आप पर अप्रसन्न हैं उन्होंने आज्ञा दी है कि हमारा राज्य हमें लौटा दो या हम से आकर मिलो।

चंद्रायना ॥ मिल्यौ न्रिपह सोमंत बसीठ जु मुक्कल्यौ ॥
सा चहुआनह पास नरिंद सु इक्कल्यौ ॥
षिज्यौ अनंग नरिंद भूमि हमहीं तजौ ॥
कै मिलौ आइ चहुआन सुबुद्धिय मंत जौ ॥ छं० ॥ ५१ ॥

इस पर पृथ्वीराज का क्रोधित होना।

बोल्यौ हंकि नरिंद बसीठ जु दुब्भ्यौ।
तब कमधज्ज नरिंद न उत्तर संभर्‍यौ ॥
बात अनंकन कीन हीन हुइ उठ्ठयौ।
झंपि सुहद्दिय हथ्थ बीर बर दुट्ठयौ ॥ छं० ॥ ५२ ॥

वसीठ का कहना कि जिस का राज्य लिया आप उसी पर क्रोध करते हैं।

दूहा ॥ उथ्यौ बीर बसीठ बल। करि जुहार चहुआन ॥
धनी उभै धर लुट्टियै। इह अचिज्ज परिमान ॥ छं० ॥ ५३ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि पाई हुई पृथ्वी कायर छोड़ते हैं।

(१) मो.-ब्रर। (२) मो.-भ्रत्त भ्रम्म सुप्रमान।

कवित्त ॥ रे वसीठ मति [1]ढीठ । बोल बोलै मतिहीना ॥
मनेपाल उप्पनं । किनें सक्कर [2]पय दीना ॥
[3]धर कर छुट्टी संगि । हथ्थ चढ्ढे मरदाना ॥
फिरि वंछै जो मूढ़ । होइ ताही जिय ज्याना ॥
लठ्ठीय बुद्धि नठ्ठिय न्त्रपति । तुम [4]विमत्ति दिन लहि कहिय ॥
उग्गमै सूर पच्छिम [5]अरक । तौ दिल्ली धर तुम नहिय ॥छं०॥५४॥

मंत्री का यह सुनकर उदास मन हो चला आना ।

दूहा ॥ सुनि यह वत्त सो दूत चलि । विन आदर मन मंद ॥
हीन दीन दिष्यत इसौ । मनौं कि [6]वासर चंद ॥ छं० ॥ ५५ ॥

मंत्री ने अनङ्गपाल से आकर कहा कि मैंने तो पहिले ही कहा था, यह दैत्यवंशी चौहान कभी राज्य न लौटावैगा। पृथ्वी तो आप दे चुके अब वात न खोइए।

कवित्त ॥ [7]तुंअर वीर वसीठ । सामि संदेस सु अष्पिय ॥
तुम हड्डन कुसल । वत्त पहिलें हम भष्पिय ॥
वह वलिष्ठ दैवान । दैत्यवंसी चहुआनं ॥
सूज अग्र उप्परै । देय नह तास प्रमानं ॥
तुमं दई भूमि निज हथ्थ करि । अथ्थ मित्त नन योइये ॥
संभरहि देस देसन न्त्रपति । तौ हड्डत्त विगोइये ॥ छं० ॥ ५६ ॥

अनङ्गपाल ने एक भी न माना और वह सेना सज कर दिल्ली पर चढ़ आया। पृथ्वीराज नाना की मर्याद को सोचने लगा और उसने कैमास को बुला कर पूछा कि मेरी सांप छछूंदर की गति हुई है अब क्या करना चाहिए।

(१) दीठं, ढाठं, धठि । (२) ए.-पर । (३) मो.-धर कर सेगिय बुद्धि ।
(४) ए. कृ. को.-विपति । (५) ए. कृ. को. परक ।
(६) ए. कृ. को.-वासुर । (७) मो.-तोअर ।

अनगपाल न न मानि। कूंच किन्नौ दिल्लीय दिसि॥
भूत [1]भविष जानौ न। किये रत्तेत नयन [2]रिस॥
अप्प सेन सजि जूह। आइ ढिल्ली धरवानं॥
मात पिता मरजाद। चिंत लग्यो चहुआनं॥
कैमास मंत पुच्छ्यौ नृपति। कहौ कहा अब किज्जिये॥
अहि ग्रहिय छछुंदरि जो तजै। नैन जठर भषि छज्जिये॥छं०॥५७॥

जो लड़ाई करता हूं तो अपनी मा के पिता (नाना) से लड़ता हूं और जो छोड़ देता हूं तो अपनी हीनता प्रगट होती है, सो अब क्या न्याय है इस पर तुम अपना मत दो।

दूहा॥ जो मारौं तौ मातपित। छंडौ तौ बल हानि॥
कहि मंचौ मंत्र गपति। न्याय रीति विधि जानि॥ छं०॥ ५८॥

कैमास ने कहा कि न्याय तो यह है कि कलह न कीजिए, इन्होंने पृथ्वी दी है इनको आप न दीजिए, जो न मानैं यहीं आकर भिड़ैं तो फिर लड़ना चाहिए।

कवित्त॥ सुनौ नृपति चहुआन। न्याय तौ कलह न किज्जे॥
इन दीनी धर अप्प। अपप तौ इनह म दिज्जे॥
जो न्रिमान प्रमान। होइहै सोइ नियानं॥
जब लग्गौ गढ़ आइ। आइ तब जुद्ध जुरानं॥
सजि कोट ओट सामंत सथ। नारि गोर जंबूर वहि॥
लग्गै न जोर छिज्जै सुभर। इत सामंत लगंत नहि॥ छं०॥ ५९॥

अनंगपाल ने धूमधाम से युद्ध आरम्भ किया। कई दिन तक लड़ाई हुई अन्त में अनंगपाल की हार हुई।

(१) ए. कृ. को.-भवष। (२) मो.-रस।

अनंगपाल दल मंडि। सुभर ढिल्ली गढ़ लग्गा ॥
सेह सेतु करि दौरि। अप्प वर अप्प विलग्गा ॥
नारि गोरि आतस्स। कोट पारस भर घाइय ॥
जे भर मंडे आइ। सोर करि मोर उठाइय ॥
लग्गौ न घात तूंअर न्रपति। दिवस च्यार मंडिय ररिय ॥
पुच्यौ न प्रान पानप घटत। दिल्ली धर ढिल्ली करिय ॥ छं० ॥ ६० ॥

हार कर अनंगपाल का फिर वद्रीनाथ लौट जाना।

चौपाई ॥ दीह च्यारि ढिल्ली न्रप भारी। वर चहुआन संमुहै धारी ॥
गोतं चर फिर रावर छंडिय। वद्री छोर सरन ग्रह मंडिय ॥छं०॥६१॥

आधी सेना को वहीं और आधी को अजमेर के पास छोड़ कर अनंगपाल लौट गया।

अनगपाल पंडिय गयौ। सैन सु बंधिय थट्ट ॥
अद्ध सेन अजमेर पर। [१]टारे हथ्थ सुभट्ट ॥ छं० ॥ ६२ ॥

मंत्री सुमन्त की सलाह से अनङ्गपाल ने माधो भाट को सुलतान शहाबुद्दीन गोरी के पास सहायता के लिये भेजा।

वीर वसीठ सुमंत मिलि। स्वामि वचन [२]समुझाइ ॥
मतौ मंडि चहुआन कौ। माधो भट्ट चलाइ ॥ छं० ॥ ६३ ॥

माधो भाट जाकर सुलतान से मिला, वह तुरन्त पृथ्वीराज को जीतने की इच्छा से चढ़ चला।

माधो भट्ट सु मुक्कल्यौ। मिल्यौ आइ सुलतान ॥
चल्यौ साहि गोरी सुवर। मिलि बंधन चहुआन ॥ छं० ॥ ६४ ॥
तूंअर अरु चहुआन के। [३]घर बज्यौ बहु दंद ॥
माधौ भट्ट सु मुकल्यौ। वर गज्जनै नरिंद ॥ छं० ॥ ६५ ॥

(१) मो.-टारिग। (२) मो.-मम काय। (३) कृ.-वर।

नीतिराव खत्री ने अनङ्गपाल के गोरी के पास दूत भेजने का समाचार पृथ्वीराज को दिया।

नीति 'राव षिचौ सुबर। तूंअर तिहि परधान ॥
गोरी दिसि न्रप अप्प दिसि। भेद दियौ चहुआन ॥ छं० ॥ ६६ ॥
अनंगपाल मान्यो नहीं। बरजिय पंडि नरिंद ॥
तूंअर अरु चहुआन कै। रहै न एकै बंध ॥ छं० ॥ ६७ ॥

पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल से दूत भेज कर कहलाया कि आप को पृथ्वी देने ही के समय सोच लेना था अब जो हमने हाथ फैलाकर ले ली तो फिर क्यों ऐसा करते हैं?

कवित्त। दई भूमि मागिंत्त। लई हम हथ्थ पसारह ॥
सो पाछो फिर किम सु। बोल बोलहु अविचारह ॥
तुम बिरद्ध तप जोग। राज चाहौ सु करन अब ॥
दयौ राज तुम हमह। कहा उपजौ चित्तह तब ॥
मंगौ जु आइ फिरि भूमि तम। सोव राज पाओ नहीं ॥
जो गयौ अंत चलि ग्रेह जम। कहौ सु फिरि आवै कहीं ॥ छं० ॥ ६८ ॥

जैसे बादल से बूंद गिर कर, हवा से पेड़ के पत्ते गिर कर, आकाश से तारे टूट कर फिर उलटे नहीं जा सकते, वैसेही हमें पृथ्वी देकर इस जन्म में आप उलटी नहीं पा सकते, आप सुख से बद्रिकाश्रम में जाकर तपस्या कीजिए।

जलद बूंद परि धरनि। कबहुं जावै न नभ्भ फिर ॥
पवन तुट्टि तरु पत्त। तरु न लग्गै सु आइ थिर ॥
तुटि तारक आकास। बहुरि आकास न जाओ ॥
सिंघ उलंघि सवलह। सोइ फुनि इनि नह पाओ ॥

(१) ए.-तत्त। (२) मो. को .-जम्म।

अप्पिअ सु पहुमि तुम उदक सह । सो पाञ्चो दूजै जनम ॥
तप्पौ सु जाइ बद्री तपह । मत विचार राजस मनम ॥ छं० ॥ ६९ ॥

आप सुलतान गोरी के भरमाने में न आइए, उसे तो हमने कई बार बाँध बाँध कर छोड़ दिया है।

तुम गोरी पतिसाह । कहैं जिन [1]मत भरमावहु ॥
सत्त ध्रंम साहस्स । काइ पर कहैं गमावहु ॥
सामंतनि सुलतान । वार बहु गहि गहि छंडयौ ॥
उन अपत्ति के सथ्थ । सपति तुम मंत्त सु मंड्यौ ॥
जिम लग्गि जह्लँ विधवा चरन । अप समान होवन कहै ॥
संगौ सु द्रव्य कारन स भ्रम । कछू अप्प चित्तह चहै ॥ छं० ॥ ७० ॥

हरिद्वार में आकर दूत अनंगपाल से मिला। सँदेसा सुनते ही अनंगपाल क्रोध से उछल उठा।

अरिल्ल ॥ सुनि सु दूत आयौ हरद्वारह । कथ्यि अनग सम सकल विचारह ॥
सुनत श्रवन अति रोस [2]झुकित मनु । जिम सु सिंघ दुक्कत कुलिंग जनु ॥ छं० ॥ ७१ ॥

अनंगपाल ने क्रुद्ध होकर पत्र लिखकर दूत को ग़ज़नी की ओर भेजा। पत्र में लिखा कि आप पत्र पाते ही आइए हम और आप मिलकर दिल्ली को विजय करें।

कवित्त ॥ अनँगपाल झुकि आप । दूत ढिँग हुंते साह जे ॥
तिनहि कह्यौ तुम जाइ । कहौ साहब खिप्पौ ते ॥
दिय पत्र [3]तिन हथ्थ । धरा देत न चहुआनह ॥
तुम आवहु चढ़ि अतुर । कूंच पर कूंच मिलानह ॥
मिलि अप्प एक एकह सुमंति । लरि सु लेंहि दिल्लिय धरा ॥
तुम मत्त छंडि तप बद्रिवर । अब सु पाँइ हप्पें धरा ॥ छं० ॥ ७२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-मन। (२) ए. कृ. को.-दुक्कत। (३) ए. कृ. को.-झुनि।

दूत ने आकर अनंगपाल के राज्यदान करने फिर उसे लौटाना चाहने तथा पृथ्वीराज के अस्वीकार करने अनंगपाल के हरिद्वार आने का समाचार सुलतान को सुनाया सुलतान सुनते ही चढ़ चला।

गए दूत गज्जनै । साहि सम बत्त बदै वर ॥
तप सु छंडि तोंवरह । आइ हरद्वार जियन घर ॥
पहुमि मंडि प्रथिराज । राज अप्पै न इक्क तिल ॥
दैवादर चढ़ि साहि । भूमि लिज्जै सु उभय मिलि ॥
सुनि साह घाव नीसान किय । चल्यौ सेन चतुरंग सजि ॥
हय गय समूह साकति सकल । अनंगपाल साहस कज ॥छं०॥७३॥

सुलतान शाहबुद्दीन की सेना की चढ़ाई तथा सरदारों का वर्णन ।

चढ़त साहि साहाव । चल्यौ तत्तार खान वर ॥
षान षान [1]षुरसान । षान मारुफ महा भर ॥
काजिम षान कमाम । मीर [2]नासेर अभंगह ॥
अलूषान आलील । चढ़िय हय गय चतुरंगह ॥
सथ सयन सकल सारह [3]लष । उभय सहस मत मत्त इभ ॥
नीसान बज्जि नौवति निहसि । रहे गज्ज घर पुर सु नभ ॥छं०॥७४॥

छंद लघुनाराच ॥ चल्यौ सहाव सज्जियं । निसान जोर बज्जियं ॥
मिले [4]सु साह उम्मरं । सजे अनूप संमरं ॥ छं० ॥ ७५ ॥
गयंद मद गंधयं । सुभै न राह अंधयं ॥
पगं ठिलै पहारयं । नमं परं निहारयं ॥ छं० ॥ ७६ ॥
सकाज बाज साजयं । कुरंग देषि लाजयं ॥
अनूप चाल उज्जवै । सहूर चित्त रिझवै ॥ छं० ॥ ७७ ॥

(१) ए.-पुरसेंम । (२) ए. कृ. को.-नासेंन।
(३) ए.-लष, छक्षि । (४) ए. कृ. को.-सु ।

रजोद मोद उप्पली। सपूर सूर पप्पली॥
रिधें सु माहि आतुरं। कंपें सु अंग कातरं॥ छं०॥ ७८॥

लगन्न छीन उल्लहं। पँड़े जु दूरि दुल्लहं॥
न आन पान जानयं। उड़ान ज्यों सिँचानयं॥ छं०॥ ७९॥

करंत दल्लगारयं। सु आप सिंधु पारयं॥ छं०॥ ८०॥

सिन्धु पार उतरकर, बीस हजार सेना साथ देकर सुलतान ने तातार खां को अनंगपाल को लाने के लिये हरिद्वार भेजा। तातार खां के आने का समाचार सुनकर अनंगपाल बड़े हर्ष से उससे मिला।

कवित्त॥ सिंधु उतरि सुरतान। कह्यौ सम पान ततारह॥
तुम अनगेसह लैन। जाहु जँह तँह हरिद्दारह॥
सहस बीस लै सेन। अनँग सम मिलिय सोनपुर॥
बिलम करहु जिन बहुत। अभँग सजि आवहु आतुर॥
करि नवनि षान तत्तार चलि। पहुँच्यौ हरद्दारह सहर॥
करि पवरि तत्र अति प्रीत तन। मिल्यौ राज अनगेस वर॥
छं०॥ ८१॥

अनंगपाल ने बहुत से घोड़े मोल लिये और सेना भरती करके लड़ाई की तयारी की।

दूहा॥ तहँ तोंअर अनगेस नृप। लए मोल बहु बाज॥
उभय सहस सेना सजित। रचिय सुभर किय साज॥ छं०॥ ८२॥

तीन सौ वीर जो अनंगपाल के साथ वैरागी हो गए थे वे भी तलवार बांध कर लड़ने के लिये तयार हुए।

सत्त तीन भर सुभर जे। निज वैराग सरूप॥
तिन बंधी तरवार फिरि। बदलि भेष बहु रूप॥ छं०॥ ८३॥

तातार खां ने रात भर रहकर सबेरे उठते ही अनंगपाल के साथ कूच किया। अनंगपाल को दो योजन पर रोक कर आगे से बढ़कर उसने सुलतान को समाचार दिया, सुलतान आकर अनंगपाल से मिला, दोनों एक साथ बड़े प्रेम के साथ सलाह करने लगे।

कवित्त ॥ मिले षान तत्तार। बत्त मत तत्त रत्त बर ॥
दै निसान पहु फटत। चले पुर सोन उभै भर ॥
भए साह दल निकट। रषि जोजन जुग अंतर ॥
दई षबरि सुलतान। चल्यौ साहाब समंतर ॥
दस कोस अग्ग अनगेस कहूं। मिल्यौ जाइ साहिब सुहित ॥
बैठे सु उतरि अति प्रीति पर। भनहु उभै जन इक्क चित ॥छं०॥८४॥

अनंगपाल ने सब वृत्तान्त सुनाया, दोनों की सलाह हुई कि जो पृथ्वीराज आप आकर हाजिर हो जाय तो उसे जीव दान करना चाहिए। सुलतान ने दूत के हाथ पृथ्वीराज के पास पत्र भेजा कि तुम बड़ा अनुचित करते हो जो राजा को राज नहीं सौंप देते और जो पृथ्वी न लौटाओ तो आकर युद्ध करो। पृथ्वीराज ने कहा कि ऐसी कोटि चढ़ाई क्यों न करै अनंगपाल अब राज्य उलटा नहीं पा सकता।

पद्धरी ॥ सुरतान समिखि न्रप अन्नगेस। किय अनग समह पतिसाह पेस ॥
गज पंच मत्त पंचास बाज। साकत्ति सज्जि दिय अनगराज ॥
छं० ॥ ८५ ॥
किरवान [1]तोन कम्मांन एक। सिरपाव स्वातसुत माल मेक ॥
दै प्रीति चढ़े निस्सान पाव। आए सु सोनपुर उभै ठाव ॥छं०॥८६॥

(१) ए.-तीन, संमान, सामान।

मिलि साह अनग बैठे सुमत्त। तत्तार पानपाना सुचित्त॥
कहि अनगपाल न्रप पुत्र कथ्थ। चहुआन मन न मानै समथ्थ॥
छं० ॥ ८७ ॥

जंपै सु साह चढ़ि चलौ प्रात। भंजे सु जुग्गनिय पुरह जात॥
जो मिलिह अप्प चहुआन आनि। दीजै तौ उभय मिलि प्रान दान॥
छं० ॥ ८८ ॥

मंनी सु राज अनगेस मन्न। उच्चन्यौ तांम तत्तार पन्न॥
देयो सु अप्प दूतह पठाइय। लिष्यौ सुवत्त सम विषम दाई॥
छं० ॥ ८९ ॥

चर चारु चाहि हक्कारि लीन। लिपि तत्त पत्त तिन हथ्थ दीन॥
अनगेस पुचि सुत तुम्म अप्प। तुम समपि राज गय बद्रि तप्प॥
छं० ॥ ९० ॥

करि तप्प आइ फिरि अन्नगेस। दिज्जै सु इनहि हय गय सु देस॥
आनौ न चित्त चहुआन और। जग्गें सु सामि न विरस्त चौर॥
छं० ॥ ९१ ॥

भुगईं न जाइ पर खेइ वस्त। समपौ सुराइ आनग समस्त॥
गो चार पहर चारै सु गोइ। कवहूं न धेन वर धनी होइ॥छं०॥९२॥
थनवार अम्ब सौंपैं सु राज। ना होइ ओय पति तास वाज॥
कासनी छप्पि रष्यौ सुभाय। तिन भोग सुभर रावर (१)सुभाय॥
छं० ॥ ९३ ॥

अप्पौ सु देस अनगेस रस्स। जिन करौ अप्प मझ्झह विरस्स॥
भयें विरस सुष्य पावै न कोइ। हम देत सीष तुम हितू होइ॥
छं० ॥ ९४ ॥

भये वीरस सुष्य कह भयौ पंड। कुल सकल नास भौ वप्पु पंड॥
अप्पौं न भूमि जो जीय सुद्ध। तो सजहु आनि इन समहि जुद्ध॥
छं० ॥ ९५ ॥

ढिय पच दूत प्रथिराज जाइ। सुनि श्रवन अप्प बहु दुष्ष पाइ॥
अनगेस राज सुलतान जोर। ऐसे जु सजै कोटिक ओर॥छं०॥९६॥

(१) मो. सुजाय।

पावै न तज दिल्ली सु थान। रुकि राव घाव कीनौ निसान॥
छं० ॥ ९७ ॥

पृथ्वीराज ने डङ्के पर चोट लगा कर सब सरदारों के साथ कूच किया और दो योजन पर डेरा डाला।

गाथा॥ रुकि किय घाय निसानं। चढ़ि प्रथिराज वाज साजेयं॥
सब सामंत समेतं। दिय डेरा सु दोइ जोजनयं॥ छं० ॥ ९८ ॥

दूत ने आकर पृथ्वीराज के चढ़ने का समाचार सुलतान से कहा। जो सब सरदार विरक्त हो गए थे वे भी स्वामि के काम के लिये लड़ने को प्रस्तुत हुए।

दूहा॥ देषि दूत गये साहि ढिग। कही षबरि प्रथिराज॥
चढ्यौ सूर सँभर धनी। हय गय दल बल साज॥ छं० ॥ ९९ ॥
सामंत सूर समस्त वर। भय संसार विरत्त॥
स्वामि ध्रम्म साधन सु वर। मरन लरन मन रत्त॥ छं० ॥ १०० ॥

सुलतान ने दूत से समाचार सुन कर चढ़ाई का हुक्म दिया।

अरिल्ल॥ संभलि बत्त [1]चरं [2]सुलतानं। निहसे [3]बज्जि सु बीर निसानं॥
भयौ हुकुम साहाव अमानह। सजहु अमीर उमरा षानह॥
छं० ॥ १०१ ॥

पृथ्वीराज के चरों ने सुलतान के कूच का समाचार पृथ्वीराज को दिया जिसे सुनते ही वह भी लड़ाई के लिये चल पड़ा।

दूहा॥ चर सु दिष्षि चहुआन कै। साह षबरि कहि राज॥
सुनत राज प्रथिराज बर। चढ्यौ जुद्ध कज साज॥ छं० ॥ १०२ ॥

धूमधाम के साथ पृथ्वीराज सेना के साथ चला, जब दोनों सेनाएं एक दूसरे से दो कोस पर रह गईं तब पृथ्वीराज ने डङ्के पर चोट दी।

(१) ए.-बरं। (२) क्र. ए.-सुरतानह, निसानह। (३) मो.-बज्जे।

चोटक ॥ सजि साज चल्यौ प्रथिराज वरं। सत सामत सूर सपूर भरं॥
विरदैत महावर बीर वली। तिन सौं किन जात न रार कली॥
छं० ॥ १०३॥
[1]परसें भिरि भारथ पारथ से। न वदें अप जपर आनन से॥
जुध कौं तिनके मुष कौंन जुरे। न मुरें मुप धार अनी सुमुरे॥
छं० ॥ १०४॥
सजि साहन सेंन हजार दसं। रह सेर सवान सु बीर रसं॥
गज [2]सत्त दसं मुर मत्त गजै। तिन देषि बंध्याचल पन्न लजै॥छं०॥१०५॥
घमके घन घुघ्घर घंट वनं। भननंकत भौरनि झौर भनं॥
गति देषि तुरंग कुरंग दुरें। तिन केउर अठ्ठन कोट परें॥छं०॥१०६॥
चहुआन चल्यौ चतुरंग दलं। सजि भैरव भूत विनाल वलं॥
चर चौसठ जुग्गिनि सथ्थ चलीं। किलकैं करि भारथ बैर रली॥
छं० ॥ १०७॥
चमकंत सनाह सु जोति इसी। सु करं मधि मूरति बिंव जिसी॥
सजि टोप रंगावलि [3]हथ्थ लयं। बनि राज सु [4]पष्षर सा [5]वलयं॥
छं० ॥ १०८॥
दोइ कोस रह्यौ विच साहि दलं। चहुआन निसान वजे सवलं॥
छं० ॥ १०९॥

पृथ्वीराज के पहुंचने का समाचार सुनते ही सुलतान ने अपने सरदारों को भी बढ़ने का हुक्म दिया।

दूहा ॥ सजि आयौ चहुआन जुध। सुन्यौ श्रवन पतिसाहि॥
हुकम षान उमरान हुअ। सज्यौ अंग सन्नाह॥ छं० ॥ ११० ॥

आगे तातार खां को रक्खा, मारूफ खां को बाईं ओर और खुरासान खां को दाहिनी ओर अनंगपाल को बीच में करके पीछे आप हो लिया।

(१) मो.-परसें। (२) ए. कृ. को.-सत्त मुरं मदमत गजै।
(३) ए.-हाथ। (४) मो.-परकर। (५) मो.-बनयं।

गाथा ॥ सुष्प सु रिग्घी ततारं । बांई दिसा षान मारूफां ॥
दाहिन षां षुरसानं । मद्धि अनगेस पुट्ठि साहावं ॥ छं० ॥१११॥

पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना की व्यूह रचना की। आगे कैमास को और पीछे चावंडराय को कर दिया।

सजि ठट्ठौ सुलतानं । सुनि चहुआन अप्प व्यूहानं ॥
सुष कीनौ कैमासं । चावँडराइ पुच्छ सज्जायं ॥ छं० ॥ ११२ ॥

अपनी सेना को बीच में रक्खा और आज्ञा दी कि अनंगपाल को कोई मारे नहीं, जीते ही पकड़ना चाहिए।

दूहा ॥ मद्धि फौज प्रथिराज रचि । कह्यौ सु कर करि उच ॥
अनंग राज जीवत [१]गहौ । इह सु रची परपंच ॥ छं० ॥ ११३ ॥

दोनों दलों का सामना हुआ कैमास ने युद्धारम्भ किया।

जिन सु हनौ अनगेस जिय । गहौ सु जीयत [२]सास ॥
दूतें दुदल दिठ्ठाल भय । लई बग्ग कैमास ॥ छं० ॥ ११४ ॥

दोनों दल का सामना होते ही घमसान युद्ध होने लगा।

विहु दल बल सिंधू बजै । उपजत सूर उहास ॥
[३]घोहनि पर नष्यौ षयंग । करि कलकौ कैमास ॥ छं० ॥ ११५ ॥

कैमास ने शस्त्र संभाल कर युद्धरम्भ किया। युद्ध का वर्णन।

भुजंगी ॥ लई षग्ग कैमास बीरं अभानं । धमंके धरा गोम गज्जे गुमानं ॥
उतें उप्परी बाग तत्तार षानं। मिले हिंदु मीरं दोऊ दीन मानं ॥
छं० ॥ ११६ ॥
[४]बजे राग सिंधू सु मारु अवग्गे । गजै सूर सूरं असूरं सु [५]भग्गे ॥
चढ़े व्योम विम्मान देषंत देवं । वढ़ै स्वामि कज्जै सु सज्जै उमेवं ॥
छं० ॥ ११७ ॥

(१) ए. कृ. को.-गहैं गहै। (२) मो.-साह। (३) ए. कृ. को.-घोहनि।
(४) ए. कृ. को.- वज्जे। (५) ए. कृ. को.-भज्जे।

छुटे नाल गोला हवाई उछंगं। [1]न पिच्छ मनों जानि [2]तुट्टे निषंगं॥
कर्ष्यं चले बान वालं कमानं। भई अंध धुंधं न [3]सुभभैति भानं॥
छं० ॥ ११८ ॥

मिले सेल मेलं समेलं अपारं। सनाहं फटें छोय छोवत्त पारं॥
मर्द मत्त दंतं उपारैं मसंदं। मनों भिल्लिया पत्र उप्पालि कंदं॥
छं० ॥ ११९ ॥

लगै नाग नागं सुपी सूर ऐचैं। हथन्नापुरं जानि बलिभद्र पैचैं॥
झरं ओझरं झार झारं झनंकै। करै गज्ज चिक्कार [4]ताजी किनंकै॥
छं० ॥ १२० ॥

छत्रं पूरनं जाम मध्यान जंची। मिले दिट्ठ तत्तार आनंग मंची॥
चलै मातुलं चोर हक्कै कमासं। हन्यो पान पग्गं पहुंचे रहासं॥
छं० ॥ १२१ ॥

तकै तूंवरं पै लयौ गज्ज राजं। धपे दाहिमा पागरा छंडि बाजं॥
जरी सेल गाढ़ी विचं [5]पीलवानं। वियो घाव कीयौ सु कड्ढै कृपानं॥
छं० ॥ १२२ ॥

कटी दंत लौ सुंड लोही भभक्कै। मनों सारदा कंदरा थी उवक्कै॥
पऱ्यो कज्जलं कूट ज्यौं तूटि हथ्थी। तजे तूंअरं भज्जिगे सव्व सथ्थी॥
छं० ॥ १२३ ॥

भगंदंत वालौ किधौं सु प्रतीकं। महा दिघ्घ कायं अरज्जुन्न भीकं॥
दवी द्वादसं कोस भू घंट मद्दे। पढ़े वेद वानी पुरानं प्रसिद्दे॥
छं० ॥ १२४ ॥

पऱ्यौ दाहिमा भौम ज्यौं गोल कूंडै। घटो कल्ल पथ्थं न सथ्थं उमंडै॥
अलुभ्यो पगं अग्ग में इभ्भ राजं। हरी जेम कूदे करी मथ्थ गाजं॥
छं० ॥ १२५ ॥

किलावा रह्यौ पग्ग में लग्ग पासी। ग्रह्यौ जीवतौ वद्रिकाश्रम्म वासी॥
सनद्धं रहि कढ्ढियं अद्ध विद्धी। चढ़ी हथ्थ दिल्ली न कारज्ज सिद्धी॥
छं० ॥ १२६ ॥

(१) ए. क. को.-नछत्रं। (२) मो.-छूटे। (३) ए. कृ. को.-सुझ्झेसु।
(४) मो.-बाजी (५) सो क.को.-पति।

उभै मीत मानौ रहे लग्गि छत्ती। पछैं भौर सामंत की आइ पत्ती ॥
षुरासान मारूफ तत्तार जोरी। करें एक फौजं धप्पौ साहि गोरी ॥
छं० ॥ १२७॥

इत चहुआनं भुजा के भरोसैं। मनों [1]लंघनो सिंघ तुट्टो सरोसैं ॥
[2]गढ़ं इंदपथ्थं सु हायं सु कज्जें। उभै दीन जुट्टे करे षग्ग धज्जें ॥
छं० ॥ १२८॥

रसं लूक लग्गै हुए टूक टूकं। रिनं षत्त पट्टैं [3]षुराने अचूकं ॥
थटे जाइ आघाट बैकुंठ यानं। मिथ्यौ नट्ट गोटा जिसौ आव जानं ॥
छं० ॥ १२९ ॥

बरं चंग चंगें परी हूर हूरं। रचें रुंडमालं महेसं गरूरं ॥
सिवा ओन [4]धप्पी सु कीनौ डकारं। करें षेचरा भूचरा किलकारं ॥
छं० ॥ १३० ॥

उड़ै रेनं गेनं भयौ अंधकारं। पराए न अप्पं न सुझ्झै लगारं ॥
इसौ भांति भारथ्थ मंतौ करूरं। घरी च्यार पंचै रह्यौ रथ्थ हूरं ॥
छं० ॥ १३१ ॥

हरद्दार सों जाइ लायौ सु भग्गौ। सबै सेन भग्गौ तिनं लार लग्गौ ॥
रह्यौ पातिसाहं भुजं लाज झल्लै। षरं षंचि साइक्क छंडै सु भल्लै ॥
छं० ॥ १३२ ॥

गनें कौंन नामं अनेकं फवज्जं। लग्यौ दाहिमा कै तुरंगम्म कज्जं ॥
बड़ गुज्जरं कम्मधज्जं पुंडीरं। छलं पारि दौर्यौ करे नाहिं सीरं ॥
छं० ॥ १३३ ॥

धरे सिप्परं अड्ड ह्वै काल भेसं। लियौ संग्रहे चौंडरा गज्जनेसं ॥
फटे पारसं सत्त साहस मीरं। परे पंचसै षेत हिंदू सु बीरं ॥
छं० ॥ १३४ ॥

उभै पाहुने कीन चंदं प्रकासे। ढखे मुष्ष मंगे प्रथीपत्ति पासे ॥
छं० ॥ १३५ ॥

(१) ए.-लंघलं, लंघने, लंघनं। (२) मो.- प्रति "हकं एक एकं सहायं सु कज्जे"।
(२) मो.-सही कैं।
(३) ए. कृ. को.-पीनौ।

शहाबुद्दीन को चावंड राय ने पकड़ लिया, पृथ्वीराज की जय हुई सात हज़ार मुसलमान और पांच सौ हिन्दू मारे गए।

कवित्त ॥ वंधि साहि साहाव। लियौ चावंड राय वर ॥
हय कंधह लै डारि। गयौ निज सथ्थ सेन नर ॥
नीर उतरि पतिअसुर। षेत ढुंढ्यौ प्रथिराजं ॥
मुसलमान सत सहस। परे सामथ करि काजं ॥
पंच सै सुभर हिंदू सु परि। उभै सत्ति भोरी सु जगि ॥
जित्त्यौ सु राज सोमेस सुअ। [1]घनै जैत वज्जै बजिग ॥ छं० ॥१३६॥

पृथ्वीराज का सुलतान को क़ैद में भेज कर अनंगपाल को आदर सहित दरबार में बुला कर उन के पैर पड़ना।

मुसलमान घर गह्नि। दाग निज सुभर दिवायौ ॥
लियें जीत्ति प्रथिराज। समह सामंत घर आयौ ॥
सभा वैठ भर सुभर। कह्यौ कैमास राइ गुर ॥
अनगेसह लै आउ। चल्यौ मंत्रीं सु लेन घर ॥
आन्यौ सु रान अनगेस तंह। प्रथीराज लग्गौ सु पय ॥
सनमान प्रान अति प्रीति सौं। भाव भगत राजन करय ॥छं० ॥१३७॥

दाहिम राव को हुक्म देकर सुलतान को दरबार में बुलाना, उसके आने पर पृथ्वीराज का अनंगपाल से कहना कि आप तो बड़े बुद्धिमान हैं आप इस शाह के बहकाने में क्यों आ गए ?

दियौ हुकंम दाहिम्म। ल्याउ दीवान साह कह ॥
सब देषें सामंत। मुक्कि आनन अपत्ति बहु ॥

(१) ए. कृ. को.-बजै।

आव्यौ साहि हजूर। मिल्यौ प्रथिराज राज वर॥
बैठि साह साहाब। सुष्ष देषें जु [1]सुभर भर॥
बोल्यौ जु राज प्रथिराज बर। अनँगराइ तुम अति सुमति॥
भरमौ सु केम कहिं साहि कै। इह तौ [2]पति उत्तरि अपति॥
छं०॥ १३८॥

दूहा॥ कहै राज प्रथिराज गुर। सुभर बोलि बर अग्ग॥
अनँग सीस उंच न करै। नाग दमन सिर नग्ग॥ छं०॥ १३९॥

सरदार गहलौत ने कहा इसमें महाराज अनंगपाल का दोष नहीं है यह सब प्रपंच दीवान का रचा हुआ है।

कवित्त॥ कहै [3]गज्जि गहिलौत। कहूं सामंत सुमौ सहु॥
अप्प अवौ [4]एकंत। [5]असुर सुरतान कही कहु॥
समुद सजल जल पार। ससौ लग्गौ सु कलंकह॥
खर मिलै रस राह। पंथ छुट्टाइ गोय बहु॥
दसरथ्थ आप काक सु विक्रम। दइ दिवान विपरीत गति॥
पतिसाह कही सुनतें सकल। अनगपाल नट्टी सु मति॥छं०॥१४०॥

चामुंड राय का कहना कि कुसंग का यही फल होता है।

दूहा॥ कहै राइ चामंड बर। इह अवस्थ छोइ अंग॥
जब सु मानसर तजि करै। हंस काग कौ संग॥ छं०॥ १४१॥

सामंतों ने जितनी बातें कहीं सब अनङ्गपाल नीचा सिर किए सुनता रहा कुछ न बोला।

जिते वचन सामँत कहे। तिते सहे अनगौस॥
षीम चौव्ह सम सुनि रह्यौ। उच्चौ न करध सीस॥ छं०॥ १४२॥

पृथ्वीराज का शाह को एक घोड़ा और सिरोपाव (खिल्लत) देकर छोड़ देना।

(१) मो.-सुर सुभर। (२) ए. कृ. को.-पति। (३) कृ.-गाजि। (४) मो.-एकंग।
(५) ए. कृ. को.-असुरन नें निबही कहूं।

भाव भगति प्रथिराज पै। कीनी अति मद्दिमान ॥
इक्क बाज सिरपाव दै। छंडि दियौ सुरतान ॥ छं० ॥ १४३ ॥

शहाबुद्दीन का घोड़े हाथी और दो लाख मुद्रा दंड देना और पृथ्वीराज का उसे सामंतों में बांट देना।

कवित्त ॥ छँडि दियौ सुरतान। डंड [1]कबूल कियौ सिर ॥
बीस [2]हस्ति सत बाज। [3]उंच जाति गातह गिर ॥
उभै लप्प वर द्रव्य। दियौ साहाब सु दंडं ॥
सो प्रथिराज नरिंद। अद्ध दीनौ चामंडं ॥
अध दंड सब्ब सामंत कहुं। बंटि दियौ चहुआन बर ॥
दै दंड पत्त नर वर सुभर। प्रथीराज छीवै न कर ॥ छं० ॥ १४४ ॥

म्लेच्छ को जीत कर पृथ्वीराज दिल्ली आया।

दूहा ॥ मेच्छ बंध चहुआन ने। लिये हयग्गय भार ॥
फिरि प्रसन्न प्रथिराज किय। ढिल्ली कोटह बार ॥ छं० ॥ १४५ ॥
बरष एक पच्छै न्रपति। तब लगिं भर सवलान ॥
समी हयग्गय दल सजे। चतुरंगी चहुआन ॥ छं० ॥ १४६ ॥

राजा से राव पज्जून, गोयन्द राय आदि सामंत आकर मिले।

कवित्त ॥ मिल्यौ राव पज्जून। मिल्यौ मोरी मद्दनंसिय ॥
मिले राव पुंडीर। गए [4]दुज्जन बल नंसिय ॥
मिले निडर रठौर। मिले गोइंद गहिलौतं ॥
मिलि षीची पज्जून। जाम जद्दौं पहिलौतं ॥
आरंभ राव कनक्क मिल्यौ। रघुवंसी हय भारद्दौ ॥
कविचंद मिल्यौ जयचंद कौं। नाम सभट्टा भारद्दौ ॥ छं० ॥ १४७ ॥

अनंगपाल का मंत्री से पूछना कि अब मुझे क्या करना उचित है।

---

(१) मो.-कबूल है।　　(२) ए.-हस्ति।　　(३) ए. ऊंच जाति सुतहिं गिर।
(४) मो.-खल।

अरिल्ल ॥ तब सुमंत परधानह पुच्छिय । कहौ मंत मंची मत अच्छिय ॥
किहिं विधि क्रम्म भ्रम्म जस रष्षै । सुनि परधान एह विधि अष्षै ॥
छं० ॥ १४८ ॥

मंत्री ने कहा कि महाराज आप अब बूढ़े हुए मृत्यु समय निकट है और पृथ्वीराज को दिल्ली आप दे चुके हैं अब इसका मोह छोड़ कर धर्म कर्म कीजिए ।

दूहा ॥ अनगपाल तिन याविं ग्रह । अरु बर बंधव साल ॥
इह जोग वपुजोग धरि । चंपि जरा अरि काल ॥ ॥छं० ॥१४९॥
जोगिनपुर प्रथिराज कौ । दैव दियौ दिन बित्त ॥
मोह बंध बंधन तजे । भ्रम क्रम कीजै चित्त ॥ छं० ॥ १५० ॥

मंत्री का कहना कि संसार के सब पदार्थ नाशमान हैं इस की चिन्ता न कीजिए ।

कवित्त ॥ न रहै सर वापीय । अनुप गढ़ मँडप बहुज्जं ॥
न रहै धन बन तरुनि । कूप प्रवत फिरि छज्जं ॥
न रहै ससि रबि भोम । जाइ (१)थावर अरु जंगम ॥
न रहै सात समंद । धरै भंजय सोइ अंगम ॥
जानहु न प्रलै चतुरंग तम । प्रलै इहै सो दिष्षियै ॥
राषौ न चिंत आचिंतका । जीमन मरन विसिष्षियै ॥ छं० ॥१५१ ॥

रानी का सलाह देना कि पृथ्वीराज से आधा पंजाब का राज्य ले लो अथवा जो व्यास जी कहें सो करो ।

पुनि बरज्यौ नृप चीय । जीय तिय (२)तीय उतारिय ॥
तजिय माम घरवार । पुच्छयौ व्यास हँकारिय ॥
चाहुआन अरि भज्जि । छोड़ धर अनग नरेसं ॥
पंच नदी करि अद्ध । बंटि अप्पै अध देसं ॥

(१) ए.-अवर अंवर । (२) मो.-तीस ।

तुम कहौ जोति जग गोति विय। इह अपुव्व कथ मंडिकैं॥
कै ग्रहौ पंथ वद्री सरन। धरा काम कलि छंडि कैं॥ छं०॥ १५२॥

व्यास जी का कहना कि बलवान पृथ्वीराज को दिल्ली का राज्य करने दीजिए आप गुरु का ध्यान करके तप कीजिए।

कहै व्यास अनगेस। तपै ढिल्ली चहुआनं॥
वहु वर वल छत्रि है। वंध मीयन सुलतानं॥
तुम बद्री तप जाहु। धरा संदेस न आनहु॥
इह न्निम्मान प्रमान। पुत्र संबंधन जानहु॥
न्निम्मलौ ध्यान गुर ग्यान करि। हरि भजि न्निम्मल होइहै॥
नन करौ चित्त दुविधा न्नपति। अत्त पुरत्तन योइहै॥छं० ॥१५३॥

राज्य धन सम्मान मांगने से नहीं मिलता और न वल से स्नेह होता है।

न लहै मांग्यौ देस। वेस पुनि मांग्यौ न लहै॥
न लहै मंग्यौ मान। पान फुनि मांग्यौ न लहै॥
न लहै धन मंगत्त। गत्त फुनि रूप [3]विनानं॥
पुव्व निवंध्यौ वंध। लहै सोई परिमानं॥
तुम जान ग्यान मतिमान गुर। नेह न लभ्भै जोर वर॥
आतम्म चित्त अनचिंत तजि। इहै मत्त तुम सत्त करि॥छं०॥१५४॥

मेरा मत मानो कि बद्रीनाथ ज़ी की शरण में जाकर कन्दमूल फल खाकर तप करो।

अरिल्ल॥ मानि मंत तुम तूंवर छंडिय। जाइ सरन बद्री तप मंडिय॥
कंद मूल आहार अचानिय। कै वन फल तन धारन पानिय॥
छं० ॥ १५५॥

(१) ए.-तन, कृ.-मम (२) मो. योइये, होइये। (३) ए.-निनानं।

पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल की बड़ी सेवा की जब तेरह महीने बीत गए तब अनङ्गपाल ने दौहित्र (पृथ्वीराज) से कहा कि अब मुझे बद्रीनाथ पहुंचा दो वहां बैठ कर तप और भगवान का भजन करूं, पृथ्वीराज ने कहा कि आप यहीं बैठकर तप भजन कर सकते हैं।

कवित्त ॥ अनगराइ अति सेव। करै प्रथिराज राज अति ॥
मास एक दृष वित्त। बहुरि उपजी सु राज मति ॥
कह्यौ पुच्छि सुत सभह। मोहिं सुकलि बद्री दिस ॥
तहां [1]बपु साधन करौं। धरौं [2]हरि ध्यान अहो निसि ॥
बोल्यौ सु राज चहुआन बर। रहौ इहां साधन करौ ॥
तप तुला दान धर्मह विविध। ध्यान ग्यान हिरदै धरौ ॥
छं० ॥ १५६ ॥

पृथ्वीराज ने बहुत समझाया पर अनङ्गपाल ने एक न माना उसे बद्रीनाथ जाने की लौ लगी रही। तब पृथ्वीराज ने बड़े आदर के साथ दस लाख रुपया सात नौकर और दस ब्राह्मण साथ देकर उन्हें बद्रीनाथ पहुंचा दिया। अनङ्गपाल वहां जाकर तपस्या करने लगा।

कहौ सुत्त सोमेस। राज अनगेस न मानौ ॥
बपु साधन तप काज। बद्रि दिसि मनसा ठानौ ॥
तब पुच्चौ बर पुच। लष्ष दह द्रव्य सु अप्पौ ॥
सत अनुचर इक जान। विप्र दस एक समप्पौ ॥

(१) मो.-तप। (२) ए.-अहि।

चल्यौ अनंग बद्री सरन। पहुंचायौ प्रथिराज न्रप ॥
तहं जाइ राज तोंवर सुवर। तपै राज उग्रह सु तप ॥ छं० ॥ १५७ ॥

्थ्वीराज की सहानुभूति दयालुता और वीरता की प्रशंसा।

धनि सु चित्त प्रथिराज। करुन रस चाप उपन्नौ ॥
द्रब्ब दरब सत्त अद्ब। पुन्य कारन भरि दिन्नौ ॥
सर्ब सुभर अनगान। आनि आदर ग्रह वासिय ॥
धनि धनि जंपै लोइ। कित्ति भू मंडल भासिय ॥
आषेट दुष्ट दुज्जन दलन। करै केलि सामंत सथ ॥
कवि चंद छंद बंधिय कवित। प्रथ्थिराज भारथ्थ कथ ॥छं०॥१५८॥

ति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके अनंगपाल ढिल्ली आगमन फिरि प्रथिराज जुरन बद्री तप सरन नाम अठाविसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २८ ॥

[दूसरा भाग समाप्त।]